श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

प्रथमः खण्डः

(माहात्म्यं प्रथमस्कन्धश्च)



दयालोक प्रकाशन संस्थान

१८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद - २११ ००२

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

प्रथमः खण्डः

(माहात्म्यं प्रथमस्कन्धश्च)



टीका कर्त्री

श्रीमती दयाकान्ति देवी

धर्मपत्नी—श्री लोकमणि लाल

दयालोक प्रकाशन संस्थान

१८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद-२११००२

प्रकाशक—दयालोक प्रकाशन संस्थान, १८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद

विक्रम संवत् २०४१ में प्रथम संस्करण १०००

प्राप्ति स्थान
दयालोक प्रकाशन संस्थान
१८ पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद-२११००२

मूल्य : ६५० रूपये मात्र

मुद्रक—
शाकुन्तल मुद्रणालय
३४, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद

नम्र-निवेदन

अयि भुवि भावुक रसिक जन !

यह सर्वविदित है कि भारतीय वाङ्मय में महाभारत जहाँ ज्ञान का सागर है वहाँ श्रीमद्भागवत महापुराण उसका सारभूत नवनीत। प्रत्येक धर्मप्राण भारतीय इसका सेवन अपने जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। इससे ऐसी अलौकिक शक्ति मिलती है जिससे मनुष्य भव-सागर का सम्यक् संतरण कर अन्त में परम पुरुषार्थ की प्राप्ति करता है। भगवान् के अवतार महर्षि वेदव्यास को इसी की रचना से शान्ति मिली थी, यद्यपि वे इससे पूर्व वेदों का चतुर्धा विभाग, महाभारत और ब्रह्मसूत्रों का प्रणयन कर चुके थे।

श्रीमद्भागवत महापुराण विषयवस्तु और वर्णन शैली के कारण अन्य पुराणों से भिन्न एवं महनीय है। निष्काम कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय ही इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में यह ग्रन्थ भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् स्वरूप माना गया है तथा भगवद्भक्त इसकी पूजा-आराधना, पारायण और कथा-श्रवण का अनुष्ठान निष्ठा और श्रद्धा के साथ करते हैं। यह भगवान् श्रीकृष्ण के भक्तिरस का छलकता सागर है, निवृत्ति परायण परमहंसों की संहिता है और विद्वत्ता की कसौटी है। यह समस्त श्रुतियों का सार है; महाभारत का तात्पर्य-निर्णायक है तथा ब्रह्मसूत्रों का भाष्य है। दर्शन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए ही वैष्णव-संप्रदाय के आचार्यों ने इसके ऊपर टीका तथा व्याख्या का प्रणयन किया है। इसकी सर्थप्रथम टीका चित्सुखाचार्य ने की थी, जो इस समय नहीं मिलती। प्राप्त टीकाओं में सर्वाधिक प्राचीन श्रीधर स्वामी की टीका है। लघुकाय होने पर भी श्रीधरी टीका निःसन्देह निष्पक्ष तथा सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है। तत्पश्चात् रचित सुदर्शन सूरि की 'शुक पक्षीया' तथा वीरराघवाचार्य की 'भागवत चन्द्र चन्द्रिका' व्याख्यायें श्रीवैष्णवों में आदरणीय हैं। इसके अतिरिक्त विजयध्वज तीर्थ की 'पदरत्नावली', सनातन गोस्वामी की 'बृहद् वैष्णव तोषिणी', जीव गोस्वामी की 'क्रम-सन्दर्भ', विश्वनाथ चक्रवर्ती की 'सारार्थ दर्शिनी', वल्लभाचार्य को 'सुबोधिनी', शुकदेवाचार्य की 'सिद्धान्त-प्रदीप' तथा श्रीहरि की 'हरिभक्ति रसायन' व्याख्यायें नितान्त प्रौढ और सारगर्भित हैं।

श्रीमद्भागवत की प्राप्त सभी टीकायें संस्कृत भाषा में निबद्ध अतः साधारण पाठक से दूर हैं। सबसे पहले इस कमी की ओर गीता प्रेस का ध्यान गया और सर्व जन हिताय वहाँ से हिन्दी भाषा में इसका भावानुवाद प्रस्तुत किया गया। यह अनुवाद भागवत के श्लोको का भाव स्पष्ट करने में समर्थ है और एक निष्पक्ष व्याख्या प्रस्तुत करता है। किन्तु इससे संस्कृत के पदों और वाक्यों के उच्चारण और संकेत-ज्ञान का आनन्द नहीं मिल पाता। अवधेय है कि जब तक प्रत्येक पद का अर्थ सुस्पष्ट न हो, तब तक पूरे श्लोक का अर्थ बुद्धि में स्थिर नहीं रह सकता। श्लोकार्थ को सदा ध्यान में रखने के लिये उसे श्लोक के पदों पर समझना परमावश्यक है। इसका अनुभव मुझे तब हुआ, जब आज से कुछ वर्ष पूर्व हमारे आवास १८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद में श्रीवैकुण्ठनाथ मन्दिर अलोपी बाग, प्रयाग के महन्थ श्रीविद्वान् जी ने भागवत की सप्ताह-कथा सुनायी थी। उस समय पद-पदार्थ का आनन्द लेने के लिए यह कथा एक मास तक चलती रही। वह कथा तो समाप्त हो गयी, किन्तु हमारे मस्तिष्क में यह विचार छोड़ गयी

कि संस्कृत से अपरिचित साधारण पाठक भागवत का पूरा आनन्द कैसे उठा सकेंगे? करुणा वरुणालय भगवान् भक्तों की कामना पूर्ण करते ही हैं। कुछ दिनों के बाद गङ्गानाथझा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद के आचार्य डा० आजाद मिश्र से हमारा सम्पर्क हुआ और भागवत का ज्ञान-यज्ञ प्रारम्भ हो गया। फलस्वरूप यह पुस्तक पाठकों के समक्ष उपस्थित है।

श्रीमद्भागवत के इस नवीन संस्करण में 'तत्त्वप्रबोधिनी' टीका का योग किया गया है। इस टीका की कुछ अपनी विशेषतायें हैं और अपना उद्देश्य है। सर्वसाधारण हिन्दी पाठक को भागवत का सही अर्थ बोध कराना ही इसका उद्देश्य है। इसकी पूर्त्ति के लिए प्रत्येक श्लोक का उसी क्रम में पदच्छेद और प्रत्येक पद का अर्थ बताया गया है। हिन्दी अर्थ के सामने अंकों के द्वारा अन्वय-क्रम दिखाया गया है और वाक्य रचना में अपेक्षित अतिरिक्त अर्थ कोष्ठक के अन्तर्गत रखा गया है। इसमें पाठक देखेंगे कि अंकानुसार पढ़ने पर श्लोकार्थ स्वतः बन जाता है, जिसे अलग से भी प्रदर्शित किया गया है। ऐसा करने में पाठक को एक ही श्लोक अनायास तीन बार पढ़ना होगा। इस प्रकार वह भागवत के ही शब्दों से और भागवत से ही वाक्यों से भागवत का आकण्ठ रस-पान कर सकता है।

इस प्रथम खण्ड के प्रकाशन से भागवत ज्ञान-यज्ञ का यह पहला दिन पूरा होता है। अभी इसके सात खण्ड और बचे हैं। भगवान् की दया होने पर उनका भी क्रमशः प्रकाशन शीघ्र होगा और इस ज्ञान-यज्ञ की पूर्णाहुति हो सकेगी। इस खण्ड में माहात्म्य और प्रथम स्कन्ध को स्थान दिया गया है। माहात्म्य पद्मपुराण का है, जिसका पाठ परायण-अनुष्ठान के आरम्भ में अनिवार्य है और पारम्परिक है। दूसरी बात यह है कि किसी का महत्त्व जानने पर ही उसमें श्रद्धा होती है, प्रवृत्ति होती है। महिमा सुनकर कौन फूला नहीं समाता? इससे हर्ष, शक्ति-संचार और आत्म बोध होता है। अतः यहाँ माहात्म्य को स्थान देना उचित समझा गया।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु आराध्य पतिदेव ने दयालोक प्रकाशन संस्थान की स्थापना करके और अपने शैक्षिक विचारों से मेरा सदा उत्साह वर्धन किया है, इसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ और हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। इस ज्ञान-यज्ञ के आचार्य डा० आजाद मिश्र का अध्यापन और सहयोग सदा स्मरणीय और आदरणीय है। अतः इस अवसर पर उनके प्रति आभार व्यक्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूँ।

पाण्डु-लिपि के लेखन में बड़ी पुत्र वधू निशा देवी का भरपूर सहयोग रहा है। अतः इस अवसर पर उसे शुभाशीर्वचन देती हूँ। शाकुन्तल मुद्रणालय के संचालक श्री उपेन्द्र नाथ त्रिपाठी जी को भूरिशः धन्यवाद देती हूँ। उन्होंने श्रम और सावधानी से मुद्रण-सौष्ठव और तत्परता निभाई है। इस निवेदन के साथ व्रजेन्द्र नन्दन आनन्द कन्द श्रीकृष्ण चन्द्र के चरणों में गोपी की यह पहली भक्ति सादर समर्पित है।

मकर संक्रान्ति, प्रयाग
सं० २०४१, कलि सं० ५०८५
श्री कृष्ण संवत् ५२१०
१४ जनवरी, १९८५

निवेदिका
दया कान्ति देवी अग्रवाल

श्रीहरिः

विषय-सूची

१—नम्र-निवेदन

२—विषय-सूची

३—पूजन सामग्री

४—हवन सामग्री

५—पूजन एवं पाठ की संक्षिप्त विधि

६—विनियोग

७—ऋष्यादिन्यास

८—ध्यान-मन्त्र

९—आरती (श्रीमद्भागवत पुराण की)

श्रीमद्भागवत माहात्म्य

अध्याय विषय		पृष्ठ संख्या
१—देवर्षि नारद की भक्ति से भेंट	...	१
२—भक्ति का दुःख दूर करने के लिए नारद जी का उद्योग	...	४२
३—भक्ति के कष्ट की निवृत्ति	...	८०
४—गोकर्णोपाख्यान का प्रारम्भ	...	११८
५—धुन्धुकारी को प्रेतयोनि की प्राप्ति और उससे उद्धार	...	१६०
६—सप्ताह यज्ञ की विधि	...	२०५

प्रथम स्कन्ध

१—श्री सूत जी से शौनकादि ऋषियों का प्रश्न	...	२६३
२—भगवत् कथा और भगवद्भक्ति का माहात्म्य	...	२७६
३—भगवान् के अवतारों का वर्णन	...	२९३
४—महर्षि व्यास का असंतोष	...	३१६
५—भगवान् के यश-कीर्तन की महिमा और देवर्षि नारद जी का पूर्वचरित्र	...	३३३
६—नारद जी के पूर्वचरित्र का शेष भाग	...	३५४
७—अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पुत्रों का मारा जाना और अर्जुन के द्वारा अश्वत्थामा का मानमर्दन	...	३७४
८—गर्भ में परीक्षित् की रक्षा, कुन्ती के द्वारा भगवान् की स्तुति और युधिष्ठिर का शोक	...	४०३
९—युधिष्ठिरादि का भीष्मजी के पास जाना और भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए भीष्म जी का प्राण त्याग करना	...	४३०
१०—श्रीकृष्ण का द्वारका-गमन	...	४५५
११—द्वारका में श्रीकृष्ण का राजोचित स्वागत	...	४७३

अध्याय विषय		पृष्ठ संख्या
१२—परीक्षित का जन्म	...	४९३
१३—विदुर जी के उपदेश से धृतराष्ट्र और गान्धारी का वन में जाना	...	५११
१४—अपशकुन देखकर महाराज युधिष्ठिर का शंका करना और अर्जुन का द्वारका से लौटना	...	५४१
१५—श्रीकृष्ण के विरह से व्यथित पाण्डवों का परीक्षित् को राज्य देकर स्वर्ग सिधारना	...	५६३
१६—परीक्षित् को दिग्विजय तथा धर्म और पृथ्वी का संवाद	...	५९४
१७—महाराज परीक्षित् द्वारा कलियुग का दमन	...	६१३
१८—राजा परीक्षित् को शृङ्गी ऋषि का शाप	...	६३६
१९—परीक्षित् का अनशन व्रत और शुकदेव जी का आगमन	...	६६१
१—भजन-भागवत	...	६८१
२—आरती (जय जगदीश हरे)	...	६८२

चित्र-सूची

(रंगीन)

१—टीकाकर्त्री—श्रीमती दयाकान्ति देवी ...
२—महासंकीर्तन
३—शुकदेव जी से परीक्षित् का प्रश्न ...

(रेखा-चित्र)

१—राधाकृष्ण युगलमूर्ति ...

पूजन-सामग्री

गंगाजल, रोली, मोली, कुंकुम, चन्दन, शुद्ध केशर, कपूर, दूर्वादल, पुष्प, पुष्पमाला, तुलसीदल, विल्वपत्र, धूप, दीप, अगरबत्ती, पानपत्ता, सुपारी, यज्ञोपवीत, इलाइची, लौंग, पेड़ा, बतासा, पञ्चमेवा, चावल, गेहूँ, नारियल, अबीर, गुलाल, ऋतुफल, पञ्चामृत, (दूध, दही, मधु, चीनी, घी) तथा आरती का पात्र, घण्टा, घड़ियाल, शंख, झांझ आदि, कपड़ा-सफेद, पीला-लाल, एक चौकी नवग्रह—एक चौकी षोडशमातृका इत्यादि देवताओं के पूजन के लिये तथा एक चौकी भागवत के लिये। एक कलश (मिट्टी या ताँबे का) सकोरे पूजन इत्यादि के लिये।

हवन-सामग्री

तिल, चावल, जौ, घी, चीनी, पञ्चमेवा तथा सुगन्धित द्रव्य, कपूर, कचरी, छड़छड़ीला, नागर मोथा, अगर, तगर, चन्दन चूर्ण, सुगन्धबाला, सुगन्ध-कोकिला, गूगल, बावची, तेजवल, चम्पावती, हाडेवर, नागकेशर, ब्राह्मी असगन्ध इत्यादि। पूर्णाहुति के लिये नारियल गोला तथा वितरण के लिये प्रसाद।

ब्राह्मणों के वरण के लिये वस्त्र, मधुर पकवान भोजन इत्यादि और दक्षिणा। कथावाचक ब्राह्मण के लिये वस्त्र इत्यादि और यथोचित दक्षिणा।

श्रीमद्भागवतमहापुराण के पूजन एवं पाठ की संक्षिप्त विधि

प्रातः स्नान के पश्चात् नित्य-नियम पूरा करके पूजन-सामग्री को यथास्थान रख लेवें। तदनन्तर रक्षा-दीप जलाकर स्तोत्रों और पदों से मंगलाचरण करें। इसके पश्चात् शरीर आदि की शुद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पूजन-सामग्री, भूमि और अपने शरीर पर गङ्गाजल से सिंचन करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥१॥

मनुष्य पवित्र हो या अपवित्र, किसी भी अवस्था में विद्यमान हो, यदि वह पुण्डरीकाक्ष भगवान् कमलनयन का स्मरण करता है तो अन्दर और बाहर से अवश्य पवित्र हो जाता है ॥१॥

उसके बाद 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' इन तीन वाक्यों का उच्चारण करते हुए तीन बार आचमन और प्राणयाम करने के उपरान्त नीचे के यजुर्वेद मन्त्र से शान्ति पाठ करना चाहिए।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥२॥

हे देवगण! हम अपने कानों से मंगलवचन सुनें। यज्ञ-कर्म में समर्थ होकर हम अपनी आँखों से शुभ दर्शन करें। हम अपने सुदृढ़ अङ्गों और शरीर से परमात्मा की स्तुति करते हुए ऐसी आयु का उपभोग करें; जो देवताओं से निर्धारित है और देवताओं को हितकर है ॥२॥

तदनन्तर दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत और जल लेकर यह संकल्पवाक्य पढ़ना चाहिए—

हरिः ॐ तत्सत्। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे अमुक स्थाने कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुक कलिसंवत्सरे अमुक वैक्रमाब्दे अमुक नाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः (वर्मणः, गुप्तस्य, दासस्य वा) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीगोविन्दचरणारविन्दप्रसादात् श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं भगवदनुग्रहपूर्वकभगवदीयप्रेमोपलब्धये च श्रीभगवन्नामात्मकभगवत्स्वरूपश्रीमद्भागवतस्य पाठ (सप्ताहकथाश्रवण) कर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिनवग्रहकलशषोडशमातृका सप्तचिरजीविपुरुषपूजनपूर्वकं श्रीलक्ष्मीनारायणशालग्रामनरनारायणगुरुवायुसरस्वतीशेषसनत्कुमारमैत्रेयोद्धवनारदादिपूजनम् आधारपीठपुस्तकव्यासपूजनं च यथालब्धोपचारैरहं करिष्ये।

इस संकल्पवाक्य को पढ़कर हाथ के जल, अक्षत और पुष्प को गणेशजी के सामने चढ़ा देवें। उन्हीं के पास शुद्धजल से परिपूर्ण एक कलश रखें; जिसमें अक्षत, पुष्प, दूर्वा, सर्वौषधि और पंचरत्न छोड़

कर उसके ऊपर पूर्णपात्र और सुपारी या नारियल रख दें। तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ करते हुए उन-उन देवताओं का आवाहन, प्रतिष्ठा, पूजन और प्रार्थना करें।

श्री गणेश जी के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं, रक्ताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकायकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥३॥

विशाल उदर, एक दांत, लालवस्त्र, तीन नेत्र तथा उगते सूर्य की किरणों के समान स्वच्छ और मनोहर शरीर से युक्त, अत्यन्त सुन्दर, परम पवित्र, विघ्नों के स्वामी एवं सम्पूर्णविघ्नों को दूर करने वाले गणेशजी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

गणेश-पूजन के उपरान्त उन्ही के पास रखे हुए कलश में वरुण इत्यादि देवताओं और चारों वेदों, गंगादि नदियों तथा समुद्र का आवाहन और पूजन करके नीचे लिखे मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिए।

कलश में आवाहित देवताओं की प्रार्थना के मन्त्र—

ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा। वरदो भव सर्वदा ॥४॥

हे कुम्भ ! देवों और असुरों के द्वारा समुद्र-मंथन करने पर तुम उत्पन्न हुए थे। उस समय विष्णु ने तुम्हें धारण किया था। तुम्हारे जल में सारे तीर्थ, समस्त देवता, सभी प्राणी और प्राण स्थित हैं। तुम साक्षात् शिव, विष्णु और प्रजापति हो। तुम्हीं द्वादश आदित्य, अष्ट वसु एकादश रुद्र, विश्वेदेव और पितर हो। तुम्हारे में सभी देवता निवास करते हैं। इसलिए तुम सम्पूर्ण मनोरथ सफल करते हो। हे कलश ! मैं तुम्हारी कृपा से यह यज्ञ कर रहा हूँ। अतः आप मुझ पर सदा प्रसन्न होवें और मेरे सामने उपस्थित रहें ॥४॥

नवग्रहों के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥५॥

ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु ये नवग्रह मेरे कर्म में सदा शान्ति प्रदान करें ॥५॥

षोडशमातृका के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।
हृष्टिः पुष्टि, तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। इत्येता मातरः सर्वा वृद्धिं कुर्वन्तु मे सदा ॥६॥

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, मातृका, लोकमाता, हृष्टि, पुष्टि, तुष्टि तथा कुल देवता ये सोलह मातृकायें सदैव हमारी वृद्धि करती रहें ॥६॥

सप्त चिरजीवि पुरुषों के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
पूजकस्य गृहे नित्यं सुखदाः सिद्धिसाधकाः॥७॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम ये सात दीर्घजीवी पुरुष पूजक के घर में सदा सुख और सिद्धि प्रदान करें ॥७॥

श्री लक्ष्मीनारायण के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐमङ्गलं भगवान् विष्णुर्मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनं हरिः॥८॥

भगवान् विष्णु, गरुडध्वज, पुण्डरीकाक्ष और श्री हरि मंगलरूप एवं कल्याण की खानि हैं ॥८॥

श्रीशालग्राम पूजन और प्रर्थना मन्त्र—

ॐ ब्रह्मसत्रं करिष्यामि, तवानुग्रहतो विभो।
तन्निर्विघ्नं भवेद्देव, रमानाथ क्षमस्व मे ॥९॥

हे प्रभो! आपकी कृपा से मैं यह ज्ञान-यज्ञ कर रहा हूँ। इसलिए इस कर्म को निर्विघ्न पूर्ण करें और मेरे अपराध क्षमा करें ॥९॥

नरनारायण के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ यो मायया विरचितं निजमात्मनीदं, खे रूपभेदमिव तत्प्रतिचक्षणाय।
एतेन धर्मसदने ऋषिमूर्तिनाद्य, प्रादुश्चकार पुरुषाय नमः परस्मै ॥१०॥

जिन्होंने शून्य आत्मा में अपनी माया से जगत्प्रपंच बनाया तथा धर्मराज के घर ऋषि के रूप में अवतार लिया, उस परात्पर नर-नारायण भगवान् को प्रणाम है ॥१०॥

वायुदेव का आवाहन, पूजन और प्रार्थना मन्त्र—

ॐ अन्तः प्रविश्य भूतानि यो बिभर्त्यात्मकेतुभिः।
अन्तर्यामीश्वरः साक्षात् पातु नो यद्वशे स्फुटम् ॥११॥

जो प्राण रूप से प्राणियों के अन्तःकरण में प्रवेश करके सबकी रक्षा करते हैं; उन अन्तर्यामी वायु-देवता को प्रणाम है ॥११॥

गुरुदेव के पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१२॥

गुरुदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप हैं। वे साक्षात् परब्रह्म हैं। उन गुरुदेव को प्रणाम है ॥१२॥

सरस्वती जी के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१३॥

सरस्वती देवी कुन्दपुष्प, चन्द्रमा, बर्फ और मणिमाला के समान गौर वर्ण की हैं। वे उज्ज्वल वस्त्र धारण की हैं। उनके हाथ में सर्वोत्तम वीणा शोभित है और वे श्वेत कमल पर विराजमान हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि देवता सदा उनकी वन्दना करते रहते हैं। वे माता सरस्वती जी मेरे सम्पूर्ण अज्ञान को दूर करें ॥१३॥

पौराणिक ऋषियों के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ शेषः सनत्कुमारश्च सांख्यायनपराशरौ।
बृहस्पतिश्च मैत्रेय उद्धवश्चात्र कर्मणि ॥
त्रय्यारुणिः कश्यपश्च रामशिष्योऽकृतव्रणः।
वैशम्पायनहारीतौ षड् वै पौराणिका इमे ॥१४॥

शेष, सनत्कुमार, सांख्यायन, पराशर, बृहस्पति, मैत्रेय, उद्धव, त्रय्यारुणि, कश्यप, रामशिष्य, अकृतव्रग, वैशम्पायन और हारीत ये पौराणिक ऋषिगण मेरी सहायता करें ॥१४॥

सूर्यदेव के विशेष आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र —

ॐ लोकेश त्वं जगच्चक्षुः, सत्कर्म तव भाषितम्।
करोमि तच्च निर्विघ्नं, पूर्णमस्तु त्वदर्चनात् ॥१५॥

हे लोकपति ! हे जगत् प्रकाशक भगवान् सूर्य ! आप सप्ताह-यज्ञ के उपदेशक हैं। आपके पूजन से मेरा यह कार्य निर्विघ्नता से परिपूर्ण हो ॥१५॥

वेदव्यास जी के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र—

ॐ नमस्तस्मै भगवते व्यासायामिततेजसे।
पपुर्ज्ञानमयं सौम्य यन्मुखाम्बुरुहासवम् ॥१६॥

मैं अपरिमित तेजवाले भगवान् वेदव्यास जी को प्रणाम करता हूँ, जिनके मुख-कमल से ऋषियों ने ज्ञान-अमृत का पान किया था ॥१६॥

नारद जी के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र--

ॐ नमस्तुभ्यं भगवते ज्ञानवैराग्यशालिने।
नारदाय सर्वलोकपूजिताय सुरर्षये ॥१७॥

मैं ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न तथा समस्त लोकों में पूजित देवर्षि नारद जी को प्रणाम करता हूँ ॥१७॥

श्री शुकदेव जी के आवाहन, पूजन और प्रार्थना का मन्त्र---

ॐ यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं, द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥१८॥

जिस समय श्रीशुकदेव मुनि का यज्ञोपवीत संस्कार भी नहीं हुआ था, लौकिक-वैदिक कर्मों के अनुष्ठान का अवसर भी नहां आया था, उन्हें अकेले ही संन्यास लेने के उद्देश्य से जाते देखकर उनके पिता व्यास जी विरह से कातर होकर हे पुत्र! हे पुत्र!! ऐसा कहकर पुकारने लगे। उस समय तन्मय होने के कारण श्री शुकदेव जी की ओर से वृक्षों ने उत्तर दिया था। सबके हृदय में विराजमान उन शुकदेव मुनि को मैं नमस्कार करता हूँ ।।१८।।

इस पूजन के अनन्तर कथाव्यास यजमान के हाथ में नीचे लिखे मन्त्र से रक्षा बन्धन बाँधे।

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥१९॥

जिस बन्धन से महाबली दानवराज बली बाँधा गया, मैं उसी रक्षा-बन्धन से तुम्हें बाँध रहा हूँ। यह बन्धन सदा तुम्हारी रक्षा करे, ताकि सत्संकल्प से तुम कभी विचलित न हो सको ।।१९।।

यजमान के मस्तक में तिलक करने का मन्त्र---

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥२०॥

धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि के लिए आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव और मरुद्गण तुम्हारे मस्तक में तिलक लगावें ।।२०।।

इसके अनन्तर गन्धाक्षत पुष्पादि द्रव्यों से पुस्तक-आधार-पीठ की पूजा करके यजमान कथाव्यास के मस्तक पर तिलक करे, पुष्प चढ़ावे, रक्षा बन्धन करे और वस्त्रादि द्रव्य अर्पित करके निम्नलिखित प्रार्थना करे—

ॐ शुकरूप प्रबोधज्ञ सर्वशास्त्रविशारद।
एतत्कथाप्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय ॥२१॥

सभी शास्त्रों में पारङ्गत, उतम ज्ञानवान् और श्री शुकदेव-स्वरूप हे आचार्य! आप इस कथा के व्याख्यान से मेरे अज्ञान को दूर करें ।।२१।।

उसके बाद निम्नांकित मन्त्र पढ़कर श्रीमद्भागवत पुस्तक पर पुष्प, चन्दन और नारियल आदि चढ़ाकर प्रार्थना करें—

ॐ श्रीमद्भागवताख्योऽयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि।
स्वीकृतोऽसि मया नाथ मुक्त्यर्थं भवसागरे ॥२२॥

श्रीमद्भागवत महापुराण भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् स्वरूप है। हे स्वामिन्! संसार सागर से मुक्ति के लिए मैं आपकी शरण में आया हूँ ।।२२।।

।। इति संक्षिप्त-पूजनविधिः सम्पूर्णः ।।

पाठ एवं कथा का विनियोग

ॐ अस्य श्रीमद्भागवताख्यस्तोत्रमन्त्रस्य नारद ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीकृष्णपरमात्मा देवता, ब्रह्म बीजम्, भक्तिः शक्तिः, ज्ञानवैराग्यकीलकम्, मम श्रीमद्भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे (कथायाम्) विनियोगः।

इस वाक्य का उच्चारण करके भूमि पर जल छोड़ें।

ऋष्यादि न्यास

ऋषिन्यास—नारदर्षये नमः शिरसि। बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे। श्रीकृष्णपरमात्मदेवतायै नमः हृदि। ब्रह्मबीजाय नमः गुह्ये। (हाथ धोकर) भक्तिशक्तये नमः पादयोः। ज्ञानवैराग्यकीलकाभ्यां नमः नाभौ। श्रीमद्भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थकपाठविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास—ॐ क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—ॐ क्लां हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लूं शिखायै वषट्। ॐ क्लैं कवचाय हुम्। ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लः अस्त्राय फट्।

ध्यान-मंत्र

न्यास के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान करें—

ॐ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्,
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

भगवान् श्रीकृष्ण के मस्तक पर कस्तूरी का तिलक, छाती पर कौस्तुभ मणि, नासापुट में मुक्ता-भूषण, हथेली में मुरली, हाथ में कंगन, सारे अंगों में सुगन्धित चन्दन का लेप और गले में मुक्ता-माला शोभित हो रही है। ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण की, जो गोपियों के बीच विराजमान हैं, जय हो! जय हो!!





श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवत महापुराण माहात्म्यम्



कान्तिः सिताऽऽमृशति निन्दितशारदेन्दु-

र्यत्रैकतो विलसितामसिताङ्गशोभाम् ।

वृन्दावनेऽपि कृतयामुनगाङ्गसङ्गम् ,

राधामुकुन्दयुगलं तदहं नमामि ॥

श्री मद्भागवत की आरती

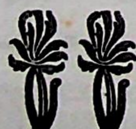
आरति अति पावन पुराण की।
धर्म भक्ति विज्ञान ज्ञान की ॥ आ० ॥

महा पुराण भागवत निर्मल।
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल।
परमानन्द-सुधा-रसमय फल।
लीला-रति-रस रस-निधान की ॥ आ० ॥

कलि-मल-मथनि त्रिताप-निवारिनि।
जन्म-मृत्युमय भव-भय-हारिनि।
सेवत सतत सकल सुख कारिनि।
सु महौषधि हरि-चरित-गान की ॥ आ० ॥

विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि।
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्तत्त्व-रहस्य प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमातम-ज्ञान की ॥ आ० ॥

परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि।
रसिक-हृदय-रस-रास विलासिनि।
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुवासिनि।
कथा अकिञ्चन प्रिय सुजान की ॥ आ० ॥





श्रीगणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीमद्भागवतमहापुराणमाहात्म्यम्

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

अथ प्रथमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥१॥

पदच्छेद—

सत् चित् आनन्द रूपाय, विश्व उत्पत्ति आदि हेतवे ।
तापत्रय विनाशाय, श्रीकृष्णाय वयम् नुमः ॥

शब्दार्थ—

सत्	२.	सत्य	हेतवे ।	९.	कारण (तथा)
चित्	३.	ज्ञान (और)	तापत्रय	१०.	दैहिक, दैविक और भौतिक दुःखों को
आनन्द	४.	आनन्द	विनाशाय	११.	दूर करने वाले
रूपाय	५.	स्वरूप वाले	श्रीकृष्णाय	१२.	श्रीकृष्ण भगवान् को
विश्व	६.	जगत् की	वयम् .	१.	हम लोग
उत्पत्ति	७.	सृष्टि	नुमः ॥	१३.	नमस्कार करते हैं
आदि	८.	पालन और संहार के			

श्लोकार्थ—हम लोग सत्य, ज्ञान और आनन्द स्वरूप वाले, जगत् की सृष्टि, पालन और संहार के कारण तथा दैहिक, दैविक और भौतिक दुःखों को दूर करने वाले श्रीकृष्ण भगवान् को नमस्कार करते हैं ।

द्वितीयः श्लोकः

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं, द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥२॥

पदच्छेद—

यम् प्रव्रजन्तम् अनुपेतम् अपेत कृत्यम्, द्वैपायनः विरह कातरः आजुहाव।
पुत्र इति तन्मयतया तरवः अभिनेदुः, तम् सर्व भूत हृदयम् मुनिम् आनतः अस्मि ॥

शब्दार्थ—

यम्	८. जिन (शुकदेव मुनि) को	**इति**	१०. कहकर
प्रव्रजन्तम्	७. संन्यास लेकर जाते हुए	**तन्मयतया**	१२. शुकदेवमय होने से
अनुपेतम्	४. यज्ञोपवीत संस्कार से रहित	**तरवः**	१३. वृक्षों ने (उनका)
अपेत	६. अनधिकारी (तथा)	**अभिनेदुः,**	१४. उत्तर दिया था
कृत्यम्,	५. वैदिक कर्मों के	**तम्**	१८. उन
द्वैपायनः	३. महर्षि वेदव्यास	**सर्व**	१५. सभी
विरह	१. (पुत्र के) वियोग से	**भूत**	१६. प्राणियों के
कातरः	२. दुःखित	**हृदयम्**	१७. हृदय में स्थित
आजुहाव।	११. पुकारने लगे थे (तथा)	**मुनिम्**	१९. शुकदेव मुनि को
पुत्र	९. पुत्र-पुत्र	**आनतः**	२०. (मैं) प्रणाम करता
		अस्मि ॥	२१. हूँ

श्लोकार्थ—पुत्र के वियोग से दुःखित महर्षि वेद व्यास यज्ञोपवीत संस्कार से रहित, वैदिक कर्मों के अनधिकारी तथा संन्यास लेकर जाते हुए जिन शुकदेव मुनि को पुत्र-पुत्र कहकर पुकारने लगे थे तथा शुकदेवमय होने ने वृक्षों ने उनका उत्तर दिया था; सभी प्राणियों के हृदय में स्थित उन शुकदेव मुनि को मैं प्रणाम करता हूँ।

तृतीयः श्लोकः

नैमिषे सूतमासीनमभिवाद्य महामतिम् ।
कथामृतरसास्वादकुशलः शौनकोऽब्रवीत् ॥३॥

पदच्छेद—

नैमिषे सूतम् आसीनम्, अभिवाद्य महामतिम् ।
कथा अमृत रस आस्वाद, कुशलः शौनकः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

नैमिषे	७.	नैमिषारण्य क्षेत्र में	**अमृत**	२.	अमृत
सूतम्	१०.	सूत जी से	**रस**	३.	रस को
आसीनम्	८.	आसन पर बैठे हुए	**आस्वाद**	४.	पीने में
अभिवाद्य	११.	प्रणाम करके	**कुशलः**	५.	चतुर
महामतिम् ।	९	परम बुद्धिमान्	**शौनकः**	६.	महर्षि शौनक ने
कथा	१.	कथारूपी	**अब्रवीत् ॥**	१२.	पूछा

श्लोकार्थ—कथारूपी अमृत रस को पीने में चतुर महर्षि शौनक ने नैमिषारण्य क्षेत्र में आसन पर बैठे हुए परम बुद्धिमान् सूत जी से प्रणाम करके पूछा ।

चतुर्थः श्लोकः

शौनक उवाच

अज्ञानध्वान्तविध्वंसकोटिसूर्यसमप्रभ ।
सूताख्याहि कथासारं मम कर्णरसायनम् ॥४॥

पदच्छेद—

अज्ञान ध्वान्त विध्वंस, कोटि सूर्य सम प्रभ ।
सूत आख्याहि कथा सारम्, मम कर्ण रसायनम् ॥

शब्दार्थ—

अज्ञान	१.	अज्ञान रूपी	**प्रभ ।**	७.	तेजस्वी
ध्वान्त	२.	अन्धकार का	**सूत**	८.	हे सूत जी (आप)
विध्वंस	३.	विनाश करने में	**आख्याहि**	१३.	सुनावें
कोटि	४.	करोड़ों	**कथासारम्**	१२.	सर्वोत्तम कथा
सूर्य	५.	सूर्य के	**मम**	९.	मेरे
सम	६.	समान	**कर्ण**	१०.	कानों को
			रसायनम् ॥	११.	सुखकारी

श्लोकार्थ—अज्ञान रूपी अन्धकार का विनाश करने में करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी हे सूत जी ! आप मेरे कानों को सुखकारी सर्वोत्तम कथा सुनावें ।

पञ्चमः श्लोकः

भक्तिज्ञानविरागाप्तो विवेको वर्धते महान् ।
मायामोहनिरासश्च वैष्णवैः क्रियते कथम् ॥५॥

पदच्छेद—

भक्ति ज्ञान विराग आप्तः, विवेकः वर्धते महान् ।
माया मोह निरासः च, वैष्णवैः क्रियते कथम् ॥

शब्दार्थ—

भक्ति	१.	भक्ति	माया	११.	अज्ञान एवं
ज्ञान	२.	ज्ञान और	मोह	१२.	ममता का
विराग	३.	वैराग्य से	निरासः	१३.	विनाश (कैसे)
आप्तः	४.	प्राप्त होने वाला	च	९.	और
विवेकः	६.	सद् विचार	वैष्णवैः	१०.	वैष्णव जन
वर्धते	८.	बढ़ता है	क्रियते	१४.	करते हैं
महान् ।	५.	उत्तम	कथम् ॥	७.	कैसे

श्लोकार्थ—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से प्राप्त होने वाला उत्तम सद् विचार कैसे बढ़ता है और वैष्णव जन अज्ञान एवं ममता का विनाश कैसे करते हैं ?

षष्ठः श्लोकः

इह घोरे कलौ प्रायो जीवश्चासुरतां गतः ।
क्लेशाक्रान्तस्य तस्यैव शोधने किं परायणम् ॥६॥

पदच्छेद—

इह घोरे कलौ प्रायः, जीवः च आसुरताम् गतः ।
क्लेश आक्रान्तस्य तस्य एव, शोधने किम् परायणम् ॥

शब्दार्थ—

इह	१.	इस	गतः ।	७.	हो गये हैं
घोरे	२.	भयानक	क्लेश	९.	दुःख से
कलौ	३.	कलियुग में	आक्रान्तस्य	१०.	घिरे हुए
प्रायः	५.	अधिकतर	तस्य एव	११.	उस (प्राणी) के
जीवः	४.	प्राणी	शोधने	१२.	उद्धार का
च	८.	इस प्रकार	किम्	१३.	क्या
आसुरताम्	६.	आसुरी स्वभाव के	परायणम् ॥	१४.	उपाय है

श्लोकार्थ—इस भयानक कलियुग में प्राणी अधिकतर आसुरी स्वभाव के हो गये हैं । इस प्रकार दुःख से घिरे हुए उस प्राणी के उद्धार का क्या उपाय है ?

सप्तमः श्लोकः

श्रेयसां यद्भवेच्छ्रेयः पावनानां च पावनम् ।
कृष्णप्राप्तिकरं शश्वत्साधनं तद्वदाधुना ॥७॥

पदच्छेद—

श्रेयसाम् यद् भवेत् श्रेयः, पावनानाम् च पावनम् ।
कृष्ण प्राप्तिकरम् शश्वत्, साधनम् तद् वद अधुना ॥

शब्दार्थ—

श्रेयसाम्	२. कल्याण कारियों का	कृष्ण	७. भगवान् श्रीकृष्ण की
यद्	१. जो (उपाय)	प्राप्तिकरम्	९. प्राप्ति करने वाला
भवेत्	१०. हो	शश्वत्	८. निरन्तर
श्रेयः	३. कल्याण करने वाला	साधनम्	१३. उपाय को
पावनानाम्	४. पवित्र करने वालों को	तद्	१२. उस
च	६. और	वद	१४. बतावें
पावनम् ।	५. पवित्र करने वाला	अधुना ॥	११. अब (आप)

श्लोकार्थ—जो उपाय कल्याणकारियों का कल्याण करने वाला, पवित्र करने वालों को पवित्र करने वाला और भगवान् श्रीकृष्ण की निरन्तर प्राप्ति कराने वाला हो; अब आप उस उपाय को बतावें।

अष्टमः श्लोकः

चिन्तामणिर्लोकसुखं सुरद्रुः स्वर्गसम्पदम् ।
प्रयच्छति गुरुः प्रीतो वैकुण्ठं योगिदुर्लभम् ॥८॥

पदच्छेद—

चिन्तामणिः लोकसुखम्, सुरद्रुः स्वर्ग सम्पदम् ।
प्रयच्छति गुरुः प्रीतः, वैकुण्ठम् योगि दुर्लभम् ॥

शब्दार्थ—

चिन्तामणिः	१. पारसमणि	प्रयच्छति	१०. देते हैं
लोकसुखम्	२. सांसारिक सुख को (तथा)	गुरुः	६. गुरुदेव
सुरद्रुः	३. कल्पवृक्ष	प्रीतः	७. प्रसन्न होने पर
स्वर्ग	४. स्वर्गलोक की	वैकुण्ठम्	९. वैकुण्ठ धाम
सम्पदम् ।	५. सम्पत्ति को (देता है किन्तु)	योगिदुर्लभम् ॥	८. योगियों को कठिनाई से मिलने वाला

श्लोकार्थ—पारसमणि सांसारिक सुख को तथा कल्पवृक्ष स्वर्गलोक की सम्पत्ति को देता है, किन्तु गुरुदेव प्रसन्न होने पर योगियों को कठिनाई से मिलने वाला वैकुण्ठधाम देते हैं।

नवमः श्लोकः

सूत उवाच

प्रीतिः शौनक चित्ते ते ह्यतो वच्मि विचार्य च ।
सर्वसिद्धान्तनिष्पन्नं संसारभयनाशनम् ।९॥

पदच्छेद—

प्रीतिः शौनक चित्ते ते, हि अतः वच्मि विचार्य च ।
सर्व सिद्धान्त निष्पन्नम्, संसार भय नाशनम् ॥

शब्दार्थ—

प्रीतिः	५.	(भगवत्) प्रेम (है)	विचार्य	७.	विचार करके
शौनक	१.	हे शौनक	च ।	११.	और
चित्ते	३.	हृदय में	सर्व	८.	सभी
ते	२.	तुम्हारे	सिद्धान्त	९.	मतों में
हि	४.	निश्चय ही	निष्पन्नम्	१०	स्वीकृत
अतः	६.	इसलिए (मैं)	संसार	१२.	जन्म-मृत्यु के
वच्मि	१५.	कहता हूँ	भय	१३.	भय का
			नाशनम् ॥	१४.	नाश करने वाली (कथा)

श्लोकार्थ—हे शौनक ! तुम्हारे हृदय में निश्चय ही भगवत्-प्रेम है; इसलिए मैं विचार करके सभी मतों में स्वीकृत और जन्म-मृत्यु के भय का नाश करने वाली कथा कहता हूँ ।

दशमः श्लोकः

भक्त्योघवर्धनं यच्च कृष्णसंतोषहेतुकम् ।
तदहं तेऽभिधास्यामि सावधानतया शृणु ॥१०॥

पदच्छेद—

भक्ति ओघ वर्धनम् यद् च, कृष्ण संतोष हेतुकम् ।
तद् अहम् ते अभिधास्यामि, सावधानतया शृणु ॥

शब्दार्थ—

भक्ति	२.	भगवद् भक्ति के	हेतुकम् ।	८.	कारण (है)
ओघ	३.	प्रवाह को	तद्	१०.	उस (कथा) को
वर्धनम्	४.	बढ़ाने वाली	अहम्	९.	मैं
यद्	१.	जो (कथा)	ते	११.	तुमसे
च	५.	और	अभिधास्यामि	१२.	कहूँगा
कृष्ण	६.	श्रीकृष्ण की	सावधानतया	१३.	सावधान मन से
संतोष	७.	प्रसन्नता का	शृणु ॥	१४.	सुनें

श्लोकार्थ—जो कथा भगवद्-भक्ति के प्रवाह को बढ़ाने वाली और श्री कृष्ण की प्रसन्नता का कारण है; मैं उस कथा को तुमसे कहूँगा, सावधान मन से सुनें ।

एकादशः श्लोकः

कालव्यालमुखग्रासत्रासनिर्णाशहेतवे ।
श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम् ॥११॥

पदच्छेद---

काल व्याल मुख ग्रास, त्रास निर्णाश हेतवे ।
श्रीमद्भागवतम् शास्त्रम्, कलौ कीरेण भाषितम् ॥

शब्दार्थ---

काल	३. कालरूपी,	हेतवे ।	९. करने के लिए
व्याल	४. साँप के	श्रीमद्भागवतम्	१०. श्रीमद्भागवत
मुख	५. मुख का	शास्त्रम्	११. महापुराण को
ग्रास	६. ग्रास होने के	कलौ	२. कलियुग में
त्रास	७. भय का	कीरेण	१. श्री शुकदेव मुनि ने
निर्णाश	८. विनाश	भाषितम् ॥	१२. सुनाया है

श्लोकार्थ---श्रीशुकदेव मुनि ने कलियुग में कालरूपी साँप के मुख का ग्रास होने के भय का विनाश करने के लिए श्रीमद्भागवत महापुराण को सुनाया है ।

द्वादशः श्लोकः

एतस्मादपरं किञ्चिन्मनःशुद्ध्यै न विद्यते ।
जन्मान्तरे भवेत्पुण्यं तदा भागवतं लभेत् ॥१२॥

पदच्छेद---

एतस्मात् अपरम् किञ्चित्, मनः शुद्ध्यै न विद्यते ।
जन्मान्तरे भवेत् पुण्यम्, तदा भागवतम् लभेत् ॥

शब्दार्थ---

एतस्मात्	२. इससे बढ़कर	जन्मान्तरे	७. (जब) पूर्व जन्मों के
अपरम्	४. दूसरा (उपाय)	भवेत्	९. उदित होते हैं
किञ्चित्	३. कोई	पुण्यम्	८. पुण्य
मनःशुद्ध्यै	१. मन की शुद्धि के लिए	तदा	१०. तब
न	५. नहीं	भागवतम्	११. श्रीमद्भागवत-श्रवण
विद्यते ।	६. है	लभेत् ॥	१२. प्राप्त होता है

श्लोकार्थ---मन की शुद्धि के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा उपाय नहीं है । जब पूर्वजन्मों के पुण्य उदित होते हैं, तब श्रीमद्भागवत-श्रवण प्राप्त होता है ।

त्रयोदशः श्लोकः

परीक्षिते कथां वक्तुं सभायां संस्थिते शुके ।
सुधाकुम्भं गृहीत्वैव देवास्तत्र समागमन् ॥१३॥

पदच्छेद—

परीक्षिते कथाम् वक्तुम्, सभायाम् संस्थिते शुके ।
सुधा कुम्भम् गृहीत्वा एव, देवाः तत्र समागमन् ॥

शब्दार्थ—

परीक्षिते	१. राजा परीक्षित् को	सुधा	९. अमृत के,
कथाम्	२. भागवत कथा	कुम्भम्	१०. कलश को
वक्तुम्	३. सुनाने के लिए	गृहीत्वा	११. साथ में लेकर
सभायाम्	४. सभा में	एव	१२. ही
संस्थिते	६. बैठ जाने पर	देवाः	८. देवगण
शुके ।	५. शुकदेव मुनि के	तत्र	७. वहाँ
		समागमन् ॥	१३. पधारे थे

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् को भागवत कथा सुनाने के लिये सभा में शुकदेव मुनि के बैठ जाने पर वहाँ देवगण अमृत के कलश को साथ में ले कर ही पधारे थे ।

चतुर्दशः श्लोकः

शुकं नत्वावदन् सर्वे स्वकार्यकुशलाः सुराः ।
कथासुधां प्रयच्छस्व गृहीत्वैव सुधामिमाम् ॥१४॥

पदच्छेद—

शुकम् नत्वा अवदन् सर्वे, स्व कार्य कुशलाः सुरा ।
कथा सुधाम् प्रयच्छस्व, गृहीत्वा एव सुधाम् इमाम् ॥

शब्दार्थ—

शुकम्	५. श्रीशुकदेव मुनि को	**कथा**	१२. कथा रूपी
नत्वा	६. नमस्कार करके	**सुधाम्**	१३. अमृत
अवदन्	७. बोले	**प्रयच्छस्व**	१४. प्रदान करें
सर्वे	३. सभी	**गृहीत्वा**	११. लेकर (हमें)
स्वकार्य	१. अपने कार्य-साधन में	**एव**	८. कि (आप)
कुशलाः	२. चतुर	**सुधाम्**	१०. अमृत को
सुराः ।	४. देवतागण	**इमाम् ॥**	९. इस

श्लोकार्थ—अपने कार्य-साधन में चतुर सभी देवतागण श्रीशुकदेव मुनि को नमस्कार करके बोले कि आप इस अमृत को लेकर हमें कथारूपी अमृत प्रदान करें ।

पञ्चदशः श्लोकः

एवं विनिमये जाते सुधा राज्ञा प्रपीयताम् ।
प्रपास्यामो वयं सर्वे श्रीमद्भागवतामृतम् ॥१५॥

पदच्छेद—

एवम् विनिमये जाते, सुधा राज्ञा प्रपीयताम् ।
प्रपास्यामः वयम् सर्वे, श्रीमद्भागवत अमृतम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	प्रपास्यामः	११. पान करेंगे
विनिमये	२. आदान-प्रदान	वयम्	७. हम
जाते	३. हो जाने पर	सर्वे	८. सब
सुधा	५. अमृत का	श्रीमद्भागवत	९. श्रीमद्भागवत रूपी
राज्ञा	४. राजा परीक्षित्	अमृतम् ॥	१०. अमृत रस का
प्रपीयताम् ।	६. पान करें (तथा)		

श्लोकार्थ—इस प्रकार आदान-प्रदान हो जाने पर राजा परीक्षित् अमृत का पान करें तथा हम सब श्रीमद्भागवत रूपी अमृत रस का पान करेंगे ।

षोडशः श्लोकः

क्व सुधा क्व कथा लोके क्व काचः क्व मणिर्महान् ।
ब्रह्मरातो विचार्यैवं तदा देवाञ्जहास ह ॥१६॥

पदच्छेद—

क्व सुधा क्व कथा लोके, क्व काचः क्व मणिः महान् ।
ब्रह्मरातः विचार्य एवम्, तदा देवान् जहास ह ॥

शब्दार्थ—

क्व	७. कहाँ	मणिः	६. रत्न (उसी प्रकार)
सुधा	८. अमृत (और)	महान् ।	५. कीमती
क्व	९. कहाँ	ब्रह्मरातः	१३. श्री शुकदेव मुनि ने
कथा	१०. श्रीमद्भागवत-कथा	विचार्य	१२. विचार करके
लोके	१. संसार में	एवम्	११. इस प्रकार
क्व	२. कहाँ	तदा	१५. उस समय
काचः	३. काच (और)	देवान्	१६. देवताओं का
क्व	४. कहाँ	जहास	१७. उपहास किया था
		ह ॥	१४. प्रसिद्ध है कि

श्लोकार्थ—संसार में कहाँ काच और कहाँ कीमती रत्न ?. उसी प्रकार कहाँ अमृत और कहाँ श्रीमद्भागवत-कथा ? इस प्रकार विचार करके श्री शुकदेव मुनि ने प्रसिद्ध है कि उस समय देवताओं का उपहास किया था ।

सप्तदशः श्लोकः

अभक्ताँस्ताँश्च विज्ञाय न ददौ स कथामृतम् ।
श्रीमद्भागवती वार्ता सुराणामपि दुर्लभा ॥१७॥

पदच्छेद—

अभक्तान् तान् च विज्ञाय, न ददौ सः कथा अमृतम् ।
श्रीमद्भागवती वार्ता, सुराणाम् अपि दुर्लभा ॥

शब्दार्थ—

अभक्तान्	३. भक्तिभाव से रहित	**कथा**	५. कथा रूपी
तान्	२. उन (देवताओं) को	**अमृतम् ।**	६. अमृत को
च	९. इस प्रकार	**श्रीमद्भागवती**	१०. श्रीमद्भागवत की
विज्ञाय	४. समझ कर	**वार्ता**	११. कथा
न	७. नहीं	**सुराणाम्**	१२. देवताओं को
ददौ	८. दिया था	**अपि**	१३. भी
सः	१. श्री शुकदेव मुनि ने	**दुर्लभा ॥**	१४. दुर्लभ (है)

श्लोकार्थ—श्री शुकदेव मुनि ने उन देवताओं को भक्ति-भाव से रहित समझ कर कथारूपी अमृत को नहीं दिया था । इस प्रकार श्रीमद्भागवत की कथा देवताओं को भी दुर्लभ है ।

अष्टादशः श्लोकः

राज्ञो मोक्षं तथा वीक्ष्य पुरा धाताऽपि विस्मितः ।
सत्यलोके तुलां बद्ध्वातोलयत्साधनान्यजः ॥१८॥

पदच्छेद—

राज्ञः मोक्षम् तथा वीक्ष्य, पुरा धाता अपि विस्मितः ।
सत्यलोके तुलाम् बद्ध्वा, अतोलयत् साधनानि अजः ॥

शब्दार्थ—

राज्ञः	१. राजा परीक्षित् का	**विस्मितः ।**	८. चकित हो गये थे
मोक्षम्	२. मोक्ष	**सत्यलोके**	१०. ब्रह्मलोक में
तथा	९. तथा (उन्होंने)	**तुलाम्**	११. तराजू
वीक्ष्य	३. देखकर	**बद्ध्वा**	१२. बाँधकर
पुरा	४. पूर्वकाल में	**अतोलयत्**	१४. तौला था
धाता	६. ब्रह्मा जी	**साधनानि**	१३. (मोक्ष के) सभी साधनों को
अपि	७. भी	**अजः ॥**	५. अजन्मा

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् का मोक्ष देखकर पूर्वकाल में अजन्मा ब्रह्मा जी भी चकित हो गये थे तथा उन्होंने ब्रह्मलोक में तराजू बाँधकर मोक्ष के सभी साधनों को तौला था ।

एकोनविंशः श्लोकः

लघून्यन्यानि जातानि गौरवेण इदं महत् ।
तदा ऋषिगणाः सर्वे विस्मयं परमं ययुः ॥१९॥

पदच्छेद—

लघूनि अन्यानि जातानि, गौरवेण इदम् महत् ।
तदा ऋषिगणाः सर्वे, विस्मयम् परमम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

लघूनि	३.	हल्के	तदा	१.	उस समय
अन्यानि	२.	दूसरे सभी साधन	ऋषिगणाः	९.	मुनि जन
जातानि	४.	पड़ गये (और)	सर्वे	८.	(इसे देखकर) सभी
गौरवेण	६.	गौरव के कारण	विस्मयम्	११.	आश्चर्य में
इदम्	५.	यह (भागवत शास्त्र)	परमम्	१०.	महान्
महत् ।	७.	महान् (हो गया)	ययुः ॥	१२.	पड़ गये थे

श्लोकार्थ—उस समय दूसरे सभी साधन हल्के पड़ गये और यह भागवत शास्त्र गौरव के कारण महान् हो गया । इसे देखकर सभी मुनिजन महान् आश्चर्य में पड़ गये थे ।

विंशः श्लोकः

मेनिरे भगवद्रूपं शास्त्रं भागवतं कलौ ।
पठनाच्छ्रवणात्सद्यो वैकुण्ठफलदायकम् ॥२०॥

पदच्छेद—

मेनिरे भगवत् रूपम्, शास्त्रम् भागवतम् कलौ ।
पठनात् श्रवणात् सद्यः, वैकुण्ठ फल दायकम् ॥

शब्दार्थ—

मेनिरे	५.	माना था	पठनात्	७.	पाठ करने से (या)
भगवत्	३.	भगवान् का	श्रवणात्	८.	कथा सुनने से (यह)
रूपम्	४.	स्वरूप	सद्यः	९.	तत्काल
शास्त्रम्	२.	महापुराण को	वैकुण्ठ	१०.	परम पुरुषार्थ मोक्ष
भागवतम्	१.	(महर्षियों ने) श्रीमद्भागवत	फल	११.	फल को
कलौ ।	६.	कलियुग में (इसका)	दायकम् ॥	१२.	देने वाला (है)

श्लोकार्थ—महर्षियों ने श्रीमद्भागवत महापुराण को भगवान् का स्वरूप माना था । कलियुग में इसका पाठ करने से या कथा सुनने से यह तत्काल परम पुरुषार्थ मोक्ष फल को देने वाला है ।

एकविंशः श्लोकः

सप्ताहेन श्रुतं चैतत्सर्वथा मुक्तिदायकम् ।
शनकाद्यैः पुरा प्रोक्तं नारदाय दयापरैः ॥२१॥

पदच्छेद—

सप्ताहेन श्रुतम् च एतत्, सर्वथा मुक्ति दायकम् ।
शनक आद्यैः पुरा प्रोक्तम्, नारदाय दया परैः ॥

शब्दार्थ—

सप्ताहेन	२.	सप्ताह-विधि से	**शनक**	१०.	सनक
श्रुतम्	३.	सुनने पर	**आद्यैः**	११.	आदि कुमारों ने
च	१२.	इसे	**पुरा**	७	सत्ययुग में
एतत्	१.	यह (महापुराण)	**प्रोक्तम्**	१४.	कहा था
सर्वथा	४.	निःसन्देह	**नारदाय**	१३.	देवर्षि नारद से
मुक्ति	५.	मोक्ष	**दया**	८.	करुणा
दायकम् ।	६.	देने वाला (है)	**परैः ॥**	९.	परायण

श्लोकार्थ—यह महापुराण सप्ताह-विधि से सुनने पर निःसन्देह मोक्ष देने वाला है । सत्ययुग में करुणा-परायण सनक आदि कुमारों ने इसे देवर्षि नारद से कहा था ।

द्वाविंशः श्लोकः

यद्यपि ब्रह्मसंबन्धाच्छ्रुतमेतत्सुरर्षिणा ।
सप्ताहश्रवणविधिः कुमारैस्तस्य भाषितः ॥२२॥

पदच्छेद—

यद्यपि ब्रह्म संबन्धात्, श्रुतम् एतत् सुरर्षिणा ।
सप्ताह श्रवण विधिः, कुमारैः तस्य भाषितः ॥

शब्दार्थ—

यद्यपि	४.	यद्यपि	**सप्ताह**	८.	सप्ताह
ब्रह्म	१.	ब्रह्मा जी से	**श्रवण**	९.	सुनने की
सम्बन्धात्	२.	(पिता-पुत्र) संबन्ध के कारण	**विधिः**	१०.	विधि को
श्रुतम्	६.	सुना था (तथापि)	**कुमारैः**	११.	सनकादि कुमारों ने (ही)
एतत्	५.	इस (महापुराण) को (उन्हीं से)	**तस्य**	७.	इस (भागवत) के
सुरर्षिणा ।	३.	देवर्षि नारद ने	**भाषितः ॥**	१२.	बताई है

श्लोकार्थ—ब्रह्मा जी से पिता-पुत्र संबन्ध के कारण देवर्षि नारद ने यद्यपि इस महापुराण को उन्हीं से सुना था, तथापि इस भागवत के सप्ताह सुनने की विधि को सनकादि कुमारों ने ही बताई है ।

त्रयोविंशः श्लोकः

शौनक उवाच

लोकविग्रहमुक्तस्य नारदस्यास्थिरस्य च ।
विधिश्रवे कुतः प्रीतिः संयोगः कुत्र तैः सह ॥२३॥

पदच्छेद—

लोक विग्रह मुक्तस्य, नारदस्य अस्थिरस्य च ।
विधि श्रवे कुतः प्रीतिः, संयोगः कुत्र तैः सह ॥

शब्दार्थ—

लोक	१. सांसारिक	श्रवे	८. सुनने में
विग्रह	२. प्रपंच से	कुतः	९. कैसे
मुक्तस्य	३. रहित	प्रीतिः	१०. रुचि (हुई तथा)
नारदस्य	६. देवर्षि नारद की	संयोगः	१४. भेंट (हुई)
अस्थिरस्य	५. एक जगह न टिकने वाले	कुत्र	१३. कहाँ पर
च ।	४. और	तैः	११. उन (सनकादि कुमारों) के
विधि	७. सप्ताह-विधि	सह ॥	१२. साथ

श्लोकार्थ—सांसारिक प्रपंच से रहित और एक जगह न टिकने वाले देवर्षि नारद की सप्ताह-विधि सुनने में कैसे रुचि हुई तथा उन सनकादि कुमारों के साथ कहाँ पर भेंट हुई ?

चतुर्विंशः श्लोकः

सूत उवाच

अत्र ते कीर्तयिष्यामि भक्तियुक्तं कथानकम् ।
शुकेन मम यत्प्रोक्तं रहः शिष्यं विचार्य च ॥२४॥

पदच्छेद—

अत्र ते कीर्तयिष्यामि, भक्ति युक्तम् कथानकम् ।
शुकेन मम यत् प्रोक्तम्, रहः शिष्यम् विचार्य च ॥

शब्दार्थ—

अत्र	१. इस विषय में (मैं)	मम	११. मुझसे
ते	२. आपको	यत्	६. जिसे
कीर्तयिष्यामि	५. कहूँगा	प्रोक्तम्	१३. कहा था
भक्तियुक्तम्	३. भक्ति-भाव से भरी	रहः	१२. एकान्त में
कथानकम् ।	४. एक कथा	शिष्यम्	९. शिष्य
शुकेन	७. श्री शुकदेव मुनि ने	विचार्य	१०. समझ कर
		च ॥	८. अपना

श्लोकार्थ—इस विषय में मैं आपको भक्ति-भाव से भरी एक कथा कहूँगा; जिसे श्री शुकदेव मुनि ने अपना शिष्य समझ कर मुझसे एकान्त में कहा था ।

पञ्चविंशः श्लोकः

एकदा हि विशालायां चत्वार ऋषयोऽमलाः ।
सत्सङ्गार्थं समायाता ददृशुस्तत्र नारदम् ॥२५॥

पदच्छेद—

एकदा हि विशालायाम्, चत्वारः ऋषयः अमलाः ।
सत्सङ्गार्थम् समायाताः, ददृशुः तत्र नारदम् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	२. एक बार	**सत्सङ्गार्थम्**	७. सत्संग के लिए
हि	१. प्रसिद्ध है कि	**समायाताः**	८. पधारे (और)
विशालायाम्	३. विशाला नाम की नगरी में	**ददृशुः**	११. देखे
चत्वारः	५. (सनकादि) चारों	**तत्र**	९. वहाँ पर
ऋषयः	६. कुमार	**नारदम् ॥**	१०. देवर्षि नारद को
अमलाः ।	४. निर्मल मन वाले		

श्लोकार्थ—प्रसिद्ध है कि एक बार विशाला नाम की नगरी में निर्मल मन वाले सनकादि चारों कुमार सत्संग के लिए पधारे और वहाँ पर देवर्षि नारद को देखे ।

षड्विंशः श्लोकः

कुमारा ऊचुः

कथं ब्रह्मन् दीनमुखः कुतश्चिन्तातुरो भवान् ।
त्वरितं गम्यते कुत्र कुतश्चागमनं तव ॥२६॥

पदच्छेद—

कथम् ब्रह्मन् दीनमुखः, कुतः चिन्ता आतुरः भवान् ।
त्वरितम् गम्यते कुत्र, कुतः च आगमनम् तव ॥

शब्दार्थ—

कथम्	४. क्यों (हैं)	**त्वरितम्**	८. शीघ्रता से
ब्रह्मन्	१. हे देवर्षि !	**गम्यते**	१०. जा रहे हैं
दीनमुखः	३. उदास-मुख	**कुत्र**	९. कहाँ
कुतः	५. किस	**कुतः**	१२. कहाँ से
चिन्ता	६. शोक से	**च**	११. तथा
आतुरः	७. व्याकुल (हैं और)	**आगमनम्**	१४. आना (हो रहा है)
भवान् ।	२. आप	**तव ॥**	१३. आपका

श्लोकार्थ—हे देवर्षि ! आप उदास-मुख क्यों हैं ? किस शोक से व्याकुल हैं ? और शीघ्रता से कहाँ जा रहे हैं ? तथा कहाँ से आप का आना हो रहा है ?

सप्तविंशः श्लोकः

इदानीं शून्यचित्तोऽसि गतवित्तो यथा जनः ।
तवेदं मुक्तसङ्गस्य नोचितं वद कारणम् ॥२७॥

पदच्छेद—

इदानीम् शून्यचित्तः असि, गत वित्तः यथा जनः ।
तव इदम् मुक्त सङ्गस्य, न उचितम् वद कारणम् ॥

शब्दार्थ—

इदानीम्	५.	इस समय (आप)	तव	९.	आपकी
शून्यचित्तः	६.	उदास मन	इदम्	१०.	यह (दशा)
असि	७.	हैं	मुक्तसंगस्य	८.	आसक्ति-रहित
गत	२.	चोरी चला गया हो उस	न	१२.	नहीं (है अतः)
वित्तः	१.	जिसका धन	उचितम्	११.	उचित
यथा	४.	समान	वद	१४.	बतावें
जनः ।	३.	व्यक्ति के	कारणम् ॥	१३.	(इसका) कारण

श्लोकार्थ—जिसका धन चोरी चला गया हो, उस व्यक्ति के समान इस समय आप उदास मन हैं । आसक्ति-रहित आपकी यह दशा उचित नहीं है; अतः इसका कारण बतावें ।

अष्टाविंशः श्लोकः

नारद उवाच

अहं तु पृथिवीं यातो ज्ञात्वा सर्वोत्तमामिति ।
पुष्करं च प्रयागं च काशीं गोदावरीं तथा ॥२८॥

पदच्छेद—

अहम् तु पृथिवीम् यातः, ज्ञात्वा सर्वोत्तमाम् इति ।
पुष्करम् च प्रयागम् च, काशीम् गोदावरीम् तथा ॥

शब्दार्थ—

अहम्	५.	मैं	पुष्करम्	९.	पुष्कर क्षेत्र
तु	६.	वहाँ	च	११.	और
पृथिवीम्	१.	पृथ्वीलोक	प्रयागम्	१०.	प्रयाग राज
यातः	७.	गया	च	८.	तथा
ज्ञात्वा	४.	जानकर	काशीम्	१२.	काशी क्षेत्र
सर्वोत्तमाम्	२.	सबसे उत्तम (है)	गोदावरीम्	१४.	नासिक तीर्थ में भी (यात्रा की)
इति ।	३.	ऐसा	तथा ॥	१३.	एवम्

श्लोकार्थ—पृथ्वी लोक सबसे उत्तम है, ऐसा जानकर मैं वहाँ गया तथा पुष्कर क्षेत्र, प्रयाग राज और काशी क्षेत्र एवम् नासिक तीर्थ में भी यात्रा की ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

हरिक्षेत्रं कुरुक्षेत्रं श्रीरङ्गं सेतुबन्धनम् ।
एवमादिषु तीर्थेषु भ्रममाण इतस्ततः ॥२९॥

पदच्छेद—

हरिक्षेत्रम् कुरुक्षेत्रम्, श्रीरङ्गम् सेतुबन्धनम् ।
एवम् आदिषु तीर्थेषु, भ्रममाणः इतः ततः ॥

शब्दार्थ—

हरिक्षेत्रम्	१. (मैं) हरिद्वार	एवम्	५. इसी प्रकार के
कुरुक्षेत्रम्	२. कुरुक्षेत्र	आदिषु	६. अन्य
श्रीरङ्गम्	३. श्रीरङ्गम्	तीर्थेषु	७. तीर्थों में
सेतुबन्धनम् ।	४. रामेश्वरम् (तथा)	भ्रममाणः	९. भ्रमण करता रहा
		इतः ततः ॥	८. इधर-उधर

श्लोकार्थ—मैं हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, श्रीरङ्गम्, रामेश्वरम् तथा इसी प्रकार के अन्य तीर्थों में इधर-उधर भ्रमण करता रहा ।

त्रिंशः श्लोकः

नापश्यं कुत्रचिच्छर्म मनस्संतोषकारकम् ।
कलिनाधर्ममित्रेण धरेयं बाधिताधुना ॥३०॥

पदच्छेद—

न अपश्यम् कुत्रचित् शर्म, मनः संतोष कारकम् ।
कलिना अधर्म मित्रेण, धरा इयम् बाधिता अधुना ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं	कलिना	११. कलियुग ने
अपश्यम्	७. देखी (क्योंकि)	अधर्म	९. पाप के
कुत्रचित्	५. कहीं पर	मित्रेण	१०. साथी
शर्म	४. शान्ति (मैंने)	धरा	१३. पृथ्वी को
मनः	१. (किन्तु) मन	इयम्	१२. इस
संतोष	२. प्रसन्न	बाधिता	१४. पीड़ित (कर रखा है)
कारकम् ।	३. करने वाली	अधुना ॥	८. आजकल

श्लोकार्थ—किन्तु मन प्रसन्न करने वाली शान्ति मैंने कहीं पर नहीं देखी, क्योंकि आजकल पाप के साथी कलियुग ने इस पृथ्वी को पीड़ित कर रखा है ।

एकत्रिंशः श्लोकः

सत्यं नास्ति तपः शौचं दया दानं न विद्यते ।
उदरम्भरिणो जीवा वराकाः कूटभाषिणः ॥३१॥

पदच्छेद—

सत्यम् न अस्ति तपः शौचम्, दया दानम् न विद्यते ।
उदरम्भरिणः जीवाः, वराकाः कूट भाषिणः ॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	१.	(आजकल पृथ्वी पर) सत्य	न	८.	नहीं
न	२.	नहीं	विद्यते ।	९.	है
अस्ति	३.	है	उदरम्भरिणः	१२.	पेट भरने वाले (और)
तपः	४.	तपस्या	जीवाः	११.	प्राणी
शौचम्	५.	शुद्धता	वराकाः	१०.	अभागे
दया	६.	करुणा (और)	कूट	१३.	झूठ
दानम्	७.	त्याग (भी)	भाषिणः ।	१४.	बोलने वाले (हो गये हैं)

श्लोकार्थ—आजकल पृथ्वी पर सत्य नहीं है। तपस्या, शुद्धता, करुणा और त्याग भी नहीं है। अभागे प्राणी पेट भरने वाले और झूठ बोलने वाले हो गये हैं।

द्वात्रिंशः श्लोकः

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः ।
पाखण्डनिरताः सन्तो विरक्ताः सपरिग्रहाः ॥३२॥

पदच्छेद—

मन्दाः सुमन्द मतयः, मन्द भाग्याः हि उपद्रुताः ।
पाखण्ड निरताः सन्तः, विरक्ताः स परिग्रहाः ॥

शब्दार्थ—

मन्दाः	१.	(आजकल प्राणी) आलसी	पाखण्ड	७.	ढोंग में
सुमन्द	२.	अतिमूढ़	निरताः	८.	लगे हुए
मतयः	३.	बुद्धिवाले	सन्तः	९.	साधु जन
मन्दभाग्याः	४.	भाग्यहीन	विरक्ताः	१०.	त्यागी होते हुए (भी)
हि	५.	और	सपरिग्रहाः ॥	११.	सब कुछ ग्रहण करने वाले (हैं)
उपद्रुताः ।	६.	उपद्रव-ग्रस्त (हैं)			

श्लोकार्थ—आजकल प्राणी आलसी, अति मूढ़ बुद्धिवाले, भाग्यहीन और उपद्रव-ग्रस्त हैं। ढोंग में लगे हुए साधुजन त्यागी होते हुए भी सब कुछ ग्रहण करने वाले हैं।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तरुणी प्रभुता गेहे श्यालको बुद्धिदायकः ।
कन्याविक्रयिणो लोभाद्दम्पतीनां च कल्कनम् ॥३३॥

पदच्छेद—

तरुणी प्रभुता गेहे, श्यालकः बुद्धि दायकः ।
कन्या विक्रयिणः लोभात्, दम्पतीनाम् च कल्कनम् ॥

शब्दार्थ—

तरुणी	२.	युवती स्त्री का	कन्या	७.	कन्या
प्रभुता	३.	शासन (है)	विक्रयिणः	८.	बेचने वाले (हो गये हैं)
गेहे	१.	(आजकल) घर में	लोभात्	६.	लोभ के कारण (लोग)
श्यालकः	४.	साला	दम्पतीनाम्	१०.	पति-पत्नी में (परस्पर)
बुद्धिदायकः ।	५.	सलाह देने वाला (है)	च	९.	और
			कल्कनम् ॥	११.	कलह (है)

श्लोकार्थ—आजकल घर में युवती स्त्री का शासन है, साला सलाह देने वाला है, लोभ के कारण लोग कन्या बेचने वाले हो गये हैं और पति-पत्नी में परस्पर कलह है ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

आश्रमा यवनै रुद्धास्तीर्थानि सरितस्तथा ।
देवतायतनान्यत्र दुष्टैर्नष्टानि भूरिशः ॥३४॥

पदच्छेद—

आश्रमाः यवनैः रुद्धाः, तीर्थानि सरितः तथा ।
देवता आयतनानि अत्र, दुष्टैः नष्टानि भूरिशः ॥

शब्दार्थ—

आश्रमाः	४.	आश्रमों को	देवता	१०.	देव
यवनैः	३.	मुसलमानों ने	आयतनानि	११.	मन्दिरों को
रुद्धाः	७.	अधिकार में ले लिया है	अत्र	१.	यहाँ (आजकल)
तीर्थानि	५.	तीर्थों को (और)	दुष्टैः	२.	दुष्ट
सरितः	६.	नदियों को	नष्टानि	१२.	नष्ट कर दिया है
तथा ।	८.	तथा	भूरिशः ॥	९.	बहुत से

श्लोकार्थ—यहाँ आजकल दुष्ट मुसलमानों ने आश्रमों को, तीर्थों को और नदियों को अधिकार में ले लिया है तथा बहुत से देव-मन्दिरों को नष्ट कर दिया है ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

न योगी नैव सिद्धो वा न ज्ञानी सत्क्रियो नरः ।
कलिदावानलेनाद्य साधनं भस्मतां गतम् ॥३५॥

पदच्छेद—

न योगी न एव सिद्धः वा, न ज्ञानी सत्क्रियः नरः ।
कलि दावानलेन अद्य, साधनम् भस्मताम् गतम् ॥

शब्दार्थ—

न	२. न	सत्क्रियः	९. सदाचारी
योगी	३. योगीजन (रहे और)	नरः ।	१०. मनुष्य (भी)
न	४. न	कलि	१२. कलियुग रूपी
एव	६. ही (हैं)	दावानलेन	१३. दावाग्नि से
सिद्धः	५. सिद्ध महात्मा	अद्य	१. आजकल
वा	७. तथा	साधनम्	१४. सारे उपाय
न	११. नहीं (हैं)	भस्मताम्	१५. नष्ट
ज्ञानी	८. ज्ञानी (और)	गतम् ॥	१६. हो गये हैं ।

श्लोकार्थ—आजकल न योगीजन रहे और न सिद्ध महात्मा ही हैं तथा ज्ञानी और सदाचारी मनुष्य भी नहीं हैं। कलियुग-रूपी दावाग्नि से सारे उपाय नष्ट हो गये हैं ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

अट्टशूला जनपदाः शिवशूला द्विजातयः ।
कामिन्यः केशशूलिन्यः सम्भवन्ति कलाविह ॥३६॥

पदच्छेद—

अट्ट शूलाः जनपदाः, शिव शूलाः द्विजातयः ।
कामिन्यः केश शूलिन्यः, सम्भवन्ति कलौ इह ॥

शब्दार्थ—

अट्ट	४. अनाज	कामिन्यः	८. सुन्दरी स्त्रियाँ
शूलाः	५. बेचने वाले	केशशूलिन्यः	९. वेश्यावृत्ति करने वाली
जनपदाः	३. नगरवासी	सम्भवन्ति	१०. हो रही हैं
शिवशूलाः	७. वेद बेचने वाले (और)	कलौ	२. कलियुग में
द्विजातयः ।	६. ब्राह्मण	इह ॥	१. इस समय

श्लोकार्थ—इस समय कलियुग में नगरवासी अनाज बेचने वाले, ब्राह्मण वेद बेचने वाले और सुन्दरी स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति करने वाली हो रही हैं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

एवं पश्यन् कलेर्दोषान् पर्यटन्नवनीमहम् ।
यामुनं तटमापन्नो यत्र लीला हरेरभूत् ॥३७॥

पदच्छेद—

एवम् पश्यन् कलेः दोषान्, पर्यटन् अवनीम् अहम् ।
यामुनम् तटम् आपन्नः, यत्र लीला हरेः अभूत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	यामुनम्	८.	यमुना नदी के
पश्यन्	४.	देखता हुआ (तथा)	तटम्	९.	तट पर (वृन्दावन में)
कलेः	२.	कलियुग के	आपन्नः	१०.	पहुँच गया
दोषान्	३.	दुर्गुणों को	यत्र	११.	जहाँ पर
पर्यटन्	६.	घूमता हुआ	लीला	१३.	लीलायें
अवनीम्	५.	पृथ्वी पर	हरेः	१२.	भगवान् श्रीकृष्ण की
अहम् ।	७.	मैं	अभूत् ॥	१४.	हुई थीं

श्लोकार्थ—इस प्रकार कलियुग के दुर्गुणों को देखता हुआ तथा पृथ्वी पर घूमता हुआ मैं यमुना नदी के तट पर वृन्दावन में पहुँच गया, जहाँ पर भगवान् श्री कृष्ण की लीलायें हुई थीं ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तत्राश्चर्यं मया दृष्टं श्रूयतां तन्मुनीश्वराः ।
एका तु तरुणी तत्र निषण्णा खिन्नमानसा ॥३८॥

पदच्छेद—

तत्र आश्चर्यम् मया दृष्टम्, श्रूयताम् तद् मुनीश्वराः ।
एका तु तरुणी तत्र, निषण्णा खिन्न मानसा ॥

शब्दार्थ—

तत्र	३.	वहाँ पर	मुनीश्वराः ।	१.	हे मुनिवरों !
आश्चर्यम्	५.	आश्चर्य	एका	१०.	एक
मया	२.	मैंने	तु	४.	जो
दृष्टम्	६.	देखा	तरुणी	११.	युवती स्त्री
श्रूयताम्	८.	सुनें	तत्र	९.	वहाँ पर
तद्	७.	उसे (आप)	निषण्णा	१३.	बैठी हुई थी
			खिन्नमानसा ॥	१२.	उदास मन से

श्लोकार्थ—हे मुनिवरों ! मैंने वहाँ पर जो आश्चर्य देखा; उसे आप सुनें । वहाँ पर एक युवती स्त्री उदास मन से बैठी हुई थी ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

वृद्धौ द्वौ पतितौ पार्श्वे निःश्वसन्तावचेतनौ ।
शुश्रूषन्ती प्रबोधन्ती रुदती च तयोः पुरः ॥ ३९ ॥

पदच्छेद—

वृद्धौ द्वौ पतितौ पार्श्वे, निःश्वसन्तौ अचेतनौ ।
शुश्रूषन्ती प्रबोधन्ती, रुदती च तयोः पुरः ॥

शब्दार्थ—

वृद्धौ	५. बूढ़े व्यक्ति	शुश्रूषन्ती	८. (उनकी) सेवा करती हुई
द्वौ	४. दो	प्रबोधन्ती	९. (उन्हें) जगाती हुई
पतितौ	६. पड़े हुए थे	रुदती	१२. रो रही थी
पार्श्वे	१. (उसके) पास में	च	७. और (वह युवती)
निश्वसन्तौ	२. जोर से साँस लेते हुए	तयोः	१०. उनके
अचेतनौ ।	३. मूर्च्छित अवस्था में	पुरः ॥	११. सामने

श्लोकार्थ—उसके पास में जोर से साँस लेते हुए मूर्च्छित अवस्था में दो बूढ़े व्यक्ति पड़े हुए थे और वह युवती उनकी सेवा करती हुई, उन्हें जगाती हुई उनके सामने रो रही थी।

चत्वारिंशः श्लोकः

दशदिक्षु निरीक्षन्ती रक्षितारं निजं वपुः ।
वीज्यमाना शतस्त्रीभिर्बोध्यमाना मुहुर्मुहुः ॥४०॥

पदच्छेद—

दश दिक्षु निरीक्षन्ती, रक्षितारम् निजम् वपुः ।
वीज्यमाना शत स्त्रीभिः, बोध्यमाना मुहुः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

दशदिक्षु	४. दसों दिशाओं को	वीज्यमाना	८. हवा की जाती हुई (और उनसे)
निरीक्षन्ती	५. निहारती हुई (वह युवती)	शत	६. सैंकड़ों
रक्षितारम्	३. रखवाले की खोज में (मानों)	स्त्रीभिः	७. स्त्रियों से
निजम्	१. अपने	बोध्यमाना	१०. समझाई जा रही थी
वपुः ।	२. शरीर के	मुहुः मुहुः ॥	९. बार-बार

श्लोकार्थ—अपने शरीर के रखवाले की खोज में मानों दसों दिशाओं को निहारती हुई वह युवती सैंकड़ों स्त्रियों से हवा की जाती हुई और उनसे बार-बार समझाई जा रही थी।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

दृष्ट्वा दूरादुगतः सोऽहं कौतुकेन तदन्तिकम् ।
मां दृष्ट्वा चोत्थिता बाला विह्वला चाब्रवीद्वचः ॥४१॥

पदच्छेद--

दृष्ट्वा दूरात् गतः सः अहम्, कौतुकेन तद् अन्तिकम् ।
माम् दृष्ट्वा च उत्थिता बाला, विह्वला च अब्रवीत् वचः ॥

शब्दार्थ--

दृष्ट्वा	४. देखकर	दृष्ट्वा	१०. देखकर
दूरात्	३. दूर से	च	१२. और
गतः	७. गया	उत्थिता	११. खड़ी हो गयी
सः	१. सो	बाला	८. (वह) युवती
अहम्	२. मैं	विह्वला	१३. व्याकुल होकर
कौतुकेन	५. कौतूहल के कारण	च	१४. यह
तद् अन्तिकम् ।	६. उसके पास	अब्रवीत्	१६. बोली
माम्	६. मुझे	वचः ॥	१५. वचन

श्लोकार्थ—सो मैं दूर से देखकर कौतूहल के कारण उसके पास गया । वह युवती मुझे देखकर खड़ी हो गयी और व्याकुल होकर यह वचन बोली ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

भो भोः साधो क्षणं तिष्ठ मच्चिन्तामपि नाशय ।
दर्शनं तव लोकस्य सर्वथाघहरं परम् ॥४२॥

पदच्छेद—

भो भोः साधो क्षणम् तिष्ठ, मत् चिन्ताम् अपि नाशय ।
दर्शनम् तव लोकस्य, सर्वथा अघ हरम् परम् ॥

शब्दार्थ—

भो भोः	१. हे हे	नाशय ।	८. दूर करें
साधो	२. महात्माजी !	दर्शनम्	१०. दर्शन
क्षणम्	३. क्षण भर	तव	९. आपका
तिष्ठ	४. रुकें	लोकस्य	११. लोगों का
मत्	६. मेरे	सर्वथा	१२. सदा के लिए
चिन्ताम्	७. शोक को	अघहरम्	१४. पाप नाशक (है)
अपि	५. और	परम् ॥	१३. सर्वोत्तम

श्लोकार्थ—हे-हे महात्मा जी ! क्षण भर रुकें और मेरे शोक को दूर करें । आपका दर्शन लोगों का सदा के लिए सर्वोत्तम पाप-नाशक है ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

बहुधा तव वाक्येन दुःखशान्तिर्भविष्यति ।
यदा भाग्यं भवेद्भूरि भवतो दर्शनं तदा ॥४३॥

पदच्छेद—

बहुधा तव वाक्येन, दुःख शान्तिः भविष्यति ।
यदा भाग्यम् भवेत् भूरि, भवतः दर्शनम् तदा ॥

शब्दार्थ—

बहुधा	३. अधिकतर	भाग्यम्	८. सौभाग्य
तव	१. आपकी	भवेत्	९. होता है
वाक्येन	२. वाणी से	भूरि	७. बड़ा
दुःखशान्तिः	४. दुःखों का नाश	भवतः	११. आपका
भविष्यति ।	५. होगा	दर्शनम्	१२. दर्शन (होता है)
यदा	६. जब	तदा ॥	१०. तब

श्लोकार्थ—आपकी वाणी से अधिकतर दुःखों का नाश होगा। जब बड़ा सौभाग्य होता है तब आपका दर्शन होता है।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

नारद उवाच

कासि त्वं काविमौ चेमा नार्यः काः पद्मलोचनाः ।
वद देवि सविस्तारं स्वस्य दुःखस्य कारणम् ॥४४॥

पदच्छेद—

का आसि त्वम् कौ इमौ च इमाः, नार्यः काः पद्मलोचनाः ।
वद देवि सविस्तार म्, स्वस्य दुःखस्य कारणम् ॥

शब्दार्थ—

का	२. कौन	काः	१०. कौन (हैं)
असि	३. हो	पद्मलोचनाः ।	८. कमल नयनी
त्वम्	१. तुम	वद	१६. बताओ
कौ	५. कौन (हैं)	देवि	११. हे देवि !
इमौ	४. ये दोनों	सविस्तारम्	१२. विस्तार-पूर्वक
च	६. और	स्वस्य	१३. अपने
इमाः	७. ये	दुःखस्य	१४. दुःख का
नार्यः	९. स्त्रियाँ	कारणम् ॥	१५. कारण

श्लोकार्थ—तुम कौन हो ? ये दोनों कौन हैं ? और ये कमल-नयनी स्त्रियाँ कौन हैं ? हे देवि ! विस्तार-पूर्वक अपने दुःख का कारण बताओ ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

बालोवाच

अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ ।
ज्ञानवैराग्यनामानौ कालयोगेन जर्जरौ ॥४५॥

पदच्छेद—

अहम् भक्तिः इति ख्याता, इमौ मे तनयौ मतौ ।
ज्ञान वैराग्य नामानौ, काल योगेन जर्जरौ ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. मैं		मतौ ।	१४. कहे जाते हैं
भक्तिः	२. भक्ति		ज्ञान	५. ज्ञान और
इति	३. इस नाम से		वैराग्य	६. वैराग्य
ख्याता	४. प्रसिद्ध (हूँ)		नामानौ	७. नाम से
इमौ	११. ये दोनों		काल	८. समय के
मे	१२. मेरे		योगेन	९. प्रभाव से
तनयौ	१३. पुत्र		जर्जरौ ।	१०. अत्यन्त वृद्ध

श्लोकार्थ—मैं भक्ति इस नाम से प्रसिद्ध हूँ। ज्ञान और वैराग्य नाम से समय के प्रभाव से अत्यन्त वृद्ध ये दोनों मेरे पुत्र कहे जाते हैं।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

गङ्गाद्याः सरितश्चेमा मत्सेवार्थं समागताः ।
तथापि न च मे श्रेयः सेवितायाः सुरैरपि ॥४६॥

पदच्छेद—

गङ्गा आद्याः सरितः च इमाः, मत् सेवार्थम् समागताः ।
तथापि न च मे श्रेयः, सेवितायाः सुरैः अपि ॥

शब्दार्थ—

गङ्गा आद्याः	३. गंगा इत्यादि		तथापि	८. इस प्रकार
सरितः	४. नदियाँ		न	१३. नहीं (है)
च	१. तथा		च	७. किन्तु
इमाः	२. ये		मे श्रेयः	१२. मुझे सुख-शान्ति
मत्सेवार्थम्	५. मेरी सेवा के लिये		सेवितायाः	१०. सेवा किये जाने पर
समागताः ।	६. आई हैं		सुरैः	९. देवताओं से
			अपि ॥	११. भी

श्लोकार्थ—तथा ये गङ्गा इत्यादि नदियाँ मेरी सेवा के लिये आई हैं; किन्तु इस प्रकार देवताओं से सेवा किये जाने पर भी मुझे सुख-शान्ति नहीं है।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

इदानीं शृणु मद्वार्तां सचित्तस्त्वं तपोधन।
वार्ता मे विततास्प्यस्ति तां श्रुत्वा सुखमावह ॥४७॥

पदच्छेद—

इदानीम् शृणु मत् वार्ताम्, सचित्तः त्वम् तपोधन।
वार्ता मे वितता अपि अस्ति, ताम् श्रुत्वा सुखम् आवह ॥

शब्दार्थ—

इदानीम्	२. अब	मे	९. मेरी
शृणु	७. सुनें	वितता	११. लम्बी-चौड़ी
मत्	५. मेरी	अपि	८. यद्यपि
वार्ताम्	६. बात	अस्ति	१२. है (तो भी)
सचित्तः	४. मन लगाकर	ताम्	१३. उसे
त्वम्	३. आप	श्रुत्वा	१४. सुनकर (आप)
तपोधन।	१. हे तपस्वी जी !	सुखम्	१५. प्रसन्नता
वार्ता	१०. बात	आवह ॥	१६. प्राप्त करेंगे

श्लोकार्थ—हे तपस्वी जी ! अब आप मन लगाकर मेरी बात सुनें। यद्यपि मेरी बात लम्बी-चौड़ी है तो भी उसे सुनकर आप प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

उत्पन्ना द्रविडे साहं वृद्धिं कर्णाटके गता।
क्वचित्क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे जीर्णतां गता ॥४८॥

पदच्छेद—

उत्पन्ना द्रविडे सा अहम्, वृद्धिम् कर्णाटके गता।
क्वचित् क्वचित् महाराष्ट्रे, गुर्जरे जीर्णताम् गता ॥

शब्दार्थ—

उत्पन्ना	४. उत्पन्न हुई	गता।	७. प्राप्त की (तथा)
द्रविडे	३. दक्षिण द्रविड़ देश में	क्वचित् क्वचित्	८. कहीं-कहीं
सा	१. (भक्ति नाम से) वही	महाराष्ट्रे	९. महाराष्ट्र में (और)
अहम्	२. मैं	गुर्जरे	१०. गुजरात में
वृद्धिम्	६. युवावस्था	जीर्णताम्	११. वृद्धावस्था को
कर्णाटके	५. कर्णाटक प्रान्त में	गता ॥	१२. प्राप्त हुई थी

श्लोकार्थ—भक्ति नाम से वही मैं दक्षिण द्रविड़ देश में उत्पन्न हुई, कर्णाटक प्रान्त में युवावस्था प्राप्त की तथा कहीं-कहीं महाराष्ट्र में और गुजरात में वृद्धावस्था को प्राप्त हुई थी।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

तत्र घोरकलेर्योगात् पाखण्डैः खण्डिताङ्गका ।
दुर्बलाहं चिरं याता पुत्राभ्यां सह मन्दताम् ॥४९॥

पदच्छेद—

तत्र घोर कलेः योगात्, पाखण्डैः खण्डित अङ्गका ।
दुर्बला अहम् चिरम् याता, पुत्राभ्याम् सह मन्दताम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	दुर्बला	१२.	कमजोर (और)
घोर	३.	भयंकर	अहम्	२.	मैं
कलेः	४.	कलियुग के	चिरम्	११.	बहुत काल तक
योगात्	५.	प्रभाव से	याता	१४.	रही
पाखण्डैः	६.	पाखण्डियों के द्वारा	पुत्राभ्याम्	९.	दोनों पुत्रों के
खण्डित	८.	भङ्ग कर दिये जाने के कारण	सह	१०.	साथ
अङ्गका ।	७.	अंगों को	मन्दताम् ॥	१३.	निस्तेज

श्लोकार्थ—वहाँ पर मैं भयंकर कलयुग के प्रभाव से पाखण्डियों के द्वारा अंगों को भंग कर दिये जाने के कारण दोनों पुत्रों के साथ बहुत काल तक कमजोर और निस्तेज रही ।

पञ्चाशः श्लोकः

वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपिणी ।
जाताहं युवती सम्यक्प्रेष्ठरूपा तु साम्प्रतम् ॥५०॥

पदच्छेद—

वृन्दावनम् पुनः प्राप्य, नवीना इव सुरूपिणी ।
जाता अहम् युवती सम्यक्, प्रेष्ठरूपा तु साम्प्रतम् ॥

शब्दार्थ—

वृन्दावनम्	१.	(तदनन्तर) वृन्दावन	अहम्	३.	मैं
पुनः	४.	फिर से	युवती	७.	युवती
प्राप्य	२.	आकर	सम्यक्	११.	भलीभाँति
नवीना इव	६.	नई सी	प्रेष्ठरूपा	१२.	कमनीय रूपवाली (हूँ)
सुरूपिणी ।	५.	सुन्दर रूप वाली	तु	१०.	तो
जाता	८.	हो गयी (और)	साम्प्रतम् ॥	९.	अब

श्लोकार्थ—तदनन्तर वृन्दावन आकर मैं फिर से सुन्दर रूपवाली नई सी युवती हो गयी और अब तो भलीभाँती कमनीय रूप वाली हूँ ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

इमौ तु शयितावत्र सुतौ मे क्लिश्यतः श्रमात् ।
इदं स्थानं परित्यज्य विदेशं गम्यते मया ॥५१॥

पदच्छेद—

इमौ तु शयितौ अत्र, सुतौ मे क्लिश्यतः श्रमात् ।
इदम् स्थानम् परित्यज्य, विदेशम् गम्यते मया ॥

शब्दार्थ—

इमौ	५. ये दोनों	श्रमात् ।	७. परिश्रम के कारण
तु	१. किन्तु	इदम्	१०. इस
शयितौ	३. सोये हुए	स्थानम्	११. स्थान को
अत्र	२. यहाँ पर	परित्यज्य	१२. छोड़कर
सुतौ	६. पुत्र	विदेशम्	१३. दूसरे स्थान पर
मे	४. मेरे	गम्यते	१४. जा रही हूँ
क्लिश्यतः	८. क्लेश पा रहे हैं (अतः)	मया ॥	९. मैं

श्लोकार्थ—किन्तु यहाँ पर सोये हुए मेरे ये दोनों पुत्र परिश्रम के कारण क्लेश पा रहे हैं, अतः मैं इस स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जा रही हूँ ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

जरठत्वं समायातौ तेन दुःखेन दुःखिता ।
साहं तु तरुणी कस्मात्सुतौ वृद्धाविमौ कुतः ॥५२॥

पदच्छेद—

जरठत्वम् समायातौ, तेन दुःखेन दुःखिता ।
सा अहम् तु तरुणी कस्मात्, सुतौ वृद्धौ इमौ कुतः ॥

शब्दार्थ—

जरठत्वम्	१. (ये दोनों) बुढ़ापे को	तु	६. कि
समायातौ	२. प्राप्त हो गये हैं	तरुणी	९. युवती
तेन	३. अतः	कस्मात्	१०. क्यों (हूँ तथा)
दुःखेन	४. दुःख से	सुतौ	१२. पुत्र
दुःखिता ।	५. पीड़ित (हूँ)	वृद्धौ	१३. वृद्ध
सा	७. वही	इमौ	११. ये दोनों
अहम्	८. मैं	कुतः ॥	१४. क्यों (हैं)

श्लोकार्थ—ये दोनों बुढ़ापे को प्राप्त हो गये हैं; अतः दुःख से पीड़ित हूँ कि वही मैं युवती क्यों हूँ तथा ये दोनों पुत्र वृद्ध क्यों हैं ?

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

त्रयाणां सहचारित्वाद्वैपरीत्यं कुतः स्थितम् ।
घटते जरठा माता तरुणौ तनयाविति ॥५३॥

पदच्छेद—

त्रयाणाम् सहचारित्वात्, वैपरीत्यम् कुतः स्थितम् ।
घटते जरठा माता, तरुणौ तनयौ इति ॥

शब्दार्थ—

त्रयाणाम्	१. (हम) तीनों के	घटते	११. उचित है
सहचारित्वात्	२. एक साथ रहने पर भी	जरठा	९. वृद्धता
वैपरीत्यम्	३. विपरीत-भाव	माता	८. माता की
कुतः	४. कहाँ से	तरुणौ	७. यौवन (और)
स्थितम् ।	५. हो गया	तनयौ	६. पुत्रों का
		इति ॥	१०. ही

श्लोकार्थ—हम तीनों के एक साथ रहने पर भी विपरीत-भाव कहाँ से हो गया ? पुत्रों का यौवन और माता की वृद्धता ही उचित है ।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

अतः शोचामि चात्मानं विस्मयाविष्टमानसा ।
वद योगनिधे धीमन् कारणं चात्र किं भवेत् ॥५४॥

पदच्छेद—

अतः शोचामि च आत्मानम्, विस्मय आविष्ट मानसा ।
वद योगनिधे धीमन्, कारणम् च अत्र किम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

अतः	१. इसलिए	वद	१०. बतावें
शोचामि	६. चिन्ता कर रही हूँ	योगनिधे	८. योग के सागर
च	७. अतः	धीमन्	९. परम ज्ञानी हे नारद !
आत्मानम्	५. अपने विषय में	कारणम्	१४. कारण
विस्मय	२. आश्चर्य से	च	११. कि
आविष्ट	३. चकित	अत्र	१२. इसमें
मानसा ।	४. चित्तवाली (मैं)	किम्	१३. क्या
		भवेत् ॥	१५. है

श्लोकार्थ—इसलिए आश्चर्य से चकित चित्तवाली मैं अपने विषय में चिन्ता कर रही हूँ । अतः योग के सागर, परम ज्ञानी हे नारद ! बतावें कि इसमें क्या कारण है ।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

नारद उवाच

ज्ञानेनात्मनि पश्यामि सर्वमेतत्तवानघे ।
न विषादस्त्वया कार्यो हरिः शं ते करिष्यति ॥५५॥

पदच्छेद—

ज्ञानेन आत्मनि पश्यामि, सर्वम् एतत् तव अनघे ।
न विषादः त्वया कार्यः, हरिः शम् ते करिष्यति ॥

शब्दार्थ—

ज्ञानेन	२. ज्ञान-दृष्टि से	न	१०. नहीं
आत्मनि	३. अपनी आत्मा में	विषादः	९. शोक
पश्यामि	७. देख रहा हूँ	त्वया	८. तुम्हें
सर्वम्	६. सब कुछ	कार्यः	११. करना चाहिए
एतत्	५. यह	हरिः	१२. भगवान्
तव	४. तुम्हारा	शम्	१४. कल्याण
अनघे ।	१. हे साध्वी !	ते	१३. तुम्हारा
		करिष्यति ॥	१५. करेंगे

श्लोकार्थ—हे साध्वी ! ज्ञान-दृष्टि से अपनी आत्मा में तुम्हारा यह सब कुछ देख रहा हूँ । तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए । भगवान् तुम्हारा कल्याण करेंगे ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

सूत उवाच

क्षणमात्रेण तज्ज्ञात्वा वाक्यमूचे मुनीश्वरः ॥५६॥

पदच्छेद—

क्षण मात्रेण तद् ज्ञात्वा वाक्यम् ऊचे मुनीश्वरः ॥

शब्दार्थ—

क्षणमात्रेण	२. पल भर में	वाक्यम्	५. वचन
तद्	३. उसे	ऊचे	६. बोले
ज्ञात्वा	४. जानकर	मुनीश्वरः ॥	१. देवर्षि नारद

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद पलभर में उसे जानकर वचन बोले ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

नारद उवाच श्रृणुष्वावहिता बाले युगोऽयं दारुणः कलिः ।
तेन लुप्तः सदाचारो योगमार्गस्तपांसि च ॥५७॥

पदच्छेद— श्रृणुष्व अवहिता बाले, युगः अयम् दारुणः कलिः ।
तेन लुप्तः सदाचारः, योगमार्गः तपांसि च ॥

शब्दार्थ—

श्रृणुष्व	३. सुनो	कलिः ।	६. कलि
अवहिता	२. सावधान होकर	तेन	८. अतः
बाले	१. हे बाले !	लुप्तः	१३. लोप हो गया है
युगः	७. युग (है)	सदाचारः	९. सदाचार
अयम्	४. यह	योगमार्गः	१०. योग के पंथ
दारुणः	५. घोर	तपांसि	१२. तप का
		च ॥	११. और

श्लोकार्थ—हे बाले ! सावधान होकर सुनो । यह घोर कलियुग है । अतः सदाचार, योग के पंथ और तप का लोप हो गया है ।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

जना अघासुरायन्ते शाठ्यदुष्कर्मकारिणः ।
इह सन्तो विषीदन्ति प्रहृष्यन्ति ह्यसाधवः ।
धत्ते धैर्यं तु यो धीमान् स धीरः पण्डितोऽथवा ॥५८॥

पदच्छेद— जनाः अघासुरायन्ते, शाठ्य दुष्कर्म कारिणः ।
इह सन्तः विषीदन्ति, प्रहृष्यन्ति हि असाधवः ।
धत्ते धैर्यम् तु यः धीमान्, सः धीरः पण्डितः अथवा ॥

शब्दार्थ—

जनाः	४. लोग	असाधवः ।	८. दुर्जन
अघासुरायन्ते	५. अघासुर हो गये हैं	धत्ते	१४. धारण करता है
शाठ्य	२. धूर्तता और	धैर्यम्	१३. धीरता
दुष्कर्मकारिणः ।	३. कुकर्म करने वाले	तु यः	११. किन्तु जो
इह	१. इस समय	धीमान्	१२. बुद्धिमान् (जन)
सन्तः	६. सज्जन	सः	१५. वही
विषीदन्ति	७. दुःख पा रहे हैं (और)	धीरः	१६. धैर्यशाली
प्रहृष्यन्ति	१०. प्रसन्न हो रहे हैं	पण्डितः	१८. चतुर (है)
हि	९. ही	अथवा ॥	१७. या

श्लोकार्थ—इस समय धूर्तता और कुकर्म करने वाले लोग अघासुर हो गये हैं । सज्जन दुःख पा रहे हैं और दुर्जन ही प्रसन्न हो रहे हैं । किन्तु जो बुद्धिमान् जन धीरता धारण करता है, वही धैर्यशाली या चतुर है ।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

अस्पृश्यानवलोक्येयं शेषभारकरी धरा ।
वर्षे वर्षे क्रमाज्जाता मङ्गलं नापि दृश्यते ॥५९॥

पदच्छेद—

अस्पृश्या अनवलोक्या इयम्, शेष भारकरी धरा ।
वर्षे वर्षे क्रमात् जाता, मङ्गलम् न अपि दृश्यते ॥

शब्दार्थ—

अस्पृश्या	४.	अछूत	वर्षे वर्षे	३.	प्रतिवर्ष
अनवलोक्या	५.	न देखने योग्य (और)	क्रमात्	६.	धीरे-धीरे
इयम्	१.	यह	जाता	९.	होती जारही है (तथा)
शेष	७.	शेषनाग पर	मङ्गलम्	१०.	(अब) शुभकर्म
भारकरी	८.	बोझ डालने वाली	न	१२.	नहीं
धरा ।	२.	पृथ्वी	अपि	११.	भी
			दृश्यते ॥	१३.	दिखाई देते हैं

श्लोकार्थ—यह पृथ्वी प्रतिवर्ष अछूत, न देखने योग्य और धीरे-धीरे शेषनाग पर बोझ डालने वाली होती जा रही है तथा अब शुभकर्म भी नहीं दिखाई देते हैं ।

षष्टितमः श्लोकः

न त्वामपि सुतैः साकं कोऽपि पश्यति साम्प्रतम् ।
उपेक्षितानुरागान्धैर्जर्जरत्वेन संस्थिता ॥६०॥

पदच्छेद—

न त्वाम् अपि सुतैः साकम् , कः अपि पश्यति साम्प्रतम् ।
उपेक्षिता अनुराग अन्धैः, जर्जरत्वेन संस्थिता ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं	पश्यति	९.	देखता था
त्वाम्	४.	तुम्हें	साम्प्रतम् ।	१.	उस समय
अपि	५.	भी	उपेक्षिता	१२.	अपमानित होकर (तुम)
सुतैः	६.	पुत्रों के	अनुराग	१०.	आसक्ति से
साकम्	७.	साथ	अन्धैः	११.	अन्धे लोगों के द्वारा
कः	२.	कोई	जर्जरत्वेन	१३.	बुड्ढी
अपि	३.	भी (व्यक्ति)	संस्थिता ॥	१४.	हो गयी थी ।

श्लोकार्थ—उस समय कोई भी व्यक्ति तुम्हें भी पुत्रों के साथ देखता नहीं था । आसक्ति से अन्धे लोगों के द्वारा अपमानित होकर तुम बुड्ढी हो गयी थी ।

एकषष्टितमः श्लोकः

वृन्दावनस्य संयोगात्पुनस्त्वं तरुणी नवा ।
धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च ॥६१॥

पदच्छेद—

वृन्दावनस्य संयोगात्, पुनः त्वम् तरुणी नवा ।
धन्यम् वृन्दावनम् तेन, भक्तिः नृत्यति यत्र च ॥

शब्दार्थ—

वृन्दावनस्य	१. वृन्दावन के	धन्यम्	९. धन्य (है)
संयोगात्	२. सम्पर्क से	वृन्दावनम्	८. वृन्दावन धाम
पुनः	४. फिर से	तेन	७. अतः
त्वम्	३. तुम	भक्तिः	११. भक्ति
तरुणी	६. युवती (हो गयी हो)	नृत्यति	१२. नृत्य करती है
नवा ।	५. नई	यत्र च ॥	१०. जहाँ कि

श्लोकार्थ—वृन्दावन के सम्पर्क से तुम फिर से नई युवती हो गयी हो । अतः वृन्दावन धाम धन्य है, जहाँ कि भक्ति नृत्य करती है ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

अत्रेमौ ग्राहकाभावान्न जरामपि मुञ्चतः ।
किंचिदात्मसुखेनेह प्रसुप्तिर्मन्यतेऽनयोः ॥६२॥

पदच्छेद—

अत्र इमौ ग्राहक अभावात्, न जराम् अपि मुञ्चतः ।
किंचित् आत्मसुखेन इह, प्रसुप्तिः मन्यते अनयोः ॥

शब्दार्थ—

अत्र	१. यहाँ	मुञ्चतः ।	८. छोड़ पा रहे हैं
इमौ	२. ये (ज्ञान और वैराग्य)	किंचित्	१०. कुछ
ग्राहक	३. जिज्ञासु के	आत्मसुखेन	११. आत्मानन्द से
अभावात्	४. अभाव में	इह	९. (किन्तु) इस समय
न	७. नहीं	प्रसुप्तिः	१३. गहरी नींद
जराम्	५. बुढ़ापे को	मन्यते	१४. जान पड़तो है
अपि	६. भी	अनयोः ॥	१२. इन दोनों में

श्लोकार्थ—यहाँ ये ज्ञान और वैराग्य जिज्ञासु के अभाव में बुढ़ापे को भी नहीं छोड़ पा रहे हैं । किन्तु इस समय कुछ आत्मानन्द से इन दोनों में गहरी नींद जान पड़ती है ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

भक्तिरुवाच

कथं परीक्षिता राज्ञा स्थापितो ह्यशुचिः कलिः ।
प्रवृत्ते तु कलौ सर्वसारः कुत्र गतो महान् ॥६३॥

पदच्छेद—

कथम् परीक्षिता राज्ञा, स्थापितः हि अशुचिः कलिः ।
प्रवृत्ते तु कलौ सर्व, सारः कुत्र गतः महान् ॥

शब्दार्थ—

कथम्	६. क्यों	प्रवृत्ते	१०. प्रारम्भ हो जाने पर
परीक्षिता	२. परीक्षित् ने	तु	८. क्योंकि
राज्ञा	१. राजा	कलौ	९. कलियुग का
स्थापितः	७. स्थापित किया	सर्व	११. सबका
हि	५. ही	सारः	१३. सार
अशुचिः	३. पापी	कुत्र	१४. (न जाने) कहाँ
कलिः ।	४. कलियुग को	गतः	१५. चला गया
		महान् ॥	१२. सर्वोत्तम

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने पापी कलियुग को ही क्यों स्थापित किया । क्योंकि कलियुग का प्रारम्भ हो जाने पर सबका सर्वोत्तम सार न जाने कहाँ चला गया ।

चतुःषष्टितमः श्लोकः

करुणापरेण हरिणाप्यधर्मः कथमीक्ष्यते ।
इमं मे संशयं छिन्धि त्वद्वाचा सुखितास्म्यहम् ॥६४॥

पदच्छेद—

करुणा परेण हरिणा, अपि अधर्मः कथम् ईक्ष्यते ।
इमम् मे संशयम् छिन्धि, त्वद् वाचा सुखिता अस्मि अहम् ॥

शब्दार्थ—

करुणापरेण	१. दयालु होकर	मे	७. मेरे
हरिणा	३. भगवान्	संशयम्	९. सन्देह को
अपि	२. भी	छिन्धि	१०. दूर करें
अधर्मः	५. पाप	त्वद्वाचा	१२. आपकी वाणी से
कथम्	४. कैसे	सुखिता	१३. आनन्दित
ईक्ष्यते ।	६. देख रहे हैं	अस्मि	१४. हो रही हूँ
इमम्	८. इस	अहम् ॥	११. मैं

श्लोकार्थ—दयालु होकर भी भगवान् कैसे पाप देख रहे हैं ? मेरे इस सन्देह को दूर करें । मैं आपकी वाणी से आनन्दित हो रही हूँ ।

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

नारद उवाच

यदि पृष्टस्त्वया बाले प्रेमतः श्रवणं कुरु ।
सर्वं वक्ष्यामि ते भद्रे कश्मलं ते गमिष्यति ॥६५॥

पदच्छेद—

यदि पृष्टः त्वया बाले, प्रेमतः श्रवणम् कुरु ।
सर्वम् वक्ष्यामि ते भद्रे, कश्मलम् ते गमिष्यति ॥

शब्दार्थ—

यदि	१.	यदि	सर्वम्	९.	सब कुछ
पृष्टः	३.	पूछा है (तो)	वक्ष्यामि	१०.	बता दूँगा
त्वया	२.	तुमने	ते	८.	तुम्हें
बाले	४.	हे बाले !	भद्रे	११.	हे कल्याणि !
प्रेमतः	५.	प्रेम से	कश्मलम्	१३.	दुःख
श्रवणम्	६.	श्रवण	ते	१२.	तुम्हारा
कुरु ।	७.	करो	गमिष्यति ॥	१४.	दूर हो जायगा

श्लोकार्थ—यदि तुमने पूछा है तो हे बाले ! प्रेम से श्रवण करो, तुम्हें सब कुछ बता दूँगा । हे कल्याणि ! तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा ।

षट्षष्टितमः श्लोकः

यदा मुकुन्दो भगवान् क्ष्मां त्यक्त्वा स्वपदं गतः ।
तद्दिनात्कलिरायातः सर्वसाधनबाधकः ॥६६॥

पदच्छेद—

यदा मुकुन्दः भगवान्, क्ष्माम् त्यक्त्वा स्वपदम् गतः ।
तद् दिनात् कलिः आयातः, सर्व साधन बाधकः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब	तद्	८.	उसी
मुकुन्दः	३.	श्रीकृष्ण	दिनात्	९.	दिन से
भगवान्	२.	भगवान्	कलिः	१३.	कलियुग
क्ष्माम्	४.	धरा धाम	आयातः	१४.	आ गया था
त्यक्त्वा	५.	छोड़ कर	सर्व	१०.	सभी
स्वपदम्	६.	अपने धाम	साधन	११.	उपायों में
गतः ।	७.	चले गये	बाधकः ॥	१२.	विघ्नकारी

श्लोकार्थ—जब भगवान् श्रीकृष्ण धरा धाम छोड़कर अपने धाम चले गये, उसी दिन से सभी उपायों में विघ्नकारी कलियुग आ गया था ।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

दृष्टो दिग्विजये राज्ञा दीनवच्छरणं गतः ।
न मया मारणीयोऽयं सारङ्ग इव सारभुक् ॥६७॥

पदच्छेद—

दृष्टः दिग्विजये राज्ञा, दीनवत् शरणम् गतः ।
न मया मारणीयः अयम्, सारङ्गः इव सारभुक् ॥

शब्दार्थ—

दृष्टः	६.	देखा (और सोचा कि)	न	१२.	नहीं
दिग्विजये	२.	दिग्विजय के समय	मया	१०.	मुझे
राज्ञा	१.	राजा परीक्षित् ने	मारणीयः	१३.	मारना चाहिये
दीनवत्	३.	अनाथ की भाँति	अयम्	११.	इस (कलियुग) को
शरणम्	४.	शरण में	सारङ्गः	८.	भौंरे के
गतः ।	५.	आये हुये (कलियुग) को	इव	९.	समान
			सारभुक् ॥	७.	सार-अंश के ग्राही

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने दिग्विजय के समय अनाथ की भाँति शरण में आये हुये कलियुग को देखा और सोचा कि सार-अंश के ग्राही भौंरे के समान मुझे इस कलियुग को नहीं मारना चाहिये ।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना ।
तत्फलं लभते सम्यक्कलौ केशवकीर्तनात् ॥६८॥

पदच्छेद—

यत् फलम् न अस्ति तपसा, न योगेन समाधिना ।
तत् फलम् लभते सम्यक्, कलौ केशव कीर्तनात् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जो	तत्	१०.	वह
फलम्	२.	फल	फलम्	११.	फल
न	४.	नहीं	लभते	१५.	प्राप्त हो जाता है
अस्ति	५.	होता	सम्यक्	१४.	भली भाँति
तपसा	३.	तपस्या से	कलौ	९.	कलियुग में
न	८.	नहीं (मिलता है)	केशव	१२.	भगवान् श्री कृष्ण के
योगेन	६.	योग (और)	कीर्तनात् ॥	१३.	भजन से
समाधिना ।	७.	समाधि से भी			

श्लोकार्थ—जो फल तपस्या से नहीं होता, योग और समाधि से भी नहीं मिलता है, कलियुग में वह फल भगवान् श्री कृष्ण के भजन से भली भाँति प्राप्त हो जाता है ।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

एकाकारं कलिं दृष्ट्वा सारवत्सारनीरसम् ।
विष्णुरातः स्थापितवान् कलिजानां सुखाय च ॥६९॥

पदच्छेद—

एक आकारम् कलिम् दृष्ट्वा, सारवत् सार नीरसम् ।
विष्णुरातः स्थापितवान्, कलिजानाम् सुखाय च ॥

शब्दार्थ—

एक	४.	केवल एक	नीरसम् ।	२.	हीन (होने पर भी)
आकारम्	५.	प्रकार के	विष्णुरातः	८.	राजा परीक्षित् ने
कलिम्	३.	कलियुग को	स्थापितवान्	१२.	स्थापित किया है
दृष्ट्वा	७.	देखकर	कलिजानाम्	९.	कलियुगी जीवों के
सारवत्	६.	गुण से युक्त	सुखाय	१०.	कल्याण के लिए
सार	१.	सार तत्त्व से	च ॥	११.	ही (उसे)

श्लोकार्थ—सार तत्त्व से हीन होने पर भी कलियुग को केवल एक प्रकार के गुण से युक्त देखकर राजा परीक्षित् ने कलियुगी जीवों के कल्याण के लिए ही उसे स्थापित किया है ।

सप्ततितमः श्लोकः

कुकर्माचरणात्सारः सर्वतो निर्गतोऽधुना ।
पदार्थाः संस्थिता भूमौ बीजहीनास्तुषा यथा ॥७०॥

पदच्छेद—

कुकर्म आचरणात् सारः, सर्वतः निर्गतः अधुना ।
पदार्थाः संस्थिताः भूमौ, बीज हीनाः तुषाः यथा ॥

शब्दार्थ—

कुकर्म	२.	पाप कर्म में	पदार्थाः	८.	सारी चीजें
आचरणात्	३.	प्रवृत्ति होने के कारण	संस्थिताः	१२.	हो गयी हैं
सारः	५.	सार-अंश	भूमौ	७.	पृथ्वी पर
सर्वतः	४.	सबसे	बीजहीनाः	९.	बीज-रहित
निर्गतः	६.	निकल चुका है	तुषाः	१०.	भूसी के
अधुना ।	१.	आज-कल	यथा ॥	११.	समान

श्लोकार्थ—आज-कल पाप कर्म में प्रवृत्ति होने के कारण सबसे सार-अंश निकल चुका है । पृथ्वी पर सारी चीजें बीज-रहित भूसी के समान हो गयी हैं ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

विप्रैर्भागवती वार्ता गेहे गेहे जने जने ।
कारिता कणलोभेन कथासारस्ततो गतः ॥७१॥

पदच्छेद—

विप्रैः भागवती वार्ता, गेहे गेहे जने जने ।
कारिता कण लोभेन, कथासारः ततः गतः ॥

शब्दार्थ—

विप्रैः	१.	ब्राह्मण लोग	कण	२.	धन के
भागवती	६.	श्रीमद्भागवत की	लोभेन	३	लोभ से
वार्ता	७.	कथा	कथा	१०.	कथा का
गेहे गेहे	४.	घर-घर और	सारः	११.	सार
जने जने ।	५.	जन-जन में	ततः	९.	इसलिए
कारिता	८.	कराने लगे	गतः ॥	१२.	चला गया

श्लोकार्थ—ब्राह्मण लोग धन के लोभ से घर-घर और जन-जन में श्रीमद्भागवत की कथा कराने लगे, इसलिये कथा का सार चला गया ।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

अत्युग्रभूरिकर्माणो नास्तिका रौरवा जनाः ।
तेऽपि तिष्ठन्ति तीर्थेषु तीर्थसारस्ततो गतः ॥७२॥

पदच्छेद—

अति उग्र भूरि कर्माणः, नास्तिकाः रौरवाः जनाः ।
ते अपि तिष्ठन्ति तीर्थेषु, तीर्थसारः ततः गतः ॥

शब्दार्थ—

अति उग्र	२.	अत्यन्त घोर	ते अपि	७.	वे भी
भूरि	१.	नाना प्रकार के	तिष्ठन्ति	९	रहते हैं
कर्माणः	३.	कर्म करने वाले	तीर्थेषु	८.	तीर्थों में
नास्तिकाः	४.	(जो) नास्तिक और	तीर्थसारः	११.	तीर्थों की महिमा
रौरवाः	५.	नारकी	ततः	१०.	इसलिए
जनाः ।	६.	पुरुष (हैं)	गतः ॥	१२.	समाप्त हो गयी

श्लोकार्थ—नाना प्रकार के अत्यन्त घोर कर्म करने वाले जो नास्तिक और नारकी पुरुष हैं, वे भी तीर्थों में रहते हैं । इसलिए तीर्थों की महिमा समाप्त हो गयी ।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

कामक्रोधमहालोभतृष्णाव्याकुलचेतसः ।
तेऽपि तिष्ठन्ति तपसि तपस्सारस्ततो गतः ॥७३॥

पदच्छेद—

काम क्रोध महालोभ, तृष्णा व्याकुल चेतसः ।
ते अपि तिष्ठन्ति तपसि, तपः सारः ततः गतः ॥

शब्दार्थ—

काम	२. कामना	**ते अपि**	७. वे भी
क्रोध	३. क्रोध	**तिष्ठन्ति**	९. ढोंग करने लगे हैं
महालोभ	४. उत्कट लोभ और	**तपसि**	८. तपस्या का
तृष्णा	५. तृष्णा से	**तपः सारः**	११. तपस्या का प्रभाव
व्याकुल	६. अशान्त (है)	**ततः**	१०. इसलिए
चेतसः ।	१. जिनका चित्त	**गतः ॥**	१२. चला गया

श्लोकार्थ—जिनका चित्त कामना, क्रोध, उत्कट लोभ और तृष्णा से अशान्त है, वे भी तपस्या का ढोंग करने लगे हैं। इसलिये तपस्या का प्रभाव चला गया।

चतुःसप्ततितमः श्लोकः

मनसश्चाजयाल्लोभाद्दम्भात्पाखण्डसंश्रयात् ।
शास्त्रानभ्यसनाच्चैव ध्यानयोगफलं गतम् ॥७४॥

पदच्छेद—

मनसः च अजयात् लोभात्, दम्भात् पाखण्ड संश्रयात् ।
शास्त्र अनभ्यसनात् च एव, ध्यानयोग फलम् गतम् ॥

शब्दार्थ—

मनसः	१. मन को	**शास्त्र**	९. शास्त्रों का
च	५. और	**अनभ्यसनात्**	१०. अभ्यास न करने से
अजयात्	२. न जीत सकने से	**च**	८. तथा
लोभात्	३. लोभ	**एव**	११. ही
दम्भात्	४. घमण्ड	**ध्यानयोग**	१२. ध्यानयोग का
पाखण्ड	६. ढोंग का	**फलम्**	१३. फल
संश्रयात् ।	७. सहारा लेने से	**गतम् ॥**	१४. समाप्त हो गया है

श्लोकार्थ—मन को न जीत सकने से, लोभ, घमण्ड और ढोंग का सहारा लेने से तथा शास्त्रों का अभ्यास न करने से ही ध्यानयोग का फल समाप्त हो गया है।

पञ्चसप्ततितमः श्लोकः

पण्डितास्तु कलत्रेण रमन्ते महिषा इव ।
पुत्रस्योत्पादने दक्षा अदक्षा मुक्तिसाधने ॥७५॥

पदच्छेद—

पण्डिताः तु कलत्रेण, रमन्ते महिषाः इव ।
पुत्रस्य उत्पादने दक्षाः, अदक्षाः मुक्ति साधने ॥

शब्दार्थ—

पण्डिताः	२. पण्डित जन	पुत्रस्य	७. संतान
तु	१. तथा	उत्पादने	८. पैदा करने में
कलत्रेण	३. पत्नी के साथ	दक्षाः	९. कुशल (हैं किन्तु)
रमन्ते	६. रमण में लगे हैं (वे)	अदक्षाः	१२. अकुशल (हैं)
महिषाः	४. भैंसे के	मुक्ति	१०. मोक्ष की
इव ।	५. समान	साधने ॥	११. साधना में

श्लोकार्थ—तथा पण्डित जन पत्नी के साथ भैंसे के समान रमण में लगे हैं। वे संतान पैदा करने में कुशल हैं, किन्तु मोक्ष की साधना में अकुशल हैं।

षट्सप्ततितमः श्लोकः

न हि वैष्णवता कुत्र सम्प्रदायपुरस्सरा ।
एवं प्रलयतां प्राप्तो वस्तुसारः स्थले स्थले ॥७६॥

पदच्छेद—

न हि वैष्णवता कुत्र, सम्प्रदाय पुरस्सरा ।
एवम् प्रलयताम् प्राप्तः, वस्तु सारः स्थले स्थले ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं (रहा)	एवम्	७. इस प्रकार
हि	३. भी	प्रलयताम्	११. विनाश को
वैष्णवता	१. वैष्णव-भाव	प्राप्तः	१२. प्राप्त हो गया है
कुत्र	२. कहीं पर	वस्तु	९. सभी चीजों का
सम्प्रदाय	४. परम्परा के	सारः	१०. सार-अंश
पुरस्सरा ।	५. अनुकूल	स्थले स्थले ॥	८. जगह-जगह पर

श्लोकार्थ—वैष्णव-भाव कहीं पर भी परम्परा के अनुकूल नहीं रहा। इस प्रकार जगह-जगह पर सभी चीजों का सार-अंश विनाश को प्राप्त हो गया है।

सप्तसप्ततितमः श्लोकः

अयं तु युगधर्मो हि वर्तते कस्य दूषणम् ।
अतस्तु पुण्डरीकाक्षः सहते निकटे स्थितः ॥७७॥

पदच्छेद—

अयम् तु युगधर्मः हि, वर्तते कस्य दूषणम् ।
अतः तु पुण्डरीकाक्षः, सहते निकटे स्थितः ॥

शब्दार्थ—

अयम्	१.	यह	**दूषणम् ।**	६.	दोष
तु	२.	तो	**अतः तु**	८.	इसीलिए तो
युगधर्मः	३.	युग का स्वभाव	**पुण्डरीकाक्षः**	९.	कमल नयन भगवान् श्रीहरि
हि	४.	ही	**सहते**	१२.	सह रहे हैं
वर्तते	५.	है (इसमें)	**निकटे**	१०.	समीप में
कस्य	७.	किसका ?	**स्थितः ॥**	११.	रहते हुए (भी इसे)

श्लोकार्थ—यह तो युग का स्वभाव ही है । इसमें दोष किसका ? इसीलिये तो कमल नयन भगवान् श्रीहरि समीप में रहते हुए भी इसे सह रहे हैं ।

अष्टसप्ततितमः श्लोकः

सूत उवाच

इति तद्वचनं श्रुत्वा विस्मयं परमं गता ।
भक्तिरूचे वचो भूयः श्रूयतां तच्च शौनक ॥७८॥

पदच्छेद—

इति तद् वचनम् श्रुत्वा, विस्मयम् परमम् गता ।
भक्तिः ऊचे वचः भूयः, श्रूयताम् तद् च शौनक ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	**भक्तिः**	५.	भक्ति
तद्	२.	उन (नारद जी) के	**ऊचे**	१२.	कही
वचनम्	३.	वचन को	**वचः**	११.	बात
श्रुत्वा	४.	सुनकर	**भूयः**	१०.	फिर से (जो)
विस्मयम्	७.	आश्चर्य को	**श्रूयताम्**	१५.	(आप) सुनें
परमम्	६.	अत्यन्त	**तद्**	१४.	उसे
गता ।	८.	प्राप्त हो गयी	**च**	९.	तथा
			शौनक ॥	१३.	हे शौनक जी !

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन नारद जी के वचन को सुनकर भक्ति अत्यन्त आश्चर्य को प्राप्त हो गयी तथा फिर से जो बात कही, हे शौनक जी ! उसे आप सुनें ।

एकोनाशीतितमः श्लोकः

भक्तिरुवाच　　सुरर्षे त्वं हि धन्योऽसि मद्भाग्येन समागतः ।
साधूनां दर्शनं लोके सर्वसिद्धिकरं परम् ॥७९॥

पदच्छेद—　　सुरर्षे त्वम् हि धन्यः असि, मत् भाग्येन समागतः ।
साधूनाम् दर्शनम् लोके, सर्व सिद्धि करम् परम् ॥

शब्दार्थ—

सुरर्षे, त्वम्	१.	हे देवर्षि नारद ! आप	साधूनाम्, दर्शनम्	६.	सन्तों का दर्शन
हि	७.	ही	लोके	५.	संसार में
धन्यः, असि	२.	धन्य हैं (तथा)	सर्वं, सिद्धि	८.	सभी सिद्धियों का
मत्, भाग्येन	३.	मेरे सौभाग्य से	करम्	१०.	कारण (है)
समागतः ।	४.	पधारे हैं	परम् ॥	९.	प्रधान

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारद ! आप धन्य हैं तथा मेरे सौभाग्य से पधारे हैं। संसार में सन्तों का दर्शन ही सभी सिद्धियों का प्रधान कारण है।

अशीतितमः श्लोकः

जयति जगति मायां यस्य कायाधवस्ते, वचनरचनमेकं केवलं चाकलय्य ।
ध्रुवपदमपि यातो यत्कृपातो ध्रुवोऽयम्, सकलकुशलपात्रं ब्रह्मपुत्रं नतास्मि ॥८०॥

पदच्छेद—जयति जगति मायाम् यस्य कायाधवः ते, वचन रचनम् एकम् केवलम् च आकलय्य ।
ध्रुवपदम् अपि यातः यत् कृपातः ध्रुवः अयम्, सकल कुशल पात्रम् ब्रह्मपुत्रम् नता अस्मि ॥

शब्दार्थ—

जयति	८.	जीत लिया था	ध्रुवपदम्	१४.	अटल पद को
जगति, मायाम्	७.	संसार में माया को	अपि	१३.	भी
यस्य	१.	जिस	यातः	१५.	पा लिया था (मैं)
कायाधवः	६.	कयाधू पुत्र प्रह्लाद ने	यत्, कृपातः	१०.	जिस (आप) की कृपा से
ते	२.	आपके	ध्रुवः	१२.	ध्रुव ने
वचन, रचनम्	४.	उपदेश वाक्य को	अयम्	११.	इस
एकम्, केवलम्	३.	केवल एक	सकल, कुशल	१६.	समस्त मंगलों की
च	९.	तथा	पात्रम्, ब्रह्मपुत्रम्	१७.	खान (उन) देवर्षि नारद को
आकलय्य ।	५.	धारण करके	नता अस्मि ॥	१८.	प्रणाम करती हूँ

श्लोकार्थ—जिस आपके केवल एक उपदेश-वाक्य को धारण करके कयाधू पुत्र-प्रह्लाद ने संसार में माया को जीत लिया था तथा जिस आपकी कृपा से इस ध्रुव ने भी अटल-पद को पा लिया था; मैं समस्त मंगलों की खान उन देवर्षि नारद को प्रणाम करती हूँ।

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमहात्म्ये भक्तिनारदसमागमो नाम प्रथमः अध्यायः ॥१॥

अथ द्वितीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

नारद उवाच

वृथा खेदायसे बाले अहो चिन्तातुरा कथम् ।
श्रीकृष्णचरणाम्भोजं स्मर दुःखं गमिष्यति ॥१॥

पदच्छेद—

वृथा खेदायसे बाले, अहो चिन्ता आतुरा कथम् ।
श्रीकृष्ण चरण अम्भोजम्, स्मर दुःखम् गमिष्यति ॥

शब्दार्थ—

वृथा	२. व्यर्थ में	**श्रीकृष्ण**	८. भगवान् श्री कृष्ण के
खेदायसे	३. उदास हो रही हो	**चरण**	९. चरण
बाले	१. हे बाले (तुम)	**अम्भोजम्**	१०. कमल का
अहो	४. अरे ! (तुम)	**स्मर**	११. स्मरण करो (तुम्हारा)
चिन्ता	५. शोक से	**दुःखम्**	१२. (सारा) दुःख
आतुरा	६. व्याकुल	**गमिष्यति ॥**	१३. दूर हो जावेगा
कथम् ।	७. क्यों हो		

श्लोकार्थ—हे बाले ! तुम व्यर्थ में उदास हो रही हो । अरे ! तुम शोक से व्याकुल क्यों हो ? भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमल का स्मरण करो । तुम्हारा सारा दुःख दूर हो जावेगा ।

द्वितीयः श्लोकः

द्रौपदी च परित्राता येन कौरवकश्मलात् ।
पालिता गोपसुन्दर्यः स कृष्णः क्वापि नो गतः ॥२॥

पदच्छेद—

द्रौपदी च परित्राता, येन कौरव कश्मलात् ।
पालिताः गोप सुन्दर्यः, सः कृष्णः क्व अपि नो गतः ॥

शब्दार्थ—

द्रौपदी	३. द्रौपदी की	**सुन्दर्यः**	७. सुन्दर (गोपिकाओं) का
च	५. तथा	**सः**	९. वे भगवान्
परित्राता	४. रक्षा की	**कृष्णः**	१०. श्री कृष्ण
येन	१. जिन्होंने	**क्व**	११. कहीं
कौरव कश्मलात् ।	२. कौरवों के अत्याचार से	**अपि**	१२. भी
पालिताः	८. पालन किया	**नो**	१३. नहीं
गोप	६. ग्वालों की	**गतः ॥**	१४. गये हैं

श्लोकार्थ—जिन्होंने कौरवों के अत्याचार से द्रौपदी की रक्षा की तथा ग्वालों की सुन्दर गोपिकाओं का पालन किया, वे भगवान् श्री कृष्ण कहीं भी नहीं गये हैं ।

तृतीयः श्लोकः

त्वं तु भक्तिः प्रिया तस्य सततं प्राणतोऽधिका ।
त्वयाऽऽहूतस्तु भगवान् याति नीचगृहेष्वपि ॥३॥

पदच्छेद—

त्वम् तु भक्तिः प्रिया तस्य, सततम् प्राणतः अधिका ।
त्वया आहूतः तु भगवान्, याति नीच गृहेषु अपि ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	तुम	त्वया	९.	तुम्हारे
तु	२.	तो	आहूतः	१०.	बुलाने पर
भक्तिः	३.	भक्ति (हो और)	तु	११.	तो
प्रिया	८.	प्रिय (हो) ।	भगवान्	१२.	भगवान् श्री हरि
तस्य	४.	उन (भगवान् श्री कृष्ण) को	याति	१६.	जाते हैं
सततम्	५.	सदा	नीच	१३.	पापियों के
प्राणतः	६.	प्राणों से (भी)	गृहेषु	१४.	घरों में
अधिका।	७.	अधिक	अपि ॥	१५.	भी

श्लोकार्थ—तुम तो भक्ति हो और उन भगवान् श्री कृष्ण को सदा प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। तुम्हारे बुलाने पर तो भगवान् श्रीहरि पापियों के घरों में भी जाते हैं।

चतुर्थः श्लोकः

सत्यादित्रियुगे बोधवैराग्यौ मुक्तिसाधकौ ।
कलौ तु केवला भक्तिर्ब्रह्मसायुज्यकारिणी ॥४॥

पदच्छेद—

सत्य आदि त्रियुगे बोध, वैराग्यौ मुक्ति साधकौ ।
कलौ तु केवला भक्तिः, ब्रह्म सायुज्य कारिणी ॥

शब्दार्थ—

			साधकौ।	७.	साधन (थे),
सत्य	१.	सतयुग	कलौ	९.	कलियुग में
आदि	२.	त्रेता और द्वापर (इन)	तु	८.	किन्तु
त्रियुगे	३.	तीनों युगों में	केवला	१०.	केवल
बोध	४.	ज्ञान और	भक्तिः	११.	भक्ति (ही)
वैराग्यौ	५.	वैराग्य (ही)	ब्रह्मसायुज्य	१२.	सायुज्य मुक्ति को
मुक्ति	६.	मोक्ष के	कारिणी ॥	१३.	देने वाली (है)

श्लोकार्थ—सतयुग, त्रेता और द्वापर इन तीनों युगों में ज्ञान और वैराग्य ही मोक्ष के साधन थे; किन्तु कलियुग में केवल भक्ति ही सायुज्य मुक्ति को देनेवाली है।

पञ्चमः श्लोकः

इति निश्चित्य चिद्रूपः सद्रूपां त्वां ससर्ज ह ।
परमानन्दचिन्मूर्तिः सुन्दरीं कृष्णवल्लभाम् ॥५॥

पदच्छेद—

इति निश्चित्य चित् रूपः, सत् रूपाम् त्वाम् ससर्ज ह ।
परमानन्द चित् मूर्तिः, सुन्दरीम् कृष्ण वल्लभाम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	ससर्ज	१५.	रचा है
निश्चित्य	२.	निश्चय करके	ह ।	३.	ही
चित्	४.	विज्ञान	परमानन्द	६.	अखण्डानन्द
रूपः	५.	स्वरूप	चित्	७.	चैतन्य
सत्	१३.	सत्त्व	मूर्तिः	८.	श्रीहरि ने
रूपाम्	१४.	गुण से	सुन्दरीम्	९.	परम सुन्दरी (और)
त्वाम्	१२.	तुम्हें	कृष्ण	१०.	श्री कृष्ण की
			वल्लभाम् ॥	११.	प्यारी

श्लोकार्थ—ऐसा निश्चय करके ही विज्ञान स्वरूप, अखण्डानन्द चैतन्य श्रीहरि ने परमसुन्दरी और श्रीकृष्ण की प्यारी तुम्हें सत्त्वगुण से रचा है।

षष्ठः श्लोकः

बद्ध्वाञ्जलिं त्वया पृष्टं किं करोमीति चैकदा ।
त्वां तदाऽऽज्ञापयत्कृष्णो मद्भक्तान् पोषयेति च ॥६॥

पदच्छेद—

बद्ध्वा अञ्जलिम् त्वया पृष्टम्, किम् करोमि इति च एकदा ।
त्वाम् तदा आज्ञापयत् कृष्णः, मत् भक्तान् पोषय इति च ॥

शब्दार्थ—

बद्ध्वा	३.	हाथ	त्वाम्	१२.	तुम्हें
अञ्जलिम्	४.	जोड़कर	तदा	१०.	तब
त्वया	२.	तुमने	आज्ञापयत्	१४.	आज्ञा दी थी
पृष्टम्	६.	पूछा था	कृष्णः	११.	भगवान् श्रीहरि ने
किम्	८.	क्या	मत्	१६.	मेरे
करोमि	९.	करूँ ?	भक्तान्	१७.	भक्तों का
इति	५.	यह	पोषय	१८.	पोषण करो
च	७.	कि (मैं)	इति	१३.	यही
एकदा ।	१.	एकबार	च ॥	१५.	कि

श्लोकार्थ—एक बार तुमने हाथ जोड़कर यह पूछा था कि मैं क्या करूँ ? तब भगवान् श्रीहरि ने तुम्हें यही आज्ञा दी थी कि मेरे भक्तों का पोषण करो।

सप्तमः श्लोकः

अङ्गीकृतं त्वया तद्वै प्रसन्नोऽभूद्धरिस्तदा ।
मुक्तिं दासीं ददौ तुभ्यं ज्ञानवैराग्यकाविमौ ॥७॥

पदच्छेद—

अङ्गीकृतम् त्वया तत् वै, प्रसन्नः अभूत् हरिः तदा ।
मुक्तिम् दासीम् ददौ तुभ्यम्, ज्ञान वैराग्यकौ इमौ ॥

शब्दार्थ—

अङ्गीकृतम्	३.	स्वीकार कर लिया था	मुक्तिम्	१०.	मुक्ति को
त्वया	१.	तुमने	दासीम्	११.	दासी रूप में (एवम्)
तत्	२.	उस (आदेश)को	ददौ	१५.	दे दिये
वै	६.	बहुत	तुभ्यम्	९.	तुम्हें
प्रसन्नः	७.	प्रसन्न	ज्ञान	१३.	ज्ञान और
अभूत्	८.	हुये (तथा)	वैराग्यकौ	१४.	वैराग्य को (पुत्ररूप में)
हरिः	५.	श्रीहरि	इमौ ॥	१२.	इन
तदा ।	४.	इससे			

श्लोकार्थ—तुमने उस आदेश को स्वीकार कर लिया था। इससे श्री हरि बहुत प्रसन्न हुये तथा तुम्हें मुक्ति को दासी रूप में एवम् इन ज्ञान और वैराग्य को पुत्र रूप में दे दिये।

अष्टमः श्लोकः

पोषणं स्वेन रूपेण वैकुण्ठे त्वं करोषि च ।
भूमौ भक्तविपोषाय छायारूपं त्वया कृतम् ॥८॥

पदच्छेद—

पोषणम् स्वेन रूपेण, वैकुण्ठे त्वम् करोषि च ।
भूमौ भक्त विपोषाय, छाया रूपम् त्वया कृतम् ॥

शब्दार्थ—

पोषणम्	५.	(भक्तों की) रक्षा	भूमौ	८.	भूलोक में
स्वेन	३.	अपने	भक्त	९.	भक्तों के
रूपेण	४.	(यथार्थ) रूप से	विपोषाय	१०.	पालन के लिये
वैकुण्ठे	२.	वैकुण्ठ लोक में	छाया	१२.	छाया
त्वम्	१.	तुम	रूपम्	१३.	रूप को
करोषि	६.	करती हो	त्वया	११.	तुमने
च ।	७.	तथा	कृतम् ॥	१४.	धारण किया है

श्लोकार्थ—तुम वैकुण्ठ लोक में अपने यथार्थ रूप से भक्तों की रक्षा करती हो तथा भूलोक में भक्तों के पालन के लिये तुमने छाया रूप को धारण किया है।

नवमः श्लोकः

मुक्तिं ज्ञानं विरक्तिं च सह कृत्वा गता भुवि ।
कृतादिद्वापरस्यान्तं महानन्देन संस्थिता ॥९॥

पदच्छेद—

मुक्तिम् ज्ञानम् विरक्तिम् च, सह कृत्वा गता भुवि ।
कृत आदि द्वापरस्य अन्तम्, महत् आनन्देन संस्थिता ॥

शब्दार्थ—

मुक्तिम्	२. मोक्ष	कृत	९. सतयुग
ज्ञानम्	३. ज्ञान	आदि	१०. त्रेता और
विरक्तिम्	५. वैराग्य को	द्वापरस्य	११. द्वापर के
च	४. और	अन्तम्	१२. अन्त तक
सह	६. साथ	महत्	१३. बड़े
कृत्वा	७. लेकर	आनन्देन	१४. आनन्द से
गता	८. आयी हो (तथा)	संस्थिता ॥	१५. रही हो
भुवि ।	१. भूलोक में (तुम)		

श्लोकार्थ—भूलोक में तुम मोक्ष, ज्ञान और वैराग्य को साथ लेकर आयी हो तथा सतयुग, त्रेता और द्वापर के अन्त तक बड़े आनन्द से रही हो ।

दशमः श्लोकः

कलौ मुक्तिः क्षयं प्राप्ता पाखण्डामयपीडिता ।
त्वदाज्ञया गता शीघ्रं वैकुण्ठं पुनरेव सा ॥१०॥

पदच्छेद—

कलौ मुक्तिः क्षयम् प्राप्ता, पाखण्ड आमय पीडिता ।
त्वत् आज्ञया गता शीघ्रम्, वैकुण्ठम् पुनः एव सा ॥

शब्दार्थ—

कलौ	१. कलियुग में	त्वत्	८. तुम्हारी
मुक्तिः	५. मुक्ति	आज्ञया	९. आज्ञा से
क्षयम्	६. क्षय रोग को	गता	१५. चली गई
प्राप्ता	७. प्राप्त हो गई (थी)	शीघ्रम्	१२ तत्काल
पाखण्ड	२. पाखण्ड रूपी	वैकुण्ठम्	१४. वैकुण्ठ लोक को
आमय	३. रोग से	पुनः	११. फिर से
पीडिता ।	४. ग्रस्त	एव	१३. ही
		सा ॥	१०. वह

श्लोकार्थ—कलियुग में पाखण्ड रूपी रोग से ग्रस्त मुक्ति क्षय रोग को प्राप्त हो गई थी । तुम्हारी आज्ञा से वह फिर से तत्काल ही वैकुण्ठ लोक को चली गई ।

एकादशः श्लोकः

स्मृता त्वयापि चात्रैव मुक्तिरायाति याति च ।
पुत्रीकृत्य त्वयेमौ च पार्श्वे स्वस्यैव रक्षितौ ॥११॥

पदच्छेद—

स्मृता त्वया अपि च अत्र एव, मुक्तिः आयाति याति च ।
पुत्रीकृत्य त्वया इमौ च, पार्श्वे स्वस्य एव रक्षितौ ॥

शब्दार्थ—

स्मृता	३.	स्मरण करने पर	**च ।**	९.	और
त्वया	२.	तुम्हारे	**पुत्रीकृत्य**	१३.	पुत्र बनाकर
अपि	५.	भी	**त्वया**	१४.	तुमने
च	१.	तथा	**इमौ**	१२.	इन दोनों को
अत्र	६.	यहाँ (भूलोक में)	**च**	११.	एवम्
एव	७.	भी	**पार्श्वे**	१७.	पास
मुक्तिः	४.	मुक्ति	**स्वस्य**	१५.	अपने
आयाति	८.	आती है	**एव**	१६.	ही
याति	१०.	जाती है	**रक्षितौ ॥**	१८.	रखा है

श्लोकार्थ—तथा तुम्हारे स्मरण करने पर मुक्ति भी यहाँ भूलोक में भी आती है और जाती है। एवम् इन दोनों को पुत्र बनाकर तुमने अपने ही पास रखा है।

द्वादशः श्लोकः

उपेक्षातः कलौ मन्दौ वृद्धौ जातौ सुतौ तव ।
तथापि चिन्तां मुञ्च त्वमुपायं चिन्तयाम्यहम् ॥१२॥

पदच्छेद—

उपेक्षातः कलौ मन्दौ, वृद्धौ जातौ सुतौ तव ।
तथापि चिन्ताम् मुञ्च त्वम्, उपायम् चिन्तयामि अहम् ॥

शब्दार्थ—

उपेक्षातः	२.	उपेक्षा होने से	**तथापि**	८.	फिर भी
कलौ	१.	कलियुग में	**चिन्ताम्**	१०.	चिन्ता
मन्दौ	५.	सुस्त (और)	**मुञ्च**	११.	छोड़ दो
वृद्धौ	६.	वृद्ध	**त्वम्**	९.	तुम
जातौ	७.	हो गये हैं	**उपायम्**	१३.	उपाय
सुतौ	४.	दोनों पुत्र	**चिन्तयामि**	१४.	सोच रहा हूँ
तव ।	३.	तुम्हारे	**अहम् ॥**	१२.	मैं

श्लोकार्थ—कलियुग में उपेक्षा होने से तुम्हारे दोनों पुत्र सुस्त और वृद्ध हो गये हैं; फिर भी तुम चिन्ता छोड़ दो। मैं उपाय सोच रहा हूँ।

त्रयोदशः श्लोकः

कलिना सदृशः कोऽपि युगो नास्ति वरानने ।
तस्मिंस्त्वां स्थापयिष्यामि गेहे गेहे जने जने ॥१३॥

पदच्छेद—

कलिना सदृशः कः अपि, युगः न अस्ति वरानने ।
तस्मिन् त्वाम् स्थापयिष्यामि, गेहे-गेहे जने-जने ॥

शब्दार्थ—

कलिना	२. कलियुग के		तस्मिन्	८. इस कलियुग में
सदृशः	३. समान		त्वाम्	९. तुम्हें
कः अपि	४. कोई		स्थापयिष्यामि	१४. स्थापित करूँगा
युगः	५. युग		गेहे	१०. घर
न	६. नहीं		गेहे	११. घर में (और)
अस्ति	७. है (अतः मैं)		जने	१२. जन
वरानने ।	१. हे सुमुखि !		जने ॥	१३. जन में

श्लोकार्थ—हे सुमुखि ! कलियुग के समान कोई युग नहीं है । अतः मैं इस कलियुग में तुम्हें घर घर में और जन-जन में स्थापित करूँगा ।

चतुर्दशः श्लोकः

अन्यधर्मांस्तिरस्कृत्य पुरस्कृत्य महोत्सवान् ।
तदा नाहं हरेर्दासो लोके त्वां न प्रवर्तये ॥१४॥

पदच्छेद—

अन्य धर्मान् तिरस्कृत्य, पुरस्कृत्य महोत्सवान् ।
तदा न अहम् हरेः दासः, लोके त्वाम् न प्रवर्तये ॥

शब्दार्थ—

अन्य	१. दूसरे		अहम्	११. मैं
धर्मान्	२. धर्मों को		हरेः	१२. श्रीहरि का
तिरस्कृत्य	३. छोड़कर		दासः	१३. दास
पुरस्कृत्य	५. साथ		लोके	७. संसार में
महोत्सवान् ।	४. महोत्सवों के		त्वाम्	६. तुम्हें (यदि)
तदा	१०. तो		न	८. नहीं
न	१४. नहीं		प्रवर्तये ॥	९. स्थापित कर दूँ

श्लोकार्थ—दूसरे धर्मों को छोड़कर महोत्सवों के साथ तुम्हें यदि संसार में नहीं स्थापित करदूँ तो मैं श्रीहरि का दास नहीं ।

पञ्चदशः श्लोकः

त्वदन्विताश्च ये जीवा भविष्यन्ति कलाविह ।
पापिनोऽपि गमिष्यन्ति निर्भयं कृष्णमन्दिरम् ॥१५॥

पदच्छेद—

त्वत् अन्विताः च ये जीवाः, भविष्यन्ति कलौ इह ।
पापिनः अपि गमिष्यन्ति, निर्भयम् कृष्ण मन्दिरम् ॥

शब्दार्थ—

त्वत्	६. भक्ति से	इह ।	२. इस
अन्विताः	७. युक्त	पापिनः	९. पापी होने पर
च	१. तथा	अपि	१०. भी (वे)
ये	४. जो	गमिष्यन्ति	१४. चले जायेंगे
जीवाः	५. प्राणी	निर्भयम्	११. बेधड़क
भविष्यन्ति	८. होंगे	कृष्ण	१२. श्री कृष्ण के
कलौ	३. कलियुग में	मन्दिरम् ॥	१३. वैकुण्ठ धाम को

श्लोकार्थ—तथा इस कलियुग में जो प्राणी भक्ति से युक्त होंगे; पापी होने पर भी वे बेधड़क श्रीकृष्ण के वैकुण्ठधाम को चले जायेंगे ।

षोडशः श्लोकः

येषां चित्ते वसेद्भक्तिः सर्वदा प्रेमरूपिणी ।
न ते पश्यन्ति कीनाशं स्वप्नेऽप्यमलमूर्तयः ॥१६॥

पदच्छेद—

येषाम् चित्ते वसेत् भक्तिः, सर्वदा प्रेम रूपिणी ।
न ते पश्यन्ति कीनाशम्, स्वप्ने अपि अमल मूर्तयः ॥

शब्दार्थ—

येषाम्	१. जिनके	न	१४. नहीं
चित्ते	२. हृदय में	ते	८. वे
वसेत्	७. निवास करती है	पश्यन्ति	१५. देखते हैं
भक्तिः	५. भक्ति	कीनाशम्	१३. यमराज को
सर्वदा	६. सदा	स्वप्ने	११. स्वप्न में
प्रेम	३. प्रेम	अपि	१२. भी
रूपिणी ।	४. रूपा	अमल	९. निर्मल
		मूर्तयः ॥	१०. मन-जन

श्लोकार्थ—जिनके हृदय में प्रेमरूपा भक्ति सदा निवास करती है; वे निर्मल मन-जन स्वप्न में भी यमराज को नहीं देखते हैं ।

सप्तदशः श्लोकः

न प्रेतो न पिशाचो वा राक्षसो वासुरोऽपि वा ।
भक्तियुक्तमनस्कानां स्पर्शने न प्रभुर्भवेत् ॥१७॥

पदच्छेद—

न प्रेतः न पिशाचः वा, राक्षसः वा असुरः अपि वा ।
भक्ति युक्त मनस्कानाम्, स्पर्शने न प्रभुः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

न	४.	न ता	अपि	१३.	भी
प्रेतः	५.	प्रेत	वा।	११.	और
न	७.	न ही	भक्तियुक्त	१.	भक्ति भाव से परिपूर्ण
पिशाचः	८.	पिशाच	मनस्कानाम्	२.	हृदय वाले (भक्तों) को
वा	६.	और	स्पर्शने	३.	छूने में
राक्षसः	१०.	राक्षस	न	१५.	नहीं
वा	९.	तथा	प्रभुः	१४.	समर्थ
असुरः	१२.	असुर	भवेत् ॥	१६.	हो सकते हैं

श्लोकार्थ—भक्तिभाव से परिपूर्ण हृदयवाले भक्तों को छूने में न तो प्रेत और न ही पिशाच तथा राक्षस और असुर भो समर्थ नहीं हो सकते हैं।

अष्टादशः श्लोकः

न तपोभिर्न वेदैश्च न ज्ञानेनापि कर्मणा ।
हरिर्हि साध्यते भक्त्या प्रमाणं तत्र गोपिकाः ॥१८॥

पदच्छेद—

न तपोभिः न वेदैः च, न ज्ञानेन अपि कर्मणा ।
हरिः हि साध्यते भक्त्या, प्रमाणम् तत्र गोपिकाः ॥

शब्दार्थ—

न	२.	न	कर्मणा।	१०.	कर्मकाण्ड से
तपोभिः	३.	तप से	हरिः	१.	भगवान् श्री हरि
न	५.	न	हि	११.	ही
वेदैः	६.	वेद पाठ से	साध्यते	१२.	प्रसन्न किये जा सकते हैं
च	४.	और	भक्त्या	१३.	(वे तो केवल) भक्ति से (प्रसन्न किये जाते हैं)
न	७	न	प्रमाणम्	१६	साक्षी हैं
ज्ञानेन	८.	ज्ञान से	तत्र	१४.	इसमें
अपि	९.	या	गोपिकाः ॥	१५.	गोपियाँ

श्लोकार्थ—भगवान् श्री हरि न तप से और न वेद पाठ से, न ज्ञान से या कर्म काण्ड से ही प्रसन्न किये जा सकते हैं। वे तो केवल भक्ति से प्रसन्न किये जाते हैं। इसमें गोपियाँ साक्षी हैं।

एकोनविंशः श्लोकः

नृणां जन्मसहस्रेण भक्तौ प्रीतिर्हि जायते ।
कलौ भक्तिः कलौ भक्तिर्भक्त्या कृष्णः पुरः स्थितः ॥१९॥

पदच्छेद—

नृणाम् जन्म सहस्रेण, भक्तौ प्रीतिः हि जायते ।
कलौ भक्तिः कलौ भक्तिः, भक्त्या कृष्णः पुरः स्थितः ॥

शब्दार्थ—

नृणाम्	४.	मनुष्यों की	**कलौ**	८.	कलियुग में
जन्म	२.	जन्मों (के प्रयास) से	**भक्तिः**	९.	भक्ति ही (भगवत्प्राप्ति का)
सहस्रेण	१.	हजारों	**कलौ**	१०.	एकमात्र
भक्तौ	५.	भक्ति में	**भक्तिः**	११.	साधन है
प्रीतिः	६.	रुचि	**भक्त्या**	१२.	भक्ति से
हि	३.	ही	**कृष्णः**	१३.	भगवान् श्री कृष्ण
जायते ।	७.	उत्पन्न होती है	**पुरः**	१४.	सामने
			स्थितः ॥	१५.	खड़े रहते हैं

श्लोकार्थ—हजारों जन्मों के प्रयास से ही मनुष्यों की भक्ति में रुचि उत्पन्न होती है। कलियुग में भक्ति ही भगवत्प्राप्ति का एकमात्र साधन है। भक्ति से भगवान् श्री कृष्ण सामने खड़े रहते हैं।

विंशः श्लोकः

भक्तिद्रोहकरा ये च ते सीदन्ति जगत्त्रये ।
दुर्वासा दुःखमापन्नः पुरा भक्तविनिन्दकः ॥२०॥

पदच्छेद—

भक्ति द्रोह कराः ये च, ते सीदन्ति जगत्त्रये ।
दुर्वासाः दुःखम् आपन्नः, पुरा भक्त विनिन्दकः ॥

शब्दार्थ—

भक्ति	३.	भक्ति से	**जगत्त्रये ।**	७.	तीनों लोकों में
द्रोह	४.	विरोध	**दुर्वासाः**	१२.	दुर्वासा ऋषि
कराः	५.	करने वाले हैं	**दुःखम्**	१३.	दुःख को
ये	२.	जो (लोग)	**आपन्नः**	१४.	प्राप्त हुये थे
च	१.	तथा	**पुरा**	९.	प्राचीन काल में
ते	६.	वे	**भक्त**	१०.	भक्तों की
सीदन्ति	८.	कष्ट पाते हैं	**विनिन्दकः ॥**	११.	निन्दा करने वाले

श्लोकार्थ—तथा जो लोग भक्ति से विरोध करने वाले हैं, वे तीनों लोकों में कष्ट पाते हैं। प्राचीन काल में भक्तों की निन्दा करने वाले दुर्वासा ऋषि दुःख को प्राप्त हुये थे।

एकविंशः श्लोकः

अलं व्रतैरलं तीर्थैरलं योगैरलं मखैः ।
अलं ज्ञानकथालापैर्भक्तिरेकैव मुक्तिदा ॥२१॥

पदच्छेद—

अलम् व्रतैः अलम् तीर्थैः, अलम् योगैः अलम् मखैः ।
अलम् ज्ञान कथा आलापैः, भक्तिः एका एव मुक्तिदा ॥

शब्दार्थ—

अलम्	२. व्यर्थ है	**अलम्**	१२.	बेकार है
व्रतैः	१. व्रतोपवास	**ज्ञान**	९.	ज्ञान की
अलम्	४. निष्फल है	**कथा**	१०.	कथाओं को
तीर्थैः	३. तीर्थाटन	**आलापैः**	११.	कहना
अलम्	६. बेकार है	**भक्तिः**	१४.	भक्ति
योगैः	५. योग-समाधि	**एका**	१३.	क्योंकि (केवल)
अलम्	८. व्यर्थ हैं (तथा)	**एव**	१५.	ही
मखैः ।	७. यज्ञानुष्ठान	**मुक्तिदा ॥**	१६.	मोक्ष देने वाली है

श्लोकार्थ—व्रतोपवास व्यर्थ है, तीर्थाटन निष्फल है, योग-समाधि बेकार है, यज्ञानुष्ठान व्यर्थ हैं तथा ज्ञान की कथाओं को कहना बेकार है, क्योंकि केवल भक्ति ही मोक्ष देने वाली है ।

द्वाविंशः श्लोकः

सूत उवाच

इति नारदनिर्णीतं स्वमाहात्म्यं निशम्य सा ।
सर्वाङ्गपुष्टिसंयुक्ता नारदं वाक्यमब्रवीत् ॥२२॥

पदच्छेद—

इति नारद निर्णीतम्, स्व माहात्म्यम् निशम्य सा ।
सर्वाङ्ग पुष्टि संयुक्ता, नारदम् वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	**सर्व**	८.	सभी
नारद	२. देवर्षि नारद जी से	**अङ्ग**	९.	अङ्गों में
निर्णीतम्	३. वर्णित	**पुष्टि**	१०.	पुष्टता को
स्व	४. अपनी	**संयुक्ता**	११.	प्राप्त करती हुई
माहात्म्यम्	५. महिमा को	**नारदम्**	१२.	देवर्पि नारद से
निशम्य	६. सुनकर	**वाक्यम्**	१३.	यह (वचन)
सा ।	७ वह (भक्ति)	**अब्रवीत् ॥**	१४.	बोली

श्लोकार्थ—इस प्रकार देवर्षि नारद जी से वर्णित अपनी महिमा को सुनकर वह सुनकर वह भक्ति सभी अङ्गों में पुष्टता को प्राप्त करती हुई देवर्षि नारद से यह वचन बोली ।

त्रयोविंशः श्लोकः

भक्तिरुवाच

अहो नारद धन्योऽसि प्रीतिस्ते मयि निश्चला ।
न कदाचिद्विमुञ्चामि चित्ते स्थास्यामि सर्वदा ॥२३॥

पदच्छेद—

अहो नारद धन्यः असि, प्रीतिः ते मयि निश्चला ।
न कदाचित् विमुञ्चामि, चित्ते स्थास्यामि सर्वदा ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अरे	निश्चला ।	७.	अटल
नारद	२	नारद जी ! (आप)	न	१०.	नहीं
धन्यः	३.	धन्य	कदाचित्	९.	कभी भी
असि	४.	हैं	विमुञ्चामि	११.	छोड़ूंगी
प्रीतिः	८.	प्रेम (है मैं आपको)	चित्ते	१३.	हृदय में
ते	६.	आपका	स्थास्यामि	१४.	स्थित रहूँगी
मयि	५	मुझ में	सर्वदा ॥	१२.	सदा (आपके)

श्लोकार्थ—अरे नारद जी ! आप धन्य हैं। मुझ में आपका अटल प्रेम है । मैं आपको कभी भी नहीं छोड़ूंगी । सदा आपके हृदय में स्थित रहूँगी ।

चतुर्विंशः श्लोकः

कृपालुना त्वया साधो मद्बाधा ध्वंसिता क्षणात् ।
पुत्रयोश्चेतना नास्ति ततो बोधय बोधय ॥२४॥

पदच्छेद—

कृपालुना त्वया साधो, मत् बाधा ध्वंसिता क्षणात् ।
पुत्रयोः चेतना न अस्ति, ततः बोधय बोधय ॥

शब्दार्थ—

कृपालुना	२.	दयालु	पुत्रयोः	८.	मेरे दोनों पुत्रों में (भी)
त्वया	३.	आपने	चेतना	९.	चेतना
साधो	१.	हे देवर्षि नारद जी !	न	१०.	नहीं
मत्	४.	मेरे	अस्ति	११.	है
बाधा	५.	कष्ट को	ततः	१२.	अतः (इन्हें)
ध्वंसिता	७.	नष्ट कर दिया है	बोधय	१३.	अवश्य
क्षणात् ।	६.	क्षण भर में	बोधय ॥	१४.	चेतना में लावें

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारद जी ! दयालु आपने मेरे कष्ट को क्षणभर में नष्ट कर दिया है । मेरे दोनों पुत्रों में भी चेतना नहीं है; अतः इन्हें अवश्य चेतना में लावें ।

पञ्चविंशः श्लोकः

सूत उवाच

तस्या वचः समाकर्ण्य कारुण्यं नारदो गतः ।
तयोर्बोधनमारेभे कराग्रेण विमर्दयन् ॥२५॥

पदच्छेद—

तस्याः वचः समाकर्ण्य, कारुण्यम् नारदः गतः ।
तयोः बोधनम् आरेभे, कर अग्रेण विमर्दयन् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	२.	उस (भक्ति) की	तयोः	१०.	उन्हें
वचः	३.	वाणी	बोधनम्	११.	जगाना
समाकर्ण्य	४.	सुनकर	आरेभे	१२.	प्रारम्भ किये
कारुण्यम्	५.	करुणा से	कर	७.	हाथ की
नारदः	१.	देवर्षि नारद	अग्रेण	८.	अंगुलियों से
गतः ।	६.	भर गये (तथ)	विमर्दयन् ॥	९.	सहलाते हुये

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद उस भक्ति की वाणी सुनकर करुणा से भर गये तथा हाथ की अंगुलियों से सहलाते हुये उन्हें जगाना प्रारम्भ किये ।

षड्विंशः श्लोकः

मुखं संयोज्य कर्णान्ते शब्दमुच्चैः समुच्चरन् ।
ज्ञान प्रबुध्यतां शीघ्रं रे वैराग्य प्रबुध्यताम् ॥२६॥

पदच्छेद—

मुखम् संयोज्य कर्णान्ते, शब्दम् उच्चैः समुच्चरन् ।
ज्ञान प्रबुध्यताम् शीघ्रम्, रे वैराग्य प्रबुध्यताम् ॥

शब्दार्थ—

	०.	देवर्षि नारद ने	समुच्चरन् ।	६.	करते हुए (कहा)
मुखम्	२.	मुख	ज्ञान	७.	हे ज्ञान
संयोज्य	३.	लगाकर	प्रबुध्यताम्	९.	उठो
कर्णान्ते	१.	कान के पास	शीघ्रम्	८.	शीघ्र
शब्दम्	५.	ध्वनि	रे वैराग्य	१०.	हे वैराग्य !
उच्चैः	४.	ऊँची	प्रबुध्यताम् ॥	११.	उठो

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद ने कान के पास मुख लगाकर ऊँची ध्वनि करते हुए कहा; हे ज्ञान ! शीघ्र उठो, हे वैराग्य ! उठो ।

सप्तविंशः श्लोकः

वेदवेदान्तघोषैश्च गीतापाठैर्मुहुर्मुहुः ।
बोध्यमानौ तदा तेन कथंचिचोत्थितौ बलात् ॥२७॥

पदच्छेद—

वेद वेदान्त घोषैः च, गीता पाठैः मुहुः मुहुः ।
बोध्यमानौ तदा तेन, कथंचित् च उत्थितौ बलात् ॥

शब्दार्थ—

वेद	२.	वेद (और)	बोध्यमानौ	६.	जगाने पर (वे)
वेदान्त	३.	शास्त्रों के	तदा	१०.	उस समय
घोषैः	४.	नाद	तेन	१.	देवर्षि नारद के द्वारा
च	५.	तथा	कथंचित्	११.	कठिनाई
गीता	७.	गीता के	च	१२.	और
पाठैः	८.	पाठ से	उत्थितौ	१४.	उठे
मुहुः मुहुः ।	६.	बार-बार	बलात् ॥	१३.	जबरदस्ती से

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद के द्वारा वेद और शास्त्रों के नाद तथा बार-बार गीता के पाठ से जगाने पर वे उस समय कठिनाई और जबरदस्ती से उठे ।

अष्टाविंशः श्लोकः

नेत्रैरनवलोकन्तौ जृम्भन्तौ सालसावुभौ ।
बकवत्पलितौ प्रायः शुष्ककाष्ठसमाङ्गकौ ॥२८॥

पदच्छेद—

नेत्रैः अनवलोकन्तौ, जृम्भन्तौ स अलसौ उभौ ।
बकवत् पलितौ प्रायः, शुष्क काष्ठ सम अङ्गकौ ॥

शब्दार्थ—

नेत्रैः	५.	आँखों से	पलितौ	२.	उज्ज्वल केशों वाले (एवं)
अनवलोकन्तौ	६.	न देखते हुये (तथा)	प्रायः	८.	प्रायः
जृम्भन्तौ	७.	जम्भाई लेते हुये	शुष्क	६.	सूखे
स अलसौ	३.	आलस्य युक्त	काष्ठ	१०	काठ के
उभौ ।	४.	वे दोनों	सम	११.	समान
बकवत्	१.	बगुले के समान	अङ्गकौ ॥	१२.	अंगों से युक्त (थे)

श्लोकार्थ—बगुले के समान उज्ज्वल केशों वाले एवम् आलस्य युक्त वे दोनों आँखों से न देखते हुये तथा जम्भाई लेते हुये प्रायः सूखे काठ के समान अंगों से युक्त थे ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

क्षुत्क्षामौ तौ निरीक्ष्यैव पुनः स्वापपरायणौ ।
ऋषिश्चिन्तापरो जातः किं विधेयं मयेति च ॥२९॥

पदच्छेद—

क्षुध क्षामौ तौ निरीक्ष्य एव, पुनः स्वाप परायणौ ।
ऋषिः चिन्ता परः जातः, किम् विधेयम् मया इति च ॥

शब्दार्थ—

क्षुध	३.	भूख से	**ऋषिः**	१.	देवर्षि नारद
क्षामौ	४.	व्याकुल	**चिन्ता**	११.	चिन्ता से
तौ	२.	उन्हें	**परः**	१२.	ग्रस्त
निरीक्ष्य	९.	देखकर	**जातः**	१३.	हो गये
एव	१०.	ही	**किम्**	१६.	क्या
पुनः	६.	फिर से	**विधेयम्**	१७.	करना चाहिये
स्वाप	७.	नींद में	**मया**	१५.	मुझे
परायणौ ।	८.	तत्पर	**इति**	१४.	कि
			च ॥	५.	और

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद उन्हें भूख से व्याकुल और फिर से नींद में तत्पर देखकर ही चिन्ता से ग्रस्त हो गये कि मुझे क्या करना चाहिये ।

त्रिंशः श्लोकः

अहो निद्रा कथं याति वृद्धत्वं च महत्तरम् ।
चिन्तयन्निति गोविन्दं स्मारयामास भार्गव ॥३०॥

पदच्छेद—

अहो निद्रा कथम् याति, वृद्धत्वम् च महत्तरम् ।
चिन्तयन् इति गोविन्दम्, स्मारयामास भार्गव ॥

शब्दार्थ—

अहो	२.	बड़े दुःख की बात है कि	**महत्तरम् ।**	५.	पुराना
निद्रा	३.	(इनकी) नींद	**चिन्तयन्**	१०.	सोचते हुये (देवर्षि नारद ने)
कथम्	७.	कैसे	**इति**	९.	यह
याति	८.	दूर होगा	**गोविन्दम्**	११.	भगवान् श्री कृष्ण का
वृद्धत्वम्	६.	बुढ़ापा	**स्मारयामास**	१२.	स्मरण किया
च	४.	और	**भार्गव ॥**	१.	हे शौनक जी !

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! बड़े दुःख की बात है कि इनकी नींद और पुराना बुढ़ापा कैसे दूर होगा, यह सोचते हुये देवर्षि नारद ने भगवान् श्रीकृष्ण का स्मरण किया ।

एकत्रिंशः श्लोकः

व्योमवाणी तदैवाभून्मा ऋषे खिद्यतामिति ।
उद्यमः सफलस्तेऽयं भविष्यति न संशयः ॥३१॥

पदच्छेद—

व्योमवाणी तदा एव अभूत्, मा ऋषे खिद्यताम् इति ।
उद्यमः सफलः ते अयम्, भविष्यति न संशयः ॥

शब्दार्थ—

व्योमवाणी	३. आकाशवाणी	इति ।	५. कि
तदा	१. उसी समय	उद्यमः	११. प्रयास
एव	२. यह	सफलः	१२. सफल
अभूत्	४. हुई	ते	९. आपका
मा	७. मत	अयम्	१०. यह
ऋषे	६. हे नारद जी ! (आप)	भविष्यति	१३. होगा (इसमें)
खिद्यताम्	८. खेद करें	न	१५. नहीं (है)
		संशयः ॥	१४. संदेह

श्लोकार्थ—उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि हे नारद जी ! आप खेद मत करें । आपका यह प्रयास सफल होगा । इसमें संदेह नहीं है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

एतदर्थं तु सत्कर्म सुरर्षे त्वं समाचर ।
तत्ते कर्माभिधास्यन्ति साधवः साधुभूषणाः ॥३२॥

पदच्छेद—

एतदर्थम् तु सत् कर्म, सुरर्षे त्वम् समाचर ।
तत् ते कर्म अभिधास्यन्ति, साधवः साधु भूषणाः ॥

शब्दार्थ—

एतदर्थम्	१. इसके लिये	तत्	१२. वह
तु	२. तो	ते	११. आपको
सत्	५. उत्तम	कर्म	१३. कर्म
कर्म	६. कर्म का	अभिधास्यन्ति	१४. बतावेंगे
सुरर्षे	३. हे देवर्षि नारद !	साधवः	१०. साधुजन
त्वम्	४. आप	साधु	८. महात्माओं में
समाचर ।	७. अनुष्ठान करें	भूषणाः ॥	९. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—इसके लिये तो हे देवर्षि नारद ! आप उत्तम कर्म का अनुष्ठान करें । महात्माओं में श्रेष्ठ साधुजन आपको वह कर्म बतावेंगे ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

सत्कर्मणि कृते तस्मिन् सनिद्रा वृद्धतानयोः ।
गमिष्यति क्षणाद्भक्तिः सर्वतः प्रसरिष्यति ॥३३॥

पदच्छेद—

सत् कर्मणि कृते तस्मिन्, सनिद्रा वृद्धता अनयोः ।
गमिष्यति क्षणात् भक्तिः, सर्वतः प्रसरिष्यति ॥

शब्दार्थ—

सत्	२.	उत्तम	अनयोः ।	५	इन दोनों का
कर्मणि	३.	कर्म के	गमिष्यति	९.	दूर हो जावेगा (तथा)
कृते	४.	कर लेने पर	क्षणात्	८.	क्षण भर में
तस्मिन्	१.	उस	भक्तिः	११.	भक्ति
सनिद्रा	६.	नींद के साथ-साथ	सर्वतः	१०.	चारों ओर
वृद्धता	७.	बुढ़ापा	प्रसरिष्यति ॥	१२.	फैल जायेगी

श्लोकार्थ—उस उत्तम कर्म के कर लेने पर इन दोनों का नींद के साथ-साथ बुढ़ापा क्षण भर में दूर हो जायेगा तथा चारों भक्ति फैल जायेगी ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

इत्याकाशवचः स्पष्टं तत्सर्वैरपि विश्रुतम् ।
नारदो विस्मयं लेभे नेदं ज्ञातमिति ब्रुवन् ॥३४॥

पदच्छेद—

इति आकाश वचः स्पष्टम्, तत् सर्वैः अपि विश्रुतम् ।
नारदः विस्मयम् लेभे, न इदम् ज्ञातम् इति ब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	नारदः	१४.	देवर्षि नारद
आकाश	५.	आकाश	विस्मयम्	१५.	आश्चर्य में
वचः	६.	वाणी को	लेभे	१६.	पड़ गये
स्पष्टम्	७.	साफ-साफ	न	१०.	नहीं
तत्	४.	उस	इदम्	९.	इसे
सर्वैः	२.	सभी (लोगों ने)	ज्ञातम्	११.	समझ सका
अपि	३.	ही	इति	१२.	ऐसा
विश्रुतम् ।	८.	सुना (तदनन्तर)	ब्रुवन् ॥	१३.	कहते हुये

श्लोकार्थ—इस प्रकार सभी लोगों ने ही उस आकाशवाणी को साफ-साफ सुना । तदनन्तर 'इसे नहीं समझ सका' ऐसा कहते हुये देवर्षि नारद आश्चर्य में पड़ गये ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

नारद उवाच

अनयाऽऽकाशवाण्यापि गोप्यत्वेन निरूपितम् ।
किं वा तत्साधनं कार्यं येन कार्यं भवेत्तयोः ॥३५॥

पदच्छेद—

अनया आकाश वाण्या अपि, गोप्यत्वेन निरूपितम् ।
किम् वा तत् साधनम् कार्यम्, येन कार्यम् भवेत् तयोः ॥

शब्दार्थ—

अनया	१.	इस	वा	७.	अतः
आकाश	२.	आकाश	तत्	८.	वह
वाण्या	३.	वाणी ने	साधनम्	१०.	उपाय
अपि	४.	भी (उपाय को)	कार्यम्	११.	करना चाहिये
गोप्यत्वेन	५	गुप्त रूप में	येन	१२.	जिससे
निरूपितम् ।	६.	बतलाया है	कार्यम्	१४.	काम
किम्	९.	कौन सा	भवेत्	१५.	हो जाये
			तयोः ॥	१३.	उन दोनों का

श्लोकार्थ—इस आकाशवाणी ने भी उपाय को गुप्तरूप में बतलाया है। अतः वह कौन सा उपाय करना चाहिये; जिससे उन दोनों का काम हो जाये।

षट्त्रिंशः श्लोकः

क्व भविष्यन्ति सन्तस्ते कथं दास्यन्ति साधनम् ।
मयात्र किं प्रकर्तव्यं यदुक्तं व्योमभाषया ॥३६॥

पदच्छेद—

क्व भविष्यन्ति सन्तः ते, कथम् दास्यन्ति साधनम् ।
मया अत्र किम् प्रकर्तव्यम्, यत् उक्तम् व्योमभाषया ॥

शब्दार्थ—

क्व	३.	कहाँ	मया	११.	मुझे
भविष्यन्ति	४.	होंगे (और उस)	अत्र	१२.	इस (विषय में)
सन्तः	२.	सन्त जन	किम्	१३.	क्या
ते	१.	वे	प्रकर्तव्यम्	१४.	करना चाहिये
कथम्	६.	कैसे	यत्	८.	जैसा कि
दास्यन्ति	७.	देंगे	उक्तम्	१०.	कहा है
साधनम् ।	५.	उपाय को	व्योमभाषया ॥	९.	आकाशवाणी ने

श्लोकार्थ—वे सन्त जन कहाँ होंगे और उस उपाय को कैसे देंगे? जैसा कि आकाशवाणी ने कहा है, मुझे इस विषय में क्या करना चाहिये?

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच तत्र द्वावपि संस्थाप्य निर्गतो नारदो मुनिः ।
तीर्थं तीर्थं विनिष्क्रम्य पृच्छन्मार्गे मुनीश्वरान् ॥३७॥

पदच्छेद— तत्र द्वौ अपि संस्थाप्य, निर्गतः नारदः मुनिः ।
तीर्थम् तीर्थम् विनिष्क्रम्य, पृच्छन् मार्गे मुनीश्वरान् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	५.	वहाँ	तीर्थम्	८.	प्रत्येक
द्वौ	३.	(ज्ञान और वैराग्य) दोनों को	तीर्थम्	९.	तीर्थ में
अपि	४.	ही	विनिष्क्रम्य	१०.	जाकर
संस्थाप्य	६.	बैठाकर	पृच्छन्	१३.	पूछने लगे
निर्गतः	७.	निकल पड़े (तथा)	मार्गे	११.	रास्ते में
नारदः	२.	नारद	मुनीश्वरान् ॥	१२.	महर्षियों से
मुनिः ।	१.	देवर्षि			

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद ज्ञान और वैराग्य दोनों को ही वहाँ बैठाकर निकल पड़े तथा प्रत्येक तीर्थ में जाकर रास्ते में महर्षियों से पूछने लगे ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

वृत्तान्तः श्रूयते सर्वैः किंचिन्निश्चित्य नोच्यते ।
असाध्यं केचन प्रोचुर्दुर्ज्ञेयमिति चापरे ।
मूकीभूतास्तथान्ये तु कियन्तस्तु पलायिताः ॥३८॥

पदच्छेद— वृत्तान्तः श्रूयते सर्वैः, किंचित् निश्चित्य न उच्यते ।
असाध्यम् केचन प्रोचुः, दुर्ज्ञेयम् इति च अपरे ।
मूकीभूताः तथा अन्ये तु, कियन्तः तु पलायिताः ॥

शब्दार्थ—

वृत्तान्तः, श्रूयते	२.	समाचार, सुन लेते थे (किन्तु)	दुर्ज्ञेयम्	१०.	ज्ञान से परे
सर्वैः	१.	सभी (लोग)	इति	११.	मानते थे
किंचित्	४.	कुछ भी	च, अपरे ।	९.	और, दूसरे (लोग)
निश्चित्य	३.	निश्चय करके	मूकीभूताः	१३.	मौन हो जाते थे
न, उच्यते ।	५.	नहीं बताते थे	तथा, अन्ये	१२.	तथा, बचे (हुये लोग)
असाध्यम्	७.	असम्भव	तु, कियन्तः	१४.	और, कितने
केचन	६.	कुछ (लोग)	तु, पलायिताः ॥	१५.	तो, मुँह फेर लेते थे
प्रोचुः	८.	कहते थे			

श्लोकार्थ—सभी लोग समाचार सुन लेते थे, किन्तु निश्चय करके कुछ भी नहीं बताते थे । कुछ लोग असम्भव कहते थे और दूसरे लोग ज्ञान से परे मानते थे तथा बचे हुये लोग मौन हो जाते थे और कितने तो मुँह फेर लेते थे ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

हाहाकारो महानासीत्त्रैलोक्ये विस्मयावहः ।
वेदवेदान्तघोषैश्च गीतापाठैर्विबोधितम् ॥३९॥

पदच्छेद—

हाहाकारः महान् आसीत्, त्रैलोक्ये विस्मय आवहः ।
वेद वेदान्त घोषैः च, गीता पाठैः विबोधितम् ॥

शब्दार्थ—

हाहाकारः	५.	हाहाकार	वेद	७.	वेद और
महान्	४.	बड़ा	वेदान्त	८.	शास्त्र के
आसीत्	६.	मच गया (कि)	घोषैः	९.	गायनों
त्रैलोक्ये	१.	तीनों लोकों में	च	१०	एवं
विस्मय	२.	आश्चर्य	गीता	११.	गीता के
आवहः ।	३.	जनक	पाठैः	१२	पाठों से (ज्ञान और वैराग्य को)
			विबोधितम्॥	१३.	जगाया गया

श्लोकार्थ—तीनों लोकों में आश्चर्य जनक बड़ा हाहाकार मच गया कि वेद और शास्त्र के गायनों एवं गीता पाठों से ज्ञान और वैराग्य को जगाया गया ।

चत्वारिंशः श्लोकः

भक्तिज्ञानविरागाणां नोदतिष्ठत्त्रिकं यदा ।
उपायो नापरोऽस्तीति कर्णे कर्णेऽजपञ्जनाः ॥४०॥

पदच्छेद—

भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, न उदतिष्ठत् त्रिकम् यदा ।
उपायः न अपरः अस्ति इति, कर्णे कर्णे अजपन् जनाः ॥

शब्दार्थ—

भक्ति	२.	भक्ति	उपायः	९.	साधन
ज्ञान	३.	ज्ञान और	न	१०.	नहीं
विरागाणाम्	४-	वैराग्य का	अपरः	८.	दूसरा
न	६.	नहीं	अस्ति	११.	है
उदतिष्ठत्	७.	उठा (तो अब)	इति	१३.	इस प्रकार
त्रिकम्	५.	समूह	कर्णे कर्णे	१४.	परस्पर एक दूसरे से
यदा ।	१.	जब (उससे)	अजपन्	१५.	कहने लगे
			जनाः ॥	१२.	लोग

श्लोकार्थ—जब उससे भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का समूह नहीं उठा तो अब दूसरा साधन नहीं है, लोग इस प्रकार परस्पर एक दूसरे से कहने लगे ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

योगिना नारदेनापि स्वयं न ज्ञायते तु यत् ।
तत्कथं शक्यते वक्तुमितरैरिह मानुषैः ॥४१॥

पदच्छेद—

योगिना नारदेन अपि, स्वयम् न ज्ञायते तु यत् ।
तत् कथम् शक्यते वक्तुम्, इतरैः इह मानुषैः ॥

शब्दार्थ—

योगिना	२. देवर्षि	तत्	१२. उसे
नारदेन	३. नारद	कथम्	१३. कैसे
अपि	४. भी	शक्यते	१५. सकते हैं
स्वयम्	१. स्वयम्	वक्तुम्	१४. बता
न	६. नहीं	इतरैः	१०. दूसरे
ज्ञायते	७. जान सकते	इह	९. यहाँ
तु	८. तो फिर	मानुषैः ॥	११. लोग
यत् ।	५. जिसे		

श्लोकार्थ—स्वयम् देवर्षि नारद भी जिसे नहीं जान सकते तो फिर यहाँ दूसरे लोग उसे कैसे बता सकते हैं ?

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

एवमृषिगणैः पृष्टैर्निर्णीयोक्तं दुरासदम् ॥४२॥

पदच्छेद—

एवम् ऋषिगणैः पृष्टैः निर्णीय उक्तम् दुरासदम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	निर्णीय	४. निश्चय करके (उस साधन) को
ऋषिगणैः	३. मुनि जनों ने	उक्तम्	६. बतलाया
पृष्टैः	२. पूछे जाने पर	दुरासदम् ॥	५. दुर्लभ

श्लोकार्थ—इस प्रकार पूछे जाने पर मुनिजनों ने निश्चय करके उस साधन को दुर्लभ बतलाया ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

ततश्चिन्तातुरः सोऽथ बदरीवनमागतः ।
तपश्चरामि चात्रेति तदर्थं कृतनिश्चयः ॥४३॥

पदच्छेद—

ततः चिन्ता आतुरः सः अथ, बदरीवनम् आगतः ।
तपः चरामि च अत्र इति, तदर्थम् कृत निश्चयः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	अतः	तपः	११.	तपस्या
चिन्ता	२.	शोक से	चरामि	१२.	करूँगा
आतुरः	३.	व्याकुल	च	८.	और
सः	४.	वे (देवर्षि नारद)	अत्र	९.	यहाँ
अथ	५.	तदनन्तर	इति	१३.	ऐसा
बदरीवनम्	६.	बदरिकारण्य में	तदर्थम्	१०.	उस,(आकाशवाणी के रहस्य ज्ञान) के लिये
आगतः ।	७.	आ गये	कृत	१५.	किया
			निश्चयः	१४.	संकल्प

श्लोकार्थ—अतः शोक से व्याकुल वे देवर्षि नारद तदनन्तर बदरिकारण्य में आ गये और यहाँ "उस आकाशवाणी के रहस्य ज्ञान के लिये तपस्या करूँगा" ऐसा संकल्प किया ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तावद्ददर्श पुरतः सनकादीन्मुनीश्वरान् ।
कोटिसूर्यसमाभासानुवाच मुनिसत्तमः ॥४४॥

पदच्छेद—

तावत् ददर्श पुरतः, सनक आदीन् मुनीश्वरान् ।
कोटि सूर्य सम आभासान्, उवाच मुनि सत्तमः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१.	उसी समय	कोटि	४.	करोड़ों
ददर्श	१२.	देखा (तथा उनसे)	सूर्य	५.	सूर्य के
पुरतः	११.	(अपने) सामने	सम	६.	समान
सनक	८.	सनक	आभासान्	७.	तेजस्वी
आदीन्	९.	सनंदन, सनातन और सनत्कुमार	उवाच	१३.	कहा
मुनीश्वरान् ।	१०.	मुनि कुमारों को	मुनि	२.	मुनि
			सत्तमः ॥	३.	श्रेष्ठ (नारद ने)

श्लोकार्थ—उसी समय मुनि श्रेष्ठ नारद ने करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी सनक, सनन्दन सनातन और सनत् कुमार मुनि कुमारों को अपने सामने देखा तथा उनसे कहा ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

नारद उवाच

इदानीं भूरिभाग्येन भवद्भिः संगमोऽभवत् ।
कुमारा ब्रुवतां शीघ्रं कृपां कृत्वा ममोपरि ॥४५॥

पदच्छेद—

इदानीम् भूरि भाग्येन, भवद्भिः संगमः अभवत् ।
कुमाराः ब्रुवताम् शीघ्रम्, कृपाम् कृत्वा मम उपरि ॥

शब्दार्थ—

इदानीम्	२.	इस समय	कुमाराः	१.	हे कुमारों !
भूरि	३.	बड़े	ब्रुवताम्	१३.	बतावें
भाग्येन	४.	भाग्य से	शीघ्रम्	१२.	शीघ्र
भवद्भिः	५.	आप लोगों के साथ	कृपाम्	१०.	कृपा
संगमः	६.	भेंट	कृत्वा	११.	करके
अभवत् ।	७.	हुई है (अतः)	मम	८.	मेरे
			उपरि ॥	९.	ऊपर

श्लोकार्थ—हे कुमारों ! इस समय बड़े भाग्य से आप लोगों के साथ भेंट हुई है; अतः मेरे ऊपर कृपा करके शीघ्र बतावें ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

भवन्तो योगिनः सर्वे बुद्धिमन्तो बहुश्रुताः ।
पञ्चहायनसंयुक्ताः पूर्वेषामपि पूर्वजाः ॥४६॥

पदच्छेद—

भवन्तः योगिनः सर्वे, बुद्धिमन्तः बहुश्रुताः ।
पञ्च हायन संयुक्ताः, पूर्वेषाम् अपि पूर्वजाः ॥

शब्दार्थ—

भवन्तः	१.	आप	पञ्च	६.	पाँच
योगिनः	३.	योगी	हायन	७.	वर्ष की
सर्वे	२.	सभी	संयुक्ताः	८.	अवस्था वाले (एवं)
बुद्धिमन्तः	४.	चतुर	पूर्वेषाम्	९.	पूर्वजों के
बहुश्रुताः ।	५.	ज्ञानी	अपि	१०.	भी
			पूर्वजाः ॥	११.	पूर्वज (हैं)

श्लोकार्थ --आप सभी योगी, चतुर, ज्ञानी, पाँच वर्ष की अवस्था वाले एवम् पूर्वजों के भी पूर्वज हैं ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

सदा वैकुण्ठनिलया हरिकीर्तनतत्पराः ।
लीलामृतरसोन्मत्ताः कथामात्रैकजीविनः ॥४७॥

पदच्छेद—

सदा वैकुण्ठ निलयाः, हरि कीर्तन तत्पराः ।
लीला अमृत रस उन्मत्ताः, कथा मात्र एक जीविनः ॥

शब्दार्थ—

	०. (आप लोग)	लीला	७. (भगवान् के) लीलारूपी
सदा	१. सर्वदा	अमृत	८. सुधा
वैकुण्ठ	२. वैकुण्ठधाम में	रस	९. रस से
निलयाः	३. निवास करने वाले	उन्मत्ताः	१०. मतवाले (तथा)
हरि	४. श्रीहरि के	कथा	१२. भगवत् चर्चा में
कीर्तन	५. भजन में	मात्र	११. केवल
तत्पराः ।	६. मग्न रहने वाले	एक	१३. ही
		जीविनः ॥	१४. जीने वाले हैं

श्लोकार्थ—आपलोग सर्वदा वैकुण्ठधाम में निवास करने वाले, श्रीहरि के भजन में मग्न रहने वाले, भगवान् के लीलारूपी सुधारस से मतवाले तथा केवल भगवत् चर्चा में ही जीने वाले हैं ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

हरिः शरणमेवं हि नित्यं येषां मुखे वचः ।
अतः कालसमादिष्टा जरा युष्मान्न बाधते ॥४८॥

पदच्छेद—

हरिः शरणम् एवम् हि, नित्यम् येषाम् मुखे वचः ।
अतः काल समादिष्टा, जरा युष्मान् न बाधते ॥

शब्दार्थ—

हरिः	५. हरिः	अतः	९. अतः
शरणम्	६. शरणम्	काल	१०. महाकाल से
एवम्	७. यही	समादिष्टा	११. प्रेरित (होकर भी)
हि	१. क्योंकि	जरा	१२. बुढ़ापा
नित्यम्	४. सदा	युष्मान्	१३. आप लोगों के पास
येषाम्	२. आप लोगों के	न	१४. नहीं
मुखे	३. श्रीमुख में	बाधते ॥	१५. फटकता है
वचः ।	८. मन्त्र (रहता है)		

श्लोकार्थ—क्योंकि आप लोगों के श्रीमुख में सदा 'हरिः शरणम्' यही मन्त्र रहता है । अतः महाकाल से प्रेरित होकर भी बुढ़ापा आप लोगों के पास नहीं फटकता है ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

येषां भ्रूभङ्गमात्रेण द्वारपालौ हरेः पुरा ।
भूमौ निपातितौ सद्यो यत्कृपातः पुरं गतौ ॥४९॥

पदच्छेद—

येषाम् भ्रू भङ्ग मात्रेण, द्वारपालौ हरेः पुरा ।
भूमौ निपातितौ सद्यः, यत् कृपातः पुरम् गतौ ॥

शब्दार्थ—

येषाम्	२.	जिनकी	भूमौ	९.	मृत्युलोक में
भ्रू	३.	भौहों के	निपातितौ	१०.	गिरना पड़ा (तथा)
भङ्ग	४.	तन जाने	सद्यः	८.	तत्काल
मात्रेण	५.	मात्र से	यत्	११.	जिनकी
द्वारपालौ	७.	द्वारपाल (जय और विजय) को	कृपातः	१२.	कृपा से (ही पुनः वे)
हरेः	६.	भगवान् श्री हरि के	पुरम्	१३.	वैकुण्ठपुरी में
पुरा ।	१.	पूर्वकाल में	गतौ ॥	१४.	पहुँच सके

श्लोकार्थ—पूर्वकाल में जिनकी भौहों के तन जाने मात्र से भगवान् श्रीहरि के द्वारपाल जय और विजय को तत्काल मृत्युलोक में गिरना पड़ा तथा जिनकी कृपा से ही पुनः वे वैकुण्ठपुरी में पहुँच सके ।

पञ्चाशः श्लोकः

अहो भाग्यस्य योगेन दर्शनं भवतामिह ।
अनुग्रहस्तु कर्तव्यो मयि दीने दयापरैः ॥५०॥

पदच्छेद—

अहो भाग्यस्य योगेन, दर्शनम् भवताम् इह ।
अनुग्रहः तु कर्तव्यः, मयि दीने दयापरैः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	बड़े हर्ष की बात है कि	अनुग्रहः	११.	कृपा
भाग्यस्य	३.	सौभाग्य के	तु	७.	अतः
योगेन	४.	कारण	कर्तव्यः	१२.	करें
दर्शनम्	६.	दर्शन (हुआ है)	मयि	९.	मुझ
भवताम्	५.	आप लोगों का	दीने	१०.	दीन पर
इह ।	२.	यहाँ	दयापरैः ॥	८.	करुणा परायण (आप लोग)

श्लोकार्थ—बड़े हर्ष की बात है कि यहाँ सौभाग्य के कारण आप लोगों का दर्शन हुआ है; अतः करुणा परायण आप लोग मुझ दीन पर कृपा करें ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

अशरीरगिरोक्तं यत्तत्किं साधनमुच्यताम् ।
अनुष्ठेयं कथं तावत्प्रब्रुवन्तु सविस्तरम् ॥५१॥

पदच्छेद—

अशरीरगिरा उक्तम् यत्, तत् किम् साधनम् उच्यताम् ।
अनुष्ठेयम् कथम् तावत्, प्रब्रुवन्तु सविस्तरम् ॥

शब्दार्थ—

अशरीरगिरा	१.	आकाशवाणी के द्वारा	उच्यताम् ।	४.	बतावें (कि)
उक्तम्	३.	कहा गया है	अनुष्ठेयम्	१२.	अनुष्ठान करें
यत्	२.	जो	कथम्	११.	कैसे
तत्	५.	वह	तावत्	८.	तथा
किम्	६.	कौन-सा	प्रब्रुवन्तु	१०.	बतावें (कि उसका)
साधनम्	७.	उपाय (है)	सविस्तरम् ॥	९.	विस्तार-पूर्वक

श्लोकार्थ—आकाशवाणी के द्वारा जो कहा गया है, बतावें कि वह कौन सा उपाय है तथा विस्तारपूर्वक बतावें कि उसका कैसे अनुष्ठान करें ?

द्विपञ्चाशः श्लोकः

भक्तिज्ञानविरागाणां सुखमुत्पद्यते कथम् ।
स्थापनं सर्ववर्णेषु प्रेमपूर्वं प्रयत्नतः ॥५२॥

पदच्छेद—

भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, सुखम् उत्पद्यते कथम् ।
स्थापनम् सर्व वर्णेषु, प्रेम पूर्वम् प्रयत्नतः ॥

शब्दार्थ—

भक्ति ज्ञान	१.	भक्ति, ज्ञान और	स्थापनम्	१०.	प्रतिष्ठा (होगी)
विरागाणाम्	२.	वैराग्य को	सर्व	७.	सभी
सुखम्	४.	सुख	वर्णेषु	८.	जातियों में (इनकी)
उत्पद्यते	५.	मिलेगा (तथा किस)	प्रेमपूर्वम्	९.	प्रेम के साथ
कथम् ।	३.	कैसे	प्रयत्नतः ॥	६.	प्रयास से

श्लोकार्थ—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को कैसे सुख मिलेगा ? तथा किस प्रयास से सभी जातियों में इनकी प्रेम के साथ प्रतिष्ठा होगी ?

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

कुमारा ऊचुः

मा चिन्तां कुरु देवर्षे हर्षं चित्ते समावह ।
उपायः सुखसाध्योऽत्र वर्तते पूर्व एव हि ॥५३॥

पदच्छेद—

मा चिन्ताम् कुरु देवर्षे, हर्षम् चित्ते समावह ।
उपायः सुख साध्यः अत्र, वर्तते पूर्वः एव हि ॥

शब्दार्थ—

मा	३.	मत	उपायः	१२.	साधन
चिन्ताम्	२.	चिन्ता	सुख	१०.	सरलता से
कुरु	४.	करें (तथा)	साध्यः	११.	करने योग्य
देवर्षे	१.	हे देवर्षि नारद !	अत्र	९.	इस विषय में
हर्षम्	६.	प्रसन्नता	वर्तते	१४.	विद्यमान है
चित्ते	५.	मन में	पूर्वः एव	१३.	पहिले से ही
समावह ।	७.	रखें	हि ॥	८.	क्योंकि

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारद ! चिन्ता मत करें तथा मन में प्रसन्नता रखें । क्योंकि इस विषय में सरलता से करने योग्य साधन पहिले से ही विद्यमान है ।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

अहो नारद धन्योऽसि विरक्तानां शिरोमणिः ।
सदा श्रीकृष्णदासानामग्रणीर्योगभास्करः ॥५४॥

पदच्छेद—

अहो नारद धन्यः असि, विरक्तानाम् शिरोमणिः ।
सदा श्रीकृष्ण दासानाम्, अग्रणीः योग भास्करः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अरे	शिरोमणिः ।	५.	प्रधान
नारद	२.	देवर्षि नारद ! (आप)	सदा	७.	सर्वदा
धन्यः	३.	सौभाग्यशाली	श्रीकृष्णदासानाम्	६.	श्रीकृष्ण के भक्तों में
असि	१०.	हैं	अग्रणीः	८.	अगुआ (और)
विरक्तानाम्	४.	वैरागियों में	योगभास्करः ।।	९.	योग विद्या में सूर्य

श्लोकार्थ—अरे देवर्षि नारद ! आप सौभाग्यशाली, वैरागियों में प्रधान, श्रीकृष्ण के भक्तों में सर्वदा अगुआ और योग विद्या में सूर्य हैं ।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

त्वयि चित्रं न मन्तव्यं भक्त्यर्थमनुवर्तिनि ।
घटते कृष्णदासस्य भक्तेः संस्थापना सदा ॥५५॥

पदच्छेद—

त्वयि चित्रम् न मन्तव्यम्, भक्ति अर्थम् अनुवर्तिनि ।
घटते कृष्णदासस्य, भक्तेः संस्थापना सदा ॥

शब्दार्थ—

त्वयि	४.	आपके विषय में	अनुवर्तिनि ।	३.	भ्रमण करने वाले
चित्रम्	५.	(यह) आश्चर्य	घटते	१२.	उचित है
न	६.	नहीं	कृष्णदासस्य	८.	श्रीकृष्णभक्तों के लिए
मन्तव्यम्	७.	मानना चाहिए (क्योंकि)	भक्तेः	१०.	भक्ति का
भक्ति	१.	भक्ति के	संस्थापना	११.	प्रचार प्रसार करना
अर्थम्	२.	निमित्त	सदा ॥	९.	सर्वदा

श्लोकार्थ—भक्ति के निमित्त भ्रमण करने वाले आपके विषय में यह आश्चर्य नहीं मानना चाहिए। क्योंकि श्रीकृष्ण-भक्तों के लिए सर्वदा भक्ति का प्रचार-प्रसार करना उचित है।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

ऋषिभिर्बहवो लोके पन्थानः प्रकटीकृताः ।
श्रमसाध्याश्च ते सर्वे प्रायः स्वर्गफलप्रदाः ॥५६॥

पदच्छेद—

ऋषिभिः बहवः लोके, पन्थानः प्रकटीकृताः ॥
श्रम साध्याः च ते सर्वे, प्रायः स्वर्ग फल प्रदाः ॥

शब्दार्थ—

ऋषिभिः	१.	ऋषियों ने	च	९.	और
बहवः	३.	अनेक	ते	६.	वे
लोके	२.	संसार में	सर्वे	७.	सभी
पन्थानः	४.	मार्ग	प्रायः	१०.	अधिकतर
प्रकटीकृताः ।	५.	दिखाये हैं (किन्तु)	स्वर्ग	११.	स्वर्ग
श्रमसाध्याः	८.	कठिनाई से करने योग्य	फलप्रदाः ॥	१२.	फल को देने वाले (हैं)

श्लोकार्थ—ऋषियों ने संसार में अनेक मार्ग दिखाये हैं; किन्तु वे सभी कठिनाई से करने योग्य और अधिकतर स्वर्ग-फल को देने वाले हैं।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

वैकुण्ठसाधकः पन्था स तु गोप्यो हि वर्तते ।
तस्योपदेष्टा पुरुषः प्रायो भाग्येन लभ्यते ॥५७॥

पदच्छेद—

वैकुण्ठ स धकः पन्था, सः तु गोप्यः हि वर्तते ।
तस्य उपदेष्टा पुरुषः, प्रायः भाग्येन लभ्यते ॥

शब्दार्थ—

वैकुण्ठ	१.	वैंकुण्ठ लोक को	वर्तते ।	८.	हैं
साधकः	२.	प्राप्त कराने वाला	तस्य	९.	उसके
पन्था	४.	मार्ग	उपदेष्टा	१०.	उपदेशक
सः	३.	वह	पुरुषः	११.	पुरुष
तु	५.	तो	प्रायः	१२.	अधिकतर
गोप्यः	६.	गोपनीय	भाग्येन	१३.	भाग्य से ही
हि	७.	ही	लभ्यते ॥	१४.	मिलते हैं

श्लोकार्थ—वैंकुण्ठ लोक को प्राप्त कराने वाला वह मार्ग तो गोपनीय ही है। उसके उपदेशक पुरुष अधिकतर भाग्य से ही मिलते हैं।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

सत्कर्म तव निर्दिष्टं व्योमवाचा तु यत्पुरा ।
तदुच्यते शृणुष्वाद्य स्थिरचित्तः प्रसन्नधीः ॥५८॥

पदच्छेद—

सत् कर्म तव निर्दिष्टम्, व्योमवाचा तु यत् पुरा ।
तद् उच्यते शृणुष्व अद्य, स्थिर चित्तः प्रसन्न धीः ॥

शब्दार्थ—

सत् कर्म	४.	उत्तम कर्म का	पुरा ।	५.	पहिले
तव	२.	आपको	तद् उच्यते	८.	उसे बता रहा हूँ (आप)
निर्दिष्टम्	६.	संकेत किया था	शृणुष्व	१२.	सुनें
व्योमवाचा	१.	आकाशवाणी ने	अद्य	७.	सबसे पहिले
तु	१०.	और	स्थिरचित्तः	९.	शान्त मन
यत्	३.	जिस	प्रसन्न धीः ॥	११.	निर्मल बुद्धि से (उसे)

श्लोकार्थ—आकाशवाणी ने आपको जिस उत्तम कर्म का पहिले संकेत किया था; सबसे पहिले उसे बता रहा हूँ। आप शान्त-मन और निर्मल-बुद्धि से उसे सुनें।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च ते तु कर्मविसूचकाः ॥५९॥

पदच्छेद—

द्रव्ययज्ञाः तपोयज्ञाः, योगयज्ञाः तथा अपरे ।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाः च, ते तु कर्म विसूचकाः ॥

शब्दार्थ—

द्रव्ययज्ञाः	१.	(हे देवर्षि नारद) हवन-यज्ञ	ज्ञानयज्ञाः	८.	ज्ञान-यज्ञ (हैं)
तपोयज्ञाः	२.	तपस्या का अनुष्ठान	च	७.	और
योगयज्ञाः	३.	योगासन	ते	९.	वे
तथा	४.	तथा	तु	१०.	सभी
अपरे ।	५.	दूसरे (जो)	कर्म	११.	कर्मों के
स्वाध्याय	६.	वेदपाठ	विसूचकाः ॥	१२.	विभिन्न प्रकार (हैं)

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारद ! हवन-यज्ञ, तपस्या का अनुष्ठान, योगासन तथा दूसरे जो वेदपाठ और ज्ञान-यज्ञ हैं; वे सभी कर्मों के विभिन्न प्रकार हैं ।

षष्टितमः श्लोकः

सत्कर्मसूचको नूनं ज्ञानयज्ञः स्मृतो बुधैः ।
श्रीमद्भागवतालापः स तु गीतः शुकादिभिः ॥६०॥

पदच्छेद—

सत् कर्म सूचकः नूनम्, ज्ञान यज्ञः स्मृतः बुधैः ।
श्रीमद्भागवत आलापः, सः तु गीतः शुक आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

सत्कर्म	४.	श्रेष्ठ कर्म का	श्रीमद्भागवत	७.	श्रीमद्भागवत की (जो)
सूचकः	५.	एक प्रकार	आलापः	८.	कथा (है)
नूनम्	३.	निश्चय ही	सः	९.	उसे
ज्ञानयज्ञः	२.	कथा-अनुष्ठान को	तु	११.	भी
स्मृतः	६.	कहा है (तथा)	गीतः	१२.	गायी है
बुधैः ।	१.	विद्वानों ने	शुक आदिभिः ॥	१०.	श्रीशुकदेव इत्यादि ऋषियों ने

श्लोकार्थ—विद्वानों ने कथा-अनुष्ठान को निश्चय ही श्रेष्ठ-कर्म का एक प्रकार कहा है तथा श्रीमद्भागवत की जो कथा है; उसे श्रीशुकदेव इत्यादि ऋषियों ने भी गायी है ।

एकषष्टितमः श्लोकः

भक्तिज्ञानविरागाणां तद्घोषेण बलं महत् ।
व्रजिष्यति द्वयोः कष्टं सुखं भक्तेर्भविष्यति ॥६१॥

पदच्छेद—

भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, तद् घोषेण बलम् महत् ।
व्रजिष्यति द्वयोः कष्टम्, सुखम् भक्तेः भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

भक्ति ज्ञान	३.	भक्ति, ज्ञान और	व्रजिष्यति	९.	दूर हो जायगा (तथा)
विरागाणाम्	४.	वैराग्य को	द्वयोः	७.	(ज्ञान और वैराग्य) दोनों का
तद्	१.	उस (श्रीमद्भागवत) के	कष्टम्	८.	दुःख
घोषेण	२.	पाठ से	सुखम्	११.	सुख
बलम्	६.	बल (मिलेगा)	भक्तेः	१०.	भक्ति को
महत् ।	५.	महान्	भविष्यति ॥	१२.	होगा

श्लोकार्थ—उस श्रीमद्भागवत के पाठ से भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को महान् बल मिलेगा । ज्ञान और वैराग्य दोनों का दुःख दूर हो जायगा तथा भक्ति को सुख होगा ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

प्रलयं हि गमिष्यन्ति श्रीमद्भागवतध्वनेः ।
कलेर्दोषा इमे सर्वे सिंहशब्दाद् वृका इव ॥६२॥

पदच्छेद—

प्रलयम् हि गमिष्यन्ति, श्रीमद्भागवत ध्वनेः ।
कलेः दोषाः इमे सर्वे, सिंह शब्दात् वृकाः इव ॥

शब्दार्थ—

प्रलयम्	११.	विनाश को	दोषाः	६.	दोष
हि	१०.	अवश्य	इमे	४.	ये
गमिष्यन्ति	१२.	प्राप्त हो जायेंगे	सर्वे	५.	सभी
श्रीमद्भागवत	१.	श्रीमद्भागवत महापुराण के	सिंहशब्दात्	७.	शेर की दहाड़ से
ध्वनेः ।	२.	पाठ से	वृकाः	८.	भेड़िये के
कलेः	३.	कलियुग के	इव ॥	९.	समान

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत महापुराण के पाठ से कलियुग के सभी दोष शेर की दहाड़ से भेड़िये के समान अवश्य विनाश को प्राप्त हो जायेंगे ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

ज्ञानवैराग्यसंयुक्ता भक्तिः प्रेमरसावहा ।
प्रतिगेहं प्रतिजनं ततः क्रीडां करिष्यति ॥६३॥

पदच्छेद—

ज्ञान वैराग्य संयुक्ता, भक्तिः प्रेम रस आवहा ।
प्रतिगेहम् प्रतिजनम्, ततः क्रीडाम् करिष्यति ॥

शब्दार्थ—

ज्ञान वैराग्य	२.	ज्ञान और वैराग्य से	प्रतिगेहम्	७.	घर-घर और
संयुक्ता	३.	मिली हुई (तथा)	प्रतिजनम्	८.	जन-जन में
भक्तिः	६.	भक्ति	ततः	१.	तदनन्तर
प्रेम रस	४.	प्रेमरस में	क्रीडाम्	९.	विहार
आवहा ।	५.	पगी हुई	करिष्यति ॥	१०.	करेगी

श्लोकार्थ—तदनन्तर ज्ञान और वैराग्य से मिली हुई तथा प्रेमरस में पगी हुई भक्ति घर-घर और जन-जन में विहार करेगी ।

चतुष्षष्टितमः श्लोकः

नारद उवाच

वेदवेदान्तघोषैश्च गीतापाठैः प्रबोधितम् ।
भक्तिज्ञानविरागाणां नोदतिष्ठत्त्रिकं यदा ॥६४॥

पदच्छेद—

वेद वेदान्त घोषैः च, गीता पाठैः प्रबोधितम् ।
भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, न उदतिष्ठत् त्रिकम् यदा ॥

शब्दार्थ—

वेद वेदान्त	१.	वेद और उपनिषदों के	भक्ति ज्ञान	६.	भक्ति, ज्ञान और
घोषैः	२.	पारायण	विरागाणाम्	७.	वैराग्य को
च	३.	तथा	न	११.	नहीं
गीता	४.	श्रीमद्भगवद् गीता के	उदतिष्ठत्	१२.	उठे
पाठैः	५.	पाठों से	त्रिकम्	१०.	तीनों
प्रबोधितम् ।	८.	जगाया गया	यदा ॥	९.	(किन्तु) जब

श्लोकार्थ—वेद और उपनिषदों के पारायण तथा श्रीमद्भगवद् गीता के पाठों से भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को जगाया गया; किन्तु जब तीनों नहीं उठे ।

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

श्रीमद्भागवतालापात्तत्कथं बोधमेष्यति ।
तत्कथासु तु वेदार्थः श्लोके श्लोके पदे पदे ॥६५॥

पदच्छेद—

श्रीमद्भागवत आलापात्, तत् कथम् बोधम् एष्यति ।
तत् कथासु तु वेदार्थः, श्लोके श्लोके पदे पदे ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्भागवत	२.	श्रीमद्भागवत की	**तत्**	७.	उसकी
आलापात्	३.	कथा से	**कथासु**	८.	कथाओं में
तत्	१.	तो फिर (वे)	**तु**	९.	तो
कथम्	४.	कैसे	**वेदार्थः**	१२.	वेदों का अर्थ (भरा है)
बोधम्	५.	चेतना	**श्लोके श्लोके**	१०.	प्रत्येक श्लोक और
एष्यति ।	६.	पायेंगे	**पदे पदे ॥**	११.	प्रत्येक पद में

श्लोकार्थ—तो फिर वे श्रीमद्भागवत की कथा से कैसे चेतना पायेंगे । उसकी कथाओं में तो प्रत्येक श्लोक और प्रत्येक पद में वेदों का अर्थ भरा है ।

षट्षष्टितमः श्लोकः

छिन्दन्तु संशयं ह्येनं भवन्तोऽमोघदर्शनाः ।
विलम्बो नात्र कर्तव्यः शरणागतवत्सलाः ॥६६॥

पदच्छेद—

छिन्दन्तु संशयम् हि एनम्, भवन्तः अमोघ दर्शनाः ।
विलम्बः न अत्र कर्तव्यः, शरण आगत वत्सलाः ॥

शब्दार्थ—

छिन्दन्तु	१०.	दूर करें	**विलम्बः**	१२.	देर
संशयम्	८.	सन्देह को	**न**	१३.	न
हि	९.	अवश्य	**अत्र**	११.	इसमें
एनम्	७.	इस	**कर्तव्यः**	१४.	करें
भवन्तः	६.	आप लोग	**शरण**	३.	शरण में
अमोघ	१.	सफल	**आगत**	४.	आये हुओं के
दर्शनाः ।	२.	दर्शन वाले (तथा)	**वत्सलाः ॥**	५.	स्नेही

श्लोकार्थ—सफल दर्शन वाले तथा शरण में आये हुओं के स्नेही आपलोग इस सन्देह को अवश्य दूर करें । इसमें देर न करें ।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

कुमारा ऊचुः

वेदोपनिषदां साराज्जाता भागवती कथा ।
अत्युत्तमा ततो भाति पृथग्भूता फलाकृतिः ॥६७॥

पदच्छेद—

वेद उपनिषदाम् सारात्, जाता भागवती कथा ।
अति उत्तमा ततः भाति, पृथग्भूता फल आकृतिः ॥

शब्दार्थ—

वेद	३.	वेदों और	अति उत्तमा	११.	सर्वोत्तम
उपनिषदाम्	४.	वेदान्तों के	ततः	७.	अतः
सारात्	५.	सार-अंश से	भाति	१२.	शोभा पा रही है
जाता	६.	उत्पन्न हुई है	पृथग्भूता	८.	अलग हुए
भागवती	१.	श्रीमद्भागवत की	फल	९.	फल के
कथा ।	२.	कथा	आकृतिः ॥	१०.	आकार के समान

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत की कथा वेदों और वेदान्तों के सार-अंश से उत्पन्न हुई है । अतः अलग हुए फल के आकार के समान सर्वोत्तम शोभा पा रही है ।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

आमूलाग्रं रसस्तिष्ठन्नास्ते न स्वाद्यते यथा ।
स भूयः संपृथग्भूतः फले विश्वमनोहरः ॥६८॥

पदच्छेद—

आमूल अग्रम् रसः तिष्ठन्, आस्ते न स्वाद्यते यथा ।
सः भूयः संपृथग्भूतः, फले विश्व मनोहरः ॥

शब्दार्थ—

आमूल	२.	(पेड़ में) जड़ से लेकर	यथा ।	१.	जिस प्रकार
अग्रम्	३.	फुनगी तक	सः	१२.	वही (रस)
रसः	४.	रस	भूयः	९.	तथा
तिष्ठन्	५.	विद्यमान	संपृथग्भूतः	११.	अलग हुआ
आस्ते	६.	रहता है (किन्तु)	फले	१०.	फल के रूप में
न	७.	नहीं	विश्व	१३.	सबके
स्वाद्यते	८.	चखा जा सकता (है)	मनोहरः ॥	१४.	मन को भाता (है)

श्लोकार्थ—जिस प्रकार पेड़ में जड़ से लेकर फुनगी तक रस विद्यमान रहता है; किन्तु चखा नहीं जा सकता है तथा फल के रूप में अलग हुआ वही रस सबके मन को भाता है ।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

यथा दुग्धे स्थितं सर्पिर्न स्वादायोपकल्पते ।
पृथग्भूतं हि तद्गव्यं देवानां रसवर्धनम् ॥६९॥

पदच्छेद—

यथा दुग्धे स्थितम् सर्पिः, न स्वादाय उपकल्पते ।
पृथक् भूतम् हि तद् गव्यम्, देवानाम् रस वर्धनम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	पृथक्	९.	अलग
दुग्धे	२.	दूध में	भूतम्	१०.	हुआ
स्थितम्	३.	विद्यमान	हि	८.	किन्तु
सर्पिः	४.	घी	तद्	११.	वही
न	६.	नहीं	गव्यम्	१२.	घी
स्वादाय	५.	स्वाद के लिए	देवानाम्	१३.	देवताओं का
उपकल्पते ।	७.	होता	रसवर्धनम् ॥	१४.	बलवर्धक (है)

श्लोकार्थ—जैसे दूध में विद्यमान घी स्वाद के लिए नहीं होता; किन्तु अलग हुआ वही घी देवताओं का बलवर्धक है ।

सप्ततितमः श्लोकः

इक्षूणामपि मध्यान्तं शर्करा व्याप्य तिष्ठति ।
पृथग्भूता च सा मिष्टा तथा भागवती कथा ॥७०॥

पदच्छेद—

इक्षूणाम् अपि मध्य अन्तम्, शर्करा व्याप्य तिष्ठति ।
पृथक् भूता च सा मिष्टा, तथा भागवती कथा ॥

शब्दार्थ—

इक्षूणाम्	१.	ईंख के	भूता	९.	होने पर
अपि	२.	भी	च	७.	तथा
मध्य अन्तम्	३.	मध्य भाग में	सा	१०.	वह
शर्करा	४.	चीनी	मिष्टा	११.	मीठी (लगती है)
व्याप्य	५.	फैलकर	तथा	१२.	उसी प्रकार
तिष्ठति ।	६.	रहती है	भागवती	१३.	श्रीमद्भागवत की
पृथक्	८.	अलग	कथा ॥	१४.	कथा (है)

श्लोकार्थ—ईंख के भी मध्य-भाग में चीनी फैलकर रहती है तथा अलग होने पर वह मीठी लगती है । उसी प्रकार श्रीमद्भागवत की कथा है ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम् ।
भक्तिज्ञानविरागाणां स्थापनाय प्रकाशितम् ॥७१॥

पदच्छेद—

इदम् भागवतम् नाम, पुराणम् ब्रह्म सम्मितम् ।
भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, स्थापनाय प्रकाशितम् ॥

शब्दार्थ—

इदम्	५. यह	**सम्मितम् ।**	४. सम्मत
भागवतम्	१. श्रीमद्भागवत	**भक्ति ज्ञान**	७. भक्ति, ज्ञान और
नाम	२. नाम का	**विरागाणाम्**	८. वैराग्य की
पुराणम्	६. महापुराण	**स्थापनाय**	९. स्थापना के लिए
ब्रह्म	३. वेद से	**प्रकाशितम् ॥**	१०. रचित (है)

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत नाम का वेद से सम्मत यह महापुराण भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिए रचित है।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

वेदान्तवेदसुस्नाते गीताया अपि कर्तरि ।
परितापवति व्यासे मुह्यत्यज्ञानसागरे ॥७२॥

पदच्छेद—

वेदान्त वेद सुस्नाते, गीतायाः अपि कर्तरि ।
परितापवति व्यासे, मुह्यति अज्ञान सागरे ॥

शब्दार्थ—

वेदान्त	२. उपनिषदों में	**कर्तरि ।**	६. रचयिता
वेद	१. वेदों और	**परितापवति**	९. सन्ताप और
सुस्नाते	३. पारंगत (तथा)	**व्यासे**	७. महर्षि वेदव्यास (जब)
गीतायाः	४. श्रीमद्भगवद्गीता के	**मुह्यति**	१०. मोह से ग्रस्त (थे)
अपि	५. भी	**अज्ञान सागरे ॥**	८. अज्ञान के सागर में

श्लोकार्थ—वेदों और उपनिषदों में पारंगत तथा श्रीमद्भगवद्गीता के भी रचयिता महर्षि वेदव्यास जब अज्ञान के सागर में संताप और मोह से ग्रस्त थे।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

तदा त्वया पुरा प्रोक्तं चतुःश्लोकसमन्वितम् ।
तदीयश्रवणात्सद्यो निर्बाधो बादरायणः ॥७३॥

पदच्छेद—

तदा त्वया पुरा प्रोक्तम् , चतुः श्लोक समन्वितम् ।
तदीय श्रवणात् सद्यः, निर्बाधः बादरायणः ॥

शब्दार्थ—

तदा	१. तब	**समन्वितम् ।**	५.	वाले (श्रीमद्भागवत) को
त्वया	२. आपने (ही)	**तदीय**	८.	उसके
पुरा	६. पहिले	**श्रवणात्**	९.	सुनने से
प्रोक्तम्	७. कहा था	**सद्यः**	११.	तत्काल
चतुः	३. चार	**निर्बाधः**	१२.	बाधा से रहित (हो गये थे)
श्लोक	४. श्लोकों	**बादरायणः ॥**	१०.	वेदव्यास मुनि

श्लोकार्थ—तब आपने ही चार श्लोकों वाले श्रीमद्भागवत को पहिले कहा था। उसके सुनने से वेदव्यास मुनि तत्काल बाधा से रहित हो गये थे।

चतुःसप्ततितमः श्लोकः

तत्र ते विस्मयः केन यतः प्रश्नकरो भवान् ।
श्रीमद्भागवतं श्राव्यं शोकदुःखविनाशनम् ॥७४॥

पदच्छेद—

तत्र ते विस्मयः केन, यतः प्रश्नकरः भवान् ।
श्रीमद्भागवतम् श्राव्यम्, शोक दुःख विनाशनम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. इसमें	**भवान् ।**	६.	आप
ते	२. आपको	**श्रीमद्भागवतम्**	११.	श्रीमद्भागवत महापुराण को
विस्मयः	३. आश्चर्य	**श्राव्यम्**	१२.	सुनावें
केन	४. क्यों (है)	**शोक**	८.	चिन्ता और
यतः	५. जिससे कि	**दुःख**	९.	पीड़ा को
प्रश्नकरः	७. प्रश्न कर रहें हैं (अतः आप)	**विनाशनम् ॥**	१०.	हरने वाले

श्लोकार्थ—इसमें आपको आश्चर्य क्यों है ? जिससे कि आप प्रश्न कर रहें हैं। अतः आप चिन्ता और पीड़ा को हरने वाले श्रीमद्भागवत महापुराण को सुनावें।

पञ्चसप्ततितमः श्लोकः

नारद उवाच

यद्दर्शनं च विनिहन्त्यशुभानि सद्यः, श्रेयस्तनोति भवदुःखदवार्दितानाम् ।
निश्शेषशेषमुखगीतकथैकपानाः, प्रेमप्रकाशकृतये शरणं गतोऽस्मि ॥७५॥

पदच्छेद—**यद् दर्शनम् च विनिहन्ति अशुभानि सद्यः, श्रेयः तनोति भव दुःख दव अर्दितानाम् । निश्शेष शेष मुख गीत कथा एक पानाः, प्रेम प्रकाश कृतये शरणम् गतः अस्मि ॥**

शब्दार्थ—

यद्, दर्शनम्	१.	जिनका दर्शन	**निश्शेष शेष**	७.	शेषनाग के सभी
च विनिहन्ति	३.	तथा नष्ट कर देता है	**मुख गीत कथा**	८.	मुखों से गायी गई कथा का
अशुभानि सद्यः	२.	पापों को तत्काल	**एक पानाः**	९.	ही पान करने वाले (हैं अतः)
श्रेयः तनोति	६.	कल्याण करता है (आप लोग)	**प्रेम, प्रकाश**	१०.	प्रेमा भक्ति के प्रचार के
भव दुःख दव	४.	संसार के दुःखरूपी दावानल से	**कृतये**	११.	निमित्त (मैं आपलोगों की)
अर्दितानाम् ।	५.	पीड़ित (जनों का)	**शरणम्**	१२.	शरण में
			गतः, अस्मि ॥	१३.	आया हूँ

श्लोकार्थ—जिनका दर्शन पापों को तत्काल नष्टकर देता है तथा संसार के दुःख रूपी दावानल से पीड़ित जनों का कल्याण करता है । आप लोग शेषनाग के सभी मुखों से गायी गई कथा का ही पान करने वाले हैं । अतः प्रेमाभक्ति के प्रचार के निमित्त मैं आप लोगों की शरण में आया हूँ ।

षट्सप्ततितमः श्लोकः

भाग्योदयेन बहुजन्मसमर्जितेन, सत्संगमं च लभते पुरुषो यदा वै ।
अज्ञानहेतुकृतमोहमदान्धकारनाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः ॥७६॥

पदच्छेद—**भाग्य उदयेन बहु जन्म समर्जितेन, सत् संगमम् च लभते पुरुषः यदा वै । अज्ञान हेतु कृत मोह मद अन्धकार, नाशम् विधाय हि तदा उदयते विवेकः ॥**

शब्दार्थ—

भाग्य, उदयेन	२.	पुण्यों का उदय होने से	**कृत, मोह**	८.	उत्पन्न मोह (और)
बहुजन्म, समर्जितेन	१.	बहुत जन्मों से संचित	**मद, अन्धकार**	९.	अहंकार रूपी अन्धकार का
सत् संगमम्	४.	सन्तों की संगति	**नाशम्, विधाय**	१०.	नाश होता है
च	११.	और	**हि**	१२.	तदनन्तर
लभते	५.	प्राप्त करता है	**तदा**	६.	तब
पुरुषः यदा वै ।	३.	मनुष्य जब निश्चय पूर्वक	**उदयते**	१४.	उत्पन्न होता है
अज्ञान, हेतु	७.	अज्ञान के कारण	**विवेकः ॥**	१३.	विवेक ज्ञान

श्लोकार्थ—बहुत जन्मों से संचित पुण्यों का उदय होने से मनुष्य जब निश्चय पूर्वक सन्तों की संगति प्राप्त करता है, तब अज्ञान के कारण उत्पन्न मोह और अहंकार रूपी अन्धकार का नाश होता है और तदनन्तर विवेक ज्ञान उत्पन्न होता है ॥

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमहात्म्ये कुमारनारदसंवादो नाम द्वितीयः अध्यायः ॥२॥

अथ तृतीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

नारद उवाच

ज्ञानयज्ञं करिष्यामि शुकशास्त्रकथोज्ज्वलम् ।
भक्तिज्ञानविरागाणां स्थापनार्थं प्रयत्नतः ॥१॥

पदच्छेद—

ज्ञान यज्ञम् करिष्यामि, शुकशास्त्र कथा उज्ज्वलम् ।
भक्ति ज्ञान विरागाणाम्, स्थापनार्थम् प्रयत्नतः ॥

शब्दार्थ—

ज्ञान यज्ञम्	८.	ज्ञान यज्ञ को	भक्ति	१.	(मैं) भक्ति
करिष्यामि	१०.	करूँगा	ज्ञान	२.	ज्ञान (और)
शुकशास्त्र	५.	श्रीमद्भागवत पुराण की	विरागाणाम्	३.	वैराग्य की
कथा	६.	कथाओं से	स्थापनार्थम्	४.	स्थापना के लिये
उज्ज्वलम् ।	७.	निर्मल	प्रयत्नतः ॥	९.	प्रयास पूर्वक

श्लोकार्थ—मैं भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिये श्रीमद्भागवत पुराण की कथाओं से निर्मल ज्ञान-यज्ञ को प्रयास पूर्वक करूँगा ।

द्वितीयः श्लोकः

कुत्र कार्यो मया यज्ञः स्थलं तद्वाच्यतामिह ।
महिमा शुकशास्त्रस्य वक्तव्यो वेदपारगैः ॥२॥

पदच्छेद—

कुत्र कार्यः मया यज्ञः, स्थलम् तद् वाच्यताम् इह ।
महिमा शुकशास्त्रस्य, वक्तव्यः वेदपारगैः ॥

शब्दार्थ—

कुत्र	३.	कहाँ	इह ।	७.	इस लोक में
कार्यः	४.	करना चाहिये	महिमा	१२.	माहात्म्य (भी)
मया	१.	मुझे	शुकशास्त्रस्य	११.	श्रीमद्भागवत पुराण का
यज्ञः	२.	ज्ञान यज्ञ	वक्तव्यः	१३.	सुनावें
स्थलम्	९.	स्थान	वेद	५.	वेदों के
तद्	८.	वह	पारगैः ॥	६.	पारंगत (आप लोक मुझे)
वाच्यताम्	१०.	बतावें (तथा)			

श्लोकार्थ—मुझे ज्ञान यज्ञ कहाँ करना चाहिये ? वेदों के पारंगत आप लोग मुझे इस लोक में वह स्थान बतावें तथा श्रीमद्भागवत पुराण का माहात्म्य भी सुनावें ।

तृतीयः श्लोकः

कियद्भिर्दिवसैः श्राव्या श्रीमद्भागवती कथा।
को विधिस्तत्र कर्तव्यो ममेदं ब्रुवतामितः ॥३॥

पदच्छेद—

कियद्भिः दिवसैः श्राव्या, श्रीमद्भागवती कथा।
कः विधिः तत्र कर्तव्यः, मम इदम् ब्रुवताम् इतः ॥

शब्दार्थ—

कियद्भिः	७.	कितने	तत्र	१०.	उसमें
दिवसैः	८.	दिनों में	कर्तव्यः	१३.	अपनानी चाहिये
श्राव्या	९.	सुनानी चाहिये (और)	मम	२.	मुझे
श्रीमद्भागवती	५.	श्रीमद्भागवत की	इदम्	३.	यह (भी)
कथा।	६.	कथा	ब्रुवताम्	४.	बतावें (कि)
कः	११.	कौन सी	इतः ॥	१.	तथा
विधिः	१२.	विधि			

श्लोकार्थ—तथा मुझे यह भी बतावें कि श्रीमद्भागवत की कथा कितने दिनों में सुनानी चाहिये और उसमें कौन सी विधि अपनानी चाहिये ?

चतुर्थः श्लोकः

कुमारा ऊचुः

शृणु नारद वक्ष्यामो विनम्राय विवेकिने।
गङ्गाद्वारसमीपे तु तटमानन्दनामकम् ॥४॥

पदच्छेद—

शृणु नारद वक्ष्यामः, विनम्राय विवेकिने।
गङ्गाद्वार समीपे तु, तटम् आनन्द नामकम् ॥

शब्दार्थ—

शृणु	२.	सुनें (हम)	**समीपे**	८.	निकट
नारद	१.	हे देवर्षि नारद !	**तु**	६.	कि
वक्ष्यामः	५.	बता रहे हैं	**तटम्**	११.	(गंगा का) एक तट (है)
विनम्राय	३.	विनयी (और)	**आनन्द**	९.	आनन्द
विवेकिने।	४.	विवेकशील (आप से)	**नामकम् ॥**	१०	नाम का
गङ्गाद्वार	७.	हरिद्वार के			

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारद ! सुनें, हम विनयी और विवेकशील आपसे बता रहे हैं कि हरिद्वार के निकट आनन्द नाम का गंगा का एक तट है।

पञ्चमः श्लोकः

नाना ऋषिगणैर्जुष्टं देवसिद्धनिषेवितम् ।
नाना तरुलताकीर्णं नवकोमलवालुकम् ॥५॥

पदच्छेद—

नाना ऋषिगणैः जुष्टम्, देव सिद्ध निषेवितम् ।
नाना तरु लता कीर्णम्, नव कोमल वालुकम् ॥

शब्दार्थ—

नाना	८.	अनेकों	तरु	५.	वृक्षों और
ऋषिगणैः	९.	मुनिसमूहों से	लता	६.	बेलों से
जुष्टम्	१०.	घिरा हुआ (तथा)	कीर्णम्	७.	व्याप्त
देव	११.	देवता और	नव	१.	नयी और
सिद्ध	१२.	सिद्धों से	कोमल	२.	कोमल
निषेवितम् ।	१३.	नित्य सेवित (है)	वालुकम् ॥	३.	रेतों वाला (वह स्थान)
नाना	४	अनेकों			

श्लोकार्थ—नयी और कोमल रेतों वाला वह स्थान अनेकों वृक्षों और बेलों से व्याप्त, अनेकों मुनि समूहों से घिरा हुआ तथा देवता और सिद्धों से नित्य सेवित है ।

षष्ठः श्लोकः

रम्यमेकान्तदेशस्थं हेमपद्मसुसौरभम् ।
यत्समीपस्थजीवानां वैरं चेतसि न स्थितम् ॥६॥

पदच्छेद—

रम्यम् एकान्त देशस्थम्, हेमपद्म सुसौरभम् ।
यत् समीपस्थ जीवानाम्, वैरम् चेतसि न स्थितम् ॥

शब्दार्थ—

रम्यम्	३.	रमणीक (और)	समीपस्थ	७.	निकट रहने वाले
एकान्त	४.	शान्त	जीवानाम्	८.	प्राणियों के
देशस्थम्	५.	भाग में स्थित (है)	वैरम्	१०.	वैर भाव
हेमपद्म	१.	(वह स्थान) पीले कमलों से	चेतसि	९.	मन में
सुसौरभम् ।	२.	सुगन्धित	न	११.	नहीं
यत्	६.	जिसके	स्थितम् ॥	१२.	होता है

श्लोकार्थ—वह स्थान पीले कमलों से सुगन्धित, रमणीक और शान्त भाग में स्थित है; जिसके निकट रहने वाले प्राणियों के मन में वैर भाव नहीं होता है ।

सप्तमः श्लोकः

ज्ञानयज्ञस्त्वया तत्र कर्तव्यो ह्यप्रयत्नतः ।
अपूर्वरसरूपा च कथा तत्र भविष्यति ॥७॥

पदच्छेद—

ज्ञान यज्ञः त्वया तत्र, कर्तव्यः हि अप्रयत्नतः ।
अपूर्व रस रूपा च, कथा तत्र भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

ज्ञान यज्ञः	५.	सप्ताह यज्ञ	रस	११.	रस
त्वया	२.	आप	रूपा	१२.	वाली
तत्र	१.	वहाँ पर	च	७.	निश्चय ही
कर्तव्यः	६.	करें	कथा	९.	(भागवत की) कथा
हि	४.	ही	तत्र	८.	वहाँ
अप्रयत्नतः ।	३.	बिना प्रयास	भविष्यति ॥	१३.	होगी
अपूर्व	१०.	अद्भुत			

श्लोकार्थ—वहाँ पर आप बिना प्रयास ही सप्ताह-यज्ञ करें। निश्चय ही वहाँ भागवत की कथा अद्भुत रस वाली होगी।

अष्टमः श्लोकः

पुरस्थं निर्बलं चैव जराजीर्णकलेवरम् ।
तद्द्वयं च पुरस्कृत्य भक्तिस्तत्रागमिष्यति ॥८॥

पदच्छेद—

पुरःस्थम् निर्बलम् च एव, जरा जीर्ण कलेवरम् ।
तद् द्वयम् च पुरस्कृत्य, भक्तिः तत्र आगमिष्यति ॥

शब्दार्थ—

पुरःस्थम्	१.	(सदा) साथ रहने वाले	तद्	९.	(ज्ञान और वैराग्य) उन
निर्बलम्	४.	दुर्बल	द्वयम्	१०.	दोनों को
च	२.	और	च	५.	तथा
एव	३	अति	पुरस्कृत्य	११.	आगे करके
जरा	६	बुढ़ापे से	भक्तिः	१२.	भक्ति
जीर्ण	७	शिथिल	तत्र	१३.	वहाँ
कलेवरम् ।	८.	शरीर वाले	आगमिष्यति	१४.	आयेगी

श्लोकार्थ—सदा साथ रहने वाले और अति दुर्बल तथा बुढ़ापे से शिथिल शरीर वाले ज्ञान और वैराग्य उन दोनों को आगे करके भक्ति वहाँ आयेगी।

नवमः श्लोकः

यत्र भागवती वार्ता तत्र भक्त्यादिकं व्रजेत् ।
कथाशब्दं समाकर्ण्य तत्त्रिकं तरुणायते ॥९॥

पदच्छेद—

यत्र भागवती वार्ता, तत्र भक्ति आदिकम् व्रजेत् ।
कथा शब्दम् समाकर्ण्य, तत् त्रिकम् तरुणायते ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१. जहाँ पर		कथा	१०. कथा के
भागवती	२. श्रीमद्भागवत की		शब्दम्	११. शब्द को
वार्ता	३. कथा (होगी)		समाकर्ण्य	१२. सुनकर
तत्र	४. वहाँ		तत्	८. वे
भक्ति	५. भक्ति		त्रिकम्	९. तीनों
आदिकम्	६. ज्ञान और वैराग्य		तरुणायते ॥	१३. नवयुवक हो जायेंगे
व्रजेत् ।	७. जायेंगे (तथा)			

श्लोकार्थ—जहाँ पर श्रीमद्भागवत की कथा होगी, वहाँ भक्ति, ज्ञान और वैराग्य जायेंगे तथा वे तीनों कथा के शब्द को सुनकर नवयुवक हो जायेंगे ।

दशमः श्लोकः

सूत उवाच

एवमुक्त्वा कुमारास्ते नारदेन समं ततः ।
गङ्गातटं समाजग्मुः कथापानाय सत्वराः ॥१०॥

पदच्छेद—

एवम् उक्त्वा कुमाराः ते, नारदेन समम् ततः ।
गङ्गा तटम् समाजग्मुः, कथा पानाय सत्वराः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. ऐसा	गङ्गा	११. गङ्गाजी के
उक्त्वा	२. कहकर	तटम्	१२. तट पर
कुमाराः	४. सनकादि कुमार	समाजग्मुः	१३. आ गये
ते	३. वे	कथा	७. कथा रसको
नारदेन	५. देवर्षि नारद के	पानाय	८. पीने के लिये
समम्	६. साथ	सत्वराः ॥	१०. शीघ्र
ततः ।	९. वहाँ से		

श्लोकार्थ—ऐसा कहकर वे सनकादि कुमार देवर्षि नारद के साथ कथा रस को पीने के लिये वहाँ से शीघ्र गङ्गा जी के तट पर आ गये ।

एकादशः श्लोकः

यदा यातास्तटं ते तु तदा कोलाहलोऽप्यभूत् ।
भूर्लोके देवलोके च ब्रह्मलोके तथैव च ॥११॥

पदच्छेद—

यदा याताः तटम् ते तु, तदा कोलाहलः अपि अभूत् ।
भूःलोके देव लोके च, ब्रह्म लोके तथैव च ॥

शब्दार्थ—

यदा	२.	जब	अभूत् ।	१६.	हो गया
याताः	४.	पहुँचे	भूः लोके	७.	पृथ्वी लोक में
तटम्	३.	आनन्द तट पर	देव लोके	६.	स्वर्ग लोक में
ते	१.	वे लोग	च	८.	और
तु	५.	तब	ब्रह्म	१२.	सत्य
तदा	६.	उसी समय	लोके	१३.	लोक में
कोलाहलः	१५.	शोर	तथैव	११.	उसी प्रकार
अपि	१४.	भी	च ॥	१०.	तथा

श्लोकार्थ—वे लोग जब आनन्द तट पर पहुँचे तब उसी समय पृथ्वी लोक में और स्वर्ग लोक में तथा उसी प्रकार सत्य लोक में भी शोर हो गया।

द्वादशः श्लोकः

श्रीभागवतपीयूषपानाय रसलम्पटाः ।
धावन्तोऽप्याययुः सर्वे प्रथमं ये च वैष्णवाः ॥१२॥

पदच्छेद—

श्रीभागवत पीयूष, पानाय रस लम्पटाः ।
धावन्तः अपि आययुः सर्वे, प्रथमम् ये च वैष्णवाः ॥

शब्दार्थ—

श्री भागवत	१.	श्रीमद्भागवत रूपी	आययुः	१३.	(वहाँ) पहुँचे
पीयूष	२.	अमृत को	सर्वे	१०.	सभी
पानाय	३.	पीने के लिये	प्रथमम्	७.	सबसे पहले
रस	४.	रस के	ये	८.	जो
लम्पटाः ।	५.	लोभी	च	६.	तथा
धावन्तः	११.	दौड़ते हुये	वैष्णवाः ॥	९.	वैष्णव (थे वे)
अपि	१२.	ही			

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवतरूपी अमृत को पीने के लिये रस के लोभी तथा सबसे पहले जो वैष्णव थे वे सभी दौड़ते हुये ही वहाँ पहुँचे।

त्रयोदशः श्लोकः

भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनश्च गौतमो मेधातिथिर्देवलदेवरातौ ।
रामस्तथा गाधिसुतश्च शाकलो मृकण्डुपुत्रात्रिजपिप्पलादाः ॥१३॥

पदच्छेद—भृगुः वसिष्ठः च्यवनः च गौतमः, मेधातिथिः देवल देवरातौ ।
रामः तथा गाधि सुतः च शाकलः, मृकण्डुपुत्र अत्रिज पिप्पलादाः ॥

शब्दार्थ—

भृगुः	१. (वहाँ) भृगु	रामः	९. परशुराम
वसिष्ठः	२. वसिष्ठ	तथा	१०. तथा
च्यवनः	३. च्यवन	गाधिसुतः	११. विश्वामित्र
च	४. और	च	१५. एवम्
गौतमः	५. गौतम	शाकलः	१२. शाकल
मेधातिथिः	६. मेधातिथि	मृकण्डुपुत्र	१३. मार्कण्डेय
देवल	७. देवल	अत्रिज	१४. दत्तात्रेय
देवरातौ ।	८. देवरात	पिप्पलादाः ॥	१६. पिप्पलाद ऋषि (पधारे)

श्लोकार्थ—वहाँ भृगु, वसिष्ठ, च्यवन और गौतम, मेधातिथि, देवल, देवरात, परशुराम तथा विश्वामित्र, शाकल, मार्कण्डेय, दत्तात्रेय एवम् पिप्पलाद ऋषि पधारे ।

चतुर्दशः श्लोकः

योगेश्वरौ व्यासपराशरौ च छायाशुको जाजलिजह्नुमुख्याः ।
सर्वेऽप्यमी मुनिगणाः सहपुत्रशिष्याः स्वस्त्रीभिराययुरतिप्रणयेन युक्ताः ॥१४॥

पदच्छेद—योगेश्वरौ व्यास पराशरौ च, छायाशुकः जाजलि जह्नु मुख्याः ।
सर्वे अपि अमी मुनिगणाः सह पुत्र शिष्याः, स्व स्त्रीभिः आययुः अतिप्रणयेन युक्ताः ॥

शब्दार्थ—

योगेश्वरौ	१. योगिराज	मुनिगणाः	११. मुनि जन
व्यास	२. वेदव्यास और	सह	१८. साथ (वहाँ)
पराशरौ	३. पराशर	पुत्र	१४. पुत्रों
च	६. और	शिष्याः	१५. शिष्यों (और)
छायाशुकः	४. छायाशुक	स्व	१६. अपनी
जाजलि	५. जाजलि	स्त्रीभिः	१७. पत्नियों के
जह्नु	७. जह्नु	आययुः	१९. आये
मुख्याः	८. इत्यादि	अतिप्रणयेन	१२. अति अनुराग से
सर्वेऽपि	१०. सभी	युक्ताः ॥	१३. भर कर
अमी	९. ये		

श्लोकार्थ—योगिराज वेद व्यास और पराशर, छायाशुक, जाजलि और जह्नु इत्यादि ये सभी मुनिजन अति-अनुराग से भरकर पुत्रों, शिष्यों और अपनी पत्नियों के साथ वहाँ आये ।

पञ्चदशः श्लोकः

वेदान्तानि च वेदाश्च मन्त्रास्तन्त्राः समूर्तयः ।
दशसप्तपुराणानि षट्शास्त्राणि तथाऽऽययुः ॥१५॥

पदच्छेद—

वेदान्तानि च वेदाः च, मन्त्राः तन्त्राः समूर्तयः ।
दशसप्त पुराणानि, षट् शास्त्राणि तथा आययुः ॥

शब्दार्थ—

वेदान्तानि	३. सभी दर्शनशास्त्र	दशसप्त	७.	सतरह
च	२. और	पुराणानि	८.	पुराण
वेदाः	१. (वहाँ) चारों वेद	षट्	१०.	(व्याकरण, शिक्षा, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प और छन्द) ये छः
च	४. तथा	शास्त्राणि	११.	शास्त्र
मन्त्राः	५. मन्त्र	तथा	९.	एवम्
तन्त्राः	६. तन्त्र	आययुः ॥	१३.	आये
समूर्तयः ।	१२. शरीर धारण करके			

श्लोकार्थ—वहाँ चारों वेद और सभी दर्शन शास्त्र तथा मन्त्र, तन्त्र, सतरह पुराण एवम् व्याकरण, शिक्षा, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प और छन्द ये छः शास्त्र शरीर धारण करके आये ।

षोडशः श्लोकः

गङ्गाद्याः सरितस्तत्र पुष्करादिसरांसि च ।
क्षेत्राणि च दिशः सर्वा दण्डकादिवनानि च ॥१६॥

पदच्छेद—

गङ्गा आद्याः सरितः तत्र, पुष्कर आदि सरांसि च ।
क्षेत्राणि च दिशः सर्वाः, दण्डक आदि वनानि च ।

शब्दार्थ—

गङ्गा	२. गंगा	क्षेत्राणि	९.	सभी क्षेत्र
आद्याः	३. आदि	च	१०.	एवं
सरितः	४. नदियाँ	दिशः	१२.	दिशायें
तत्र	१. वहाँ पर	सर्वाः	११.	सभी
पुष्कर	५. पुष्कर	दण्डक	१४.	दण्डक
आदि	६. आदि	आदि	१५	इत्यादि
सरांसि	७. सरोवर	वनानि	१६.	वन (आये)
च ।	८. तथा	च ॥	१३.	और

श्लोकार्थ—वहाँ पर गंगा आदि नदियाँ, पुष्कर आदि सरोवर तथा सभी क्षेत्र एवं सभी दिशायें और दण्डक इत्यादि वन आये ।

सप्तदशः श्लोकः

नगादयो ययुस्तत्र देवगन्धर्वदानवाः ।
गुरुत्वात्तत्र नायातान्भृगुः सम्बोध्य चानयत् ॥१७॥

पदच्छेद—

नग आदयः ययुः तत्र, देव गन्धर्व दानवाः ।
गुरुत्वात् तत्र न आयातान्, भृगुः सम्बोध्य च आनयत् ॥

शब्दार्थ—

नग	२. पर्वत	तत्र	१०.	वहाँ
आदयः	३. इत्यादि (स्थावर)	न	११.	नहीं
ययुः	७. पधारे	आयातान्	१२.	आने वालों को
तत्र	१. वहाँ पर	भृगुः	१३.	भृगु ऋषि
देव	४. देव	सम्बोध्य	१४.	समझाकर
गन्धर्व	५. गन्धर्व (और)	च	८.	तथा
दानवाः ।	६. दानव (भी)	आनयत् ॥	१५.	लिवा लाये
गुरुत्वात्	९. भारीपन या अभिमान के कारण			

श्लोकार्थ—वहाँ पर पर्वत इत्यादि स्थावर, देव, गन्धर्व और दानव भी पधारे तथा भारीपन या अभिमान के कारण वहाँ नहीं आने वालों को भृगु ऋषि समझाकर लिवा लाये ।

अष्टादशः श्लोकः

दीक्षिता नारदेनाथ दत्तमासनमुत्तमम् ।
कुमारा वन्दिताः सर्वैर्निषेदुः कृष्णतत्पराः ॥१८॥

पदच्छेद—

दीक्षिताः नारदेन अथ, दत्तम् आसनम् उत्तमम् ।
कुमाराः वन्दिताः सर्वैः, निषेदुः कृष्ण तत्पराः ॥

शब्दार्थ—

दीक्षिताः	२. वरण किये हुये	कुमाराः	७.	सनकादि कुमार
नारदेन	८. देवर्षि नारद के	वन्दिताः	४.	पूजित (एवम्)
अथ	१. तदनन्तर	सर्वैः	३.	सबसे
दत्तम्	९. दिये हुये	निषेदुः	१२.	बैठ गये
आसनम्	११. आसन पर	कृष्ण	५.	श्रीकृष्ण
उत्तमम् ।	१०. उत्तम	तत्पराः ॥	६.	परायण

श्लोकार्थ—तदनन्तर वरण किये हुये, सबसे पूजित एवम् श्रीकृष्ण-परायण सनकादि कुमार देवर्षि नारद के दिये हुये उत्तम आसन पर बैठ गये ।

एकोनविंशः श्लोकः

वैष्णवाश्च विरक्ताश्च न्यासिनो ब्रह्मचारिणः ।
मुखभागे स्थितास्ते च तदग्रे नारदः स्थितः ॥१९॥

पदच्छेद—

वैष्णवाः च विरक्ताः च, न्यासिनः ब्रह्मचारिणः ।
मुख भागे स्थिताः ते च, तद् अग्रे नारदः स्थितः ॥

शब्दार्थ—

वैष्णवाः	२. वैष्णव	स्थिताः	१०. बैठ गये
च	१. तथा (जो)	ते	७. वे
विरक्ताः	३. वैरागी	च	११. एवम्
च	५. और	तद्	१२. उनके
न्यासिनः	४. संन्यासी	अग्रे	१३. आगे
ब्रह्मचारिणः ।	६. ब्रह्मचारी (थे)	नारदः	१४. देवर्षि नारद
मुख	८. अगले	स्थितः ॥	१५. बैठे
भागे	९. हिस्से में		

श्लोकार्थ—तथा जो वैष्णव, वैरागी, संन्यासी और ब्रह्मचारी थे; वे अगले हिस्से में बैठ गये एवम् उनके आगे देवर्षि नारद बैठे ।

विंशः श्लोकः

एकभागे ऋषिगणास्तदन्यत्र दिवौकसः ।
वेदोपनिषदोऽन्यत्र तीर्थान्यत्र स्त्रियोऽन्यतः ॥२०॥

पदच्छेद—

एक भागे ऋषि गणाः, तद् अन्यत्र दिवौकसः ।
वेद उपनिषदः अन्यत्र, तीर्थानि अत्र स्त्रियः अन्यतः ॥

शब्दार्थ—

एक भागे	१. (वहाँ) एक भाग में	उपनिषदः	८. उपनिषद (और)
ऋषि गणाः	२. मुनिजन	अन्यत्र	६. दूसरे तरफ
तद्	३. उससे	तीर्थानि	१०. तीर्थ (तथा)
अन्यत्र	४. भिन्न दिशा में	अत्र	९. वहीं पर
दिवौकसः ।	५. देव गण	स्त्रियः	१२. स्त्रियाँ (बैठी थीं)
वेद	७. वेद	अन्यतः ॥	११. उससे अलग भाग में

श्लोकार्थ—वहाँ एक भाग में मुनिजन, उससे भिन्न दिशा में देवगण, दूसरे तरफ वेद, उपनिषद और वहीं पर तीर्थ तथा उससे अलग भाग में स्त्रियाँ बैठी थीं ।

एकविंशः श्लोकः

जयशब्दो नमश्शब्दः शङ्खशब्दस्तथैव च ।
चूर्णलाजाप्रसूनानां निक्षेपः सुमहानभूत् ॥२१॥

पदच्छेद—

जय शब्दः नमः शब्दः, शङ्ख शब्दः तथैव च ।
चूर्ण लाजा प्रसूनानाम्, निक्षेपः सुमहान् अभूत् ॥

शब्दार्थ—

जय शब्दः	१. (वहाँ पर) जय जयकार		चूर्ण	७. अबीर-गुलाल
नमः	२. नमोनमः की		लाजा	८. लावा एवं
शब्दः	३. ध्वनि		प्रसूनानाम्	९. फूलों की
शङ्ख शब्दः	४. शंख की गूँज		निक्षेपः	११. वर्षा
तथैव	६. उसी प्रकार		सुमहान्	१०. अत्यधिक
च ।	५. और		अभूत् ॥	१२. होने लगी

श्लोकार्थ—वहाँ पर जय-जयकार, नमोनमः की ध्वनि, शंख की गूँज और उसी प्रकार अबीर-गुलाल, लावा एवं फूलों की अत्यधिक वर्षा होने लगी ।

द्वाविंशः श्लोकः

विमानानि समारुह्य कियन्तो देवनायकाः ।
कल्पवृक्षप्रसूनैस्तान् सर्वांस्तत्र समाकिरन् ॥२२॥

पदच्छेद—

विमानानि समारुह्य, कियन्तः देव नायकाः ।
कल्पवृक्ष प्रसूनैः तान्, सर्वान् तत्र समाकिरन् ॥

शब्दार्थ—

विमानानि	१. विमानों पर		प्रसूनैः	९. फूलों को
समारुह्य	२. चढ़कर		तान्	६. उन
कियन्तः	३. कई		सर्वान्	७. सब (उपस्थित जनों) पर
देव नायकाः ।	४. प्रधान देवता		तत्र	५. वहाँ
कल्पवृक्ष	८. कल्पवृक्ष के		समाकिरन् ॥	१०. बिखेरने लगे

श्लोकार्थ—विमानों पर चढ़कर कई प्रधान देवता वहाँ उन सब उपस्थित जनों पर कल्पवृक्ष के फूलों को बिखेरने लगे ।

त्रयोविंशः श्लोकः

सूत उवाच

एवं तेष्वेकचित्तेषु श्रीमद्भागवतस्य च ।
माहात्म्यमूचिरे स्पष्टं नारदाय महात्मने ॥२३॥

पदच्छेद—

एवम् तेषु एक चित्तेषु, श्रीमद्भागवतस्य च ।
माहात्म्यम् ऊचिरे स्पष्टम्, नारदाय महात्मने ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	माहात्म्यम्	९.	माहात्म्य
तेषु	२. उन सभी (श्रोताओं) के	ऊचिरे	१०.	समझाया
एकचित्तेषु	३. सावधान हो जाने पर	स्पष्टम्	७.	सुन्दर शब्दों में
श्रीमद्भागवतस्य	८. श्रीमद्भागवत महापुराण का	नारदाय	६.	नारद को
च ।	४. सनकादि कुमारों ने	महात्मने ॥	५.	महात्मा

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन सभी श्रोताओं के सावधान हो जाने पर सनकादि कुमारों ने महात्मा नारद को सुन्दर शब्दों में श्रीमद्भागवत महापुराण का माहात्म्य समझाया ।

चतुर्विंशः श्लोकः

कुमारा ऊचुः

अथ ते वर्ण्यतेऽस्माभिर्महिमा शुकशास्त्रजः ।
यस्य श्रवणमात्रेण मुक्तिः करतले स्थिता ॥२४॥

पदच्छेद—

अथ ते वर्ण्यते अस्माभिः, महिमा शुक शास्त्रजः ।
यस्य श्रवणमात्रेण, मुक्तिः करतले स्थिता ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. अब	यस्य	७.	जिसके
ते	३. आपसे	श्रवणमात्रेण	८.	सुनने मात्र से
वर्ण्यते	६. वर्णन करते हैं	मुक्तिः	९.	मोक्ष
अस्माभिः	२. हम	करतले	१०.	हाथ में
महिमा	५. माहात्म्य का	स्थिता ॥	११.	रहता है
शुकशास्त्रजः ।	४. श्रीमद्भागवत महापुराण के			

श्लोकार्थ—अब हम आपसे श्रीमद्भागवत महापुराण के माहात्म्य का वर्णन करते हैं, जिसके सुनने मात्र से मोक्ष हाथ में रहता है ।

पञ्चविंशः श्लोकः

सदा सेव्या सदा सेव्या श्रीमद्भागवती कथा ।
यस्याः श्रवणमात्रेण हरिश्चित्तं समाश्रयेत् ॥२५॥

पदच्छेद—

सदा सेव्या सदा सेव्या, श्रीमद्भागवती कथा ।
यस्याः श्रवणमात्रेण हरिः, चित्तम् समाश्रयेत् ॥

शब्दार्थ—

सदा	३.	सदा	**यस्याः**	७.	(क्योंकि) इसके
सेव्या	४.	सेवन करो	**श्रवणमात्रेण**	८.	सुनने मात्र से
सदा	५.	सदा	**हरिः**	९.	भगवान् श्रीहरि
सेव्या	६.	सेवन करो	**चित्तम्**	१०.	हृदय में
श्रीमद्भागवती	१.	श्रीमद्भागवत महापुराण की	**समाश्रयेत् ॥**	११.	विराजमान हो जाते हैं
कथा ।	२.	कथा का			

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा का सदा सेवन करो, सदा सेवन करो; क्योंकि इसके सुनने मात्र से भगवान् श्रीहरि हृदय में विराजमान हो जाते हैं ।

षड्विंशः श्लोकः

ग्रन्थोऽष्टादशसाहस्रो द्वादशस्कन्धसम्मितः ।
परीक्षिच्छुकसंवादः शृणु भागवतं च तत् ॥२६॥

पदच्छेद—

ग्रन्थः अष्टादश साहस्रः, द्वादश स्कन्ध सम्मितः ।
परीक्षित् शुक संवादः, शृणु भागवतम् च तत् ॥

शब्दार्थं—

ग्रन्थः	११.	महापुराण को	**शुक**	७.	श्रीशुकदेव मुनि के
अष्टादश	१.	अट्ठारह	**संवादः**	८.	प्रश्नोत्तर से युक्त
साहस्रः	२.	हजार (श्लोकों और)	**शृणु**	१२.	सुनो
द्वादश स्कन्ध	३.	बारह स्कन्धों में	**भागवतम्**	१०.	श्रीमदभागवत
सम्मितः ।	४.	विभाजित	**च**	५.	तथा
परीक्षित्	६.	राजा परीक्षित् (और)	**तत् ॥**	९.	उस

श्लोकार्थं—अट्ठारह हजार श्लोकों और बारह स्कन्धों में विभाजित तथा राजा परीक्षित् और श्रीशुकदेव मुनि के प्रश्नोत्तर से युक्त उस श्रीमदभागत महापुराण को सुनो ।

सप्तविंशः श्लोकः

तावत्संसारचक्रेऽस्मिन् भ्रमतेऽज्ञानतः पुमान् ।
यावत्कर्णगता नास्ति शुकशास्त्रकथा क्षणम् ॥२७॥

पदच्छेद—

तावत् संसार चक्रे अस्मिन्, भ्रमते अज्ञानतः पुमान् ।
यावत् कर्ण गता न अस्ति, शुक शास्त्र कथा क्षणम् ॥

शब्दार्थ—

तावत्	६.	तब तक	यावत्	८.	जब तक
संसार	२.	संसार के	कर्णगता	१३.	सुन लेता
चक्रे	४.	चक्कर में	न	१२.	नहीं
अस्मिन्	३.	इस	अस्ति	१४.	है
भ्रमते	७.	भटकता है	शुकशास्त्र	९.	श्रीमद्भागवत महापुराण की
अज्ञानतः	५.	अज्ञानवश	कथा	१०.	कथा को
पुमान् ।	१.	मनुष्य	क्षणम् ॥	११.	क्षण भर (भी)

श्लोकार्थ—मनुष्य संसार के इस चक्कर में अज्ञान-वश तब तक भटकता है; जब तक श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा को क्षण भर भी नहीं सुन लेता है ।

अष्टाविंशः श्लोकः

किं श्रुतैर्बहुभिः शास्त्रैः पुराणैश्च भ्रमावहैः ।
एकं भागवतं शास्त्रं मुक्तिदानेन गर्जति ॥२८॥

पदच्छेद—

किम् श्रुतैः बहुभिः शास्त्रैः, पुराणैः च भ्रम आवहैः ।
एकम् भागवतम् शास्त्रम्, मुक्ति दानेन गर्जति ॥

शब्दार्थ—

किम्	८.	क्या (प्रयोजन)	आवहैः ।	५.	डालने वाले
श्रुतैः	७.	सुनने से	एकम्	९.	केवल
बहुभिः	१.	बहुत से	भागवतम्	१०.	श्रीमद्भागवत
शास्त्रैः	२.	शास्त्रों	शास्त्रम्	११.	महापुराण
पुराणैः	६.	पुराणों को	मुक्ति	१२.	मोक्ष
च	३.	और	दानेन	१३.	देने के लिये
भ्रम	४	चक्कर में	गर्जति ॥	१४.	गरज रहा है

श्लोकार्थ—बहुत से शास्त्रों और चक्कर में डालने वाले पुराणों को सुनने से क्या प्रयोजन ? केवल श्रीमद्भागवत महापुराण मोक्ष देने के लिये गरज रहा है ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

कथा भागवतस्यापि नित्यं भवति यद्गृहे ।
तद्गृहं तीर्थरूपं हि वसतां पापनाशनम् ॥२६॥

पदच्छेद—

कथा भागवतस्य अपि, नित्यं भवति यद् गृहे ।
तद् गृहम् तीर्थरूपम् हिं, वसताम् पाप नाशनम् ॥

शब्दार्थ—

कथा	६.	कथा	**तद्**	८.	वह
भागवतस्य	४.	श्रीमद्भागवत महापुराण की	**गृहम्**	६.	घर
अपि	५.	केवल	**तीर्थरूपम्**	१०.	तीर्थ के समान
नित्यम्	३.	सदा	**हि**	११.	ही
भवति	७.	होती है	**वसताम्**	१२.	रहने वालों के
यद्	१.	जिस	**पाप**	१३.	पापों को
गृहे ।	२.	घर में	**नाशनम् ॥**	१४.	दूर कर देता है

श्लोकार्थ—जिस घर में सदा श्रीमद्भागवत महापुराण की केवल कथा होती है; वह घर तीर्थ के समान ही रहने वालों के पापों को दूर कर देता है ।

त्रिंशः श्लोकः

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
शुकशास्त्रकथायाश्च कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३०॥

पदच्छेद—

अश्वमेध सहस्राणि, वाजपेय शतानि च ।
शुकशास्त्र कथायाः च, कलाम् न अर्हन्ति षोडशीम् ॥

शब्दार्थ—

अश्वमेध	२.	अश्वमेध यज्ञ	**कथायाः**	७.	कथा के
सहस्राणि	१.	हजारों	**च**	१०.	भी
वाजपेय	५.	वाजपेय यज्ञ	**कलाम्**	६.	भाग को
शतानि	४.	सैकड़ों	**न**	११.	नहीं
च ।	३.	और	**अर्हन्ति**	१२.	पा सकते हैं
शुकशास्त्र	६.	श्रीमद्भागवत महापुराण की	**षोडशीम् ॥**	८.	सोलहवें

श्लोकार्थ— हजारों अश्वमेध यज्ञ और सैकड़ों वाजपेय यज्ञ श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा के सोलहवें भाग को भी नहीं पा सकते हैं ।

एकत्रिंशः श्लोकः

तावत्पापानि देहेऽस्मिन् निवसन्ति तपोधनाः ।
यावन्न श्रूयते सम्यक् श्रीमद्भागवतं नरैः ॥३१॥

पदच्छेद—

तावत् पापानि देहे अस्मिन्, निवसन्ति तपोधनाः ।
यावत् न श्रूयते सम्यक्, श्रीमद्भागवतम् नरैः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	५.	तब तक	यावत्	७.	जब तक
पापानि	४.	पाप	न	११.	नहीं
देहे	३.	शरीर में	श्रूयते	१२.	सुन लेता
अस्मिन्	२.	इस	सम्यक्	९.	विधिवत्
निवसन्ति	६.	रहते हैं	श्रीमद्भागवतम्	१०.	श्रीमद्भागवत महापुराण
तपोधनाः ।	१.	हे तपस्वियों !	नरैः ॥	८.	मनुष्य

श्लोकार्थ—हे तपस्वियों ! इस शरीर में पाप तब तक रहते हैं; जब तक मनुष्य विधिवत् श्रीमद्भागवत महापुराण नहीं सुन लेता ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

न गङ्गा न गया काशी पुष्करं न प्रयागकम् ।
शुकशास्त्रकथायाश्च फलेन समतां नयेत् ॥३२॥

पदच्छेद—

न गङ्गा न गया काशी, पुष्करम् न प्रयागकम् ।
शुक शास्त्र कथायाः च, फलेन समतां नयेत् ॥

शब्दार्थ—

न	१.	न	प्रयागकम् ।	७.	प्रयाग
गङ्गा	२.	गंगा	शुकशास्त्र	१०.	श्रीमद्भागवत महापुराण
न	३.	न	कथायाः	११.	कथा को
गया	४.	गया (तथा)	च	८.	भी
काशी	५.	काशी	फलेन	९.	(अपने) पुण्य फल से
पुष्करम्	६.	पुष्कर (और)	समताम्	१२.	बराबरी
न	१३.	नहीं	नयेत् ॥	१४.	कर सकते हैं

श्लोकार्थ—न गंगा, न गया तथा काशी, पुष्कर और प्रयाग भी अपने पुण्यफल से श्रीमद्भागवत महापुराण कथा की बराबरी नहीं कर सकते हैं ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

श्लोकार्धं श्लोकपादं वा नित्यं भगवतोद्भवम् ।
पठस्व स्वमुखेनैव यदीच्छसि परां गतिम् ॥३३॥

पदच्छेद—

श्लोक अर्धम् श्लोक पादम् वा, नित्यम् भागवत उद्भवम् ।
पठस्व स्व मुखेन एव, यदि इच्छसि पराम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

श्लोक	११.	श्लोक	**पठस्व**	१६.	पाठ करो
अर्धम्	१०.	आधे	**स्व**	५.	अपने
श्लोक	१४.	श्लोक का (भी)	**मुखेन**	७.	मुख से
पादम्	१३.	चौथाई	**एव**	६.	ही
वा	१२.	अथवा	**यदि**	१.	यदि (तुम)
नित्यम्	१५.	प्रतिदिन	**इच्छसि**	४.	चाहते हो (तो)
भागवत	८.	श्रीमद्भागवत महापुराण से	**पराम्**	२.	उत्तम
उद्भवम् ।	९.	सम्बन्धित	**गतिम् ॥**	३.	गति

श्लोकार्थ—यदि तुम उत्तम गति चाहते हो तो अपने ही मुख से श्रीमदभागवत महापुराण से सम्बन्धित आधे श्लोक अथवा चौथाई श्लोक का भी प्रतिदिन पाठ करो ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

वेदादिर्वेदमाता च पौरुषं सूक्तमेव च ।
त्रयी भागवतं चैव द्वादशाक्षर एव च ॥३४॥

पदच्छेद—

वेद आदिः वेद माता च, पौरुषम् सूक्तम् एव च ।
त्रयी भागवतम् च एव, द्वादशाक्षरः एव च ॥

शब्दार्थ—

वेद	१.	वेद का	**एव च ।**	७.	तथा
आदिः	२.	मूल (ॐकार)	**त्रयी**	८.	तीनों वेद
वेदमाता	३.	गायत्री	**भागवतम्**	९.	श्रीमदभागवत महापुराण
च	४.	और	**च एव**	१०.	एवम्
पौरुषम्	५.	पुरुष	**द्वादशाक्षरः**	११.	द्वादशाक्षर मंत्र
सूक्तम्	६.	सूक्त	**एव च ॥**	१२.	ये सब एक हैं

श्लोकार्थ—वेद का मूल ॐकार, गायत्री और पुरुष सूक्त तथा तीनों वेद, श्रीमदभागवत महापुराण एवं द्वादशाक्षर मंत्र ये सब एक हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

द्वादशात्मा प्रयागश्च कालः संवत्सरात्मकः ।
ब्राह्मणाश्चाग्निहोत्रं च सुरभिर्द्वादशी तथा ॥३५॥

पदच्छेद—

द्वादशात्मा प्रयागः च, कालः संवत्सर आत्मकः ।
ब्राह्मणाः च अग्निहोत्रम् च, सुरभिः द्वादशी तथा ॥

शब्दार्थ—

द्वादशात्मा	१. भगवान् सूर्य		च	७. तथा
प्रयागः	२. तीर्थराज प्रयाग		अग्निहोत्रम्	१०. हवन
च	३. और		च	९. एवम्
कालः	६. भगवान् काल		सुरभिः	११. गऊ
संवत्सर	४. संवत्सर		द्वादशी	१३. द्वादशी तिथि (इनमें भेद नहीं है)
आत्मकः ।	५. स्वरूप वाले		तथा ॥	१२. तथा
ब्राह्मणाः	८. ब्राह्मण			

श्लोकार्थ—भगवान् सूर्य, तीर्थराज प्रयाग और संवत्सर स्वरूप वाले भगवान् काल तथा ब्राह्मण एवम् हवन, गऊ तथा द्वादशी तिथि इनमें भेद नहीं है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

तुलसी च वसन्तश्च पुरुषोत्तम एव च ।
एतेषां तत्त्वतः प्राज्ञैर्न पृथग्भाव इष्यते ॥३६॥

पदच्छेद—

तुलसी च वसन्तः च, पुरुषोत्तमः एव च ।
एतेषाम् तत्त्वतः प्राज्ञैः, न पृथग्भावः इष्यते ॥

शब्दार्थ—

तुलसी	२. तुलसी	एतेषाम्	७. इन सब में
च	३. और	तत्त्वतः	९. वस्तुतः
वसन्तः	४. वसन्त ऋतु	प्राज्ञैः	८. विद्वज्जन
च	१. तथा	न	११. नहीं
पुरुषोत्तमः	६. भगवान् पुरुषोत्तम	पृथग्भावः	१०. भेद
एव च ।	५. एवम्	इष्यते ॥	११. मानते हैं

श्लोकार्थ—तथा तुलसी और वसन्त ऋतु एवम् भगवान् पुरुषोत्तम इन सब में विद्वज्जन वस्तुतः भेद नहीं मानते हैं

सप्तत्रिंशः श्लोकः

यश्च भागवतं शास्त्रं वाचयेदर्थतोऽनिशम् ।
जन्मकोटिकृतं पापं नश्यते नात्र संशयः ॥३७॥

पदच्छेद—

य: च भागवतम् शास्त्रम्, वाचयेत् अर्थतः अनिशम् ।
जन्म कोटि कृतम् पापम्, नश्यते न अत्र संशयः ॥

शब्दार्थं—

यः	२.	जो (व्यक्ति)	कोटि	८.	करोड़ों
च	१.	तथा	कृतम्	१०.	किये हुये (उसके)
भागवतम्	३.	श्रीमद्भागवत	पापम्	११.	पाप
शास्त्रम्	४.	पुराण का	नश्यते	१२.	नष्ट हो जाते हैं ।
वाचयेत्	७.	पाठ करता है	न	१५.	नहीं (है)
अर्थतः	६.	अर्थ पूर्वक	अत्र	१३.	इसमें
अनिशम् ।	५.	निश-दिन	संशयः ॥	१४.	सन्देह
जन्म	९.	जन्मों से			

श्लोकार्थं—तथा जो व्यक्ति श्रीमद्भागवत पुराण का निश-दिन अर्थपूर्वक पाठ करता है; करोड़ों जन्मों से किये हुए उसके पाप नष्ट हो जाते हैं । इसमें सन्देह नहीं है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

श्लोकार्धं श्लोकपादं वा पठेद्भागवतं च यः ।
नित्यं पुण्यमवाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः ॥३८॥

पदच्छेद—

श्लोक अर्धम् श्लोक पादम् वा, पठेत् भागवतम् च यः ।
नित्यम् पुण्यम् अवाप्नोति, राजसूय अश्वमेधयोः ॥

शब्दार्थं—

श्लोक अर्धम्	३.	आधे श्लोक	यः ।	१.	जो (व्यक्ति)
श्लोक पादम्	५.	चौथाई श्लोक का	नित्यम्	७.	प्रतिदिन
वा	४.	अथवा	पुण्यम्	११.	फल
पठेत्	८.	पाठ करता है (वह)	अवाप्नोति	१२.	पाता है
भागवतम्	२.	श्रीमद्भागवत के	राजसूय	९.	राजसूय और
च	६.	भी	अश्वमेधयोः ॥	१०.	अश्वमेध यज्ञों का

श्लोकार्थं—जो व्यक्ति श्रीमद्भागवत के आधे श्लोक अथवा चौथाई श्लोक का भी प्रतिदिन पाठ करता है वह राजसूय और अश्वमेध यज्ञों का फल पाता है ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

उक्तं भागवतं नित्यं कृतं च हरिचिन्तनम् ।
तुलसीपोषणं चैव धेनूनां सेवनं समम् ॥३९॥

पदच्छेद—

उक्तम् भागवतम् नित्यम्, कृतम् च हरि चिन्तनम् ।
तुलसी पोषणम् च एव, धेनूनाम् सेवनम् समम् ॥

शब्दार्थ—

उक्तम्	३.	पाठ	तुलसी	७.	तुलसी का
भागवतम्	२.	श्रीमद्भागवत का	पोषणम्	८.	सींचना
नित्यम्	१.	प्रतिदिन	च एव	९.	तथा
कृतम्	५.	किया गया	धेनूनाम्	१०.	गऊओं की
च	४.	और	सेवनम्	११.	सेवा (सब)
हरि चिन्तनम् ।	६.	श्री हरि का ध्यान	समम् ॥	१२.	समान (हैं)

श्लोकार्थ—प्रतिदिन श्रीमद्भागवत का पाठ और किया गया श्री हरि का ध्यान, तुलसी का सींचना तथा गऊओं की सेवा सब समान हैं ।

चत्वारिंशः श्लोकः

अन्तकाले तु येनैव श्रूयते शुकशास्त्रवाक् ।
प्रीत्या तस्यैव वैकुण्ठं गोविन्दोऽपि प्रयच्छति ॥४०॥

पदच्छेद—

अन्तकाले तु येन एव, श्रूयते शुक शास्त्र वाक् ।
प्रीत्या तस्य एव वैकुण्ठम्, गोविन्दः अपि प्रयच्छति ॥

शब्दार्थ—

अन्तकाले	४	अन्त समय में	प्रीत्या	१०.	प्रीति होने से
तु	१.	तथा	तस्य	११.	उसे
येन	२.	जो	एव	१२.	ही
एव	३.	कोई	वैकुण्ठम्	१३.	वैकुण्ठधाम
श्रूयते	७.	सुनता है	गोविन्दः	८.	श्री हरि
शुकशास्त्र	५.	श्रीमद्भागवत के	अपि	९.	भी
वाक् ।	६.	शब्द को	प्रयच्छति ॥	१४.	देते हैं

श्लोकार्थ—तथा जो कोई अन्तसमय में श्रीमद्भागवत के शब्द को सुनता है; श्री हरि भी प्रीति होने से उसे ही वैकुण्ठधाम देते हैं ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

हेमसिंहयुतं चैतद् वैष्णवाय ददाति च ।
कृष्णेन सह सायुज्यं स पुमाँल्लभते ध्रुवम् ॥४१॥

पदच्छेद— हेम सिंह युतम् च एतद्, वैष्णवाय ददाति च ।
कृष्णेन सह सायुज्यम्, सः पुमान् लभते ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

हेम	४.	सुवर्ण के	च ।	२.	(जो व्यक्ति)
सिंह, युतम्	५.	सिंहासन के, साथ	कृष्णेन, सह	९.	श्रीकृष्ण के, साथ
च	१.	तथा	सायुज्यम्	११.	सायुज्य-मोक्ष
एतद्	६.	यह (पुराण)	सः, पुमान्	८.	वह, पुरुष
वैष्णवाय	३.	वैष्णव जन को	लभते	१२.	पाता है
ददाति	७.	देता है	ध्रुवम् ॥	१०.	निश्चय ही

श्लोकार्थ—तथा जो व्यक्ति वैष्णव जन को सुवर्ण के सिंहासन के साथ यह पुराण देता है; वह पुरुष श्रीकृष्ण के साथ निश्चय ही सायुज्य-मोक्ष पाता है ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

आजन्ममात्रमपि येन शठेन किंचिच्चित्तं विधाय शुकशास्त्रकथा न पीता ।
चाण्डालवच्च खरवद्बत तेन नीतं मिथ्या स्वजन्म जननीजनिदुःखभाजा ॥४२॥

पदच्छेद—आजन्म मात्रम् अपि येन शठेन किंचित्, चित्तम् विधाय शुकशास्त्र कथा न पीता ।
चाण्डालवत् च खरवत् बत तेन नीतम्, मिथ्या स्वजन्म जननी जनि दुःखभाजा ॥

शब्दार्थ—

आजन्म, मात्रम्	४.	जीवन भर में	चाण्डालवत्	१७.	चाण्डाल
अपि	६.	भी	च, खरवत्	१८.	और, गदहे के समान
येन, शठेन	१.	जिस, धूर्त (व्यक्ति) ने	बत	११.	खेद है
किंचित्,	५.	थोड़ा	तेन	१५.	उस (व्यक्ति) ने
चित्तम्	२.	मन	नीतम्,	२०.	गवाँ दिया
विधाय	३.	लगाकर	मिथ्या	१९.	व्यर्थ में
शुकशास्त्र	७.	श्रीमद्भागवत पुराण के	स्वजन्म	१६.	अपने जन्म को
कथा	८.	कथा-रस का	जननी	१२.	माता को
न	९.	नहीं	जनि, दुःख	१३.	प्रसव, वेदना
पीता ।	१०.	पान किया है	भाजा ॥	१४.	देने वाले

श्लोकार्थ—जिस धूर्त व्यक्ति ने मन लगाकर जीवनभर में थोड़ा भी श्रीमद्भागवतपुराण के कथा-रस का पान नहीं किया है, खेद है; माता को प्रसव वेदना देने वाले उस व्यक्ति ने अपने जन्म को चाण्डाल और गदहे के समान व्यर्थ में गवाँ दिया ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

जीवच्छवो निगदितः स तु पापकर्मा, येन श्रुतं शुककथावचनं न किंचित् ।
धिक् तं नरं पशुसमं भुवि भाररूपम्, एवं वदन्ति दिवि देवसमाजमुख्याः ॥४३॥

पदच्छेद—जीवत् शवः निगदितः सः तु पाप कर्मा, येन श्रुतम् शुक कथा वचनम् न किंचित् ।
धिक् तम् नरम् पशु समम् भुवि भाररूपम्, एवम् वदन्ति दिवि देव समाज मुख्याः ॥

शब्दार्थ—

जीवत्	१४. जीता हुआ (भी)		धिक्	२४. धिक्कार (है)
शवः	१५. मुर्दा		तम्	२२. उस
निगदितः	१६. है		नरम्	२३. मनुष्य को
सः	१३. वह (मनुष्य)		पशु	२०. पशु के
तु	१७. तथा		समम्	२१. समान
पापकर्मा,	१२. पाप कर्म करने वाला		भुवि	१८. पृथ्वी पर
येन	९. जिस (मनुष्य) ने		भाररूपम्,	१९. बोझ बने
श्रुतम्	११. सुना है		एवम्	४. ऐसा
शुक कथा	७. श्रीमदभागवत की		वदन्ति	५. कहते हैं (कि)
वचनम्	८. वाणी को		दिवि	१. स्वर्गलोक में
न	१०. नहीं		देव समाज	३. देव गण
किंचित् ।	६. कुछ (भी)		मुख्याः ॥	२. प्रधान

श्लोकार्थ—स्वर्गलोक में प्रधान देवगण ऐसा कहते हैं कि जिस मनुष्य ने श्रीमदभागवत की वाणी को कुछ भी नहीं सुना है; पापकर्म करने वाला वह मनुष्य जीता हुआ भी मुर्दा है तथा पृथ्वी पर बोझ बने पशु के समान उस मनुष्य को धिक्कार है ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

दुर्लभैव कथा लोके श्रीमद्भागतोद्भवा ।
कोटिजन्मसमुत्थेन पुण्येनैव तु लभ्यते ॥४४॥

पदच्छेद— **दुर्लभा एव कथा लोके, श्रीमद्भागवत उद्भवा ।**
कोटि जन्म समुत्थेन, पुण्येन एव तु लभ्यते ॥

शब्दार्थ—

दुर्लभा	४. दुर्लभ (है)	जन्म, समुत्थेन	७. जन्मों के, संचित
एव	३. बहुत	पुण्येन, एव	८. पुण्य से, ही (वह)
कथा, लोके	२. कथा, संसार में	तु	५. क्योंकि
श्रीमद्भागवत, उद्भवा ।	१. श्रीमदभागवत में वर्णित	लभ्यते ॥	९. प्राप्त होती है
कोटि	६. करोड़ों		

श्लोकार्थ—श्रीमदभागवत में वर्णित कथा संसार में बहुत दुर्लभ है, क्योंकि करोड़ों जन्मों के संचित पुण्य से ही वह प्राप्त होती है ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तेन योगनिधे धीमन् श्रोतव्या सा प्रयत्नतः।
दिनानां नियमो नास्ति सर्वदा श्रवणं मतम् ॥४५॥

पदच्छेद—

तेन योगनिधे धीमन्, श्रोतव्या सा प्रयत्नतः।
दिनानाम् नियमः न अस्ति, सर्वदा श्रवणम् मतम् ॥

शब्दार्थ—

तेन	१.	इसलिये	नियमः	८.	प्रतिवन्ध
योगनिधे	२.	योग के सागर (एवं)	न	९.	नहीं
धीमन्	३.	बुद्धिमान् (हे नारद जी)	अस्ति	१०.	है (इसे)
श्रोतव्या	६.	सुनना चाहिये	सर्वदा	११.	सदा
सा	४.	उस (कथा) को	श्रवणम्	१२.	सुनना
प्रयत्नतः।	५.	बड़े प्रयास से	मतम् ॥	१३.	शास्त्र सम्मत (है)
दिनानाम्	७.	(इसमें) दिनों का			

श्लोकार्थ—इसलिये योग के सागर एवम् बुद्धिमान् हे नारद जी! उस कथा को बड़े प्रयास से सुनना चाहिये। इसमें दिनों का प्रतिवन्ध नहीं है। इसे सदा सुनना शास्त्र सम्मत है।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

सत्येन ब्रह्मचर्येण सर्वदा श्रवणं मतम्।
अशक्यत्वात्कलौ बोध्यो विशेषोऽत्र शुकाज्ञया ॥४६॥

पदच्छेद—

सत्येन ब्रह्मचर्येण, सर्वदा श्रवणम् मतम्।
अशक्यत्वात् कलौ बोध्यः, विशेषः अत्र शुक आज्ञया ॥

शब्दार्थ—

सत्येन	१.	(श्रीमद्भागवतपुराण को) सत्य और	कलौ	६.	कलियुग में (लोगों के)
ब्रह्मचर्येण	२.	ब्रह्मचर्य धारण करके	बोध्यः	१२.	बतलाई गई है
सर्वदा	३.	सदा	विशेषः	११.	सप्ताह की विधि
श्रवणम्	४.	सुनना	अत्र	१०.	इसके
मतम्।	५.	चाहिये (किन्तु)	शुक	८.	शुकदेव मुनि की
अशक्यत्वात्	७.	असमर्थ होने के कारण	आज्ञया ॥	९.	आज्ञा से

श्लोकार्थ—श्रीमदभागवत पुराण को सत्य और ब्रह्मचर्य धारण करके सदा सुनना चाहिये। किन्तु कलियुग में लोगों के असमर्थ होने के कारण शुकदेव मुनि की आज्ञा से इसके सप्ताह की विधि बतलाई गई है।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

मनोवृत्तिजयश्चैव नियमाचरणं तथा ।
दीक्षां कर्तुमशक्यत्वात् सप्ताहश्रवणं मतम् ॥४७॥

पदच्छेद—

मनः वृत्ति जयः च एव, नियम आचरणम् तथा ।
दीक्षाम् कर्तुम् अशक्त्वात्, सप्ताह श्रावणम् मतम् ॥

शब्दार्थ—

मनः	१. चित्तकी	तथा ।	७. तथा
वृत्ति	२. वृत्तियों पर	दीक्षाम्	८. दीक्षा
जयः	३. विजय	कर्तुम्	९. लेने में
च	४. और	अशक्यत्वात्	१०. असमर्थ होने से
एव	११. ही (मनुष्यों को)	सप्ताह	१२. भागवत सप्ताह
नियम	५. नियम का	श्रवणम्	१३. सुनना
आचरणम्	६. पालन	मतम् ॥	१४. चाहिये

श्लोकार्थ—चित्त की वृत्तियों पर विजय और नियम का पालन तथा दीक्षा लेने में असमर्थ होने से ही मनुष्यों को भागवत सप्ताह सुनना चाहिये ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

श्रद्धातः श्रवणे नित्यं माघे तावद्धि यत्फलम् ।
तत्फलं शुकदेवेन सप्ताहश्रवणे कृतम् ॥४८॥

पदच्छेद—

श्रद्धातः श्रवणे नित्यम्, माघे तावत् हि यत् फलम् ।
तत् फलम् शुक देवेन, सप्ताह श्रवणे कृतम् ॥

शब्दार्थ—

श्रद्धातः	३. श्रद्धा पूर्वक	तत्	९. वह
श्रवणे	४. (श्रीमदभागवत) सुनने से	फलम्	१०. फल
नित्यम्	२. प्रतिदिन	शुक	११. श्री शुकदेव
माघे	१. माघ मास में	देवेन	१२. मुनि ने
तावत्	७. निश्चय	सप्ताह	१३. भागवत-सप्ताह
हि	८. ही	श्रवणे	१४. सुनने में
यत्	५. जो	कृतम् ॥	१५. निश्चित किया है
फलम् ।	६. फल (मिलता है)		

श्लोकार्थ—माघ मास में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक श्रीमदभागवत सुनने से जो फल मिलता है; निश्त्रय ही वह फल श्री शुकदेव मुनि ने भागवत सप्ताह सुनने में निश्चित किया है ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

मनसश्चाजयाद्रोगात्पुंसां चैवायुषः क्षयात् ।
कलेर्दोषबहुत्वाच्च सप्ताहश्रवणं मतम् ॥४९॥

पदच्छेद—

मनसः च अजयात् रोगात्, पुंसाम् च एव आयुषः क्षयात् ।
कलेः दोष बहुत्वात् च, सप्ताह श्रवणम् मतम् ॥

शब्दार्थ—

मनसः	२. मन के		क्षयात् ।	८. क्षीण होने से
च	४. तथा		कलेः	१०. कलियुग के
अजयात्	३. वश में न होने से		दोष	१२. दोषों के रहते
रोगात्	५. रोगों के कारण		बहुत्वात्	११ अनेकों
पुंसाम्	१. मनुष्यों के		च	९. एवम्
च	६. और		सप्ताह	१३. भागवत सप्ताह का
एव	१५. ही		श्रवणम्	१४. सुनना
आयुषः	७. आयु के		मतम् ॥	१६. उचित है

श्लोकार्थ—मनुष्यों के मन के वश में न होने से तथा रोगों के कारण और आयु के क्षीण होने से एवम् कलियुग के अनेकों दोषों के रहते भागवत-सप्ताह का सुनना ही उचित है ।

पञ्चाशः श्लोकः

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना ।
अनायासेन तत्सर्वं सप्ताहश्रवणे लभेत् ॥५०॥

पदच्छेद—

यत् फलम् न अस्ति तपसा, न योगेन समाधिना ।
अनायासेन तत् सर्वम्, सप्ताह श्रवणे लभेत् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जो		समाधिना ।	७. समाधि से (भी)
फलम्	२. फल		अनायासेन	१३. आसानी से
न	४. नहीं		तत्	९. वह
अस्ति	५. होता है		सर्वम्	१०. सारा (फल)
तपसा	३. तपस्या से		सप्ताह	११. भागवत सप्ताह को
न	८. नहीं (होता है)		श्रवणे	१२. सुनने पर
योगेन	६. योग (और)		लभेत् ॥	१४. मिल जाता है

श्लोकार्थ—जो फल तपस्या से नहीं होता है, योग और समाधि से भी नहीं होता है, वह सारा फल भागवत सप्ताह को सुनने पर आसानी से मिल जाता है ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

यज्ञाद् गर्जंति सप्ताहः सप्ताहो गर्जंति व्रतात् ।
तपसो गर्जंति प्रोच्चैस्तीर्थान्नित्यं हि गर्जंति ॥५१॥

पदच्छेद—

यज्ञात् गर्जंति सप्ताहः, सप्ताहः गर्जंति व्रतात् ।
तपसः गर्जंति प्रोच्चैः, तीर्थात् नित्यम् हि गर्जंति ॥

शब्दार्थ—

यज्ञात्	२.	यज्ञ से	गर्जंति	९.	महान् है
गर्जंति	३.	श्रेष्ठ है	प्रोच्चैः	८.	बहुत
सप्ताहः	१.	भागवत-सप्ताह की कथा	तीर्थात्	११.	तीर्थ से
सप्ताहः	४.	यह सप्ताह-कथा	नित्यम्	१२.	सदा
गर्जंति	६.	उत्तम है	हि	१०.	तथा
व्रतात् ।	५.	व्रत से	गर्जंति ॥	१३.	बढ़कर है
तपसः	७.	तपस्या से			

श्लोकार्थ—भागवत-सप्ताह की कथा यज्ञ से श्रेष्ठ है। यह सप्ताह-कथा व्रत से उत्तम है, तपस्या से बहुत महान् है तथा तीर्थ से सदा बढ़कर है।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

योगाद् गर्जंति सप्ताहो ध्यानाज्ज्ञानाच्च गर्जंति ।
किं ब्रूमो गर्जनं तस्य रे रे गर्जंति गर्जंति ॥५२॥

पदच्छेद—

योगाद् गर्जंति सप्ताहः, ध्यानात् ज्ञानात् च गर्जंति ।
किम् ब्रूमः गर्जनम् तस्य, रे रे गर्जंति गर्जंति ॥

शब्दार्थ—

योगात्	२.	योग से	किम्	१०.	(हम) क्या
गर्जंति	३.	महान् है	ब्रूमः	११.	बतावें
सप्ताहः	१.	भागवत-सप्ताह	गर्जनम्	९.	महानता को
ध्यानात्	४.	ध्यान	तस्य	८.	उसकी
ज्ञानात्	६.	ज्ञान से (भी)	रे रे	१२.	अरे! (वह तो)
च	५.	और	गर्जंति	१३.	सबसे
गर्जंति ।	७.	श्रेष्ठ है	गर्जंति ॥	१४.	बढ़कर है

श्लोकार्थ—भागवत सप्ताह योग से महान् है, ध्यान और ज्ञान से भी श्रेष्ठ है। उसकी महानता को हम क्या बतावें, अरे! वह तो सबसे बढ़कर है।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

शौनक उवाच साश्चर्यमेतत्कथितं कथानकं, ज्ञानादिधर्मान् विगणय्य साम्प्रतम् ।
निःश्रेयसे भागवतं पुराणं, जातं कुतो योगविदादिसूचकम् ॥५३॥

पदच्छेद—स आश्चर्यम् एतत् कथितम् कथानकम्, ज्ञान आदि धर्मान् विगणय्य साम्प्रतम् ।
निःश्रेयसे भागवतम् पुराणम्, जातम् कुतः योगवित् आदि सूचकम् ॥

शब्दार्थ—

स	७.	भरी	साम्प्रतम् ।	१.	इस समय (आपने)
आश्चर्यम्	६.	अचरज	निःश्रेयसे	१६.	परम कल्याण का साधन
एतत्	८.	इस	भागवतम्	१४.	श्रीमद्भागवत
कथितम्	१०.	कहा (हैं)	पुराणम्	१५.	पुराण
कथानकम्	९.	कथा को	जातम्	१८.	हो गया
ज्ञान	२.	ज्ञान	कुतः	१७.	कैसे
आदि	३.	वैराग्य आदि	योगवित्	११.	ब्रह्माजी के
धर्मान्	४.	धर्मों से	आदि	१२.	जन्मदाता श्रीमन्नारायण का
विगणय्य	५.	बढ़कर	सूचकम् ॥	१३.	वर्णन करने वाला

श्लोकार्थ—इस समय आपने ज्ञान-वैराग्य आदि धर्मों से बढ़कर अचरज भरी इस कथा को कहा है। ब्रह्माजी के जन्मदाता श्रीमन्नारायण का वर्णन करने वाला श्रीमद्भागवत पुराण परम कल्याण का साधन कैसे हो गया ?

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

सूत उवाच यदा कृष्णो धरां त्यक्त्वा स्वपदं गन्तुमुद्यतः ।
एकादशं परिश्रुत्याप्युद्धवो वाक्यमब्रवीत् ॥५४॥

पदच्छेद— यदा कृष्णः धराम् त्यक्त्वा, स्वपदम् गन्तुम् उद्यतः ।
एकादशम् परिश्रुत्य अपि, उद्धवः वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब	एकादशम्	९.	ग्यारहवें स्कन्ध को
कृष्णः	२.	भगवान् श्रीकृष्ण	परिश्रुत्य	१०.	सुनकर
धराम्	३.	भूलोक	अपि	११.	भी
त्यक्त्वा	४.	छोड़कर	उद्धवः	८.	उद्धव जी
स्वपदम्	५.	अपने धाम	वाक्यम्	१२.	(यह) वचन
गन्तुम्	६.	जाने के लिये	अब्रवीत् ॥	१३.	बोले
उद्यतः ।	७.	तैयार हुये (उस समय)			

श्लोकार्थ—जब भगवान् श्री कृष्ण भूलोक छोड़कर अपने धाम जाने के लिये तैयार हुये, उस समय उद्धवजी ग्यारहवें स्कन्ध को सुनकर भी यह वचन बोले।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

उद्धव उवाच त्वं तु यास्यसि गोविन्द भक्तकार्यं विधाय च ।
मच्चित्ते महती चिन्ता तां श्रुत्वा सुखमावह ॥५५॥

पदच्छेद—

त्वम् तु यास्यसि गोविन्द, भक्त कार्यम् विधाय च ।
मत् चित्ते महती चिन्ता, ताम् श्रुत्वा सुखम् आवह ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२.	आप	मत्	९.	मेरे
तु	३.	तो	चित्ते	१०.	मनमें (एक)
यास्यसि	७.	जा रहे हैं	महती	११.	बहुत बड़ी
गोविन्द	१.	हे भगवान् श्रीकृष्ण !	चिन्ता	१२.	चिन्ता है
भक्त	४.	भक्तों के	ताम्	१३.	उसे
कार्यम्	५.	काम को	श्रुत्वा	१४.	सुनकर (आप)
विधाय	६.	करके	सुखम्	१५.	प्रसन्न
च ।	८.	किन्तु	आवह ॥	१६.	होवें

श्लोकार्थ—हे भगवान् श्री कृष्ण ! आपतो भक्तों के काम को करके जा रहे हैं; किन्तु मेरे मन में एक बहुत बड़ी चिन्ता है । उसे सुनकर आप प्रसन्न होवें ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

आगतोऽयं कलिर्घोरो भविष्यन्ति पुनः खलाः ।
तत्सङ्गेनैव सन्तोऽपि गमिष्यन्त्युग्रतां यदा ॥५६॥

पदच्छेद—

आगतः अयम् कलिः घोरः, भविष्यन्ति पुनः खलाः ।
तत् सङ्गेन एव सन्तः अपि, गमिष्यन्ति उग्रताम् यदा ॥

शब्दार्थ—

आगतः	४.	आगया है	सङ्गेन	९.	संगत से
अयम्	१.	यह	एव	१०.	ही
कलिः	३.	कलियुग	सन्तः	११.	सन्त जन
घोरः	२.	पापी	अपि	१२.	भी
भविष्यन्ति	७.	उत्पन्न होंगे	गमिष्यन्ति	१५.	हो जावेंगे
पुनः	५.	फिर से	उग्रताम्	१४.	क्रोधी स्वभाव के
खलाः ।	६.	दुष्ट जन	यदा ॥	१३.	जब
तत्	८.	(तथा) उनकी			

श्लोकार्थ—यह पापी कलियुग आ गया है । फिर से दुष्ट जन उत्पन्न होंगे तथा उनकी संगत से ही सन्त जन भी जब क्रोधी स्वभाव के हो जावेंगे ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

तदा भारवती भूमिर्गोरूपेयं कमाश्रयेत् ।
अन्यो न दृश्यते त्राता त्वत्तः कमललोचन ॥५७॥

पदच्छेद—

तदा भारवती भूमिः, गोरूपा इयम् कम् आश्रयेत् ।
अन्यः न दृश्यते त्राता, त्वत्तः कमल लोचन ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	उस समय	अन्यः	११.	भिन्न कोई
भारवती	२.	बोझ से दबी	न	१३.	नहीं
भूमिः	४.	पृथ्वी	दृश्यते	१४.	दिखाई देता है
गोरूपा	५.	गाय के रूप में	त्राता	१२.	रक्षक
इयम्	३.	यह	त्वत्तः	१०.	आपसे
कम्	६.	किसकी	कमल	८.	हे कमल
आश्रयेत् ।	७.	शरण लेगी (क्योंकि)	लोचन ॥	९.	नयन (भगवान् श्रीकृष्ण)

श्लोकार्थ—उस समय बोझ से दबी यह पृथ्वी गाय के रूप में किसकी शरण लेगी ? क्योंकि हे कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण ! आपसे भिन्न कोई रक्षक नहीं दिखाई देता है ।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

अतः सत्सु दयां कृत्वा भक्तवत्सल मा व्रज ।
भक्तार्थं सगुणो जातो निराकारोऽपि चिन्मयः ॥५८॥

पदच्छेद—

अतः सत्सु दयाम् कृत्वा, भक्त वत्सल मा व्रज ।
भक्तार्थम् सगुणः जातः, निराकारः अपि चिन्मयः ॥

शब्दार्थ—

अतः	१.	इसलिये	भक्तार्थम्	११.	भक्तों के लिये
सत्सु	३.	सज्जनों पर	सगुणः	१२.	सगुण
दयाम्	४.	कृपा	जातः	१३.	हुए हैं
कृत्वा	५.	करके	निराकारः	८.	निर्गुण
भक्तवत्सल	२.	हे भक्त हितकारी (भगवान् श्रीकृष्ण)	अपि	१०.	भी
मा	६.	मत	चिन्मयः ॥	९.	ज्ञान स्वरूप होने पर
व्रज ।	७.	जावो (आप)			

श्लोकार्थ—इसलिये हे भक्त हितकारी भगवान् श्रीकृष्ण ! सज्जनों पर कृपा करके मत जावो । आप निर्गुण ज्ञान स्वरूप होने पर भी भक्तों के लिये सगुण हुये हैं ।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

त्वद्वियोगेन ते भक्ताः कथं स्थास्यन्ति भूतले ।
निर्गुणोपासने कष्टमतः किञ्चिद् विचारय ॥५९॥

पदच्छेद—

त्वत् वियोगेन ते भक्ताः, कथम् स्थास्यन्ति भूतले ।
निर्गुण उपासने कष्टम्, अतः किञ्चित् विचारय ॥

शब्दार्थ—

त्वत्	१.	आपके	निर्गुण	८.	निर्गुण ब्रह्म की
वियोगेन	२.	विरह से	उपासने	९.	उपासना में
ते	३.	आपके	कष्टम्	१०.	बड़ी कठिनाई (है)
भक्ताः	४.	भक्तजन	अतः	११.	इसलिये (मेरी प्रार्थना पर)
कथम्	६.	कैसे	किञ्चित्	१२.	कुछ
स्थास्यन्ति	७.	रह सकेंगे	विचारय ॥	१३.	विचार करें
भूतले ।	५.	भूलोक में			

श्लोकार्थ—आपके विरह से आपके भक्तजन भूलोक में कैसे रह सकेंगे ? निर्गुण ब्रह्म की उपासना में बड़ी कठिनाई है; इसलिये मेरी प्रार्थना पर कुछ विचार करें ।

षष्टितमः श्लोकः

इत्युद्धववचः श्रुत्वा प्रभासेऽचिन्तयद्धरिः ।
भक्तावलम्बनार्थाय किं विधेयं मयेति च ॥६०॥

पदच्छेद—

इति उद्धव वचः श्रुत्वा, प्रभासे अचिन्तयत् हरिः ।
भक्त अवलम्बनार्थाय, किम् विधेयम् मया इति च ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	भक्त	१०.	भक्तों के
उद्धव	२.	उद्धव जी के	अवलम्बनार्थाय	११.	सहारे के लिये
वचः	३.	वचन को	किम्	१३.	क्या
श्रुत्वा	४.	सुनकर	विधेयम्	१४.	करना चाहिये
प्रभासे	६.	प्रभास क्षेत्र में	मया	१२.	मुझे
अचिन्तयत्	८.	सोचने लगे	इति	७.	यह
हरिः ।	५.	भगवान् श्रीकृष्ण	च ॥	९.	कि

श्लोकार्थ—इस प्रकार उद्धव जी के वचन को सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण प्रभास क्षेत्र में यह सोचने लगे कि भक्तों के सहारे के लिये मुझे क्या करना चाहिये ।

एकषष्टितमः श्लोकः

स्वकीयं यद्भवेत्तेजस्तच्च भागवतेऽदधात् ।
तिरोधाय प्रविष्टोऽयं श्रीमद्भागवतार्णवम् ॥६१॥

पदच्छेद—

स्वकीयम् यद् भवेत् तेजः, तद् च भागवते अदधात् ।
तिरोधाय प्रविष्टः अयम्, श्रीमद्भागवत अर्णवम् ॥

शब्दार्थ—

स्वकीयम्	२.	अपना	अदधात् ।	७.	स्थापित कर दिया
यद्	१.	(भगवान् ने) जो	तिरोधाय	१०.	छिपकर
भवेत्	४.	था	प्रविष्टः	१३.	प्रवेश कर गये
तेजः	३.	तेज	अयम्	९.	वे (स्वयम्)
तद्	५.	उसे	श्रीमद्भागवत	११.	श्रीमद्भागवत महापुराण रूपी
च	८.	और	अर्णवम् ॥	१२.	समुद्र में
भागवते	६.	श्रीमद्भागवत महापुराण में			

श्लोकार्थ—भगवान् ने जो अपना तेज था, उसे श्रीमद्भागवत महापुराण में स्थापित कर दिया और वे स्वयं छिपकर श्रीमद्भागवत महापुराण रूपी समुद्र में प्रवेश कर गये ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

तेनेयं वाङ्मयी मूर्त्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।
सेवनाच्छ्रवणात्पाठाद्दर्शनात्पापनाशिनी ॥६२॥

पदच्छेद—

तेन इयम् वाङ्मयी मूर्त्तिः, प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।
सेवनात् श्रवणात् पाठात्, दर्शनात् पाप नाशिनी ॥

शब्दार्थ—

तेन	१.	इसलिये	सेवनात्	८.	(यह) सेवन
इयम्	२.	यह (श्रीमद्भागवत)	श्रवणात्	९.	श्रवण
वाङ्मयी	५.	शब्दमयी	पाठात्	१०.	पाठ और
मूर्त्तिः	६.	मूर्ति	दर्शनात्	११.	दर्शन से
प्रत्यक्षा	४.	साक्षात्	पाप	१२.	पापों का
वर्तते	७.	है	नाशिनी ॥	१३.	नाश करने वाली है
हरेः ।	३.	भगवान् श्रीहरि की			

श्लोकार्थ—इसलिये यह श्रीमद्भागवत भगवान् श्रीहरि की साक्षात् शब्दमयी मूर्ति है । यह सेवन, श्रवण, पाठ और दर्शन से पापों का नाश करने वाली है ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

सप्ताहश्रवणं तेन सर्वेभ्योऽप्यधिकं कृतम् ।
साधनानि तिरस्कृत्य कलौ धर्मोऽयमीरितः ॥६३॥

पदच्छेद—

सप्ताह श्रवणम् तेन, सर्वेभ्यः अपि अधिकम् कृतम् ।
साधनानि तिरस्कृत्य, कलौ धर्मः अयम् ईरितः ॥

शब्दार्थ—

सप्ताह	२. श्रीमद्भागवत के सप्ताह को	साधनानि	८. अन्य उपायों को
श्रवणम्	३. सुनना	तिरस्कृत्य	९. छोड़कर
तेन	१. इसलिये	कलौ	७. कलियुग में
सर्वेभ्यः अपि	४. सभी (साधनों) में	धर्मः	११. धर्म
अधिकम्	५. श्रेष्ठ	अयम्	१०. इसका (श्रवण) ही
कृतम् ।	६. माना गया है	ईरितः ॥	१२. कहा गया है

श्लोकार्थ—इसलिये श्रीमद्भागवत के सप्ताह को सुनना सभी साधनों में श्रेष्ठ माना गया है। कलियुग में अन्य उपायों को छोड़कर इसका श्रवण ही धर्म कहा गया है ।

चतुष्षष्टितमः श्लोकः

दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यपापप्रक्षालनाय च ।
कामक्रोधजयार्थं हि कलौ धर्मोऽयमीरितः ॥६४॥

पदच्छेद—

दुःख दारिद्र्य दौर्भाग्य, पाप प्रक्षालनाय च ।
काम क्रोध जयार्थम् हि, कलौ धर्मः अयम् ईरितः ॥

शब्दार्थ—

दुःख	१. दुःख	क्रोध	८. क्रोध को
दारिद्र्य	२. दरिद्रता	जयार्थम्	९. वश में करने के लिए
दौर्भाग्य	३. अभागापन और	हि	१०. ही
पाप	४. पापों के	कलौ	११. कलियुग में
प्रक्षालनाय	५. नाश के लिए	धर्मः	१३. उपाय
च ।	६. और	अयम्	१२. यह
काम	७. काम तथा	ईरितः ॥	१४. बतलाया गया है

श्लोकार्थ—दुःख, दरिद्रता, अभागापन और पापों के नाश के लिये और काम तथा क्रोध को वश में करने करने के लिए ही कलियुग में यह उपाय बतलाया गया है ।

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

अन्यथा वैष्णवी माया देवैरपि सुदुस्त्यजा ।
कथं त्याज्या भवेत्पुम्भिः सप्ताहोऽतः प्रकीर्तितः ॥६५॥

पदच्छेद—

अन्यथा वैष्णवी माया, देवैः अपि सुदुस्त्यजा ।
कथम् त्याज्या भवेत् पुम्भिः, सप्ताहः अतः प्रकीर्तितः ॥

शब्दार्थ—

अन्यथा	१. इसके न रहने पर	त्याज्या	९. छोड़ी
वैष्णवी	५. भगवान् विष्णु की	भवेत्	१०. जा सकती है
माया	६. माया	पुम्भिः	७. मनुष्यों के द्वारा
देवैः	२. देवताओं से	सप्ताहः	१२. भागवत-सप्ताह का
अपि	३. भी	अतः	११. इसीलिये
सुदुस्त्यजा ।	४. नहीं छोड़े जा सकने वाली	प्रकीर्तितः ॥	१३. उपदेश किया गया है
कथम्	८. कैसे		

श्लोकार्थ—इसके न रहने पर देवताओं से भी नहीं छोड़े जा सकने वाली भगवान् विष्णु की माया मनुष्यों के द्वारा कैसे छोड़ी जा सकती है ? इसीलिये भागवत-सप्ताह का उपदेश किया गया है ।

षट्षष्टितमः श्लोकः

सूत उवाच एवं नगाहश्रवणोरुधर्मे, प्रकाश्यमाने ऋषिभिः सभायाम् ।
आश्चर्यमेकं समभूत्तदानीं, तदुच्यते श्रृणु संशौनक त्वम् ॥६६॥

पदच्छेद—

एवम् नगाह श्रवण उरु धर्मे, प्रकाश्यमाने ऋषिभिः सभायाम् ।
आश्चर्यम् एकम् समभूत् तदानीम्, तद् उच्यते संश्रृणु शौनक त्वम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	एकम्	१०. एक
नगाह	३. भागवत-सप्ताह का	समभूत्	१२. हुआ था (मैं)
श्रवण	४. श्रवण रूप	तदानीम्	८. उस समय
उरु धर्मे	५. महान् धर्म	तद्	१३. उसे
प्रकाश्यमाने	६. सम्पन्न कर दिये जाने पर	उच्यते	१४. कह रहा हूँ
ऋषिभिः	२. सनकादि कुमारों के द्वारा	संश्रृणु	१६. सुनें
सभायाम् ।	९. सभा में	शौनक	७. हे शौनक जी !
आश्चर्यम्	११. अचरज	त्वम् ॥	१५. आप

श्लोकार्थ—इस प्रकार सनकादि कुमारों के द्वारा भागवत्-सप्ताह का श्रवण रूप महान् धर्म सम्पन्न कर दिये जाने पर हे शौनक जी ! उस समय सभा में एक अचरज हुआ था । मैं उसे कह रहा हूँ। आप सुनें ।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

भक्तिः सुतौ तौ तरुणौ गृहीत्वा, प्रेमैकरूपा सहसाऽऽविरासीत् ।
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, नाथेति नामानि मुहुर्वदन्ती ॥६७॥

पदच्छेद— भक्तिः सुतौ तौ तरुणौ गृहीत्वा, प्रेम एक रूपा सहसा आविरासीत् ।
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, नाथ इति नामानि मुहुः वदन्ती ॥

शब्दार्थ—

भक्तिः	४. भक्ति		सहसा	१५. एकाएक
सुतौ	७. दोनों पुत्रों को		आविरासीत् ।	१६. प्रगट हुई
तौ	६. उन		श्रीकृष्ण, गोविन्द	९. श्रीकृष्ण, गोविन्द
तरुणौ	५. युवावस्था सम्पन्न		हरे, मुरारे	१०. हरे, मुरारे
गृहीत्वा	८. साथ लेकर		नाथ, इति	११. हे नाथ, इन
प्रेम	२. प्रेम		नामानि	१२. नामों को
एक	१. शुद्ध		मुहुः	१३. बार-बार
रूपा	३. मयी		वदन्ती ॥	१४. गाती हुई

श्लोकार्थ—शुद्ध प्रेममयी भक्ति युवावस्था-सम्पन्न उन दोनों पुत्रों को साथ लेकर "श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ" इन नामों को बार-बार गाती हुई एकाएक प्रगट हुई ।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

तां चागतां भागवतार्थभूषां, सुचारुवेषां ददृशुः सदस्याः ।
कथं प्रविष्टा कथमागतेयं, मध्ये मुनीनामिति तर्कयन्तः ॥६८॥

पदच्छेद— ताम् च आगताम् भागवत अर्थ भूषाम्, सुचारु, वेषाम् ददृशुः सदस्याः ।
कथम् प्रविष्टा कथम् आगता इयम्, मध्ये मुनीनाम् इति तर्कयन्तः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१५. उस (भक्ति को)		कथम्	४. कैसे
च	१२. और		प्रविष्टा	५. प्रवेश (किया और यह)
आगताम्	१४. आयी हुई		कथम्, आगता	६. क्यों, आयी
भागवत, अर्थ	१०. भागवत के अर्थों का		इयम्	३. इसने
भूषाम्	११. आभूषण पहने		मध्ये	२. बीच
सुचारु, वेषाम्	१३. अत्यन्त मनोहर, वेशवाली		मुनीनाम्	१. ऋषियों के
ददृशुः	१६. देखा		इति	७. ऐसा
सदस्याः ।	९. सभासदों ने		तर्कयन्तः ॥	८. सोचते हुये

श्लोकार्थ—ऋषियों के बीच इसने कैसे प्रवेश किया ? और यह क्यों आयी ? ऐसा सोचते हुये सभासदों ने भागवत के अर्थों का आभूषण पहने और अत्यन्त मनोहर वेशवाली आयी हुई उस भक्ति को देखा ।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

ऊचुः कुमारा वचनं तदानीं, कथार्थतो निष्पतिताधुनेयम् ।
एवं गिरः सा ससुता निशम्य, सनत्कुमारं निजगाद नम्रा ॥६९॥

पदच्छेद— **ऊचुः कुमाराः वचनम् तदानीम्, कथा अर्थतः निष्पतिता अधुना इयम् ।**
एवम् गिरः सा ससुता निशम्य, सनत्कुमारम् निजगाद नम्रा ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	३. दिया (कि)	**एवम्, गिरः**	८. इस प्रकार, के वचन को
कुमाराः, वचनम्	२. सनकादि कुमारों ने, उत्तर	**सा**	१२. वह (भक्ति)
तदानीम्	१. उस समय	**ससुता**	१०. पुत्रों के साथ
कथा, अर्थतः	६. कथा के, अर्थ से	**निशम्य**	९. सुनकर (और)
निष्पतिता	७. निकली है	**सनत्कुमारम्**	१३. सनत्कुमार से
अधुना	५. इसी समय	**निजगाद**	१४. बोली
इयम् ।	४. यह (भक्ति)	**नम्रा ॥**	११. विनीत होकर

श्लोकार्थ—उस समय सनकादि कुमारों ने उत्तर दिया कि यह भक्ति इसी समय कथा के अर्थ से निकली है । इस प्रकार के वचन को सुनकर और पुत्रों के साथ विनीत होकर वह भक्ति सनत्कुमार से बोली ।

सप्ततितमः श्लोकः

भवद्भिरद्यैव कृतास्मि पुष्टा, कलिप्रणष्टाऽपि कथारसेन ।
क्वाहं तु तिष्ठाम्यधुना ब्रुवन्तु, ब्राह्मा इदं तां गिरमूचिरे ते ॥७०॥

पदच्छेद— **भवद्भिः अद्य एव कृता अस्मि पुष्टा, कलि प्रणष्टा अपि कथा रसेन ।**
क्व अहम् तु तिष्ठामि अधुना ब्रुवन्तु, ब्राह्माः इदम् ताम् गिरम् ऊचिरे ते ॥

शब्दार्थ—

भवद्भिः	३. आप लोगों के द्वारा	**अहम्**	१०. मैं
अद्य एव	४. अभी	**तु**	९. कि
कृता, अस्मि	७. कर दी गयी, हूँ	**तिष्ठामि**	१२. निवास करूँ (तदनन्तर)
पुष्टा	६. शक्तिशाली	**अधुना, ब्रुवन्तु**	८. अब, (आपलोग) बतावें
कलि, प्रणष्टा	१. कलियुग से, नष्ट हुई	**ब्राह्माः**	१४. सनकादि कुमारों ने
अपि	२. भी (मैं)	**इदम्**	१६. ये
कथारसेन ।	५. भागवत कथा के रस से	**ताम्**	१५. उस (भक्ति) से
क्व	११. कहाँ	**गिरम्, ऊचिरे**	१७. वचन, कहे
		ते ॥	१३. उन

श्लोकार्थ—कलियुग से नष्ट हुई भी मैं आप लोगों के द्वारा अभी भागवत कथा के रस से शक्तिशाली कर दी गयी हूँ । अब आपलोग बतावें कि मैं कहाँ निवास करूँ ? तदनन्तर उन सनकादि कुमारों ने उस भक्ति से ये वचन कहे ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

भक्तेषु गोविन्दसरूपकर्त्री, प्रेमैकधर्त्री भवरोगहन्त्री।
सा त्वं च तिष्ठस्व सुधैर्यसंश्रया, निरन्तरं वैष्णवमानसानि ॥७१॥

पदच्छेद—

भक्तेषु गोविन्द सरूप कर्त्री, प्रेम एक धर्त्री भव रोग हन्त्री।
सा त्वम् च तिष्ठस्व सुधैर्य संश्रया, निरन्तरम् वैष्णव मानसानि ॥

शब्दार्थ—

भक्तेषु	१. भक्तों (के हृदय) में	त्वम्	८. तुम
गोविन्द, सरूप	२. श्रीकृष्ण की, छवि	च	५. और
कर्त्री	३. रचनेवाली	तिष्ठस्व	१२. निवास करो
प्रेम एक, धर्त्री	४. विशुद्ध प्रेम, धारण करने वाली	सुधैर्य, संश्रया	९. धीरज, धर कर
भव, रोग, हन्त्री।	६. संसार के, बन्धन को, हरने वाली।	निरन्तरम्	११. सदा
सा	७. सो	वैष्णव, मानसानि ॥	१०. वैष्णव जनों के, चित्त में

श्लोकार्थ—भक्तों के हृदय में श्रीकृष्ण की छवि रचने वाली, विशुद्ध प्रेम धारण करने वाली और संसार के बन्धन को हरने वाली सो तुम धीरज धर कर वैष्णव जनों के चित्त में सदा निवास करो।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

ततोऽपि दोषाः कलिजा इमे त्वां, द्रष्टुं न शक्ताः प्रभवोऽपि लोके।
एवं तदाज्ञावसरेऽपि भक्तिः, तदा निषण्णा हरिदासचित्ते ॥७२॥

पदच्छेद—

ततः अपि दोषाः कलिजाः इमे त्वाम्, द्रष्टुम् न शक्ताः प्रभवः अपि लोके।
एवम् तद् आज्ञा अवसरे अपि भक्तिः, तदा निषण्णा हरि दास चित्ते ॥

शब्दार्थ—

ततः, अपि	१. (तुम्हारे) वहाँ रहने से, भी	एवम्	१०. इस प्रकार
दोषाः	३. कलंक	तद्	१२. उनके
कलिजाः, इमे	२. कलियुग के, ये	आज्ञा, अवसरे	१३. आदेश के, समय
त्वाम्, द्रष्टुम्	७. तुम्हें, देखने में	अपि	१४. ही
न	९. नहीं (होंगे)	भक्तिः	११. भक्ति
शक्ताः	८. समर्थ	तदा	१५. तत्काल
प्रभवः	५. प्रभावशाली	निषण्णा	१८. स्थित हो गयी
अपि	६. होने पर भी	हरि	१६. श्रीहरि के
लोके।	४. लोक में	दास, चित्ते ॥	१७. भक्तों के, हृदय में

श्लोकार्थ—तुम्हारे वहाँ रहने से भी कलियुग के ये कलंक लोक में प्रभावशाली होने पर पर भी तुम्हें देखने में समर्थ नहीं होंगे। इस प्रकार भक्ति उनके आदेश के समय ही तत्काल श्रीहरि के भक्तों के हृदय में स्थित हो गयी।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

सकलभुवनमध्ये निर्धनास्तेऽपि धन्याः,
निवसति हृदि येषां श्रीहरेर्भक्तिरेका ।
हरिरपि निजलोकं सर्वथातो विहाय,
प्रविशति हृदि तेषां भक्तिसूत्रोपनद्धः ॥७३॥

पदच्छेद—

सकल भुवन मध्ये निर्धनाः ते अपि धन्याः,
निवसति हृदि येषाम् श्रीहरेः भक्तिः एका ।
हरिः अपि निज लोकम् सर्वथा अतः विहाय,
प्रविशति हृदि तेषाम् भक्ति सूत्र उपनद्धः ॥

शब्दार्थ—

सकल	१.	सारे	हरिः	१५.	भगवान् श्रीहरि
भुवन	२.	भूलोक के	अपि	१६.	भी
मध्ये	३.	बीच	निज	१७.	अपने
निर्धनाः	५.	गरीब लोग	लोकम्	१८.	धाम को
ते	४.	वे	सर्वथा	१९.	एकदम
अपि	६.	भी	अतः	१४.	इसलिये
धन्याः	७.	भाग्यशाली (हैं)	विहाय	२०.	छोड़कर
निवसति	१३.	निवास करती है	प्रवशति	२६.	प्रवेश कर जाते हैं
हृदि	९.	चित्त में	हृदि	२५.	हृदय में
येषाम्	८.	जिनके	तेषाम्	२४.	उन (भक्तों) के
श्रीहरेः	१०.	श्रीहरि की	भक्ति	२१.	भक्ति के
भक्तिः	१२.	भक्ति	सूत्र	२२.	धागे से
एका ।	११.	अनन्य	उपनद्धः ॥	२३.	बँधे हुए

श्लोकार्थ—सारे भूलोक के बीच वे गरीब लोग भी भाग्यशाली हैं, जिनके चित्त में श्रीहरि की अनन्य भक्ति निवास करती है । इसलिए भगवान् श्रीहरि भी अपने धाम को एकदम छोड़कर भक्ति के धागे से बँधे हुये उन भक्तों के हृदय में प्रवेश कर जाते हैं ।

चतुस्सप्ततितमः श्लोकः

ब्रूमोऽद्य ते किमधिकं महिमानमेवम्,
ब्रह्मात्मकस्य भुवि भागवताभिधस्य ।
यत्संश्रयान्निगदिते लभते सुवक्ता,
श्रोतापि कृष्णसमतामलमन्यधर्मैः ॥७४॥

पदच्छेद—

ब्रूमः अद्य ते किम् अधिकम् महिमानम् एवम्,
ब्रह्म आत्मकस्य भुवि भागवत अभिधस्य ।
यत् संश्रयात् निगदिते लभते सुवक्ता,
श्रोता अपि कृष्ण समताम् अलम् अन्य धर्मैः ॥

शब्दार्थ—

ब्रूमः	१२. कहें	यत्	१३. इस (पुराण) के
अद्य	१. अब (हम)	संश्रयात्	१४. आधार पर
ते	२. आप लोगों से	निगदिते	१५. (कथा)।कहने से
किम्	११. क्या	लभते	२१. प्राप्त कर लेते हैं
अधिकम्	९. अधिक	सुवक्ता	१६. वक्ता
महिमानम्	१०. महिमा	श्रोता	१८. श्रोता
एवम्	८. और	अपि	१७. और
ब्रह्म	४. परमात्मा का	कृष्ण	१९. श्रीकृष्ण की
आत्मकस्य	५. शरीर रूप	समताम्	२०. समानता
भुवि	३. भूलोक में	अलम्	२४. व्यर्थ (हैं)
भागवत	६. श्रीमद्भागवत	अन्य	२२. (अतः इसके सामने) दूसरे
अभिधस्य ।	७. पुराण की	धर्मैः ॥	२३. उपाय

श्लोकार्थ—अब हम आपलोगों से भूलोक में परमात्मा का शरीररूप श्रीमद्भागवत पुराण की और अधिक महिमा क्या कहें ? इस पुराण के आधार पर कथा कहने से वक्ता और श्रोता श्रीकृष्ण की समानता प्राप्त कर लेते हैं । अतः इसके सामने दूसरे उपाय हैं ।

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमहात्म्ये भक्तिकष्टनिवर्तनं नाम तृतीयः अध्यायः ॥३॥

अथ चतुर्थः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत ,उवाच

अथ वैष्णवचित्तेषु दृष्ट्वा भक्तिमलौकिकीम् ।
निजलोकं परित्यज्य भगवान् भक्तवत्सलः ॥१॥

पदच्छेद--

अथ वैष्णव चित्तेषु, दृष्ट्वा भक्तिम् अलौकिकीम् ।
निज लोकम् परित्यज्य, भगवान् भक्त वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	**अलौकिकीम् ।**	४.	अद्भुत
वैष्णव	२.	विष्णु-भक्तों के	**निज, लोकम्**	६.	अपने, धाम को
चित्तेषु	३.	हृदय में	**परित्यज्य**	१०.	छोड़कर (उनके हृदय में स्थित हो गये)
दृष्ट्वा	६.	देखकर	**भगवान्**	८.	भगवान् श्रीकृष्ण
भक्तिम्	५.	भक्ति -भाव	**भक्त, वत्सलः ॥**	७.	भक्तों के, स्नेही

श्लोकार्थ—तदनन्तर विष्णु-भक्तों के हृदय में अद्भुत भक्ति-भाव देखकर भक्तों के स्नेही भगवान् श्री कृष्ण अपने धाम को'छोड़कर उनके हृदय में स्थित हो गये ।

द्वितीयः श्लोकः

वनमाली घनश्यामः पीतवासा मनोहरः ।
काञ्चीकलापरुचिरः लसन्मुकुटकुण्डलः ॥२॥

पदच्छेद—

वनमाली घनश्यामः, पीत वासा मनोहरः ।
काञ्ची कलाप रुचिरः, लसत् मुकुट कुण्डलः ॥

शब्दार्थ--

वनमाली	५.	वनमाला पहिने हुए	**काञ्ची**	७.	करधनी की
घन	३.	मेघ के समान	**कलाप**	८.	लड़ियों से
श्यामः	४.	साँवले (श्री हरि)	**रुचिरः**	९.	सुन्दर (तथा)
पीत	१.	पीले	**लसत्**	१२.	सुशोभित थे
वासा	२.	वस्त्र वाले (एवं)	**मुकुट**	१०.	मुकुट और
मनोहरः ।	६.	मन को हर रहे (थे वे)	**कुण्डलः ॥**	११.	कुण्डलों से

श्लोकार्थ---पीले वस्त्र वाले एवं मेघ के समान साँवले श्री हरि वनमाला पहिने हुए मन को हर रहे थे । वे करधनी की लड़ियों से सुन्दर तथा मुकुट और कुण्डलों से सुशोभित थे ।

तृतीयः श्लोकः

त्रिभङ्गललितश्चारुकौस्तुभेन विराजितः ।
कोटिमन्मथलावण्यो हरिचन्दनचर्चितः ॥३॥

पदच्छेद—

त्रिभङ्ग ललितः चारु, कौस्तुभेन विराजितः ।
कोटि मन्मथ लावण्यः, हरिचन्दन चर्चितः ॥

शब्दार्थ—

त्रिभङ्ग	१.	(भगवान् श्रीकृष्ण) उदर की तीन रेखाओं से	कोटि	६.	करोड़ों
			मन्मथ	७.	कामदेव के समान
ललितः	२.	सुन्दर	लावण्यः	८.	कान्तिमान् (और)
चारु	३.	मनोहर	हरिचन्दन	९.	पीले चन्दन से
कौस्तुभेन	४.	कौस्तुभमणि से	चर्चितः ॥	१०.	अनुलिप्त (थे)
विराजितः ।	५.	सुशोभित			

श्लोकार्थ—भगवान् श्री कृष्ण उदर की तीन रेखाओं से सुन्दर, मनोहर कौस्तुभमणि से सुशोभित, करोड़ों कामदेव के समान कान्तिमान् और पीले चन्दन से अनुलिप्त थे ।

चतुर्थः श्लोकः

परमानन्दचिन्मूर्तिर्मधुरो मुरलीधरः ।
आविवेश स्वभक्तानां हृदयान्यमलानि च ॥४॥

पदच्छेद—

परम आनन्द चित् मूर्तिः, मधुरः मुरलीधरः ।
आविवेश स्वभक्तानाम्, हृदयानि अमलानि च ॥

शब्दार्थ—

परम	१.	परम	आविवेश	१२.	प्रकट हो गये
आनन्द	२.	आनन्द	स्व	८.	अपने
चित्	३.	ज्ञान-	भक्तानाम्	९.	भक्तों के
मूर्तिः	४.	स्वरूप	हृदयानि	११.	मन में
मधुरः	५.	भोली छवि	अमलानि	१०.	निर्मल
मुरलीधरः ।	७.	वंशी वाले (भगवान् श्रीकृष्ण)	च ॥	६.	और

श्लोकार्थ—परम आनन्द, ज्ञान-स्वरूप भोली छवि और वंशी वाले भगवान् श्री कृष्ण अपने भक्तों के निर्मल मन में प्रकट हो गये ।

पञ्चमः श्लोकः

वैकुण्ठवासिनो ये च वैष्णवा उद्धवादयः ।
तत्कथाश्रवणार्थं ते गूढरूपेण संस्थिताः ॥५॥

पदच्छेद—

वैकुण्ठ वासिनः ये च, वैष्णवाः उद्धव आदयः ।
तद् कथा श्रवणार्थम् ते, गूढ रूपेण संस्थिताः ॥

शब्दार्थ—

वैकुण्ठ	२.	वैकुण्ठ में	तद्	९.	उस (भागवत) की
वासिनः	३.	रहने वाले	कथा	१०.	कथा को
ये	६.	जो	श्रवणार्थम्	११.	सुनने के लिये (वहाँ)
च	१.	तथा	ते	८.	वे
वैष्णवाः	७.	वैष्णव जन (थे)	गूढ	१२.	गुप्त
उद्धव	४.	उद्धव	रूपेण	१३.	रूप से
आदयः ।	५.	इत्यादि	संस्थिताः ॥	१४.	स्थित हो गये

श्लोकार्थ—तथा वैकुण्ठ में रहने वाले उद्धव इत्यादि जो वैष्णव-जन थे; वे उस भागवत की कथा को सुनने के लिए वहाँ गुप्त रूप से स्थित हो गये ।

षष्ठः श्लोकः

तदा जयजयारावो रसपुष्टिरलौकिकी ।
चूर्णप्रसूनवृष्टिश्च मुहुः शङ्खरवोऽप्यभूत् ॥६॥

पदच्छेद—

तदा जय जय आरावः, रस पुष्टिः अलौकिकी ।
चूर्ण प्रसून वृष्टिः च, मुहुः शङ्ख रवः अपि अभूत् ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	उस समय (वहाँ)	प्रसून	८.	फूलों की
जय जय	२.	जय-जयकार के	वृष्टिः	९.	वर्षा
आरावः	३.	शब्द	च	१०.	तथा
रस	४.	रस की	मुहुः	११.	बार-बार
पुष्टिः	६.	वृद्धि	शङ्खरवः	१२.	शंख की ध्वनि
अलौकिकी ।	५.	अद्भुत	अपि	१३.	भी
चूर्ण	७.	अबीर-गुलाल (और)	अभूत् ॥	१४.	होने लगी

श्लोकार्थ—उस समय वहाँ जय-जयकार के शब्द, रस की अद्भुत वृद्धि, अबीर-गुलाल और फूलों की वर्षा तथा बार-बार शंख की ध्वनि भी होने लगी ।

सप्तमः श्लोकः

तत्सभासंस्थितानां च देहगेहात्मविस्मृतिः ।
दृष्ट्वा च तन्मयावस्थां नारदो वाक्यमब्रवीत् ॥७॥

पदच्छेद— तद् सभा संस्थितानाम् च, देह गेह आत्म विस्मृतिः ।
दृष्ट्वा च तन्मय अवस्थाम्, नारदः वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

तद्	१.	उस	दृष्ट्वा	१३.	देखकर
सभा	२.	सभा में	च	९.	तदन्तर
संस्थितानाम्	३.	बैठे हुए (लोगों) को	तन्मय	११.	भाव-विभोर
च	६.	और	अवस्थाम्	१२.	दशा को
देह	४.	शरीर	नारदः	१०.	देवर्षि नारद ने
गेह	५.	घर-बार	वाक्यम्	१४.	(यह) वचन
आत्म	७.	अपनी	अब्रवीत् ॥	१५.	कहा
विस्मृतिः ।	८.	सुध भूल गयी			

श्लोकार्थ—उस सभा में बैठे हुए लोगों को शरीर, घर-बार और अपनी सुध भूल गयी । तदनन्तर देवर्षि नारद ने भाव-विभोर दशा को देखकर यह वचन कहा ।

अष्टमः श्लोकः

अलौकिकोऽयं महिमा मुनीश्वराः, सप्ताहजन्योऽद्य विलोकितो मया ।
मूढाः शठा ये पशुपक्षिणोऽत्र, सर्वेऽपि निष्पापतमा भवन्ति ॥८॥

पदच्छेद—अलौकिकः अयम् महिमा मुनीश्वराः, सप्ताह जन्यः अद्य विलोकितः मया ।
मूढाः शठाः ये पशु पक्षिणः अत्र, सर्वे अपि निष्पापतमाः भवन्ति ॥

शब्दार्थ—

अलौकिकः	६.	अद्भुत	मूढाः	११.	अज्ञानी
अयम्	५.	इस	शठाः	१२.	दुष्ट (और)
महिमा	७.	सामर्थ्य को	ये	१०.	जो
मुनीश्वराः	१.	हे मुनिवरों !	पशु पक्षिणः	१३.	पशु-पक्षी (हैं वे)
सप्ताह, जन्यः	४.	भागवत सप्ताह से, उत्पन्न	अत्र	९.	यहाँ
अद्य	३.	आज	सर्वे अपि	१४.	सभी
विलोकितः	८.	देख लिया है	निष्पापतमाः	१५.	अत्यन्त पाप-रहित
मया ।	२.	मैंने	भवन्ति ॥	१६.	हो गये हैं

श्लोकार्थ—हे मुनिवरों ! मैंने आज भागवत सप्ताह से उत्पन्न इस अद्भुत सामर्थ्य को देख लिया है । यहाँ जो अज्ञानी, दुष्ट और पशु-पक्षी हैं; वे सभी अत्यन्त पाप-रहित हो गये हैं ।

नवमः श्लोकः

अतो नृलोके ननु नास्ति किंचित्, चित्तस्य शोधाय कलौ पवित्रम् ।
अघौघविध्वंसकरं तथैव, कथासमानं भुवि नास्ति चान्यत् ॥९॥

पदच्छेद—अतः नृ लोके ननु न अस्ति किंचित्, चित्तस्य शोधाय कलौ पवित्रम् ।
अघ ओघ विध्वंसकरम् तथैव, कथा समानम् भुवि न अस्ति च अन्यत् ॥

शब्दार्थ—

अतः	१.	इसलिए	पवित्रम् ।	८.	पवित्र साधन
नृ लोके	२.	मर्त्यलोक में	अघ, ओघ	१३.	पापों के, समूह का
ननु	६.	निश्चय ही	विध्वंसकरम्	१४.	नाश करने वाला
न अस्ति	९.	नहीं है	तथैव	११.	उसी प्रकार
किंचित्	७.	कोई	कथा, समानम्	१५.	श्रीमद्भागवत कथा के, समान
चित्तस्य	४.	मन की	भुवि	१२.	पृथ्वी पर
शोधाय	५.	शुद्धि के लिए	न अस्ति	१७.	नहीं है
कलौ	३.	कलियुग में	च	१०.	तथा
			अन्यत् ॥	१६.	कोई दूसरा (साधन)

श्लोकार्थ—इसलिए मर्त्यलोक में कलियुग में मन की शुद्धि के लिए निश्चय ही कोई पवित्र साधन नहीं है तथा उसी प्रकार पृथ्वी पर पापों के समूह का नाश करने वाला श्रीमद्भागवत कथा के समान कोई दूसरा साधन नहीं है।

दशमः श्लोकः

के के विशुद्ध्यन्ति वदन्तु मह्यम्, सप्ताहयज्ञेन कथामयेन ।
कृपालुभिर्लोकहितं विचार्य, प्रकाशितः कोऽपि नवीनमार्गः ॥१०॥

पदच्छेद—के के विशुद्ध्यन्ति वदन्तु मह्यम्, सप्ताह यज्ञेन कथामयेन ।
कृपालुभिः लोक हितम् विचार्य, प्रकाशितः कोऽपि नवीन मार्गः ॥

शब्दार्थ—

के के	४.	कौन-कौन (से लोग)	कृपालुभिः	८.	दयालु (आप लोगों ने)
विशुद्ध्यन्ति	५.	पवित्र हो जाते हैं	लोक, हितम्	९.	संसार का, कल्याण
वदन्तु	७.	बतावें	विचार्य	१०.	सोचकर (हमें)
मह्यम्	६.	हमें	प्रकाशितः	१४.	बतलाया है
सप्ताह	२.	श्रीमद्भागवत सप्ताह के	कोऽपि	११.	(यह) अद्भुत (और)
यज्ञेन	३.	अनुष्ठान से	नवीन	१२.	नया
कथामयेन ।	१.	कथारूप	मार्गः ॥	१३.	रास्ता

श्लोकार्थ—कथारूप श्रीमद्भागवत सप्ताह के अनुष्ठान से कौन-कौन से लोग पवित्र हो जाते हैं? हमें बतावें। दयालु आप लोगों ने संसार का कल्याण सोचकर हमें यह अद्भुत और नया रास्ता बतलाया है।

एकादशः श्लोकः

कुमारा ऊचुः—

ये मानवाः पापकृतस्तु सर्वदा, सदा दुराचाररता विमार्गगाः ।
क्रोधाग्निदग्धाः कुटिलाश्च कामिनः, सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥११॥

पदच्छेद—**ये मानवाः पापकृतः तु सर्वदा, सदा दुराचार रताः विमार्गगाः ।**
क्रोध अग्नि दग्धाः कुटिलाः च कामिनः, सप्ताह यज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥

शब्दार्थ—

ये, मानवाः	१. जो, लोग	**अग्नि, दग्धाः**	८. आग में, जले हुये
पापकृतः	३. पाप करने वाले	**कुटिलाः, च**	९. कपटी, और
तु	४. तथा	**कामिनः**	१०. कामवासना के वश में हैं।
सर्वदा	२. हमेशा	**सप्ताह, यज्ञेन**	१३. श्रीमद्भागवत सप्ताह के, अनुष्ठान से
सदा, दुराचार	५. नित्य, बुरे आचरण में	**कलौ**	११. कलियुग में
रताः, विमार्गगाः ।	६. लगे हुये, कुमार्गगामी	**पुनन्ति**	१४. पवित्र हो जाते हैं
क्रोध	७. क्रोध की	**ते ॥**	१२. वे (लोग)

श्लोकार्थ—जो लोग हमेशा पाप करने वाले तथा नित्य बुरे आचरण से लगे हुये, कुमार्गगामी, क्रोध की आग में जले हुए, कपटी और कामवासना के वश में हैं; कलियुग में वे लोग श्रीमद्भागवत सप्ताह के अनुष्ठान से पवित्र हो जाते हैं ।

द्वादशः श्लोकः

सत्येन हीनाः पितृमातृदूषकाः, तृष्णाकुलाश्चाश्रमधर्मवर्जिताः ।
ये दाम्भिका मत्सरिणोऽपि हिंसकाः, सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥१२॥

पदच्छेद—**सत्येन हीनाः पितृ मातृ दूषकाः, तृष्णा आकुलाः च आश्रम धर्म वर्जिताः ।**
ये दम्भिकाः मत्सरिणः अपि हिंसकाः, सप्ताह यज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥

शब्दार्थ—

सत्येन	१. (जो लोग) सत्य से	**ये**	११. जो लोग
हीनाः	२. दूर	**दाम्भिकाः, मत्सरिणः**	१२. पाखण्डी, ईर्ष्यालु (और)
पितृ, मातृ	३. पिता और माता को	**अपि**	१०. तथा
दूषकाः	४. दोष देने वाले	**हिंसकाः**	१३. हिंसा करने वाले (हैं)
तृष्णा	५. लालच से	**सप्ताह**	१६. श्रीमद्भागवत सप्ताह के
आकुलाः, च	६. अशान्त, एवम्	**यज्ञेन**	१७. अनुष्ठान से
आश्रम	७. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ	**कलौ**	१४. कलियुग में
धर्म	८. और संन्यास धर्म से	**पुनन्ति**	१८. पवित्र हो जाते हैं
वर्जिताः ।	९. रहित (हैं)	**ते ॥**	१५. वे (लोग)

श्लोकार्थ—जो लोग सत्य से दूर, माता और पिता को दोष देने वाले, लालच से अशान्त एवम् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास धर्म से रहित हैं तथा जो लोग पाखण्डी, ईर्ष्यालु और हिंसा करने वाले हैं; कलियुग में वे लोग श्रीमद्भागवत सप्ताह के अनुष्ठान से पवित्र हो जावे हैं ।

त्रयोदशः श्लोकः

पञ्चोग्रपापाश्छलछद्मकारिणः, क्रूराः पिशाचा इव निर्दयाश्च ये ।
ब्रह्मस्वपुष्टा व्यभिचारकारिणः, सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥१३॥

पदच्छेद—पञ्च उग्र पापाः छल छद्म कारिणः, क्रूराः पिशाचाः इव निर्दयाः च ये ।
ब्रह्म स्व पुष्टाः व्यभिचार कारिणः, सप्ताह यज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥

शब्दार्थ—

पञ्च उग्र पापाः	२. पाँच महापापों को करने वाले	ब्रह्मस्व, पुष्टाः	७. ब्राह्मण के धन से, धनी
छल छद्म	३. धोखा और कपट का	व्यभिचार कारिणः	९. व्यभिचारी (हैं)
कारिणः	४. बर्ताव करने वाले	सप्ताह, यज्ञेन	१२. सप्ताह, कथा से
क्रूराः, पिशाचाः	५. कठोर, राक्षस के	कलौ	१०. कलियुग में
इव, निर्दयाः	६. समान, निर्दयी	पुनन्ति	१३. पवित्र हो जाते हैं
च	८. तथा	ते ॥	११. वे (लोग भी)
ये ।	१. जो (लोग)		

श्लोकार्थ—जो लोग पाँच महापापों (मदिरापान, ब्रह्महत्या, गुरुपत्नी-गमन, सुवर्ण की चोरी और विश्वास-घात) को करने वाले, धोखा और कपट का बर्ताव करने वाले; कठोर राक्षस के समान निर्दयी, ब्राह्मण के धन से धनी तथा व्यभिचारी हैं; कलियुग में वे लोग भी सप्ताह कथा से पवित्र हो जाते हैं ।

चतुर्दशः श्लोकः

कायेन वाचा मनसाऽपि पातकम्, नित्यं प्रकुर्वन्ति शठा हठेन ये ।
परस्वपुष्टा मलिना दुराशयाः, सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥१४॥

पदच्छेद—कायेन-वाचा मनसा अपि पातकम्, नित्यम् प्रकुर्वन्ति शठाः हठेन ये ।
परस्व पुष्टाः मलिनाः दुराशयाः, सप्ताह यज्ञेन कलौ पुनन्ति ते ॥

शब्दार्थ—

कायेन	५. शरीर से	परस्व	१०. दूसरों के धन से
वाचा, मनसा	३. वाणी, मन	पुष्टाः	११. बढ़ने वाले
अपि	४. और	मलिनाः	१२. दुष्ट आचरण और
पातकम्	८. पाप	दुराशयाः	१३. बुरे विचार वाले (हैं)
नित्यम्	७. सदा	सप्ताह	१६. श्रीमद्भागवत-सप्ताह के
प्रकुर्वन्ति	९. करते रहते हैं (तथा)	यज्ञेन	१७. अनुष्ठान से
शठाः	२. धूर्त (मनुष्य)	कलौ	१४. कलियुग में
हठेन	६. हठ-पूर्वक	पुनन्ति	१८. पवित्र हो जाते हैं
ये ।	१. जो	ते ॥	१५. वे (भी)

श्लोकार्थ—जो धूर्त मनुष्य मन, वाणी और शरीर से हठ-पूर्वक सदा पाप करते रहते हैं तथा दूसरों के धन से बढ़ने वाले, दुष्ट आचरण और बुरे विचार वाले हैं; कलियुग में वे भी श्रीमद्भागवत सप्ताह के अनुष्ठान से पवित्र हो जाते हैं ।

पञ्चदशः श्लोकः

अत्र ते कीर्तयिष्याम इतिहासं पुरातनम् ।
यस्य श्रवणमात्रेण पापहानिः प्रजायते ॥१५॥

पदच्छेद—

अत्र ते कीर्तयिष्यामः, इतिहासम् पुरातनम् ।
यस्य श्रवण मात्रेण, पाप हानिः प्रजायते ॥

शब्दार्थ—

अत्र	१.	इस विषय में	यस्य	६.	जिसको
ते	२.	तुम्हें	श्रवणमात्रेण	७.	सुनने से ही
कीर्तयिष्यामः	५.	हम सुना रहे हैं	पाप	८.	पापों का
इतिहासम्	४.	कथा	हानिः	९.	नाश
पुरातनम् ।	३.	(एक) पुरानी	प्रजायते ॥	१०.	हो जाता है

श्लोकार्थ—इस विषय में तुम्हें एक पुरानी कथा हम सुना रहे हैं; जिसको सुनने से ही पापों का नाश हो जाता है ।

षोडशः श्लोकः

तुङ्गभद्रातटे पूर्वमभूत्पत्तनमुत्तमम् ।
यत्र वर्णाः स्वधर्मेण सत्यसत्कर्मतत्पराः ॥१६॥

पदच्छेद—

तुङ्गभद्रा तटे पूर्वम्, अभूत् पत्तनम् उत्तमम् ।
यत्र वर्णाः स्व धर्मेण, सत्य सत् कर्म तत्पराः ॥

शब्दार्थ—

तुङ्गभद्रा	२.	तुंगभद्रा नदी के	वर्णाः	८.	(ब्राह्मणादि) चारों वर्ण
तटे	३.	तट पर	स्व	९.	अपने-अपने
पूर्वम्	१.	प्राचीन काल में	धर्मेण	१०.	धर्म के अनुसार
अभूत्	६.	था	सत्य	११.	सत्य और
पत्तनम्	५.	नगर	सत्	१२.	उत्तम
उत्तमम् ।	४.	(एक) सुन्दर	कर्म	१३.	कर्म करने में
यत्र	७.	जिसमें	तत्पराः ॥	१४.	लगे हुये (थे)

श्लोकार्थ—प्राचीन काल में तुंगभद्रा नदी के तट पर एक सुन्दर नगर था; जिसमें ब्राह्मणादि चारों वर्ण अपने-अपने धर्म के अनुसार सत्य और उत्तम कर्म करने में लगे हुये थे ।

सप्तदशः श्लोकः

आत्मदेवः पुरे तस्मिन् सर्ववेदविशारदः ।
श्रौतस्मार्तेषु निष्णातो द्वितीय इव भास्करः ॥१७॥

पदच्छेद—

आत्मदेवः पुरे तस्मिन्, सर्व वेद विशारदः ।
श्रौत स्मार्तेषु निष्णातः, द्वितीयः इव भास्करः ॥

शब्दार्थ—

आत्मदेवः	१२. आत्मदेव (नामक ब्राह्मण रहते थे)		श्रौत	६. वैदिक और
पुरे	२. नगर मे		स्मार्तेषु	७. पौराणिक (कर्मों) के
तस्मिन्	१. उस		निष्णातः	८. विद्वान्
सर्व	३. चारों		द्वितीयः	९. दूसरे
वेद	४. वेदों के		इव	११. समान (तेजस्वी)
विशारदः ।	५. जानकर		भास्करः ॥	१०. सूर्य के

श्लोकार्थ—उस नगर में चारों वेदों के जानकार, वैदिक और पौराणिक क़र्मों के विद्वान्, दूसरे सूर्य के समान तेजस्वी आत्मदेव नामक ब्राह्मण रहते थे ।

अष्टादशः श्लोकः

भिक्षुको वित्तवाँल्लोके तत्प्रिया धुन्धुली स्मृता ।
स्ववाक्यस्थापिका नित्यं सुन्दरी सुकुलोद्भवा ॥१८॥

पदच्छेद—

भिक्षुकः वित्तवान् लोके, तद् प्रिया धुन्धुली स्मृता ।
स्व वाक्य स्थापिका नित्यम्, सुन्दरी सुकुल उद्भवा ॥

शब्दार्थ—

भिक्षुकः	२. भिक्षावृत्ति करने वाला		स्व	९. अपनी
वित्तवान्	३. धनवान् (ब्राह्मण था)		वाक्य	१०. बात को
लोके	१. (वह) लोक में		स्थापिका	११. ऊपर रखने वाली
तद्	४. उसकी		नित्यम्	८. (वह) सदा
प्रिया	५. पत्नी		सुन्दरी	१२. सुन्दरी (और)
धुन्धुली	६. धुन्धुली नाम से		सुकुल	१३. उत्तम वंश में
स्मृता ।	७. कही जाती थी		उद्भवा ॥	१४. उत्पन्न (थी)

श्लोकार्थ—वह लोक में भिक्षावृत्ति करने वाला धनवान् ब्राह्मण था। उसकी पत्नी धुन्धुली नाम से कही जाती थी। वह सदा अपनी बात को ऊपर रखने वाली, सुन्दरी और उत्तम वंश में उत्पन्न थी।

एकोनविंशः श्लोकः

लोकवार्तारता क्रूरा प्रायशो बहुजल्पिका ।
शूरा च गृहकृत्येषु कृपणा कलहप्रिया ॥१९॥

पदच्छेद—

लोक वार्ता रता क्रूरा, प्रायशः बहु जल्पिका ।
शूरा च गृह कृत्येषु, कृपणा कलह प्रिया ॥

शब्दार्थ—

लोक	१. (वह धुन्धुली) दुनियादारी की		शूरा	१०. तेज
वार्ता	२. बातों से		च	१२. तथा
रता	३. प्रसन्न		गृह	८. घर के
क्रूरा	४. निर्दयी		कृत्येषु	९. कामों में
प्रायशः	५. अधिकतर		कृपणा	११. कंजूस
बहु	६. बहुत		कलह	१३. झगड़ा
जल्पिका ।	७. बोलने वाली		प्रिया ॥	१४. पसन्द (थी)

श्लोकार्थ—वह धुन्धुली दुनियादारी की बातों से प्रसन्न, निर्दयी, अधिकतर बहुत बोलने वाली, घर के कामों में तेज, कंजूस तथा झगड़ा-पसन्द थी ।

विंशः श्लोकः

एवं निवसतोः प्रेम्णा दम्पत्यो रममाणयोः ।
अर्था कामास्तयोरासन्न सुखाय गृहादिकम् ॥२०॥

पदच्छेद—

एवम् निवसतोः प्रेम्णा, दम्पत्योः रममाणयोः ।
अर्थाः कामाः तयोः आसन्, न सुखाय गृह आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार		कामाः	८. भोग-विलास (और)
निवसतोः	३. निवास करते हुए (तथा)		तयोः	५. उन
प्रेम्णा	२. प्रेम के साथ		आसन्	१२. लगते थे
दम्पत्योः	६. पति-पत्नी को		न	११. नहीं
रममाणयोः ।	४. विहार करते हुए		सुखाय	१०. अच्छे
अर्थाः	७. सम्पत्ति		गृह, आदिकम् ॥	९. घर, इत्यादि (सुख-साधन)

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रेम के साथ निवास करते हुए तथा विहार करते हुए उन पति-पत्नी को सम्पत्ति, भोग-विलास और घर इत्यादि सुख-साधन अच्छे नहीं लगते थे ।

एकविंशः श्लोकः

पश्चाद्धर्माः समारब्धाः ताभ्यां सन्तानहेतवे ।
गोभूहिरण्यवासांसि दीनेभ्यो यच्छतः सदा ॥२१॥

पदच्छेद—

पश्चात् धर्माः समारब्धाः, ताभ्याम् सन्तान हेतवे ।
गो भू हिरण्य वासांसि, दीनेभ्यः यच्छतः सदा ॥

शब्दार्थ—

पश्चात्	१.	तदनन्तर	गो, भू	६.	गाय, भूमि
धर्माः	५.	धर्म-कर्म	हिरण्य	१०.	सुवर्ण और
समारब्धाः	६.	करने लगे (और)	वासांसि	११.	वस्त्रों का
ताभ्याम्	२.	वे दोनों (दम्पती)	दीनेभ्यः	७.	गरीबों को
सन्तान	३.	पुत्र की	यच्छतः	१२.	दान देने लगे
हेतवे ।	४.	कामना से	सदा ॥	८.	नित्य

श्लोकार्थ—तदनन्तर वे दोनों दम्पती पुत्र की कामना से धर्म-कर्म करने लगे और गरीबों को नित्य गाय, भूमि, सुवर्ण और वस्त्रों का दान देने लगे ।

द्वाविंशः श्लोकः

धनार्धं धर्ममार्गेण ताभ्यां नीतं तथापि च ।
न पुत्रो नापि वा पुत्री ततश्चिन्तातुरो भृशम् ॥२२॥

पदच्छेद—

धन अर्धम् धर्म मार्गेण, ताभ्याम् नीतम् तथा अपि च ।
न पुत्रः नापि वा पुत्री, ततः चिन्ता आतुरः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

धन	५.	सम्पत्ति का	न	६.	न
अर्धम्	६.	आधा भाग	पुत्रः	१०.	पुत्र (हुआ)
धर्म	३.	धर्म के	नापि	१२.	नहीं
मार्गेण	४.	रास्ते से	वा	११.	और
ताभ्याम्	२.	उन दोनों ने	पुत्री	१३.	पुत्री (हुई)
नीतम्	७.	दान कर दिया	ततः	१४.	तदनन्तर (वे)
तथा अपि	८.	तो भी (उन्हें)	चिन्ता	१५.	चिन्ता से
च ।	१.	इस प्रकार	आतुरः	१७.	व्याकुल (हो गये)
			भृशम् ॥	१६.	बहुत

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन दोनों ने धर्म के रास्ते से सम्पत्ति का आधा भाग दान कर दिया, तो भी उन्हें न पुत्र हुआ और नहीं पुत्री हुई । तदनन्तर वे चिन्ता से बहुत व्याकुल हो गये ।

त्रयोविंशः श्लोकः

एकदा स द्विजो दुःखाद् गृहं त्यक्त्वा वनं गतः ।
मध्याह्ने तृषितो जातस्तडागं समुपेयिवान् ॥२३॥

पदच्छेद—

एकदा सः द्विजः दुःखात्, गृहम् त्यक्त्वा वनम् गतः ।
मध्याह्ने तृषितः जातः, तडागम् समुपेयिवान् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक दिन	गतः ।	८.	चला गया (और वहाँ)
सः	२.	वह	मध्याह्ने	९.	दोपहर में
द्विजः	३.	ब्राह्मण	तृषितः	१०.	प्यासा
दुःखात्	४.	दुःख के कारण	जातः	११.	होने से
गृहम्	५.	घर	तडागम्	१२.	एक तालाब के
त्यक्त्वा	६.	छोड़कर	समुपेयिवान् ॥	१३.	समीप पहुँचा
वनम्	७.	वन में			

श्लोकार्थ—एक दिन वह ब्राह्मण दुःख के कारण घर छोड़कर वन में चला गया और वहाँ दोपहर में प्यासा होने से एक तालाब के समीप पहुँचा ।

चतुर्विंशः श्लोकः

पीत्वा जलं निषण्णस्तु प्रजादुःखेन कर्शितः ।
मुहूर्त्तादपि तत्रैव संन्यासी कश्चिदागतः ॥२४॥

पदच्छेद—

पीत्वा जलम् निषण्णः तु, प्रजा दुःखेन कर्शितः ।
मुहूर्त्तात् अपि तत्र एव, संन्यासी कश्चित् आगतः ॥

शब्दार्थ—

पीत्वा	४.	पीकर	मुहूर्त्तात्	७.	एक क्षण बाद
जलम्	३.	पानी	अपि	८.	ही
निषण्णः	५.	बैठा ही था	तत्र एव	९.	वहीं पर
तु	६.	कि	संन्यासी	११.	संन्यासी जी
प्रजा, दुःखेन	१.	सन्तान के, दुःख से	कश्चित्	१०.	कोई
कर्शितः ।	२.	दुःखी (वह ब्राह्मण)	आगतः ॥	१२.	पधारे

श्लोकार्थ—संतान के दुःख से दुःखी वह ब्राह्मण पानी पीकर बैठा ही था कि एक क्षण बाद ही वहीं पर कोई संन्यासी जी पधारे ।

पञ्चविंशः श्लोकः

दृष्ट्वा पीतजलं तं तु विप्रो यातस्तदन्तिकम् ।
नत्वा च पादयोस्तस्य निःश्वसन् संस्थितः पुरः ।।२५।।

पदच्छेद—

दृष्ट्वा पीत जलम् तम् तु, विप्रः यातः तद् अन्तिकम् ।
नत्वा च पादयोः तस्य, निःश्वसन् संस्थितः पुरः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	६.	देखकर	अन्तिकम् ।	८.	समीप
पीत	५.	पीया हुआ	नत्वा	१३.	नमस्कार करके
जलम्	४.	जल	च	१०.	और
तम्	३.	उन्हें	पादयोः	१२.	चरणों में
तु	१.	तदनन्तर	तस्य	११.	उनके
विप्रः	२.	(वह) ब्राह्मण	निःश्वसन्	१४.	लम्बी साँस लेता हुआ
यातः	९.	गया	संस्थितः	१६.	बैठ गया
तद्	७.	उनके	पुरः ॥	१५.	सामने

श्लोकार्थ—तदनन्तर वह ब्राह्मण उन्हें जल पीया हुआ देखकर उनके समीप गया और उनके चरणों में नमस्कार करके लम्बी साँस लेता हुआ सामने बैठ गया ।

षड्विंशः श्लोकः

यतिरुवाच— **कथं रोदिषि विप्र त्वं का ते चिन्ता बलीयसी ।**
वद त्वं सत्वरं मह्यं स्वस्य दुःखस्य कारणम् ।।२६।।

पदच्छेद—

कथम् रोदिषि विप्र त्वम्, का ते चिन्ता बलीयसी ।
वद त्वम् सत्वरम् मह्यम्, स्वस्य दुःखस्य कारणम् ॥

शब्दार्थ—

कथम्	३.	क्यों	वद	१५.	बताओ
रोदिषि	४.	रो रहे हो	त्वम्	९.	तुम
विप्र	१.	हे ब्राह्मण !	सत्वरम्	१४.	शीघ्र
त्वम्	२.	तुम	मह्यम्	१०.	मुझे
का	६.	कौन सी	स्वस्य	११.	अपने
ते	५.	तुम्हें	दुःखस्य	१२.	दुःख का
चिन्ता	८.	चिन्ता (है)	कारणम् ॥	१३.	कारण
बलीयसी ।	७.	बड़ी			

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण ! तुम क्यों रो रहे हो ? तुम्हें कौन सी बड़ी चिन्ता है ? तुम मुझे अपने दुःख का कारण शीघ्र बताओ ।

सप्तविंशः श्लोकः

ब्राह्मण उवाच—

किं ब्रवीमि ऋषे दुःखं पूर्वपापेन सञ्चितम् ।
मदीया पूर्वजास्तोयं कवोष्णमुपभुञ्जते ॥२७॥

पदच्छेद—

किम् ब्रवीमि ऋषे दुःखम्, पूर्व पापेन संचितम् ।
मदीयाः पूर्वजाः तोयम्, कवोष्णम् उपभुञ्जते ॥

शब्दार्थ—

किम्	६.	क्या	संचितम् ।	४.	इकट्ठे किये गये
ब्रवीमि	७.	कहूँ	मदीयाः	८.	मेरे
ऋषे	१.	हे महात्मन् ! (मैं)	पूर्वजाः	९.	पितर गण
दुःखम्	५.	दुःख को	तोयम्	१०.	(तर्पण के) जल को
पूर्व	२.	पूर्व जन्मों के	कवोष्णम्	११.	(अपनी आह से) कुछ गर्म करके
पापेन	३.	पाप से	उपभुञ्जते ॥	१२.	पीते हैं

श्लोकार्थ—हे महात्मन् ! मैं पूर्व जन्मों के पाप से इकट्ठे किये गये दुःख को क्या कहूँ । मेरे पितरगण तर्पण के जल को अपनी आह से कुछ गर्म करके पीते हैं ।

अष्टाविंशः श्लोकः

मद्दत्तं नैव गृह्णन्ति प्रीत्या देवा द्विजातयः ।
प्रजादुःखेन शून्योऽहं प्राणांस्त्यक्तुमिहागतः ॥२८॥

पदच्छेद—

मद् दत्तम् न एव गृह्णन्ति, प्रीत्या देवाः द्विजातयः ।
प्रजा दुःखेन शून्यः अहम्, प्राणान् त्यक्तुम् इह आगतः ॥

शब्दार्थ—

मद्	४.	मेरे द्वारा	प्रजा	९.	(अतः) संतान के
दत्तम्	५.	दी गयी (वस्तु) को	दुःखेन	१०.	अभाव से
न	७.	नहीं	शून्यः	११.	दुःखी
एव	२.	तथा	अहम्	१२.	मैं
गृह्णन्ति	८.	स्वीकार करते हैं	प्राणान्	१३.	प्राणों को
प्रीत्या	६.	प्रसन्नता-पूर्वक	त्यक्तुम्	१४.	छोड़ने के लिए
देवाः	१.	देवता	इह	१५.	यहाँ
द्विजातयः ।	३.	ब्राह्मण गण	आगतः ॥	१६.	आया हूँ

श्लोकार्थ—देवता तथा ब्राह्मण-गण मेरे द्वारा दी गयी वस्तु को प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार नहीं करते हैं । अतः संतान के अभाव से दुःखी मैं प्राणों को छोड़ने के लिये यहाँ आया हूँ ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

धिग्जीवितं प्रजाहीनं धिग्गृहं च प्रजां विना ।
धिग्धनं चानपत्यस्य धिक्कुलं संततिं विना ॥२९॥

पदच्छेद—

धिक् जीवितम् प्रजा हीनम्, धिक् गृहम् च प्रजाम् विना ।
धिक् धनम् च अनपत्यस्य, धिक् कुलम् संततिम् विना ॥

शब्दार्थ—

धिक्	३.	धिक्कार (है)	धिक्	११.	धिक्कार (है)
जीवितम्	२.	जीवन को	धनम्	१०.	सम्पत्ति को
प्रजा, हीनम्	१.	संतान से, रहित	च	१२.	तथा
धिक्	८.	धिक्कार है	अनपत्यस्य	९.	संतान के अभाव में
गृहम्	७.	घर को	धिक्	१६.	धिक्कार (है)
च	४.	और	कुलम्	१५.	वंश को (भी)
प्रजाम्	५.	संतान के	संततिम्	१३.	संतान के
विना ।	६.	विना	विना ॥	१४.	विना

श्लोकार्थ—संतान से रहित जीवन को धिक्कार है और संतान के विना घर को धिक्कार है। संतान के अभाव में सम्पत्ति को धिक्कार है तथा संतान के विना वंश को भी धिक्कार है।

त्रिंशः श्लोकः

पाल्यते या मया धेनुः सा वन्ध्या सर्वथा भवेत् ।
यो मया रोपितो वृक्षः सोऽपि वन्ध्यत्वमाश्रयेत् ॥३०॥

पदच्छेद—

पाल्यते या मया धेनुः, सा वन्ध्या सर्वथा भवेत् ।
यः मया रोपितः वृक्षः, सः अपि वन्ध्यत्वम् आश्रयेत् ॥

शब्दार्थ—

पाल्यते	४.	पालन किया है	यः	१०.	जो
या	२.	जिस	मया	९.	मैंने
मया	१.	मैंने	रोपितः	१२.	लगाया है
धेनुः	३.	गाय का	वृक्षः	११.	वृक्ष
सा	५.	वह	सः	१३.	वह
वन्ध्या	७.	बाँझ	अपि	१४.	भी
सर्वथा	६.	बिल्कुल	वन्ध्यत्वम्	१५.	फल नहीं
भवेत् ।	८.	हो गयी है	आश्रयेत् ॥	१६.	देता है

श्लोकार्थ—मैंने जिस गाय का पालन किया है; वह बिल्कुल बाँझ हो गयी है। मैंने जो वृक्ष लगाया है, वह भी फल नहीं देता है।

एकत्रिंशः श्लोकः

यत्फलं मद्गृहायातं तच्च शीघ्रं विनश्यति ।
निर्भाग्यस्यानपत्यस्य किमतो जीवितेन मे ॥३१॥

पदच्छेद—

यद् फलम् मद् गृह आयातम्, तद् च शीघ्रम् विनश्यति ।
निर्भाग्यस्य अनपत्यस्य, किम् अतः जीवितेन मे ॥

शब्दार्थ—

यद्	१. जो		विनश्यति ।	८. नष्ट हो जाता है
फलम्	२. फल		निर्भाग्यस्य	१०. अभागे (और)
मद्, गृह	३. मेरे, घर		अनपत्यस्य	११. संतान-हीन
आयातम्	४. आता है		किम्	१४. क्या (लाभ है)
तद्	५. वह		अतः	९. इसलिये
च	६. भी		जीवितेन	१३. जीवन से
शीघ्रम्	७. तत्काल		मे ॥	१२. मेरे

श्लोकार्थ—जो फल मेरे घर आता है; वह भी तत्काल नष्ट हो जाता है । इसलिये अभागे और संतान-हीन मेरे जीवन से क्या लाभ है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा स रुरोदोच्चैस्तत्पार्श्वे दुःखपीडितः ।
तदा तस्य यतेश्चित्ते करुणाभूद्गरीयसी ॥३२॥

पदच्छेद—

इति उक्त्वा सः रुरोद उच्चैः, तद् पार्श्वम् दुःख पीडितः ।
तदा तस्य यतेः चित्ते, करुणा अभूत् गरीयसी ॥

शब्दार्थ—

इति	४. यह		पीडितः ।	२. व्याकुल
उक्त्वा	५. कहकर		तदा	१०. उस समय
सः	३. वह (आत्मदेव)		तस्य	११. उस
रुरोद	९. रोने लगा		यतेः	१२. संन्यासी के
उच्चैः	८. जोर सें		चित्ते	१३. हृदय में
तद्	६. उस (संन्यासी) के		करुणा	१५. दया
पार्श्वम्	७. पास		अभूत्	१६. उत्पन्न हुई
दुःख	१. संकट से		गरीयसी ॥	१४. बड़ी

श्लोकार्थ—संकट से व्याकुल वह आत्मदेव यह कहकर उस संन्यासी के पास जोर से रोने लगा । उस समय उस संन्यासी के हृदय में बड़ी दया उत्पन्न हुई ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तद्भालाक्षरमालां च वाचयामास योगवान् ।
सर्वं ज्ञात्वा यतिः पश्चाद्विप्रमूचे सविस्तरम् ॥३३॥

पदच्छेद—

तद् भाल अक्षर मालाम् च, वाचयामास योगवान् ।
सर्वम् ज्ञात्वा यतिः पश्चात्, विप्रम् ऊचे सविस्तरम् ॥

शब्दार्थ—

तद्, भाल	४.	उस (आत्मदेव) के, ललाट की	ज्ञात्वा	९.	जानकर
अक्षरमालाम्	५.	वर्णमाला को	यतिः	३.	संन्यासी जी ने
च	७.	और	पश्चात्	१.	तदनन्तर
वाचयामास	६.	पढ़ा	विप्रम्	१०.	ब्राह्मण से
योगवान् ।	२.	योगशास्त्र के जानकार	ऊचे	१२	कहा
सर्वम्	८.	सब कुछ	सविस्तरम् ॥	११.	विस्तार-पूर्वक

श्लोकार्थ—तदनन्तर योगशास्त्र के जानकार संन्यासी जी ने उस आत्मदेव के ललाट की वर्णमाला को पढ़ा और सब कुछ जानकर ब्राह्मण से विस्तार-पूर्वक कहा ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यतिरुवाच— मुञ्चाज्ञानं प्रजारूपं बलिष्ठा कर्मणो गतिः ।
विवेकं तु समासाद्य त्यज संसारवासनाम् ॥३४॥

पदच्छेद—

मुञ्च अज्ञानम् प्रजारूपम्, बलिष्ठा कर्मणः गतिः ।
विवेकम् तु समासाद्य, त्यज संसार वासनाम् ॥

शब्दार्थ—

मुञ्च	३.	छोड़ दो	विवेकम्	८.	उत्तम ज्ञान को
अज्ञानम्	२.	मोह को	तु	७.	अतः
प्रजारूपम्	१.	सन्तान पाने के	समासाद्य	९.	पाकर
बलिष्ठा	६.	बड़ा बलवान् (होता है)	त्यज	१२.	त्याग कर दो
कर्मणः	४.	कर्मों का	संसार	१०.	संसार की
गतिः ।	५.	फल	वासनाम् ॥	११.	कामना का

श्लोकार्थ—संतान पाने के मोह को छोड़ दो । कर्मों का फल बड़ा बलवान् होता है । अतः उत्तम ज्ञान को पाकर संसार की कामना का त्याग कर दो ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

शृणु विप्र मया तेऽद्य प्रारब्धं तु विलोकितम् ।
सप्तजन्मावधि तव पुत्रो नैव च नैव च ॥३५॥

पदच्छेद—

शृणु विप्र मया ते अद्य, प्रारब्धम् तु विलोकितम् ।
सप्त जन्म अवधि तव, पुत्रः न एव च न एव च ॥

शब्दार्थ—

शृणु	२.	सुनो	सप्त	९.	सात
विप्र	१.	हे ब्राह्मण (तुम)	जन्म	१०.	जन्मों
मया	४.	मैंने	अवधि	११.	तक
ते	५.	तुम्हारे	तव	१२.	तुम्हारे
अद्य	३.	आज	पुत्रः	१४.	पुत्र
प्रारब्धम्	६.	भाग्य को	नैव	१५.	नहीं (है)
तु	८.	जिसके अनुसार	च	१३.	भाग्य में
विलोकितम् ।	७.	देखा है	नैव	१६.	नहीं
			च ॥	१७.	है

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण ! तुम सुनो । आज मैंने तुम्हारे भाग्य को देखा है; जिसके अनुसार सात जन्मों तक तुम्हारे भाग्य में पुत्र नहीं है—नहीं है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

सन्ततेः सगरो दुःखमवापाङ्गः पुरा तथा ।
रे मुञ्चाद्य कुटुम्बाशां संन्यासे सर्वथा सुखम् ॥३६॥

पदच्छेद—

सन्ततेः सगरः दुःखम्, अवाप आङ्गः पुरा तथा ।
रे मुञ्च अद्य कुटुम्ब आशाम्, संन्यासे सर्वथा सुखम् ॥

शब्दार्थ—

सन्ततेः	४.	सन्तान से	रे	८.	हे (ब्राह्मण) !
सगरः	३.	सगर ने	मुञ्च	११.	छोड़ दो
दुःखम्	५.	कष्ट	अद्य	९.	अब (तुम)
अवाप	६.	पाया था	कुटुम्ब, आशाम्	१०.	पुत्र की, आशा
आङ्गः	२.	अंग देश के राजा	संन्यासे	१२.	संन्यास में
पुरा	१.	सत् युग में	सर्वथा	१३.	सब प्रकार
तथा ।	७.	अतः	सुखम् ॥	१४.	सुख (है)

श्लोकार्थ—सत् युग में अंग देश के राजा सगर ने सन्तान ने कष्ट पाया था; अत, हे ब्राह्मण ! अब तुम पुत्र की आशा छोड़ दो । संन्यास में सब प्रकार सुख है ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ब्राह्मण उवाच—

विवेकेन भवेत्किं मे पुत्रं देहि बलादपि ।
नो चेत्त्यजाम्यहं प्राणांस्त्वदग्रे शोकमूर्च्छितः ॥३७॥

पदच्छेद—

विवेकेन भवेत् किम् मे, पुत्रम् देहि बलात् अपि ।
नो चेत् त्यजामि अहम् प्राणान् , त्वद् अग्रे शोक मूर्च्छितः ॥

शब्दार्थ—

विवेकेन	१.	वैराग्य के ज्ञान से	नो चेत्	८.	नहीं तो
भवेत्	४.	होगा (मुझे)	त्यजामि	१४.	छोड़ रहा हूँ
किम्	३.	क्या	अहम्	११.	मैं
मे	२.	मेरा	प्राणान्	१३.	प्राणों को
पुत्रम्	६.	पुत्र	त्वद्, अग्रे	१२.	आपके, आगे
देहि	७	देवें	शोक	९.	चिन्ता से
बलात् अपि ।	५.	किसी भी प्रकार से	मूर्च्छितः ॥	१०.	मूर्च्छित

श्लोकार्थ—वैराग्य के ज्ञान से मेरा क्या होगा ? मुझे किसी भी प्रकार से पुत्र देवें, नहीं तो चिन्ता से मूर्च्छित मैं आपके आगे प्राणों को छोड़ रहा हूँ ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

पुत्रादिसुखहीनोऽयं संन्यासः शुष्क एव हि ।
गृहस्थः सरसो लोके पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥३८॥

पदच्छेद—

पुत्र आदि सुख हीनः अयम्, संन्यासः शुष्कः एव हि ।
गृहस्थः सरसः लोके, पुत्र पौत्र समन्वितः ॥

शब्दार्थ—

पुत्र, आदि	२.	पुत्र, इत्यादि (विषयों) के	हि ।	११.	ही
सुख, हीनः	३.	सुख से, रहित	गृहस्थः	१०.	गृहस्थाश्रम
अयम्	४.	यह	सरसः	१२.	मधुर (है)
संन्यासः	५.	वैराग्य-मार्ग	लोके	१.	संसार में
शुष्कः	६.	नीरस (है)	पुत्र पौत्र	८.	पुत्र-पौत्र से
एव	७.	किन्तु	समन्वितः ॥	९.	भरा-पूरा

श्लोकार्थ—संसार में पुत्र इत्यादि विषयों के सुख से रहित यह वैराग्य-मार्ग नीरस है; किन्तु पुत्र-पौत्र से भरा-पूरा गृहस्थाश्रम ही मधुर है ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

इति विप्राग्रहं दृष्ट्वा प्राब्रवीत्स तपोधनः।
चित्रकेतुर्गतः कष्टं विधिलेखविमार्जनात् ॥३९॥

पदच्छेद—

इति विप्र आग्रहम् दृष्ट्वा, प्राब्रवीत् सः तपोधनः।
चित्रकेतुः गतः कष्टम् , विधि लेख विमार्जनात् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	तपोधनः।	३.	तपस्वी जी
विप्र	४.	ब्राह्मण के	चित्रकेतुः	८.	चित्रगुप्त (भी)
आग्रहम्	५.	हठ को	गतः	१२.	पड़ गया
दृष्ट्वा	६.	देखकर	कष्टम्	११.	संकट में
प्राब्रवीत्	७.	बोले (इधर)	विधि, लेख	९.	ब्रह्मा की, लिखावट को
सः	२.	वे	विमार्जनात् ॥	१०.	मिटाने के कारण

श्लोकार्थ—इस प्रकार वे तपस्वी जी ब्राह्मण के हठ को देखकर बोले। इधर चित्रगुप्त भी ब्रह्मा की लिखावट को मिटाने के कारण संकट में पड़ गया।

चत्वारिंशः श्लोकः

न यास्यसि सुखं पुत्राद्यथा दैवहतोद्यमः।
अतो हठेन युक्तोऽसि ह्यर्थिनं किं वदाम्यहम् ॥४०॥

पदच्छेद—

न यास्यसि सुखम् पुत्रात् , यथा दैव हत उद्यमः।
अतः हठेन युक्तः असि, हि अर्थिनम् किम् वदामि अहम् ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	हठेन	९.	हठ के
यास्यसि	७.	पावोगे	युक्तः	१०.	अधीन
सुखम्	५.	सुख	असि	११.	हो
पुत्रात्	४.	पुत्र से	हि	८.	क्योंकि (तुम)
यथा	३.	समान (तुम)	अर्थिनम्	१४.	याचक से
दैव, हत	१.	दुर्भाग्य से, नष्ट हुये	किम्	१५.	क्या
उद्यमः।	२.	पुरुषार्थ के	वदामि	१६.	कहूँ
अतः	१२.	अतः	अहम् ॥	१३.	मैं

श्लोकार्थ—दुर्भाग्य से नष्ट हुये पुरुषार्थ के समान तुम पुत्र से सुख नहीं पावोगे। क्योंकि तुम हठ के अधीन हो; अतः मैं याचक से क्या कहूँ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तस्याग्रहं समालोक्य फलमेकं स दत्तवान् ।
इदं भक्षय पत्न्या त्वं ततः पुत्रो भविष्यति ॥४१॥

पदच्छेद—

तस्य आग्रहम् समालोक्य, फलम् एकम् सः दत्तवान् ।
इदम् भक्षय पत्न्या त्वम्, ततः पुत्रः भविष्यति ॥

शब्दार्थं—

तस्य	२.	आत्मदेव के	इदम्	९.	इसे
आग्रहम्	३.	हठ को	भक्षय	११.	खिला दो
समालोक्य	४.	देखकर (उसे)	पत्न्या	१०.	(अपनी) पत्नी को
फलम्	६.	फल	त्वम्	८.	तुम
एकम्	५.	एक	ततः	१२.	उससे (तुम्हें)
सः	१.	उस संन्यासी ने	पुत्रः	१३.	पुत्र
दत्तवान् ।	७.	दिया (और कहा कि)	भविष्यति ॥	१४.	होगा

श्लोकार्थं—उस संन्यासी ने आत्मदेव के हठ को देखकर उसे एक फल दिया और कहा कि तुम इसे अपनी पत्नी को खिला दो । उससे तुम्हें पुत्र होगा ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

सत्यं शौचं दया दानमेकभक्तं तु भोजनम् ।
वर्षावधि स्त्रिया कार्यं तेन पुत्रोऽतिनिर्मलः ॥४२॥

पदच्छेद—

सत्यं शौचम् दया दानम्, एकभक्तम् तु भोजनम् ।
वर्ष अवधि स्त्रिया कार्यम्, तेन पुत्रः अतिनिर्मलः ॥

शब्दार्थं—

सत्यम्	४.	सत्य-भाषण	वर्ष	२.	एक वर्ष
शौचम्	५.	पवित्रता	अवधि	३.	तक
दया	६.	करुणा	स्त्रिया	१.	स्त्री को
दानम्	७.	दान	कार्यम्	११.	करना चाहिये
एकभक्तम्	९.	एक समय	तेन	१२.	उससे
तु	८.	तथा	पुत्रः	१३.	बालक
भोजनम् ।	१०.	भोजन	अतिनिर्मलः ॥	१४.	बड़ा सात्त्विक (होगा)

श्लोकार्थं—स्त्री को एक वर्ष तक सत्य-भाषण, पवित्रता, करुणा, दान तथा एक समय भोजन करना चाहिये, उससे बालक बड़ा सात्त्विक होगा ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

एवमुक्त्वा ययौ योगी विप्रस्तु गृहमागतः ।
पत्न्याः पाणौ फलं दत्त्वा स्वयं यातस्तु कुत्रचित् ॥४३॥

पदच्छेद—

एवम् उक्त्वा ययौ योगी, विप्रः तु गृहम् आगतः ।
पत्न्याः पाणौ फलम् दत्त्वा, स्वयम् यातः तु कुत्रचित् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	ऐसा	पत्न्याः	१०.	(अपनी) स्त्री के
उक्त्वा	२.	कहकर	पाणौ	११.	हाथ में
ययौ	४.	चले गये	फलम्	१२.	फल
योगी	३.	महात्मा जी	दत्त्वा	१३.	देकर
विप्रः	६.	ब्राह्मण (आत्मदेव)	स्वयम्	१४.	खुद
तु	५.	तदनन्तर	यातः	१६.	चला गया
गृहम्	७.	घर	तु	९.	और
आगतः ।	८.	लौट आया	कुत्रचित् ॥	१५.	कहीं

श्लोकार्थ—ऐसा कहकर महात्मा जी चले गये । तदनन्तर ब्राह्मण आत्मदेव घर लौट आया और अपनी स्त्री के हाथ में फल देकर खुद कहीं चला गया ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तरुणी कुटिला तस्य सख्यग्रे च रुरोद ह ।
अहो चिन्ता ममोत्पन्ना फलं चाहं न भक्षये ॥४४॥

पदच्छेद—

तरुणी कुटिला तस्य, सखी अग्रे च रुरोद ह ।
अहो चिन्ता मम उत्पन्ना, फलम् च अहम् न भक्षये ॥

शब्दार्थ—

तरुणी	४.	युवती पत्नी	चिन्ता	११.	चिन्ता
कुटिला	३.	धूर्त (एवं)	मम	१०.	मुझे
तस्य	२.	उसकी	उत्पन्ना	१२.	हो गयी है
सखी, अग्रे	५.	सहेली के, सामने	फलम्	१४.	फल
च	१.	तदनन्तर	च	८.	और (कहने लगी कि)
रुरोद	७.	रोने लगी	अहम्	१३.	मैं
ह ।	६.	बड़े जोर से	न	१५.	नहीं
अहो	९.	अरे !	भक्षये ॥	१६.	खाऊँगी

श्लोकार्थ—तदनन्तर उसकी धूर्त एवं युवती पत्नी सहेली के समाने बड़े जोर से रोने लगी और कहने लगी कि अरे ! मुझे चिन्ता हो गयी है । मैं फल नहीं खाऊँगी ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

फलभक्षेण गर्भः स्याद्गर्भेणोदरवृद्धिता ।
स्वल्पभक्षं ततोऽशक्तिर्गृहकार्यं कथं भवेत् ॥४५॥

पदच्छेद—

फल भक्षेण गर्भः स्यात्, गर्भेण उदर वृद्धिता ।
स्वल्प भक्षम् ततः अशक्तिः, गृह कार्यम् कथम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

फल, भक्षेण	१.	फल, खाने से	भक्षम्	८.	भोजन (होगा)
गर्भः	२.	गर्भ	ततः	९.	उससे
स्यात्	३.	रहेगा	अशक्तिः	१०.	कमजोरी (होगी फिर)
गर्भेण	४.	गर्भ से	गृह	११.	घर का
उदर	५.	पेट	कार्यम्	१२.	काम
वृद्धिता ।	६.	बढ़ जायेगा	कथम्	१३.	कैसे
स्वल्प	७.	थोड़ा	भवेत् ॥	१४.	होगा

श्लोकार्थ—फल खाने से गर्भ रहेगा, गर्भ से पेट बढ़ जायेगा, थोड़ा भोजन होगा, उससे कमजोरी होगी फिर घर का काम कैसे होगा ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

दैवाद् घाटी व्रजेद्ग्रामे पलायेद्गर्भिणी कथम् ।
शुकवन्निवसेद्गर्भस्तं कुक्षेः कथमुत्सृजेत् ॥४६॥

पदच्छेद—

दैवात् घाटी व्रजेत् ग्रामे, पलायेत् गर्भिणी कथम् ।
शुकवत् निवसेत् गर्भः, तम् कुक्षेः कथम् उत्सृजेत् ॥

शब्दार्थ—

दैवात्	२.	अचानक	शुकवत्	९.	शुकदेव जी के समान (दीर्घ काल तक)
घाटी	३.	आक्रमण	निवसेत्	१०.	ठहर जाय (तो)
व्रजेत्	४.	हो जाय (तो)	गर्भः	८.	(वह) गर्भ
ग्रामे	१.	गाँव में	तम्	११.	उसे
पलायेत्	७.	भाग सकेगी (तथा यदि)	कुक्षेः	१३.	पेट से
गर्भिणी	५.	गर्भिणी (स्त्री)	कथम्	१२.	कैसे
कथम् ।	६.	कैसे	उत्सृजेत् ॥	१४.	बाहर किया जायेगा

श्लोकार्थ—गाँव में अचानक आक्रमण हो जाय तो गर्भिणी स्त्री कैसे भाग सकेगी तथा यदि वह गर्भ शुकदेव जी के समान दीर्घ काल तक ठहर जाय तो उसे कैसे पेट से बाहर किया जायेगा ?

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तिर्यक्चेदागतो गर्भस्तदा मे मरणं भवेत्।
प्रसूतौ दारुणं दुःखं सुकुमारी कथं सहे ॥४७॥

पदच्छेद---

तिर्यक् चेत् आगतः गर्भः, तदा मे मरणम् भवेत्।
प्रसूतौ दारुणम् दुःखम्, सुकुमारी कथम् सहे ॥

शब्दार्थ---

तिर्यक्	३.	तिरछे	भवेत्।	८.	हो जायेगी (इस प्रकार)
चेत्	१.	यदि	प्रसूतौ	९.	प्रसव के
आगतः	४.	आगया	दारुणम्	१०.	भयंकर
गर्भः	२.	बच्चा	दुःखम्	११.	कष्ट को
तदा	५.	तो	सुकुमारी	१२.	अत्यन्त कोमल (मैं)
मे	६.	मेरी	कथम्	१३.	कैसे
मरणम्	७.	मृत्यु	सहे ॥	१४.	सह सकूँगी

श्लोकार्थ---यदि बच्चा तिरछे आगया तो मेरी मृत्यु हो जायेगी। इस प्रकार प्रसव के भयंकर कष्ट को अत्यन्त कोमल मैं कैसे सह सकूँगी।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

मन्दायां मयि सर्वस्वं ननान्दा संहरेत्तदा।
सत्यशौचादिनियमो दुराराध्यः स दृश्यते ॥४८॥

पदच्छेद---

मन्दायाम् मयि सर्वं स्वम्, ननान्दा संहरेत् तदा।
सत्य शौच आदि नियमः, दुराराध्यः सः दृश्यते ॥

शब्दार्थ---

मन्दायाम्	२.	दुर्बल हो जाने पर	सत्य शौच	७.	सत्य और शुद्धि
मयि	१.	मेरे	आदि	८.	इत्यादि का
सर्वं, स्वम्	४.	सारा, धन	नियमः	१०.	नियम (भी)
ननान्दा	३.	ननद	दुराराध्यः	११.	कठिन पालनीय
संहरेत्	५.	उठा ले जायेगी	सः	९.	वह
तदा।	६.	उस समय	दृश्यते ॥	१२.	दिखाई देता है

श्लोकार्थ---मेरे दुर्बल हो जाने पर ननद सारा धन उठा ले जायेगी। उस समय सत्य और शुद्धि इत्यादि का वह नियम भी कठिन पालनीय दिखाई देता है।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

लालने पालने दुःखं प्रसूतायाश्च वर्तते।
वन्ध्या वा विधवा नारी सुखिनी चेति मे मतिः ॥४९॥

पदच्छेद—

लालने पालने दुःखम्, प्रसूतायाः च वर्तते।
वन्ध्या वा विधवा नारी, सुखिनी च इति मे मतिः ॥

शब्दार्थ—

लालने	३.	(बच्चे के) लालन	वन्ध्या, वा	९.	बाँझ, अथवा
पालने	४.	पालन में	विधवा नारी	१०.	विधवा स्त्री
दुःखम्	५.	कष्ट	सुखिनी	१२.	सुखी (है)
प्रसूतायाः	२.	जच्चे को	च	११.	ही
च	१.	तथा	इति	७.	अतः
वर्तते।	६.	होता है	मे, मतिः ॥	८.	मेरे, विचार से

श्लोकार्थ—तथा जच्चे को बच्चे के लालन-पालन में कष्ट होता है; अतः मेरे विचार से बाँझ अथवा विधवा स्त्री ही सुखी है।

पञ्चाशः श्लोकः

एवं कुतर्कयोगेन तत्फलं नैव भक्षितम्।
पत्या पृष्टं फलं भुक्तं भुक्तं चेति तयेरितम् ॥५०॥

पदच्छेद—

एवम् कुतर्क योगेन, तत् फलम् न एव भक्षितम्।
पत्या पृष्टम् फलम् भुक्तम्, भुक्तम् च इति तया ईरितम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	पृष्टम्	१२.	पूछने पर
कुतर्क	२.	कुतर्क	फलम्	१०.	फल
योगेन	३.	उठने से (धुन्धुली ने)	भुक्तम्	११.	खाया (यह)
तत्	४.	उस	भुक्तम्	१४.	खा लिया
फलम्	५.	फल को	च	८.	तथा
न एव	६.	नहीं	इति	१५.	ऐसा
भक्षितम्।	७.	खाया	तया	१३.	उसने
पत्या	९.	पति के द्वारा	ईरितम् ॥	१६.	उत्तर दे दिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार कुतर्क उठने से धुन्धुली ने उस फल को नहीं खाया तथा पति के द्वारा 'फल खाया' यह पूछने पर उसने 'खा लिया' ऐसा उत्तर दे दिया।

एकपञ्चाशः श्लोकः

एकदा भगिनी तस्यास्तद्गृहं स्वेच्छयाऽऽगता ।
तदग्रे कथितं सर्वं चिन्तेयं महती हि मे ॥५१॥

पदच्छेद—

एकदा भगिनी तस्याः, तद् गृहम् स्वेच्छया आगता ।
तद् अग्रे कथितम् सर्वम् , चिन्ता इयम् महती हि मे ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक समय	**कथितम्**	९.	कह दी
भगिनी	३.	बहिन	**सर्वम्**	८.	सारी (बात)
तस्याः	२.	उसकी	**चिन्ता**	१४.	कष्ट (है)
तद् , गृहम्	५.	उसके, घर	**इयम्**	१२.	यह
स्वेच्छया	४.	अपनी इच्छा से	**महती**	१३.	बहुत बड़ा
आगता ।	६.	आई (और)	**हि**	१०.	कि
तद्, अग्रे	७.	उसके, सामने (धुन्धुली ने)	**मे ॥**	११.	मुझे

श्लोकार्थ—एक समय उसकी बहिन अपनी इच्छा से उसके घर आई और उसके सामने धुन्धुली ने सारी बात कह दी कि मुझे यह बहुत बड़ा कष्ट है ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

दुर्बला तेन दुःखेन ह्यनुजे करवाणि किम् ।
साब्रवीन्मम गर्भोऽस्ति तं दास्यामि प्रसूतितः ॥५२॥

पदच्छेद—

दुर्बला तेन दुःखेन, हि अनुजे करवाणि किम् ।
सा अब्रवीत् मम गर्भः अस्ति, तम् दास्यामि प्रसूतितः ॥

शब्दार्थ—

दुर्बला	५.	दुबली (मैं)	**अब्रवीत्**	९.	बोली (कि)
तेन	२.	उस	**मम**	१०.	मुझे
दुःखेन	३.	दुःख से	**गर्भः**	११.	गर्भ
हि	४.	ही	**अस्ति**	१२.	है
अनुजे	१.	अरी बहिन !	**तम्**	१४.	उसे
करवाणि	७.	करूँ	**दास्यामि**	१५.	तुम्हें दे दूँगी
किम् ।	६.	क्या	**प्रसूतितः॥**	१३.	प्रसव के बाद
सा	८.	(उसकी) बहिन			

श्लोकार्थ—अरी बहिन ! उस दुःख से ही दुबली मैं क्या करूँ ? उसकी बहिन बोली कि मुझे गर्भ है, प्रसव के बाद उसे तुम्हें दे दूँगी ।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

तावत्कालं सगर्भेव गुप्ता तिष्ठ गृहे सुखम् ।
वित्तं त्वं मत्पतेर्यच्छ स ते दास्यति बालकम् ।।५३।।

पदच्छेद—

तावत् कालम् सगर्भा इव, गुप्ता तिष्ठ गृहे सुखम् ।
वित्तम् त्वम् मत् पतेः यच्छ, सः ते दास्यति बालकम् ॥

शब्दार्थ—

तावत् कालम	१.	तब तक	वित्तम्	१०.	धन
सगर्भा	२.	गर्भिणी के	त्वम्	८.	तुम
इव	३.	समान	मत्, पतेः	९.	मेरे, पतिदेव को
गुप्ता	५.	छिपकर	यच्छ	११.	दे देना
तिष्ठ	७.	रहो	सः	१२.	वे
गृहे	४.	घर में	ते	१३.	तुम्हें
सुखम् ।	६.	आराम से	दास्यति	१५.	दे देंगे
			बालकम् ॥	१४.	(गर्भ का) बच्चा

श्लोकार्थ—तब तक गर्भिणी के समान घर में छिपकर आराम से रहो। तुम मेरे पतिदेव को धन दे देना; वे तुम्हें गर्भ का बच्चा दे देंगे।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

षाण्मासिको मृतो बाल इति लोको वदिष्यति ।
तं बालं पोषयिष्यामि नित्यमागत्य ते गृहे ।।५४।।

पदच्छेद—

षाण्मासिकः मृतः बालः, इति लोकः वदिष्यति ।
तम् बालम् पोषयिष्यामि, नित्यम् आगत्य ते गृहे ॥

शब्दार्थ—

षाण्मासिकः	५.	छः महीने का होकर	तम्	१०.	उस
मृतः	६.	मर गया (तथा मैं)	बालम्	११.	बालक का
बालः	४.	(मेरा) बालक	पोषयिष्यामि	१२.	पोषण किया करूँगी
इति	२.	ऐसा	नित्यम्	८.	प्रतिदिन
लोकः	१.	लोग	आगत्य	९.	आकर
वदिष्यति ।	३.	कहेंगे (कि)	ते, गृहे ॥	७.	तुम्हारे, घर

श्लोकार्थ—लोग ऐसा कहेंगे कि मेरा बालक छः महीने का होकर मर गया तथा मैं तुम्हारे घर प्रतिदिन आकर उस बालक का पोषण किया करूँगी।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

फलमर्पय धेन्वै त्वं परीक्षार्थं तु साम्प्रतम् ।
तत्तदाचरितं सर्वं तथैव स्त्रीस्वभावतः ॥५५॥

पदच्छेद—

फलम् अर्पय धेन्वै त्वम्, परीक्षार्थम् तु साम्प्रतम् ।
तद् तदा आचरितम् सर्वम्, तथैव स्त्री स्वभावतः ॥

शब्दार्थ—

फलम्	५.	फल	तद्	११.	वह
अर्पय	७.	खिला दो	तदा	८.	उस समय (उसने)
धेन्वै	६.	गाय को	आचरितम्	१४.	किया
त्वम्	३.	तुम	सर्वम्	१२.	सब (काम)
परीक्षार्थम्	४.	परीक्षा करने के लिए	तथैव	१३.	उसी प्रकार से
तु	१.	तथा	स्त्री	९.	स्त्री
साम्प्रतम् ।	२.	इस समय	स्वभावतः ॥	१०.	स्वभाव के कारण

श्लोकार्थ—तथा इस समय तुम परीक्षा करने के लिए फल गाय को खिला दो । उस समय उसने स्त्री स्वभाव के कारण वह सब काम उसी प्रकार से किया ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

अथ कालेन सा नारी प्रसूता बालकं तदा ।
आनीय जनको बालं रहस्ये धुन्धुलीं ददौ ॥५६॥

पदच्छेद—

अथ कालेन सा नारी, प्रसूता बालकम् तदा ।
आनीय जनकः बालम्, रहस्ये धुन्धुलीम् ददौ ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	आनीय	१०.	लाकर
कालेन	२.	समय आने पर	जनकः	८.	(उसके) पिता ने
सा	३.	उस	बालम्	९.	बच्चे को
नारी	४.	स्त्री ने	रहस्ये	११.	एकान्त में
प्रसूता	६.	जन्म दिया	धुन्धुलीम्	१२.	धुन्धुली को
बालकम्	५.	बालक को	ददौ ॥	१३.	दे दिया
तदा ।	७.	उस समय			

श्लोकार्थ—तदनन्तर समय आने पर उस स्त्री ने बालक को जन्म दिया । उस समय उसके पिता ने बच्चे को लाकर एकान्त में धुन्धुली को दे दिया ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

तया च कथितं भर्त्रे प्रसूतः सुखमर्भकः ।
लोकस्य सुखमुत्पन्नमात्मदेवप्रजोदयात् ॥५७॥

पदच्छेद—

तया च कथितम् भर्त्रे, प्रसूतः सुखम् अर्भकः ।
लोकस्य सुखम् उत्पन्नम्, आत्मदेव प्रजा उदयात् ॥

शब्दार्थ—

तया	२.	धुन्धुली ने	अर्भकः ।	५.	बालक
च	१.	समय से	लोकस्य	१०.	लोगों में (भी)
कथितम्	४.	कहा (कि)	सुखम्	११.	आनन्द
भर्त्रे	३.	अपने पति (आत्मदेव) से	उत्पन्नम्	१२.	छा गया था
प्रसूतः	७.	उत्पन्न हो गया है	आत्मदेव	८.	आत्मदेव को
सुखम्	६.	सुख-पूर्वक	प्रजा, उदयात् ॥	९.	पुत्र, उत्पन्न होने से

श्लोकार्थ—समय से धुन्धुली ने अपने पति आत्मदेव से कहा कि बालक सुख-पूर्वक उत्पन्न हो गया है। आत्मदेव को पुत्र उत्पन्न होने से लोगों में भी आनन्द छा गया था ।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

ददौ दानं द्विजातिभ्यो जातकर्म विधाय च ।
गीतवादित्रघोषोऽभूत्तद्द्वारे मङ्गलं बहु ॥५८॥

पदच्छेद—

ददौ दानम् द्विजातिभ्यः, जातकर्म विधाय च ।
गीत वादित्र घोषः अभूत्, तद् द्वारे मङ्गलम् बहु ॥

शब्दार्थ—

ददौ	५.	दिये	वादित्र	१२.	बजाने की
दानम्	४.	दान	घोषः	१३.	ध्वनि
द्विजातिभ्यः	३.	ब्राह्मणों को	अभूत्	१४.	होने लगी
जातकर्म	१.	(आत्मदेव) जातकर्म संस्कार	तद्	६.	उनके
विधाय	२.	करके	द्वारे	७.	दरवाजे पर
च ।	१०.	तथा	मङ्गलम्	९.	उत्सव
गीत	११.	गाने	बहु ॥	८.	अनेकों

श्लोकार्थ—आत्मदेव जातकर्म संस्कार करके ब्राह्मणों को दान दिये। उनके दरवाजे पर अनेकों उत्सव तथा गाने-बजाने की ध्वनि होने लगी ।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

भर्तुरग्रेऽब्रवीद्वाक्यं स्तन्यं नास्ति कुचे मम।
अन्यस्तन्येन निर्दुग्धा कथं पुष्णामि बालकम् ॥५९॥

पदच्छेद—

भर्तुः अग्रे अब्रवीत् वाक्यम्, स्तन्यम् न अस्ति कुचे मम।
अन्य स्तन्येन निर्दुग्धा, कथम् पुष्णामि बालकम् ॥

शब्दार्थ—

भर्तुः	१. (धुन्धुली अपने) पति के	मम।	५. मेरे
अग्रे	२. सामने	अन्य	१०. दूसरों के
अब्रवीत्	४. बोली (कि)	स्तन्येन	११. दूध से
वाक्यम्	३. (यह) वचन	निर्दुग्धा	९. दूध से रहित (मैं)
स्तन्यम्	७. दूध	कथम्	१३. कैसे
न अस्ति	८. नहीं है	पुष्णामि	१४. पोषण करूँ
कुचे	६. स्तनों में	बालकम् ॥	१२. बच्चे का

श्लोकार्थ—धुन्धुली अपने पति के सामने यह वचन बोली कि मेरे स्तनों में दूध नहीं है। दूध से रहित मैं दूसरों के दूध से बच्चे का कैसे पोषण करूँ।

षष्टितमः श्लोकः

मत्स्वसुश्च प्रसूताया मृतो बालस्तु वर्तते।
तामाकार्य गृहे रक्ष सा तेऽर्भं पोषयिष्यति ॥६०॥

पदच्छेद—

मत् स्वसुः च प्रसूतायाः, मृतः बालः तु वर्तते।
ताम् आकार्य गृहे रक्ष, सा ते अर्भम् पोषयिष्यति ॥

शब्दार्थ—

मत्	२. मेरी	ताम्	९. उसे
स्वसुः	४. बहिन का	आकार्य	१०. बुलाकर
च	८. अतः	गृहे	११. घर में
प्रसूतायाः	३. जच्चा	रक्ष	१२. रख लें
मृतः	६. मर गया	सा	१३. वह
बालः	५. बालक	ते	१४. आपके
तु	१. किन्तु हाँ	अर्भम्	१५. बच्चे का
वर्तते।	७. है	पोषयिष्यति ॥	१६. पोषण कर देगी

श्लोकार्थ—किन्तु हाँ! मेरी जच्चा बहिन का बालक मर गया है; अतः उसे बुलाकर घर में रख लें। वह आपके बच्चे का पोषण कर देगी।

एकषष्टितमः श्लोकः

पतिना तत्कृतं सर्वं पुत्ररक्षणहेतवे ।
पुत्रस्य धुन्धुकारीति नाम मात्रा प्रतिष्ठितम् ॥६१॥

पदच्छेद—

पतिना तद् कृतम् सर्वम्, पुत्र रक्षण हेतवे ।
पुत्रस्य धुन्धुकारी इति, नाम माता प्रतिष्ठितम् ॥

शब्दार्थ—

पतिना	१. पति (आत्मदेव) ने	पुत्रस्य	८. अपने पुत्र का
तद्	४. वह	धुन्धुकारी	९. धुन्धुकारी
कृतम्	६. किया	इति	१०. यह
सर्वम्	५. सब	नाम	११. नाम
पुत्र, रक्षण	२. पुत्र की, रक्षा के	माता	७. माता धुन्धुली ने
हेतवे ।	३. निमित्त	प्रतिष्ठितम् ॥	१२. रखा

श्लोकार्थ—पति आत्मदेव ने पुत्र की रक्षा के निमित्त वह सब कियां । माता धुन्धुली ने अपने पुत्र का धुन्धुकारी यह नाम रखा ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

त्रिमासे निर्गते चाथ सा धेनुः सुषुवेऽर्भकम् ।
सर्वाङ्गसुन्दरं दिव्यं निर्मलं कनकप्रभम् ॥६२॥

पदच्छेद—

त्रि मासे निर्गते च अथ, सा धेनुः सुषुवे अर्भकम् ।
सर्व अङ्ग सुन्दरम् दिव्यम्, निर्मलम् कनक प्रभम् ॥

शब्दार्थं—

त्रि, मासे	२. तीन, महीने	अर्भकम् ।	१३. एक बालक को
निर्गते	३. बीत जाने पर	सर्व, अङ्ग	६. सभी, अंगों से
च	१०. तथा	सुन्दरम्	७. सुन्दर
अथ	१. तदनन्तर	दिव्यम्	८. तेजस्वी
सा	४. उस	निर्मलम्	९. पवित्र
धेनुः	५. गऊ ने	कनक	११. सुवर्ण के समान
सुषुवे	१४. उत्पन्न किया	प्रभम् ॥	१२. कान्तिमान्

श्लोकार्थं—तदन्तर तीन महीने बीत जाने पर उस गऊ ने सभी अंगों से सुन्दर, तेजस्वी, पवित्र तथा सुवर्ण के समान कान्तिमान् एक बालक को उत्पन्न किया ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

दृष्ट्वा प्रसन्नो विप्रस्तु संस्कारान् स्वयमादधे ।
मत्वाऽऽश्चर्यं जनाः सर्वे दिदृक्षार्थं समागताः ॥६३॥

पदच्छेद—

दृष्ट्वा प्रसन्नः विप्रः तु, संस्कारान् स्वयम् आदधे ।
मत्वा आश्चर्यम् जनाः सर्वे, दिदृक्षार्थम् समागताः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	१.	(उसे) देखकर	मत्वा	११.	समझकर (उसे)
प्रसन्नः	२.	आनन्द मग्न	आश्चर्यम्	१०.	आश्चर्य
विप्रः	३.	ब्राह्मण (आत्मदेव) ने	जनाः	९.	लोग
तु	७.	तथा	सर्वे	८.	सभी
संस्कारान्	४.	(जातकर्म आदि) संस्कारों को	दिदृक्षार्थम्	१२.	देखने की इच्छा से
स्वयम्	५.	स्वयम्	समागताः ॥	१३.	आने लगे
आदधे ।	६.	किया			

श्लोकार्थ—उसे देखकर आनन्द मग्न ब्राह्मण आत्मदेव ने जातकर्म आदि संस्कारों को स्वयं किया तथा सभी लोग आश्चर्य समझकर उसे देखने की इच्छा से आने लगे ।

चतुष्षष्टितमः श्लोकः

भाग्योदयोऽधुना जात आत्मदेवस्य पश्यत ।
धेन्वा बालः प्रसूतस्तु देवरूपीति कौतुकम् ॥६४॥

पदच्छेद—

भाग्योदयः अधुना जातः, आत्मदेवस्य पश्यत ।
धेन्वा बालः प्रसूतः तु, देव रूपी इति कौतुकम् ॥

शब्दार्थ—

भाग्योदयः	४.	भाग्य का उदय	बालः	११.	बालक को
अधुना	२.	इस समय	प्रसूतः	१२.	जन्म दिया है
जातः	५.	हो गया है	तु	९.	भी
आत्मदेवस्य	३.	आत्मदेव के	देवरूपी	१०.	देवता के समान
पश्यत ।	१.	देखिये	इति	६.	यह
धेन्वा	८.	गाय ने	कौतुकम् ॥	७.	आश्चर्य (है कि)

श्लोकार्थ—देखिये ! इस समय आत्मदेव के भाग्य का उदय हो गया है । यह आश्चर्य है कि गाय ने भी देवता के समान बालक को जन्म दिया है ।

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

न ज्ञातं तद्रहस्यं तु केनापि विधियोगतः।
गोकर्णं तं सुतं दृष्ट्वा गोकर्णं नाम चाकरोत् ॥६५॥

पदच्छेद—

न ज्ञातम् तद् रहस्यम् तु, केन अपि विधि योगतः।
गोकर्णम् तम् सुतम् दृष्ट्वा, गोकर्णम् नाम च अकरोत् ॥

शब्दार्थ—

न, ज्ञातम्	५.	नहीं, जान सका	तम्, सुतम्	७.	उस, पुत्र का
तद्, रहस्यम्	४.	उस, रहस्य को	दृष्ट्वा	९.	देखकर
तु	१.	किन्तु	गोकर्णम्	१०.	गोकर्ण
केन, अपि	२.	कोई, भी	नाम	११.	नाम
विधि, योगतः।	३.	भाग्य के, संयोग से	च	६.	तदनन्तर (आत्मदेव ने)
गोकर्णम्	८.	गाय के समान कान	अकरोत् ॥	१२.	रख दिया

श्लोकार्थ—किन्तु कोई भी भाग्य के संयोग से उस रहस्य को नहीं जान सका। तदनन्तर आत्मदेव ने उस पुत्र का गाय के समान कान देखकर गोकर्ण नाम रख दिया।

षट्षष्टितमः श्लोकः

कियत्कालेन तौ जातौ तरुणौ तनयावुभौ।
गोकर्णः पण्डितो ज्ञानी धुन्धुकारी महाखलः ॥६६॥

पदच्छेद—

कियद् कालेन तौ जातौ, तरुणौ तनयौ उभौ।
गोकर्णः पण्डितः ज्ञानी, धुन्धुकारी महाखलः ॥

शब्दार्थ—

कियद्	१.	कुछ	उभौ।	४.	दोनों
कालेन	२.	समय बाद	गोकर्णः	८.	गोकर्ण
तौ	३.	वे	पण्डितः	९.	चतुर (और)
जातौ	७.	हो गये (उनमें)	ज्ञानी	१०.	ज्ञानी (तथा)
तरुणौ	६.	युवक	धुन्धुकारी	११.	धुन्धुकारी
तनयौ	५.	पुत्र	महाखलः ॥	१२.	महान् दुष्ट (था)

श्लोकार्थ—कुछ समय बाद वे दोनों पुत्र युवक हो गये। उनमें गोकर्ण चतुर और ज्ञानी तथा धुन्धुकारी महान् दुष्ट था।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

स्नानशौचक्रियाहीनो दुर्भक्षी क्रोधवर्धितः ।
दुष्परिग्रहकर्ता च शवहस्तेन भोजनम् ॥६७॥

पदच्छेद—

स्नान शौच क्रिया हीनः, दुर्भक्षी क्रोध वर्धितः ।
दुष्परिग्रह कर्ता च, शव हस्तेन भोजनम् ॥

शब्दार्थ—

स्नान	१. (धुन्धुकारी) नहान और	दुष्परिग्रह	७. बुरी वस्तुओं का संग्रह
शौच, क्रिया	२. शुद्धि के, आचार से	कर्ता	८. करने वाला
हीनः	३. रहित	च	९. और
दुर्भक्षी	४. अभक्ष्य खाने वाला	शव	१०. अशुद्ध
क्रोध	६. क्रोधी	हस्तेन	११. हाथ से
वर्धितः ।	५. बहुत	भोजनम् ॥	१२. खाने वाला (था)

श्लोकार्थ—धुन्धुकारी नहान और शुद्धि के अचार से रहित, अभक्ष्य खाने वाला, बहुत क्रोधी, बुरी वस्तुओं का संग्रह करने वाला और अशुद्ध हाथ से खाने वाला था।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

चौरः सर्वजनद्वेषी परवेश्मप्रदीपकः ।
लालनायार्भकान् धृत्वा सद्यः कूपे न्यपातयत् ॥६८॥

पदच्छेद—

चौरः सर्वं जन द्वेषी, पर वेश्म प्रदीपकः ।
लालनाय अर्भकान् धृत्वा, सद्यः कूपे न्यपातयत् ॥

शब्दार्थ—

चौरः	१. (वह) चोर	अर्भकान्	७. बच्चों को
सर्वं, जन	२. सभी, लोगों से	धृत्वा	८. पकड़कर
द्वेषी	३. वैर-भाव करने वाला	सद्यः	९. तत्काल
परवेश्म	४. दूसरों के घर	कूपे	१०. कुएँ में
प्रदीपकः ।	५. चोरी करने वाला (तथा)	न्यपातयत् ॥	११. धकेल देता था
लालनाय	६. खेल के बहाने		

श्लोकार्थ—वह चोर, सभी लोगों से वैर-भाव करने वाला, दूसरों के घर चोरी करने वाला तथा खेल के बहाने बच्चों को पकड़ कर तत्काल कूएँ में धकेल देता था।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

हिंसकः शस्त्रधारी च दीनान्धानां प्रपीडकः ।
चाण्डालाभिरतो नित्यं पाशहस्तः श्वसंगतः ॥६९॥

पदच्छेद—

हिंसकः शस्त्रधारी च, दीन अन्धानाम् प्रपीडकः ।
चाण्डाल अभिरतः नित्यम्, पाश हस्तः श्वन् संगतः ॥

शब्दार्थ—

हिंसकः	१. हिंसा करने वाला	**चण्डाल**	७.	चाण्डालों से
शस्त्रधारी	२. हथियार रखने वाला	**अभिरतः**	८.	प्रेम करने वाला (वह धुन्धुकारी)
च	६. तथा	**नित्यम्**	९.	सदा
दीन	३. अनाथों और	**पाश, हस्तः**	१०.	फन्दा, हाथ में लिये हुये
अन्धानाम्	४. अन्धों को	**श्वन्**	११.	कुत्तों को
प्रपीडकः ।	५. दुःख देने वाला	**संगतः ॥**	१२.	साथ में रखता था

श्लोकार्थ—हिंसा करने वाला, हथियार रखने वाला, अनाथों और अन्धों को दुःख देने वाला तथा चाण्डलों से प्रेम करने वाला वह धुन्धुकारी सदा फन्दा हाथ में लिये हुए कुत्तों को साथ में रखता था ।

सप्ततितमः श्लोकः

तेन वेश्याकुसंगेन पित्र्यं वित्तं तु नाशितम् ।
एकदा पितरौ ताडय पात्राणि स्वयमाहरत् ॥७०॥

पदच्छेद—

तेन वेश्या कुसंगेन, पित्र्यम् वित्तम् तु नाशितम् ।
एकदा पितरौ ताड्य, पात्राणि स्वयम् आहरत् ॥

शब्दार्थ—

तेन	१. उसने	**एकदा**	७.	एक दिन
वेश्या, कुसंगेन	२. वेश्या की, कुसंगति से	**पितरौ**	८.	माता-पिता को
पित्र्यम्	३. पिता का	**ताडय**	९.	मार-पीट कर
वित्तम्	४. (सारा) धन	**पात्राणि**	१०.	बरतनों को
तु	६. तथा	**स्वयम्**	११.	खुद
नाशितम् ।	५. नष्ट कर दिया	**आहरत् ॥**	१२.	चुरा लिया

श्लोकार्थ—उसने वेश्या की कुसंगति से पिता का सारा धन नष्ट कर दिया तथा एकदिन माता-पिता को मार पीट कर बरतनों को खुद चुरा लिया ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

तत्पिता कृपणः प्रोच्चैर्धनहीनो रुरोद ह।
बन्ध्यत्वं तु समीचीनं कुपुत्रो दुःखदायकः ॥७१॥

पदच्छेद—

तत् पिता कृपणः प्रोच्चैः, धन हीनः रुरोद ह।
बन्ध्यत्वम् तु समीचीनम्, कुपुत्रः दुःख दायकः ॥

शब्दार्थ—

तत्, पिता	१.	उसके, पिता (आत्मदेव)	बन्ध्यत्वम्	७.	बाँझ रहना ही
कृपणः	३.	व्याकुल होकर	तु	९.	क्योंकि
प्रोच्चैः	४.	जोर से	समीचीनम्	८.	अच्छा (है)
धन, हीनः	२.	संपत्ति से, रहित और	कुपुत्रः	१०.	कुपुत्र
रुरोद	५	रोने लगे	दुःख	११.	कष्ट
ह।	६.	और कहने लगे कि	दायकः ॥	१२.	देने वाला (होता है)

श्लोकार्थ—उसके पिता आत्मदेव संपत्ति से रहित और व्याकुल होकर जोर से रोने लगे और कहने लगे कि बाँझ रहना ही अच्छा है; क्योंकि कुपुत्र कष्ट देने वाला होता है।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

क्व तिष्ठामि क्व गच्छामि को मे दुःखं व्यपोहयेत्।
प्राणांस्त्यजामि दुःखेन हा कष्टं मम संस्थितम् ॥७२॥

पदच्छेद—

क्व तिष्ठामि क्व गच्छामि, कः मे दुःखम् व्यपोहयेत्।
प्राणान् त्यजामि दुःखेन, हा कष्टम् मम संस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

क्व	१.	कहाँ	प्राणान्	१०.	प्राणों को
तिष्ठामि	२.	रहूँ	त्यजामि	११.	छोड़ रहा हूँ
क्व	३.	कहाँ	दुःखेन	९.	(मैं) दुःख से
गच्छामि	४.	जाऊँ	हा	१२.	हाय !
कः	५.	कौन	कष्टम्	१४.	कष्ट
मे	६.	मेरे	मम	१३.	मुझे
दुःखम्	७.	कष्ट को	संस्थितम् ॥	१५.	हो गया है
व्यपोहयेत्।	८.	दूर करेगा			

श्लोकार्थ—कहाँ रहूँ ? कहाँ जाऊँ ? कौन मेरे कष्ट को दूर करेगा ? मैं दुःख से प्राणों को छोड़ रहा हूँ। हाय ! मुझे कष्ट हो गया है।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

तदानीं तु समागत्य गोकर्णो ज्ञानसंयुतः ।
बोधयामास जनकं वैराग्यं परिदर्शयन् ॥७३॥

पदच्छेद—

तदानीम् तु समागत्य, गोकर्णः ज्ञान संयुतः ।
बोधयामास जनकम्, वैराग्यम् परिदर्शयन् ॥

शब्दार्थ—

तदानीम्	२.	उस समय	संयुतः ।	४.	सम्पन्न
तु	१.	तदनन्तर	बोधयामास	१०.	समझाने लगे
समागत्य	६.	आकर	जनकम्	७.	पिता को
गोकर्णः	५.	गोकर्ण जी	वैराग्यम्	८.	संन्यास का मार्ग
ज्ञान	३.	ज्ञान से	परिदर्शयन् ॥	९.	दिखाते हुए

श्लोकार्थ—तदनन्तर उस समय ज्ञान से संपन्न गोकर्ण जी आकर पिता को संन्यास का मार्ग दिखाते हुए समझाने लगे ।

चतुस्सप्ततितमः श्लोकः

असारः खलु संसारो दुःखरूपी विमोहकः ।
सुतः कस्य धनं कस्य स्नेहवाञ्ज्वलतेऽनिशम् ॥७४॥

पदच्छेद—

असारः खलु संसारः, दुःख रूपी विमोहकः ।
सुतः कस्य धनम् कस्य, स्नेहवान् ज्वलते अनिशम् ॥

शब्दार्थ—

असारः	३.	तुच्छ	कस्य	६.	(यहाँ) किसका
खलु	१.	निश्चय ही	धनम्	९.	धन (है)
संसारः	२.	(यह) संसार	कस्य	८.	किसका
दुःखरूपी	४.	दुःख की मूर्त्ति (और)	स्नेहवान्	१०.	(इसमें) ममता रखने वाला
विमोहकः ।	५.	भ्रम में डालने वाला (है)	ज्वलते	१२.	जलता रहता है
सुतः	७.	पुत्र (और)	अनिशम् ॥	११.	निरन्तर

श्लोकार्थ—निश्चय ही यह संसार तुच्छ, दुःख की मूर्त्ति और भ्रम में डालने वाला है । यहाँ किसका पुत्र और किसका धन है ? इसमें ममता रखनेवाला निरन्तर जलता रहता है ।

पञ्चसप्ततितमः श्लोकः

न चेन्द्रस्य सुखं किंचिन्न सुखं चक्रवर्त्तिनः ।
सुखमस्ति विरक्तस्य मुनेरेकान्तजीविनः ॥७५॥

पदच्छेद—

न च इन्द्रस्य सुखम् किंचित्, न सुखम् चक्रवर्त्तिनः ।
सुखम् अस्ति विरक्तस्य, मुनेः एकान्त जीविनः ॥

शब्दार्थ—

न	१. (यहाँ) न	चक्रवर्त्तिनः ।	६. चक्रवर्त्ती सम्राट् को
च	४. और	सुखम्	१३. सुख
इन्द्रस्य	२. इन्द्र को	अस्ति	१४. है
सुखम्	३. सुख (है)	विरक्तस्य	११. वैरागी
किंचित्	७. कोई	मुनेः	१२. महात्मा को (ही)
न	५. न	एकान्त	९. एकान्त में
सुखम्	८. सुख (है किन्तु)	जीविनः ॥	१०. रहने वाले

श्लोकार्थ—यहाँ न इन्द्र को सुख है और न चक्रवर्त्ती सम्राट् को कोई सुख है; किन्तु एकान्त में रहने वाले वैरागी महात्मा को ही सुख है ।

षट्सप्ततितमः श्लोकः

मुञ्चाज्ञानं प्रजारूपं मोहतो नरके गतिः ।
निपतिष्यति देहोऽयं सर्वं त्यक्त्वा वनं व्रज ॥७६॥

पदच्छेद—

मुञ्च अज्ञानम् प्रजारूपम्, मोहतः नरके गतिः ।
निपतिष्यति देहः अयम्, सर्वम् त्यक्त्वा वनम् व्रज ॥

शब्दार्थ—

मुञ्च	३. छोड़ दो	निपतिष्यति	९. नष्ट हो जायेगा (अतः)
अज्ञानम्	२. मोह को	देहः	८. शरीर
प्रजारूपम्	१. संतान के	अयम्	७. यह
मोहतः	४. मोह से	सर्वम्	१०. सबको
नरके	५. नरक की	त्यक्त्वा	११. त्याग कर
गतिः ।	६. प्राप्ति होती है	वनम्	१२. वन में
		व्रज ॥	१३. चले जावो

श्लोकार्थ—संतान के मोह को छोड़ दो । मोह से नरक की प्राप्ति होती है । यह शरीर नष्ट हो जायेगा । अतः सबको त्यागकर वन में चले जाओ ।

सप्तसप्ततितमः श्लोकः

तद्वाक्यं तु समाकर्ण्य गन्तुकामः पिताऽब्रवीत् ।
किं कर्तव्यं वने तात तत्त्वं वद सविस्तरम् ॥७७॥

पदच्छेद—

तद् वाक्यम् तु समाकर्ण्य, गन्तु कामः पिता अब्रवीत् ।
किम् कर्तव्यम् वने तात, तद् त्वम् वद सविस्तरम् ॥

शब्दार्थ—

तद्, वाक्यम्	१. गोकर्ण की, बात	कर्तव्यम्	१०. करना चाहिये
तु	३. तदनन्तर	वने	८. बन में
समाकर्ण्य	२. सुनकर	तात	७. हे पुत्र ! (मुझे)
गन्तुकामः	४. जाने की इच्छा से	तद्, त्वम्	११. उसे, तुम
पिता	५. पिता (आत्मदेव) ने	वद	१३. बताओ
अब्रवीत् ।	६. कहा	सविस्तरम् ॥	१२. विस्तार-पूर्वक
किम्	९. क्या		

श्लोकार्थ—गोकर्ण की बात सुनकर तदनन्तर जाने की इच्छा से पिता आत्मदेव ने कहा—हे पुत्र ! मुझे वन में क्या करना चाहिये, उसे तुम विस्तार-पूर्वक बताओ ।

अष्टसप्ततितमः श्लोकः

अन्धकूपे स्नेहपाशे बद्धः पङ्गुरहं शठः ।
कर्मणा पतितो नूनं मामुद्धर दयानिधे ॥७८॥

पदच्छेद—

अन्ध कूपे स्नेह पाशे, बद्धः पङ्गुः अहम् शठः ।
कर्मणा पतितः नूनम्, माम् उद्धर दयानिधे ॥

शब्दार्थ—

अन्ध, कूपे	७. बहुत गहरे, कूएँ में	कर्मणा	६. कुकर्मों के कारण
स्नेह, पाशे	१. मोह के, बन्धन से	पतितः	८. पड़ा हुआ हूँ
बद्धः	२. बँधा हुआ	नूनम्	११. अवश्य
पङ्गुः	३. लँगड़ा (एवं)	माम्	१०. मेरा
अहम्	५. मैं	उद्धर	१२. उद्धार करो
शठः ।	४. दुष्ट	दयानिधे ॥	९. हे करुणा के सागर !

श्लोकार्थ—मोह के बन्धन से बँधा हुआ, लँगड़ा एवं दुष्ट मैं कुकर्मों के कारण बहुत गहरे कूएँ में पड़ा हुआ हूँ । हे करुणा के सागर ! मेरा अवश्य उद्धार करो ।

एकोनाशीतितमः श्लोकः

गोकर्ण उवाच—

देहेऽस्थिमांसरुधिरेऽभिमतिं त्यज त्वं,
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च ।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभङ्गनिष्ठं,
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः ॥७९॥

पदच्छेद—

देहे अस्थि मांस रुधिरे अभिमतिम् त्यज त्वम्,
जाया सुत आदिषु सदा ममताम् विमुञ्च ।
पश्य अनिशम् जगत् इदम् क्षण भङ्ग निष्ठम्,
वैराग्य राग रसिकः भव भक्ति निष्ठः ॥

शब्दार्थ—

देहे	५.	शरीर के विषय में	पश्य	२०.	देखो (तथा)
अस्थि	२.	हड्डी,	अनिशम्	१६.	निरन्तर
मांस	३.	मांस और	जगत्	१५.	संसार को
रुधिरे	४.	रक्त से बने	इदम्	१४.	इस
अभिमतिम्	६.	अभिमान को	क्षण	१७.	प्रतिक्षण
त्यज	७.	छोड़ दो	भङ्ग	१८.	नाश में
त्वम्,	१.	तुम	निष्ठम्,	१९.	स्थित
जाया	८.	पत्नी	वैराग्य	२१.	संन्यास-
सुत	९.	पुत्र	राग	२२.	भाव के
आदिषु	१०.	इत्यादि के विषय में	रसिकः	२३.	प्रेमी होकर
सदा	११.	हमेशा के लिये	भव	२६.	हो जावो
ममताम्	१२.	ममता-भाव	भक्ति	२४.	भगवद् भक्ति में
विमुञ्च ।	१३.	मिटा दो	निष्ठः ॥	२५.	लीन

श्लोकार्थ—तुम हड्डी, मांस और रक्त से बने शरीर के विषय में अभिमान को छोड़ दो; पत्नी, पुत्र इत्यादि के विषय में हमेशा के लिए ममता-भाव मिटा दो; इस संसार को निरन्तर प्रतिक्षण नाश में स्थित देखो तथा संन्यास-भाव के प्रेमी होकर भगवद्-भक्ति में लीन हो जावो ।

अशीतितमः श्लोकः

धर्मं भजस्व सततं त्यज लोकधर्मान्,
सेवस्व साधुपुरुषान्जहि कामतृष्णाम्।
अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा,
सेवाकथारसमहो नितरां पिब त्वम् ॥८०॥

पदच्छेद—

धर्मम् भजस्व सततम् त्यज लोक धर्मान्,
सेवस्व साधु पुरुषान् जहि काम तृष्णाम्।
अन्यस्य दोष गुण चिन्तनम् आशु मुक्त्वा,
सेवा कथा रसम् अहो नितराम् पिब त्वम् ॥

शब्दार्थ—

धर्मम्	२.	धर्म का	अन्यस्य	१४.	दूसरे की
भजस्व	४.	आचरण करो	दोष गुण	१५.	बुराई और अच्छाई की
सततम्	३.	निरन्तर	चिन्तनम्	१६.	चिन्ता को
त्यज	७.	त्याग कर दो	आशु	१७.	तत्काल
लोक	५.	संसार के	मुक्त्वा,	१८.	छोड़कर
धर्मान्,	६.	प्रपंचों का	सेवा	१९.	सेवा और
सेवस्व	१०.	सेवा करो	कथा	२०.	कथा के
साधु	८.	सन्त	रसम्	२१.	रस का
पुरुषान्	९.	जनों की	अहो	२२.	आनंन्द से
जहि	१३.	छोड़ दो (तथा)	नितराम्	२३.	खूब
काम	११.	वासना और	पिब	२४.	पान करो
तृष्णाम्।	१२.	तृष्णा को	त्वम् ॥	१.	तुम

श्लोकार्थ—तुम धर्म का निरन्तर आचरण करो; संसार के प्रपंचों का त्याग कर दो; सन्त-जनों की सेवा करो; वासना और तृष्णा को छोड़ दो तथा दूसरे की बुराई और अच्छाई की चिन्ता को तत्काल छोड़कर सेवा और कथा के रस का आनन्द से खूब पान करो।

एकाशीतितमः श्लोकः

एवं सुतोक्तिवशतोऽपि गृहं विहाय,
यातो वनं स्थिरमतिर्गतषष्टिवर्षः ।
युक्तो हरेरनुदिनं परिचर्ययासौ,
श्रीकृष्णमाप नियतं दशमस्य पाठात् ॥८१॥

पदच्छेद—

एवम् सुत उक्ति वशतः अपि गृहम् विहाय,
यातः वनम् स्थिर मतिः गत षष्टि वर्षः ।
युक्तः हरेः अनुदिनम् परिचर्यया असौ,
श्रीकृष्णम् आप नियतम् दशमस्य पाठात् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	(विप्र आत्मदेव) इस प्रकार	षष्टि	७.	साठ
सुत	२.	पुत्र (गोकर्ण) के	वर्षः ।	८.	वर्ष (की आयु)
उक्ति	३.	कहने के	युक्तः	१८.	लगकर
वशतः	४.	अनुसार	हरेः	१६.	भगवान् की
अपि	१०.	भी	अनुदिनम्	१५.	प्रतिदिन
गृहम्	११.	घर	परिचर्यया	१७.	सेवा में
विहाय,	१२.	छोड़कर	असौ,	१९.	उन्होंने
यातः	१४.	चले गये (तथा वहाँ)	श्रीकृष्णम्	२३.	भगवान् श्रीकृष्ण को
वनम्	१३.	वन में	आप	२४.	प्राप्त कर लिया
स्थिर	५.	पक्का	नियतम्	२१.	नियमपूर्वक
मतिः	६.	निर्णय करके	दशमस्य	२०.	(श्रीमद्भागवत के) दशमस्कन्ध का
गत	९.	बीत जाने पर	पठात् ॥	२२.	पाठ करने से

श्लोकार्थ—विप्र आत्मदेव इस प्रकार पुत्र गोकर्ण के कहने के अनुसार पक्का निर्णय करके साठ वर्ष की आयु बीत जाने पर भी घर छोड़कर वन में चले गये। तथा वहाँ प्रतिदिन भगवान् की सेवा में लगकर उन्होंने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का नियम-पूर्वक पाठ करने से भगवान् श्रीकृष्ण को प्राप्त कर लिया।

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमहात्म्ये विप्रमोक्षो नाम चतुर्थः अध्यायः ॥४॥

अथ पञ्चमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—

पितर्युपरते तेन जननी ताडिता भृशम् ।
क्व वित्तं तिष्ठति ब्रूहि हनिष्ये लत्तया न चेत् ॥१॥

पदच्छेद—

पितरि उपरते तेन, जननी ताडिता भृशम् ।
क्व वित्तम् तिष्ठति ब्रूहि, हनिष्ये लत्तया न चेत् ॥

शब्दार्थ—

पितरि	१. पिता (आत्मदेव) के	वित्तम्	८.	धन
उपरते	२. मर जाने पर	तिष्ठति	१०.	रखा है
तेन	३. उस (धुन्धुकारी) ने	ब्रूहि	७.	बताओ
जननी	४. माता को	हनिष्ये	१४.	मारूँगा
ताडिता	६. पीटा (और कहा)	लत्तया	१३.	लातों से
भृशम् ।	५. खूब	न	११.	नहीं
क्व	९. कहाँ	चेत् ॥	१२.	तो (मैं)

श्लोकार्थ—पिता आत्मदेव के मर जाने पर उस धुन्धुकारी ने माता को खूब पीटा और कहा—बताओ, धन कहाँ रखा है ? नहीं तो मैं लातों से मारूँगा ।

द्वितीयः श्लोकः

इति तद्वाक्यसंत्रासाज्जनन्या पुत्रदुःखतः ।
कूपे पातः कृतो रात्रौ तेन सा निधनं गता ॥२॥

पदच्छेद—

इति तद् वाक्य संत्रासात् , जनन्या पुत्र दुःखतः ।
कूपे पातः कृतः रात्रौ, तेन सा निधनम् गता ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	पातः, कृतः	८.	कूद, पड़ी (और)
तद्, वाक्य	२. उसकी, बातों से	रात्रौ	६.	रात को
संत्रासात्	३. डरकर	तेन	९.	उससे
जनन्या	४. माता (धुन्धुली)	सा	१०.	वह
पुत्र, दुःखतः।	५. पुत्र (धुन्धुकारी) के, दुःख से	निधनम्	११.	मृत्यु को
कूपे	७. कूएँ में	गता ॥	१२.	प्राप्त हो गयी

श्लोकार्थ—इस प्रकार उसकी बातों से डरकर माता धुन्धुली पुत्र धुन्धुकारी के दुःख से रात को कूएँ में कूद पड़ी और उससे वह मृत्यु को प्राप्त हो गयी ।

तृतीयः श्लोकः

गोकर्णस्तीर्थयात्रार्थं निर्गतो योगसंस्थितः।
न दुःखं न सुखं तस्य न वैरी नापि बान्धवः ॥३॥

पदच्छेद—

गोकर्णः तीर्थ यात्रा अर्थम्, निर्गतः योग संस्थितः।
न दुःखम् न सुखम् तस्य, न वैरी न अपि बान्धवः ॥

शब्दार्थ—

गोकर्णः	३. गोकर्ण		न	९. न
तीर्थ यात्रा	४. तीर्थ यात्रा के		सुखम्	१०. सुख (तथा)
अर्थम्	५. निमित्त		तस्य	११. उनका
निर्गतः	६. निकल पड़े (उन्हें)		न	१२. न (कोई)
योग	१. योग में		वैरी	१३. शत्रु (था)
संस्थितः।	२. स्थित रहने वाले		न	१५. न (कोई)
न	७. न (कोई)		अपि	१४. और
दुःखम्	८. दुःख (था और)		बान्धवः॥	१६. मित्र (था)

श्लोकार्थ—योग में स्थित रहने वाले गोकर्ण तीर्थयात्रा के निमित्त निकल पड़े। उन्हें न कोई दुःख था और न सुख तथा उनका न कोई शत्रु था और न कोई मित्र था।

चतुर्थः श्लोकः

धुन्धुकारी गृहेऽतिष्ठत् पञ्चपण्यवधूवृतः।
अत्युग्रकर्मकर्ता च तत्पोषणविमूढधीः ॥४॥

पदच्छेद—

धुन्धुकारी गृहे अतिष्ठत्, पञ्च पण्यवधू वृतः।
अति उग्र कर्म कर्ता च, तद् पोषण विमूढ धीः ॥

शब्दार्थ—

धुन्धुकारी	१. धुन्धुकारी		अति, उग्र	११. अत्यन्त, क्रूर
गृहे	५. घर में		कर्म, कर्ता	१२. कर्म, करता (था)
अतिष्ठत्	६. रहने लगा		च	७. तथा
पञ्च	२. पाँच		तद्	८. उन (वेश्याओं) के
पण्यवधू	३. वेश्याओं के		पोषण	९. पालन-पोषण में
वृतः।	४. साथ		विमूढ, धीः॥	१०. मोहित, चित्त (वह)

श्लोकार्थ—धुन्धुकारी पाँच वेश्याओं के साथ घर में रहने लगा तथा उन वेश्याओं के पालन-पोषण में मोहित-चित्त वह अत्यन्त क्रूर कर्म करता था।

पञ्चमः श्लोकः

एकदा कुलटास्तास्तु भूषणान्यभिलिप्सवः ।
तदर्थं निर्गतो गेहात्कामान्धो मृत्युमस्मरन् ॥५॥

पदच्छेद—

एकदा कुलटाः ताः तु, भूषणानि अभिलिप्सवः ।
तदर्थम् निर्गतः गेहात्, काम अन्धः मृत्युम् अस्मरन् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एकबार	तदर्थम्	१०.	उसके लिए
कुलटाः	३.	वेश्याओं ने	निर्गतः	१२.	निकल पड़ा
ताः	२.	उन	गेहात्	११.	घर से
तु	६.	तदुपरान्त	काम, अन्धः	७.	काम-वासना से, अन्धा (और)
भूषणानि	४.	आभूषणों की	मृत्युम्	८.	मृत्यु को
अभिलिप्सवः ।	५.	इच्छा की	अस्मरन् ॥	६.	भूला हुआ (वह)

श्लोकार्थ—एकबार उन वेश्याओं ने आभूषणों की इच्छा की । तदुपरान्त काम-वासना से अन्धा और मृत्यु को भूला हुआ वह उसके लिए घर से निकल पड़ा ।

षष्ठः श्लोकः

यतस्ततश्च संहृत्य वित्तं वेश्म पुनर्गतः ।
ताभ्योऽयच्छत् सुवस्त्राणि भूषणानि कियन्ति च ॥६॥

पदच्छेद—

यतः ततः च संहृत्य, वित्तम् वेश्म पुनः गतः ।
ताभ्यः अयच्छत् सुवस्त्राणि, भूषणानि कियन्ति च ॥

शब्दार्थ—

यतः	१.	इधर	गतः ।	७.	आ गया
ततः	२.	उधर से	ताभ्यः	९.	उन (वेश्याओं) को
च	११.	और	अयच्छत्	१४.	दिया
संहृत्य	४.	चुराकर (वह)	सुवस्त्राणि	१०.	सुन्दर वस्त्र
वित्तम्	३.	धन	भूषणानि	१३.	आभूषण
वेश्म	६.	घर	कियन्ति	१२.	अनेकों
पुनः	५.	फिर से	च ॥	८.	तथा

श्लोकार्थ—इधर-उधर से धन चुराकर वह फिर से घर आ गया तथा उन वेश्याओं को सुन्दर वस्त्र और अनेकों आभूषण दिया ।

सप्तमः श्लोकः

बहुवित्तचयं दृष्ट्वा रात्रौ नार्यो व्यचारयन् ।
चौर्यं करोत्यसौ नित्यमतो राजा ग्रहीष्यति ॥७॥

पदच्छेद—

बहु वित्त चयम् दृष्ट्वा, रात्रौ नार्यः व्यचारयन् ।
चौर्यम् करोति असौ नित्यम् , अतः राजा ग्रहीष्यति ॥७॥

शब्दार्थ—

बहु	२. बहुत से	चौर्यम्	१०. चोरी
वित्त	३. धन का	करोति	११. करता है
चयम्	४. संग्रह	असौ	८. यह (धुन्धुकारी)
दृष्ट्वा	५. देखकर	नित्यम्	९. प्रतिदिन
रात्रौ	६. रात्रि में	अतः	१२. इसलिये
नार्यः	१. वेश्याओं ने	राजा	१३. राजा (इसे)
व्यचारयन् ।	७. विचार किया	ग्रहीष्यति ॥	१४. पकड़ लेगा

श्लोकार्थ—वेश्याओं ने बहुत से धन का संग्रह देखकर रात्रि में विचार किया; यह धुन्धुकारी प्रतिदिन चोरी करता है, इसलिए राजा इसे पकड़ लेगा ।

अष्टमः श्लोकः

वित्तं हृत्वा पुनश्चैनं मारयिष्यति निश्चितम् ।
अतोऽर्थगुप्तये गूढमस्माभिः किं न हन्यते ॥८॥

पदच्छेद—

वित्तम् हृत्वा पुनः च एनम्, मारयिष्यति निश्चितम् ।
अतः अर्थ गुप्तये गूढम्, अस्माभिः किम् न हन्यते ॥

शब्दार्थ—

वित्तम्	२. धन	अतः	८. इसलिए
हृत्वा	३. छीनकर	अर्थ, गुप्तये	९. धन की, रक्षा के लिये
पुनः	४. फिर	गूढम्	१३. गुप्त रूप से
च	१. तदनन्तर (राजा)	अस्माभिः	१२. हमीं (इसे)
एनम्	५. इसे	किम्	१०. क्यों
मारयिष्यति	७. मार देगा	न	११. न
निश्चितम् ।	६. निश्चय ही	हन्यते ॥	१४. मार दें

श्लोकार्थ—तदनन्तर राजा धन छीनकर फिर इसे निश्चय ही मार देगा । इसलिये धन की रक्षा के लिए क्यों न हमीं इसे गुप्त रूप से मार दें ।

नवमः श्लोकः

निहत्यैनं गृहीत्वार्थं यास्यामो यत्र कुत्रचित् ।
इति ता निश्चयं कृत्वा सुप्तं सम्बद्ध्य रश्मिभिः ॥९॥

पदच्छेद—

निहत्य एनम् गृहीत्वा अर्थम् , यास्यामः यत्र कुत्रचित् ।
इति ताः निश्चयम् कृत्वा, सुप्तम् सम्बद्ध्य रश्मिभिः ॥

शब्दार्थ—

निहत्य	२.	मारकर (तथा)	इति	८.	ऐसा
एनम्	१.	इसे	ताः	११.	उन (वेश्याओं) ने
गृहीत्वा	४.	लेकर (हमलोग)	निश्चयम्	९.	निर्णय
अर्थम्	३.	धन	कृत्वा	१०.	करके
यास्यामः	७.	चली चलेंगी	सुप्तम्	१२.	सोते हुए (धुन्धुकारी) को
यत्र	५.	जहाँ	सम्बद्ध्य	१४.	बाँध दिया
कुत्रचित् ।	६.	कहीं भी	रश्मिभिः ॥	१३.	रस्सियों से

श्लोकार्थ—इसे मारकर तथा धन लेकर हमलोग जहाँ-कहीं भी चली चलेंगी—ऐसा निर्णय करके उन वेश्याओं ने सोते हुए धुन्धुकारी को रस्सियों से बाँध दिया ।

दशमः श्लोकः

पाशं कण्ठे निधायास्य तन्मृत्युमुपचक्रमुः ।
त्वरितं न ममारासौ चिन्तायुक्तास्तदाभवन् ॥१०॥

पदच्छेद—

पाशम् कण्ठे निधाय अस्य, तद् मृत्युम् उपचक्रमुः ।
त्वरितम् न ममार असौ, चिन्ता युक्ताः तदा अभवन् ॥

शब्दार्थ—

पाशम्	३.	फन्दा	न	९.	नहीं
कण्ठे	२.	गले में	ममार	१०.	मरा
निधाय	४.	डालकर	असौ	७.	(किन्तु) वह
अस्य	१.	(वेश्यायें) उसके	चिन्ता	१२.	चिन्ता से
तद्, मृत्युम्	५.	उसे, मारने का	युक्ताः	१३.	व्याकुल
उपचक्रमुः ।	६.	प्रयत्न करने लगीं	तदा	११.	तब (वे सब)
त्वरितम्	८.	शीघ्र	अभवन् ॥	१४.	हो गयीं

श्लोकार्थ—वेश्याएँ उसके गले में फन्दा डालकर उसे मारने का प्रयत्न करने लगीं । किन्तु वह शीघ्र नहीं मरा । तब वे सब चिन्ता से व्याकुल हो गयीं ।

एकादशः श्लोकः

तप्ताङ्गारसमूहाँश्च तन्मुखे हि विचिक्षिपुः।
अग्निज्वालातिदुःखेन व्याकुलो निधनं गतः ॥११॥

पदच्छेद—

तप्त अङ्गार समूहान् च, तद् मुखे हि विचिक्षिपुः।
अग्नि ज्वाला अतिदुःखेन, व्याकुलः निधनम् गतः॥

शब्दार्थ—

तप्त	१.	(उन वेश्याओं ने) जलते हुए	अग्नि	८.	आग की
अङ्गार	२.	कोयलों के	ज्वाला	९.	लपट की
समूहान्	३.	ढेर को	अति	१०.	भयंकर
च	७.	इस प्रकार	दुःखेन	११.	पीड़ा से
तद्, मुखे	४.	उसके, मुख पर	व्याकुलः	१२.	घबराकर (वह)
हि	५.	ही	निधनम्	१३.	मृत्यु को
विचिक्षिपुः।	६.	बिखेर दिया	गतः॥	१४.	प्राप्त हो गया

श्लोकार्थ—उन वेश्याओं ने जलते हुए कोयलों के ढेर को उसके मुख पर ही बिखेर दिया। इस प्रकार आग की लपट की भयंकर पीड़ा से घबराकर वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

द्वादशः श्लोकः

तं देहं मुमुचुर्गर्ते प्रायः साहसिकाः स्त्रियः।
न ज्ञातं तद्रहस्यं तु केनापीदं तथैव च ॥१२॥

पदच्छेद—

तम् देहम् मुमुचुः गर्ते, प्रायः साहसिकाः स्त्रियः।
न ज्ञातम् तद् रहस्यम् तु, केन अपि इदम् तथैव च॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	(उन वेश्याओं से) उसके	ज्ञातम्	१६.	जाना
देहम्	२.	शव को	तद्	९.	उनके
मुमुचुः	४.	फेंक दिया	रहस्यम्	११.	गुप्त काम को
गर्ते	३.	गड्ढे में	तु	८.	तथा
प्रायः	६.	अधिकतर	केन	१३.	किसी ने
साहसिकाः	७.	साहसी (होती हैं)	अपि	१४.	भी
स्त्रियः।	५.	स्त्रियाँ	इदम्	१०.	इस
न	१५.	नहीं	तथैव च॥	१२.	उसी रूप में

श्लोकार्थ—उन वेश्याओं ने उसके शव को गड्ढे में फेंक दिया। स्त्रियाँ अधिकतर साहसी होती हैं। तथा उनके इस गुप्त काम को उसी रूप में किसी ने भी नहीं जाना।

त्रयोदशः श्लोकः

लोकैः पृष्टा वदन्ति स्म दूरं यातः प्रियो हि नः ।
आगमिष्यति वर्षेऽस्मिन् वित्तलोभविकर्षितः ॥१३॥

पदच्छेद—

लोकैः पृष्टाः वदन्ति स्म, दूरम् यातः प्रियः हि नः ।
आगमिष्यति वर्षे अस्मिन्, वित्त लोभ विकर्षितः ॥

शब्दार्थ—

लोकैः	१.	लोगों के	नः ।	५.	हमारे
पृष्टाः	२.	पूछने पर (वे)	आगमिष्यति	१४.	आवेंगे
वदन्ति स्म	३.	कहती थीं	वर्षे	१३.	वर्ष के अन्दर ही
दूरम्	१०.	दूर	अस्मिन्	१२.	इस
यातः	११.	चले गये हैं	वित्त	७.	धन के
प्रियः	६.	प्रेमी	लोभ	८.	लोभ से
हि	४.	कि	विकर्षितः ॥	९.	खिंच कर

श्लोकार्थ—लोगों के पूछने पर वे कहती थीं कि हमारे प्रेमी धन के लोभ से खिंचकर दूर चले गये हैं। इस वर्ष के अन्दर ही आवेंगे।

चतुर्दशः श्लोकः

स्त्रीणां नैव तु विश्वासं दुष्टानां कारयेद् बुधः ।
विश्वासे यः स्थितो मूढः स दुःखैः परिभूयते ॥१४॥

पदच्छेद—

स्त्रीणाम् न एव तु विश्वासम्, दुष्टानाम् कारयेत् बुधः ।
विश्वासे यः स्थितः मूढः, सः दुःखैः परिभूयते ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीणाम्	३.	स्त्रियों का	विश्वासे	११.	विश्वास में
न	७.	नहीं	यः	९.	जो
एव	६.	ही	स्थितः	१२.	रहता है
तु	४.	तो	मूढः	१०.	मूर्ख (इनके)
विश्वासम्	५.	विश्वास	सः	१३.	वह
दुष्टानाम्	२.	दुष्टा	दुःखैः	१४.	कष्टों से
कारयेत्	८.	करना चाहिये	परिभूयते ॥	१५.	पीड़ित होता है
बुधः ।	१.	बुद्धिमान् जनों को			

श्लोकार्थ—बुद्धिमान् जनों को दुष्टा स्त्रियों का तो विश्वास ही नहीं करना चाहिये। जो मूर्ख इनके विश्वास में रहता है, वह कष्टों से पीड़ित होता है।

पञ्चदशः श्लोकः

सुधामयं वचो यासां कामिनां रसवर्धनम् ।
हृदयं क्षुरधाराभं प्रियः को नाम योषिताम् ॥१५॥

पदच्छेद—

सुधामयम् वचः यासाम् , कामिनाम् रस वर्धनम् ।
हृदयम् क्षुर धार आभम्, प्रियः कः नाम योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

सुधामयम्	३.	अमृत के समान	हृदयम्	७.	(तथा) मन
वचः	२.	वाणी	क्षुर, धारा	८.	छुरे की, धार के
यासाम्	१.	जिनकी	आभम्	९.	समान (तेज है)
कामिनाम्	४.	कामुक जनों के	प्रियः	१२.	प्यारा (हो सकता है)
रस	५.	आनन्द को	कः, नाम	११.	कौन, व्यक्ति
वर्धनम् ।	६.	बढ़ाने वाली (है)	योषिताम् ॥	१०.	(ऐसी) स्त्रियों को

श्लोकार्थ—जिनकी वाणी अमृत के समान कामुक जनों के आनन्द को बढ़ाने वाली है तथा मन छुरे की धार के समान तेज है। ऐसी स्त्रियों को कौन व्यक्ति प्यारा हो सकता है ?

षोडशः श्लोकः

संहृत्य वित्तं ता याताः कुलटा बहुभर्तृकाः ।
धुन्धुकारी बभूवाथ महान् प्रेतः कुकर्मतः ॥१६॥

पदच्छेद—

संहृत्य वित्तम् ताः याताः, कुलटाः बहु भर्तृकाः ।
धुन्धुकारी बभूव अथ, महान् प्रेतः कुकर्मतः ॥

शब्दार्थ—

संहृत्य	६.	लेकर	धुन्धुकारी	९.	धुन्धुकारी (मरकर)
वित्तम्	५.	धन	बभूव	१३.	हो गया
ताः	३.	वे	अथ	८.	इधर
याताः	७.	चली गयीं	महान्	११.	बहुत बड़ा
कुलटाः	४.	वेश्यायें	प्रेतः	१२.	प्रेत
बहु	१.	बहुतेरे	कुकर्मतः ॥	१०.	(अपने) कुकर्मों से
भर्तृकाः ।	२.	पतियों को रखने वाली			

श्लोकार्थ—बहुतेरे पतियों को रखने वाली वे वेश्यायें धन लेकर चली गयीं। इधर धुन्धुकारी मरकर अपने कुकर्मों से बहुत बड़ा प्रेत हो गया।

सप्तदशः श्लोकः

वात्यारूपधरो नित्यं धावन् दशदिशोऽन्तरम् ।
शीतातपपरिक्लिष्टो निराहारः पिपासितः ॥१७॥

पदच्छेद—

वात्या रूप धरः नित्यम्, धावन् दश दिशः अन्तरम् ।
शीत आतप परिक्लिष्टः, निराहारः पिपासितः ॥

शब्दार्थ—

वात्या, रूप	१.	(वह धुन्धुकारी) बवण्डर का, रूप	शीत	३.	सर्दी
धरः	२.	धारण करके	आतप	४.	गर्मी से
नित्यम्	८.	सदा	परिक्लिष्टः	५.	व्याकुल
धावन्	११.	दौड़ता रहता था	निराहारः	६.	भूखा और
दश, दिशः	६.	दशों, दिशाओं के	पिपासितः ॥	७.	प्यासा
अन्तरम् ।	१०.	बीच			

श्लोकार्थ—वह धुन्धुकारी बवण्डर का रूप धारण करके सर्दी-गर्मी से व्याकुल, भूखा और प्यासा सदा दसों दिशाओं के बीच दौड़ता रहता था ।

अष्टादशः श्लोकः

न लेभे शरणं क्वापि हा दैवेति मुहुर्वदन् ।
कियत्कालेन गोकर्णो मृतं लोकादबुध्यत ॥१८॥

पदच्छेद—

न लेभे शरणम् क्व अपि, हा दैव इति मुहुः वदन् ।
कियत् कालेन गोकर्णः, मृतम् लोकात् अबुध्यत ॥

शब्दार्थ—

न	७.	नहीं	मुहुः	३.	बार-बार
लेभे	८.	पाता था	वदन् ।	४.	कहता हुआ (वह)
शरणम्	६.	शरण	कियत्, कालेन	९.	कुछ, समय के बाद
क्व, अपि	५.	कहीं, भी	गोकर्णः	१०.	गोकर्ण ने
हा दैव	१.	हा दैव !	मृतम्	१२.	मरा हुआ
इति	२.	ऐसा	लोकात्	११.	लोगों से (उसे)
			अबुध्यत ॥	१३.	सुना

श्लोकार्थ—हा दैव ! ऐसा बार-बार कहता हुआ वह कहीं भी शरण नहीं पाता था । कुछ समय के बाद गोकर्ण ने लोगों से उसे मरा हुआ सुना ।

एकोनविंशः श्लोकः

अनाथं तं विदित्वैव गयाश्राद्धमचीकरत् ।
यस्मिंस्तीर्थे तु संयाति तत्र श्राद्धमवर्तयत् ॥१९॥

पदच्छेद—

अनाथम् तम् विदित्वा एव, गया श्राद्धम् अचीकरत् ।
यस्मिन् तीर्थे तु संयाति, तत्र श्राद्धम् अवर्तयत् ॥

शब्दार्थ—

अनाथम्	२.	अनाथ	यस्मिन्	९.	जिस
तम्	१.	(गोकर्ण) उसे	तीर्थे	१०.	तीर्थ में
विदित्वा	३.	जानकर	तु	८.	तथा
एव	४.	ही	संयाति	११.	(वे) जाते थे
गया	५.	गया जी में	तत्र	१२.	वहाँ पर
श्राद्धम्	६.	श्राद्ध	श्राद्धम्	१३.	पिण्डदान
अचीकरत् ।	७.	सम्पन्न किये	अवर्तयत् ॥	१४.	करते थे

श्लोकार्थ—गोकर्ण उसे अनाथ जानकर ही गया जी में श्राद्ध सम्पन्न किये तथा जिस तीर्थ में वे जाते थे; वहाँ पर पिण्डदान करते थे ।

विंशः श्लोकः

एवं भ्रमन् स गोकर्णः स्वपुरं समुपेयिवान् ।
रात्रौ गृहाङ्गणे स्वप्तुमागतोऽलक्षितः परैः ॥२०॥

पदच्छेद—

एवम् भ्रमन् सः गोकर्णः, स्व पुरम् समुपेयिवान् ।
रात्रौ गृह अङ्गणे स्वप्तुम्, आगतः अलक्षितः परैः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	रात्रौ	७.	रात्रि में
भ्रमन्	२.	घूमते हुए	गृह, अङ्गणे	१०.	घर के, आँगन में
सः	३.	वे	स्वप्तुम्	११.	सोने के लिए
गोकर्णः	४.	गोकर्णजी	आगतः	१२.	पहुँचे
स्व, पुरम्	५.	अपने नगर में	अलक्षितः	९.	न देखे जाते हुए
समुपेयिवान् ।	६.	आये (और)	परैः ॥	८.	दूसरों से

श्लोकार्थ—इस प्रकार घूमते हुए वे गोकर्ण जी अपने नगर में आये और रात्रि में दूसरों से न देखे जाते हुए घर के आँगन में सोने के लिए पहुँचे ।

एकविंशः श्लोकः

तत्र सुप्तं स विज्ञाय धुन्धुकारी स्वबान्धवम् ।
निशीथे दर्शयामास महारौद्रतरं वपुः ॥२१॥

पदच्छेद—

तत्र सुप्तम् सः विज्ञाय, धुन्धुकारी स्व बान्धवम् ।
निशीथे दर्शयामास, महा रौद्रतरम् वपुः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	५.	वहाँ पर	बान्धवम् ।	४.	भाई (गोकर्ण) को
सुप्तम्	६.	सोया हुआ	निशीथे	८.	रात्रि में
सः	१.	वह	दर्शयामास	१२.	दिखलाया
विज्ञाय	७.	जानकर	महा	९.	बड़े
धुन्धुकारी	२.	धुन्धुकारी	रौद्रतरम्	१०.	भयानक
स्व	३.	अपने	वपुः ॥	११.	रूप को

श्लोकार्थ—वह धुन्धुकारी अपने भाई गोकर्ण को वहाँ पर सोया हुआ जानकर रात्रि में बड़े भयानक रूप को दिखलाया ।

द्वाविंशः श्लोकः

सकृन्मेषः सकृद्धस्ती सकृच्च महिषोऽभवत् ।
सकृदिन्द्रः सकृच्चाग्निः पुनश्च पुरुषोऽभवत् ॥२२॥

पदच्छेद—

सकृत् मेषः सकृत् हस्ती, सकृत् च महिषः अभवत् ।
सकृत् इन्द्रः सकृत् च अग्निः, पुनः च पुरुषः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

सकृत्	१.	(उसने) एकबार	इन्द्रः	११.	इन्द्र
मेषः	२.	भेड़ा	सकृत्	१२.	एकबार
सकृत्	३.	एकबार	च	९.	तथा (वह)
हस्ती	४.	हाथी	अग्निः	१३.	अग्नि
सकृत्	६.	एकबार	पुनः	१५.	फिर
च	५.	और	च	१४.	और
महिषः	७.	भैंसे का	पुरुषः	१६.	मनुष्य के रूप में
अभवत् ।	८.	रूप धारण किया	अभवत् ॥	१७.	हो गया
सकृत्	१०.	एकबार			

श्लोकार्थ—उसने एकबार भेड़ा, एकबार हाथी और एकबार भैंसे का रूप धारण किया तथा वह एकबार इन्द्र, एकबार अग्नि और फिर मनुष्य के रूप में हो गया ।

त्रयोविंशः श्लोकः

वैपरीत्यमिदं दृष्ट्वा गोकर्णो धैर्यसंयुतः ।
अयं दुर्गतिकः कोऽपि निश्चित्याथ तमब्रवीत् ॥२३॥

पदच्छेद— वैपरीत्यम् इदम् दृष्ट्वा, गोकर्णः धैर्य संयुतः ।
अयम् दुर्गतिकः कः अपि, निश्चित्य अथ तम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

वैपरीत्यम्	४.	बदलते रूप को	दुर्गतिकः	७.	दुर्गति को प्राप्त
इदम्	३.	इस	कः अपि	८.	कोई (जीव है)
दृष्ट्वा	५.	देखकर	निश्चित्य	१०.	निश्चय करके
गोकर्णः	२.	गोकर्ण ने	अथ	९.	ऐसा
धैर्य, संयुतः ।	१.	धीरता से, युक्त	तम्	११.	उसे
अयम्	६.	यह	अब्रवीत् ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—धीरता से युक्त गोकर्ण ने इस बदलते रूप को देखकर यह दुर्गति को प्राप्त कोई जीव है, ऐसा निश्चय करके उसे कहा ।

चतुर्विंशः श्लोकः

गोकर्ण उवाच—

कस्त्वमुग्रतरो रात्रौ कुतो यातो दशामिमाम् ।
किं वा प्रेतः पिशाचो वा राक्षसोऽसीति शंस नः ॥२४॥

पदच्छेद— कः त्वम् उग्रतरः रात्रौ, कुतः यातः दशाम् इमाम् ।
किम् वा प्रेतः पिशाचः वा, राक्षसः असि इति शंस नः ॥

शब्दार्थ—

कः	४.	कौन (हो)	वा	११.	अथवा
त्वम्	३.	तुम	प्रेतः	१०.	प्रेत
उग्रतरः	२.	बड़े भयानक	पिशाचः	१२.	पिशाच
रात्रौ	१.	रात में	वा	१३.	या
कुतः	५.	कैसे	राक्षसः	१४.	राक्षस
यातः	८.	प्राप्त हुये हो	असि	१५.	हो
दशाम्	७.	दशा को	इति	१६.	यह
इमाम् ।	६.	इस	शंस	१८.	बताओ
किम्	९.	क्या (तुम)	नः ॥	१७.	हमें

श्लोकार्थ—रात में बड़े भयानक तुम कौन हो ? कैसे इस दशा को प्राप्त हुये हो ? क्या तुम प्रेत अथवा पिशाच या राक्षस हो ? यह हमें बताओ ।

पञ्चविंशः श्लोकः

सूत उवाच—

एवं पृष्टस्तदा तेन रुरोदोच्चैः पुनः पुनः ।
अशक्तो वचनोच्चारे संज्ञामात्रं चकार ह ॥२५॥

पदच्छेद—

एवम् पृष्टः तदा तेन, रुरोद उच्चैः पुनः पुनः ।
अशक्तः वचन उच्चारे, संज्ञामात्रम् चकार ह ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	अशक्तः	१०.	असमर्थ होता हुआ
पृष्टः	३.	पूछने पर	वचन	८.	शब्द
तदा	४.	उस समय (धुन्धुकारी)	उच्चारे	९.	बोलने में
तेन	१.	गोकर्ण के द्वारा	संज्ञा	१२.	संकेत
रुरोद	७.	रोने लगा (तथा)	मात्रम्	११.	केवल
उच्चैः	६.	जोर से	चकार	१४.	किया
पुनः पुनः ।	५.	बार-बार	ह ॥	१३.	ही

श्लोकार्थ—गोकर्ण के द्वारा इस प्रकार पूछने पर उस समय धुन्धुकारी बार-बार जोर से रोने लगा तथा शब्द बोलने में असमर्थ होता हुआ केवल संकेत ही किया ।

षड्विंशः श्लोकः

ततोऽञ्जलौ जलं कृत्वा गोकर्णस्तमुदैरयत् ।
तत्सेकहतपापोऽसौ प्रवक्तुमुपचक्रमे ॥२६॥

पदच्छेद—

ततः अञ्जलौ जलम् कृत्वा, गोकर्णः तम् उदैरयत् ।
तद् सेक हत पापः असौ, प्रवक्तुम् उपचक्रमे ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	तद्	८.	उस
अञ्जलौ	३.	अंजली में	सेक	९.	सिंचन के कारण
जलम्	४.	जल को	हत	११.	नष्ट हो जाने से
कृत्वा	५.	अभिमंत्रित करके	पापः	१०.	पाप
गोकर्णः	२.	गोकर्ण जी ने	असौ	१२.	वह
तम्	६.	(उसे) धुन्धुकारी के ऊपर	प्रवक्तुम्	१३.	बोलने
उदैरयत् ।	७.	छिड़का	उपचक्रमे ॥	१४.	लगा

श्लोकार्थ—तदनन्तर गोकर्ण जी ने अंजली में जल को अभिमन्त्रित करके उसे धुन्धुकारी के ऊपर छिड़का । उस सिंचन के कारण पाप नष्ट हो जाने से वह बोलने लगा ।

सप्तविंशः श्लोकः

प्रेत उवाच— अहं भ्राता त्वदीयोऽस्मि धुन्धुकारीति नामतः।
स्वकीयेनैव दोषेण ब्रह्मत्वं नाशितं मया ॥२७॥

पदच्छेद—

अहम् भ्राता त्वदीयः अस्मि, धुन्धुकारी इति नामतः।
स्वकीयेन एव दोषेण, ब्रह्मत्वम् नाशितम् मया ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. मैं	स्वकीयेन	९. अपने
भ्राता	६. भाई	एव	१०. ही
त्वदीयः	५. तुम्हारा	दोषेण	११. पाप से
अस्मि	७. हूँ	ब्रह्मत्वम्	१२. ब्राह्मणपन को
धुन्धुकारी	२. धुन्धुकारी	नाशितम्	१३. नष्ट कर दिया है
इति	३. इस	मया ॥	८. मैंने
नामतः।	४. नाम से		

श्लोकार्थ—मैं धुन्धुकारो इस नाम से तुम्हारा भाई हूँ। मैंने अपने ही पाप से ब्राह्मणपन को नष्ट कर दिया है।

अष्टाविंशः श्लोकः

कर्मणो नास्ति संख्या मे महाज्ञाने विवर्तिनः।
लोकानां हिंसकः सोऽहं स्त्रीभिर्दुःखेन मारितः ॥२८॥

पदच्छेद—

कर्मणः न अस्ति संख्या मे, महत् अज्ञाने विवर्तिनः।
लोकानाम् हिंसकः सः अहम्, स्त्रीभिः दुःखेन मारितः ॥

शब्दार्थ—

कर्मणः	५. कुकर्मों की	लोकानाम्	९. लोगों का
न	७. नहीं	हिंसकः	१०. हत्यारा
अस्ति	८. है	सः	११. वही
संख्या	६. गिनती	अहम्	१२. मैं
मे	४. मेरे	स्त्रीभिः	१३. स्त्रियों के द्वारा
महत्	१. महान्	दुःखेन	१४. दुःख देकर
अज्ञाने	२. अज्ञान में	मारितः ॥	१५. मारा गया हूँ
विवर्तिनः।	३. रहने वाले		

श्लोकार्थ—महान् अज्ञान में रहने वाले मेरे कुकर्मों की गिनती नहीं है। लोगों का हत्यारा वही मैं स्त्रियों के द्वारा दुःख देकर मारा गया हूँ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अतः प्रेतत्वमापन्नो दुर्दशां च वहाम्यहम् ।
वाताहारेण जीवामि दैवाधीनफलोदयात् ॥२९॥

पदच्छेद—

अतः प्रेतत्वम् आपन्नः, दुर्दशाम् च वहामि अहम् ।
वात आहारेण जीवामि, दैव अधीन फल उदयात् ॥

शब्दार्थ—

अतः	१.	इसलिये	वात	१२.	वायु के
प्रेतत्वम्	३.	प्रेत योनि को	आहारेण	१३.	सहारे
आपन्नः	४.	प्राप्त करके	जीवामि	१४.	जी रहा हूँ
दुर्दशाम्	५.	बुरी अवस्था को	दैव	८.	भाग्य के
च	७.	तथा	अधीन	९.	वश में
वहामि	६.	भोग रहा हूँ	फल	१०.	फल की
अहम् ।	२.	मैं	उदयात् ॥	११.	प्राप्ति होने से

श्लोकार्थ—इसलिए मैं प्रेत-योनि को प्राप्त करके बुरी अवस्था को भोग रहा हूँ तथा भाग्य के वश में फल की प्राप्ति होने से वायु के सहारे जी रहा हूँ ।

त्रिंशः श्लोकः

अहो बन्धो कृपासिन्धो भ्रातर्मामाशु मोचय ।
गोकर्णो वचनं श्रुत्वा तस्मै वाक्यमथाब्रवीत् ॥३०॥

पदच्छेद—

अहो बन्धो कृपा सिन्धो, भ्रातः माम् आशु मोचय ।
गोकर्णः वचनम् श्रुत्वा, तस्मै वाक्यम् अथ अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

अहो	३.	हे	गोकर्णः	१०.	गोकर्ण ने
बन्धो	२.	परम हितैषी	वचनम्	८.	बात
कृपा, सिन्धो	१.	दया के, सागर	श्रुत्वा	९.	सुनकर
भ्रातः	४.	भाई	तस्मै	११.	उससे
माम्	५.	मुझे	वाक्यम्	१३.	वचन
आशु	६.	शीघ्र	अथ	१२.	ये
मोचय ।	७.	छुड़ाओ (ऐसी)	अब्रवीत् ॥	१४.	कहे

श्लोकार्थ—दया के सागर, परम हितैषी हे भाई ! मुझे शीघ्र छुड़ाओ; ऐसी बात सुनकर गोकर्ण ने उससे ये वचन कहे ।

एकत्रिंशः श्लोकः

गोकर्ण उवाच— त्वदर्थं तु गयापिण्डो मया दत्तो विधानतः ।
तत्कथं नैव मुक्तोऽसि ममाश्चर्यमिदं महत् ॥३१॥

पदच्छेद—

त्वदर्थम् तु गया पिण्डः, मया दत्तः विधानतः ।
तद् कथम् न एव मुक्तः असि, मम आश्चर्यम् इदम् महत् ॥

शब्दार्थ—

त्वदर्थम्	२.	तुम्हारे लिए	न एव	८.	नहीं
तु	३.	तो	मुक्तः	९.	मोक्ष
गया, पिण्डः	५.	गया जी में, पिण्डदान	असि	१०.	पाये हो
मया	१.	मैंने	मम	११.	मुझे
दत्तः	६.	दिया था	आश्चर्यम्	१४.	अचरज (है)
विधानतः ।	४.	विधान पूर्वक	इदम्	१२.	यह
तद्, कथम्	७.	फिर, क्यों	महत् ॥	१३.	बड़ा

श्लोकार्थ—मैंने तुम्हारे लिए तो विधान-पूर्वक गया जी में पिण्डदान दिया था; फिर क्यों नहीं मोक्ष पाये हो । मुझे यह बड़ा अचरज है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

गयाश्राद्धान्न मुक्तिश्चेदुपायो नापरस्त्विह ।
किं विधेयं मया प्रेत तत्त्वं वद सविस्तरम् ॥३२॥

पदच्छेद—

गया श्राद्धात् न मुक्तिः चेत्, उपायः न अपरः तु इह ।
किम् विधेयम् मया प्रेत, तद् त्वम् वद सविस्तरम् ॥

शब्दार्थ—

गया, श्राद्धात्	२.	गया जी में, श्राद्ध करने से	किम्	१२.	क्या
न	४.	नहीं (हुआ)	विधेयम्	१३.	करना चाहिये
मुक्तिः	३.	मोक्ष	मया	११.	मुझे
चेत्	१.	यदि	प्रेत	१०.	हे प्रेत !
उपायः	८.	साधन	तद्	१५.	उसे
न	९.	नहीं है (अतः)	त्वम्	१४.	तुम
अपरः	७.	दूसरा	वद	१७.	बताओ
तु	५.	तो	सविस्तरम् ॥	१६.	विस्तारपूर्वक
इह ।	६.	इस संसार में			

श्लोकार्थ—यदि गयाजी में श्राद्ध करने से मोक्ष नहीं हुआ तो इस संसार में दूसरा साधन नहीं है । अतः हे प्रेत ! मुझे क्या करना चाहिए; तुम उसे विस्तारपूर्वक बताओ ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

प्रेत उवाच—

गयाश्राद्धशतेनापि मुक्तिर्मे न भविष्यति ।
उपायमपरं कञ्चित्त्वं विचारय साम्प्रतम् ॥३३॥

पदच्छेद—

गया श्राद्ध शतेन अपि, मुक्तिः मे न भविष्यति ।
उपायम् अपरम् कञ्चित्, त्वम् विचारय साम्प्रतम् ॥

शब्दार्थ—

गया श्राद्ध	२.	गया-श्राद्ध से	उपायम्	१२.	साधन
शतेन	१.	सैंकड़ों	अपरम्	११.	दूसरा
अपि	३.	भी	कञ्चित्	१०.	कोई
मुक्तिः	५.	मोक्ष	त्वम्	९.	आप
मे	४.	मेरा	विचारय	१३.	सोचें
न	६.	नहीं	साम्प्रतम् ॥	८.	अब
भविष्यति ।	७.	होगा (अतः)			

श्लोकार्थ—सैंकड़ों गया-श्राद्ध से भी मेरा मोक्ष नहीं होगा । अतः अब आप कोई दूसरा साधन सोचें ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

इति तद्वाक्यमाकर्ण्य गोकर्णो विस्मयं गतः ।
शतश्राद्धैर्न मुक्तिश्चेदसाध्यं मोचनं तव ॥३४॥

पदच्छेद—

इति तद् वाक्यम् आकर्ण्य, गोकर्णः विस्मयम् गतः ।
शत श्राद्धैः न मुक्तिः चेत्, असाध्यम् मोचनम् तव ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	श्राद्धैः	९.	श्राद्धों से भी
तद्, वाक्यम्	२.	उस (प्रेत) के, वचन को	न	११.	नहीं (हुआ तो)
आकर्ण्य	३.	सुनकर	मुक्तिः	१०.	मोक्ष
गोकर्णः	४.	गोकर्ण जी	चेत्	७.	यदि
विस्मयम्	५.	आश्चर्य में	असाध्यम्	१४.	नहीं हो सकता है
गतः ।	६.	पड़ गये (और बोले)	मोचनम्	१३.	छुटकारा
शत	८.	सैंकड़ों	तव ॥	१२.	तुम्हारा

श्लोकार्थ—इस प्रकार उस प्रेत के वचन को सुनकर गोकर्णजी आश्चर्य में पड़ गये और बोले, यदि सैंकड़ों श्राद्धों से भी मोक्ष नहीं हुआ तो तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता है ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

इदानीं तु निजं स्थानमातिष्ठ प्रेत निर्भयः ।
त्वन्मुक्तिसाधकं किंचिदाचरिष्ये विचार्य च ॥३५॥

पदच्छेद—

इदानीम् तु निजम् स्थानम्, आतिष्ठ प्रेत निर्भयः ।
त्वद् मुक्ति साधकम् किंचित्, आचरिष्ये विचार्य च ॥

शब्दार्थ—

इदानीम्	२. इस समय		त्वद्	१०. तुम्हारे
तु	३. तो (तुम)		मुक्ति	११. मोक्ष के
निजम्	५. अपने		साधकम्	१२. साधन में
स्थानम्	६. स्थान पर		किंचित्	१३. कुछ
आतिष्ठ	७. विश्राम करो		आचरिष्ये	१४. करूँगा
प्रेत	१. हे प्रेत !		विचार्य	९. विचार करके
निर्भयः ।	४. भयरहित होकर		च ॥	८. और (मैं)

श्लोकार्थ—हे प्रेत ! इस समय तो तुम भयरहित होकर अपने स्थान पर विश्राम करो और मैं विचार करके तुम्हारे मोक्ष के साधन में कुछ करूँगा ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

धुन्धुकारी निजस्थानं तेनादिष्टस्ततो गतः ।
गोकर्णश्चिन्तयामास तां रात्रिं न तदध्यगात् ॥३६॥

पदच्छेद—

धुन्धुकारी निज स्थानम्, तेन आदिष्टः ततः गतः ।
गोकर्णः चिन्तयामास, ताम् रात्रिम् न तद् अध्यगात् ॥

शब्दार्थ—

धुन्धुकारी	२. धुन्धुकारी		गोकर्णः	८. गोकर्ण जी
निज	५. अपने		चिन्तयामास	११. विचार किये (किन्तु)
स्थानम्	६. स्थान पर		ताम्	९. उस
तेन	३. उनसे		रात्रिम्	१०. रात में
आदिष्टः	४. आदेश पाकर		न	१३. नहीं
ततः	१. तदनन्तर		तद्	१२. उस (उपाय) का
गतः ।	७. चला गया		अध्यगात् ॥	१४. निश्चय कर सके

श्लोकार्थ—तदनन्तर धुन्धुकारी उनसे आदेश पाकर अपने स्थान पर चला गया । गोकर्णजी उस रात में विचार किये, किन्तु उस उपाय का निश्चय नहीं कर सके ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

प्रातस्तमागतं दृष्ट्वा लोकाः प्रीत्या समागताः ।
तत्सर्वं कथितं तेन यज्जातं च यथा निशि ॥३७॥

पदच्छेद—

प्रातः तम् आगतम् दृष्ट्वा, लोकाः प्रीत्या समागताः ।
तद् सर्वम् कथितम् तेन, यद् जातम् च यथा निशि ॥

शब्दार्थ—

प्रातः	१.	प्रातः काल	सर्वम्	१५.	सब
तम्	२.	उन्हें	कथितम्	१६.	(कह) सुनाया
आगतम्	३.	आया हुआ	तेन	९.	गोकर्ण जी ने
दृष्ट्वा	४.	देखकर	यद्	१२.	जो (घटना)
लोकाः	५.	लोग	जातम्	१३.	हुई थी
प्रीत्या	६.	प्रेम के कारण	च	८.	और (उनसे)
समागताः ।	७.	आने लगे	यथा	११.	जिस प्रकार
तद्	१४.	वह	निशि ॥	१०.	रात्रि में

श्लोकार्थ—प्रातः काल उन्हें आया हुआ देखकर लोग प्रेम के कारण आने लगे और उनसे गोकर्ण जी ने रात्रि में जिस प्रकार जो घटना हुई थी; वह सब कह सुनाया ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

विद्वांसो योगनिष्ठाश्च ज्ञानिनो ब्रह्मवादिनः ।
तन्मुक्तिं नैव तेऽपश्यन् पश्यन्तः शास्त्रसंचयान् ॥३८॥

पदच्छेद—

विद्वांसः योग निष्ठाः च, ज्ञानिनः ब्रह्म वादिनः ।
तद् मुक्तिम् न एव ते अपश्यन्, पश्यन्तः शास्त्र संचयान् ॥

शब्दार्थ—

विद्वांसः	१.	विद्वान्	न एव	११.	नहीं
योगनिष्ठाः	२.	योगी	ते	६.	वे लोग
च	४.	और	अपश्यन्	१२.	निश्चय कर सके
ज्ञानिनः	३.	ज्ञानी	पश्यन्तः	९.	ज्ञाता होने पर (भी)
ब्रह्मवादिनः ।	५.	वेदपाठी	शास्त्र	८.	शास्त्रों के
तद्, मुक्तिम्	१०.	उसके, मोक्ष के उपाय का	संचयान् ॥	७.	अनेकों

श्लोकार्थ—विद्वान्, योगी, ज्ञानी और वेदपाठी वे लोग अनेकों शास्त्रों के ज्ञाता होने पर भी उसके मोक्ष के उपाय का निश्चय नहीं कर सके ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तत: सर्वैः सूर्यवाक्यं तन्मुक्तौ स्थापितं परम् ।
गोकर्णः स्तम्भनं चक्रे सूर्यवेगस्य वै तदा ॥३९॥

पदच्छेद—

तत: सर्वैः सूर्य वाक्यम्, तद् मुक्तौ स्थापितम् परम् ।
गोकर्णः स्तम्भनम् चक्रे, सूर्य वेगस्य वै तदा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	गोकर्णः	१०.	गोकर्ण जी ने
सर्वैः	२.	सभी लोगों ने	स्तम्भनम्	१३.	अवरोध
सूर्य, वाक्यम्	५.	सूर्य के, वचन को	चक्रे	१४.	किया
तद्	३.	उसके	सूर्य	११.	सूर्य की
मुक्तौ	४.	मोक्ष-साधन में	वेगस्य	१२.	गति का
स्थापितम्	७.	बताया	वै	८.	अतः
परम् ।	६.	सर्वोपरि प्रमाण	तदा ॥	९.	उस समय

श्लोकार्थ—तदनन्तर सभी लोगों ने उसके मोक्ष-साधन में सूर्य के वचन को सर्वोपरि प्रमाण बताया । अतः उस समय गोकर्ण जी ने सूर्य की गति का अवरोध किया ।

चत्वारिंशः श्लोकः

तुभ्यं नमो जगत्साक्षिन् ब्रूहि मे मुक्तिहेतुकम् ।
तच्छ्रुत्वा दूरतः सूर्यः स्फुटमित्यभ्यभाषत ॥४०॥

पदच्छेद—

तुभ्यम् नमः जगत् साक्षिन्, ब्रूहि मे मुक्ति हेतुकम् ।
तद् श्रुत्वा दूरतः सूर्यः, स्फुटम् इति अभ्यभाषत ॥

शब्दार्थ—

तुभ्यम्	३.	आपको	तद्	८.	उसे
नमः	४.	नमस्कार है	श्रुत्वा	९.	सुनकर
जगत्	१.	हे संसार के	दूरतः	११.	दूर से ही
साक्षिन्	२.	साक्षी !	सूर्यः	१०.	भगवान् सूर्य ने
ब्रूहि	७.	बतावें	स्फुटम्	१२.	स्पष्ट रूप में
मे	५.	मुझे (धुन्धुकारी के)	इति	१३.	इस प्रकार
मुक्ति, हेतुकम् ।	६.	मोक्ष का, साधन	अभ्यभाषत ॥	१४.	कहा

श्लोकार्थ—हे संसार के साक्षी ! आपको नमस्कार है । मुझे धुन्धुकारी के मोक्ष का साधन बतावें । उसे सुनकर भगवान् सूर्य ने दूर से ही स्पष्ट रूप में इस प्रकार कहा ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीमद्भागवतान्मुक्तिः सप्ताहं वाचनं कुरु ।
इति सूर्यवचः सर्वैर्धर्मरूपं तु विश्रुतम् ॥४१॥

पदच्छेद—

श्रीमद्भागवतात् मुक्तिः, सप्ताहम् वाचनम् कुरु ।
इति सूर्य वचः सर्वैः, धर्म रूपम् तु विश्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्भागवतात्	१.	श्रीमद्भागवत पुराण से	**सूर्य**	८.	भगवान् सूर्य के
मुक्तिः	२.	मोक्ष (होगा)	**वचः**	१०.	वचन को
सप्ताहम्	४.	सात दिनों तक	**सर्वैः**	११.	सभी लोगों ने
वाचनम्	५.	पारायण	**धर्मरूपम्**	९.	धर्म स्वरूप
कुरु ।	६.	करो	**तु**	३.	अतः (उसका)
इति	७.	इस प्रकार	**विश्रुतम् ॥**	१२.	सुना

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत पुराण से मोक्ष होगा, अतः उसका सात दिनों तक पारायण करो, इस प्रकार भगवान् सूर्य के धर्म-स्वरूप वचन को सभी लोगों ने सुना ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

सर्वेऽब्रुवन् प्रयत्नेन कर्तव्यं सुकरं त्विदम् ।
गोकर्णो निश्चयं कृत्वा वाचनार्थं प्रवर्तितः ॥४२॥

पदच्छेद—

सर्वे अब्रुवन् प्रयत्नेन, कर्तव्यम् सुकरम् तु इदम् ।
गोकर्णः निश्चयम् कृत्वा, वाचनार्थम् प्रवर्तितः ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	१.	सभी लोगों ने	**इदम् ।**	३.	इस
अब्रुवन्	२.	कहा	**गोकर्णः**	८.	गोकर्ण जी
प्रयत्नेन	५.	प्रयत्न करके	**निश्चयम्**	९.	निश्चय
कर्तव्यम्	६.	करना चाहिये	**कृत्वा**	१०.	करके
सुकरम्	४.	सरल उपाय को	**वाचनार्थम्**	११.	कथा वाचने में
तु	७.	तब	**प्रवर्तितः ॥**	१२.	प्रवृत्त हो गये

श्लोकार्थ—सभी लोगों ने कहा, इस सरल उपाय को प्रयत्न करके करना चाहिये । तब गोकर्णजी निश्चय करके कथा वाचने में प्रवृत्त हो गये ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तत्र संश्रवणार्थाय देशग्रामाज्जना ययुः ।
पङ्ग्वन्धवृद्धमन्दाश्च तेऽपि पापक्षयाय वै ॥४३॥

पदच्छेद—

तत्र संश्रवण अर्थाय, देश ग्रामात् जनाः ययुः ।
पङ्गु अन्ध वृद्ध मन्दाः च, ते अपि पाप क्षयाय वै ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	अन्ध	१०.	अन्धे
संश्रवण	५.	कथा सुनने के	वृद्ध	११.	बुड्ढे और
अर्थाय	६.	प्रयोजन से	मन्दाः	१२.	भाग्यहीन (थे)
देश	२.	प्रदेशों और	च	८.	तथा (जो)
ग्रामात्	३.	गाँवों से	ते, अपि	१३.	वे, भी
जनाः	४.	लोग	पाप	१४.	पापों का
ययुः ।	७.	उपस्थित हुए	क्षयाय	१५.	विनाश करने के लिए
पङ्गु	९.	लँगड़े	वै ॥	१६.	ही (आये)

श्लोकार्थ—वहाँ पर प्रदेशों और गाँवों से लोग कथा सुनने के प्रयोजन से उपस्थित हुए तथा जो लँगड़े, अन्धे, बुड्ढे और भाग्यहीन थे, वे भी पापों का विनाश करने के लिये ही आये ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

समाजस्तु महाञ्जातो देवविस्मयकारकः ।
यदैवासनमास्थाय गोकर्णोऽकथयत्कथाम् ॥४४॥

पदच्छेद—

समाजः तु महान् जातः, देव विस्मय कारकः ।
यदा एव आसनम् आस्थाय, गोकर्णः अकथयत् कथाम् ॥

शब्दार्थ—

समाजः	११.	जन-समूह	यदा एव	१.	जिस समय
तु	७.	उस समय (वहाँ)	आसनम्	२.	आसन पर
महान्	१०.	बहुत बड़ा	आस्थाय	३.	बैठ कर
जातः	१२.	जुट गया	गोकर्णः	४.	गोकर्ण जी
देव	८.	देवताओं को भी	अकथयत्	६.	कहना प्रारम्भ किये
विस्मय कारकः ।	९.	आश्चर्य में डालने वाला	कथाम् ॥	५.	कथा

श्लोकार्थ — जिस समय आसन पर बैठकर गोकर्ण जी कथा कहना प्रारम्भ किये । उस समय वहाँ देवताओं को भी आश्चर्य में डालने वाला बहुत बड़ा जन-समूह जुट गया ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

स प्रेतोऽपि तदाऽऽयातः स्थानं पश्यन्नितस्ततः ।
सप्तग्रन्थियुतं तत्रापश्यत्कीचकमुच्छ्रितम् ॥४५॥

पदच्छेद—

सः प्रेतः अपि तदा आयातः, स्थानम् पश्यन् इतः ततः ।
सप्त ग्रन्थि युतम् तत्र, अपश्यत् कीचकम् उच्छ्रितम् ॥

शब्दार्थ—

सः	२. वह	इतः ततः ।	५. इधर-उधर
प्रेतः	३. प्रेत	सप्त, ग्रन्थि	१०. सात गाँठों से
अपि	४. भी	युतम्	११. युक्त
तदा	१. उस समय	तत्र	९. वहाँ पर
आयातः	८. आया (और)	अपश्यत्	१४. देखा
स्थानम्	६. (बैठने की) जगह	कीचकम्	१३. बाँस को
पश्यन्	७. देखता हुआ	उच्छ्रितम् ॥	१२. (एक) लम्बे

श्लोकार्थ—उस समय वह प्रेत भी इधर-उधर बैठने की जगह देखता हुआ आया और वहाँ पर सात गाँठों से युक्त एक लम्बे बाँस को देखा ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तन्मूलच्छिद्रमाविश्य श्रवणार्थं स्थितो ह्यसौ ।
वातरूपी स्थितिं कर्तुमशक्तो वंशमाविशत् ॥४६॥

पदच्छेद—

तद् मूल छिद्रम् आविश्य, श्रवणार्थम् स्थितः हि असौ ।
वातरूपी स्थितिम् कर्तुम्, अशक्तः वंशम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

तद्, मूल	२. उस (बाँस) के, जड़भाग के	असौ ।	१. वह
छिद्रम्	३. छेद में	वातरूपी	८. वायुरूप होने के कारण
आविश्य	४. प्रवेश करके	स्थितिम्, कर्तुम्	९. (बाहर) बैठ, सकने में
श्रावणार्थम्	५. (कथा) सुनने के लिये	अशक्तः	१०. असमर्थ (था अतः)
स्थितः	७. बैठ गया	वंशम्	११. (वह) बाँस में
हि	६. ही	आविशत् ॥	१२. प्रवेश कर गया

श्लोकार्थ—वह उस बाँस के जड़भाग के छेद में प्रवेश करके कथा सुनने के लिए ही बैठ गया । वायु रूप होने के कारण बाहर बैठ सकने में असमर्थ था; अतः वह बाँस में प्रवेश कर गया ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

वैष्णवं ब्राह्मणं मुख्यं श्रोतारं परिकल्प्य सः ।
प्रथमस्कन्धतः स्पष्टमाख्यानं धेनुजोऽकरोत् ॥४७॥

पदच्छेद—

वैष्णवम् ब्राह्मणम् मुख्यम् , श्रोतारम् परिकल्प्य सः ।
प्रथम स्कन्धतः स्पष्टम् , आख्यानम् धेनुजः अकरोत् ॥

शब्दार्थ—

वैष्णवम्	३.	वैष्णव	प्रथम	८.	(भागवत के) पहले
ब्राह्मणम्	४.	ब्राह्मण को	स्कन्धतः	९.	स्कन्ध से
मुख्यम्	५.	प्रधान	स्पष्टम्	१०.	विस्तारपूर्वक
श्रोतारम्	६.	श्रोता	आख्यानम्	११.	व्याख्यान
परिकल्प्य	७.	बनाकर	धेनुजः	२.	गोकर्ण जी ने
सः।	१.	उन	अकरोत् ॥	१२.	प्रारम्भ किया

श्लोकार्थ—उन गोकर्णजी ने वैष्णव ब्राह्मण को प्रधान श्रोता बनाकर भागवत के पहले स्कन्ध से विस्तार-पूर्वक व्याख्यान प्रारम्भ किया ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

दिनान्ते रक्षिता गाथा तदा चित्रं बभूव ह ।
वंशैकग्रन्थिभेदोऽभूत्सशब्दं पश्यतां सताम् ॥४८॥

पदच्छेद—

दिनान्ते रक्षिता गाथा, तदा चित्रम् बभूव ह ।
वंश एक ग्रन्थि भेदः अभूत् , सशब्दम् पश्यताम् सताम् ॥

शब्दार्थ—

दिनान्ते	१.	दिन के अन्त में	वंश, एक	११.	बाँस की, एक
रक्षिता	३.	विश्राम हुआ	ग्रन्थि	१२.	गाँठ
गाथा	२.	कथा का	भेदः	१३.	फट
तदा	४.	उस समय	अभूत्	१४.	गयी
चित्रम्	५.	(एक) आश्चर्य	सशब्दम्	१०.	शब्द करती हुई
बभूव	६.	हुआ	पश्यताम्	९.	देखते-देखते
ह ।	७.	कि	सताम् ॥	८.	सन्तों के

श्लोकार्थ—दिन के अन्त में कथा का विश्राम हुआ । उस समय एक आश्चर्य हुआ कि सन्तों के देखते-देखते शब्द करती हुई बाँस की एक गाँठ फट गयी ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

द्वितीयेऽह्नि तथा सायं द्वितीयग्रन्थिभेदनम् ।
तृतीयेऽह्नि तथा सायं तृतीयग्रन्थिभेदनम् ॥४६॥

पदच्छेद—

द्वितीये अह्नि तथा सायम् , द्वितीय ग्रन्थि भेदनम् ।
तृतीये अह्नि तथा सायम् , तृतीय ग्रन्थि भेदनम् ॥

शब्दार्थ—

द्वितीये	२.	दूसरे	तृतीये	९.	तीसरे
अह्नि	३.	दिन	अह्नि	१०.	दिन
तथा	१.	तथा	तथा	८.	उसी प्रकार
सायम्	४.	सायं काल	सायम्	११.	सायंकाल
द्वितीय	५.	दूसरी	तृतीय	१२.	तीसरी
ग्रन्थि	६.	गाँठ	ग्रन्थि	१३.	गाँठ
भेदनम् ।	७.	फट गयी	भेदनम् ॥	१४.	फट गयी

श्लोकार्थ—तथा दूसरे दिन सायंकाल दूसरी गाँठ फट गयी । उसी प्रकार तीसरे दिन सायंकाल तीसरी गाँठ फट गयी ।

पञ्चाशः श्लोकः

एवं सप्तदिनैश्चैव सप्तग्रन्थिविभेदनम् ।
कृत्वा स द्वादशस्कन्धश्रवणात्प्रेततां जहौ ॥५०॥

पदच्छेद—

एवम् सप्त दिनैः च एव, सप्त ग्रन्थि विभेदनम् ।
कृत्वा सः द्वादश स्कन्ध, श्रवणात् प्रेतताम् जहौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इसी प्रकार	कृत्वा	८.	कर
सप्त, दिनैः	४.	सात, दिनों में	सः	३.	वह (धुंन्धुकारी)
च	१.	तथा	द्वादश, स्कन्ध	९.	बारहों, स्कन्धों की
एव	५.	ही	श्रवणात्	१०.	(कथा) सुनने के कारण
सप्त, ग्रन्थि	६.	सात, गाँठों को	प्रेतताम्	११.	प्रेत योनि से
विभेदनम् ।	७.	फोड़	जहौ ॥	१२.	मुक्त हो गया

श्लोकार्थ—तथा इसी प्रकार वह धुन्धुकारी सात दिनों में ही सात गाँठों को फोड़ कर बारहों स्कन्धों की कथा सुनने के कारण प्रेत योनि से मुक्त हो गया ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

दिव्यरूपधरो जातस्तुलसीदाममण्डितः ।
पीतवासा घनश्यामो मुकुटी कुण्डलान्वितः ॥५१॥

पदच्छेद—

दिव्य रूप धरः जातः, तुलसी दाम मण्डितः ।
पीत वासाः घनश्यामः, मुकुटी कुण्डल अन्वितः ॥

शब्दार्थ—

दिव्य, रूप	८.	तेजस्वी, रूप	पीतवासाः	३.	पीताम्बर धारी
धरः	९.	धारी	घनश्यामः	४.	मेघ के समान साँवला
जातः	१०.	हो गया	मुकुटी	५.	मुकुट और
तुलसी, दाम	१.	(वह धुन्धुकारी) तुलसी की, माला से	कुण्डल	६.	कुण्डलों से
मण्डितः ।	२.	सुशोभित	अन्वितः ॥	७.	युक्त (तथा)

श्लोकार्थ—वह धुन्धुकारी तुलसी की माला से सुशोभित, पीताम्बर धारी, मेघ के समान साँवला, मुकुट और कुण्डलों से युक्त तथा तेजस्वी रूप धारी हो गया ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

ननाम भ्रातरं सद्यो गोकर्णमिति चाब्रवीत् ।
त्वयाहं मोचितो बन्धो कृपया प्रेतकश्मलात् ॥५२॥

पदच्छेद—

ननाम भ्रातरम् सद्यः, गोकर्णम् इति च अब्रवीत् ।
त्वया अहम् मोचितः बन्धो, कृपया प्रेत कश्मलात् ॥

शब्दार्थ—

ननाम	४.	प्रणाम किया	त्वया	१०.	आपके द्वारा
भ्रातरम्	२.	भाई	अहम्	९.	मैं
सद्यः	१.	उसने तत्काल	मोचितः	१४.	मुक्त कराया गया हूँ
गोकर्णम्	३.	गोकर्ण को	बन्धो	८.	हे भाई !
इति	६.	इस प्रकार	कृपया	१३.	कृपा करके
च	५.	तथा	प्रेत	११.	प्रेत की
अब्रवीत् ।	७.	बोला	कश्मलात् ॥	१२.	पीड़ा से

श्लोकार्थ—उसने तत्काल भाई गोकर्ण को प्रणाम किया तथा इस प्रकार बोला—हे भाई ! मैं आपके द्वारा प्रेत की पीड़ा से कृपा करके मुक्त कराया गया हूँ ।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

धन्या भागवती वार्ता प्रेतपीडाविनाशिनी ।
सप्ताहोऽपि तथा धन्यः कृष्णलोकफलप्रदः ॥५३॥

पदच्छेद—

धन्या भागवती वार्ता, प्रेत पीडा विनाशिनी ।
सप्ताहः अपि तथा धन्यः, कृष्ण लोक फल प्रदः ॥

शब्दार्थ—

धन्या	६.	धन्य (है)	**सप्ताहः**	१०.	भागवत सप्ताह
भागवती	४.	श्रीमद्भागवत की	**अपि**	११.	भी
वार्ता	५.	कथा	**तथा**	७.	तथा
प्रेत	१.	प्रेत की	**धन्यः**	१२.	धन्य (है)
पीडा	२.	पीड़ा को	**कृष्ण, लोक**	८.	श्रीकृष्ण के, धाम रूप
विनाशिनी ।	३.	दूर करने वाली	**फल, प्रदः ॥**	९.	फल को, देने वाला

श्लोकार्थ— प्रेत की पीड़ा को दूर करनेवाली श्रीमद्भागवत की कथा धन्य है तथा श्रीकृष्ण के धाम रूप फल को देने वाला भागवत-सप्ताह भी धन्य है ।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

कम्पन्ते सर्वपापानि सप्ताहश्रवणे स्थिते ।
अस्माकं प्रलयं सद्यः कथा चेयं करिष्यति ॥५४॥

पदच्छेद—

कम्पन्ते सर्वं पापानि, सप्ताह श्रवणे स्थिते ।
अस्माकम् प्रलयम् सद्यः, कथा च इयम् करिष्यति ॥

शब्दार्थ—

कम्पन्ते	६.	काँपने लगते हैं	**अस्माकम्**	११.	हमारा
सर्वं	४.	सारे	**प्रलयम्**	१२.	विनाश
पापानि	५.	पाप	**सद्यः**	१०.	तत्काल
सप्ताह	१.	(भागवत) सप्ताह को	**कथा**	९.	कथा
श्रवणे	२.	सुनने के लिए	**च**	७.	कि
स्थिते ।	३.	बैठ जाने पर	**इयम्**	८.	यह
			करिष्यति ॥	१३.	कर देगी

श्लोकार्थ— भागवत-सप्ताह को सुनने के लिए बैठ जाने पर सारे पाप काँपने लगते हैं कि यह कथा तत्काल हमारा विनाश कर देगी ।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

आर्द्रं शुष्कं लघु स्थूलं वाङ्मनःकर्मभिः कृतम् ।
श्रवणं विदहेत्पापं पावकः समिधो यथा ॥५५॥

पदच्छेद—

आर्द्रम् शुष्कम् लघु स्थूलम्, वाक् मनः कर्मभिः कृतम् ।
श्रवणम् विदहेत् पापम्, पावकः समिधः यथा ॥

शब्दार्थ—

आर्द्रम्	(१४)	३. गीली	(नये)	कृतम् ।		१३. किये गये
शुष्कम्	(१५)	४. सूखी	(पुराने)	श्रवणम्		६. (उसी प्रकार) कथा का श्रवण
लघु	(१६)	५. छोटी और	(छोटे और)	विदहेत्	(१९)	८. जला देता है
स्थूलम्	(१७)	६. बड़ी	(बड़े)	पापम्		१८. पापों को
वाक्		१०. वाणी		पावकः		२. अग्नि
मनः		११. मन और		समिधः		७. लकड़ियों को
कर्मभिः		१२. कर्मों से		यथा ॥		१. जिस प्रकार

श्लोकार्थ—जिस प्रकार अग्नि गीली, सूखी, छोटी और बड़ी लकड़ियों को जला देता है; उसी प्रकार कथा का श्रवण वाणी, मन और कर्मों से किये गये नये, पुराने, छोटे और बड़े पापों को जला देता है ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

अस्मिन् वै भारते वर्षे सूरिभिर्देवसंसदि ।
अकथाश्राविणां पुंसां निष्फलं जन्म कीर्तितम् ॥५६॥

पदच्छेद—

अस्मिन् वै भारते वर्षे, सूरिभिः देव संसदि ।
अकथा श्राविणाम् पुंसाम्, निष्फलम् जन्म कीर्तितम् ।

शब्दार्थ—

अस्मिन्	४. इस	अकथा	६. भागवत कथा नहीं
वै	१०. निश्चय ही	श्राविणाम्	७. सुनने वाले
भारते वर्षे	५. भारत वर्ष में	पुंसाम्	८. मनुष्यों के
सूरिभिः	३. देवताओं ने	निष्फलम्	११. व्यर्थ
देव	१. देवताओं की	जन्म	९. जन्म को
संसदि ।	२. सभा में	कीर्तितम् ॥	१२. माना है

श्लोकार्थ—देवताओं की सभा में देवताओं ने इस भारतवर्ष में भागवत कथा नहीं सुनने वाले मनुष्यों के जन्म को निश्चय ही व्यर्थ माना है ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

किं मोहतो रक्षितेन सुपुष्टेन बलीयसा ।
अध्रुवेण शरीरेण शुकशास्त्रकथां विना ॥५७॥

पदच्छेद—

किम् मोहतः रक्षितेन, सुपुष्टेन बलीयसा ।
अध्रु वेण शरीरेण, शुक शास्त्र कथाम् विना ॥

शब्दार्थ—

किम्	१०.	क्या प्रयोजन है ?	अध्रु वेण	८.	नाशवान्
मोहतः	४.	ममता से	शरीरेण	९.	शरीर से
रक्षितेन	५.	बढ़ाये गये	शुक, शास्त्र	१.	भागवत, शास्त्र की
सुपुष्टेन	६.	हृष्ट-पुष्ट	कथाम्	२.	कथा (सुने)
बलीयसा ।	७.	बलवान् (और)	विना ॥	३.	बिना

श्लोकार्थ—भागवत शास्त्र की कथा सुने बिना ममता से बढ़ाये गये, हृष्ट-पुष्ट, बलवान् और नाशवान् शरीर से क्या प्रयोजन है ?

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

अस्थिस्तम्भं स्नायुबद्धं मांसशोणितलेपितम् ।
चर्मावनद्धं दुर्गन्धं पात्रं मूत्रपुरीषयोः ॥५८॥

पदच्छेद—

अस्थि स्तम्भम् स्नायु बद्धम् , मांस शोणित लेपितम् ।
चर्म अवनद्धम् दुर्गन्धम् , पात्रम् मूत्र पुरीषयोः ॥

शब्दार्थ—

अस्थि	१.	(यह शरीर) हड्डियों के	चर्म	७.	चमड़े से
स्तम्भम्	२.	खम्भों वाला	अवनद्धम्	८.	ढका हुआ (तथा)
स्नायु, बद्धम्	३.	नसों से, बँधा हुआ	दुर्गन्धम्	९.	दुर्गन्ध देने वाला
मांस	४.	मांस और	पात्रम्	१२.	बर्तन (है)
शोणित	५.	रक्त से	मूत्र	११.	मूत्र का
लेपितम् ।	६.	लीपा गया	पुरीषयोः ॥	१०.	मल

श्लोकार्थ—यह शरीर हड्डियों के खम्भोंवाला, नसों से बँधा हुआ, मांस और रक्त से लीपा गया, चमड़े से ढका हुआ तथा दुर्गन्ध देने वाला मल-मूत्र का बर्तन है ।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

जराशोकविपाकार्तं रोगमन्दिरमातुरम् ।
दुष्पूरं दुर्धरं दुष्टं सदोषं क्षणभङ्गुरम् ॥५९॥

पदच्छेद—

जरा शोक विपाक आर्तम्, रोग मन्दिरम् आतुरम् ।
दुष्पूरम् दुर्धरम् दुष्टम् , सदोषम् क्षण भङ्गुरम् ॥

शब्दार्थ—

जरा	१.	(यह शरीर) बुढ़ापा और	दुष्पूरम्	७.	कभी नहीं भरनेवाला
शोक	२.	चिन्ता के	दुर्धरम्	८.	भार स्वरूप
विपाक	३.	कारण	दुष्टम्	९.	दुष्टता से पूर्ण
आर्तम्	४.	दुःखित	सदोषम्	१०.	दोषों से भरा हुआ (और)
रोग, मन्दिरम्	५.	रोगों का, घर	क्षण	११.	क्षण भर में
आतुरम् ।	६.	असन्तोषी	भङ्गुरम् ॥	१२.	नष्ट होने वाला (है)

श्लोकार्थ—यह शरीर बुढ़ापा और चिन्ता के कारण दुःखित, रोगों का घर, असन्तोषी, कभी नहीं भरनेवाला, भार स्वरूप, दुष्टता से पूर्ण, दोषों से भरा हुआ और क्षण भर में नष्ट होने वाला है ।

षष्टितमः श्लोकः

कृमिविड्भस्मसंज्ञान्तं शरीरमिति वर्णितम् ।
अस्थिरेण स्थिरं कर्म कुतोऽयं साधयेन्न हि ॥६०॥

पदच्छेद—

कृमि विड् भस्म संज्ञा अन्तम् , शरीरम् इति वर्णितम् ।
अस्थिरेण स्थिरम् कर्म, कुतः अयम् साधयेत् न हि ॥

शब्दार्थ—

कृमि	२.	कीड़ा	अस्थिरेण	११.	नाशवान् (शरीर) से
विड्	३.	विष्ठा और	स्थिरम्	१२.	स्थायी
भस्म	४.	राख के	कर्म	१३.	काम को
संज्ञा	५.	नाम को धारण करने वाला	कुतः	१४.	क्यों
अन्तम्	१.	अन्त में	अयम्	१०.	यह (मनुष्य)
शरीरम्	७.	शरीर	साधयेत्	१६.	करता है
इति	६.	यह	न	१५.	नहीं
वर्णितम् ।	८.	कहा गया है	हि ॥	९.	अतः

श्लोकार्थ—अन्त में कीड़ा, विष्ठा और राख के नाम को धारण करने वाला यह शरीर कहा गया है । अतः यह मनुष्य नाशवान् शरीर से स्थायी काम को क्यों नहीं करता है ।

एकषष्टितमः श्लोकः

यत्प्रातः संस्कृतं चान्नं सायं तच्च विनश्यति ।
तदीयरससंपुष्टे काये का नाम नित्यता ॥६१॥

पदच्छेद—

यद् प्रातः संस्कृतम् च अन्नम्, सायम् तद् च विनश्यति ।
तदीय रस संपुष्टे, काये का नाम नित्यता ॥

शब्दार्थ—

यद्	२.	जो	विनश्यति ।	८.	नष्ट हो जाता है
प्रातः	४.	सबेरे	तदीय	१०.	उस (अनित्य अन्न) के
संस्कृतम्	५.	खाया जाता है	रस	११.	रस से
च	१.	तथा	सम्पुष्टे	१२.	बढ़े हुये
अन्नम्	३.	अन्न	काये	१३.	शरीर की
सायम्	७.	सायंकाल	का	१५.	कैसे
तद्	६.	वह	नाम	१६.	हो सकती है
च	९.	अतः	नित्यता ॥	१४.	स्थिरता

श्लोकार्थ—तथा जो अन्न सवेरे खाया जाता है, वह सायंकाल नष्ट हो जाता है। अतः उस अनित्य अन्न के रस से बढ़े हुये शरीर की स्थिरता कैसे हो सकती है।

द्विषष्टितमः श्लोकः

सप्ताहश्रवणाल्लोके प्राप्यते निकटे हरिः ।
अतो दोषनिवृत्त्यर्थमेतदेव हि साधनम् ॥६२

पदच्छेद—

सप्ताह श्रवणात् लोके, प्राप्यते निकटे हरिः ।
अतः दोष निवृत्ति अर्थम्, एतद् एव हि साधनम् ॥

शब्दार्थ—

सप्ताह	२.	भागवत सप्ताह के	दोष	८.	पापों के
श्रवणात्	३.	सुनने से	निवृत्ति	९.	निवारण के
लोके	१.	इस संसार में	अर्थम्	१०.	प्रयोजन से
प्राप्यते	६.	आ जाते हैं	एतद्	१२.	यही
निकटे	५.	समीप में	एव	१३.	एक
हरिः ।	४.	भगवान् श्री हरि	हि	११.	निश्चयपूर्वक
अतः	७.	इसलिये	साधनम् ॥	१४.	उपाय (है)

श्लोकार्थ—इस संसार में भागवत सप्ताह के सुनने से भगवान् श्रीहरि समीप में आ जाते हैं। इसलिये पापों के निवारण के प्रयोजन से निश्चयपूर्वक यही एक उपाय है।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

बुद्बुदा इव तोयेषु मशका इव जन्तुषु ।
जायन्ते मरणायैव कथाश्रवणवर्जिताः ॥६३॥

पदच्छेद—

बुद्बुदाः इव तोयेषु, मशकाः इव जन्तुषु ।
जायन्ते मरणाय एव, कथा श्रवण वर्जिताः ॥

शब्दार्थ—

बुद्बुदाः	५.	बुलबुलों के	जायन्ते	१२.	उत्पन्न होते हैं
इव	६.	समान (तथा)	मरणाय	१०.	मरने के लिये
तोयेषु	४.	जल में	एव	११.	ही
मशकाः	८.	मच्छरों के	कथा	१.	श्रीमद्भागवत कथा को
इव	९.	समान	श्रवण	२.	सुनने से
जन्तुषु ।	७.	जीवों में	वर्जिताः ॥	३.	वञ्चित (प्राणी)

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत कथा को सुनने से वञ्चित प्राणी जल में बुलबुलों के समान तथा जीवों में मच्छरों के समान मरने के लिये ही उत्पन्न होते हैं ।

चतुष्षष्टितमः श्लोकः

जडस्य शुष्कवंशस्य यत्र ग्रन्थिविभेदनम् ।
चित्रं किमु तदा चित्तग्रन्थिभेदः कथाश्रवात् ॥६४॥

पदच्छेद—

जडस्य शुष्क वंशस्य, यत्र ग्रन्थि विभेदनम् ।
चित्रम् किमु तदा चित्त, ग्रन्थि भेदः कथा श्रवात् ॥

शब्दार्थ—

जडस्य	४.	जड़ (तथा)	किमु	१४.	क्या है
शुष्क	५.	सूखे	तदा	९.	तब
वंशस्य	६.	बाँस की	चित्त	१०.	हृदय की
यत्र	३.	जब	ग्रन्थि	११.	(अज्ञानता की) गाँठ
ग्रन्थि	७.	गाँठ	भेदः	१२.	खुलने में
विभेदनम् ।	८.	फट गयी	कथा	१.	श्रीमद्भागवत कथा के
चित्रम्	१३.	आश्चर्य	श्रवात् ॥	२.	सुनने से

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत कथा के सुनने से जब जड़ तथा सूखे बाँस की गाँठ फट गयी; तब हृदय की अज्ञानता की गाँठ खुलने में आश्चर्य क्या है ?

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि सप्ताहश्रवणे कृते ॥६५॥

पदच्छेद—

भिद्यते हृदय ग्रन्थिः, छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते च अस्य कर्माणि, सप्ताह श्रवणे कृते ॥

शब्दार्थ—

भिद्यते	५. खुल जाती है		**क्षीयन्ते**	१२. क्षीण हो जाते हैं
हृदय	३. मन की (अज्ञानता की)		**च**	६. और
ग्रन्थिः	४. गाँठ		**अस्य**	१०. उसके
छिद्यन्ते	८. नष्ट हो जाते हैं		**कर्माणि**	११. सभी कर्म
सर्व	६. सारे		**सप्ताह**	१. श्रीमद्भागवत सप्ताह का
संशयाः ।	७. संदेह		**श्रवणे कृते ॥**	२. श्रवण कर लेने पर

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत सप्ताह का श्रवण कर लेने पर मन की अज्ञानता की गाँठ खुल जाती है, सारे संदेह नष्ट हो जाते हैं और उसके सभी कर्म क्षीण हो जाते हैं।

षट्षष्टितमः श्लोकः

संसारकर्दमालेपप्रक्षालनपटीयसि ।
कथातीर्थे स्थिते चित्ते मुक्तिरेव बुधैः स्मृता ॥६६॥

पदच्छेद—

संसार कर्दम आलेप, प्रक्षालन पटीयसि ।
कथा तीर्थे स्थिते चित्ते, मुक्तिः एव बुधैः स्मृता ॥

शब्दार्थ—

संसार	१. संसार के		**स्थिते**	८. स्थिर रहने पर
कर्दम	२. कीचड़ के		**चित्ते**	७. हृदय के
आलेप	३. लेप को		**मुक्तिः**	१०. मोक्ष (की प्राप्ति)
प्रक्षालन	४. धोने में		**एव**	११. ही
पटीयसि ।	५. समर्थ		**बुधैः**	६. विद्वानों ने
कथा, तीर्थे	६. कथारूपी, तीर्थ में		**स्मृता ॥**	१२. बतलायी है

श्लोकार्थ—संसार के कीचड़ के लेप को धोने में समर्थ कथारूपी तीर्थ में हृदय के स्थिर रहने पर विद्वानों ने मोक्ष की प्राप्ति ही बतलायी है।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

एवं ब्रुवति वै तस्मिन् विमानमागमत्तदा ।
वैकुण्ठवासिभिर्युक्तं प्रस्फुरद्दीप्तिमण्डलम् ॥६७॥

पदच्छेद—

एवम् ब्रुवति वै तस्मिन्, विमानम् आगमत् तदा ।
वैकुण्ठ वासिभिः युक्तम्, प्रस्फुरत् दीप्ति मण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	वैकुण्ठ	६.	वैकुण्ठ धाम के
ब्रुवति	३.	कहते रहने पर	वासिभिः	७.	निवासी (पार्षदों) के
वै	४.	ही	युक्तम्	८.	साथ
तस्मिन्	१.	उस (धुन्धुकारी) के	प्रस्फुरत्	११.	चमकता हुआ
विमानम्	१२.	एक विमान	दीप्ति	९.	प्रकाश के
आगमत्	१३.	आ गया	मण्डलम् ॥	१०.	घेरे से
तदा ।	५.	उस समय			

श्लोकार्थ—उस धुन्धुकारी के इस प्रकार कहते रहने पर ही उस समय वैकुण्ठ धाम के निवासी पार्षदों के साथ प्रकाश के घेरे से चमकता हुआ एक विमान आ गया ।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

सर्वेषां पश्यतां भेजे विमानं धुन्धुलीसुतः ।
विमाने वैष्णवान् वीक्ष्य गोकर्णो वाक्यमब्रवीत् ॥६८॥

पदच्छेद—

सर्वेषाम् पश्यताम् भेजे, विमानम् धुन्धुली सुतः ।
विमाने वैष्णवान् वीक्ष्य, गोकर्णः वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

सर्वेषाम्	१.	सबके	विमाने	८.	विमान में
पश्यताम्	२.	देखते-देखते	वैष्णवान्	९.	वैष्णवों को
भेजे	६.	चढ़ गये	वीक्ष्य	१०.	देखकर
विमानम्	५.	विमान पर	गोकर्णः	७.	गोकर्ण जी
धुन्धुली	३.	(माता) धुन्धुली के	वाक्यम्	११.	(यह) वचन
सुतः ।	४.	पुत्र (धुन्धुकारी)	अब्रवीत् ॥	१२.	कहे

श्लोकार्थ—सबके देखते-देखते माता धुन्धुली के पुत्र धुन्धुकारी विमान पर चढ़ गये । गोकर्ण जी विमान में वैष्णवों को देखकर यह वचन कहे ।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

गोकर्ण उवाच

अत्रैव बहवः सन्ति श्रोतारो मम निर्मलाः ।
आनीतानि विमानानि न तेषां युगपत्कुतः ॥६९॥

पदच्छेद—

अत्र एव बहवः सन्ति, श्रोतारः मम निर्मलाः ।
आनीतानि विमानानि, न तेषाम् युगपत् कुतः ॥

शब्दार्थ—

अत्र एव	१.	यहीं पर	आनीतानि	१२.	लाये गये
बहवः	३.	अनेकों	विमानानि	६.	विमान
सन्तिः	६.	हैं	न	११.	नहीं
श्रोतारः	५.	श्रोता	तेषाम्	७.	उनके लिए
मम	२.	मेरी (कथा के)	युगपत्	८.	एक साथ
निर्मलाः ।	४.	शुद्ध मनवाले	कुतः ॥	१०.	क्यों

श्लोकार्थ—यहीं पर मेरी कथा के अनेकों शुद्ध मन वाले श्रोता हैं । उनके लिए एक साथ विमान क्यों नहीं लाये गये ?

सप्ततितमः श्लोकः

श्रवणं समभागेन सर्वेषामिह दृश्यते ।
फलभेदः कुतो जातः प्रब्रुवन्तु हरिप्रियाः ॥७०॥

पदच्छेद—

श्रवणम् सम भागेन, सर्वेषाम् इह दृश्यते ।
फल भेदः कुतः जातः, प्रब्रुवन्तु हरि प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

श्रवणम्	३.	(कथा) श्रवण	फल, भेदः	६.	फल में, अन्तर
सम भागेन	४.	समान रूप से	कुतः	७.	क्यों
सर्वेषाम्	२.	सभी लोगों का	जातः	८.	हो गया
इह	१.	यहाँ	प्रब्रुवन्तु	१०.	बताएँ
दृश्यते ।	५.	हुआ है (किन्तु)	हरिप्रियाः ॥	९.	हे विष्णु के पार्षदगण !

श्लोकार्थ—यहाँ सभी लोगों का कथा श्रवण समानरूप से हुआ है; किन्तु फल में अन्तर क्यों हो गया ? हे विष्णु के पार्षदगण ! बतायें ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

हरिदासा ऊचुः— श्रवणस्य विभेदेन फलभेदोऽत्र संस्थितः।
श्रवणं तु कृतं सर्वैर्न तथा मननं कृतम्।
फलभेदस्ततो जातो भजनादपि मानद ॥७१॥

पदच्छेद— श्रवणस्य विभेदेन, फलभेदः अत्र संस्थितः।
श्रवणम् तु कृतम् सर्वैः, न तथा मननम् कृतम्।
फल भेदः ततः जातः, भजनात् अपि मानद ॥

शब्दार्थ—

श्रवणस्य	३.	(कथा) सुनने में	तथा	११.	उस प्रकार से
विभेदेन	४.	अन्तर होने से	मननम्	१२.	चिन्तन
फल, भेदः	५.	फल में, भेद	कृतम्।	१४.	किया है
अत्र	२.	यहाँ	फल, भेदः	१८.	फल में, भिन्नता
संस्थितः।	६.	हो गया	ततः	१५.	अतः
श्रवणम्	७.	(कथा का) श्रवण	जातः	१९.	हो जाती (है)
तु	१०.	किन्तु	भजनात्	१६.	भजन करने पर
कृतम्	९.	किया (है)	अपि	१७.	भी
सर्वैः	८.	सबने	मानद ॥	१.	हे सम्मानित गोकर्ण जी !
न	१३.	नहीं			

श्लोकार्थ—हे सम्मानित गोकर्णजी ! यहाँ कथा सुनने में अन्तर होने से फल में भेद हो गया। कथा का श्रवण सबने किया है, किन्तु उस प्रकार से चिन्तन नहीं किया है। अतः भजन करने पर भी फल में भिन्नता हो जाती है।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

सप्तरात्रमुपोष्यैव प्रेतेन श्रवणं कृतम्।
मननादि तथा तेन स्थिरचित्ते कृतं भृशम् ॥७२॥

पदच्छेद— सप्तरात्रम् उपोष्य एव, प्रेतेन श्रवणम् कृतम्।
मनन आदि तथा तेन, स्थिर चित्ते कृतम् भृशम् ॥

शब्दार्थ—

सप्तरात्रम्	२.	सात रातों तक	मनन आदि	१०.	चिन्तन इत्यादि
उपोष्य	३.	उपवास करके	तथा	७.	तथा
एव	४.	ही	तेन	८.	उसने
प्रेतेन	१.	प्रेत ने	स्थिर, चित्ते	९.	शान्त, मन से
श्रवणम्	५.	(कथा का) श्रवण	कृतम्	१२.	किया है
कृतम्।	६.	किया है	भृशम् ॥	११.	खूब

श्लोकार्थ—प्रेत ने सात रातों तक उपवास करके ही कथा का श्रवण किया है तथा उसने शान्त मन से चिन्तन इत्यादि खूब किया है।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

अदृढं च हतं ज्ञानं प्रमादेन हतं श्रुतम् ।
संदिग्धो हि हतो मन्त्रो व्यग्रचित्तो हतो जपः ॥७३॥

पदच्छेद—

अदृढम् च हतम् ज्ञानम्, प्रमादेन हतम् श्रुतम् ।
संदिग्धः हि हतः मन्त्रः, व्यग्र चित्तः हतः जपः ॥

शब्दार्थ—

अदृढम्	१.	अस्थायी	संदिग्धः	७.	संदेह होते
च	११.	और	हि	८.	ही
हतम्	३.	समाप्त हो जाता है	हतः	१०.	अप्रभावी हो जाता है
ज्ञानम्	२.	ज्ञान	मन्त्रः	९.	मन्त्र
प्रमादेन	४.	आलस्य वश	व्यग्र चित्तः	१२.	अशान्त मन से
हतम्	६.	भूल जाते हैं	हतः	१४.	निष्फल हो जाता है
श्रुतम् ।	५.	वेदादि शास्त्र	जपः ॥	१३.	जप (भी)

श्लोकार्थ—अस्थायी ज्ञान समाप्त हो जाता है, आलस्य वश वेदादि शास्त्र भूल जाते हैं, सन्देह होते ही मन्त्र अप्रभावी हो जाता है और अशान्त-मन से जप भी निष्फल हो जाता है ।

चतुस्सप्ततितमः श्लोकः

अवैष्णवो हतो देशो हतं श्राद्धमपात्रकम् ।
हतमश्रोत्रिये दानमनाचारं हतं कुलम् ॥७४॥

पदच्छेद—

अवैष्णवः हतः देशः, हतम् श्राद्धम् अपात्रकम् ।
हतम् अश्रोत्रिये दानम्, अनाचारम् हतम् कुलम् ॥

शब्दार्थ—

अवैष्णवः	१.	विष्णु भक्तों से रहित	हतम्	९.	व्यर्थ (है तथा)
हतः	३.	तुच्छ (है)	अश्रोत्रिये	७.	वेद-विहीन को
देशः	२.	देश	दानम्	८.	दान देना
हतम्	६.	निन्दित (है)	अनाचारम्	१०.	आचार-हीन
श्राद्धम्	५.	श्राद्ध	हतम्	१२.	अशान्त (रहता है)
अपात्रकम् ।	४.	ब्राह्मण-विहीन	कुलम् ॥	११.	परिवार (भी)

श्लोकार्थ—विष्णु भक्तों से रहित देश तुच्छ है, ब्राह्मण-विहीन श्राद्ध निन्दित है, वेद-विहीन को दान देना व्यर्थ है तथा आचार-हीन परिवार भी अशान्त रहता है ।

पञ्चसप्ततितमः श्लोकः

विश्वासो गुरुवाक्येषु स्वस्मिन्दीनत्वभावना ।
मनोदोषजयश्चैव कथायां निश्चला मतिः ॥७५॥

पदच्छेद—

विश्वासः गुरु वाक्येषु, स्वस्मिन् दीनत्व भावना ।
मनः दोष जयः च एव, कथायाम् निश्चला मतिः ॥

शब्दार्थ—

विश्वासः	२.	विश्वास	जयः	७.	विजय
गुरु वाक्येषु	१.	गुरु के वचनों में	च	८.	और
स्वस्मिन्	३.	अपने में	एव	१२.	ही (फलदायक है)
दीनत्व	४.	दीनता के	कथायाम्	९.	कथा में
भावना ।	५.	भाव	निश्चला	१०.	स्थिर
मनः दोष	६.	मन के दोषों पर	मतिः ॥	११.	बुद्धि

श्लोकार्थ—गुरु के वचनों में विश्वास, अपने में दीनता के भाव, मन के दोषों पर विजय और कथा में स्थिर-बुद्धि ही फलदायक है ।

षट्सप्ततितमः श्लोकः

एवमादि कृतं चेत्स्यात्तदा वै श्रवणे फलम् ।
पुनः श्रवान्ते सर्वेषां वैकुण्ठे वसतिर्ध्रुवम् ॥७६॥

पदच्छेद—

एवम् आदि कृतम् चेत् स्यात्, तदा वै श्रवणे फलम् ।
पुनः श्रव अन्ते सर्वेषाम् , वैकुण्ठे वसतिः ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

एवम् आदि	२.	इस प्रकार से	**पुनः**	८.	(इस प्रकार) फिर से
कृतम्	३.	(कथा) सुनी गयी	**श्रव**	९.	(कथा) सुनने
चेत्	१.	यदि	**अन्ते**	१०.	पर
स्यात्	४.	हो	**सर्वेषाम्**	११.	सबका
तदा वै	५.	तभी	**वैकुण्ठे**	१२.	वैकुण्ठ लोक में
श्रवणे	६.	सुनने का	**वसतिः**	१३.	निवास
फलम् ।	७.	फल (मिलता है)	**ध्रुवम् ॥**	१४.	निश्चित (है)

श्लोकार्थ—यदि इस प्रकार से कथा सुनी गयी हो तभी सुनने का फल मिलता है । इस प्रकार फिर से कथा सुनने पर सबका वैकुण्ठलोक में निवास निश्चित है ।

सप्तसप्ततितमः श्लोकः

गोकर्ण तव गोविन्दो गोलोकं दास्यति स्वयम् ।
एवमुक्त्वा ययुः सर्वे वैकुण्ठं हरिकीर्तनाः ॥७७॥

पदच्छेद—

गोकर्ण तव गोविन्दः, गोलोकम् दास्यति स्वयम् ।
एवम् उक्त्वा ययुः सर्वे, वैकुण्ठम् हरि कीर्तनाः ॥

शब्दार्थ—

गोकर्ण	१. हे गोकर्ण जी !	**एवम्**	७. इस प्रकार
तव	४. आपको	**उक्त्वा**	८. कहकर
गोविन्दः	२. गोविन्द भगवान्	**ययुः**	१२. चले गये
गोलोकम्	५. गोलोक धाम	**सर्वे**	९. सभी
दास्यति	६. देंगे	**वैकुण्ठम्**	११. वैकुण्ठ लोक को
स्वयम् ।	३. स्वयम्	**हरि कीर्तनाः ॥**	१०. विष्णु-पार्षद

श्लोकार्थ—हे गोकर्ण जी ! गोविन्द भगवान् स्वयम् आपको गोलोक धाम देंगे, इस प्रकार कह कर सभी विष्णु-पार्षद वैकुण्ठ लोक को चले गये ।

अष्टसप्ततितमः श्लोकः

श्रावणे मासि गोकर्णः कथामूचे तथा पुनः ।
सप्तरात्रवतीं भूयः श्रवणं तैः कृतं पुनः ॥७८॥

पदच्छेद—

श्रावणे मासि गोकर्णः, कथाम् ऊचे तथा पुनः ।
सप्त रात्रवतीम् भूयः, श्रवणम् तैः कृतम् पुनः ॥

शब्दार्थ—

श्रावणे	३. सावन के	**सप्त रात्रवतीम्**	५. सात रातों वाली
मासि	४. महीने में	**भूयः**	९. तथा
गोकर्णः	२. गोकर्ण जी ने	**श्रवणम्**	१२. श्रवण
कथाम्	६. श्रीमद्भागवत कथा	**तैः**	१०. उन (श्रोताओं ने)
ऊचे	८. कही	**कृतम्**	१३. किया
तथा	१. तदनन्तर	**पुनः ॥**	११. फिर से
पुनः ।	७. फिर से		

श्लोकार्थ—तदनन्तर गोकर्णजी ने सावन के महीने में सात रातों वाली श्रीमद्भागवतकथा फिर से कही तथा उन श्रोताओं ने फिर से श्रवण किया ।

एकोनाशीतितमः श्लोकः

कथासमाप्तौ यज्जातं श्रूयतां तच्च नारद ॥७९॥

पदच्छेद—

कथा समाप्तौ यद् जातम् , श्रूयताम् तद् च नारद ॥

शब्दार्थ—

कथा	३.	श्रीमद्भागवत कथा की	श्रूयताम्	८.	सुनें
समाप्तौ	४.	पूर्णाहुति पर	तद्	७.	उसे (आप)
यद्	५.	जो	च	१.	तथा
जातम्	६.	हुआ	नारद ॥	२.	हे नारद जी !

श्लोकार्थ—तथा हे नारदजी ! श्रीमद्भागवत कथा की पूर्णाहुति पर जो हुआ; उसे आप सुनें ।

अशीतितमः श्लोकः

विमानैः सह भक्तैश्च हरिराविर्बभूव ह ।
जयशब्दा नमश्शब्दास्तत्रासन् बहवस्तदा ॥८०॥

पदच्छेद—

विमानैः सह भक्तैः च, हरिः आविर्बभूव ह ।
जय शब्दाः नमः शब्दाः, तत्र आसन् बहवः तदा ॥

शब्दार्थ—

विमानैः	३.	विमानों	जय शब्दाः	१०.	जय-जयकार की ध्वनि (और)
सह	६.	साथ (वहाँ)	नमः	११.	नमोनमः की
भक्तैः	५.	भक्तों के	शब्दाः	१२.	ध्वनि
च	४.	और	तत्र	९.	वहाँ पर
हरिः	२.	भगवान् श्री हरि	आसन्	१४.	होती रही
आविर्बभूव	७.	प्रकट हुए	बहवः	१३.	बहुत समय तक
ह ।	८.	तथा	तदा ॥	१.	उस समय

श्लोकार्थ—उस समय भगवान् श्री हरि विमानों और भक्तों के साथ वहाँ प्रकट हुए तथा वहाँ पर जय-जयकार की ध्वनि और नमोनमः की ध्वनि बहुत समय तक होती रही ।

एकाशीतितमः श्लोकः

पाञ्चजन्यध्वनिं चक्रे हर्षात्तत्र स्वयं हरिः ।
गोकर्णं तु समालिङ्ग्याकरोत्स्वसदृशं हरिः ॥८१॥

पदच्छेद—

पाञ्चजन्य ध्वनिम् चक्रे, हर्षात् तत्र स्वयम् हरिः ।
गोकर्णम् तु समालिङ्ग्य, अकरोत् स्व सदृशम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

पाञ्चजन्य	५. पाञ्चजन्य शंख का	गोकर्णम्	१०. गोकर्ण जी का
ध्वनिम्	६. नाद	तु	८. तथा
चक्रे	७. किया	समालिङ्ग्य	११. आलिगन करके (उन्हें)
हर्षात्	४. प्रसन्नता से	अकरोत्	१४. बना लिया
तत्र	१. वहाँ पर	स्व	१२. अपने
स्वयम्	३. अपने आप	सदृशम्	१३. समान
हरिः ।	२. भगवान् श्रीहरि ने	हरिः ॥	९. भगवान् श्रीहरि ने

श्लोकार्थ—वहाँ पर भगवान् श्रीहरि ने अपने आप प्रसन्नता से पाञ्चजन्य शंख का नाद किया तथा भगवान् श्रीहरि ने गोकर्ण जी का आलिगन करके उन्हें अपने समान बना लिया ।

द्व्यशीतितमः श्लोकः

श्रोतॄनन्यान् घनश्यामान् पीतकौशेयवाससः ।
किरीटिनः कुण्डलिनस्तथा चक्रे हरिः क्षणात् ॥८२॥

पदच्छेद—

श्रोतॄन् अन्यान् घनश्यामान् , पीत कौशेय वाससः ।
किरीटिनः कुण्डलिनः, तथा चक्रे हरिः क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

श्रोतॄन्	३. श्रोताओं को	कुण्डलिनः	१०. कुण्डलों से युक्त
अन्यान्	२. दूसरे	तथा	९. तथा
घनश्यामान्	५. मेघ के समान साँवला	चक्रे	११. बना दिया
पीतकौशेय	६. पीताम्बर	हरिः	१. भगवान् श्री हरि ने
वाससः ।	७. धारी	क्षणात् ॥	४. क्षण भर में
किरीटिनः	८. मुकुट से सुशोभित		

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीहरि ने दूसरे श्रोताओं को क्षण भर में मेघ के समान साँवला, पीताम्बर धारी, मुकुट से सुशोभित तथा कुण्डलों से युक्त बना दिया ।

त्र्यशीतितमः श्लोकः

तद्ग्रामे ये स्थिता जीवा आश्वचाण्डालजातयः ।
विमाने स्थापितास्तेऽपि गोकर्णकृपया तदा ॥८३॥

पदच्छेद— तद् ग्रामे ये स्थिताः जीवाः, आ श्वन् चाण्डाल जातयः ।
विमाने स्थापिताः ते अपि, गोकर्ण कृपया तदा ॥

शब्दार्थ—

तद्, ग्रामे	२. उस, गाँव में	जातयः ।	५. जाति
ये	७. जो	विमाने, स्थापिताः	१४. विमान में, बैठा लिये गये
स्थिताः	९. विद्यमान थे	ते	१२. वे
जीवाः	८. प्राणी	अपि	१३. सभी
आ	६. तक	गोकर्ण	१०. गोकर्णजी की
श्वन्	३. कुत्ते से लेकर	कृपया	११. कृपा से
चाण्डाल	४. चण्डाल	तदा ॥	१. उस समय

श्लोकार्थ—उस समय उस गाँव में कुत्ते से लेकर चण्डाल जाति तक जो प्राणी विद्यमान थे, गोकर्णजी की कृपा से वे सभी विमान में बैठा लिये गये ।

चतुरशीतितमः श्लोकः

प्रेषिता हरिलोके ते यत्र गच्छन्ति योगिनः ।
गोकर्णेन स गोपालो गोलोकं गोपवल्लभम् ।
कथाश्रवणतः प्रीतो निर्ययौ भक्तवत्सलः ॥८४॥

पदच्छेद— प्रेषिताः हरिलोके ते, यत्र गच्छन्ति योगिनः ।
गोकर्णेन सः गोपालः, गोलोकम् गोप वल्लभम् ।
कथा श्रवणतः प्रीतः, निर्ययौ भक्त वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

प्रेषिताः	४. भेज दिये गये	सः, गोपालः	९. वे, भगवान् श्रीकृष्ण
हरि लोके	३. वैकुण्ठ धाम को	गोलोकम्	१३. गोलोक धाम को
ते	२. वे सभी	गोप वल्लभम् ।	१२. ग्वालों के प्रिय
यत्र	५. जहाँ (कि)	कथा, श्रवणतः	१०. श्रीमद्भागवत कथा के, सुनने से
गच्छन्ति	७. जाते हैं (तथा)	प्रीतः	११. प्रसन्न होकर (गोकर्ण के साथ)
योगिनः ।	६. योगिजन	निर्ययौ	१४. चले गये
गोकर्णेन	१. गोकर्ण के द्वारा	भक्त, वत्सलः ॥	८. भक्त, हितकारी

श्लोकार्थ—गोकर्ण के द्वारा वे सभी वैकुण्ठ धाम को भेज दिये गये, जहाँ कि योगिजन जाते हैं तथा भक्त-हितकारी वे भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमद्भागवत कथा के सुनने से प्रसन्न होकर गोकर्ण के साथ ग्वालों के प्रिय गोलोक-धाम को चले गये ।

पञ्चाशीतितमः श्लोकः

अयोध्यावासिनः पूर्वं यथा रामेण संगताः ।
तथा कृष्णेन ते नीताः गोलोकं योगिदुर्लभम् ॥८५॥

पदच्छेद—

अयोध्या वासिनः पूर्वम्, यथा रामेण संगताः ।
तथा कृष्णेन ते नीताः, गोलोकम् योगि दुर्लभम् ॥

शब्दार्थ—

अयोध्या वासिनः	३.	अयोध्यापुरी के निवासी लोग	कृष्णेन	७.	भगवान् कृष्ण के द्वारा
पूर्वम्	२.	पहले (त्रेता युग में)	ते	८.	वे सब लोग
यथा	१.	जैसे	नीताः	१२.	पहुँचा दिये गये
रामेण	४.	राम जी के साथ	गोलोकम्	११.	गोलोक धाम को
संगताः ।	५.	चले गये	योगि	९.	योगियों को
तथा	६.	उसी प्रकार	दुर्लभम् ॥	१०.	दुर्लभ

श्लोकार्थ—जैसे पहले त्रेता युग में अयोध्यापुरी के निवासी लोग राम जी के साथ चले गये; उसी प्रकार भगवान् कृष्ण के द्वारा वे सब लोग योगियों को दुर्लभ गोलोक धाम को पहुँचा दिये गये ।

षडशीतितमः श्लोकः

यत्र सूर्यस्य सोमस्य सिद्धानां न गतिः कदा ।
तं लोकं हि गतास्ते तु श्रीमद्भागवतश्रवात् ॥८६॥

पदच्छेद—

यत्र सूर्यस्य सोमस्य, सिद्धानाम् न गतिः कदा ।
तम् लोकम् हि गताः ते तु, श्रीमद्भागवत श्रवात् ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	जहाँ	तम्, लोकम्	१३.	उस, धाम को
सूर्यस्य	२.	सूर्य का	हि	४.	और
सोमस्य	३.	चन्द्रमा का	गताः	१४.	चले गये
सिद्धानाम्	५.	सिद्धों का	ते	१२.	वे सब (लोग)
न	८.	नहीं (होता है)	तु	९.	किन्तु
गतिः	६.	जाना	श्रीमद्भागवत	१०.	श्रीमद्भागवत कथा के
कदा ।	७.	कभी	श्रवात् ॥	११.	सुनने से

श्लोकार्थ—जहाँ सूर्य का, चन्द्रमा का और सिद्धों का जाना कभी नहीं होता है; किन्तु श्रीमद्भागवत-कथा के सुनने से वे सब लोग उस धाम को चले गये ।

सप्ताशीतितमः श्लोकः

ब्रूमोऽत्र ते किं फलवृन्दमुज्ज्वलम् , सप्ताहयज्ञेन कथासु संचितम् ।
कर्णेन गोकर्णकथाक्षरो यैः, पीतश्च ते गर्भगता न भूयः ॥८७॥

पदच्छेद— ब्रूमः अत्र ते किम् फल वृन्दम् उज्ज्वलम् , सप्ताह यज्ञेन कथासु संचितम् ।
कर्णेन गोकर्ण कथा अक्षरः यैः, पीतः च ते गर्भ गताः न भूयः ॥

शब्दार्थ—

ब्रूमः	८.	कहें	गोकर्ण	११.	गोकर्ण जी की
अत्र, ते	५.	अब, आप लोगों से	कथा, अक्षरः	१२.	कथा के, शब्दों का
किम्	७.	क्या	यैः	९.	जिन्होंने
फल, वृन्दम्	४.	पुण्य, राशि के विषय में	पीतः	१३.	पान किया है
उज्ज्वलम्,	३.	निर्मल	च	६.	और
सप्ताह, यज्ञेन	१.	श्रीमद्भागवत सप्ताह, यज्ञ की	ते	१४.	वे (लोग)
कथासु, संचितम् ।	२.	कथाओं में, इकट्ठी की गयी	गर्भ, गताः, न	१६.	गर्भ में, गये, नहीं
कर्णेन	१०.	कान से	भूयः ॥	१५.	फिर से

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत सप्ताह-यज्ञ की कथाओं में इकट्ठी की गयी निर्मल पुण्यराशि के विषय में अब आप लोगों से और क्या कहें ? जिन्होंने कान से गोकर्ण जी की कथा के शब्दों का पान किया है; वे लोग फिर से गर्भ में नहीं गये ।

अष्टाशीतितमः श्लोकः

वाताम्बुपर्णाशनदेहशोषणैस्तपोभिरुग्रैश्चिरकालसंचितैः ।
योगैश्च संयान्ति न तां गतिं वै सप्ताहगाथाश्रवणेन यान्ति याम् ॥८८॥

पदच्छेद—
वात अम्बु पर्ण अशन देह शोषणैः, तपोभिः उग्रैः चिरकाल संचितैः ।
योगैः च संयान्ति न ताम् गतिम् वै, सप्ताह गाथा श्रवणेन यान्ति याम् ॥

शब्दार्थ—

वात, अम्बु	१.	वायु, जल और	संयान्ति, न	१०.	पाया जा सकता, नहीं
पर्ण, अशन	२.	पत्तों के, आहार से	ताम्, गतिम्	९.	उस, धाम को
देह, शोषणैः,	३.	शरीर को, सुखा देने वाली	वै	८.	निश्चयपूर्वक
तपोभिः, उग्रैः	४.	तपस्या के द्वारा, कठिन	सप्ताह	१२.	श्रीमद्भागवत सप्ताह की
चिरकाल, संचितैः ।	६.	बहुत समय से; इकट्ठी की गयी	गाथा, श्रवणेन	१३.	कथा को, सुनने से
योगैः	७.	योग साधनाओं के द्वारा	यान्ति	१४.	प्राप्त किया जाता है
च	५.	और	याम् ॥	११.	जिस (धाम) को

श्लोकार्थ—वायु, जल और पत्तों के आहार से शरीर को सुखा देने वाली कठिन तपस्या के द्वारा और बहुत समय से इकट्ठी की गयी योग साधनाओं के द्वारा निश्चयपूर्वक उस धाम को नहीं पाया जा सकता; जिस धाम को श्रीमद्भागवत सप्ताह की कथा को सुनने से प्राप्त किया जाता है ।

एकोननवतितमः श्लोकः

इतिहासमिमं पुण्यं शाण्डिल्योऽपि मुनीश्वरः ।
पठते चित्रकूटस्थो ब्रह्मानन्दपरिप्लुतः ॥८९॥

पदच्छेद—

इतिहासम् इमम् पुण्यम्, शाण्डिल्यः अपि मुनीश्वरः ।
पठते चित्रकूटस्थः, ब्रह्मानन्द परिप्लुतः ॥

शब्दार्थ—

इतिहासम्	९.	इतिहास को	मुनीश्वरः ।	४.	मुनीश्वर
इमम्	७.	इस	पठते	१०.	पढ़ते हैं
पुण्यम्	८.	पवित्र	चित्रकूटस्थः	१.	चित्रकूट में स्थित होकर
शाण्डिल्यः	५.	शाण्डिल्य	ब्रह्मानन्द	२.	ब्रह्मानन्द में
अपि	६.	भी	परिप्लुतः ॥	३.	डूबे हुए

श्लोकार्थ—चित्रकूट में स्थित होकर ब्रह्मानन्द में डूबे हुए मुनीश्वर शाण्डिल्य भी इस पवित्र इतिहास को पढ़ते हैं ।

नवतितमः श्लोकः

आख्यानमेतत्परमं पवित्रं श्रुतं सकृद्वै विदहेदघौघम् ।
श्राद्धे प्रयुक्तं पितृतृप्तिमावहेन्नित्यं सुपाठादपुनर्भवं च ॥९०॥

पदच्छेद—

आख्यानम् एतद् परमम् पवित्रम्, श्रुतम् सकृत् वै विदहेत् अघ ओघम् ।
श्राद्धे प्रयुक्तम् पितृ तृप्तिम् आवहेत्, नित्यम् सुपाठात् अपुनर्भवम् च ॥

शब्दार्थ—

आख्यानम्	२.	कथा	श्राद्धे	९.	श्राद्ध में
एतद्	१.	यह	प्रयुक्तम्	१०.	पाठ करने पर
परमम्, पवित्रम्	३.	अत्यन्त, पवित्र (है)	पितृ, तृप्तिम्	११.	पितरों को, संतोष
श्रुतम्	५.	सुनने पर	आवहेत्	१२.	प्रदान करती है
सकृत्	४.	एकबार	नित्यम्	१४.	प्रतिदिन
वै	६.	निश्चयपूर्वक	सुपाठात्	१५.	सुन्दर पाठ करने पर
विदहेत्	८.	जला देती है	अपुनर्भवम्	१६.	मोक्ष (देती है)
अघ, ओघम् ।	७.	पाप, समूह को	च ॥	१३.	तथा

श्लोकार्थ—यह कथा अत्यन्त पवित्र है, एकबार सुनने पर निश्चयपूर्वक पाप-समूह को जला देती है, श्राद्ध में पाठ करने पर पितरों को सन्तोष प्रदान करती है तथा प्रतिदिन सुन्दर पाठ करने पर मोक्ष देती है ।

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमहात्म्ये विप्रमोक्षो नाम पञ्चमः अध्यायः ॥५॥

अथ षष्ठः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

कुमारा ऊचुः—

अथ ते सम्प्रवक्ष्यामः सप्ताहश्रवणे विधिम् ।
सहायैर्वसुभिश्चैव प्रायः साध्यो विधिः स्मृतः ॥१॥

पदच्छेद—

अथ ते सम्प्रवक्ष्यामः, सप्ताह श्रवणे विधिम् ।
सहायैः वसुभिः च एव, प्रायः साध्यः विधिः स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	अब (मैं)	वसुभिः	११.	धन से
ते	२.	आपको	च	१०.	और
सम्प्रवक्ष्यामः	६.	बताऊँगा	एव	१२.	ही
सप्ताह	३.	श्रीमद्भागवत सप्ताह	प्रायः	८.	अधिकतर
श्रवणे	४.	सुनने की	साध्यः	१३.	सम्पन्न की जाने वाली
विधिम् ।	५	विधि को	विधिः	७.	(यह) विधि
सहायैः	९.	सहायकों	स्मृतः ॥	१४.	कही गयी है

श्लोकार्थ—अब मैं आपको श्रीमद्भागवत सप्ताह सुनने की विधि को बताऊँगा। यह विधि अधिकतर सहायकों और धन से ही सम्पन्न की जाने वाली कही गयी है।

द्वितीयः श्लोकः

दैवज्ञं तु समाहूय मुहूर्त्तं पृच्छ्य यत्नतः ।
विवाहे यादृशं वित्तं तादृशं परिकल्पयेत् ॥२॥

पदच्छेद—

दैवज्ञम् तु समाहूय, मुहूर्त्तम् पृच्छ्य यत्नतः ।
विवाहे यादृशम् वित्तम्, तादृशम् परिकल्पयेत् ॥

शब्दार्थ—

दैवज्ञम्	१.	ज्योतिषी को	विवाहे	६.	विवाह में
तु	३.	तथा	यादृशम्	७.	जितना
समाहूय	२.	बुलाकर	वित्तम्	८.	धन (लगता है)
मुहूर्त्तम्	४.	शुभ मुहूर्त्त	तादृशम्	१०.	उतना (धन)
पृच्छ्य	५.	पूछकर	परिकल्पयेत् ॥	११.	इकट्ठा करना चाहिए
यत्नतः ।	९.	प्रयत्न पूर्वक			

श्लोकार्थ—ज्योतिषी को बुलाकर तथा शुभ मुहूर्त्त पूछकर विवाह में जितना धन लगता है; प्रयत्न पूर्वक उतना धन इकट्ठा करना चाहिए।

तृतीयः श्लोकः

नभस्य आश्विनोर्जौ च मार्गशीर्षः शुचिर्नभाः ।
एते मासाः कथारम्भे श्रोतॄणां मोक्षसूचकाः ॥३॥

पदच्छेद—

नभस्यः आश्विन ऊर्जौ च, मार्गशीर्षः शुचिः नभाः ।
एते मासाः कथा आरम्भे, श्रोतॄणाम् मोक्ष सूचकाः ॥

शब्दार्थ—

नभस्यः	५.	भादो	**एते**	१०.	ये (छः)
आश्विन	६.	क्वार	**मासाः**	११.	महीने
ऊर्जौ	७.	कार्तिक	**कथा**	१.	श्रीमद्भागवत कथा
च	८.	और	**आरम्भे**	२.	प्रारम्भ करने में
मार्गशीर्षः	९.	अगहन	**श्रोतॄणाम्**	१२.	श्रोताओं के
शुचिः	३.	आषाढ़	**मोक्ष**	१३.	मोक्ष के
नभाः ।	४.	श्रावण	**सूचकाः ॥**	१४.	कारण (हैं)

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत कथा प्रारम्भ करने में आषाढ़, श्रावण, भादो, क्वार, कार्तिक और अगहन ये छः महीने श्रोताओं के मोक्ष के कारण हैं ।

चतुर्थः श्लोकः

मासानां विप्र हेयानि तानि त्याज्यानि सर्वथा ।
सहायाश्चेतरे तत्र कर्तव्याः सोद्यमाश्च ये ॥४॥

पदच्छेद—

मासानाम् विप्र हेयानि, तानि त्याज्यानि सर्वथा ।
सहायाः च इतरे तत्र, कर्तव्याः स उद्यमाः च ये ॥

शब्दार्थ—

मासानाम्	२.	महीनों में	**च**	८.	और
विप्र	१.	हे विप्र !	**इतरे**	११.	(उन) अन्य लोगों को
हेयानि	३.	(जो) निन्दित (हैं)	**तत्र**	५.	सप्ताह-यज्ञ में
तानि	४.	उन्हें	**कर्तव्याः**	१४.	बनाना चाहिये
त्याज्यानि	७.	छोड़ देना चाहिये	**स उद्यमाः**	१०.	परिश्रमी (हैं)
सर्वथा ।	६.	बिल्कुल	**च**	१२.	भी
सहायाः	१३.	सहायक	**ये ॥**	९.	जो

श्लोकार्थ—हे विप्र ! महीनों में जो निन्दित हैं, उन्हें सप्ताह-यज्ञ में बिल्कुल छोड़ देना चाहिये और जो परिश्रमी हैं, उन अन्य लोगों को भी सहायक बनाना चाहिये ।

पञ्चमः श्लोकः

देशे देशे तथा सेयं वार्ता प्रेष्या प्रयत्नतः ।
भविष्यति कथा चात्र आगन्तव्यं कुटुम्बिभिः ॥५॥

पदच्छेद—

देशे देशे तथा सा इयम्, वार्ता प्रेष्या प्रयत्नतः ।
भविष्यति कथा च अत्र, आगन्तव्यम् कुटुम्बिभिः ॥

शब्दार्थ—

देशे	२. प्रत्येक		प्रयत्नतः ।	७. प्रयासपूर्वक
देशे	३. स्थान पर		भविष्यति	१२. होगी (आपको)
तथा	१. तथा		कथा	११. श्रीमद्भागवत की कथा
सा	४. कथा सुनने के		च	९. कि
इयम्	५. इस		अत्र	१०. यहाँ पर
वार्ता	६. समाचार को		आगन्तव्यम्	१४. आना चाहिये
प्रेष्या	८. भेजना चाहिए		कुटुम्बिभिः ॥	१३. परिवार के साथ

श्लोकार्थ—तथा प्रत्येक स्थान पर कथा सुनने के इस समाचार को प्रयासपूर्वक भेजना चाहिए कि यहाँ पर श्रीमद्भागवत की कथा होगी। आपको परिवार के साथ आना चाहिए।

षष्ठः श्लोकः

दूरेहरिकथाः केचिद् दूरेचाच्युतकीर्तनाः ।
स्त्रियः शूद्रादयो ये च तेषां बोधो यतो भवेत् ॥६॥

पदच्छेद—

दूरे हरि कथाः केचित्, दूरे च अच्युत कीर्तनाः ।
स्त्रियः शूद्र आदयः ये च, तेषाम् बोधः यतः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

दूरे	७. दूर		शूद्र	३. शूद्र
हरि कथाः	६. भगवान् की कथा से		आदयः	४. इत्यादि
केचित्	९. कुछ (जो)		ये	५. जो
दूरे	१२. अलग (हो गये हैं)		च	२. और
च	८. तथा		तेषाम्	१३. उन्हें (भी)
अच्युत	१०. श्री कृष्ण के		बोधः	१४. सूचना
कीर्तनाः ।	११. भजन से		यतः	१६. ऐसा उपाय करना चाहिए
स्त्रियः	१. स्त्रियाँ		भवेत् ॥	१५. हो जाय

श्लोकार्थ—स्त्रियाँ और शूद्र इत्यादि जो भगवान् की कथा से दूर तथा कुछ जो श्रीकृष्ण के भजन से अलग हो गये हैं, उन्हें भी सूचना हो जाय, ऐसा उपाय करना चाहिए।

सप्तमः श्लोकः

देशे देशे विरक्ता ये वैष्णवाः कीर्तनोत्सुकाः ।
तेष्वेव पत्रं प्रेष्यं च तल्लेखनमितीरितम् ॥७॥

पदच्छेद—

देशे देशे विरक्ताः ये, वैष्णवाः कीर्तन उत्सुकाः ।
तेषु एव पत्रम् प्रेष्यम् च, तद् लेखनम् इति ईरितम् ॥

शब्दार्थ—

देशे	१.	स्थान	एव	९.	अवश्य
देशे	२.	स्थान पर	पत्रम्	१०.	पत्र
विरक्ताः	६.	वैरागी (और)	प्रेष्यम्	११.	भेजना चाहिए
ये	५.	जो	च	१२.	तथा
वैष्णवाः	७.	वैष्णव जन (हैं)	तद्	१३.	उस (पत्र) का
कीर्तन	३.	भजन के	लेखनम्	१४.	लेख
उत्सुकाः ।	४.	प्रेमी	इति	१५.	ऐसा
तेषु	८.	उनके पास	ईरितम् ॥	१६.	होना चाहिए

श्लोकार्थ—स्थान-स्थान पर भजन के प्रेमी जो वैरागी और वैष्णव जन हैं, उनके पास अवश्य पत्र भेजना चाहिए तथा उस पत्र का लेख ऐसा होना चाहिए ।

अष्टमः श्लोकः

सतां समाजो भविता सप्तरात्रं सुदुर्लभः ।
अपूर्वरसरूपैव कथा चात्र भविष्यति ॥८॥

पदच्छेद—

सताम् समाजः भविता, सप्तरात्रम् सुदुर्लभः ।
अपूर्व रस रूपा एव, कथा च अत्र भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

सताम्	३.	सज्जनों का	रस रूपा	१०.	रस से पूर्ण
समाजः	५.	समागम	एव	८.	निश्चय ही
भविता	६.	होगा	कथा	११.	श्रीमद्भागवत की कथा
सप्तरात्रम्	२.	सात रात्रों तक	च	७.	तथा
सुदुर्लभः ।	४.	बड़ा दुर्लभ	अत्र	१.	यहाँ पर
अपूर्व	९.	अद्भुत	भविष्यति ॥	१२.	होगी

श्लोकार्थ—यहाँ पर सात रातों तक सज्जनों का बड़ा दुर्लभ समागम होगा तथा निश्चय ही अद्भुत रस से पूर्ण श्रीमद्भागवत की कथा होगी ।

नवमः श्लोकः

श्रीभागवतपीयूषपानाय रसलम्पटाः ।
भवन्तश्च तथा शीघ्रमायात प्रेमतत्पराः ॥९॥

पदच्छेद—

श्रीभागवत पीयूष, पानाय रस लम्पटाः ।
भवन्तः च तथा शीघ्रम्, आयात प्रेम तत्पराः ॥

शब्दार्थ—

श्रीभागवत	६.	श्रीमद्भागवत कथारूपी	च	३.	और
पीयूष	७.	अमृत का	तथा	१.	तथा
पानाय	८.	पान करने के लिए	शीघ्रम्	९.	तत्काल
रस लम्पटाः ।	२.	रस के लोभी	आयात	१०.	पधारें
भवन्तः	५.	आप लोग	प्रेम तत्पराः ॥	४.	प्रेम में मतवाले

श्लोकार्थ—तथा रस के लोभी और प्रेम में मतवाले आप लोग श्रीमद्भागवत कथारूपी अमृत का पान करने के लिए तत्काल पधारें ।

दशमः श्लोकः

नावकाशः कदाचिच्चेद्दिनमात्रं तथापि तु ।
सर्वथाऽऽगमनं कार्यं क्षणोऽत्रैव सुदुर्लभः ॥१०॥

पदच्छेद—

न अवकाशः कदाचित् चेत्, दिनमात्रम् तथापि तु ।
सर्वथा आगमनम् कार्यम्, क्षणः अत्र एव सुदुर्लभः ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं (मिले)	सर्वथा	७.	अवश्य
अवकाशः	३.	समय	आगमनम्	८.	उपस्थित
कदाचित्	२.	कदाचित्	कार्यम्	९.	हों
चेत्	१.	यदि (आपको)	क्षणः	१२.	एक क्षण
दिन मात्रम्	६.	एक ही दिन के लिए	अत्र	११.	यहाँ का
तथापि	५.	तो भी	एव	१३.	भी
तु ।	१०.	क्योंकि	सुदुर्लभः ॥	१४.	अत्यन्त दुर्लभ (है)

श्लोकार्थ—यदि आपको कदाचित् समय नहीं मिले, तो भी एक ही दिन के लिए अवश्य उपस्थित हों, क्योंकि यहाँ का एक क्षण भी अत्यन्त दुर्लभ है ।

एकादशः श्लोकः

एवमाकारणं तेषां कर्तव्यं विनयेन च ।
आगन्तुकानां सर्वेषां वासस्थानानि कल्पयेत् ॥११॥

पदच्छेद—

एवम् आकारणम् तेषाम्, कर्तव्यम् विनयेन च ।
आगन्तुकानाम् सर्वेषाम्, वास स्थानानि कल्पयेत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	च ।	६.	और
आकारणम्	४.	आमन्त्रण	आगन्तुकानाम्	७.	आये हुए
तेषाम्	३.	उनका	सर्वेषाम्	८.	सभी जनों के
कर्तव्यम्	५.	करना चाहिए	वास, स्थानानि	९.	रहने के वास्ते, स्थान
विनयेन	२.	विनीतभाव से	कल्पयेत् ॥	१०.	बनाना चाहिए

श्लोकार्थ—इस प्रकार विनीत भाव से उनका आमन्त्रण करना चाहिए और आये हुए सभी जनों के रहने के वास्ते स्थान बनाना चाहिए ।

द्वादशः श्लोकः

तीर्थे वापि वने वापि गृहे वा श्रवणं मतम् ।
विशाला वसुधा यत्र कर्तव्यं तत् कथास्थलम् ॥१२॥

पदच्छेद—

तीर्थे वापि वने वापि, गृहे वा श्रवणम् मतम् ।
विशाला वसुधा यत्र, कर्तव्यम् तत् कथा स्थलम् ॥

शब्दार्थ—

तीर्थे	१.	तीर्थ में	मतम् ।	८.	उत्तम (है)
वापि	२.	अथवा	विशाला	१०.	लम्बी-चौड़ी
वने	३.	वन में	वसुधा	११.	भूमि (हो)
वापि	४.	या	यत्र	९.	जहाँ पर
गृहे	५.	घर में	कर्तव्यम्	१४.	बनाना चाहिए
वा	६.	भी	तत्	१२.	उसे
श्रवणम्	७.	(कथा) सुनना	कथा स्थलम् ।	१३.	कथा का स्थान

श्लोकार्थ—तीर्थ में अथवा वन में या घर में भी कथा सुनना उत्तम है । जहाँ पर लम्बी-चौड़ी भूमि हो; उसे कथा का स्थान बनाना चाहिए ।

त्रयोदशः श्लोकः

शोधनं मार्जनं भूमेर्लेपनं धातुमण्डनम् ।
गृहोपस्करमुद्धृत्य गृहकोणे निवेशयेत् ॥१३॥

पदच्छेद—

शोधनम् मार्जनम् भूमेः, लेपनम् धातु मण्डनम् ।
गृह उपस्करम् उद्धृत्य, गृह कोणे निवेशयेत् ॥

शब्दार्थ—

शोधनम्	२. देखकर	मण्डनम् ।	६. सजावे (तथा)
मार्जनम्	३. झाड़े	गृह उपस्करम्	७. घर के, सामानों को
भूमेः	१. भूमि को	उद्धृत्य	८. उठाकर
लेपनम्	४. लीपे (और)	गृह कोणे	९. घर के कोने में
धातु	५. रंग-विरंगी गैरिकादि धातुओं से	निवेशयेत् ॥	१०. रख देना चाहिये

श्लोकार्थ—भूमि को देखकर झाड़े, लीपे और रंग-विरंगी गैरिकादि धातुओं से सजावे तथा घर के सामानों को उठाकर घर के कोने में रख देना चाहिए ।

चतुर्दशः श्लोकः

अर्वाक्पञ्चाहतो यत्नादास्तीर्णानि प्रमेलयेत् ।
कर्तव्यो मण्डपः प्रोच्चैः कदलीखण्डमण्डितः ॥१४॥

पदच्छेद—

अर्वाक् पञ्च अहतः यत्नात्, आस्तीर्णानि प्रमेलयेत् ।
कर्तव्यः मण्डपः प्रोच्चैः, कदली खण्ड मण्डितः ॥

शब्दार्थ—

अर्वाक्	३. पहले से (ही)	कर्तव्यः	१२. बनाना चाहिए
पञ्च	१. पाँच	मण्डपः	११. मण्डप
अहतः	२. दिन	प्रोच्चैः	१०. ऊँचा
यत्नात्	४. परिश्रम के साथ	कदली	७. केले के
आस्तीर्णानि	५. विस्तरों को	खण्ड	८. खम्भों से
प्रमेलयेत् ।	६. इकट्ठा करना चाहिए (तथा)	मण्डितः ॥	९. सुशोभित (एक)

श्लोकार्थ—पाँच दिन पहले से ही परिश्रम के साथ विस्तरों को इकट्ठा करना चाहिए तथा केले के खम्भों से सुशोभित एक ऊँचा मण्डप बनाना चाहिए ।

पञ्चदशः श्लोकः

फलपुष्पदलैर्विष्वग्वितानेन विराजितः ।
चतुर्दिक्षु ध्वजारोपो बहुसम्पद्विराजितः ॥१५॥

पदच्छेद—

फल पुष्प दलैः विष्वक्, वितानेन विराजितः ।
चतुर् दिक्षु ध्वज आरोपः, बहु सम्पद् विराजितः ॥

शब्दार्थ—

फल	२. फल	चतुर् दिक्षु	७. चारों दिशाओं में
पुष्प	३. फूल और	ध्वज	८. पताका
दलैः	४. पत्तों से (तथा)	आरोपः	९. लगावे (और)
विष्वक्	१. (मण्डप के) चारों ओर	बहु	१०. बहुत सी
वितानेन	५. चँदोवे से	सम्पद्	११. मांगलिक वस्तुओं से
विराजितः ।	६. अलंकृत (करे)	विराजितः ॥	१२. सजावे

श्लोकार्थ—मण्डप के चारों ओर फल, फूल और पत्तों से तथा चँदोवे से अलंकृत करे, चारों दिशाओं में पताका लगावे और बहुत सी मांगलिक वस्तुओं से सजावे ।

षोडशः श्लोकः

ऊर्ध्वं सप्तैव लोकाश्च कल्पनीयाः सविस्तरम् ।
तेषु विप्रा विरक्ताश्च स्थापनीयाः प्रबोध्य च ॥१६॥

पदच्छेद—

ऊर्ध्वम् सप्त एव लोकाः च, कल्पनीयाः सविस्तरम् ।
तेषु विप्राः विरक्ताः च, स्थापनीयाः प्रबोध्य च ॥

शब्दार्थ—

ऊर्ध्वम्	२. (मण्डप के) आगे	तेषु	९. उनमें
सप्त	४. सात	विप्राः	१०. ब्राह्मणों
एव	५. ही	विरक्ताः	१२. वैरागियों को
लोकाः	६. बैठक	च	८. और
च	१. तथा	स्थापनीयाः	१४. बैठावे
कल्पनीयाः	७. बनावे	प्रबोध्य	१३. बुलाकर
सविस्तरम् ।	३. विस्तार पूर्वक	च ॥	११. तथा

श्लोकार्थ—तथा मण्डप के आगे विस्तार-पूर्वक सात ही बैठक बनावे और उनमें ब्राह्मणों तथा वैरागियों को बुलाकर बैठावे ।

सप्तदशः श्लोकः

पूर्वं तेषामासनानि कर्तव्यानि यथोत्तरम् ।
वक्तुश्चापि तदा दिव्यमासनं परिकल्पयेत् ॥१७॥

पदच्छेद—

पूर्वम् तेषाम् आसनानि, कर्तव्यानि यथोत्तरम् ।
वक्तुः च अपि तदा दिव्यम् , आसनम् परिकल्पयेत् ॥

शब्दार्थ—

पूर्वम्	१.	पहले	च	६.	और
तेषाम्	२.	उन (ब्राह्मणों और विरक्तों) के	अपि	९.	भी
आसनानि	३.	आसनों को	तदा	७.	उस समय
कर्तव्यानि	५.	लगाना चाहिए	दिव्यम्	१०.	एक सुन्दर
यथोत्तरम् ।	४.	क्रम से	आसनम्	११.	आसन
वक्तुः	८.	वक्ता का	परिकल्पयेत् ॥	१२.	बिछावे

श्लोकार्थ—पहले उन ब्राह्मणों और विरक्तों के आसनों को क्रम से लगाना चाहिए और उस समय वक्ता का भी एक सुन्दर आसन बिछावे ।

अष्टादशः श्लोकः

उदङ्मुखो भवेद्वक्ता श्रोता वै प्राङ्मुखस्तदा ।
प्राङ्मुखश्चेद्भवेद्वक्ता श्रोता चोदङ्मुखस्तदा ॥१८॥

पदच्छेद—

उदङ् मुखः भवेत् वक्ता, श्रोता वै प्राङ् मुखः तदा ।
प्राङ् मुखः चेत् भवेत् वक्ता, श्रोता च उदङ् मुखः तदा ॥

शब्दार्थ—

उदङ् मुखः	२.	उत्तर मुख	चेत्	१०.	यदि
भवेत्	३.	होवे	भवेत्	१२.	हों
वक्ता	१.	कथावाचक	वक्ता	९.	कथावाचक
श्रोता	५.	सुनने वाले को	श्रोता	१४.	सुनने वाले को
वै	७.	ही (बैठना चाहिए)	च	८.	और
प्राङ् मुखः	६.	पूर्वमुख	उदङ् मुखः	१५.	उत्तर मुख (बैठना चाहिये)
तदा ।	४.	तो	तदा ॥	१३.	तो
प्राङ् मुखः	११.	पूर्वमुख			

श्लोकार्थ—कथावाचक उत्तरमुख होवे तो सुनने वाले को पूर्वमुख ही बैठना चाहिए और कथावाचक यदि पूर्वमुख हों तो सुनने वाले को उत्तरमुख बैठना चाहिए ।

एकोनविंशः श्लोकः

अथवा पूर्वदिग्ज्ञेया पूज्यपूजकमध्यतः ।
श्रोतृणामागमे प्रोक्ता देशकालादिकोविदैः ॥१९॥

पदच्छेद—

अथवा पूर्व दिक् ज्ञेया, पूज्य पूजक मध्यतः ।
श्रोतृणाम् आगमे प्रोक्ता, देश काल आदि कोविदैः ॥

शब्दार्थ—

अथवा	१. अथवा	श्रोतृणाम्	१०. श्रोताओं के लिए
पूर्व दिक्	५. पूर्व दिशा	आगमे	११. (यही) नियम
ज्ञेया	६. रहनी चाहिए	प्रोक्ता	१२. कहा है
पूज्य	२. वक्ता और	देश काल	७. देश-काल
पूजक	३. श्रोता के	आदि	८. इत्यादि के
मध्यतः ।	४. बीच	कोविदैः ॥	९. विद्वानों ने

श्लोकार्थ—अथवा वक्ता और श्रोता के बीच पूर्व दिशा रहनी चाहिए । देश-काल इत्यादि के विद्वानों ने श्रोताओं के लिए यही नियम कहा है ।

विंशः श्लोकः

विरक्तो वैष्णवो विप्रो वेदशास्त्रविशुद्धिकृत् ।
दृष्टान्तकुशलो धीरो वक्ता कार्योऽतिनिःस्पृहः ॥२०॥

पदच्छेद—

विरक्तः वैष्णवः विप्रः, वेद शास्त्र विशुद्धि कृत् ।
दृष्टान्त कुशलः धीरः, वक्ता कार्यः अति निःस्पृहः ॥

शब्दार्थ—

विरक्तः	८. वैरागी	दृष्टान्त	४. उदाहरण देने में
वैष्णवः	९. वैष्णव	कुशलः	५. चतुर
विप्रः	१०. ब्राह्मण को	धीरः	६. गम्भीर (और)
वेद शास्त्र	१. वेद और शास्त्रों के अनुसार	वक्ता	११. कथावाचक
विशुद्धि	२. निर्मल	कार्यः	१२. बनाना चाहिए
कृत् ।	३. कर्म करने वाले	अति निःस्पृहः ॥	७. अत्यन्त निर्लोभी

श्लोकार्थ—वेद और शास्त्रों के अनुसार निर्मल कर्म करने वाले, उदाहरण देने में चतुर, गम्भीर और अत्यन्त निर्लोभी वैरागी वैष्णव ब्राह्मण को कथावाचक बनाना चाहिए ।

एकविंशः श्लोकः

अनेकधर्मविभ्रान्ताः स्त्रैणाः पाखण्डवादिनः ।
शुकशास्त्रकथोच्चारे त्याज्यास्ते यदि पण्डिताः ॥२१॥

पदच्छेद—

अनेक धर्म विभ्रान्ताः, स्त्रैणाः पाखण्ड वादिनः ।
शुक शास्त्र कथा उच्चारे, त्याज्याः ते यदि पण्डिताः ॥

शब्दार्थ—

अनेक	१.	अनेक	कथा	१०.	कथा के
धर्म	२.	धर्मों के	उच्चारे	११.	प्रवचन में
विभ्रान्ताः	३.	चक्कर में पड़े हुए	त्याज्याः	१२.	नहीं लेना चाहिए
स्त्रैणाः	४.	स्त्रियों के बीच रहने वाले	ते	८.	उसे
पाखण्ड वादिनः ।	५.	पाखण्ड के प्रचारक को	यदि	७.	भी
शुक शास्त्र	९.	श्रीमद्भागवत की	पण्डिताः ॥	६.	पण्डित होने पर

श्लोकार्थ— अनेक धर्मों के चक्कर में पड़े हुए, स्त्रियों के बीच रहने वाले तथा पाखण्ड के प्रचारक को पण्डित होने पर भी उसे श्रीमद्भागवत की कथा के प्रवचन में नहीं लेना चाहिये ।

द्वाविंशः श्लोकः

वक्तुः पार्श्वे सहायार्थमन्यः स्थाप्यस्तथाविधः ।
पण्डितः संशयच्छेत्ता लोकबोधनतत्परः ॥२२॥

पदच्छेद—

वक्तुः पार्श्वे सहायार्थम् , अन्यः स्थाप्यः तथाविधः ।
पण्डितः संशय छेत्ता, लोक बोधन तत्परः ॥

शब्दार्थ—

वक्तुः	१.	कथा वाचक के	पण्डितः	११.	विद्वान् को
पार्श्वे	२.	पास में	संशय	७.	संदेह
सहायार्थम्	३.	सहायता के लिए	छेत्ता	८.	मिटाने वाले
अन्यः	१०.	एक दूसरे	लोक	४.	लोगों को
स्थाप्यः	१२.	बैठाना चाहिए	बोधन	५.	समझाने में
तथाविधः ।	९.	उसी प्रकार के	तत्परः ॥	६.	कुशल (एवं)

श्लोकार्थ—कथावाचक के पास में सहायता के लिए लोगों को समझाने में कुशल एवं संदेह मिटाने वाले उसी प्रकार के एक दूसरे विद्वान् को बैठाना चाहिए ।

त्रयोविंशः श्लोकः

वक्त्रा क्षौरं प्रकर्तव्यं दिनादर्वाग्व्रताप्तये ।
अरुणोदयेऽसौ निर्वर्त्य शौचं स्नानं समाचरेत् ॥२३॥

पदच्छेद—

वक्त्रा क्षौरम् प्रकर्तव्यम् , दिनात् अर्वाक् व्रत आप्तये ।
अरुण उदये असौ निर्वर्त्य, शौचम् स्नानम् समाचरेत् ॥

शब्दार्थ—

वक्त्रा	१. कथावाचक	अरुण उदये	८. सूर्योदय से पूर्व
क्षौरम्	५. क्षौर कर्म	असौ	७. वह
प्रकर्तव्यम्	६. करा लेवे (तथा)	निर्वर्त्य	१०. निवृत्त होकर
दिनात्	३. एक दिन	शौचम्	९. शौचादि क्रियाओं से
अर्वाक्	४. पहले	स्नानम्	११. स्नान
व्रत आप्तये ।	२. व्रत करने के लिए	समाचरेत् ॥	१२. करे

श्लोकार्थ—कथावाचक व्रत करने के लिए एक दिन पहले क्षौर कर्म करा लेवे तथा वह सूर्योदय से पूर्व शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान करे ।

चतुर्विंशः श्लोकः

नित्यं संक्षेपतः कृत्वा सन्ध्याद्यं स्वं प्रयत्नतः ।
कथाविघ्नविघाताय गणनाथं प्रपूजयेत् ॥२४॥

पदच्छेद—

नित्यम् संक्षेपतः कृत्वा, सन्ध्या आद्यम् स्वम् प्रयत्नतः ।
कथा विघ्न विघाताय, गणनाथम् प्रपूजयेत् ॥

शब्दार्थ—

नित्यम्	१. (वह वक्ता) प्रतिदिन	प्रयत्नतः ।	१०. प्रयास-पूर्वक
संक्षेपतः	२. संक्षेप से	कथा	७. कथा की
कृत्वा	६. सम्पन्न करके	विघ्न	८. बाधाओं को
सन्ध्या	४. संध्या वन्दन	विघाताय	९. दूर करने के लिए
आद्यम्	५. इत्यादि कर्म को	गणनाथम्	११. गणेशजी का
स्वम्	३. अपने	प्रपूजयेत् ॥	१२. पूजन करे

श्लोकार्थ—वह वक्ता प्रतिदिन संक्षेप से अपने संध्या-वन्दन इत्यादि कर्म को सम्पन्न करके कथा की बाधाओं को दूर करने के लिए प्रयास-पूर्वक गणेश जी का पूजन करे ।

पञ्चविंशः श्लोकः

पितॄन् संतर्प्य शुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं समाचरेत् ।
मण्डलं च प्रकर्तव्यं तत्र स्थाप्यो हरिस्तथा ॥२५॥

पदच्छेद—

पितॄन् संतर्प्य शुद्ध्यर्थम् , प्रायश्चित्तम् समाचरेत् ।
मण्डलम् च प्रकर्तव्यम् , तत्र स्थाप्यः हरिः तथा ॥

शब्दार्थ—

पितॄन्	१.	पितरों का	च	६.	तदनन्तर
संतर्प्य	२.	तर्पण करके	प्रकर्तव्यम्	८.	निर्माण करे
शुद्ध्यर्थम्	३.	शरीर शुद्धि के लिए	तत्र	१०.	उसमें
प्रायश्चित्तम्	४.	प्रायश्चित्त	स्थाप्यः	१२.	स्थापना करे
समाचरेत् ।	५.	करे	हरिः	११.	भगवान् श्री हरि की
मण्डलम्	७.	सर्वतोभद्रमण्डल का	तथा ॥	९.	तथा

श्लोकार्थ—पितरों का तर्पण करके शरीर शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त करे। तदनन्तर सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण करे तथा उसमें भगवान् श्रीहरि की स्थापना करे।

षड्विंशः श्लोकः

कृष्णमुद्दिश्य मन्त्रेण चरेत्पूजाविधिं क्रमात् ।
प्रदक्षिणनमस्कारान् पूजान्ते स्तुतिमाचरेत् ॥२६॥

पदच्छेद—

कृष्णम् उद्दिश्य मन्त्रेण, चरेत् पूजा विधिम् क्रमात् ।
प्रदक्षिण नमस्कारान् , पूजा अन्ते स्तुतिम् आचरेत् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णम्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण को	प्रदक्षिण	१०.	प्रदक्षिणा (एवं)
उद्दिश्य	२.	ध्यान में रखकर	नमस्कारान्	११.	नमस्कार
मन्त्रेण	३.	मन्त्रों द्वारा	पूजा	७.	पूजा के
चरेत्	६.	सम्पन्न करे (और)	अन्ते	८.	अन्त में
पूजा, विधिम्	५.	पूजन, क्रिया को	स्तुतिम्	९.	प्रार्थना
क्रमात् ।	४.	क्रम से	आचरेत् ।	१२.	करे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण को ध्यान में रखकर मन्त्रों द्वारा क्रम से पूजन-क्रिया को सम्पन्न करे और पूजा के अन्त में प्रार्थना, प्रदक्षिणा एवम् नमस्कार करे।

सप्तविंशः श्लोकः

संसारसागरे मग्नं दीनं मां करुणानिधे ।
कर्ममोहगृहीताङ्गं मामुद्धर भवार्णवात् ॥२७॥

पदच्छेद—

संसार सागरे मग्नम् , दीनम् माम् करुणानिधे ।
कर्म मोह गृहीत अङ्गम्, माम् उद्धर भव अर्णवात् ॥

शब्दार्थ—

संसार	२.	संसार रूपी	मोह	७.	अज्ञान से
सागरे	३.	समुद्र में	गृहीत	८.	जकड़े हुए
मग्नम्	४.	डूबे हुए	अङ्गम्	९.	शरीर वाले
दीनम्	११.	अनाथ का	माम्	५.	तथा
माम्	१०.	मुझ	उद्धर	१४.	उद्धार करो
करुणानिधे ।	१.	हे दया के सागर !	भव	१२.	संसार रूपी
कर्म	६.	कर्म और	अर्णवात् ॥	१३.	सागर से

श्लोकार्थ—हे दया के सागर ! संसार रूपी समुद्र में डूबे हुए तथा कर्म और अज्ञान से जकड़े हुए शरीर वाले मुझ अनाथ का संसार रूपी सागर से उद्धार करो ।

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीमद्भागवतस्यापि ततः पूजा प्रयत्नतः ।
कर्तव्या विधिना प्रीत्या धूपदीपसमन्विता ॥२८॥

पदच्छेद—

श्रीमद्भागवतस्य अपि, ततः पूजा प्रयत्नतः ।
कर्तव्या विधिना प्रीत्या, धूप दीप समन्विता ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्भागवतस्य	२.	श्रीमद्भागवत पुराण का	कर्तव्या	१०.	करना चाहिए
अपि	३.	भी	विधिना	५.	विधि-विधान से
ततः	१.	तदनन्तर	प्रीत्या	६.	प्रेमपूर्वक
पूजा	९.	पूजन	धूप दीप	७.	धूप-दीप के
प्रयत्नतः ।	४.	प्रयत्नपूर्वक	समन्विता ॥	८.	साथ

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीमद्भागवत पुराण का भी प्रयत्न-पूर्वक विधि-विधान से प्रेम-पूर्वक धूप-दीप के साथ पूजन करना चाहिए ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

ततस्तु श्रीफलं धृत्वा नमस्कारं समाचरेत् ।
स्तुतिः प्रसन्नचित्तेन कर्तव्या केवलं तदा ॥२९॥

पदच्छेद—

ततः तु श्रीफलम् धृत्वा, नमस्कारम् समाचरेत् ।
स्तुतिः प्रसन्न चित्तेन, कर्तव्या केवलम् तदा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसके बाद	स्तुतिः	११.	प्रार्थना
तु	६.	तथा	प्रसन्न	८.	प्रसन्न
श्रीफलम्	२.	नारियल	चित्तेन	९.	मन से
धृत्वा	३.	चढ़ाकर	कर्तव्या	१२.	करनी चाहिये
नमस्कारम्	४.	प्रणाम	केवलम्	१०.	केवल
समाचरेत् ।	५.	करे	तदा ॥	७.	उस समय

श्लोकार्थ—उसके बाद नारियल चढ़ाकर प्रणाम करे तथा उस समय प्रसन्न मन से केवल प्रार्थना करनी चाहिये ।

त्रिंशः श्लोकः

श्रीमद्भागवताख्योऽयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि ।
स्वीकृतोऽसि मया नाथ मुक्त्यर्थं भवसागरे ॥३०॥

पदच्छेद—

श्रीमद्भागवत आख्यः अयम् , प्रत्यक्षः कृष्णः एव हि ।
स्वीकृतः असि मया नाथ, मुक्ति अर्थम् भव सागरे ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्भागवत	१.	श्रीमद्भागवत	स्वीकृतः	१३.	स्वीकार किये गये
आख्यः	२.	नाम का	असि	१४.	हैं
अयम्	३.	यह (पुराण)	मया	१२.	मेरे द्वारा
प्रत्यक्षः	४.	साक्षात्	नाथ	८.	हे स्वामिन् ! (आप)
कृष्णः	५.	भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का	मुक्ति अर्थम्	११.	मुक्ति के निमित्त
एव	६.	ही (रूप है)	भव	९.	संसार रूपी
हि ।	७.	अतः	सागरे ॥	१०.	सागर में

श्लोकार्थ—श्रीमद्भागवत नाम का यह पुराण साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण का ही रूप है । अतः हे स्वामिन् ! आप संसार रूपी सागर में मुक्ति के निमित्त मेरे द्वारा स्वीकार किये गये हैं ।

एकत्रिंशः श्लोकः

मनोरथो मदीयोऽयं सफलः सर्वथा त्वया ।
निर्विघ्नेनैव कर्तव्यो दासोऽहं तव केशव ॥३१॥

पदच्छेद—

मनोरथः मदीयः अयम् , सफलः सर्वथा त्वया ।
निर्विघ्नेन एव कर्तव्यः, दासः अहम् तव केशव ॥

शब्दार्थ—

मनोरथः	८.	मनोकामना को	निर्विघ्नेन	१०.	बिना बाधा के
मदीयः	६.	मेरी	एव	११.	ही
अयम्	७.	इस	कर्तव्यः	१३.	करें
सफलः	१२.	सफल	दासः	४.	दास (हूँ)
सर्वथा	९.	सब तरह से	अहम्	२.	मैं
त्वया ।	५.	आप	तव	३.	आपका
			केशव ॥	१.	हे केशव !

श्लोकार्थ—हे केशव ! मैं आपका दास हूँ। आप मेरी इस मनोकामना को सब तरह से बिना बाधा के ही सफल करें ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

एवं दीनवचः प्रोच्य वक्तारं चाथ पूजयेत् ।
सम्भूष्य वस्त्रभूषाभिः पूजान्ते तं च संस्तवेत् ॥३२॥

पदच्छेद—

एवम् दीन वचः प्रोच्य, वक्तारम् च अथ पूजयेत् ।
सम्भूष्य वस्त्र भूषाभिः, पूजा अन्ते तम् च संस्तवेत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	वस्त्र	८.	वस्त्रों और
दीन वचः	२.	दीनता से भरी वाणी	भूषाभिः	९.	आभूषणों से
प्रोच्य	३.	कह कर	पूजा	११.	पूजन के
वक्तारम्	५.	कथावाचक की	अन्ते	१२.	अन्त में
च अथ	४.	तदनन्तर	तम्	१३.	उनकी
पूजयेत् ।	६.	पूजा करे	च	७.	तथा (उनको)
सम्भूष्य	१०.	भूषित करके	संस्तवेत् ॥	१४.	स्तुति करे

श्लोकार्थ—इस प्रकार दीनता से भरी वाणी कह कर तदनन्तर कथावाचक की पूजा करे तथा उनको वस्त्रों और आभूषणों से भूषित करके पूजन के अन्त में उनकी स्तुति करे ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

शुकरूप प्रबोधज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
एतत्कथाप्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय ॥३३॥

पदच्छेद—

शुक रूप प्रबोधज्ञ, सर्व शास्त्र विशारद ।
एतद् कथा प्रकाशेन, मत् अज्ञानम् विनाशय ॥

शब्दार्थ—

शुक रूप	१. हे शुकदेव तुल्य !	कथा	६. श्रीमद्भागवत कथा के
प्रबोधज्ञ	२. ज्ञान सम्पन्न !	प्रकाशेन	७. प्रवचन से
सर्व शास्त्र	३. सभी शास्त्रों के	मत्	८. मेरे
विशारद ।	४. पण्डित ! (आप)	अज्ञानम्	९. अज्ञान को
एतद्	५. इस	विनाशय ॥	१०. दूर करें

श्लोकार्थ—हे शुकदेव तुल्य ! ज्ञान-सम्पन्न ! सभी शास्त्रों के पण्डित ! आप इस श्रीमद्भागवत कथा के प्रवचन से मेरे अज्ञान को दूर करें ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तदग्रे नियमः पश्चात्कर्तव्यः श्रेयसे मुदा ।
सप्तरात्रं यथाशक्त्या धारणीयः स एव हि ॥३४॥

पदच्छेद—

तद् अग्रे नियमः पश्चात् , कर्तव्यः श्रेयसे मुदा ।
सप्तरात्रम् यथाशक्त्या, धारणीयः सः एव हि ॥

शब्दार्थ—

तद्	२. उस (कथावाचक) की	मुदा ।	५. प्रसन्नता-पूर्वक
अग्रे	३. साक्षी में	सप्तरात्रम्	९. सात रातों तक
नियमः	६. व्रत	यथाशक्त्या	१०. शक्ति भर
पश्चात्	१. तदनन्तर	धारणीयः	१२. पालन करे
कर्तव्यः	७. धारण करे	सः एव	११. उसी (व्रत) का
श्रेयसे	४. कल्याण के लिए	हि ॥	८. तथा

श्लोकार्थ—तदनन्तर उस कथावाचक की साक्षी में कल्याण के लिए प्रसन्नता-पूर्वक व्रत धारण करे तथा सात रातों तक शक्ति भर उसी व्रत का पालन करे ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

वरणं पञ्चविप्राणां कथाभङ्गनिवृत्तये ।
कर्तव्यं तैर्हरेर्जाप्यं द्वादशाक्षरविद्यया ॥३५॥

पदच्छेद—

वरणम् पञ्च विप्राणाम्, कथा भङ्ग निवृत्तये ।
कर्तव्यम् तैः हरेः जाप्यम्, द्वादशाक्षर विद्यया ॥

शब्दार्थ—

वरणम्	६. वरण		**कर्तव्यम्**	७. करे (तथा)
पञ्च	४. पाँच		**तैः**	८. वे (ब्राह्मण)
विप्राणाम्	५. ब्राह्मणों का		**हरेः**	११. भगवान् श्री हरि का
कथा	१. कथा में		**जाप्यम्**	१२. जप करें
भङ्ग	२. बाधा के		**द्वादशाक्षर**	९. द्वादशाक्षर
निवृत्तये ।	३. निवारण के लिए		**विद्यया ॥**	१०. मन्त्र से

श्लोकार्थ—कथा में बाधा के निवारण के लिए पाँच ब्राह्मणों का वरण करे तथा वे ब्राह्मण द्वादशाक्षर मन्त्र से भगवान् श्री हरि का जप करें ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

ब्राह्मणान् वैष्णवांश्चान्यांस्तथा कीर्तनकारिणः ।
नत्वा सम्पूज्य दत्ताज्ञः स्वयमासनमाविशेत् ॥३६॥

पदच्छेद—

ब्राह्मणान् वैष्णवान् च अन्यान्, तथा कीर्तन कारिणः ।
नत्वा सम्पूज्य दत्त आज्ञः, स्वयम् आसनम् आविशेत् ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणान्	१. ब्राह्मणों		**नत्वा**	६. प्रणाम करके
वैष्णवान्	२. वैष्णवों		**सम्पूज्य**	८. पूजन करके (और)
च	३. और		**दत्त आज्ञः**	९. (उनसे) आज्ञा लेकर
अन्यान्	४. दूसरे		**स्वयम्**	१०. अपने
तथा	७. तथा		**आसनम्**	११. आसन पर
कीर्तन कारिणः ।	५. कीर्तन करने वालों को		**आविशेत् ॥**	१२. बैठे

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों, वैष्णवों और दूसरे कीर्तन करने वालों को प्रणाम करके तथा पूजन करके और उनसे आज्ञा लेकर अपने आसन पर बैठे ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

लोकवित्तधनागारपुत्रचिन्तां व्युदस्य च ।
कथाचित्तः शुद्धमतिः स लभेत्फलमुत्तमम् ॥३७॥

पदच्छेद—

लोक वित्त धन आगार, पुत्र चिन्ताम् व्युदस्य च ।
कथा चित्तः शुद्ध मतिः, सः लभेत् फलम् उत्तमम् ॥

शब्दार्थ—

लोक	१.	संसार की	कथा	९.	कथा में
वित्त	३.	अचल सम्पत्ति की	चित्तः	१०.	सावधान (एवं)
धन	२.	चल और	शुद्ध	११.	निर्मल
आगार	५.	घर और	मतिः	१२.	बुद्धि वाला
पुत्र	६.	सन्तान की	सः	१३.	वह (श्रोता)
चिन्ताम्	७.	चिन्ता को	लभेत्	१६.	प्राप्त करता है
व्युदस्य	८.	छोड़कर	फलम्	१५.	फल को
च ।	४.	तथा	उत्तमम् ॥	१४.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—संसार की, चल और अचल सम्पत्ति की तथा घर और सन्तान की चिन्ता को छोड़कर कथा में सावधान एवं निर्मल बुद्धिवाला वह श्रोता श्रेष्ठ फल को प्राप्त करता है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

आसूर्योदयमारभ्य सार्धत्रिप्रहरान्तकम् ।
वाचनीया कथा सम्यग्धीरकण्ठं सुधीमता ॥३८॥

पदच्छेद—

आ सूर्योदयम् आरभ्य, सार्धं त्रि प्रहर अन्तकम् ।
वाचनीया कथा सम्यक् , धीर कण्ठम् सुधीमता ॥

शब्दार्थ—

आ	७.	तक (तीन घण्टे का एक पहर)	वाचनीया	११.	कहनी चाहिए
सूर्योदयम्	२.	सूर्योदय से	कथा	१०.	सप्ताह कथा
आरभ्य	३.	प्रारम्भ करके	सम्यक्	८.	भली भाँति
सार्धं	४.	साढ़े	धीर कण्ठम्	९.	मधुर कण्ठ से
त्रि प्रहर	५.	तीन पहर के	सुधीमता ॥	१.	विद्वान् कथा वाचक को
अन्तकम् ।	६.	अन्त			

श्लोकार्थ—विद्वान् कथावाचक को सूर्योदय से प्रारम्भ करके साढ़े तीन पहर के अन्त तक भली-भाँति मधुर कण्ठ से सप्ताह-कथा कहनी चाहिए ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

कथाविरामः कर्तव्यो मध्याह्ने घटिकाद्वयम् ।
तत्कथामनु कार्यं वै कीर्तनं वैष्णवैस्तदा ॥३९॥

पदच्छेद—

कथा विरामः कर्तव्यः, मध्याह्ने घटिका द्वयम् ।
तद् कथाम् अनु कार्यम् वै, कीर्तनम् वैष्णवैः तदा ॥

शब्दार्थ—

कथा	४.	कथा का	कथाम्	८.	कथा के
विरामः	५.	विश्राम	अनु	९.	अन्त में
कर्तव्यः	६.	करे	कार्यम्	१४.	करें
मध्याह्ने	१.	दोपहर में	वै	१३.	अवश्य
घटिका	३.	घड़ी तक	कीर्तनम्	१२.	कीर्तन
द्वयम् ।	२.	दो	वैष्णवैः	११.	वैष्णव जन
तद्	७.	(तथा) उस	तदा ॥	१०.	उस समय

श्लोकार्थ—दोपहर में दो घड़ी तक कथा का विश्राम करे तथा उस कथा के अन्त में उस समय वैष्णव जन कीर्तन अवश्य करें ।

चत्वारिंशः श्लोकः

मलमूत्रजयार्थं हि लघ्वाहारः सुखावहः ।
हविष्यान्नेन कर्तव्यो ह्येकवारं कथार्थिना ॥४०॥

पदच्छेद—

मल मूत्र जयार्थम् हि, लघु आहारः सुख आवहः ।
हविष्य अन्नेन कर्तव्यः, हि एकवारम् कथा अर्थिना ॥

शब्दार्थ—

मल मूत्र	९.	मल और मूत्र को	अन्नेन	४.	अन्न से
जयार्थम्	१०.	वश में करने के लिए	कर्तव्यः	७.	आहार करें
हि	८.	क्योंकि	हि	६.	ही
लघु आहारः	११.	थोड़ा आहार	एकवारम्	५.	एक समय
सुख आवहः ।	१२.	सुखदायी (होता है)	कथा	१.	कथा के
हविष्य	३.	घी में पके	अर्थिना ॥	२.	श्रोता और वक्ता

श्लोकार्थ—कथा के श्रोता और वक्ता घी में पके अन्न से एक समय ही आहार करें; क्योंकि मल और मूत्र को वश में करने के लिए थोड़ा आहार सुखदायी होता है ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

उपोष्य सप्तरात्रं वै शक्तिश्चेच्छृणुयात्तदा ।
घृतपानं पयःपानं कृत्वा वै शृणुयात्सुखम् ॥४१॥

पदच्छेद—

उपोष्य सप्तरात्रम् वै, शक्तिः चेत् शृणुयात् तदा ।
घृत पानम् पयः पानम्, कृत्वा वै शृणुयात् सुखम् ॥

शब्दार्थ—

उपोष्य	५.	उपवास करके	घृत	८.	(अथवा) घी का
सप्तरात्रम्	४.	सात रातों तक	पानम्	९.	सेवन
वै	६.	ही	पयः पानम्	११.	दूध का पान
शक्तिः	२.	सामर्थ्य (हो)	कृत्वा	१२.	करके
चेत्	१.	यदि	वै	१०.	और
शृणुयात्	७.	(कथा) सुने	शृणुयात्	१४.	(कथा) सुननी चाहिए
तदा ।	३.	तब	सुखम् ॥	१३.	सुख-पूर्वक

श्लोकार्थ—यदि सामर्थ्य हो तब सात रातों तक उपवास करके ही कथा सुने । अथवा घी का सेवन और दूध का पान करके सुख-पूर्वक कथा सुननी चाहिए ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

फलाहारेण वा भाव्यमेकभुक्तेन वा पुनः ।
सुखसाध्यं भवेद्यत्तु कर्तव्यं श्रवणाय तत् ॥४२॥

पदच्छेद—

फल आहारेण वा भाव्यम्, एक भुक्तेन वा पुनः ।
सुख साध्यम् भवेत् यद् तु, कर्तव्यम् श्रवणाय तद् ॥

शब्दार्थ—

फल आहारेण	२.	फल खाकर	सुख साध्यम्	१०.	सुख से करने योग्य
वा	१.	अथवा	भवेत्	११.	हो
भाव्यम्	७.	रहे	यद्	९.	जो
एक	५.	(दिन में) एक बार	तु	८.	इस प्रकार
भुक्तेन	६.	भोजन करके	कर्तव्यम्	१४.	करना चाहिये
वा	३.	या	श्रवणाय	१२.	(कथा) सुनने के लिए
पुनः ।	४.	फिर	तद् ॥	१३.	उसे

श्लोकार्थ—अथवा फल खाकर या फिर दिन में एकबार भोजन करके रहे । इस प्रकार जो सुख से करने योग्य हो; कथा सुनने के लिए उसे करना चाहिए ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

भोजनं तु वरं मन्ये कथाश्रवणकारकम् ।
नोपवासो वरः प्रो कथाविघ्नकरो यदि ॥४३॥

पदच्छेद—

भोजनम् तु वरम् मन्ये, कथा श्रवण कारकम् ।
न उपवासः वरः प्रोक्तः, कथा विघ्नकरः यदि ॥

शब्दार्थ—

भोजनम्	४.	भोजन करना	न	१३.	नहीं
तु	५.	भी	उपवासः	११.	व्रत
वरम्	६.	उचित	वरः	१२.	उचित
मन्ये	७.	माना गया है	प्रोक्तः	१४.	कहा गया है
कथा	१.	भागवत कथा	कथा	९.	कथा में
श्रवण	२.	सुनने में	विघ्नकरः	१०.	बाधक
कारकम् ।	३.	सहायक होने पर	यदि ॥	८.	किन्तु

श्लोकार्थ—भागवत कथा सुनने में सहायक होने पर भोजन करना भी उचित माना गया है, किन्तु कथा में बाधक व्रत उचित नहीं कहा गया है ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सप्ताहव्रतिनां पुंसां नियमाञ्छृणु नारद ।
विष्णुदीक्षाविहीनानां नाधिकारः कथाश्रवे ॥४४॥

पदच्छेद—

सप्ताह व्रतिनाम् पुंसाम्, नियमान् श्रृणु नारद ।
विष्णु दीक्षा विहीनानाम्, न अधिकारः कथा श्रवे ॥

शब्दार्थ—

सप्ताह	२.	भागवत-सप्ताह का	विष्णु	७.	भगवान् विष्णु की
व्रतिनाम्	३.	व्रत लेने वाले	दीक्षा	८.	दीक्षा से
पुंसाम्	४.	मनुष्यों के	विहीनानाम्	९.	रहित जनों का
नियमान्	५.	नियम	न	१२.	नहीं (है)
श्रृणु	६.	सुनें	अधिकारः	११.	अधिकार
नारद ।	१.	हे नारद जी ! (आप)	कथा श्रवे ॥	१०.	कथा सुनने में

श्लोकार्थ—हे नारद जी ! आप श्रीमद्भागवत-सप्ताह का व्रत लेने वाले मनुष्यों के नियम सुनें । भगवान् विष्णु की दीक्षा से रहित जनों का कथा सुनने में अधिकार नहीं है ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ब्रह्मचर्यमधःसुप्तिः पत्रावल्यां च भोजनम् ।
कथासमाप्तौ भुक्तिं च कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ॥४५॥

पदच्छेद—

ब्रह्मचर्यम् अधः सुप्तिः, पत्रावल्याम् च भोजनम् ।
कथा समाप्तौ भुक्तिम् च, कुर्यात् नित्यम् कथाव्रती ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मचर्यम्	२.	ब्रह्मचर्य	कथा समाप्तौ	८.	कथा का विश्राम होने पर
अधः	३.	भूमि पर	भुक्तिम्	९.	आहार-ग्रहण
सुप्तिः	४.	शयन	च	१०.	इनका
पत्रावल्याम्	५.	पत्तल में	कुर्यात्	१२.	पालन करे
च	७.	और	नित्यम्	११.	प्रतिदिन
भोजनम् ।	६.	भोजन	कथाव्रती ॥	१.	कथा का व्रत लेनेवाले व्यास और श्रोता

श्लोकार्थ—कथा का व्रत लेने वाले व्यास और श्रोता ब्रह्मचर्य, भूमि पर शयन, पत्तल में भोजन और कथा का विश्राम होने पर आहार-ग्रहण; इनका प्रतिदिन पालन करे ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

द्विदलं मधु तैलं च गरिष्ठान्नं तथैव च ।
भावदुष्टं पर्युषितं जह्यान्नित्यं कथाव्रती ॥४६॥

पदच्छेद—

द्विदलम् मधु तैलम् च, गरिष्ठ अन्नम् तथैव च ।
भाव दुष्टम् पर्युषितम् , जह्यात् नित्यम् कथा व्रती ॥

शब्दार्थ—

द्विदलम्	३.	दाल	च ।	१०.	तथा
मधु	४.	शहद	भाव दुष्टम्	९.	भावों से दूषित
तैलम्	५.	तेल	पर्युषितम्	११.	बासी भोजन का
च	७.	और	जह्यात्	१२.	सेवन नहीं करना चाहिए
गरिष्ठ अन्नम्	६.	गरिष्ठ अन्न	नित्यम्	२.	प्रतिदिन
तथैव	८.	उसी प्रकार	कथा व्रती ॥	१.	कथा का व्रत लेने वाले को

श्लोकार्थ—कथा का व्रत लेने वाले को प्रतिदिन दाल, शहद, तेल, गरिष्ठ-अन्न और उसी प्रकार भावों से दूषित तथा बासी भोजन का सेवन नहीं करना चाहिये ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

कामं क्रोधं मदं मानं मत्सरं लोभमेव च ।
दम्भं मोहं तथा द्वेषं दूरयेच्च कथाव्रती ॥४७॥

पदच्छेद—

कामम् क्रोधम् मदम् मानम् , मत्सरम् लोभम् एव च ।
दम्भम् मोहम् तथा द्वेषम् , दूरयेत् च कथा व्रती ॥

शब्दार्थ—

कामम्	४. काम	**दम्भम्**	१२. अहंकार
क्रोधम्	५. क्रोध	**मोहम्**	१३. ममता
मदम्	६. घमण्ड	**तथा**	११. तथा
मानम्	७. सम्मान	**द्वेषम्**	१५. वैर भाव को
मत्सरम्	८. ईर्ष्या	**दूरयेत्**	१६. दूर रखे
लोभम्	१०. लालच को	**च**	१४. और
एव	३. निश्चयपूर्वक	**कथा**	१. सप्ताह-कथा का
च ।	९. और	**व्रती ॥**	२. व्रत लेने वाला

श्लोकार्थ—सप्ताह-कथा का व्रत लेने वाला निश्चय-पूर्वक काम, क्रोध, घमण्ड, सम्मान, ईर्ष्या और लालच को तथा अहंकार, ममता और वैर भाव को दूर रखे ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

वेदवैष्णवविप्राणां गुरुगोव्रतिनां तथा ।
स्त्रीराजमहतां निन्दां वर्जयेद्यः कथाव्रती ॥४८॥

पदच्छेद—

वेद वैष्णव विप्राणाम् , गुरु गो व्रतिनाम् तथा ।
स्त्री राज महताम् निन्दाम् , वर्जयेत् यः कथाव्रती ॥

शब्दार्थ—

वेद	३. वेद-शास्त्र	**स्त्री**	१०. स्त्री
वैष्णव	४. विष्णु-भक्त	**राज**	११. राजा और
विप्राणाम्	५. ब्राह्मण	**महताम्**	१२. महान् लोगों की
गुरु	६. गुरु	**निन्दाम्**	१३. निन्दा करना
गो	७. गऊ और	**वर्जयेत्**	१४. छोड़ दे
व्रतिनाम्	८. व्रत करने वालों की	**यः**	१. जिसने
तथा ।	९. तथा	**कथाव्रती ॥**	२. कथा का व्रत लिया है (वह)

श्लोकार्थ—जिसने कथा का व्रत लिया है, वह वेद-शास्त्र, विष्णु-भक्त, ब्राह्मण, गुरु, गऊ और व्रत करने वालों की तथा स्त्री, राजा और महान् लोगों की निन्दा करना छोड़ दे ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

रजस्वलान्त्यजम्लेच्छपतितव्रात्यकैस्तदा ।
द्विजद्विड्वेदबाह्यैश्च न वदेद्यः कथाव्रती ॥४९॥

पदच्छेद—

रजस्वला अन्त्यज म्लेच्छ, पतित व्रात्यकैः तदा ।
द्विज द्विष् वेदबाह्यैः च, न वदेत् यः कथाव्रती ॥

शब्दार्थ—

रजस्वला	४.	मासिक धर्म से युक्त स्त्री	वेद	११.	वेद
अन्त्यज	५.	चाण्डाल	बाह्यैः	१२.	बहिष्कृत शूद्रादि के साथ
म्लेच्छ	६.	म्लेच्छ	च	१०.	और
पतित	७.	पापी	न	१३.	नहीं
व्रात्यकैः	८.	धर्म से भ्रष्ट	वदेत्	१४.	वार्तालाप करे
तदा ।	३.	उस समय	यः	१.	जो
द्विज द्विष्	९.	ब्राह्मण-द्रोही	कथाव्रती ॥	२.	कथाव्रती (है वह)

श्लोकार्थ—जो कथाव्रती है; वह उस समय मासिक धर्म से युक्त स्त्री, चाण्डाल, म्लेच्छ, पापी, धर्म से भ्रष्ट, ब्राह्मण-द्रोही और वेद-बहिष्कृत शूद्रादि के साथ वार्तालाप नहीं करे ।

पञ्चाशः श्लोकः

सत्यं शौचं दयां मौनमार्जवं विनयं तथा ।
उदारमानसं तद्वदेवं कुर्यात्कथाव्रती ॥५०॥

पदच्छेद—

सत्यम् शौचम् दयाम् मौनम्, आर्जवम् विनयम् तथा ।
उदार मानसम् तद्वत्, एवम् कुर्यात् कथाव्रती ॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	३.	सत्य-भाषण	उदार	१२.	उदारता का
शौचम्	४.	पवित्रता	मानसम्	११.	मन की
दयाम्	५.	करुणा	तद्वत्	१०.	उसी प्रकार
मौनम्	६.	मौन	एवम्	१३.	भी
आर्जवम्	७.	सरलता	कुर्यात्	१४.	बर्ताव करना चाहिए
विनयम्	८.	नम्रता	कथा	१.	कथा का
तथा ।	९.	तथा	व्रती ॥	२.	व्रत करने वाले को

श्लोकार्थ—कथा का व्रत करने वाले को सत्य-भाषण, पवित्रता, करुणा, मौन, सरलता, नम्रता तथा उसी प्रकार मन की उदारता का भी बर्ताव करना चाहिए ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

दरिद्रश्च क्षयी रोगी निर्भाग्यः पापकर्मवान् ।
अनपत्यो मोक्षकामः शृणुयाच्च कथामिमाम् ॥५१॥

पदच्छेद—

दरिद्रः च क्षयी रोगी, निर्भाग्यः पाप कर्मवान् ।
अनपत्यः मोक्ष कामः, शृणुयात् च कथाम् इमाम् ॥

शब्दार्थ—

दरिद्रः	१. निर्धन		**अनपत्यः**	८. सन्तान हीन
च	५. और		**मोक्ष**	१०. मुक्ति का
क्षयी	२. निर्बल		**कामः**	११. इच्छुक (व्यक्ति)
रोगी	३. रोगी		**शृणुयात्**	१४. सुने
निर्भाग्यः	४. भाग्यहीन		**च**	९. तथा
पाप	६. पाप		**कथाम्**	१३. कथा को
कर्मवान् ।	७. कर्म करने वाला		**इमाम् ॥**	१२. इस

श्लोकार्थ—निर्धन, निर्बल, रोगी, भाग्यहीन और पाप कर्म करनेवाला, सन्तान-हीन तथा मुक्ति का इच्छुक व्यक्ति इस कथा को सुने ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

अपुष्पा काकवन्ध्या च वन्ध्या या च मृतार्भका ।
स्रवद्गर्भा च या नारी तया श्राव्या प्रयत्नतः ॥५२॥

पदच्छेद—

अपुष्पा काकवन्ध्या च, वन्ध्या या च मृत अर्भका ।
स्रवद् गर्भा च या नारी, तया श्राव्या प्रयत्नतः ॥

शब्दार्थ—

अपुष्पा	२. रजोदर्शन से हीन (हो या)	**स्रवद्**	१३. गिर जाता हो
काकवन्ध्या	३. जिसके एक ही सन्तान होकर रह गयी हो	**गर्भा**	१२. गर्भ
च	४. और (जो)	**च**	९. अथवा
वन्ध्या	५. बाँझ (हो)	**या**	१०. जिस
या	१. जो (नारी)	**नारी**	११. नारी का
च	६. तथा (जिसको)	**तया**	१४. उसे
मृत	८. मर जाती हो	**श्राव्या**	१६. (सप्ताह की कथा) सुननी चाहिए
अर्भका ।	७. सन्तान होकर	**प्रयत्नतः ॥**	१५. प्रयत्न-पूर्वक (भागवत)

श्लोकार्थ—जो नारी रजोदर्शन से हीन हो या जिसके एक ही सन्तान होकर रह गयी हो और जो बाँझ हो तथा जिसकी सन्तान होकर मर जाती हो अथवा जिस नारी का गर्भ गिर जाता हो; उसे प्रयत्न-पूर्वक भागवत सप्ताह की कथा सुननी चाहिए ।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

एतेषु विधिना श्रावे तदक्षय्यतरं भवेत् ।
अत्युत्तमा कथा दिव्या कोटियज्ञफलप्रदा ॥५३॥

पदच्छेद—

एतेषु विधिना श्रावे, तद् अक्षयतरम् भवेत् ।
अति उत्तमा कथा दिव्या, कोटि यज्ञ फल प्रदा ॥

शब्दार्थ—

एतेषु	१.	इन लोगों को	अति उत्तमा	८.	अत्यन्त श्रेष्ठ
विधिना	२.	विधि-पूर्वक	कथा	७.	श्रीमद्भागवत की कथा
श्रावे	३.	(कथा) सुनाने पर	दिव्या	९.	अलौकिक (और)
तद्	४.	उसका (फल)	कोटि	१०.	करोड़ों
अक्षयतरम्	५.	अक्षय	यज्ञ	११.	यज्ञों के
भवेत् ।	६.	होता है (इस प्रकार)	फल प्रदा ॥	१२.	फल को देने वाली है

श्लोकार्थ—इन लोगों को विधि-पूर्वक कथा सुनाने पर उसका फल अक्षय होता है। इस प्रकार श्रीमद्भागवत की कथा अत्यन्त श्रेष्ठ, अलौकिक और करोड़ों यज्ञों के फल को देनेवाली है।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

एवं कृत्वा व्रतविधिमुद्यापनमथाचरेत् ।
जन्माष्टमीव्रतमिव कर्तव्यं फलकाङ्क्षिभिः ॥५४॥

पदच्छेद—

एवम् कृत्वा व्रत विधिम् , उद्यापनम् अथ आचरेत् ।
जन्माष्टमी व्रतम् इव, कर्तव्यम् फल काङ्क्षिभिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	जन्माष्टमी	९.	जन्माष्टमी
कृत्वा	३.	करके	व्रतम्	१०.	व्रत के
व्रत विधिम्	२.	कथा के व्रत और विधान को	इव	११.	समान (उद्यापव)
उद्यापनम्	५.	उद्यापन	कर्तव्यम्	१२.	करना चाहिए
अथ	४.	तदनन्तर	फल	७.	फल की
आचरेत् ।	६.	करे	काङ्क्षिभिः ॥	८.	इच्छा रखने वालों को

श्लोकार्थ—इस प्रकार कथा के व्रत और विधान को करके तदनन्तर उद्यापन करे। फल की इच्छा रखने वालों को जन्माष्टमी व्रत के समान उद्यापन करना चाहिये।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

अकिंचनेषु भक्तेषु प्रायो नोद्यापनाग्रहः ।
श्रवणेनैव पूतास्ते निष्कामा वैष्णवा यतः ॥५५॥

पदच्छेद—

अकिंचनेषु भक्तेषु, प्रायः न उद्यापन आग्रहः ।
श्रवणेन एव पूताः ते, निष्कामाः वैष्णवाः यतः ॥

शब्दार्थ—

अकिंचनेषु	१. निर्धन		**एव**	१२. ही
भक्तेषु	२. भक्तों के लिये		**पूताः**	१३. पवित्र (हो जाते हैं)
प्रायः	५. प्रायः		**ते**	९. वे
न	६. नहीं (है)		**निष्कामाः**	८. कामनाओं से रहित
उद्यापन	३. उद्यापन को		**वैष्णवाः**	१०. विष्णु के भक्त
आग्रहः ।	४. आवश्यकता		**यतः ॥**	७. क्योंकि
श्रवणेन	११. (कथा) सुनने से			

श्लोकार्थ—निर्धन भक्तों के लिये उद्यापन की आवश्यकता प्रायः नहीं है, क्योंकि कामनाओं से रहित वे विष्णु के भक्त कथा सुनने से ही पवित्र हो जाते हैं ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

एवं नगाहयज्ञेऽस्मिन् समाप्ते श्रोतृभिस्तदा ।
पुस्तकस्य च वक्तुश्च पूजा कार्यातिभक्तितः ॥५६॥

पदच्छेद—

एवम् नगाह यज्ञे अस्मिन्, समाप्ते श्रोतृभिः तदा ।
पुस्तकस्य च वक्तुः च, पूजा कार्या अतिभक्तितः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	**पुस्तकस्य**	८. श्रीमद्भागवत महापुराण की
नगाह	३. श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा	**च**	९. और
यज्ञे	४. यज्ञ के	**वक्तुः**	१०. कथावाचक की
अस्मिन्	२. इस	**च**	११. भी
समाप्ते	५. समाप्त हो जाने पर	**पूजा**	१३. पूजा
श्रोतृभिः	७. श्रोताओं के द्वारा	**कार्या**	१४. करनी चाहिये
तदा ।	६. उस समय	**अतिभक्तितः ॥**	१२. अत्यन्त भक्तिभाव से

श्लोकार्थ—इस प्रकार इस श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा यज्ञ के समाप्त हो जाने पर उस समय श्रोताओं के द्वारा श्रीमद्भागवत महापुराण की और कथावाचक की भी अत्यन्त भक्ति-भाव से पूजा करनी चाहिये ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

प्रसादतुलसीमाला श्रोतृभ्यश्चाथ दीयताम् ।
मृदङ्गतालललितं कर्तव्यं कीर्तनं ततः ॥५७॥

पदच्छेद—

प्रसाद तुलसी माला, श्रोतृभ्यः च अथ दीयताम् ।
मृदङ्ग ताल ललितम्, कर्तव्यम् कीर्तनम् ततः ॥

शब्दार्थ—

प्रसाद	३.	प्रसाद	मृदङ्ग	९.	मृदंग के
तुलसी	४.	तुलसीदल	ताल	१०.	ताल पर
माला	६.	मालायें	ललितम्	११.	मधुर
श्रोतृभ्यः	२.	श्रोताओं में	कर्तव्यम्	१३.	करना चाहिए
च	५.	और	कीर्तनम्	१२.	कीर्तन
अथ	१.	तदनन्तर	ततः ॥	८.	उसके बाद
दीयताम् ।	७.	वितरित करनी चाहिए			

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रोताओं में प्रसाद, तुलसी दल और मालायें वितरित करनी चाहिये। उसके बाद मृदङ्ग के ताल पर मधुर कीर्तन करना चाहिये।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

जयशब्दं नमः शब्दं शङ्खशब्दं च कारयेत् ।
विप्रेभ्यो याचकेभ्यश्च वित्तमन्नं च दीयताम् ॥५८॥

पदच्छेद—

जय शब्दम् नमः शब्दम्, शङ्ख शब्दम् च कारयेत् ।
विप्रेभ्यः याचकेभ्यः च, वित्तम् अन्नम् च दीयताम् ॥

शब्दार्थ—

जय शब्दम्	१.	(उस समय) जय-जयकार घोष	याचकेभ्यः	८.	भिक्षुकों को
नमः शब्दम्	२.	नमस्कार की ध्वनि	च	७.	और
शङ्ख शब्दम्	४.	शंखनाद	वित्तम्	९.	धन
च	३.	और	अन्नम्	११.	अन्न का
कारयेत् ।	५.	करना चाहिये	च	१०.	तथा
विप्रेभ्यः	६.	ब्राह्मणों को	दीयताम् ॥	१२.	दान करना चाहिये

श्लोकार्थ—उस समय जय-जयकार घोष, नमस्कार की ध्वनि और शंख-नाद करना चाहिये। ब्राह्मणों को और भिक्षुकों को धन तथा अन्न का दान करना चाहिये।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

विरक्तश्चेद्भवेच्छ्रोता गीता वाच्या परेऽहनि ।
गृहस्थश्चेत्तदा होमः कर्तव्यः कर्मशान्तये ॥५९॥

पदच्छेद—

विरक्तः चेत् भवेत् श्रोता, गीता वाच्या परे अहनि ।
गृहस्थः चेत् तदा होमः, कर्तव्यः कर्म शान्तये ॥

शब्दार्थ—

विरक्तः	३. वैरागी	**गृहस्थः**	१०. गृहस्थ हो
चेत्	१. यदि	**चेत्**	९. यदि (सुनने वाला)
भवेत्	४. होवे (तब)	**तदा**	११. तब
श्रोता	२. सुनने वाला	**होमः**	१४. हवन
गीता	७. श्रीमद्भगवद् गीता का	**कर्तव्यः**	१५. करे
वाच्या	८. पाठ करे (तथा)	**कर्म**	१२. यज्ञ कर्म की
परे	५. दूसरे	**शान्तये ॥**	१३. सांगता के लिये
अहनि ।	६. दिन		

श्लोकार्थ—यदि सुनने वाला वैरागी होवे तब दूसरे दिन श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ करे तथा यदि सुनने वाला गृहस्थ हो तब यज्ञ-कर्म की सांगता के लिए हवन करे ।

षष्टितमः श्लोकः

प्रतिश्लोकं तु जुहुयाद्विधिना दशमस्य च ।
पायसं मधु सर्पिश्च तिलान्नादिकसंयुतम् ॥६०॥

पदच्छेद—

प्रतिश्लोकम् तु जुहुयात्, विधिना दशमस्य च ।
पायसम् मधु सर्पिः च, तिल अन्न आदिक संयुतम् ॥

शब्दार्थ—

प्रतिश्लोकम्	३. प्रत्येक श्लोक के द्वारा	**पायसम्**	६. खीर का
तु	१. तथा	**मधु**	८. शहद का
जुहुयात्	१२. हवन करना चाहिये	**सर्पिः**	१०. घी का
विधिना	११. विधि-पूर्वक	**च**	९. एवम्
दशमस्य	२. दशम स्कन्ध के	**तिल अन्न**	४. तिल एवं अन्न
च ।	७. और	**आदिक संयुतम् ॥**	५. इत्यादि से मिश्रित

श्लोकार्थ—तथा दशम स्कन्ध के प्रत्येक श्लोक के द्वारा तिल एवं अन्न इत्यादि से मिश्रित खीर का और शहद का एवं घी का विधिपूर्वक हवन करना चाहिए ।

एकषष्टितमः श्लोकः

अथवा हवनं कुर्याद्गायत्र्या सुसमाहितः ।
तन्मयत्वात्पुराणस्य परमस्य च तत्त्वतः ॥६१॥

पदच्छेद—

अथवा हवनम् कुर्यात् , गायत्र्या सुसमाहितः ।
तन्मयत्वात् पुराणस्य, परमस्य च तत्त्वतः ॥

शब्दार्थ—

अथवा	१. अथवा	तन्मयत्वात्	६. गायत्रीरूप है, अतः
हवनम्	९. होम	पुराणस्य	५. पुराण
कुर्यात्	१०. करना चाहिये	परमस्य	४. महा
गायत्र्या	८. गायत्री मन्त्र से	च	३. यह
सुसमाहितः ।	७. शान्तचित्त होकर	तत्त्वतः ॥	२. परमार्थ दृष्टि से

श्लोकार्थ—अथवा परमार्थ दृष्टि से यह महापुराण गायत्री रूप है, अतः शान्तचित्त होकर गायत्री मन्त्र से होम करना चाहिये ।

द्विषष्टितमः श्लोकः

होमाशक्तौ बुधो हौम्यं दद्यात्तत्फलसिद्धये ।
नानाच्छिद्रनिरोधार्थं न्यूनताधिकतानयोः ॥६२॥

पदच्छेद—

होम अशक्तौ बुधः हौम्यम् , दद्यात् तद् फल सिद्धये ।
नाना छिद्र निरोधार्थम् , न्यूनता अधिकता अनयोः ॥

शब्दार्थ—

होम	१. हवन करने में	सिद्धये ।	६. प्राप्ति के लिये (तथा)
अशक्तौ	२. असमर्थ होने पर	नाना	१०. अनेकों
बुधः	३. बुद्धिमान् (श्रोता) को	छिद्र	११. दोषों के
हौम्यम्	१३. हवन सामग्री का	निरोधार्थम्	१२. निवारण के लिये
दद्यात्	१४. दान कर देना चाहिये	न्यूनता	७. कमी और
तद्	४. उस (हवन) के	अधिकता	८. बेसी
फल	५. पुण्य की	अनयोः ॥	९. इन दोनों में

श्लोकार्थ—हवन करने में असमर्थ होने पर बुद्धिमान् श्रोता को उस हवन के पुण्य की प्राप्ति के लिये तथा कमी और बेसी इन दोनों में अनेकों दोषों के निवारण के लिये हवन सामग्री का दान कर देना चाहिये ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

दोषयोः प्रशमार्थं च पठेन्नामसहस्रकम् ।
तेन स्यात्सफलं सर्वं नास्त्यस्मादधिकं यतः ॥६३॥

पदच्छेद—

दोषयोः प्रशमार्थम् च, पठेत् नाम सहस्रकम् ।
तेन स्यात् सफलम् सर्वम् , न अस्ति अस्मात् अधिकम् यतः ॥

शब्दार्थ—

दोषयोः	२.	(इन) दोनों दोषों की	स्यात्	१०.	होंगे
प्रशमार्थम्	३.	शन्ति के लिये	सफलम्	९.	सफल
च	१.	तथा	सर्वम्	८.	सारे कार्य
पठेत्	६.	पाठ करे	न अस्ति	१४.	नहीं है
नाम	५.	नाम का	अस्मात्	१२.	इस (सहस्र नाम) से
सहस्रकम् ।	४.	विष्णु सहस्र	अधिकम्	१३.	बढ़कर (कुछ भी)
तेन	७.	उससे	यतः ॥	११.	क्योंकि

श्लोकार्थ—तथा इन दोनों दोषों की शान्ति के लिए विष्णु सहस्र नाम का पाठ करे । उससे सारे कार्य सफल होंगे, क्योंकि इस सहस्र नाम से बढ़कर कुछ भी नहीं है ।

चतुष्षष्टितमः श्लोकः

द्वादश ब्राह्मणान् पश्चाद्भोजयेन्मधुपायसैः ।
दद्यात्सुवर्णं धेनुं च व्रतपूर्णत्वहेतवे ॥६४॥

पदच्छेद—

द्वादश ब्राह्मणान् पश्चात्, भोजयेत् मधु पायसैः ।
दद्यात् सुवर्णम् धेनुम् च, व्रत पूर्णत्व हेतवे ॥

शब्दार्थ—

द्वादश	२.	बारह	दद्यात्	१२.	दान करना चाहिये
ब्राह्मणान्	३.	ब्राह्मणों को	सुवर्णम्	९.	सोना
पश्चात्	१.	उसके बाद	धेनुम्	११.	गाय का
भोजयेत्	६.	भोजन कराना चाहिये (तथा)	च	१०.	और
मधु	५.	मीठा	व्रत पूर्णत्व	७.	सप्ताह व्रत की पूर्णता के
पायसैः ।	४.	खीर से	हेतवे ॥	८.	निमित्त

श्लोकार्थ—उसके बाद बारह ब्राह्मणों को खीर से मीठा भोजन कराना चाहिये तथा सप्ताह-व्रत की पूर्णता के निमित्त सोना और गाय का दान करना चाहिये ।

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

शक्तौ पलत्रयमितं स्वर्णसिंहं विधाय च।
तत्रास्य पुस्तकं स्थाप्यं लिखितं ललिताक्षरम् ॥६५॥

पदच्छेद—

शक्तौ पल त्रय मितम्, स्वर्ण सिंहम् विधाय च ।
तत्र अस्य पुस्तकम् स्थाप्यम्, लिखितम् ललित अक्षरम् ॥

शब्दार्थ—

शक्तौ	१.	सामर्थ्य होने पर	तत्र	७.	उस पर
पल त्रय	२.	तीन तोले	अस्य	११.	इस (महापुराण) की
मितम्	३.	भर का	पुस्तकम्	१२.	पुस्तक को
स्वर्ण सिंहम्	४.	सोने का सिंहासन	स्थाप्यम्	१३.	रखकर (पूजन करे)
विधाय	५.	बनवाकर	लिखितम्	१०.	लिखी हुई
च ।	६.	और	ललित	८.	सुन्दर
			अक्षरम् ॥	९.	अक्षरों में

श्लोकार्थ—सामर्थ्य होने पर तीन तोले भर का सोने का सिंहासन बनवाकर और उस पर सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई इस महापुराण की पुस्तक को रखकर पूजन करे ।

षट्षष्टितमः श्लोकः

सम्पूज्यावाहनाद्यैस्तदुपचारैः सदक्षिणम् ।
वस्त्रभूषणगन्धाद्यैः पूजिताय यतात्मने ॥६६॥

पदच्छेद—

सम्पूज्य आवाहन आद्यैः तद्, उपचारैः सदक्षिणम् ।
वस्त्र भूषण गन्ध आद्यैः, पूजिताय यत आत्मने ॥

शब्दार्थ—

सम्पूज्य	६.	पूजन करके (उसे)	वस्त्र	७.	वस्त्र
आवाहन	४.	आवाहन	भूषण	८.	आभूषण
आद्यैः	५.	इत्यादि विधानों से	गन्ध	९.	चन्दन
तद्	१.	उस (ग्रन्थ) का	आद्यैः	१०.	इत्यादि के द्वारा
उपचारैः	२.	सभी सामग्रियों से	पूजिताय	११.	पूजित (एवं)
सदक्षिणम् ।	३.	दक्षिणा के साथ	यत आत्मने ॥	१२.	जितेन्द्रिय (आचार्य) को (देवे)

श्लोकार्थ—उस ग्रन्थ का सभी सामग्रियों से दक्षिणा के साथ आवाहन इत्यादि विधानों से पूजन करके उसे वस्त्र, आभूषण, चन्दन इत्यादि के द्वारा पूजित एवं जितेन्द्रिय आचार्य को देवे ।

सप्तषष्टितमः श्लोकः

आचार्याय सुधीर्दत्वा मुक्तः स्याद्भवबन्धनैः ।
एवं कृते विधाने च सर्वपापनिवारणे ।।६७।।

पदच्छेद—

आचार्याय सुधीः दत्वा, मुक्तः स्यात् भव बन्धनैः ।
एवम् कृते विधाने च, सर्व पाप निवारणे ॥

शब्दार्थ—

आचार्याय	२.	आचार्य को	**एवम्**	१०.	इस
सुधीः	१.	बुद्धिमान् (श्रोता इसे)	**कृते**	१२.	करने पर (पूरा फल मिलता है)
दत्वा	३.	देकर	**विधाने**	११.	अनुष्ठान को
मुक्तः	५.	छूट	**च**	७.	तथा
स्यात्	६.	जाता है	**सर्व पाप**	८.	सभी पापों के
भव बन्धनैः ।	४.	संसार के जाल से	**निवारणे ॥**	९.	निवारक

श्लोकार्थ—बुद्धिमान् श्रोता इसे आचार्य को देकर संसार के जाल से छूट जाता है तथा सभी पापों के निवारक इस अनुष्ठान को करने पर पूरा फल मिलता है ।

अष्टषष्टितमः श्लोकः

फलदं स्यात् पुराणं तु श्रीमद्भागवतं शुभम् ।
धर्मकामार्थमोक्षाणां साधनं स्यान्न संशयः ।।६८।।

पदच्छेद—

फलदम् स्यात् पुराणम् तु, श्रीमद्भागवतम् शुभम् ।
धर्म काम अर्थ मोक्षाणाम् , साधनम् स्यात् न संशयः ॥

शब्दार्थ—

फलदम्	५.	फल देने वाला	**धर्म काम**	७.	(यह) धर्म काम
स्यात्	६.	होगा	**अर्थ मोक्षाणाम्**	८.	अर्थ और मोक्ष का
पुराणम्	४.	महापुराण	**साधनम्**	९.	साधन
तु	१.	इस प्रकार	**स्यात्**	१०.	है (इसमें)
श्रीमद्भागतम्	३.	श्रीमद्भागवत	**न**	१२.	नहीं है
शुभम् ।	२.	मंगलमय	**संशयः ॥**	११.	संदेह

श्लोकार्थ—इस प्रकार मंगलमय श्रीमद्भागवत महापुराण फल देने वाला होगा । यह धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष का साधन है, इसमें संदेह नही है ।

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

कुमारा ऊचुः--- इति ते कथितं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।
श्रीमद्भागवतेनैव भुक्तिमुक्ती करे स्थिते ॥६९॥

पदच्छेद---

इति ते कथितम् सर्वम्, किम् भूयः श्रोतुम् इच्छसि ।
श्रीमद्भागवतेन एव, भुक्ति मुक्ती करे स्थिते ॥

शब्दार्थ---

इति	१.	इस प्रकार	इच्छसि ।	८.	चाहते हो
ते	२.	तुमसे	श्रीमद्भागवतेन	९.	श्रीमद्भागवत से
कथितम्	४.	कह दिया गया	एव	१०.	ही
सर्वम्	३.	सब कुछ	भुक्ति	११.	भोग और
किम्	६.	क्या	मुक्ती	१२.	मोक्ष
भूयः	५.	(अब) और	करे	१३.	हाथ में
श्रोतुम्	७.	सुनना	स्थिते ॥	१४.	विद्यमान रहते हैं

श्लोकार्थ---इस प्रकार तुमसे सब कुछ कह दिया गया, अब और क्या सुनना चाहते हो ? श्रीमद्भागवत से ही भोग और मोक्ष हाथ में विद्यमान रहते हैं ।

सप्ततितमः श्लोकः

सूत उवाच--- इत्युक्त्वा ते महात्मानः प्रोचुर्भागवतीं कथाम् ।
सर्वपापहरां पुण्यां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ॥७०॥

पदच्छेद---

इति उक्त्वा ते महात्मानः, प्रोचुः भागवतीम् कथाम् ।
सर्व पाप हराम् पुण्याम्, भुक्ति मुक्ति प्रदायिनीम् ॥

शब्दार्थ---

इति	३.	ऐसा	सर्व	५.	सभी
उक्त्वा	४.	कहकर	पाप	६.	दोषों को
ते	१.	उन	हराम्	७.	दूर करने वाली
महात्मानः	२.	सनकादि कुमारों ने	पुण्याम्	८.	पवित्र (तथा)
प्रोचुः	१४.	कही	भुक्ति	९.	भोग और
भागवतीम्	१२.	श्रीमद्भागवत की	मुक्ति	१०.	मोक्ष को
कथाम् ।	१३.	कथा	प्रदायिनीम् ॥	११.	देने वाली

श्लोकार्थ---उन सनकादि कुमारों ने ऐसा कहकर सभी दोषों को दूर करने वाली, पवित्र तथा भोग और मोक्ष को देने वाली श्रीमद्भागवत की कथा कही ।

एकसप्ततितमः श्लोकः

शृण्वतां सर्वभूतानां सप्ताहं नियतात्मनाम् ।
यथाविधि ततो देवं तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ॥७१॥

पदच्छेद—

शृण्वताम् सर्व भूतानाम्, सप्ताहम् नियत आत्मनाम् ।
यथाविधि ततः देवम्, तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ॥

शब्दार्थ—

शृण्वताम्	५. सुनते रहने पर	**यथाविधि**	७. विधिपूर्वक
सर्व	२. सभी	**ततः**	६. उस समय (कुमारों ने)
भूतानाम्	३. प्राणियों के द्वारा	**देवम्**	९. भगवान् की
सप्ताहम्	४. सप्ताह-कथा	**तुष्टुवुः**	१०. स्तुति की
नियत आत्मनाम् ।	१. जितेन्द्रिय	**पुरुषोत्तमम् ॥**	८. पुरुषोत्तम

श्लोकार्थ—जितेन्द्रिय सभी प्राणियों के द्वारा सप्ताह-कथा सुनते रहने पर उस समय कुमारों ने विधि-पूर्वक पुरुषोत्तम भगवान् को स्तुति की ।

द्विसप्ततितमः श्लोकः

तदन्ते ज्ञानवैराग्यभक्तीनां पुष्टता परा ।
तारुण्यं परमं चाभूत्सर्वभूतमनोहरम् ॥७२॥

पदच्छेद—

तद् अन्ते ज्ञान वैराग्य, भक्तीनाम् पुष्टता परा ।
तारुण्यम् परमम् च अभूत्, सर्व भूत मनोहरम् ॥

शब्दार्थ—

तद् अन्ते	१. स्तुति के पश्चात्	**परमम्**	१०. सर्वोत्तम
ज्ञान वैराग्य	२. ज्ञान, वैराग्य और	**च**	६. और
भक्तीनाम्	३. भक्ति में	**अभूत्**	१२. आ गया
पुष्टता	५. शक्ति	**सर्व**	७. सभी
परा ।	४. अलौकिक	**भूत**	८. प्राणियों के
तारुण्यम्	११. नव यौवन	**मनोहरम् ॥**	९. मन को लुभानेवाला

श्लोकार्थ—स्तुति के पश्चात् ज्ञान, वैराग्य और भक्ति में अलौकिक शक्ति और सभी प्राणियों के मन को लुभाने वाला सर्वोत्तम नव यौवन आ गया ।

त्रिसप्ततितमः श्लोकः

नारदश्च कृतार्थोऽभूत् सिद्धे स्वीये मनोरथे ।

पुलकीकृतसर्वाङ्गः परमानन्दसम्भृतः ॥७३॥

पदच्छेद—

नारदः च कृतार्थः अभूत् , सिद्धे स्वीये मनोरथे ।

पुलकीकृत सर्व अङ्गः, परम आनन्द सम्भृतः ॥

शब्दार्थ—

नारदः	४. देवर्षि नारद		मनोरथे ।	२. मनोरथ के
च	१०. तथा		पुलकीकृत	६. रोमांचित
कृतार्थः	११. धन्य		सर्व अङ्गः	५. सारे शरीर में
अभूत्	१२. हो गये		परम	७. महान्
सिद्धे	३. सफल होने से		आनन्द	८. आनन्द से
स्वीये	१. अपने		सम्भृतः ॥	९. परिपूर्ण

श्लोकार्थ—अपने मनोरथ के सफल होने से देवर्षि नारद सारे शरीर में रोमांचित, महान् आनन्द से परिपूर्ण तथा धन्य हो गये ।

चतुस्सप्ततितमः श्लोकः

एवं कथां समाकर्ण्य नारदो भगवत्प्रियः ।

प्रेमगद्गदया वाचा तानुवाच कृताञ्जलिः ॥७४॥

पदच्छेद—

एवम् कथाम् समाकर्ण्य, नारदः भगवत् प्रियः ।

प्रेम गद्गदया वाचा, तान् उवाच कृत अञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४. इस प्रकार		गद्गदया	९. गद्गद
कथाम्	५. (श्रीमद्भागवत की) कथा को		वाचा	१०. वाणी में
समाकर्ण्य	६. सुनकर		तान्	७. उन (सनकादिकों) से
नारदः	३. देवर्षि नारद		उवाच	१३. बोले
भगवत्	१. भगवान् के		कृत	१२. जोड़कर
प्रियः ।	२. प्रेमी		अञ्जलिः ॥	११. हाथ
प्रेम	८. स्नेह के कारण			

श्लोकार्थ—भगवान् के प्रेमी देवर्षि नारद इस प्रकार श्रीमद्भागवत-सप्ताह की कथा को सुनकर उन सनकादिकों से स्नेह के कारण गदगद वाणी में होथ जोड़कर बोले ।

पञ्चसप्ततितमः श्लोकः

नारद उवाच— धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि भवद्भिः करुणापरैः ।
अद्य मे भगवाँल्लब्धः सर्वपापहरो हरिः ॥७५॥

पदच्छेद—

धन्यः अस्मि अनुगृहीतः अस्मि, भवद्भिः करुणा परैः ।
अद्य मे भगवान् लब्धः, सर्व पाप हरः हरिः ॥

शब्दार्थ—

धन्यः	२.	धन्य	मे	८.	मुझे
अस्मि	३.	हूँ (तथा)	भगवान्	१२.	भगवान्
अनुगृहीतः	६.	कृपा से परिपूर्ण	लब्धः	१४.	मिल गये
अस्मि	७.	हूँ (क्योंकि)	सर्व	९.	सभी
भवद्भिः	५.	आप लोगों की	पाप	१०.	पापों को
करुणा परैः ।	४.	दया परायण	हरः	११.	हरने वाले
अद्य	१.	(मैं) आज	हरिः ॥	१३.	श्री हरि

श्लोकार्थ—मैं आज धन्य हूँ तथा दया-परायण आपलोगों की कृपा से परिपूर्ण हूँ, क्योंकि मुझे सभी पापों को हरने वाले भगवान् श्री हरि मिल गये ।

षट्सप्ततितमः श्लोकः

श्रवणं सर्वधर्मेभ्यो वरं मन्ये तपोधनाः ।
वैकुण्ठस्थो यतः कृष्णः श्रवणादस्य लभ्यते ॥७६॥

पदच्छेद—

श्रवणम् सर्व धर्मेभ्यः, वरम् मन्ये तपोधनाः ।
वैकुण्ठस्थः यतः कृष्णः, श्रवणात् अस्य लभ्यते ॥

शब्दार्थ—

श्रवणम्	२.	(श्रीमद्भागवत-सप्ताह कथा के) श्रवण को	वैकुण्ठस्थः	१०.	वैकुण्ठ में विराजमान
सर्व	३.	सभी	यतः	७.	क्योंकि
धर्मेभ्यः	४.	अनुष्ठानों में	कृष्णः	११.	भगवान् श्रीकृष्ण
वरम्	५.	श्रेष्ठ	श्रवणात्	९.	सुनने से
मन्ये	६.	मानता हूँ	अस्य	८.	इसको
तपोधनाः ।	१.	हे तपस्वियों ! (मैं)	लभ्यते ॥	१२.	मिल जाते हैं

श्लोकार्थ—हे तपस्वियों ! मैं श्रीमद्भागवत-सप्ताह कथा के श्रवण को सभी अनुष्ठानों में श्रेष्ठ मानता हूँ, क्योंकि इसको सुनने से वैकुण्ठ में विराजमान भगवान् श्रीकृष्ण मिल जाते हैं ।

सप्तसप्ततितमः श्लोकः

सूत उवाच— एवं ब्रुवति वै तत्र नारदे वैष्णवोत्तमे ।
परिभ्रमन् समायातः शुको योगेश्वरस्तदा ॥७७॥

पदच्छेद— एवम् ब्रुवति वै तत्र, नारदे वैष्णव उत्तमे ।
परिभ्रमन् समायातः, शुकः योगेश्वरः तदा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	ऐसा	उत्तमे ।	२.	प्रधान
ब्रुवति	५.	कहते रहने पर	परिभ्रमन्	९.	घूमते हुए
वै	६.	ही	समायातः	१२.	पधारे
तत्र	८.	वहाँ	शुकः	११.	शुकदेव जी
नारदे	३.	देवर्षि नारद के	योगेश्वरः	१०.	योगिराज
वैष्णव	१.	विष्णु भक्तों में	तदा ॥	७.	उस समय

श्लोकार्थ—विष्णु भक्तों में प्रधान देवर्षि नारद के ऐसा कहते रहने पर ही उस समय वहाँ घूमते हुए योगिराज शुकदेव जी पधारे ।

अष्टसप्ततितमः श्लोकः

तत्रायर्यौ षोडशवार्षिकस्तदा, व्यासात्मजो ज्ञानमहाब्धिचन्द्रमाः ।
कथावसाने निजलाभपूर्णः, प्रेम्णा पठन् भागवतं शनैः शनैः ॥७८॥

पदच्छेद— तत्र आययौ षोडश वार्षिकः तदा, व्यास आत्मजः ज्ञान महा अब्धि चन्द्रमाः ।
कथा अवसाने निज लाभ पूर्णः, प्रेम्णा पठन् भागवतम् शनैः शनैः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ	चन्द्रमाः ।	१७.	चन्द्रमा (तथा)
आययौ	२०.	आये	कथा	३.	भागवत-कथा की
षोडश	१२.	सोलह	अवसाने	४.	समाप्ति पर
वार्षिकः	१३.	वर्ष की आयु वाले	निज	५.	आत्म
तदा,	१.	उस समय	लाभ	६.	ज्ञान से
व्यास	१८.	वेदव्यास के	पूर्णः,	७.	परिपूर्ण
आत्मजः	१९.	पुत्र (शुकदेव जी)	प्रेम्णा	१०.	प्रेम-पूर्वक
ज्ञान	१४.	ज्ञानरूपी	पठन्	११.	पाठ करते हुए
महा	१५.	महा	भागवतम्	८.	भागवत का
अब्धि	१६.	सागर के	शनैः शनैः ॥	९.	धीरे-धीरे

श्लोकार्थ—उस समय वहाँ भागवत-कथा की समाप्ति पर आत्म-ज्ञान से परिपूर्ण, भागवत का धीरे-धीरे प्रेम-पूर्वक पाठ करते हुए, सोलह वर्ष की आयु वाले, ज्ञान-रूपी महासागर के चन्द्रमा तथा वेदव्यास के पुत्र शुकदेव जी आये ।

एकोनाशीतितमः श्लोकः

दृष्ट्वा सदस्याः परमोरुतेजसं, सद्यः समुत्थाय ददुर्महासनम् ।
प्रीत्या सुरर्षिस्तमपूजयत्सुखं, स्थितोऽवदत्संश्रृणुतामलां गिरम् ॥७९॥

पदच्छेद—दृष्ट्वा सदस्याः परम उरु तेजसम् , सद्यः समुत्थाय ददुः महा आसनम् ।
प्रीत्या सुरर्षिः तम् अपूजयत् सुखम् , स्थितः अवदत् संश्रृणुत अमलाम् गिरम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	३. (शुकदेव मुनि को) देखा और	प्रीत्या	१०. प्रेम-पूर्वक
सदस्याः, परम	१. सभासदों ने, अद्भुत एवं	सुरर्षिः, तम्	९. देवर्षि नारद ने, उनका
उरु, तेजसम्	२. महान्, तेजस्वी	अपूजयत्,	११. पूजन किया (तदनन्तर)
सद्यः	४. तत्काल	सुखम्	१२. सुखपूर्वक
समुत्थाय	५. खड़े होकर (उन्हें)	स्थितः	१३. बैठकर (श्रीशुकदेव जी ने)
ददुः	८. दिया	अवदत्	१४. कहा (कि आपलोग)
महा	६. ऊँचा	संश्रृणुत	१६. सुनें
आसनम् ।	७. आसन	अमलाम्, गिरम् ॥	१५. मेरी निर्मल, वाणी को

श्लोकार्थ—सभासदों ने अद्भुत एवं महान् तेजस्वी शुकदेव मुनि को देखा और तत्काल खड़े होकर उन्हें ऊँचा आसन दिया । देवर्षि नारद ने उनका प्रेम-पूर्वक पूजन किया । तदनन्तर सुख-पूर्वक बैठकर श्रीशुकदेव जी ने कहा कि आपलोग मेरी निर्मल वाणी को सुनें ।

अशीतितमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—**निगमकल्पतरोर्गलितं फलं, शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ।**
पिबत भागवतं रसमालयं, मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥८०॥

पदच्छेद—निगम कल्पतरोः गलितम् फलम् , शुक मुखात् अमृत द्रव संयुतम् ।
पिबत भागवतम् रसम् आलयम् , मुहुः अहो रसिकाः भुवि भावुकाः ॥

शब्दार्थ—

निगम, कल्पतरोः	४. वेद रूपी, कल्पवृक्ष का	पिबत	१४. पान करो
गलितम्	५. पका हुआ (तथा)	भागवतम्	११. भागवत के
फलम्	१०. फल (है अतः)	रसम्, आलयम्	१२. रस का, आजीवन
शुक	६. शुकदेव रूपी तोते के	मुहुः	१३. बार-बार
मुखात्	७. मुख-संयोग के कारण	अहो, रसिकाः	१. अरे, रसिक
अमृत	८. सुधा	भुवि	३. पृथ्वी पर
द्रव, संयुतम् ।	९. रस से, पगा हुआ	भावुकाः ॥	२. भावुक जनों ! (यह श्रीमद्भागवत)

श्लोकार्थ—अरे रसिक भावुक जनों ! यह श्रीमद्भागवत पृथ्वी पर वेदरूपी कल्पवृक्ष का पका हुआ तथा शुकदेव रूपी तोते के मुख-संयोग के कारण सुधा रस से पगा हुआ फल है, अतः भागवत के रस का आजीवन बार-बार पान करो ।

एकाशीतितमः श्लोकः

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सताम्,
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः,
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥८१॥

पदच्छेद—

धर्मः प्रोज्झित कैतवः अत्र परमः निर्मत्सराणाम् सताम्,
वेद्यम् वास्तवम् अत्र वस्तु शिवदम् ताप त्रय उन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनि कृते किम् वा परैः ईश्वरः,
सद्यः हृदि अवरुध्यते अत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिः तत् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	५.	निष्काम धर्म की (व्याख्या है)	**श्रीमद्भागवते**	१८.	श्रीमद्भागवत के रहते
प्रोज्झित	३.	रहित	**महामुनि**	१६.	वेदव्यास
कैतवः	२.	कपट से	**कृते**	१७.	रचित
अत्र	१.	इस (श्रीमद्भागवत) में	**किम्**	२०.	व्यर्थ हैं (क्योंकि)
परमः	४.	महान्	**वा**	१५.	अथवा
निर्मत्सराणाम्	७.	ईर्ष्या-रहित	**परैः**	१९.	दूसरे साधन
सताम्,	८.	सन्तों के	**ईश्वरः,**	२६.	ईश्वर को
वेद्यम्	९.	जानने योग्य	**सद्यः**	२७.	शीघ्र
वास्तवम्	१३.	त्रिकाल सत्य	**हृदि**	२५.	हृदय में
अत्र	६.	इसमें	**अवरुध्यते**	२८.	बैठा लेते हैं
वस्तु	१४.	वस्तु (वर्णित है)	**अत्र**	२१.	इसके
शिवदम्	१०.	कल्याणकारी	**कृतिभिः**	२२.	भाग्यशाली
ताप त्रय	११.	तीनों तापों का	**शुश्रूषुभिः**	२३.	श्रोतागण
उन्मूलनम्।	१२.	नाश करने वाली (और)	**तत्क्षणात् ॥**	२४.	तत्काल

श्लोकार्थ—इस श्रीमद्भागवत में कपट से रहित महान् निष्काम धर्म की व्याख्या है। इसमें ईर्ष्या-रहित सन्तों के जानने योग्य, कल्याणकारी, तीनों तापों का नाश करनेवाली और त्रिकाल सत्य वस्तु वर्णित है। अथवा वेदव्यास-रचित श्रीमद्भागवत के रहते दूसरे साधन व्यर्थ हैं, क्योंकि इसके भाग्यशाली श्रोतागण तत्काल हृदय में ईश्वर को शीघ्र बैठा लेते हैं।

द्व्यशीतितमः श्लोकः

श्रीमद्भागवतं पुराणतिलकं यद्वैष्णवानां धनम्,
यस्मिन् पारमहंस्यमेवममलं ज्ञानं परं गीयते ।
यत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतम्,
तच्छृण्वन् प्रपठन् विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः ॥८२॥

पदच्छेद—

श्रीमद्भागवतम् पुराण तिलकम् यद् वैष्णवानाम् धनम्,
यस्मिन् पारमहंस्यम् एवम् अमलम् ज्ञानम् परम् गीयते ।
यत्र ज्ञान विराग भक्ति सहितम् नैष्कर्म्यम् आविष्कृतम्,
तद् शृण्वन् प्रपठन् विचारण परः भक्त्या विमुच्येत् नरः ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्भागवतम्	२.	श्रीमद्भागवत	**ज्ञान**	१५.	ज्ञान
पुराण	३.	पुराणों में	**विराग**	१६.	वैराग्य और
तिलकम्	४.	सर्व श्रेष्ठ (है)	**भक्ति**	१७.	भक्ति के
यद्	१.	यह	**सहितम्**	१८.	साथ
वैष्णवानाम्	५.	वैष्णव जन का	**नैष्कर्म्यम्**	१९.	निष्काम कर्म का (भी)
धनम्,	६.	धन (है)	**आविष्कृतम्,**	२०.	वर्णन है
यस्मिन्	७.	इसमें	**तद्**	२१.	इसके
पारमहंस्यम्	८.	परमहंसों का	**शृण्वन्**	२२.	श्रवण
एवम्	१०.	एवम्	**प्रपठन्**	२३.	पठन (एवं)
अमलम्	९.	निर्मल	**विचारण**	२४.	मनन में
ज्ञानम्	१२.	ज्ञान	**परः**	२५.	तत्पर
परम्	११.	दिव्य	**भक्त्या**	२७.	भक्ति के द्वारा
गीयते ।	१३.	गाया गया है	**विमुच्येत्**	२८.	(संसार से) मुक्त हो जाता है
यत्र	१४.	इसमें	**नरः ॥**	२६.	मनुष्य

श्लोकार्थ—यह श्रीमद्भागवत पुराणों में सर्वश्रेष्ठ है, वैष्णव-जन का धन है। इसमें परमहंसों का निर्मल एवम् दिव्य ज्ञान गाया गया है। इसमें ज्ञान, वैराग्य और भक्ति के साथ निष्काम-कर्म का भी वर्णन है। इसके श्रवण, पठन एवं मनन में तत्पर मनुष्य भक्ति के द्वारा संसार से मुक्त हो जाता है।

त्र्यशीतितमः श्लोकः

स्वर्गे सत्ये च कैलासे वैकुण्ठे नास्त्ययं रसः ।
अतः पिबन्तु सद्भाग्या मा मा मुञ्चत कर्हिचित् ॥८३॥

पदच्छेद— स्वर्गे सत्ये च कैलासे, वैकुण्ठे न अस्ति अयम् रसः ।
अतः पिबन्तु सत् भाग्याः, मा मा मुञ्चत कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

स्वर्गे	३. स्वर्गलोक	रसः ।	२.	(कथा) रस
सत्ये	४. सत्य लोक	अतः	९.	इसलिए
च	६. और	पिबन्तु	११.	पान करें (इसे)
कैलासे	५. कैलास	सद्भाग्याः	१०.	हे भाग्यशाली जनों ! (इसका)
वैकुण्ठे	७. वैकुण्ठ लोक में (भी)	मा मा	१३.	मत
न अस्ति	८. नहीं है	मुञ्चत	१४.	छोड़े
अयम्	१. यह	कर्हिचित् ॥	१२.	कभी भी

श्लोकार्थ—यह कथा-रस स्वर्ग लोक, सत्यलोक, कैलाश और वैकुण्ठ लोक में भी नहीं है । इसलिए हे भाग्यशाली जनों ! इसका पान करें । इसे कभी भी मत छोड़े ।

चतुरशीतितमः श्लोकः

सूत उवाच—एवं ब्रुवाणे सति बादरायणौ, मध्ये सभायां हरिराविरासीत् ।
प्रह्लादबल्युद्धवफाल्गुनादिभिर् , वृतः सुरर्षिस्तमपूजयच्च तान् ॥८४॥

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणे सति बादरायणौ, मध्ये सभायाम् हरिः आविरासीत् ।
प्रह्लाद बलि उद्धव फाल्गुन आदिभिः, वृतः सुरर्षिः तम् अपूजयत् च तान् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	**बलि, उद्धव**	८.	बलि, उद्धव
ब्रुवाणे	३. कहते	**फाल्गुन**	९.	अर्जुन
सति	४. रहने पर	**आदिभिः**	१०.	इत्यादि (भक्तों) से
बादरायणौ,	१. शुकदेव मुनि के	**वृतः**	११.	घिरे हुए
मध्ये	६. बीच में	**सुरर्षिः**	१४.	देवर्षि नारद ने
सभायाम्	५. सभा के	**तम्**	१५.	उनका
हरिः	१२. भगवान् श्री हरि	**अपूजयत्**	१८.	पूजन किया
आविरासीत् ।	१३. प्रकट हो गये	**च**	१६.	और
प्रह्लाद	७. प्रह्लाद	**तान् ॥**	१७.	उन (भक्तों) का

श्लोकार्थ—शुकदेव मुनि के इस प्रकार कहते रहने पर सभा के बीच में प्रह्लाद, बलि, उद्धव, अर्जुन इत्यादि भक्तों से घिरे हुए भगवान् श्रीहरि प्रकट हो गये । देवर्षि नारद ने उनका और उन भक्तों का पूजन किया ।

पञ्चाशीतितमः श्लोकः

दृष्ट्वा प्रसन्नं महदासने हरिम्,
ते चक्रिरे कीर्तनमग्रतस्तदा ।
भवो भवान्या कमलासनस्तु,
तत्रागमत्कीर्तनदर्शनाय ॥८५॥

पदच्छेद--

दृष्ट्वा प्रसन्नम् महत् आसने हरिम्,
ते चक्रिरे कीर्तनम् अग्रतः तदा ।
भवः भवान्या कमलासनः तु,
तत्र आगमत् कीर्तन दर्शनाय ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	७.	देखकर	तदा ।	१.	उस समय
प्रसन्नम्	६.	प्रसन्न	भवः	१३.	भगवान् शंकर
महत्	४.	ऊँचे	भवान्या	१२.	पार्वती के साथ
आसने	५.	आसन पर	कमलासनः	१५.	ब्रह्मा जी (भी)
हरिम्,	३.	भगवान् श्रीहरि को	तु,	१४.	तथा
ते	२.	वे (भक्त गण)	तत्र	११.	वहाँ
चक्रिरे	१०.	करने लगे	आगमत्	१८.	आये थे
कीर्तनम्	९.	कीर्तन	कीर्तन	१६.	कीर्तन
अग्रतः	८.	(उनके) आगे	दर्शनाय ॥	१७.	देखने के लिये

श्लोकार्थ—

उस समय वे भक्तगण भगवान् श्रीहरि को ऊँचे आसन पर प्रसन्न देखकर उनके आगे कीर्तन करने लगे। वहाँ पार्वती के साथ भगवान् शंकर तथा ब्रह्माजी भी कीर्तन देखने के लिये आये थे।

षडशीतितमः श्लोकः

प्रह्लादस्तालधारी तरलगतितया चोद्धवः कांस्यधारी,
वीणाधारी सुरर्षिः स्वरकुशलतया रागकर्तार्जुनोऽभूत् ।
इन्द्रोऽवादीन्मृदङ्गं जयजयसुकराः कीर्तने ते कुमाराः,
यत्राग्रे भाववक्ता सरसरचनया व्यासपुत्रो बभूव ॥८६॥

पदच्छेद—

प्रह्लादः तालधारी तरल गतितया च उद्धवः कांस्यधारी,
वीणाधारी सुरर्षिः स्वर कुशलतया राग कर्ता अर्जुनः अभूत् ।
इन्द्रः अवादीत् मृदङ्गम् जय जय सुकराः कीर्तने ते कुमाराः,
यत्र अग्रे भाव वक्ता सरस रचनया व्यास पुत्रः बभूव ॥

शब्दार्थ—

प्रह्लादः	६.	प्रह्लाद जी ने	**अवादीत्**	१६.	बजाया
तालधारी	७.	करताल ले लिया	**मृदङ्गम्**	१८.	मृदङ्ग
तरल	४.	फुर्तीले	**जय जय**	२२.	जय-जयकार
गतितया	५.	होने के कारण	**सुकराः**	२३.	करने लगे
च	२४.	और	**कीर्तने**	३.	कीर्तन में
उद्धवः	८.	उद्धव जी	**ते**	२०.	वे
कांस्यधारी,	६.	झाँझ बजाने लगे	**कुमाराः,**	२१.	सनकादि कुमार
वीणाधारी	११.	वीणा बजाने लगे	**यत्र**	१.	वहाँ
सुरर्षिः	१०.	देवर्षि नारद	**अग्रे**	२.	(भगवान् के) आगे
स्वर	१२.	गाने में	**भाव**	२८.	नृत्य का भाव
कुशलतया	१३.	निपुण होने के कारण	**वक्ता**	२६.	बताने वाले
राग कर्ता	१५.	राग अलापने वाले	**सरस**	२६.	मधुर
अर्जुनः	१४.	अर्जुन	**रचनया**	२७.	भाव-भंगिमा के द्वारा
अभूत् ।	१६.	हुए	**व्यासपुत्रः**	२५.	शुकदेव मुनि
इन्द्रः	१७.	इन्द्र ने	**बभूव ॥**	३०.	हुए

श्लोकार्थ—वहाँ भगवान् के आगे कीर्तन में फुर्तीले होने के कारण प्रह्लाद जी ने करताल ले लिया; उद्धव जी झाँझ बजाने लगे; देवर्षि नारद वीणा बजाने लगे; गाने में निपुण होने के कारण अर्जुन राग अलापने वाले हुए; इन्द्र ने मृदङ्ग बजाया; वे सनकादि कुमार जय-जयकार करने लगे और शुकदेव मुनि मधुर भाव-भंगिमा के द्वारा नृत्य का भाव बताने वाले हुए ।

सप्ताशीतितमः श्लोकः

ननर्त मध्ये त्रिकमेव तत्र, भक्त्यादिकानां नटवत्सुतेजसाम् ।
अलौकिकं कीर्तनमेतदीक्ष्य, हरिः प्रसन्नोऽपि वचोऽब्रवीत्तत् ॥८७॥

पदच्छेद— ननर्त मध्ये त्रिकम् एव तत्र, भक्ति आदिकानाम् नटवत् सुतेजसाम् ।
अलौकिकम् कीर्तनम् एतद् ईक्ष्य, हरिः प्रसन्नः अपि वचः अब्रवीत् तत् ॥

शब्दार्थ—

ननर्त	८. नाचने लगे	अलौकिकम्, कीर्तनम्	१०.	अद्भुत, कीर्तन को
मध्ये	२. (सभा के) बीच	एतद्	९.	इस
त्रिकम् एव	६. तीनों ही	ईक्ष्य,	११.	देखकर
तत्र,	१. वहाँ	हरिः	१२.	भगवान् श्री हरि
भक्ति	४. भक्ति	प्रसन्नः, अपि	१३.	प्रसन्न (हुए), तथा
आदिकानाम्	५. ज्ञान और वैराग्य	वचः	१५.	वचन
नटवत्	७. नट के समान	अब्रवीत्	१६.	बोले
सुतेजसाम् ।	३. परम तेजस्वी	तत् ॥	१४.	यह

श्लोकार्थ—वहाँ सभा के बीच परम तेजस्वी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य तीनों ही नट के समान नाचने लगे । इस अद्भुत कीर्तन को देखकर भगवान् श्री हरि प्रसन्न हुए तथा यह वचन बोले ।

अष्टाशीतितमः श्लोकः

मत्तो वरं भाववृताद् वृणुध्वं, प्रीतः कथाकीर्तनतोऽस्मि साम्प्रतम् ।
श्रुत्वेति तद्वाक्यमतिप्रसन्नाः, प्रेमार्द्रचित्ता हरिमूचिरे ते ॥८८॥

पदच्छेद— मत्तः वरम् भाव वृतात् वृणुध्वम्, प्रीतः कथा कीर्तनतः अस्मि साम्प्रतम् ।
श्रुत्वा इति तद् वाक्यम् अति प्रसन्नाः, प्रेम आर्द्र चित्ताः हरिम् ऊचिरे ते ॥

शब्दार्थ—

मत्तः	२. मुझसे	श्रुत्वा	११.	सुनकर
वरम्	३. वरदान	इति	९.	इस प्रकार
भाव, वृतात्	१. (तुम लोग) भाव के वशीभूत	तद् वाक्यम्	१०.	उनके वचन को
वृणुध्वम्,	४. माँगों	अति प्रसन्नाः,	१२.	अत्यन्त प्रसन्न (और)
प्रीतः	७. प्रसन्न	प्रेम आर्द्र चित्ताः	१३.	प्रेम के कारण भीगे हृदय से
कथा कीर्तनतः	६. सप्ताह कथा और कीर्तन से	हरिम्	१५.	भगवान् श्री हरि से
अस्मि	८. हूँ	ऊचिरे	१६.	कहा
साम्प्रतम् ।	५. इस समय (मैं)	ते ॥	१४.	उन (भक्तों) ने

श्लोकार्थ—तुम लोग भक्ति भाव के वशीभूत मुझसे वरदान माँगो । इस समय मैं सप्ताह कथा और कीर्तन से प्रसन्न हूँ, इस प्रकार उनके वचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न और प्रेम के कारण भीगे हृदय से उन भक्तों ने भगवान् श्री हरि से कहा ।

एकोननवतितमः श्लोकः

नगाहगाथासु च सर्वभक्तैः, एभिस्त्वया भाव्यमिति प्रयत्नात् ।
मनोरथोऽयं परिपूरणीयः, तथेति चोक्त्वान्तरधीयताच्युतः ॥८९॥

पदच्छेद— नगाह गाथासु च सर्वे भक्तैः, एभिः त्वया भाव्यम् इति प्रयत्नात् ।
मनोरथः अयम् परिपूरणीयः, तथा इति च उक्त्वा अन्तरधीयत अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

नगाह, गाथासु	३. श्रीमद्भागवत सप्ताह की कथाओं में	मनोरथः	९. कामना को
च	१. हे प्रभो !	अयम्	८. इस
सर्व, भक्तैः,	६. सभी, भक्तों के साथ	परिपूरणीयः,	१०. पूर्ण करें
एभिः	५. इन	तथा, इति	१३. 'तथास्तु', यह
त्वया	२. आप	च	११. तदनन्तर
भाव्यम्, इति	७. उपस्थित रहें, हमारी	उक्त्वा, अन्तरधीयत	१४. कहकर, अन्तर्धान हो गये
प्रयत्नात् ।	४. प्रयत्न करके	अच्युतः ॥	१२. भगवान् श्री हरि

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप श्रीमद्भागवत सप्ताह की कथाओं में प्रयत्न करके इन सभी भक्तों के साथ उपस्थित रहें; हमारी इस कामना को पूर्ण करें । तदनन्तर भगवान् श्री हरि 'तथास्तु' यह कहकर अन्तर्धान हो गये ।

नवतितमः श्लोकः

ततोऽनमत्तच्चरणेषु नारदः, तथा शुकादीनपि तापसांश्च ।
अथ प्रहृष्टाः परिनष्टमोहाः, सर्वे ययुः पीतकथामृतास्ते ॥९०॥

पदच्छेद— ततः अनमत् तद् चरणेषु नारदः, तथा शुक आदीन् अपि तापसान् च ।
अथ प्रहृष्टाः परिनष्ट मोहाः, सर्वे ययुः पीत कथा अमृताः ते ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	अथ	९. उसके बाद
अनमत्	८. प्रणाम किया	प्रहृष्टाः	१२. प्रसन्न होकर
तद्, चरणेषु	३. उन (श्रीहरि) के, चरण चिह्नों में	परिनष्ट	१४. छोड़कर
नारदः,	२. देवर्षि नारद ने	मोहाः,	१३. मोह को
तथा	४. और	सर्वे	११. सभी (भक्त गण)
शुक, आदीन्	५. शुकदेव, इत्यादि	ययुः	१८. चले गये
अपि	७. भी	पीत	१७. पान करके
तापसान्	६. तपस्वियों को	कथा, अमृताः	१६. कथारूपी अमृत रस का
च ।	१५. तथा	ते ॥	१०. वे

श्लोकार्थ—तदनन्तर देवर्षि नारद ने उन श्री हरि के चरण चिह्नों में और शुकदेव इत्यादि तपस्वियों को भी प्रणाम किया । उसके बाद वे सभी भक्तगण प्रसन्न होकर, मोह को छोड़कर तथा कथा रूपी अमृत-रस का पान करके चले गये ।

एकनवतितमः श्लोकः

भक्तिः सुताभ्यां सह रक्षिता सा, शास्त्रे स्वकीयेऽपि तदा शुकेन ।
अतो हरिर्भागवतस्य सेवनात्, चित्तं समायाति हि वैष्णवानाम् ॥९१॥

पदच्छेद—

भक्तिः सुताभ्याम् सह रक्षिता सा, शास्त्रे स्वकीये अपि तदा शुकेन ।
अतः हरिः भागवतस्य सेवनात्, चित्तम् समायाति हि वैष्णवानाम् ॥

शब्दार्थ—

भक्तिः	८.	भक्ति को	शुकेन ।	२.	शुकदेव मुनि ने
सुताभ्याम्	५.	ज्ञान और वैराग्य के	अतः	११.	इसलिये
सह	६.	साथ	हरिः	१६.	भगवान् श्रीहरि
रक्षिता	१०.	स्थापित कर लिया	भागवतस्य	१२.	श्रीमद्भागवत का
सा,	७.	उस	सेवनात्,	१३.	पाठ करने से
शास्त्रे	४.	श्रीमद्भागवत महापुराण में	चित्तम्	१५.	हृदय में
स्वकीये	३.	अपने	समायाति	१८.	प्रकट हो जाते हैं
अपि	९.	भी	हि	१७.	अवश्य
तदा	१.	उस समय	वैष्णवानाम् ॥	१४.	वैष्णवों के

श्लोकार्थ—उस समय शुकदेव मुनि ने अपने श्रीमद्भागवत महापुराण में ज्ञान और वैराग्य के साथ उस भक्ति को भी स्थापित कर लिया, इसलिये श्रीमद्भागवत का पाठ करने से वैष्णवों के हृदय में भगवान् श्रीहरि अवश्य प्रकट हो जाते हैं ।

द्विनवतितमः श्लोकः

दारिद्र्यदुःखज्वरदाहितानाम्, मायापिशाचीपरिमर्दितानाम् ।
संसारसिन्धौ परिपातितानाम्, क्षेमाय वै भागवतं प्रगर्जति ॥९२॥

पदच्छेद—

दारिद्र्य दुःख ज्वर दाहितानाम्, माया पिशाची परिमर्दितानाम् ।
संसार सिन्धौ परिपातितानाम्, क्षेमाय वै भागवतम् प्रगर्जति ॥

शब्दार्थ—

दारिद्र्य	१.	दरिद्रता के	संसार, सिन्धौ	६.	संसार रूपी, समुद्र में
दुःख, ज्वर	२.	दुःखरूपी, ज्वर से	परिपातितानाम्,	७.	डुबाये गये (प्राणियों) के
दाहितानाम्,	३.	जलाये हुये	क्षेमाय, वै	८.	कल्याण के लिये, ही
माया पिशाची	४.	मायारूपी राक्षसी से	भागवतम्	९.	श्रीमद्भागवत महापुराण
परिमर्दितानाम् ।	५.	अच्छी तरह सताये गये (तथा)	प्रगर्जति ॥	१०.	गर्जना कर रहा है

श्लोकार्थ—दरिद्रता के दुःख रूपी ज्वर से जलाये हुये, माया रूपी राक्षसी से अच्छी तरह सताये गये तथा संसार रूपी समुद्र में डुबाये गये प्राणियों के कल्याण के लिये ही श्रीमद्भागवत महापुराण गर्जना कर रहा है ।

त्रिनवतितमः श्लोकः

शौनक उवाच—— शुकेनोक्तं कदा राज्ञे गोकर्णेन कदा पुनः ।
सुरर्षये कदा ब्राह्मैश्छिन्धि मे　　　त्विमम् ॥९३॥

पदच्छेद——

शुकेन उक्तम् कदा राज्ञे, गोकर्णेन कदा पुनः ।
सुरर्षये कदा ब्राह्मैः, छिन्धि मे संशयम् तु इमम् ॥

शब्दार्थ——

शुकेन	१.	श्रीशुकदेव मुनि ने	सुरर्षये	१०.	देवर्षि नारद से
उक्तम्	४.	कही	कदा	११.	कब (कही)
कदा	३	कब	ब्राह्मैः	९.	सनकादि कुमारों ने
राज्ञे	२.	राजा परीक्षित् से (यह कथा)	छिन्धि	१५.	दूर करें
गोकर्णेन	६.	गोकर्ण जी ने	मे	१२.	मेरे
कदा	७.	कब (सुनायी)	संशयम्	१४.	सन्देह को
पुनः ।	५.	फिर	तु	८.	और
			इमम् ॥	१३.	इस

श्लोकार्थ——श्रीशुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित् से यह कथा कब कही, फिर गोकर्ण जी ने कब सुनायी और सनकादि कुमारों ने देवर्षि नारद से कब कही; मेरे इस सन्देह को दूर करें ।

चतुर्णवतितमः श्लोकः

सूत उवाच—— आकृष्णनिर्गमात्त्रिंशद्वर्षाधिकगते कलौ ।
नवमीतो नभस्ये च कथारम्भं शुकोऽकरोत् ॥९४॥

पदच्छेद——

आ कृष्ण निर्गमात् त्रिंशत्, वर्ष अधिक गते कलौ ।
नवमीतः नभस्ये च, कथा आरम्भम् शुकः अकरोत् ॥

शब्दार्थ——

आ	३.	पश्चात्	नवमीतः	१०.	नवमी तिथि से
कृष्ण	१.	भगवान् श्री कृष्ण के	नभस्ये	९.	भाद्रपद मास (शुक्ल पक्ष) की
निर्गमात्	२.	(गोलोक) चले जाने के	च	८.	तदनन्तर
त्रिंशत्	५.	तीस	कथा	१२.	भागवत कथा का
वर्ष अधिक	६.	वर्ष अधिक	आरम्भम्	१३.	प्रारम्भ
गते	७.	बीत जाने पर	शुकः	११.	श्रीशुकदेव जी ने
कलौ ।	४.	कलियुग के	अकरोत् ॥	१४.	किया था

श्लोकार्थ——भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोक चले जाने के पश्चात् कलियुग के तीस वर्ष अधिक बीत जाने पर तदनन्तर भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि से श्रीशुकदेव जी ने भागवत कथा का प्रारम्भ किया था ।

पञ्चनवतितमः श्लोकः

परीक्षिच्छ्रवणान्ते च कलौ वर्षशतद्वये ।
शुद्धे शुचौ नवम्यां च धेनुजोऽकथयत्कथाम् ॥९५॥

पदच्छेद— परीक्षित् श्रवण अन्ते च, कलौ वर्ष शत द्वये ।
शुद्धे शुचौ नवम्याम् च, धेनुजः अकथयत् कथाम् ॥

शब्दार्थ—

परीक्षित्	१.	राजा परीक्षित् के	शुद्धे	९.	शुक्ल पक्ष की
श्रवण	२.	(कथा) सुनने के	शुचौ	८.	आषाढ़ मास के
अन्ते	३.	पश्चात्	नवम्याम्	१०.	नवमी तिथि से
च	७.	और (बीत जाने पर)	च	१२.	यह
कलौ	४.	कलियुग के	धेनुजः	११.	गोकर्ण जी ने
वर्ष	६.	वर्ष	अकथयत्	१४.	कही
शत द्वये ।	५.	दो सौ	कथाम् ॥	१३.	कथा

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् के कथा सुनने के पश्चात् कलियुग के दो सौ वर्ष और बीत जाने पर आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि से गोकर्ण जी ने यह कथा कही ।

षण्णवतितमः श्लोकः

तस्मादपि कलौ प्राप्ते त्रिंशद्वर्षगते सति ।
ऊचुरूर्जे सिते पक्षे नवम्यां ब्रह्मणः सुताः ॥९६॥

पदच्छेद— तस्मात् अपि कलौ प्राप्ते, त्रिंशत् वर्ष गते सति ।
ऊचुः ऊर्जे सिते पक्षे, नवम्याम् ब्रह्मणः सुताः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	उससे	ऊचुः	१४.	(यह कथा) सुनायी
अपि	२.	भी	ऊर्जे	१०.	कार्तिक मास के
कलौ	४.	कलियुग के	सिते	११.	शुक्ल
प्राप्ते	३.	आगे	पक्षे	१२.	पक्ष की
त्रिंशत् वर्ष	५.	तीस वर्ष	नवम्याम्	१३.	नवमी तिथि से
गते	६.	बीत जाने	ब्रह्मणः	८.	ब्रह्मा जी के
सति ।	७.	पर	सुताः ॥	९.	मानस पुत्र (सनकादि कुमारों ने)

श्लोकार्थ—उससे भी आगे कलियुग के तीस वर्ष बीत जाने पर ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सनकादि कुमारों ने कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि से यह कथा सुनायी ।

सप्तनवतितमः श्लोकः

इत्येतत्ते समाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयानघ ।
कलौ भागवती वार्ता भवरोगविनाशिनी ॥९७॥

पदच्छेद— इति एतद् ते समाख्यातम् , यद् पृष्टः अहम् त्वया अनघ ।
कलौ भागवती वार्ता, भव रोग विनाशिनी ॥

शब्दार्थ—

इति	६. इस प्रकार	त्वया	२. तुमने
एतद्	८. वह सब	अनघ ।	१. हे निष्पाप (शौनक जी) !
ते	७. तुम्हें	कलौ	१०. कलियुग में
समाख्यातम्	९. बता दिया है	भागवती	११. श्रीमद्भागवत की
यद्	४. जो	वार्ता	१२. कथा
पृष्टः	५. पूछा था	भव रोग	१३. संसार रूपी रोग को
अहम्	३. मुझसे	विनाशिनी ॥	१४. मिटाने वाली है

श्लोकार्थ—हे निष्पाप शौनक जी ! तुमने मुझसे जो पूछा था, इस प्रकार तुम्हें वह सब बता दिया है । कलियुग में श्रीमद्भागवत की कथा संसार रूपी रोग को मिटाने वाली है ।

अष्टनवतितमः श्लोकः

कृष्णप्रियं सकलकल्मषनाशनं च, मुक्त्येकहेतुमिह भक्तिविलासकारि ।
सन्तः कथानकमिदं पिबतादरेण, लोके हि तीर्थपरिशीलनसेवया किम् ॥९८॥

पदच्छेद—कृष्ण प्रियम् सकल कल्मष नाशनम् च, मुक्ति एक हेतुम् इह भक्ति विलासकारि ।
सन्तः कथानकम् इदम् पिबत आदरेण, लोके हि तीर्थ परिशीलन सेवया किम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण, प्रियम्	२. भगवान् श्रीकृष्ण की, प्रिया	सन्तः	१. हे सन्तों ! (आपलोग)
सकल	३. सम्पूर्ण	कथानकम्	१२. कथा का
कल्मष, नाशनम्	४. पापों का, नाश करने वाली	इदम्	११. इस
च,	८. और	पिबत	१४. पान करें
मुक्ति	६. मुक्ति का	आदरेण,	१३. आदर के साथ
एक, हेतुम्	७. प्रधान, साधन	लोके	१६. संसार में
इह	५. संसार से	हि	१५. इसके विपरीत
भक्ति	९. भक्ति को	तीर्थ, परिशीलन	१७. तीर्थों में, भ्रमण (और)
विलासकारि ।	१०. बढ़ाने वाली	सेवया, किम् ॥	१८. (वहाँ) निवास से क्या लाभ है

श्लोकार्थ—हे सन्तों ! आप लोग भगवान् श्रीकृष्ण की प्रिया, सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली, संसार से मुक्ति का प्रधान साधन और भक्ति को बढ़ाने वाली इस कथा का आदर के साथ पान करें । इसके विपरीत संसार में तीर्थों में भ्रमण और वहाँ निवास से क्या लाभ है ? अर्थात् निरर्थक है ।

नवनवतितमः श्लोकः

स्वपुरुषमपि वीक्ष्य पाशहस्तम्,
वदति यमः किल तस्य कर्णमूले ।
परिहर भगवत्कथासु मत्तान्,
प्रभुरहमन्यनृणां न वैष्णवानाम् ॥९९॥

पदच्छेद—

स्व पुरुषम् अपि वीक्ष्य पाश हस्तम्,
वदति यमः किल तस्य कर्ण मूले ।
परिहर भगवत् कथासु मत्तान्,
प्रभुः अहम् अन्य नृणाम् न वैष्णवानाम् ॥

शब्दार्थ—

स्व	५. अपने	मूले ।	१०. पास
पुरुषम्	६. दूत को	परिहर	१६. छोड़ देना
अपि	२. भी	भगवत्	१३. भगवान् की
वीक्ष्य	७. देखकर	कथासु	१४. कथाओं में
पाश	४. पाश लिये	मत्तान्,	१५. मस्त (लोगों) को
हस्तम्	३. हाथ में	प्रभुः	२२. स्वामी (हूँ)
वदति	११. कहता है	अहम्	१७. (क्योंकि) मैं
यमः	१. यमराज	अन्य	२०. दूसरे
किल	१२. कि	नृणाम्	२१. लोगों का
तस्य	८. उसके	न	१९. नहीं (किन्तु)
कर्ण	९. कान के	वैष्णवानाम् ॥	१८. विष्णु भक्तों का

श्लोकार्थ—यमराज भी हाथ में पाश लिये अपने दूत को देखकर उसके कान के पास कहता है कि भगवान् की कथाओं मे मस्त लोगों को छोड़ देना, क्योंकि मैं विष्णु भक्तों का नहीं, किन्तु दूसरे लोगों का स्वामी हूँ ।

शततमः श्लोकः

असारे संसारे विषयविषसङ्गाकुलधियः,
क्षणार्धं क्षेमार्थं पिबत शुकगाथातुलसुधाम् ।
किमर्थं व्यर्थं भो व्रजत कुपथे कुत्सितकथे,
परीक्षित्साक्षी यच्छ्रवणगतमुक्त्युक्तिकथने ॥१००॥

पदच्छेद—

असारे संसारे विषय विष सङ्ग आकुल धियः,
क्षण अर्धम् क्षेमार्थम् पिबत शुक गाथा अतुल सुधाम् ।
किमर्थम् व्यर्थम् भो व्रजत कुपथे कुत्सित कथे,
परीक्षित् साक्षी यद् श्रवण गत मुक्ति उक्ति कथने ॥

शब्दार्थ—

असारे	१.	सार-हीन	किमर्थम्	२१.	क्यों
संसारे	२.	संसार में	व्यर्थम्	२०.	निरर्थक
विषय	३.	विषय रूपी	भोः	१६.	अरे ! (आप लोग)
विष	४.	विष के	व्रजत	२२.	भटक रहे हैं
सङ्ग	५.	संयोग से	कुपथे	१९.	कुमार्ग में
आकुल	६.	व्याकुल	कुत्सित	१७.	निन्दित
धियः,	७.	बुद्धिवाले (आप लोग)	कथे,	१८.	कथाओं के
क्षण	१०.	क्षण (भी)	परीक्षित्	२९.	राजा परीक्षित्
अर्धम्	९.	आधे	साक्षी	३०.	प्रमाण (हैं)
क्षेमार्थम्	८.	(अपने) कल्याण के लिये	यद्	२३.	क्योंकि (इस कथा के)
पिबत	१५.	पान करें	श्रवण	२४.	कान में
शुक	११.	श्रीमद्भागवत के	गत	२५.	पड़ने से
गाथा	१२.	कथारूपी	मुक्ति	२६.	मोक्ष की (प्राप्ति होती है)
अतुल	१३.	अनुपम	उक्ति	२७.	(इस) बात को
सुधाम् ।	१४.	अमृत-रस का	कथने ॥	२८.	कहने में

श्लोकार्थ --सार-हीन संसार में विषय रूपी विष के संयोग से व्याकुल बुद्धिवाले आपलोग अपने कल्याण के लिये आधे क्षण भी श्रीमद्भागवत के कथारूपी अनुपम अमृत-रस का पान करें। अरे ! आप लोग निन्दित कथाओं के कुमार्ग में निरर्थक क्यों भटक रहे हैं ? क्योंकि इस कथा के कान में पड़ने से मोक्ष की प्राप्ति होती है, इस बात को कहने में राजा परीक्षित् प्रमाण हैं।

एकाधिकशततमः श्लोकः

रसप्रवाहसंस्थेन श्रीशुकेनेरिता कथा।
कण्ठे सम्बध्यते येन स वैकुण्ठप्रभुर्भवेत् ॥१०१॥

पदच्छेद— रस प्रवाह संस्थेन, श्रीशुकेन ईरिता कथा।
कण्ठे सम्बध्यते येन, सः वैकुण्ठ प्रभुः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

रस, प्रवाह	१.	भक्ति-रस की, धारा में	सम्बध्यते	७.	धारण रखता है
संस्थेन	२.	स्थित रहने वाले	येन	५.	जो (व्यक्ति)
श्रीशुकेन	३.	श्रीशुकदेव मुनि के द्वारा	सः	८.	वह
ईरिता, कथा।	४.	कही गयी, कथा को	वैकुण्ठ, प्रभुः	९.	वैकुण्ठ लोक का, स्वामी
कण्ठे	६.	(अपने) कण्ठ में	भवेत् ॥	१०.	हो जाता है

श्लोकार्थ—भक्ति-रस की धारा में स्थित रहने वाले श्रीशुकदेव मुनि के द्वारा कही गयी कथा को जो व्यक्ति अपने कण्ठ में धारण रखता है, वह वैकुण्ठ लोक का स्वामी हो जाता है।

द्व्यधिकशततमः श्लोकः

इति च परमगुह्यं सर्वसिद्धान्तसिद्धम्, सपदि निगदितं ते शास्त्रपुञ्जं विलोक्य।
जगति शुककथातो निर्मलं नास्ति किञ्चित्, पिब परसुखहेतोर्द्वादशस्कन्धसारम् ॥१०२॥

पदच्छेद—

इति च परम गुह्यम् सर्व सिद्धान्त सिद्धम्, सपदि निगदितम् ते शास्त्र पुञ्जम् विलोक्य।
जगति शुक कथातः निर्मलम् न अस्ति किञ्चित्, पिब पर सुख हेतोः द्वादश स्कन्ध सारम् ॥

शब्दार्थ—

इति	८.	यह (उपाय)	जगति	११.	संसार में
च	५.	और	शुक, कथातः	१२.	श्रीमद्भागवत कथा से अधिक
परम्, गुह्यम्	४.	अत्यन्त, गोपनीय	निर्मलम्	१३.	पवित्र
सर्व, सिद्धान्त	६.	सभी, मतों में	न अस्ति	१५.	नहीं है (अतः)
सिद्धम्,	७.	मान्य	किञ्चित्,	१४.	कुछ भी
सपदि	९.	तत्काल	पिब	२०.	पान करो
निगदितम्	१०.	बता दिया गया	पर, सुख	१६.	परम, आनन्द को
ते	३.	तुम्हें	हेतोः	१७.	पाने के लिए
शास्त्र, पुञ्जम्	१.	शास्त्रों के, समूह को	द्वादश, स्कन्ध	१८.	बारह, स्कन्धों वाले
विलोक्य।	२.	देखकर	सारम् ॥	१९.	सारभूत (इस रस) का

श्लोकार्थ—शास्त्रों के समूह को देखकर तुम्हें अत्यन्त गोपनीय और सभी मतों में मान्य यह उपाय तत्काल बता दिया गया। संसार में श्रीमद्भागवत कथा से अधिक पवित्र कुछ भी नहीं है; अतः परम आनन्द को पाने के लिए बारह स्कन्धों वाले सारभूत इस रस का पान करो।

त्र्यधिकशततमः श्लोकः

एतां यो नियततया शृणोति भक्त्या,
यश्चैनां कथयति शुद्धवैष्णवाग्रे ।
तौ सम्यग्विधिकरणात्फलं लभेते,
याथार्थ्यान्न हि भुवने किमप्यसाध्यम् ॥१०३॥

पदच्छेद—

एताम् यः नियततया शृणोति भक्त्या,
यः च एनाम् कथयति शुद्ध वैष्णव अग्रे ।
तौ सम्यक् विधि करणात् फलम् लभेते,
याथार्थ्यात् न हि भुवने किमपि असाध्यम् ॥

शब्दार्थ—

एताम्	३. इस (कथा) को		तौ	१३. वे दोनों
यः	१. जो (व्यक्ति)		सम्यक्	१४. उचित
नियततया	४. नियम-पूर्वक		विधि	१५. अनुष्ठान
शृणोति	५. सुनता है		करणात्	१६. करने के कारण
भक्त्या,	२. भक्ति-भाव से		फलम्	१७. मोक्ष-फल को
यः	७. जो (व्यक्ति)		लभेते,	१८. प्राप्त करते हैं
च	६. तथा		याथार्थ्यात्	१९. सत्य है कि (उनके लिए)
एनाम्	११. इस (कथा) को		न हि	२३. नहीं (है)
कथयति	१२. कहता है		भुवने	२०. संसार में
शुद्ध	८. पवित्र		किमपि	२१. कुछ भी
वैष्णव	९. विष्णु भक्तों के		असाध्यम् ॥	२२. दुर्लभ
अग्रे ।	१०. सामने			

श्लोकार्थ—जो व्यक्ति भक्ति-भाव से इस कथा को नियम-पूर्वक सुनता है तथा जो व्यक्ति पवित्र विष्णु भक्तों के सामने इस कथा को कहता है; वे दोनों उचित अनुष्ठान करने के कारण मोक्ष-फल को प्राप्त करते हैं। सत्य है कि उनके लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीमद्भागवतमाहात्म्ये विप्रमोक्षो नाम षष्ठः अध्यायः ॥६॥

॥ समाप्तमिदं श्रीमद्भागवतमाहात्म्यम् ॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः



राधा भक्तिर्हरिर्ज्ञानं ताभ्यां या च समन्विता ।
तां श्रीभागवतीं गाथां वन्दे युगलरूपिणीम् ॥

ॐ तत्सत्
श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ प्रथमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्,
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा,
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥१॥

पदच्छेद— जन्म आदि अस्य यतः अन्वयात् इतरतः च अर्थेषु अभिज्ञः स्वराट्,
तेने ब्रह्म हृदा यः आदिकवये मुह्यन्ति यत् सूरयः।
तेजः वारि मृदाम् यथा विनिमयः यत्र त्रिसर्गः अमृषा,
धाम्ना स्वेन सदा निरस्त कुहकम् सत्यम् परम् धीमहि ॥

शब्दार्थ—

जन्म, आदि	७. सृष्टि, स्थिति और नाश होता है	यत्, सूरयः।	१२. जिसके विषय में, विद्वज्जन
अस्य	६. इस जगत् की	तेजः, वारि, मृदाम्	१५. प्रकाश, जल और थल में
यतः	५. जिस परमात्मा से	यथा	१४. जैसे
अन्वयात्	२. निरन्तर व्याप्ति	विनिमयः	१६. भ्रान्ति हो जाती है (वैसे ही)
इतरतः	४. अभाव होने के कारण	यत्र, त्रिसर्गः	१७. जहाँ, त्रिगुणात्मिका सृष्टि
च	३. और (असत् पदार्थों में)	अमृषा,	१८. सत्यवत् प्रतीत होती है
अर्थेषु	१. सद्रूप पदार्थों में	धाम्ना, स्वेन	१९. तेज से, अपने
अभिज्ञः, स्वराट्,	८. सर्वज्ञ, (एवं) स्वयंप्रकाश	सदा	२०. सर्वदा
तेने	११. उपदेश दिया	निरस्त, कुहकम्	२१. मुक्त रहने वाले, माया से
ब्रह्म, हृदा	१०. वेद का, हृदय से	सत्यम्	२३. सत्य स्वरूप परमात्मा का
यः, आदिकवये	९. जिस परमात्मा ने, ब्रह्मा को	परम्	२२. (उस) परम
मुह्यन्ति	१३. मोहित रहते हैं (तथा)	धीमहि ॥	२४. हम ध्यान करते हैं

श्लोकार्थ—सद्रूप पदार्थों में निरन्तर व्याप्ति और असत् पदार्थों में अभाव होने के कारण जिस परमात्मा से इस जगत् की सृष्टि, स्थिति और नाश होता है; सर्वज्ञ एवं स्वयंप्रकाश जिस परमात्मा ने ब्रह्मा जी को वेद का हृदय से उपदेश दिया; जिसके विषय में विद्वज्जन मोहित रहते हैं तथा जैसे प्रकाश, जल और थल में परस्पर भ्रान्ति हो जाती है वैसे ही जहाँ त्रिगुणात्मिका सृष्टि सत्य की भाँति प्रतीत होती है; अपने तेज से सर्वदा माया से मुक्त रहने वाले उस परम सत्यस्वरूप परमात्मा का हम ध्यान करते हैं।

द्वितीयः श्लोकः

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सताम्,
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः,
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ।।२।।

पदच्छेद—

धर्मः प्रोज्झित कैतवः अत्र परमः निर्मत्सराणाम् सताम्,
वेद्यम् वास्तवम् अत्र वस्तु शिवदम् ताप त्रय उन्मूलनम्।
श्रीमद्भागवते महामुनि कृते किम् वा परैः ईश्वरः,
सद्यः हृदि अवरुध्यते अत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिः तत् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	१२.	वैदिक धर्म का	**श्रीमद्भागवते**	२६.	श्रीमद्भागवत के रहते
प्रोज्झित	१०.	रहित	**महामुनि कृते**	२४.	वेद व्यास रचित
कैतवः	६.	कपट और पाखण्ड से	**किम्**	२८.	व्यर्थ (हैं)
अत्र	१.	इस ग्रन्थ में	**वा**	२३.	अतः
परमः	११.	सर्व श्रेष्ठ	**परैः**	२७.	अन्य साधन
निर्मत्सराणाम्	२.	मद-मत्सर से रहित	**ईश्वरः,**	१८.	ईश्वर को
सताम्,	३.	सज्जनों के	**सद्यः**	२१.	शीघ्र
वेद्यम्	४.	जानने योग्य	**हृदि**	१७.	हृदय में
वास्तवम्	६.	परम सत्य (एवं)	**अवरुध्यते**	२२.	विराजमान कर लेते हैं
अत्र	२५.	इस	**अत्र**	१४.	इस (श्रीमद्भागवत) को
वस्तु	१३.	विषय (वर्णित है)	**कृतिभिः**	१६.	भाग्यशाली पुरुष
शिवदम्	५.	कल्याणकारी	**शुश्रूषुभिः**	१५.	सुनने के इच्छुक
ताप त्रय	७.	तीनों तापों को	**तत्**	१६.	उसी
उन्मूलनम्।	८.	जड़ से उखाड़ने वाला	**क्षणात् ॥**	२०.	क्षण

श्लोकार्थ—इस ग्रन्थ में मद-मत्सर से रहित सज्जनों के जानने योग्य, कल्याणकारी, परम सत्य एवम् तीनों तापों को जड़ से उखाड़ने वाला, कपट और पाखण्ड से रहित, सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म का विषय वर्णित है। इस श्रीमद्भागवत को सुनने के इच्छुक भाग्यशाली पुरुष हृदय में ईश्वर को उसी क्षण शीघ्र विराजमान कर लेते हैं, अतः वेदव्यास रचित इस श्रीमद्भागवत के रहते अन्य साधन व्यर्थ हैं।

तृतीयः श्लोकः

निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्, शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् ।
पिबत भागवतं रसमालयम्, मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥३॥

पदच्छेद—

निगम कल्पतरोः गलितम् फलम्, शुक मुखात् अमृत द्रव संयुतम् ।
पिबत भागवतम् रसम् आलयम्, मुहुः अहो रसिकाः भुवि भावुकाः ॥

शब्दार्थ—

निगम	४. वेदरूपी		भागवतम्	१२. श्रीमद्भागवतरूपी
कल्पतरोः	५. कल्पवृक्ष से		रसम्	१४. रस का
गलितम्	७. टपके हुये (एवं)		आलयम्,	१५. आजीवन
फलम्,	१३. फल के		मुहुः	१६. बार-बार
शुक	८. शुकदेवरूपी तोते के		अहो	१. अरे
मुखात्	९. मुख के		रसिकाः	३. रसिक जनों !
अमृत द्रव	१०. सुधा रस से		भुवि	६. पृथ्वी पर
संयुतम् ।	११. पगे हुये		भावुकाः ॥	२. सहृदय
पिबत	१७. पान करो			

श्लोकार्थ—अरे सहृदय रसिक जनों ! वेदरूपी कल्पवृक्ष से पृथ्वी पर टपके हुए एवम् शुकदेवरूपी तोते मुख के सुधा रस से पगे हुये श्रीमद्भागवतरूपी फल के रस का आजीवन बार-बार पान करो।

चतुर्थः श्लोकः

नैमिषेऽनिमिषक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः ।
सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत ॥४॥

पदच्छेद—

नैमिषे अनिमिष क्षेत्रे, ऋषयः शौनक आदयः ।
सत्रम् स्वर्गाय लोकाय, सहस्र समम् आसत ॥

शब्दार्थ—

नैमिषे	२. नैमिषारण्य में		स्वर्गाय	६. स्वर्ग (और)
अनिमिष क्षेत्रे	१. देव क्षेत्र		लोकाय	७. लोक के (कल्याण) के लिये
ऋषयः	५. ऋषिगण		सहस्र	८. एक हजार
शौनक	३. शौनक		समम्	९. वर्ष में पूर्ण होने वाले
आदयः ।	४. इत्यादि		आसत ॥	११. बैठे थे
सत्रम्	१०. यज्ञ में			

श्लोकार्थ—देव-क्षेत्र नैमिषारण्य में शौनक इत्यादि ऋषिगण स्वर्ग और लोक के कल्याण के लिये एक हजार वर्ष में पूर्ण होने वाले यज्ञ में बैठे थे ।

पञ्चमः श्लोकः

त एकदा तु मुनयः प्रातर्हुतहुताग्नयः ।
सत्कृतं सूतमासीनं पप्रच्छुरिदमादरात् ॥५॥

पदच्छेद—

ते एकदा तु मुनयः, प्रातः हुत हुताग्नयः ।
सत्कृतम् सूतम् आसीनम्, पप्रच्छुः इदम् आदरात् ॥

शब्दार्थ—

ते	५.	उन	सत्कृतम्	७.	सत्कार पाये हुये (तथा)
एकदा तु	१.	एक बार	सूतम्	९.	सूतजी से
मुनयः	६.	मुनिजनों ने	आसीनम्	८.	बैठे हुए
प्रातः	२.	सबेरे	पप्रच्छुः	१२.	पूछा
हुत	४.	हवन किये हुये	इदम्	११.	यह
हुताग्नयः ।	३.	आहवनीय अग्नि में	आदरात् ॥	१०.	आदर के साथ

श्लोकार्थ—एक बार सबेरे आहवनीय अग्नि में हवन किये हुये उन मुनिजनों ने सत्कार पाये हुये तथा बैठे हुये सूत जी से आदर के साथ यह पूछा ।

षष्ठः श्लोकः

ऋषय ऊचुः—

त्वया खलु पुराणानि सेतिहासानि चानघ ।
आख्यातान्यप्यधीतानि धर्मशास्त्राणि यान्युत ॥६॥

पदच्छेद—

त्वया खलु पुराणानि, स इतिहासानि च अनघ ।
आख्यातानि अपि अधीतानि, धर्म शास्त्राणि यानि उत ॥

शब्दार्थ—

त्वया	२.	आपने	अनघ ।	१.	हे निष्पाप सूत जी !
खलु	३.	निश्चय पूर्वक	आख्यातानि, अपि	१२.	व्याख्या, भी की है
पुराणानि	६.	पुराणों को	अधीतानि	९.	पढ़ा है
स	५.	साथ	धर्म शास्त्राणि	८.	धर्म शास्त्रों को
इतिहासानि	४.	इतिहासों के	यानि	११.	उनकी
च	७.	और	उत ॥	१०.	तथा

श्लोकार्थ—हे निष्पाप सूत जी ! आपने निश्चय पूर्वक इतिहासों के साथ पुराणों को और धर्म शास्त्रों को पढ़ा है तथा उनकी व्याख्या भी की है ।

सप्तमः श्लोकः

यानि वेदविदां श्रेष्ठो भगवान् बादरायणः ।
अन्ये च मुनयः सूत परावरविदो विदुः ॥७॥

पदच्छेद—

यानि वेद विदाम् श्रेष्ठः, भगवान् बादरायणः ।
अन्ये च मुनयः सूत, परावर विदः विदुः ॥

शब्दार्थ—

यानि	१२.	जिन (शास्त्रों) को	अन्ये	१०.	दूसरे
वेद	२.	वेद	च	७.	तथा
विदाम्	३.	जानने वालों में	मुनयः	११.	मुनिजन
श्रेष्ठः	४.	महान्	सूत	१.	हे सूत जी !
भगवान्	५.	भगवान्	परावर	८.	इहलोक और परलोक के
बादरायणः ।	६.	वेदव्यास	विदः	९.	ज्ञाता
			विदुः ॥	१३.	जानते हैं (उन्हें आप भी जानते हैं)

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! वेद जानने वालों में महान् भगवान् वेद व्यास तथा इहलोक और परलोक के ज्ञाता दूसरे मुनिजन जिन शास्त्रों को जानते हैं, उन्हें आप भी जानते हैं ।

अष्टमः श्लोकः

वेत्थ त्वं सौम्य तत्सर्वं तत्त्वतस्तदनुग्रहात् ।
ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत ॥८॥

पदच्छेद—

वेत्थ त्वम् सौम्य तत् सर्वम्, तत्त्वतः तद् अनुग्रहात् ।
ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य, गुरवः गुह्यम् अपि उत ॥

शब्दार्थ—

वेत्थ	८.	जानते हैं	ब्रूयुः	१५.	बता देते हैं
त्वम्	२.	आप	स्निग्धस्य	११.	स्नेह से युक्त
सौम्य	१.	हे सूत जी !	शिष्यस्य	१२.	शिष्य को
तत्	५.	उन	गुरवः	१०.	गुरु जन
सर्वम्	६.	सब (शास्त्रों) को	गुह्यम्	१३.	गोपनीय रहस्य
तत्त्वतः	७.	भली भाँति	अपि	१४.	भी
तद्	३.	उन ऋषियों की	उत ॥	९.	तथा
अनुग्रहात् ।	४.	कृपा से			

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! आप उन ऋषियों की कृपा से उन सब शास्त्रों को भली भाँति जानते हैं तथा गुरु जन स्नेह से युक्त प्रिय शिष्य को गोपनीय रहस्य भी बता देते हैं ।

नवमः श्लोकः

तत्र तत्राञ्जसाऽऽयुष्मन् भवता यद्विनिश्चितम् ।
पुंसामेकान्ततः श्रेयस्तन्नः शंसितुमर्हसि ॥९॥

पदच्छेद—

तत्र तत्र अञ्जसा आयुष्मन्, भवता यद् विनिश्चितम् ।
पुंसाम् एकान्ततः श्रेयः, तद् नः शंसितुम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

तत्र तत्र	३.	उन-उन शास्त्रों में	एकान्ततः	९.	एकमात्र
अञ्जसा	४.	सरलता पूर्वक	श्रेयः	१०.	कल्याणकारी (मार्ग) को
आयुष्मन्	१.	लम्बी आयुवाले हे सूत जी !	तद्	८.	उस
भवता	२.	आपने	नः	११.	हमें
यद्	६.	जो मार्ग	शंसितुम्	१२.	बताने में
विनिश्चितम् ।	७.	निश्चित किया है (आप)	अर्हसि ॥	१३.	समर्थ हैं
पुंसाम्	५.	मनुष्यों के लिये			

श्लोकार्थ—लम्बी आयुवाले हे सूत जी ! आपने उन-उन शास्त्रों में सरलतापूर्वक मनुष्यों के लिए जो मार्ग निश्चित किया है, आप उस एकमात्र कल्याणकारी मार्ग को हमें बताने में समर्थ हैं ।

दशमः श्लोकः

प्रायेणाल्पायुषः सभ्य कलावस्मिन् युगे जनाः ।
मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः ॥१०॥

पदच्छेद—

प्रायेण अल्प आयुषः सभ्य, कलौ अस्मिन् युगे जनाः ।
मन्दाः सुमन्द मतयः, मन्द भाग्याः हि उपद्रुताः ॥

शब्दार्थ—

प्रायेण	५.	अधिकतर	मन्दाः	९.	आलसी
अल्प	७.	थोड़ी	सुमन्द	१०.	अत्यन्त जड़
आयुषः	८.	आयुवाले	मतयः	११.	बुद्धि वाले
सभ्य	१.	सभासदों में श्रेष्ठ हे सूत जी !	मन्द	१२.	हीन
कलौ	३.	कलि	भाग्याः	१३.	भाग्य वाले
अस्मिन्	२.	इस	हि	१४.	और
युगे	४.	युग में	उपद्रुताः ॥	१५.	अशान्त (होंगे)
जनाः ।	६.	मनुष्य			

श्लोकार्थ—सभासदों में श्रेष्ठ हे सूत जी ! इस कलियुग में अधिकतर मनुष्य थोड़ी आयुवाले, आलसी, अत्यन्त जड़ बुद्धिवाले, हीन भाग्यवाले और अशान्त होंगे ।

एकादशः श्लोकः

भूरीणि भूरिकर्माणि श्रोतव्यानि विभागशः ।
अतः साधोऽत्र यत्सारं समुद्धृत्य मनीषया ।
ब्रूहि नः श्रद्धधानानां येनात्मा सम्प्रसीदति ॥११॥

पदच्छेद— भूरीणि भूरि कर्माणि, श्रोतव्यानि विभागशः ।
अतः साधो अत्र यत् सारम्, समुद्धृत्य मनीषया ।
ब्रूहि नः श्रद्धधानानाम्, येन आत्मा सम्प्रसीदति ॥

शब्दार्थ—

भूरीणि	२.	अनेक (शास्त्रों) को	सारम्	९.	सार वस्तु है (उसका)
भूरि, कर्माणि	१.	अनेक, कर्मों को (बताने वाले)	समुद्धृत्य	११.	निश्चय करके
श्रोतव्यानि	४.	सुनना चाहिये	मनीषया ।	१०.	अपनी बुद्धि से
विभागशः ।	३.	विभाग करके	ब्रूहि	१४.	बतावें
अतः	५.	किन्तु (अल्पायु होने से)	नः	१२.	हम
साधो	६.	हे सूत जी ! (आप)	श्रद्धधानानाम्	१३.	श्रद्धालुओं को
अत्र	७.	इन (शास्त्रों) में	येन, आत्मा	१५.	जिससे, आत्मा
यत्	८.	जो	सम्प्रसीदति ॥	१६	प्रसन्न होती है

श्लोकार्थ—अनेक कर्मों को बताने वाले अनेक शास्त्रों को विभाग करके सुनना चाहिये, किन्तु अल्पायु होने से हे सूत जी ! आप इन शास्त्रों में जो सार वस्तु है उसका अपनी बुद्धि से निश्चय करके हम श्रद्धालुओं को बतावें, जिससे आत्मा प्रसन्न होती है ।

द्वादशः श्लोकः

सूत जानासि भद्रं ते भगवान् सात्वतां पतिः ।
देवक्यां वसुदेवस्य जातो यस्य चिकीर्षया ॥१२॥

पदच्छेद— सूत जानासि भद्रम् ते, भगवान् सात्वताम् पतिः ।
देवक्याम् वसुदेवस्य, जातः यस्य चिकीर्षया ॥

शब्दार्थ—

सूत	१.	हे सूत जी !	पतिः ।	५.	रक्षक
जानासि	१२.	(उसे आप) जानते हैं	देवक्याम्	१०.	देवकी के गर्भ से
भद्रम्	३.	कल्याण हो	वसुदेवस्य	९.	वसुदेव जी की (पत्नी)
ते	२.	आपका	जातः	११.	अवतरित हुये थे
भगवान्	६.	भगवान्	यस्य	७.	जिस (लीला) को
सात्वताम्	४.	वैष्णव जन के	चिकीर्षया ॥	८.	करने की इच्छा से

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! आपका कल्याण हो । वैष्णव जन के रक्षक भगवान् जिस लीला को करने की इच्छा से वसुदेव जी की पत्नी देवकी के गर्भ से अवतरित हुए थे, उसे आप जानते हैं।

त्रयोदशः श्लोकः

तन्नः शुश्रूषमाणानामर्हस्यङ्गानुवर्णितुम् ।
यस्यावतारा भूतानां क्षेमाय च भवाय च ॥१३॥

पदच्छेद—

तद् नः शुश्रूषमाणानाम्, अर्हसि अङ्ग अनुवर्णितुम् ।
यस्य अवतारः भूतानाम्, क्षेमाय च भवाय च ॥

शब्दार्थ—

तद्	१०.	उन भगवान् की कथा का	यस्य	१.	जिस (भगवान्) का
नः	९.	हम लोगों से	अवतारः	२.	अवतार
शुश्रूषमाणानाम्	८.	सुनने के इच्छुक	भूतानाम्	३.	प्राणियों के
अर्हसि	१२.	समर्थ हैं	क्षेमाय	४.	कल्याण
अङ्ग	७.	हे सूत जी ! (आप)	च	५.	और
अनुवर्णितुम् ।	११.	वर्णन करने में	भवाय च ॥	६.	उन्नति के लिये होता है

श्लोकार्थ—जिस भगवान् का अवतार प्राणियों के कल्याण और उन्नति के लिये होता है; हे सूतजी ! आप सुनने के इच्छुक हम लोगों से उन भगवान् की कथा का वर्णन करने में समर्थ हैं ।

चतुर्दशः श्लोकः

आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन् ।
ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयम् ॥१४॥

पदच्छेद—

आपन्नः संसृतिम् घोराम्, यद् नाम विवशः गृणन् ।
ततः सद्यः विमुच्येत, यद् बिभेति स्वयम् भयम् ॥

शब्दार्थ—

आपन्नः	३.	प्राप्त हुआ (मनुष्य)	ततः	८.	उस (घोर संसार) से
संसृतिम्	२.	संसार को	सद्यः	९.	शीघ्र
घोराम्	१.	भयानक	विमुच्येत	१०.	मुक्त हो जाता है
यद्	४.	जिनके	यद्	११.	क्योंकि (उससे)
नाम	५.	नाम का	बिभेति	१४.	डरता है
विवशः	६.	विवश होकर भी	स्वयम्	१३.	अपने आप
गृणन् ।	७.	उच्चारण करता हुआ	भयम् ॥	१२.	भय (भी)

श्लोकार्थ—भयानक संसार को प्राप्त हुआ मनुष्य जिनके नाम का विवश होकर भी उच्चारण करता हुआ उस घोर संसार से शीघ्र मुक्त हो जाता है; क्योंकि उससे भय भी अपने आप डरता है ।

पञ्चदशः श्लोकः

यत्पादसंश्रयाः सूत मुनयः प्रशमायनाः ।
सद्यः पुनन्त्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोऽनुसेवया ॥१५॥

पदच्छेद—

यत् पाद संश्रयाः सूत, मुनयः प्रशम अयनाः ।
सद्यः पुनन्ति उपस्पृष्टाः, स्वर्धुनी आपः अनुसेवया ॥

शब्दार्थ—

यत्	४.	जिस (भगवान्) के	सद्यः	८.	तत्काल
पाद	५.	चरण कमलों के	पुनन्ति	९.	पवित्र कर देते हैं
संश्रयाः	६.	सहारे (मनुष्य को)	उपस्पृष्टाः	७.	स्पर्श मात्र से
सूत	१.	हे सूत जी !	स्वर्धुनी	१०.	(किन्तु) गंगाजी का
मुनयः	३.	मुनिजन	आपः	११.	जल
प्रशम, अयनाः ।	२.	परम शान्ति के, स्थान	अनुसेवया ॥	१२.	बारम्बार सेवन करने से (पवित्र करता है)

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! परम शान्ति के स्थान मुनिजन जिस भगवान् के चरण-कमलों के सहारे मनुष्य को स्पर्श मात्र से तत्काल पवित्र कर देते हैं; किन्तु गङ्गाजी का जल बारम्बार सेवन करने से पवित्र करता है ।

षोडशः श्लोकः

को वा भगवतस्तस्य पुण्यश्लोकेड्यकर्मणः ।
शुद्धिकामो न शृणुयाद्यशः कलिमलापहम् ॥१६॥

पदच्छेद—

कः वा भगवतः तस्य, पुण्य श्लोक ईड्य कर्मणः ।
शुद्धि कामः न शृणुयात्, यशः कलि मल अपहम् ॥

शब्दार्थ—

कः	३.	कौन (मनुष्य)	शुद्धि कामः	२.	पवित्र होने की इच्छा रखने वाला
वा	१	अथवा	न	११.	नहीं
भगवतः	७	भगवान् की	शृणुयात्	१२.	सुनेगा
तस्य	६.	उन	यशः	१०.	कीर्ति को
पुण्य श्लोक	४.	पवित्र नाम वाले (एवं)	कलि मल	८.	कलियुग के पापों को
ईड्य कर्मणः ।	५.	प्रशंसनीय कर्म करने वाले	अपहम् ॥	९.	धोने वाली

श्लोकार्थ—अथवा पवित्र होने की इच्छा रखने वाला कौन मनुष्य पवित्र नाम वाले एवम् प्रशंसनीय कर्म करने वाले उन भगवान् की कलियुग के पापों को धोने वाली कीर्ति को नहीं सुनेगा ?

सप्तदशः श्लोकः

तस्य कर्माण्युदाराणि परिगीतानि सूरिभिः ।
ब्रूहि नः श्रद्दधानानां लीलया दधतः कलाः ॥१७॥

पदच्छेद—

तस्य कर्माणि उदाराणि, परिगीतानि सूरिभिः ।
ब्रूहि नः श्रद्दधानानाम्, लीलया दधतः कलाः ॥

शब्दार्थ—

	०.	हे सूत जी ! (आप)	ब्रूहि	११.	वर्णन करें
तस्य	६.	उस (परम प्रभु) के	नः	१.	हम
कर्माणि	१०.	चरित का	श्रद्दधानानाम्	२.	श्रद्धालु जनों से
उदाराणि	९.	महान्	लीलया	३.	लीला पूर्वक
परिगीतानि	८.	गाये गये	दधतः	५.	धारण करने वाले
सूरिभिः ।	७.	विद्वानों के द्वारा	कलाः ॥	४.	कलाओं को

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! आप हम श्रद्धालु जनों से लीला पूर्वक कलाओं को धारण करने वाले उस परम प्रभु के विद्वानों के द्वारा गाये गये महान् चरित का वर्णन करें ।

अष्टादशः श्लोकः

अथाख्याहि हरेर्धीमन्नवतारकथाः शुभाः ।
लीला विदधतः स्वैरमीश्वरस्यात्ममायया ॥१८॥

पदच्छेद—

अथ आख्याहि हरेः धीमन्, अवतार कथाः शुभाः ।
लीलाः विदधतः स्वैरम्, ईश्वरस्य आत्मन् मायया ॥

शब्दार्थ—

अथ	१२.	अब	लीलाः	५.	लीलाओं को
आख्याहि	१३.	कहिए	विदधतः	६.	धारण करने वाले
हरेः	८.	श्री हरि के	स्वैरम्	४.	स्वेच्छा पूर्वक
धीमन्	१.	हे बुद्धिमान् सूत जी !	ईश्वरस्य	७.	भगवान्
अवतार	९.	अवतारों की	आत्मन्	२.	अपनी
कथाः	११.	कथाओं को	मायया ॥	३.	सत्त्वगुणी माया से
शुभाः ।	१०.	मंगलमयी			

श्लोकार्थ—हे बुद्धिमान् सूत जी ! अपनी सत्त्वगुणी माया से स्वेच्छा पूर्वक लीलाओं को धारण करने वाले भगवान् श्रीहरि के अवतारों की मंगलमयी कथाओं को अब कहिये ।

एकोनविंशः श्लोकः

वयं तु न वितृप्याम उत्तमश्लोकविक्रमे ।
यच्छृण्वतां रसज्ञानां स्वादु स्वादु पदे पदे ॥१९॥

पदच्छेद—

वयम् तु न वितृप्यामः, उत्तम श्लोक विक्रमे ।
यत् शृण्वताम् रसज्ञानाम्, स्वादु स्वादु पदे पदे ॥

शब्दार्थ—

वयम्	३.	हम सब	यत्	७.	जिसे
तु	४.	तो	शृण्वताम्	८.	सुनते हुए
न	५.	नहीं	रसज्ञानाम्	९.	रसिक जनों को
वितृप्यामः	६.	तृप्त हो रहे हैं	स्वादु स्वादु	११.	अधिकाधिक रसस्वादन (होता है)
उत्तम श्लोक	१.	पवित्र कीर्ति (तथा)			
विक्रमे ।	२.	पराक्रमशाली (प्रभु की कथाओं को सुनने से)	पदे-पदे ॥	१०.	पग-पग पर

श्लोकार्थ—पवित्र-कीर्ति तथा पराक्रमशाली प्रभु की कथाओं को सुनने से हम सब तो तृप्त नहीं हो रहे हैं, जिसे सुनते हुये रसिकजनों को पग-पग पर अधिकाधिक रसास्वादन होता है ।

विंशः श्लोकः

कृतवान् किल वीर्याणि सह रामेण केशवः ।
अतिमर्त्यानि भगवान् गूढः कपटमानुषः ॥२०॥

पदच्छेद—

कृतवान् किल वीर्याणि, सह रामेण केशवः ।
अतिमर्त्यानि भगवान्, गूढः कपट मानुषः ॥

शब्दार्थ—

कृतवान्	१०.	की थीं	अतिमर्त्यानि	८.	अलौकिक (और)
किल	११.	यह इतिहास प्रसिद्ध है	भगवान्	१	भगवान्
वीर्याणि	९.	पराक्रम युक्त लीलायें	गूढः	५	गुप्त रूप से
सह	४.	साथ	कपट	७.	छलिया वेष में
रामेण	३.	बलराम जी के	मानुषः ॥	६.	मनुष्य के
केशवः ।	२.	श्रीकृष्ण ने			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ गुप्त रूप से मनुष्य के छलिया वेष में अलौकिक और पराक्रम युक्त लीलायें की थीं, यह इतिहास प्रसिद्ध है ।

एकविंशः श्लोकः

कलिमागतमाज्ञाय क्षेत्रेऽस्मिन् वैष्णवे वयम् ।
आसीना दीर्घसत्रेण कथायां सक्षणा हरेः ॥२१॥

पदच्छेद—

कलिम् आगतम् आज्ञाय, क्षेत्रे अस्मिन् वैष्णवे वयम् ।
आसीनाः दीर्घ सत्रेण, कथायाम् सक्षणाः हरेः ॥

शब्दार्थ—

कलिम्	२.	कलियुग को	**आसीनाः**	१०.	बैठे हैं (अतः हमें)
आगतम्	३.	आया हुआ	**दीर्घ**	८.	लम्बे
आज्ञाय	४.	जानकर	**सत्रेण**	९.	यज्ञ में
क्षेत्रे	७.	नैमिषारण्य क्षेत्र में	**कथायाम्**	१२.	कथा सुनने का
अस्मिन्	५.	इस	**सक्षणाः**	१३.	पर्याप्त समय (है)
वैष्णवे	६.	वैष्णव	**हरेः ॥**	११.	भगवान् श्री कृष्ण की
वयम् ।	१.	हम लोग			

श्लोकार्थ—हम लोग कलियुग को आया हुआ जानकर इस वैष्णव नैमिषारण्य क्षेत्र में लम्बे यज्ञ में बैठे हैं; अतः हमें भगवान् श्री कृष्ण की कथा सुनने का पर्याप्त समय है।

द्वाविंशः श्लोकः

त्वं नः संदर्शितो धात्रा दुस्तरं निस्तितीर्षताम् ।
कलिं सत्त्वहरं पुंसां कर्णधार इवार्णवम् ॥२२॥

पदच्छेद—

त्वम् नः संदर्शितः धात्रा, दुस्तरम् निस्तितीर्षताम् ।
कलिम् सत्त्व हरम् पुंसाम्, कर्णधारः इव अर्णवम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१०.	आप	**कलिम्**	८.	कलियुग को (पार करने के इच्छुक)
नः	९.	हमारे लिये	**सत्त्व हरम्**	७.	सत्त्व गुण का अपहरण करने वाले
संदर्शितः	१२.	(कर्णधार) बताये गये हैं	**पुंसाम्**	४.	जनों के
धात्रा	११.	ब्रह्मा जी के द्वारा	**कर्णधारः**	५.	कर्णधार की
दुस्तरम्	१.	अगाध	**इव**	६.	तरह
निस्तितीर्षताम् ।	३.	पार करने की इच्छा रखने वाले	**अर्णवम् ॥**	२.	समुद्र को

श्लोकार्थ—अगाध समुद्र को पार करने की इच्छा रखने वाले जनों के कर्णधार की तरह सत्त्वगुण का अपहरण करने वाले कलियुग को पार करने के इच्छुक हमारे लिये आप ब्रह्मा जी के द्वारा कर्णधार बताये गये हैं।

त्रयोविंशः श्लोकः

ब्रूहि योगेश्वरे कृष्णे ब्रह्मण्ये धर्मवर्मणि ।
स्वां काष्ठामधुनोपेते धर्मः कं शरणं गतः ॥२३॥

पदच्छेद—

ब्रूहि योगेश्वरे कृष्णे, ब्रह्मण्ये धर्म वर्मणि ।
स्वाम् काष्ठाम् अधुना उपेते, धर्मः कम् शरणम् गतः ॥

शब्दार्थ—

ब्रूहि	१४.	(यह आप हमें) बतावें	काष्ठाम्	७.	धाम
योगेश्वरे	४.	योगिराज	अधुना	९.	अब
कृष्णे	५.	श्री कृष्ण के	उपेते	८.	पधार जाने पर
ब्रह्मण्ये	१.	वेद रक्षक (एवं)	धर्मः	१०.	धर्म
धर्म	२.	धर्म के	कम्	११.	किसकी
वर्मणि ।	३.	कवच	शरणम्	१२.	शरण में
स्वाम्	६.	अपने	गतः ॥	१३.	गया

श्लोकार्थ—वेद रक्षक एवम् धर्म के कवच योगिराज श्री कृष्ण के अपने धाम पधार जाने पर अब धर्म किसकी शरण में गया; यह आप हमें बतावें ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथम-
स्कन्धे नैमिषीयोपाख्याने प्रथमः अध्यायः ॥१॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ द्वितीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

व्यास उवाच— **इति संप्रश्नसंहृष्टो विप्राणां रौमहर्षणिः ।**
प्रतिपूज्य वचस्तेषां प्रवक्तुमुपचक्रमे ॥१॥

पदच्छेद— इति संप्रश्न संहृष्टः, विप्राणाम् रौमहर्षणिः ।
प्रतिपूज्य वचः तेषाम्, प्रवक्तुम् उपचक्रमे ॥

शब्दार्थ—

इति	२. पहले पूछे गये	**प्रतिपूज्य**	८. स्वागत करते हुये
संप्रश्न	३. प्रश्न से	**वचः**	७. प्रश्न का
संहृष्टः	४. हर्षित हुये	**तेषाम्**	६. उन ऋषियों के
विप्राणाम्	१. ऋषियों के द्वारा	**प्रवक्तुम्**	९. कहना
रौमहर्षणिः ।	५. रोमहर्षण के पुत्र सूत जी ने	**उपचक्रमे ॥**	१०. प्रारम्भ किया

श्लोकार्थ—ऋषियों के द्वारा पहले पूछे गये प्रश्न से हर्षित हुये रोमहर्षण के पुत्र सूत जी ने उन ऋषियों के प्रश्न का स्वागत करते हुये कहना प्रारम्भ किया ।

द्वितीयः श्लोकः

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यम्, द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुः, तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥२॥

पदच्छेद— **यम् प्रव्रजन्तम् अनुपेतम् अपेत कृत्यम्, द्वैपायनः विरह कातरः आजुहाव ।**
पुत्र इति तन्मयतया तरवः अभिनेदुः, तम् सर्व भूत हृदयम् मुनिम् आनतः अस्मि ॥

शब्दार्थ—

यम्	५. जिन शुकदेव जी के	**पुत्र इति**	८. हे पुत्र हे पुत्र, इस प्रकार
प्रव्रजन्तम्	४. संन्यास के लिये जाते हुये	**तन्मयतया**	११. (शुकदेव जी से) अभिन्न होने के कारण
अनुपेतम्	१. यज्ञोपवीतसंस्कार से रहित	**तरवः**	१०. वृक्षों ने
अपेत	३. अनधिकारी (एवं)	**अभिनेदुः,**	१२. (उनका) उत्तर दिया था
कृत्यम् ,	२. लौकिक-वैदिक कर्मों के	**तम्**	१४. उन
द्वैपायनः	७. वेदव्यास जी	**सर्वभूत, हृदयम्**	१३. सभी प्राणियों के, हृदय में विराजमान
विरह कातरः	६. वियोग से दुःखी होकर	**मुनिम्**	१५. शुकदेव मुनि को
आजुहाव ।	९. पुकारने लगे (तथा)	**आनतः अस्मि ॥**	१६. (मैं) प्रणाम करता हूँ

श्लोकार्थ—यज्ञोपवीत संस्कार से रहित, लौकिक-वैदिक कर्मों के अनधिकारी एवं संन्यास के लिये जाते हुये जिन शुकदेव जी के वियोग से दुःखी होकर वेद व्यास जी हे पुत्र ! हे पुत्र !! इस प्रकार पुकारने लगे तथा वृक्षों ने शुकदेव जी से अभिन्न होने के कारण उनका उत्तर दिया था; सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान उन शुकदेव मुनि को मैं प्रणाम करता हूँ ।

तृतीयः श्लोकः

यः स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेकम्, अध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।
संसारिणां करुणयाऽऽह पुराणगुह्यम्, तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् ॥३॥

पदच्छेद—

यः स्व अनुभावम् अखिल श्रुति सारम् एकम्, अध्यात्म दीपम् अतितितीर्षताम् तमः अन्धम् ।
संसारिणाम् करुणया आह पुराण गुह्यम्, तम् व्यास सूनुम् उपयामि गुरुम् मुनीनाम् ॥

शब्दार्थ—

यः, स्व	१. जिन्होंने, आत्मा का	**संसारिणाम्**	८. संसारी प्राणियों के लिये
अनुभावम्	२. अनुभव कराने वाले	**करुणया**	१३. करुणा करके
अखिल, श्रुति	३. चारों, वेदों का	**आह**	१४. कहा
सारम्	४. सार (तथा)	**पुराण**	१२. पुराण को
एकम्, अध्यात्म	९. अद्वितीय, आध्यात्मिक	**गुह्यम्,**	११. (इस) रहस्यमय
दीपम्	१०. दीपक रूपी	**तम्, व्यास**	१६. उन, वेदव्यासजी के
अतितितीर्षताम्	७. पार करने की इच्छा रखने वाले	**सूनुम्**	१७. पुत्र शुकदेव मुनि की
तमः	५. घोर अज्ञान रूपी	**उपयामि**	१८. शरण में मैं जाता हूँ
अन्धम् ।	६. अन्धकार को	**गुरुम्, मुनीनाम् ॥**	१५. गुरु, मुनि जनों के

श्लोकार्थ—जिन्होंने आत्मा का अनुभव कराने वाले चारों वेदों का सार तथा घोर अज्ञानरूपी अन्धकार को पार करने की इच्छा रखनेवाले संसारी प्राणियों के लिए अद्वितीय आध्यात्मिक दीपक रूपी इस रहस्यमय पुराण को करुणा करके कहा, मुनि जनों के गुरु उन वेदव्यासजी के पुत्र शुकदेव मुनि की शरण में मैं जाता हूँ ।

चतुर्थः श्लोकः

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥४॥

पदच्छेद—

नारायणम् नमस्कृत्य, नरम् च एव नरोत्तमम् ।
देवीम् सरस्वतीम् व्यासम्, ततः जयम् उदीरयेत् ॥

शब्दार्थ—

नारायणम्	४. नारायण को	**देवीम्**	६. देवी को
नमस्कृत्य	९. नमस्कार करके	**सरस्वतीम्**	५. सरस्वती
नरम्	२. नर को	**व्यासम्**	८. व्यास जी को
च	३. और	**ततः**	१०. तदनन्तर
एव	७. तथा	**जयम्**	११. जयकार
नरोत्तमम् ।	१. नरों में श्रेष्ठ	**उदीरयेत् ॥**	१२. करना चाहिए

श्लोकार्थ—नरों में श्रेष्ठ नर को और नारायण को, सरस्वती देवी को तथा व्यासजी को नमस्कार करके तदनन्तर जयकार करना चाहिये ।

पञ्चमः श्लोकः

मुनयः साधु पृष्टोऽहं भवद्भिर्लोकमङ्गलम् ।
यत्कृतः कृष्णसम्प्रश्नो येनात्मा सुप्रसीदति ।।५।।

पदच्छेद—

मुनयः साधु पृष्टः अहम् , भवद्भिः लोक मङ्गलम् ।
यत् कृतः कृष्ण सम्प्रश्नः, येन आत्मा सुप्रसीदति ॥

शब्दार्थ—

मुनयः	१.	हे मुनियों !	यत्	८.	क्योंकि
साधु	६.	अच्छी बात	कृतः	११.	किया गया है
पृष्टः	७.	पूछी है	कृष्ण	१०.	भगवान् श्रीकृष्ण के विषय में
अहम्	३.	मुझसे	सम्प्रश्नः	९.	(यह) प्रश्न
भवद्भिः	२.	आप लोगों ने	येन	१२.	जिससे
लोक	४.	लोक	आत्मा	१३.	आत्मा
मङ्गलम् ।	५.	कल्याणकारी	सुप्रसीदति ॥	१४.	प्रसन्न होती है

श्लोकार्थ—हे मुनियों ! आप लोगों ने मुझसे लोक कल्याणकारी अच्छी बात पूछी है । क्योंकि यह प्रश्न भगवान् श्रीकृष्ण के विषय में किया गया है, जिससे आत्मा प्रसन्न होती है ।

षष्ठः श्लोकः

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे ।
अहैतुक्यप्रतिहता ययाऽऽत्मा सम्प्रसीदति ।।६।।

पदच्छेद—

सः वै पुंसाम् परः धर्मः, यतः भक्तिः अधोक्षजे ।
अहैतुकी अप्रतिहता, यया आत्मा सम्प्रसीदति ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वह	अधोक्षजे ।	७.	भगवान्-श्रीकृष्ण में
वै	३.	ही	अहैतुकी	९.	निष्काम
पुंसाम्	१.	मनुष्यों का	अप्रतिहता	८.	निरन्तर
परः	४.	श्रेष्ठ	यया	११.	जिस भक्ति से
धर्मः	५.	धर्म है	आत्मा	१२.	आत्मा
यतः	६.	जिससे	सम्प्रसीदति ॥	१३.	प्रसन्न तथा आनन्दित होता है
भक्तिः	१०.	भक्ति (होती है)			

श्लोकार्थ—मनुष्यों का वही श्रेष्ठ धर्म है, जिससे भगवान् श्रीकृष्ण में निरन्तर निष्काम भक्ति होती है। जिस भक्ति से आत्मा प्रसन्न तथा आनन्दित होता है ।

सप्तमः श्लोकः

वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः ।
जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानं च तदहैतुकम् ॥७॥

पदच्छेद—

वासुदेवे भगवति, भक्ति योगः प्रयोजितः ।
जनयति आशु वैराग्यम्, ज्ञानम् च तद् अहैतुकम् ॥

शब्दार्थ—

वासुदेवे	२.	श्री कृष्ण में	वैराग्यम्	९.	वैराग्य को
भगवति	१.	भगवान्	ज्ञानम्	७.	ज्ञान को
भक्ति योगः	४.	भक्तियोग	च	८.	और
प्रयोजितः ।	३.	लगाया हुआ	तद्	५.	उस
जनयति	११.	उत्पन्न करता है	अहैतुकम् ॥	६.	निष्काम
आशु	१०.	शीघ्र ही			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण में लगाया हुआ भक्तियोग उस निष्काम ज्ञान को और वैराग्य को शीघ्र ही उत्पन्न करता है ।

अष्टमः श्लोकः

धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेनकथासु यः ।
नोत्पादयेद्यदि रतिं श्रम एव हि केवलम् ॥८॥

पदच्छेद—

धर्मः सु अनुष्ठितः पुंसाम्, विष्वक्सेन कथासु यः ।
न उत्पादयेत् यदि रतिम्, श्रमः एव हि केवलम् ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	३.	धर्म	उत्पादयेत्	१०.	उत्पन्न किया
सु अनुष्ठितः	१.	विधि-विधान से किया गया	यदि	६.	यदि
पुंसाम्	७.	मनुष्यों की	रतिम्	८.	रुचि को
विष्वक्सेन	४.	भगवान् की	श्रमः	१३.	परिश्रम
कथासु	५.	कथाओं में	एव	१४.	ही (है अर्थात् निरर्थक है)
यः ।	२.	जो	हि	११.	तो
न	९.	नहीं	केवलम् ॥	१२.	(वह) केवल

श्लोकार्थ— वधि-विधान से किया गया जो धर्म भगवान् की कथाओं में यदि मनुष्यों की रुचि को उत्पन्न नहीं किया तो वह केवल परिश्रम ही है । अर्थात् निरर्थक है ।

नवमः श्लोकः

धर्मस्य ह्यापवर्ग्यस्य नार्थोऽर्थायोपकल्पते ।
नार्थस्य धर्मैकान्तस्य कामो लाभाय हि स्मृतः ॥९॥

पदच्छेद—— धर्मस्य हि आपवर्ग्यस्य, न अर्थः अर्थाय उपकल्पते ।
न अर्थस्य धर्म एकान्तस्य, कामः लाभाय हि स्मृतः ॥

शब्दार्थ——

			न	१४.	नहीं
धर्मस्य	२.	धर्म का	अर्थस्य	१०.	धन के
हि	६.	ही	धर्म	८.	(तथा) धर्म में
आपवर्ग्यस्य	१.	मोक्ष देने वाले	एकान्तस्य	९.	उपयोगी
न	७.	नहीं (है)	कामः	१३.	कामनाओं की पूर्ति ही
अर्थः	३.	प्रयोजन	लाभाय	११.	लाभ से
अर्थाय	४.	धन की	हि	१२.	केवल
उपकल्पते ।	५.	प्राप्ति	स्मृतः ॥	१५.	कही गयी है

श्लोकार्थ——मोक्ष देने वाले धर्म का प्रयोजन धन की प्राप्ति ही नहीं है तथा धर्म में उपयोगी धन के लाभ से केवल कामनाओं की पूर्ति ही नहीं कही गयी है ।

दशमः श्लोकः

कामस्य नेन्द्रियप्रीतिर्लाभो जीवेत यावता ।
जीवस्य तत्त्वजिज्ञासा नार्थो यश्चेह कर्मभिः ॥१०॥

पदच्छेद——

कामस्य न इन्द्रिय प्रीतिः, लाभः जीवेत यावता ।
जीवस्य तत्त्व जिज्ञासा, न अर्थः यः च इह कर्मभिः ॥

शब्दार्थ——

कामस्य	१.	कामनाओं का	तत्त्व	८.	भगवत् स्वरूप के
न	५.	नहीं (है किन्तु)	जिज्ञासा	९.	ज्ञान की इच्छा ही
इन्द्रिय	३.	इन्द्रियों की	न	१६.	नहीं (है)
प्रीतिः	४.	तृप्ति (ही)	अर्थः	१५.	(वह जीवन का) प्रयोजन
लाभः	२.	फल	यः	१४.	जो (स्वर्गादि फल बताये गये हैं)
जीवेत	७.	जीवन निर्वाह हो सके (वह है)	च	११.	अतः
यावता ।	६.	जितने से	इह	१२.	इस संसार में
जीवस्य	१०.	जीवन का फल है	कर्मभिः ॥	१३.	वैदिक अनुष्ठानों से

श्लोकार्थ——कामनाओं का फल इन्द्रियों की तृप्ति ही नहीं है, किन्तु जितने से जीवन निर्वाह हो सके, वह है । भगवत् स्वरूप के ज्ञान की इच्छा ही जीवन का फल है, अतः इस संसार में वैदिक अनुष्ठानों से जो स्वर्गादि फल बताये गयें हैं, वह जीवन का प्रयोजन नहीं है ।

एकादशः श्लोकः

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम् ।
ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ॥११॥

पदच्छेद—

वदन्ति तत् तत्त्वविदः, तत्त्वम् यत् ज्ञानम् अद्वयम् ।
ब्रह्म इति परमात्मा इति, भगवान् इति शब्द्यते ॥

शब्दार्थ—

वदन्ति	७.	बताते हैं	ब्रह्म	९.	ब्रह्म
तत्	४.	उसे	इति	८.	वही
तत्त्वविदः	५.	तत्त्व ज्ञानी जन	परमात्मा	१०.	परमात्मा
तत्त्वम्	६.	वास्तविक वस्तु	इति	११.	और
यत्	१.	जो	भगवान्	१२.	भगवान्
ज्ञानम्	३.	सच्चिदानन्द-घन-स्वरूप ज्ञान है	इति	१३.	इन नामों से
अद्वयम् ।	२.	अखण्ड	शब्द्यते ॥	१४.	कहा जाता है

श्लोकार्थ—जो अखण्ड सच्चिदानन्द-घन-स्वरूप ज्ञान है, उसे तत्त्वज्ञानी जन वास्तविक वस्तु बताते हैं । वही ब्रह्म, परमात्मा और भगवान् इन नामों से कहा जाता है ।

द्वादशः श्लोकः

तच्छ्रद्दधाना मुनयो ज्ञानवैराग्ययुक्तया ।
पश्यन्त्यात्मनि चात्मानं भक्त्या श्रुतगृहीतया ॥१२॥

पदच्छेद—

तद् श्रद्दधानाः मुनयः, ज्ञान वैराग्य युक्तया ।
पश्यन्ति आत्मनि च आत्मानम्, भक्त्या श्रुत गृहीतया ॥

शब्दार्थ—

तद्	१.	उस ब्रह्म के ऊपर	आत्मनि	११.	अपनी आत्मा में
श्रद्दधानाः	२.	श्रद्धा रखने वाले	च	७.	और
मुनयः	३.	मुनिजन	आत्मानम्	१२.	परमात्मा का
ज्ञान	६.	ज्ञान	भक्त्या	१०.	भक्ति के द्वारा
वैराग्य	८.	वैराग्य से	श्रुत	४.	शास्त्रों से
युक्तया ।	९.	मिश्रित	गृहीतया ॥	५.	ज्ञात हुई (तथा)
पश्यन्ति	१३.	दर्शन करते हैं			

श्लोकार्थ—उस ब्रह्म के ऊपर श्रद्धा रखने वाले मुनिजन शास्त्रों से ज्ञात हुई तथा ज्ञान और वैराग्य से मिश्रित भक्ति के द्वारा अपनी आत्मा में परमात्मा का दर्शन करते हैं ।

त्रयोदशः श्लोकः

अतः पुम्भिर्द्विजश्रेष्ठा वर्णाश्रमविभागशः ।
स्वनुष्ठितस्य धर्मस्य संसिद्धिर्हरितोषणम् ॥१३॥

पदच्छेद---

अतः पुम्भिः द्विज श्रेष्ठाः, वर्ण आश्रम विभागशः ।
सु अनुष्ठितस्य धर्मस्य, संसिद्धिः हरि तोषणम् ॥

शब्दार्थ---

अतः	३.	इसलिये	सु अनुष्ठितस्य	७.	विधि-पूर्वक आचरित
पुम्भिः	६.	मनुष्यों के द्वारा	धर्मस्य	८.	धर्म की
द्विज	१.	हे विप्र	संसिद्धिः	९.	सफलता
श्रेष्ठाः	२.	वर्यों !	हरि	१०.	भगवान् श्रीहरि की
वर्ण आश्रम	४.	वर्ण और आश्रम के	तोषणम् ॥	११.	प्रसन्नता ही है
विभागशः ।	५.	विभाग के अनुसार			

श्लोकार्थ---हे विप्रवर्यों ! इसलिये वर्ण और आश्रम के विभाग के अनुसार मनुष्यों के द्वारा विधि-पूर्वक आचरित धर्म की सफलता भगवान् श्रीहरि की प्रसन्नता ही है ।

चतुर्दशः श्लोकः

तस्मादेकेन मनसा भगवान् सात्वतां पतिः ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च नित्यदा ॥१४॥

पदच्छेद---

तस्माद् एकेन मनसा, भगवान् सात्वताम् पतिः ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यः च, ध्येयः पूज्यः च नित्यदा ॥

शब्दार्थ---

तस्माद्	१.	इसलिये	कीर्तितव्यः	९.	कीर्तन
एकेन	२.	एकाग्र	च	१०.	और
मनसा	३.	मन से	ध्येयः	११.	ध्यान
भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण का	पूज्यः	१३.	पूजन करना चाहिये
सात्वताम्	४.	भक्तों के	च	१२.	तथा
पतिः ।	५.	पालक	नित्यदा ॥	७.	सर्वदा
श्रोतव्यः	८.	श्रवण			

श्लोकार्थ---इसलिये एकाग्र मन से भक्तों के पालक भगवान् श्रीकृष्ण का सर्वदा श्रवण, कीर्तन और ध्यान तथा पूजन करना चाहिये ।

पञ्चदशः श्लोकः

यदनुध्यासिना युक्ताः कर्मग्रन्थिनिबन्धनम् ।
छिन्दन्ति कोविदास्तस्य को न कुर्यात्कथारतिम् ॥१५॥

पदच्छेद—

यद् अनुध्या असिना युक्ताः, कर्म ग्रन्थि निबन्धनम् ।
छिन्दन्ति कोविदाः तस्यः, कः न कुर्यात् कथा रतिम् ॥

शब्दार्थ—

यद्	३.	जिस भगवान् के	छिन्दन्ति	८.	काटते हैं
अनुध्या	४.	चिन्तन रूपी	कोविदाः	२.	विद्वज्जन
असिना	५.	तलवार से	तस्य	१०.	उस परमात्मा की
युक्ताः	१.	भक्ति योग से युक्त	कः	६.	कौन व्यक्ति
कर्म ग्रन्थि	६.	कर्मों की गांठों के	न, कुर्यात्	१२.	नहीं करेगा
निबन्धनम् ।	७.	मूल कारण को	कथा रतिम् ॥	११.	कथा में प्रेमभाव

श्लोकार्थ—भक्ति योग से युक्त विद्वज्जन जिस भगवान् के चिन्तन रूपी तलवार से कर्मों की गाँठों के मूल कारण को काटते हैं, कौन व्यक्ति उस परमात्मा की कथा में प्रेमभाव नहीं करेगा ?

षोडशः श्लोकः

शुश्रूषोः श्रद्दधानस्य वासुदेवकथारुचिः ।
स्यान्महत्सेवया विप्राः पुण्यतीर्थनिषेवणात् ॥१६॥

पदच्छेद—

शुश्रूषोः श्रद्दधानस्य, वासुदेव कथा रुचिः ।
स्यात् महत् सेवया विप्राः, पुण्य तीर्थ निषेवणात् ॥

शब्दार्थ—

शुश्रूषोः	६.	श्रवण के इच्छुक	स्यात्	११.	होती है
श्रद्दधानस्य	७.	श्रद्धालु जन की	महत्	४.	(तथा, महात्माओं की
वासुदेव	८.	भगवान् श्रीकृष्ण की	सेवया	५.	सेवा से
कथा	९.	कथा में	विप्राः	१.	हे मुनि जनों !
रुचिः ।	१०.	रुचि	पुण्य तीर्थ	२.	पवित्र तीर्थों का
			निषेवणात् ॥	३.	सेवन करने से

श्लोकार्थ—हे मुनि जनों ! पवित्र तीर्थों का सेवन करने से तथा महात्माओं की सेवा से श्रवण के इच्छुक श्रद्धालु जन की भगवान् श्री कृष्ण की कथा में रुचि होती है ।

सप्तदशः श्लोकः

शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
हृद्यन्तःस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ॥१७॥

पदच्छेद—

शृण्वताम् स्वकथाम् कृष्णः, पुण्य श्रवण कीर्तनः ।
हृदि अन्तः स्थः हि अभद्राणि, विधुनोति सुहृत् सताम् ॥

शब्दार्थ—

शृण्वताम्	६.	सुनने वालों के	हृदि	७.	हृदय के
स्व कथाम्	५.	अपनी कथा को	अन्तःस्थः	८.	अन्दर स्थित होकर
कृष्णः	४.	(वे) भगवान् श्रीकृष्ण	हि	९.	ही
पुण्य	३.	पवित्र करने वाला है	अभद्राणि	१०.	अमंगलों को
श्रवण	१.	(जिनका) श्रवण और	विधुनोति	११	दूर करते हैं
कीर्तनः ।	२.	कीर्तन	सुहृत्	१३.	मित्र हैं
			सताम् ॥	१२.	(वे) सन्तों के

श्लोकार्थ—जिनका श्रवण और कीर्तन पवित्र करने वाला है; वे भगवान् श्री कृष्ण अपनी कथा को सुनने वालों के हृदय के अन्दर स्थित होकर ही अमङ्गलों को दूर करते हैं। वे संतों के मित्र हैं।

अष्टादशः श्लोकः

नष्ट प्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया ।
भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी ॥१८॥

पदच्छेद—

नष्ट प्रायेषु अभद्रेषु, नित्यं भागवत सेवया ।
भगवति उत्तम श्लोके, भक्तिः भवति नैष्ठिकी ॥

शब्दार्थ—

नष्ट	६.	समाप्त हो जाने पर	भगवति	९.	भगवान् श्रीकृष्ण में
प्रायेषु	४.	अधिकांश रूप में	उत्तम	७.	पुण्य
अभद्रेषु	५.	अमङ्गलों के	श्लोके	८.	यश वाले
नित्यम्	१.	सदा	भक्तिः	११.	भक्ति
भागवत	२.	भगवत् भक्तों की	भवति	१२.	होती है
सेवया ।	३.	सेवा से	नैष्ठिकी ॥	१०.	स्थायी

श्लोकार्थ—सदा भगवत् भक्तों की सेवा से अधिकांशरूप में अमङ्गलों के समाप्त हो जाने पर पुण्य यश वाले भगवान् श्रीकृष्ण में स्थायी भक्ति होती है।

एकोनविंशः श्लोकः

तदा रजस्तमोभावाः कामलोभादयश्च ये ।
चेत एतैरनाविद्धं स्थितं सत्त्वे प्रसीदति ॥१९॥

पदच्छेद—

तदा रजः तमः भावाः, काम लोभ आदयः च ये ।
चेतः एतैः अनाविद्धम्, स्थितम् सत्त्वे प्रसीदति ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	उस समय	चेतः	८.	चित्त
रजः तमः	३.	रजोगुण और तमोगुण से	एतैः	९.	उनसे
भावाः	४.	उत्पन्न	अनाविद्धम्	१०.	अनासक्त होकर
काम	५.	काम	स्थितम्	१२.	स्थित होता हुआ
लोभ, आदयः	७.	लोभ इत्यादि (दुर्गुण हैं)	सत्त्वे	११.	सत्त्वगुण में
च	६.	और	प्रसीदति ॥	१३.	आनन्दित होता है
ये ।	२.	जो			

श्लोकार्थ—उस समय जो रजोगुण और तमोगुण से उत्पन्न काम और लोभ इत्यादि दुर्गुण हैं, चित्त उनसे अनासक्त होकर सत्त्वगुण में स्थित होता हुआ आनन्दित होता है ।

विंशः श्लोकः

एवं प्रसन्नमनसो भगवद्भक्तियोगतः ।
भगवत्तत्त्वविज्ञानं मुक्तसङ्गस्य जायते ॥२०॥

पदच्छेद—

एवम् प्रसन्न मनसः, भगवत् भक्ति योगतः ।
भगवत् तत्त्व विज्ञानम्, मुक्त संगस्य जायते ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	भगवत्	९.	भगवान् के
प्रसन्न	५.	प्रसन्न	तत्त्व	१०.	स्वरूप का
मनसः	६.	मन वाले (और)	विज्ञानम्	११.	ज्ञान
भगवत्	२.	भगवान् श्री कृष्ण के	मुक्त	८.	रहित (जनों) को
भक्तिः	३.	भक्ति	संगस्य	७.	आसक्ति से
योगतः ।	४.	योग से	जायते ॥	१२.	होता है

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् श्री कृष्ण के भक्ति योग से प्रसन्न मनवाले और आसक्ति से रहित जनों को भगवान् के स्वरूप का ज्ञान होता है ।

एकविंशः श्लोकः

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि दृष्ट एवात्मनीश्वरे ॥२१॥

पदच्छेद—

भिद्यते हृदय ग्रन्थिः, छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते च अस्य कर्माणि, दृष्टे एव आत्मनि ईश्वरे ॥

शब्दार्थ—

भिद्यते	७.	टूट जाती है	**च**	११.	और
हृदय	५.	हृदय की	**अस्य**	१२.	उस व्यक्ति के
ग्रन्थिः	६.	(अज्ञानता की) गाँठ	**कर्माणि**	१३.	कर्म के प्रपंच
छिद्यन्ते	१०.	मिट जाते हैं	**दृष्टे**	३.	दर्शन हो जाने पर
सर्व	८.	सारे	**एव**	४.	ही
संशयाः ।	९.	संदेह	**आत्मनि**	१.	आत्मा में
क्षीयन्ते	१४.	क्षीण हो जाते हैं	**ईश्वरे ॥**	२.	ईश्वर का

श्लोकार्थ—आत्मा में ईश्वर का दर्शन हो जाने पर ही हृदय की अज्ञानता की गाँठ टूट जाती है; सारे संदेह मिट जाते हैं और उस व्यक्ति के कर्म के प्रपंच क्षीण हो जाते हैं ।

द्वाविंशः श्लोकः

अतो वै कवयो नित्यं भक्तिं परमया मुदा ।
वासुदेवे भगवति कुर्वन्त्यात्मप्रसादनीम् ॥२२॥

पदच्छेद—

अतः वै कवयः नित्यम्, भक्तिम् परमया मुदा ।
वासुदेवे भगवति, कुर्वन्ति आत्म प्रसादनीम् ॥

शब्दार्थ—

अतः वै	१.	इसीलिये	**मुदा ।**	५.	आनन्द से
कवयः	२.	बुद्धिमान् जन	**वासुदेवे**	७.	श्रीकृष्ण में
नित्यम्	३.	सदा	**भगवति**	६.	भगवान्
भक्तिम्	९.	भक्ति	**कुर्वन्ति**	१०.	करते हैं
परमया	४.	परम	**आत्म प्रसादनीम् ॥**	८.	आत्मा को प्रसन्न करने वाली

श्लोकार्थ—इसीलिये बुद्धिमान् जन सदा परम आनन्द से भगवान् श्रीकृष्ण में आत्मा को प्रसन्न करने वाली भक्ति करते हैं ।

त्रयोविंशः श्लोकः

सत्त्वं रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तैः, युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते।
स्थित्यादये हरिविरिञ्चिहरेति संज्ञाः, श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणां स्युः ॥२३॥

पदच्छेद—

सत्त्वम् रजः तमः इति प्रकृतेः गुणाः तैः, युक्तः परः पुरुषः एकः इह अस्य धत्ते।
स्थिति आदये हरि विरिञ्चि हर इति संज्ञाः, श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्व तनोः नृणाम् स्युः ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्, रजः, तमः	१. सत्त्व, रज, तम	स्थिति, आदये	९. पालन, उत्पत्ति और संहार के लिये
इति, प्रकृतेः, गुणाः	२. ये, प्रकृति के, गुण हैं	हरि, विरिञ्चि, हर	१०. विष्णु, ब्रह्मा, शंकर
तैः,	४. उन गुणों से	इति, संज्ञाः,	११. इन, नामों को
युक्तः	५. मिला हुआ	श्रेयांसि	१७. कल्याण
परः, पुरुषः	७. श्रेष्ठ, परमात्मा	तत्र	१३. उनमें
एकः	६. एक अद्वितीय	खलु	१५. ही
इह	३. इस संसार में	सत्त्व, तनोः	१४. सत्त्वगुण शरीर वाले विष्णु से
अस्य	८. इस जगत् के	नृणाम्	१६. मनुष्यों का
धत्ते।	१२. धारण करता है	स्युः ॥	१८. होता है

श्लोकार्थ—सत्त्व, रज और तम ये प्रकृति के गुण हैं।; इस संसार में उन गुणों से मिला हुआ, एक अद्वितीय श्रेष्ठ परमात्मा इस जगत् के पालन, उत्पत्ति और संहार के लिये ब्रह्मा, विष्णु और शंकर इन नामों को धारण करता है, उनमें सत्त्वगुण शरीर वाले विष्णु से ही मनुष्यों का कल्याण होता है।

चतुर्विंशः श्लोकः

पार्थिवाद्दारुणो धूमस्तस्मादग्निस्त्रयीमयः।
तमसस्तु रजस्तस्मात्सत्त्वं यद् ब्रह्मदर्शनम् ॥२४॥

पदच्छेद— पार्थिवात् दारुणः धूमः, तस्मात् अग्निः त्रयीमयः।
तमसः तु रजः तस्मात्, सत्त्वम् यद् ब्रह्म दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

पार्थिवात्	१. पृथ्वी से उत्पन्न	तु	६. उसी प्रकार
दारुणः, धूमः	२. काष्ठ की अपेक्षा, धुआँ (श्रेष्ठ है)	रजः	८. रजोगुण (श्रेष्ठ है)
तस्मात्	३. उस धुयें से	तस्मात्	९. (और) उससे
अग्निः	५. अग्नि (श्रेष्ठ है)	सत्त्वम्	१०. सत्त्वगुण (श्रेष्ठ है)
त्रयीमयः।	४. वेद विहित कर्म का साधक होने से	यद्	११. जिस (सत्त्व गुण) से
तमसः	७. तमोगुण से	ब्रह्म दर्शनम् ॥	१२. ब्रह्म का दर्शन (होता है)

श्लोकार्थ—पृथ्वी से उत्पन्न काष्ठ की अपेक्षा धुआँ श्रेष्ठ है। उस धुयें से वेद-विहित कर्म का साधक होने से अग्नि श्रेष्ठ है। उसी प्रकार तमोगुण से रजोगुण श्रेष्ठ है और उससे सत्त्वगुण श्रेष्ठ है, जिस सत्त्वगुण से ब्रह्म का दर्शन होता है।

पञ्चविंशः श्लोकः

भेजिरे मुनयोऽथाग्रे भगवन्तमधोक्षजम् ।
सत्त्वं विशुद्धं क्षेमाय कल्पन्ते येऽनु तानिह ॥२५॥

पदच्छेद—

भेजिरे मुनयः अथ अग्रे, भगवन्तम् अधोक्षजम् ।
सत्त्वम् विशुद्धम् क्षेमाय, कल्पन्ते ये अनु तान् इह ॥

शब्दार्थ—

भेजिरे	८.	सेवा की थी	विशुद्धम्	४.	शुद्ध
मुनयः	३.	मुनिजनों ने	क्षेमाय	१३.	(वे) कल्याण के
अथ	१.	इसीलिये	कल्पन्ते	१४.	भागी होते हैं
अग्रे	२.	सतयुग में	ये	१०.	जो (जन)
भगवन्तम्	६.	भगवान्	अनु	१२.	अनुसरण करते हैं
अधोक्षजम् ।	७.	विष्णु की	तान्	११.	उन (मुनि जनों) का
सत्त्वम्	५.	सत्त्वगुणी	इह ॥	९.	इस संसार में

श्लोकार्थ—इसीलिए सतयुग में मुनिजनों ने शुद्ध सत्त्वगुणी भगवान् विष्णु की सेवा की थी। इस संसार में जो जन उन मुनि जनों का अनुसरण करते हैं, वे कल्याण के भागी होते हैं।

षड्विंशः श्लोकः

मुमुक्षवो घोररूपान् हित्वा भूतपतीनथ ।
नारायणकलाः शान्ता भजन्ति ह्यनसूयवः ॥२६॥

पदच्छेद—

मुमुक्षवः घोर रूपान्, हित्वा भूतपतीन् अथ ।
नारायण कलाः शान्ताः, भजन्ति हि अनसूयवः ॥

शब्दार्थ—

मुमुक्षवः	३.	मोक्ष के इच्छुक (व्यक्ति)	नारायण	९.	भगवान् विष्णु के
घोर	४.	भयंकर	कलाः	१०.	अवतार को
रूपान्	५.	स्वरूप वाले	शान्ताः	८.	शान्त स्वरूप वाले
हित्वा	७.	छोड़कर	भजन्ति	१२.	भजते हैं
भूतपतीन्	६.	भूतनाथों को	हि	११.	ही
अथ ।	१.	इसीलिये	अनसूयवः ॥	२.	ईर्ष्या से रहित (तथा)

श्लोकार्थ—इसीलिए ईर्ष्या से रहित तथा मोक्ष के इच्छुक व्यक्ति भयंकर स्वरूप वाले भूतनाथों को छोड़कर शान्त स्वरूप वाले भगवान् विष्णु के अवतार को ही भजते हैं।

सप्तविंशः श्लोकः

रजस्तमःप्रकृतयः समशीला भजन्ति वै ।
पितृभूतप्रजेशादीन् श्रियैश्वर्यप्रजेप्सवः ॥२७॥

पदच्छेद—

रजः तमः प्रकृतयः, सम शीलाः भजन्ति वै ।
पितृ भूत प्रजेश आदीन्, श्री ऐश्वर्य प्रजा ईप्सवः ॥

शब्दार्थ—

रजः	४.	रजोगुण और	पितृ	८.	पितर
तमः	५.	तमोगुण	भूत	९.	भूत और
प्रकृतयः	६.	स्वभाव वाले (जन)	प्रजेश, आदीन्	१०.	प्रजापति, इत्यादि देवों को
सम शीलाः	७.	समान स्वभाव वाले	श्री	१.	धन और
भजन्ति	१२.	भजते हैं	ऐश्वर्य	२.	सम्पत्ति के साथ
वै ।	११.	ही	प्रजा, ईप्सवः ॥	३.	पुत्र के, अभिलाषी (तथा)

श्लोकार्थ—धन और सम्पत्ति के साथ पुत्र के अभिलाषी तथा रजोगुण और तमोगुण स्वभाव वाले जन समान स्वभाव वाले पितर, भूत और प्रजापति इत्यादि देवों को ही भजते हैं ।

अष्टाविंशः श्लोकः

वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः ।
वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः ॥२८॥

पदच्छेद—

वासुदेव पराः वेदाः, वासुदेव पराः मखाः ।
वासुदेव पराः योगाः, वासुदेव पराः क्रियाः ॥

शब्दार्थ—

वासुदेव	३.	भगवान् श्रीकृष्ण में (ही है)	वासुदेव	९.	भगवान् श्रीकृष्ण में (ही है)
पराः	२.	तात्पर्य	पराः	८.	तात्पर्य भी
वेदाः	१.	चारों वेदों का	योगाः	७.	योग क्रिया का
वासुदेव	६.	भगवान् श्रीकृष्ण में (ही है)	वासुदेव	१२.	भगवान् श्रीकृष्ण में (ही है)
पराः	५.	तात्पर्य (भी)	पराः	११.	तात्पर्य (भी)
मखाः ।	४.	यज्ञों का	क्रियाः ॥	१०.	वैदिक अनुष्ठानों का

श्लोकार्थ—चारों वेदों का तात्पर्य भगवान् श्रीकृष्ण में ही है । यज्ञों का तात्पर्य भी भगवान् श्रीकृष्ण में ही है । योगक्रिया का तात्पर्य भी भगवान् श्रीकृष्ण में ही है । वैदिक अनुष्ठानों का तात्पर्य भी भगवान् श्रीकृष्ण में ही है ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः ।
वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ॥२६॥

पदच्छेद—

वासुदेव परम् ज्ञानम्, वासुदेव परम् तपः ।
वासुदेव परः धर्मः, वासुदेव परा गतिः ॥

शब्दार्थ—

वासुदेव	२.	श्रीकृष्ण का (ही)	वासुदेव	८.	श्रीकृष्ण के (ही)
परम्	३.	बोधक (है)	परः	६.	लिये (है)
ज्ञानम्	१.	ज्ञान	धर्मः	७.	धर्मों का अनुष्ठान
वासुदेव	५.	भगवान् श्रीकृष्ण को ही	वासुदेव	११.	भगवान् श्रीकृष्ण का ही
परम्	६.	बताती (है)	परा	१२.	प्रतिपादक (है)
तपः ।	४.	तपस्या	गतिः ॥	१०.	(और) मोक्ष (भी)

श्लोकार्थ—ज्ञान श्रीकृष्ण का ही बोधक है, तपस्या भगवान् श्रीकृष्ण को ही बताती है धर्मों का अनुष्ठान श्रीकृष्ण के ही लिये है और मोक्ष भी भगवान् श्रीकृष्ण का ही प्रतिपादक है ।

त्रिंशः श्लोकः

स एवेदं ससर्जाग्रे भगवानात्ममायया ।
सदसद्रूपया चासौ गुणमय्यागुणो विभुः ॥३०॥

पदच्छेद—

सः एव इदम् ससर्ज अग्रे, भगवान् आत्म मायया ।
सद् असद् रूपया च असौ, गुणमय्या अगुणः विभुः ॥

शब्दार्थ—

सः एव	४.	प्रसिद्ध	असद्	६.	(और वास्तविक दृष्टि से) असत्य
इदम्	१४.	इस विश्व को	रूपया	१०.	स्वरूप वाली
ससर्ज	१५.	बनाया था	च	२.	और
अग्रे	७.	सृष्टि के प्रारम्भ में	असौ	५.	उस
भगवान्	६.	परमात्मा ने	गुणमय्या	१२.	त्रिगुणात्मिका
आत्म	११.	अपनी	अगुणः	१.	निर्गुण
मायया ।	१३.	माया से	विभुः ॥	३.	व्यापक रूप से
सद्	८.	(प्रपंच की दृष्टि से) सत्य			

श्लोकार्थ—निर्गुण और व्यापक रूपसे प्रसिद्ध उस परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रपंच की दृष्टि से सत्य और वास्तविक दृष्टि से असत्य स्वरूप वाली अपनी त्रिगुणात्मिका माया से इस विश्व को बनाया था ।

एकत्रिंशः श्लोकः

तया विलसितेष्वेषु गुणेषु गुणवानिव ।
अन्तःप्रविष्ट आभाति विज्ञानेन विजृम्भितः ॥३१॥

पदच्छेद—

तया विलसितेषु एषु, गुणेषु गुणवान् इव ।
अतः प्रविष्टः आभाति, विज्ञानेन विजृम्भितः ॥

शब्दार्थ—

तया	१.	उस माया के	अन्तः	७.	अंदर
विलसितेषु	२.	विलासरूप	प्रविष्टः	८.	प्रवेश करके
एषु	३.	इन तीनों	आभाति	११.	सुशोभित होते हैं
गुणेषु	४.	गुणों में	विज्ञानेन	९.	विशुद्ध ज्ञान से
गुणवान्	५.	गुणवाले की	विजृम्भितः ॥	१०.	प्रकाशित होते हुए
इव ।	६.	भाँति (भगवान् श्रीकृष्ण)			

श्लोकार्थ—उस माया के विलासरूप इन तीनों गुणों में गुणवाले की भाँति भगवान् श्रीकृष्ण अन्दर प्रवेश करके विशुद्ध ज्ञान से प्रकाशित होते हुए सुशोभित होते हैं ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

यथा ह्यवहितो वह्निर्दारुष्वेकः स्वयोनिषु ।
नानेव भाति विश्वात्मा भूतेषु च तथा पुमान् ॥३२॥

पदच्छेद—

यथा हि अवहितः वह्निः, दारुषु एकः स्व योनिषु ।
नाना इव भाति विश्वात्मा, भूतेषु च तथा पुमान् ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जिस प्रकार	इव	८.	जैसे
हि	६.	ही	भाति	१०.	प्रतीत होती है
अवहितः	४.	छिपी हुई	विश्वात्मा	१२.	जगत् का आत्मा
वह्निः	७.	अग्नि	भूतेषु	१४.	प्राणियों में
दारुषु	३.	काष्ठों में	च	१५.	अनेक रूपों से प्रतीत होता है
एकः	५.	एक	तथा	११.	उसी प्रकार
स्व योनिषु ।	२.	अपने कारण	पुमान् ॥	१३.	परम पुरुष
नाना	९.	अनेक रूपों में			

श्लोकार्थ—जिस प्रकार अपने कारण काष्ठों में छिपी हुई एक ही अग्नि जैसे अनेक रूपों में प्रतीत होती है, उसी प्रकार जगत् का आत्मा परम पुरुष प्राणियों में अनेक रूपों से प्रतीत होता है ।

त्रयस्त्रिंश: श्लोक:

असौ गुणमयैर्भावैर्भूतसूक्ष्मेन्द्रियात्मभिः ।
स्वनिर्मितेषु निर्विष्टो भुङ्क्ते भूतेषु तद्गुणान् ॥३३॥

पदच्छेद—

असौ गुणमयैः भावैः, भूत सूक्ष्म इन्द्रिय आत्मभिः ।
स्वनिर्मितेषु निर्विष्टः, भुङ्क्ते भूतेषु तद् गुणान् ॥

शब्दार्थ—

असौ	९.	वह परमात्मा	**स्वनिर्मितेषु**	६.	अपने द्वारा रचित
गुणमयैः	१.	त्रिगुणात्मक	**निर्विष्टः**	८.	प्रविष्ट होकर
भावैः	५.	विकारों से	**भुङ्क्ते**	१२.	(स्वयम्) भोगता है
भूत सूक्ष्म	२.	पंच तन्मात्रा (रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द)	**भूतेषु**	७.	प्राणियों में
इन्द्रिय	३.	इन्द्रिय और	**तद्**	१०.	उनके
आत्मभिः ।	४.	अंत:करण स्वरूप (मन बुद्धि चित्त अहंकार)	**गुणान् ॥**	११.	गुणों को

श्लोकार्थ—त्रिगुणात्मक पंच तन्मात्रा, इन्द्रिय और अन्त:करण स्वरूप विकारों से अपने द्वारा रचित प्राणियों में प्रविष्ट होकर वह परमात्मा उनके गुणों को स्वयम् भोगता है ।

चतुस्त्रिंश: श्लोक:

भावयत्येष सत्त्वेन लोकान् वै लोकभावनः ।
लीलावतारानुरतो देवतिर्यङ्नरादिषु ॥३४॥

पदच्छेद—

भावयति एषः सत्त्वेन, लोकान् वै लोक भावनः ।
लीला अवतार अनुरतः, देव तिर्यङ् नर आदिषु ॥

शब्दार्थ—

भावयति	१४.	पालन करता है	**लीला**	५.	क्रीड़ा के लिए
एषः	१०.	वह परमात्मा	**अवतार**	६.	अवतार
सत्त्वेन	११.	सत्त्वगुण से	**अनुरतः**	७.	धारण करने वाला
लोकान्	१३.	समस्त ब्रह्मांड का	**देव**	१.	देवता
वै	१२.	ही	**तिर्यङ्**	२.	पशु-पक्षी
लोक	८.	जगत् का	**नर**	३.	मनुष्य
भावनः ।	९.	पालक	**आदिषु ॥**	४.	इत्यादि रूपों में

श्लोकार्थ—देवता, पशु-पक्षी, मनुष्य इत्यादि रूपों में क्रीड़ा के लिए अवतार धारण करने वाला, जगत् का पालक वह परमात्मा सत्त्वगुण से ही समस्त ब्रह्मांड का पालन करता है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे नैमिषीयोपाख्याने द्वितीयः अध्यायः ॥२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ तृतीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— जगृहे पौरुषं रूपं भगवान्महदादिभिः ।
सम्भूतं षोडशकलमादौ लोकसिसृक्षया ॥१॥

पदच्छेद—

जगृहे पौरुषम् रूपम्, भगवान् महत् आदिभिः ।
सम्भूतम् षोडश कलम्, आदौ लोक सिसृक्षया ॥

शब्दार्थ—

जगृहे	१२.	धारण किया था	सम्भूतम्	७.	उत्पन्न हुए
पौरुषम्	१०.	पुरुष के	षोडश	८.	सोलह
रूपम्	११.	स्वरूप को	कलम्	९.	कलाओं वाले
भगवान्	१.	भगवान् ने	आदौ	२.	सृष्टि के प्रारम्भ में
महत्	५.	महत्तत्त्व (अहंतत्त्व) और	लोक	३.	लोकों के
आदिभिः ।	६.	पंच तन्मात्रा आदि के द्वारा	सिसृक्षया ॥	४.	निर्माण की इच्छा से

श्लोकार्थ—भगवान् ने सृष्टि के प्रारम्भ में लोकों के निर्माण की इच्छा से महत्तत्त्व, अहंतत्त्व और पंच-तन्मात्रा आदि के द्वारा उत्पन्न हुए सोलह कलाओं वाले (जिसमें दस इन्द्रियां, एक मन और पाँच महाभूत होते हैं ऐसे) पुरुष के स्वरूप को धारण किया था ।

द्वितीयः श्लोकः

यस्याम्भसि शयानस्य योगनिद्रां वितन्वतः ।
नाभिह्रदाम्बुजादासीद् ब्रह्मा विश्वसृजां पतिः ॥२॥

पदच्छेद—

यस्य अम्भसि शयानस्य, योगनिद्राम् वितन्वतः ।
नाभि ह्रद अम्बुजात् आसीत्, ब्रह्मा विश्वसृजाम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

यस्य	५.	जिस भगवान् के	ह्रद	७.	सरोवर के
अम्भसि	१.	जल में	अम्बुजात्	८.	कमल से
शयानस्य	२.	सोये हुए (तथा)	आसीत्	१२.	उत्पन्न हुए थे
योगनिद्राम्	३.	योगमाया का	ब्रह्मा	११.	ब्रह्मा जी
वितन्वतः ।	४.	विस्तार करते हुए	विश्वसृजाम्	९.	प्रजापतियों के
नाभि	६.	नाभिरूपी	पतिः ॥	१०.	स्वामी

श्लोकार्थ—जल में सोये हुए तथा योग माया का विस्तार करते हुए जिस भगवान् के नाभिरूपी सरोवर के कमल से प्रजापतियों के स्वामी ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए थे ।

तृतीयः श्लोकः

यस्यावयवसंस्थानैः कल्पितो लोकविस्तरः ।
तद्वै भगवतो रूपं विशुद्धं सत्त्वमूर्जितम् ॥३॥

पदच्छेद—

यस्य अवयव संस्थानैः, कल्पितः लोक विस्तरः ।
तद् वै भगवतः रूपम्, विशुद्धम् सत्त्वम् ऊर्जितम् ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिसके	**तद् वै**	८.	वही
अवयव	२.	अंगों के	**भगवतः**	७.	भगवान् का
संस्थानैः	३.	आकारों से	**रूपम्**	१२.	स्वरूप है
कल्पितः	६.	रचना हुई है	**विशुद्धम्**	९.	निर्मल
लोक	४.	लोकों क	**सत्त्वम्**	१०.	सतोगुणी (और)
विस्तरः ।	५.	विस्तार की	**ऊर्जितम् ॥**	११.	शक्तिशाली

श्लोकार्थ—जिसके अंगों के आकारों से लोकों के विस्तार की रचना हुई है, भगवान् का वही निर्मल, सतोगुणी और शक्तिशाली स्वरूप है ।

चतुर्थः श्लोकः

पश्यन्त्यदो रूपमदभ्रचक्षुषा, सहस्रपादोरुभुजाननाद्भुतम् ।
सहस्रमूर्धश्रवणाक्षिनासिकम्, सहस्रमौल्यम्बरकुण्डलोल्लसत् ॥४॥

पदच्छेद—

पश्यन्ति अदः रूपम् अदभ्र चक्षुषा, सहस्र पाद उरु भुज आनन अद्भुतम् ।
सहस्र मूर्धन् श्रवण अक्षि नासिकम्, सहस्र मौलि अम्बर कुण्डल उल्लसत् ॥

शब्दार्थ—

पश्यन्ति	१६.	देखते हैं	**सहस्र**	९.	(तथा) हजारों
अदः, रूपम्	१३.	भगवान् के उस, रूप को	**मूर्धन्**	१०.	सिर
अदभ्र	१४.	दिव्य	**श्रवण, अक्षि**	११.	कान, आँख एवं
चक्षुषा,	१५.	आँखों से	**नासिकम्,**	१२.	नाक से युक्त
सहस्र, पाद	१.	(मुनिजन) हजारों, पैर	**सहस्र, मौलि**	५.	हजारों, मुकुट
उरु, भुज	२.	जंघा, भुजा और	**अम्बर**	६.	वस्त्र और
आनन	३.	मुखों के कारण	**कुण्डल**	७.	कुण्डलों से
अद्भुतम् ।	४.	आश्चर्यकारी	**उल्लसत् ॥**	८.	सुशोभित

श्लोकार्थ—मुनिजन हजारों पैर, जंघा, भुजा और मुखों के कारण आश्चर्यकारी; हजारों मुकुट, वस्त्र और कुण्डलों से सुशोभित तथा हजारों सिर, कान, आँख एवम् नाक से युक्त भगवान् के उस रूप को दिव्य आँखों से देखते हैं ।

पञ्चमः श्लोकः

एतन्नानावतारराणां निधानं बीजमव्ययम् ।
यस्यांशांशेन सृज्यन्ते देवतिर्यङ्नरादयः ॥५॥

पदच्छेद—

एतद् नाना अवताराणाम्, निधानम् बीजम् अव्ययम् ।
यस्य अंश अंशेन सृज्यन्ते, देव तिर्यङ् नर आदयः ॥

शब्दार्थ—

एतद्	१.	यह रूप	अंश	८.	प्रत्येक
नाना	२.	अनेक	अंशेन	९.	अंश से
अवताराणाम्	३.	अवतारों का	सृज्यन्ते	१४.	उत्पन्न होते हैं
निधानम्	४.	भण्डार है	देव	१०.	देवता
बीजम्	५.	आदि कारण है	तिर्यङ	११.	पशु, पक्षी और
अव्ययम् ।	६.	(और) अविनाशी है	नर	१२.	मनुष्य
यस्य	७.	जिसके	आदयः ॥	१३.	इत्यादि (प्राणी)

श्लोकार्थ—यह रूप अनेक अवतारों का भण्डार है, आदि कारण है और अविनाशी है, जिसके प्रत्येक अंश से देवता, पशु, पक्षी और मनुष्य इत्यादि प्राणी उत्पन्न होते हैं ।

षष्ठः श्लोकः

स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमास्थितः ।
चचार दुश्चरं ब्रह्मा ब्रह्मचर्यमखण्डितम् ॥६॥

पदच्छेद—

सः एव प्रथमम् देवः, कौमारम् सर्गम् आस्थितः ।
चचार दुश्चरम् ब्रह्मा, ब्रह्मचर्यम् अखण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

सः एव	१.	वही	चचार	११.	पालन किया था
प्रथमम्	३.	पहले अवतार में	दुश्चरम्	८.	अति कठिन
देवः	२.	विष्णु भगवान्	ब्रह्मा	७.	(जिसमें उन) चारों ब्राह्मणों ने
कौमारम्	४.	चार कुमारों के	ब्रह्मचर्यम्	१०.	ब्रह्मचर्य का
सर्गम्	५.	रूप में	अखण्डितम् ॥	९.	अखण्ड
आस्थितः ।	६.	अवतरित हुए थे			

श्लोकार्थ—वही विष्णु भगवान् पहले अवतार में चार कुमारों (सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार) के रूप में अवतरित हुए थे, जिसमें उन चारों ब्राह्मणों ने अति कठिन अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया था ।

सप्तमः श्लोकः

द्वितीयं तु भवायास्य रसातलगतां महीम् ।
उद्धरिष्यन्नुपादत्त यज्ञेशः सौकरं वपुः ॥७॥

पदच्छेद—

द्वितीयम् तु भवाय अस्य, रसातल गताम् महीम् ।
उद्धरिष्यन् उपादत्त, यज्ञेशः सौकरम् वपुः ॥

शब्दार्थ—

द्वितीयम्	२.	दूसरे अवतार में	**महीम् ।**	७.	पृथ्वी का
तु	१.	तथा	**उद्धरिष्यन्**	८.	उद्धार करने के लिये
भवाय	४.	कल्याणार्थ	**उपादत्त**	१२.	धारण किया था
अस्य	३.	इस जगत् के	**यज्ञेशः**	९.	यज्ञपति विष्णु ने
रसातल	५.	पाताल लोक में	**सौकरम्**	१०.	सूकर के
गताम्	६.	गई हुई	**वपुः ॥**	११.	शरीर को

श्लोकार्थ—तथा दूसरे अवतार में इस जगत् के कल्याणार्थ पाताल लोक में गई हुई पृथ्वी का उद्धार करने के लिए यज्ञपति विष्णु ने सूकर के शरीर को धारण किया था ।

अष्टमः श्लोकः

तृतीयमृषिसर्गं च देवर्षित्वमुपेत्य सः ।
तन्त्रं सात्वतमाचष्ट नैष्कर्म्यं कर्मणां यतः ॥८॥

पदच्छेद—

तृतीयम् ऋषि सर्गम् च, देवर्षित्वम् उपेत्य सः ।
तन्त्रम् सात्वतम् आचष्ट, नैष्कर्म्यम् कर्मणाम् यतः ॥

शब्दार्थ—

तृतीयम्	२.	तीसरे	**तन्त्रम्**	८.	नारद पाञ्चरात्र संहिता का
ऋषि सर्गम्	३.	ऋषि अवतार में	**सात्वतम्**	७.	वैष्णव शास्त्र
च	१.	और	**आचष्ट**	९.	उपदेश किया था
देवर्षित्वम्	५.	देवर्षि नारद के रूप को	**नैष्कर्म्यम्**	११.	निष्काम
उपेत्य	६.	धारण करके	**कर्मणाम्**	१२.	कर्मों का (वर्णन है)
सः ।	४.	उन विष्णु ने	**यतः ॥**	१०.	जिसमें

श्लोकार्थ—और तीसरे ऋषि अवतार में उन विष्णु ने देवर्षि नारद के रूप को धारण करके वैष्णव शास्त्र नारद पाञ्चरात्र संहिता का उपदेश किया था, जिसमें निष्काम कर्मों का वर्णन है ।

नवमः श्लोकः

तुर्ये धर्मकलासर्गे नरनारायणावृषी।
भूत्वाऽऽत्मोपशमोपेतमकरोद् दुश्चरं तपः ॥९॥

पदच्छेद— तुर्ये धर्म कला सर्गे, नर नारायणौ ऋषी।
भूत्वा आत्म उपशम उपेतम्, अकरोत् दुश्चरम् तपः ॥

शब्दार्थ—

तुर्ये	१. चौथे अवतार में (उन्हीं भगवान् ने)	भूत्वा	८.	होकर
धर्म	२. धर्मराज (की पत्नी मूर्तिदेवी के गर्भ से)	आत्म	९.	आत्म
कला	३. अंश	उपशम	१०.	संयम से
सर्गे	४. अवतार	उपेतम्	११.	युक्त
नर	५. नर और	अकरोत्	१४.	की थी
नारायणौ	६. नारायण नामक	दुश्चरम्	१२.	कठिन
ऋषी।	७. ऋषि	तपः ॥	१३.	तपस्या

श्लोकार्थ—चौथे अवतार में उन्हीं भगवान् ने धर्मराज की पत्नी मूर्ति देवी के गर्भ से अंशावतार नर और नारायण नामक ऋषि होकर आत्मसंयम से युक्त कठिन तपस्या की थी।

दशमः श्लोकः

पञ्चमः कपिलो नाम सिद्धेशः कालविप्लुतम्।
प्रोवाचासुरये सांख्यं तत्त्वग्रामविनिर्णयम् ॥१०॥

पदच्छेद—

पञ्चमः कपिलः नाम, सिद्धेशः काल विप्लुतम्।
प्रोवाच आसुरये सांख्यम्, तत्त्व ग्राम विनिर्णयम् ॥

शब्दार्थ—

पञ्चमः	१. (भगवान् का) पाँचवाँ अवतार	प्रोवाच	१२. उपदेश किया था
कपिलः	३. कपिल	आसुरये	५. (उन्होंने) आसुरि नाम के मुनि को
नाम	४. नाम से (हुआ था उसमें)	सांख्यम्	११. सांख्य शास्त्र का
सिद्धेशः	२. सिद्धों के अधिपति के रूप में	तत्त्व	८. (तथा) पच्चीस तत्त्वों के
काल	६. समय के प्रभाव से	ग्राम	९. समूह का
विप्लुतम्।	७. नष्ट हुए	विनिर्णयम् ॥	१०. निर्णय करने वाले

श्लोकार्थ—भगवान् का पाँचवाँ अवतार सिद्धों के अधिपति के रूप में कपिल नाम से हुआ था। उसमें उन्होंने आसुरि नाम के मुनि को समय के प्रभाव से नष्ट हुए तथा पच्चीसं तत्त्वों के समूह का निर्णय करने वाले सांख्य शास्त्र का उपदेश किया था।

पच्चीस तत्त्व :—पाँच तन्मात्रायें, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, एक मन, बुद्धि, अहंकार और पुरुष ये पच्चीस तत्त्व कहलाते हैं।

एकादशः श्लोकः

षष्ठे अत्रेरपत्यत्वं वृतः प्राप्तोऽनसूयया ।
आन्वीक्षिकीमलर्काय प्रह्लादादिभ्य ऊचिवान् ॥११॥

पदच्छेद—

षष्ठे अत्रेः अपत्यत्वम्, वृतः प्राप्तः अनसूयया ।
आन्वीक्षिकीम् अलर्काय, प्रह्लाद आदिभ्यः ऊचिवान् ॥

शब्दार्थ—

षष्ठे	१.	छठे अवतार में (वे)	**आन्वीक्षिकीम्**	१०.	अध्यात्म विद्या का
अत्रेः	२.	अत्रि ऋषि की	**अलर्काय**	७.	अलर्क
अपत्यत्वम्	३.	संतान दत्तात्रेय के रूप में	**प्रह्लाद**	८.	प्रह्लाद
वृतः	५.	वरदान माँगने पर	**आदिभ्यः**	९.	आदि को
प्राप्तः	६.	प्राप्त हुए थे (और)	**ऊचिवान् ॥**	११.	उपदेश दिये थे
अनसूयया ।	४.	अनसूया के			

श्लोकार्थ—छठे अवतार में वे अत्रि ऋषि की संतान दत्तात्रेय के रूप में अनसूया के वरदान माँगने पर प्राप्त हुए थे और अलर्क, प्रह्लाद आदि को अध्यात्म विद्या का उपदेश दिये थे ।

द्वादशः श्लोकः

ततः सप्तम आकूत्यां रुचेर्यज्ञोऽभ्यजायत ।
स यामाद्यैः सुरगणैरपात्स्वायम्भुवान्तरम् ॥१२॥

पदच्छेद—

ततः सप्तमे आकूत्याम्, रुचेः यज्ञः अभ्यजायत ।
सः याम आद्यैः सुरगणैः, अपात् स्वायम्भुव अन्तरम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर (वे भगवान्)	**याम**	८.	याम
सप्तमे	२.	सातवें अवतार में	**आद्यैः**	९.	इत्यादि
आकूत्याम्	३.	आकूती नाम की	**सुरगणैः**	१०.	देवताओं के साथ
रुचेः	४.	रुचि राजा की (पत्नी से)	**अपात्**	१३.	रक्षा की थी
यज्ञः	५.	यज्ञ रूप में	**स्वायम्भुव**	११.	स्वायम्भुव नाम के
अभ्यजायत ।	६.	उत्पन्न हुए थे (जिसमें)	**अन्तरम् ॥**	१२.	मन्वन्तर की
सः	७.	उन्होंने			

श्लोकार्थ—तदनन्तर वे भगवान् सातवें अवतार में आकूती नाम की रुचि राजा की पत्नी से यज्ञ रूप में उत्पन्न हुए थे, जिसमें उन्होंने याम इत्यादि देवताओं के साथ स्वायम्भुव नाम के मन्वन्तर की रक्षा की थी ।

त्रयोदशः श्लोकः

अष्टमे मेरुदेव्यां तु नाभेर्जात उरुक्रमः ।
दर्शयन् वर्त्म धीराणां सर्वाश्रमनमस्कृतम् ॥१३॥

पदच्छेद—

अष्टमे मेरु देव्याम् तु, नाभेः जातः उरुक्रमः ।
दर्शयन् वर्त्म धीराणाम्, सर्व आश्रम नमस्कृतम् ॥

शब्दार्थ—

अष्टमे	१.	आठवें अवतार में	**दर्शयन्**	१२.	दिखलाया था
मेरु देव्याम्	४.	मेरु देवी के गर्भ से	**वर्त्म**	११.	मार्ग
तु	२.	तो (वे)	**धीराणाम्**	१०.	परम हंसों का
नाभेः	३.	नाभि नामक राजा की (पत्नी)	**सर्व**	७.	चारों
जातः	५.	उत्पन्न हुए	**आश्रम**	८.	आश्रमों से
उरुक्रमः ।	६.	विशाल पग वाले (उन) ऋषभ देव ने	**नमस्कृतम् ॥**	९.	पूजित

श्लोकार्थ—आठवें अवतार में तो वे नाभि नामक राजा की पत्नी मेरु देवी के गर्भ से उत्पन्न हुए । विशाल पग वाले उन ऋषभ देव ने चारों आश्रमों से पूजित परम हंसों का मार्ग दिखलाया था ।

चतुर्दशः श्लोकः

ऋषिभिर्याचितो भेजे नवमं पार्थिवं वपुः ।
दुग्धेमामोषधीर्विप्रास्तेनायं स उशत्तमः ॥१४॥

पदच्छेद—

ऋषिभिः याचितः भेजे, नवमम् पार्थिवम् वपुः ।
दुग्ध इमाम् ओषधीः विप्राः, तेन अयम् सः उशत्तमः ॥

शब्दार्थ—

ऋषिभिः	२.	ऋषियों से	**इमाम्**	९.	इस पृथ्वी से
याचितः	३.	प्रार्थित (उन भगवान् ने)	**ओषधीः**	१०.	औषधियों को
भेजे	६.	प्राप्त किया था	**विप्राः**	७.	हे ऋषियों !
नवमम्	१.	नवें अवतार में	**तेन**	१२.	जिससे
पार्थिवम्	४.	पृथु राजा के	**अयम्**	१३.	यह (अवतार)
वपुः ।	५.	रूप को	**सः**	८.	उन्होंने (इस अवतार में)
दुग्ध	११.	दूहा था	**उशत्तमः ॥**	१४.	अत्यन्त श्रेष्ठ (माना गया है)

श्लोकार्थ—नवें अवतार में ऋषियों से प्रार्थित उन भगवान् ने पृथु राजा के रूप को प्राप्त किया था । हे ऋषियों ! उन्होंने इस अवतार में इस पृथ्वी से औषधियों को दूहा था, जिससे यह अवतार अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है ।

पञ्चदशः श्लोकः

रूपं स जगृहे मात्स्यं चाक्षुषोदधिसंप्लवे ।
नाव्यारोप्य महीमय्यामपाद्वैवस्वतं मनुम् ॥१५॥

पदच्छेद—

रूपम् सः जगृहे मात्स्यम्, चाक्षुष उदधि सम्प्लवे ।
नावि आरोप्य महीमय्याम्, अपात् वैवस्वतम् मनुम् ॥

शब्दार्थ—

रूपम्	६.	रूप को	नावि	९.	नाव पर
सः	४.	विष्णु भगवान् ने	आरोप्य	१०.	चढ़ाकर
जगृहे	७.	धारण किया था	महीमय्याम्	८.	(और उस समय) पृथ्वी निर्मित
मात्स्यम्	५.	मछली के	अपात्	१३.	रक्षा की थी
चाक्षुष	१.	चाक्षुष नाम के मन्वन्तर के अन्त में	वैवस्वतम्	११.	वैवस्वत नाम के
उदधि	२.	समुद्र में	मनुम् ॥	१२.	मनु की
सम्प्लवे ।	३.	पृथ्वी के डूबने पर			

श्लोकार्थ—चाक्षुष नाम के मन्वन्तर के अन्त में समुद्र में पृथ्वी के डूबने पर विष्णु भगवान् ने मछली के रूप को धारण किया था और उस समय पृथ्वी निर्मित नाव पर चढ़ाकर वैवस्वत नाम के मनु की रक्षा की थी ।

षोडशः श्लोकः

सुरासुराणामुदधिं मथ्नतां मन्दराचलम् ।
दध्रे कमठरूपेण पृष्ठ एकादशे विभुः ॥१६॥

पदच्छेद—

सुर असुराणाम् उदधिम्, मथ्नताम् मन्दराचलम् ।
दध्रे कमठ रूपेण, पृष्ठे एकादशे विभुः ॥

शब्दार्थ—

सुर	३.	देवता और	कमठ	७.	कच्छप
असुराणाम्	४.	दैत्यों के द्वारा	रूपेण	८.	रूप से
उदधिम्	५.	समुद्र का	पृष्ठे	१०.	अपनी पीठ पर
मथ्नताम्	६.	मंथन करते समय	एकादशे	१.	ग्यारहवें अवतार में
मन्दराचलम् ।	९.	मंदराचल पर्वत को	विभुः ॥	२.	व्यापक विष्णु भगवान् ने
दध्रे	११.	धारण किया था			

श्लोकार्थ—ग्यारहवें अवतार में व्यापक विष्णु भगवान् ने देवता और दैत्यों के द्वारा समुद्र का मंथन करते समय कच्छप रूप से मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया था ।

सप्तदशः श्लोकः

धान्वन्तरं द्वादशमं त्रयोदशममेव च ।
अपाययत्सुरानन्यान्मोहिन्या मोहयन् स्त्रिया ॥१७॥

पदच्छेद—

धान्वन्तरम् द्वादशमम्, त्रयोदशमम् एव च ।
अपाययत् सुरान् अन्यान्, मोहिन्या मोहयन् स्त्रिया ॥

शब्दार्थ—

धान्वन्तरम्	१.	धान्वन्तरि के रूप मे (भगवान् का)	अपाययत्	११.	(अमृत) पिलाया था
द्वादशमम्	२.	बारहवां (अवतार हुआ था)	सुरान्	९.	देवताओं को
त्रयोदशमम्	४.	तेरहवें अवतार में	अन्यान्	७.	असुरों को
एव	१०.	ही	मोहिन्या	५.	मोहनी
च ।	३.	और (उन्होंने)	मोहयन्	८.	मोहित करते हुये
			स्त्रिया ॥	६.	स्त्री के रूप में

श्लोकार्थ—धन्वन्तरि के रूप में भगवान् का बारहवाँ अवतार हुआ था और उन्होंने तेरहवें अवतार में मोहनी स्त्री के रूप में असुरों को मोहित करते हुये देवताओं को ही अमृत पिलाया था ।

अष्टादशः श्लोकः

चतुर्दशं नारसिंहं बिभ्रद्दैत्येन्द्रमूर्जितम् ।
ददार करजैर्वक्षस्येरकां कटकृद्यथा ॥१८॥

पदच्छेद—

चतुर्दशम् नारसिंहम्, बिभ्रद् दैत्येन्द्रम् ऊर्जितम् ।
ददार करजैः वक्षसि, एरकाम् कटकृत् यथा ॥

शब्दार्थ—

चतुर्दशम्	१.	चौदहवें अवतार में (भगवान् ने)	ददार	८.	विदीर्ण कर दिया था
नारसिंहम्	२.	नरसिंह रूप को	करजैः	७.	नाखूनों से
बिभ्रद्	३.	धारण करके	वक्षसि	६.	हृदय को
दैत्येन्द्रम्	५.	दैत्यराज हिरण्यकशिपु के	एरकाम्	११.	एरका की सींक को (चीर देता है)
ऊर्जितम् ।	४.	शक्तिशाली	कटकृत्	१०.	चटाई बनाने वाला
			यथा ॥	९.	जैसे

श्लोकार्थ—चौदहवें अवतार में भगवान् ने नरसिंह रूप को धारण करके शक्तिशाली दैत्यराज हिरण्यकशिपु के हृदय को नाखूनों से विदीर्ण कर दिया था। जैसे चटाई बनाने वाला एरका की सींक को चीर देता है ।

एकोनविंशः श्लोकः

पञ्चदशं वामनकं कृत्वागादध्वरं बलेः ।
पदत्रयं याचमानः प्रत्यादित्सुस्त्रिविष्टपम् ॥१९॥

पदच्छेद—

पञ्चदशम् वामनकम्, कृत्वा अगात् अध्वरम् बलेः ।
पद त्रयम् याचमानः, प्रत्यादित्सुः त्रिविष्टपम् ॥

शब्दार्थ—

पञ्चदशम्	१. (भगवान्) पंद्रहवें अवतार में	बलेः ।	८. राजा बलि के
वामनकम्	२. वामन रूप का	पद त्रयम्	६. तीन पग भूमि की
कृत्वा	३. धारण कर	याचमानः	७. याचना करते हुये
अगात्	१०. गये थे	प्रत्यादित्सुः	५. लौटाने की इच्छा से
अध्वरम्	९. यज्ञ में	त्रिविष्टपम् ॥	४. देवताओं को (स्वर्ग लोक)

श्लोकार्थ—भगवान् पन्द्रहवें अवतार में वामन रूप को धारण कर देवताओं को स्वर्गलोक लौटाने की इच्छा से तीन पग भूमि की याचना करते हुये राजा बलि के यज्ञ में गये थे ।

विंशः श्लोकः

अवतारे षोडशमे पश्यन् ब्रह्मद्रुहो नृपान् ।
त्रिःसप्तकृत्वः कुपितो निःक्षत्रामकरोन्महीम् ॥२०॥

पदच्छेद—

अवतारे षोडशमे, पश्यन् ब्रह्म द्रुहः नृपान् ।
त्रिः सप्तकृत्वः कुपितः, निःक्षत्राम् अकरोत् महीम् ॥

शब्दार्थ—

अवतारे	२. अवतार में	त्रिःसप्तकृत्वः	९. इक्कीस बार
षोडशमे	१. सोलहवें	कुपितः	७. क्रोधित होकर
पश्यन्	६. देखते हुये (भगवान् ने परशुराम रूपसे)	निःक्षत्राम्	१०. क्षत्रियों से रहित
ब्रह्म	४. ब्राह्मणों का	अकरोत्	११. कर दिया था
द्रुहः	५. द्रोही	महीम् ॥	८. पृथ्वी को
नृपान् ।	३. राजाओं को		

श्लोकार्थ—सोलहवें अवतार में राजाओं को ब्राह्मणों का द्रोही देख भगवान् ने परशुराम रूप से क्रोधित होकर पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रियों से रहित कर दिया था ।

एकविंशः श्लोकः

ततः सप्तदशे जातः सत्यवत्यां पराशरात् ।
चक्रे वेदतरोः शाखा दृष्ट्वा पुंसोऽल्पमेधसः ॥२१॥

पदच्छेद—

ततः सप्तदशे जातः, सत्यवत्याम् पराशरात् ।
चक्रे वेद तरोः शाखाः, दृष्ट्वा पुंसः अल्प मेधसः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर (वे भगवान्)	वेद, तरोः	१०.	वेदरूपी, वृक्ष के
सप्तदशे	२.	सत्रहवें अवतार में	शाखाः	११.	चार विभाग
जातः	५.	उत्पन्न हुये (और)	दृष्ट्वा	९.	देखकर
सत्यवत्याम्	४.	सत्यवती के गर्भ से	पुंसः	६.	मनुष्यों को
पराशरात् ।	३.	पराशर ऋषि से	अल्प	७.	मन्द
चक्रे	१२.	किये	मेधसः ॥	८.	बुद्धि

श्लोकार्थ—तदनन्तर वे भगवान् सत्रहवें अवतार में पराशर ऋषि से सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुये और मनुष्यों को मन्द बुद्धि देखकर वेदरूपी वृक्ष के चार विभाग किये ।

द्वाविंशः श्लोकः

नरदेवत्वमापन्नः सुरकार्यचिकीर्षया ।
समुद्रनिग्रहादीनि चक्रे वीर्याण्यतः परम् ॥२२॥

पदच्छेद—

नरदेवत्वम् आपन्नः, सुर कार्य चिकीर्षया ।
समुद्र निग्रह आदीनि, चक्रे वीर्याणि अतः परम् ॥

शब्दार्थ—

नरदेवत्वम्	३.	क्षत्रियरूप को	निग्रह	६.	बन्धन
आपन्नः	४.	प्राप्त किया (तथा)	आदीनि	७.	इत्यादि
सुरकार्य	१.	देवताओं के कार्य को	चक्रे	११.	किया था
चिकीर्षया ।	२.	करने की इच्छा से (भगवान् ने)	वीर्याणि	१०.	पुरुषार्थ को
समुद्र	५.	समुद्र का	अतः	८.	(और) इससे भी
			परम् ॥	९.	बढ़कर

श्लोकार्थ—देवताओं के कार्य को करने की इच्छा से भगवान् ने क्षत्रिय रूप को प्राप्त किया तथा समुद्र का बन्धन इत्यादि और इससे भी बढ़कर पुरुषार्थ किया था ।

त्रयोविंशः श्लोकः

एकोनविंशे विंशतिमे वृष्णिषु प्राप्य जन्मनी ।
रामकृष्णाविति भुवो भगवानहरद्भरम् ॥२३॥

पदच्छेद—

एकोनविंशे विंशतिमे, वृष्णिषु प्राप्य जन्मनी ।
राम कृष्णौ इति भुवः, भगवान् अहरत् भरम् ॥

शब्दार्थ—

एकोनविंशे	२. (भगवान् ने) उन्नीसवें और		इति	८. नाम से
विंशतिमे	३. बीसवें अवतार में		भुवः	९. पृथ्वी के
वृष्णिषु	४. यादव कुल में		भगवान्	१. भगवान् ने
प्राप्य	६. प्राप्त करके		अहरत्	११. दूर किया था
जन्मनी ।	५. जन्म		भरम् ॥	१०. भार को
राम कृष्णौ	७. बलराम और श्रीकृष्ण			

श्लोकार्थ—भगवान् ने उन्नीसवें और बीसवें अवतार में यादव कुल में जन्म प्राप्त करके बलराम और श्रीकृष्ण नाम से पृथ्वी के भार को दूर किया था ।

चतुर्विंशः श्लोकः

ततः कलौ सम्प्रवृत्ते सम्मोहाय सुरद्विषाम् ।
बुद्धो नाम्नाजनसुतः कीकटेषु भविष्यति ॥२४॥

पदच्छेद—

ततः कलौ सम्प्रवृत्ते, सम्मोहाय सुर द्विषाम् ।
बुद्धः नाम्ना अजन सुतः, कीकटेषु भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उसके बाद		नाम्ना	१०. नाम से
कलौ	२. कलियुग का		अजन	७. अजन के
सम्प्रवृत्ते	३. प्रारम्भ होने पर (वे भगवान्)		सुतः	८. पुत्र रूप में
सम्मोहाय	५. मोहित करने के लिये		कीकटेषु	६. मगध देश में
सुरद्विषाम् ।	४. देवताओं के द्रोहियों को		भविष्यति ॥	११. उत्पन्न होंगे ।
बुद्धः	९. बुद्ध			

श्लोकार्थ—उसके बाद कलियुग का प्रारम्भ होने पर वे भगवान् देवताओं के द्रोहियों को मोहित करने के लिए मगध देश में अजन के पुत्र रूप में बुद्ध नाम से उत्पन्न होंगे ।

पञ्चविंशः श्लोकः

अथासौ युगसंध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु ।
जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः ॥२५॥

पदच्छेद—

अथ असौ युग संध्यायाम्, दस्यु प्रायेषु राजसु ।
जनिता विष्णु यशसः, नाम्ना कल्किः जगत् पतिः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	उसके बाद	जनिता	१४.	उत्पन्न होंगे
असौ	९.	वे (भगवान्)	विष्णु	१२.	विष्णु
युग	२.	कलियुग की	यशसः	१३.	यश के (घर)
संध्यायाम्	३.	समाप्ति के अवसर पर	नाम्ना	११.	नाम से
दस्यु	६.	लुटेरे हो जाने पर	कल्किः	१०.	कल्कि
प्रायेषु	४.	अधिकतर	जगत्	७.	जगत् के
राजसु ।	५.	राजाओं के	पतिः ॥	८.	पालक

श्लोकार्थ—उसके बाद कलियुग की समाप्ति के अवसर पर अधिकतर राजाओं के लुटेरे हो जाने पर जगत् के पालक वे भगवान् कल्कि नाम से विष्णु यश के घर उत्पन्न होंगे ।

षड्विंशः श्लोकः

अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्त्वनिधेर्द्विजाः ।
यथाविदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः ॥२६॥

पदच्छेद—

अवताराः हि असंख्येयाः, हरेः सत्त्व निधेः द्विजाः ।
यथा अविदासिनः कुल्याः, सरसः स्युः सहस्रशः ॥

शब्दार्थ—

अवताराः	१२.	अवतार हैं	यथा	२.	जैसे
हि	१०.	निश्चय ही	अविदासिनः	३.	अगाध
असंख्येयाः	११.	अगणित	कुल्याः	६.	नाले
हरेः	९.	भगवान् विष्णु के	सरसः	४.	सरोवर से
सत्त्व, निधेः	८.	सत्त्वगुण के, भण्डार	स्युः	७.	निकलते हैं (उसी प्रकार)
द्विजाः ।	१.	हे ऋषियों !	सहस्रशः ॥	५.	हजारों

श्लोकार्थ—हे ऋषियों ! जैसे अगाध सरोवर से हजारों नाले निकलते हैं, उसी प्रकार सत्त्वगुण के भण्डार भगवान् विष्णु के निश्चय ही अगणित अवतार हैं ।

सप्तविंशः श्लोकः

ऋषयो मनवो देवा मनुपुत्रा महौजसः ।
कलाः सर्वे हरेरेव सप्रजापतयस्तथा ॥२७॥

पदच्छेद—

ऋषयः मनवः देवाः, मनु पुत्राः महत् ओजसः ।
कलाः सर्वे हरेः एव, स प्रजा पतयः तथा ॥

शब्दार्थ—

ऋषयः	१. सभी ऋषि		कलाः	१४. अवतार (हैं)
मनवः	२. मनु		सर्वे	११. (ये) सभी
देवाः	३. देवता		हरेः	१२. भगवान् विष्णु के
मनु	९. मनु के		एव	१३. ही
पुत्राः	१०. पुत्र		स	६. सहित
महत्	७. महान्		प्रजापतयः	५. प्रजापतियों के
ओजसः ।	८. पराक्रमी		तथा ॥	४. और

श्लोकार्थ—सभी ऋषि, मनु, देवता और प्रजापतियों के सहित महान् पराक्रमी मनु के पुत्र, ये सभी भगवान् विष्णु के ही अवतार हैं ।

अष्टाविंशः श्लोकः

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।
इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे ॥२८॥

पदच्छेद—

एते च अंशकलाः पुंसः, कृष्णः तु भगवान् स्वयम् ।
इन्द्र अरि व्याकुलम् लोकम् , मृडयन्ति युगे युगे ॥

शब्दार्थ—

एते	१. ये		इन्द्र	८. (वे) इन्द्र के
च	४. और		अरि	९. शत्रु दैत्यों से
अंश कलाः	३. अंशावतारी (हैं)		व्याकुलम्	१०. उपद्रव ग्रस्त
पुंसः	२. परम पुरुष		लोकम्	११. लोक को
कृष्णः, तु	५. श्री कृष्ण भगवान्, तो		मृडयन्ति	१४. सुख पहुँचाते हैं
भगवान्	७. पूर्ण ब्रह्म (हैं)		युगे	१२. प्रत्येक
स्वयम् ।	६. अपने आप		युगे ॥	१३. युग में

श्लोकार्थ—ये परम पुरुष अंशावतारी हैं और श्रीकृष्ण भगवान् तो अपने आप पूर्ण ब्रह्म हैं। वे इन्द्र के शत्रु दैत्यों से उपद्रव ग्रस्त लोक को प्रत्येक युग में सुख पहुँचाते हैं ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

जन्म गुह्यं भगवतो य एतत्प्रयतो नरः।
सायं प्रातर्गृणन् भक्त्या दुःखग्रामाद्विमुच्यते ॥२९॥

पदच्छेद—

जन्म गुह्यम् भगवतः, यः एतत् प्रयतः नरः।
सायम् प्रातः गृणन् भक्त्या, दुःख ग्रामात् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

जन्म	२. अवतार		सायम्	८. सायंकाल
गुह्यम्	३. गोपनीय है		प्रातः	७. प्रातः (एवम्)
भगवतः	१. भगवान् का		गृणन्	११. उच्चारण करता है
यः	४. जो		भक्त्या	१०. भक्ति पूर्वक
एतत्	९. इसका		दुःख	१२. (वह) कष्ट के
प्रयतः	६. नियम-पूर्वक		ग्रामात्	१३. समूह से
नरः।	५. नर		विमुच्यते ॥	१४. मुक्त हो जाता है

श्लोकार्थ—भगवान् का अवतार गोपनीय है। जो नर नियम-पूर्वक प्रातः एवम् सायंकाल इसका भक्तिपूर्वक उच्चारण करता है, वह कष्ट के समूह से मुक्त हो जाता है।

त्रिंशः श्लोकः

एतद्रूपं भगवतो ह्यरूपस्य चिदात्मनः।
मायागुणैर्विरचितं महदादिभिरात्मनि ॥३०॥

पदच्छेद—

एतद् रूपम् भगवतः, हि अरूपस्य चित् आत्मनः।
माया गुणैः विरचितम्, महत् आदिभिः आत्मनि ॥

शब्दार्थ—

एतद्, रूपम्	५. ये, अवतार		माया	९. माया के
भगवतः	४. भगवान् के		गुणैः	१०. गुणों से
हि	६. निश्चय पूर्वक		विरचितम्	१२. रचित हैं
अरूपस्य	३. निराकार		महत्	७. महत्तत्त्व
चित्	१. ज्ञान		आदिभिः	८. इत्यादि
आत्मनः।	२. स्वरूप (एवम्)		आत्मनि ॥	११. अपने में

श्लोकार्थ—ज्ञान स्वरूप एवम् निराकार भगवान् के ये अवतार निश्चय पूर्वक महत्तत्त्व इत्यादि माया के गुणों से अपने में रचित हैं।

एकत्रिंशः श्लोकः

यथा नभसि मेघौघो रेणुर्वा पार्थिवोऽनिले ।
एवं द्रष्टरि दृश्यत्वमारोपितमबुद्धिभिः ॥३१॥

पदच्छेद—

यथा नभसि मेघ ओघः, रेणुः वा पार्थिवः अनिले ।
एवम् द्रष्टरि दृश्यत्वम्, आरोपितम् अबुद्धिभिः ॥

शब्दार्थ—

यथा	१. जिस प्रकार		**अनिले ।**	९. वायु में (मानते हैं)
नभसि	५. आकाश में		**एवम्**	१०. उसी प्रकार
मेघ	३. बादलों के		**द्रष्टरि**	१२. साक्षी आत्मा में
ओघः	४. झुण्ड को		**दृश्यत्वम्**	११. जगत् प्रपंच
रेणुः	८. धूली को		**आरोपितम्**	१३. कल्पित (है)
वा	६. अथवा		**अबुद्धिभिः ॥**	२. अज्ञानी प्राणी
पार्थिवः	७. पृथ्वी की			

श्लोकार्थ—जिस प्रकार अज्ञानी प्राणी बादलों के झुण्ड को आकाश में अथवा पृथ्वी की धूली को वायु में मानते हैं; उसी प्रकार जगत् प्रपंच साक्षी आत्मा में कल्पित है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

अतः परं यदव्यक्तमव्यूढगुणव्यूहितम् ।
अदृष्टाश्रुतवस्तुत्वात्स जीवो यत्पुनर्भवः ॥३२॥

पदच्छेद—

अतः परम् यद् अव्यक्तम्, अव्यूढ गुण व्यूहितम् ।
अदृष्ट अश्रुत वस्तुत्वात्, सः जीवः यत् पुनर्भवः ॥

शब्दार्थ—

अतः	१. इस (स्थूल शरीर) से		**अदृष्ट**	९. न दिखाई देने और
परम्	२. भिन्न (तथा)		**अश्रुत**	१०. न सुनाई पड़ने के
यद्	६. जो		**वस्तुत्वात्**	११. कारण
अव्यक्तम्	७. सूक्ष्म वस्तु (है)		**सः**	८. वह
अव्यूढ	५. रहित		**जीवः**	१२. जीव (कहलाता है)
गुण	३. गुण (और)		**यत्**	१३. जो
व्यूहितम् ।	४. आकार से		**पुनर्भवः ॥**	१४. बार-बार जन्म लेता है

श्लोकार्थ—इस स्थूल शरीर से भिन्न तथा गुण और आकार से रहित जो सूक्ष्म वस्तु है, वह न दिखाई देने और न सुनाई पड़ने के कारण जीव कहलाता है; जो बार-बार जन्म लेता है ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यत्रेमे सदसद्रूपे प्रतिषिद्धे स्वसंविदा ।
अविद्ययाऽऽत्मनि कृते इति तद्ब्रह्मदर्शनम् ॥३३॥

पदच्छेद—

यत्र इमे सद् असद् रूपे, प्रतिषिद्धे स्व संविदा ।
अविद्यया आत्मनि कृते, इति तद् ब्रह्म दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१. जिस (अवस्था) में	**अविद्यया**	२. अविद्या के द्वारा
इमे	४. इन	**आत्मनि, कृते**	३. आत्मा में, स्थापित
सद्	५. सत्य और	**इति**	९. इस प्रकार
असद् रूपे	६. असत्य रूपों का	**तद्**	१०. उसी अवस्था में
प्रतिषिद्धे	८. निवारण होता है	**ब्रह्म**	११. ब्रह्म का
स्व संविदा ।	७. अपने आत्मिक ज्ञान से	**दर्शनम् ॥**	१२. दर्शन होता है

श्लोकार्थ—जिस अवस्था में अविद्या के द्वारा आत्मा में स्थापित इन सत्य और असत्य रूपों का अपने आत्मिक ज्ञान से निवारण होता है, इस प्रकार उसी अवस्था में ब्रह्म का दर्शन होता है।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यद्येषोपरता देवी माया वैशारदी मतिः ।
सम्पन्न एवेति विदुर्महिम्नि स्वे महीयते ॥३४॥

पदच्छेद—

यदि एषा उपरता देवी, माया वैशारदी मतिः ।
सम्पन्नः एव इति विदुः, महिम्नि स्वे महीयते ॥

शब्दार्थ—

यदि	१. यदि	**सम्पन्नः**	९. कृतार्थ (और)
एषा	४. यह	**एव**	८. तब (जीव)
उपरता	७. नष्ट हो जाती है	**इति**	१३. ऐसा
देवी	६. देवी	**विदुः**	१४. विद्वान् लोग जानते हैं
माया	५. माया	**महिम्नि**	११. महिमा में
वैशारदी	२. निपुण	**स्वे**	१०. अपने स्वरूप की
मतिः ।	३. बुद्धि रूपा	**महीयते ॥**	१२. प्रतिष्ठित हो जाता है

श्लोकार्थ—यदि निपुण बुद्धिरूपा यह माया देवी नष्ट हो जाती है, तब जीव कृतार्थ और अपने स्वरूप की महिमा में प्रतिष्ठित हो जाता है, ऐसा विद्वान् लोग जानते हैं।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एवं जन्मानि कर्माणि ह्यकर्तुरजनस्य च ।
वर्णयन्ति स्म कवयो वेदगुह्यानि हृत्पतेः ॥३५॥

पदच्छेद—

एवम् जन्मानि कर्माणि, हि अकर्तुः अजनस्य च ।
वर्णयन्ति स्म कवयः, वेद गुह्यानि हृत्पतेः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	११.	इस प्रकार	च ।	९.	और
जन्मानि	८.	बहुत से जन्मों	वर्णयन्ति स्म	१२.	वर्णन करते हैं
कर्माणि	१०.	कर्मों का	कवयः	१.	महर्षि गण
हि	३.	और	वेद	६.	वेदों में
अकर्तुः	२.	अकर्ता	गुह्यानि	७.	गुप्त
अजनस्य	४.	अजन्मा	हृत्पतेः ॥	५.	हृदयेश्वर भगवान् के

श्लोकार्थ—महर्षिगण अकर्ता और अजन्मा हृदयेश्वर भगवान् के वेदों में गुप्त बहुत से जन्मों और कर्मों का इस प्रकार वर्णन करते हैं ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

स वा इदं विश्वममोघलीलः, सृजत्यवत्यत्ति न सज्जतेऽस्मिन् ।
भूतेषु चान्तर्हित आत्मतन्त्रः, षाड्वर्गिकं जिघ्रति षड्गुणेशः ॥३६॥

पदच्छेद—

सः वा इदम् विश्वम् अमोघ लीलः, सृजति अवति अत्ति न सज्जते अस्मिन् ।
भूतेषु च अन्तर्हितः आत्म तन्त्रः, षाड्वर्गिकम् जिघ्रति षड्गुण ईशः ॥

शब्दार्थ—

सः वा	२. वे भगवान्	भूतेषु	८. प्राणियों में
इदम्, विश्वम्	३. इस, जगत् को	च	११. और
अमोघ, लीलः	१. सफल, लीला करने वाले	अन्तर्हितः	९. विराजमान
सृजति	४. रचते हैं	आत्मतन्त्रः	१०. परम स्वतन्त्र
अवति, अत्ति	५. रक्षा, (और) संहार करते हैं	षाड्वर्गिकम्	१३. अन्तःकरण के छः शत्रुओं का
न सज्जते	७. नहीं लिप्त होते हैं	जिघ्रति	१४. उपभोग करते हैं
अस्मिन् ।	६. इस (जगत्) में	षड्गुण ईशः ॥	१२. छः गुणों के स्वामी (वे भगवान्)

श्लोकार्थ—सफल लीला करने वाले वे भगवान् इस जगत् को रचते हैं, रक्षा और संहार करते हैं, इस जगत् में लिप्त नहीं होते हैं । प्राणियों में विराजमान, परम स्वतन्त्र और छः गुणों के स्वामी वे भगवान् अन्तःकरण के छः शत्रुओं का उपभोग करते हैं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

न चास्य कश्चिन्निपुणेन धातुः, अवैति जन्तुः कुमनीष ऊतीः ।
नामानि रूपाणि मनोवचोभिः, संतन्वतो नटचर्यामिवाज्ञः ॥३७॥

पदच्छेद—

न च अस्य कश्चित् निपुणेन धातुः, अवैति जन्तुः कुमनीषः ऊतीः ।
नामानि रूपाणि मनो वचोभिः, सन्तन्वतः नट चर्याम् इव अज्ञः ॥

शब्दार्थ—

न	१५.	नहीं	कुमनीषः	४.	कुबुद्धि
च	३.	और	ऊतीः ।	१२.	लीलाओं को
अस्य	९.	इस	नामानि, रूपाणि	११.	नाम, रूप (और)
कश्चित्	१.	कोई भी	मनो वचोभिः	१३.	मन तथा वाणी से
निपुणेन	१४.	भलीभाँति	सन्तन्वतः	७.	करने वाले की
धातुः,	१०.	विधाता के	नट चर्याम्	६.	नट की लीला
अवैति	१६.	जान सकता है	इव	८.	भाँति
जन्तुः	५.	प्राणी	अज्ञः ॥	२.	मूर्ख

श्लोकार्थ—कोई भी मूर्ख और कुबुद्धि प्राणी नट की लीला करने वाले की भाँति इस विधाता के नाम, रूप और लीलाओं को मन तथा वाणी से भलीभाँति नहीं जान सकता है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

स वेद धातुः पदवीं परस्य, दुरन्तवीर्यस्य रथाङ्गपाणेः ।
योऽमायया संततयानुवृत्त्या, भजेत तत्पादसरोजगन्धम् ॥३८॥

पदच्छेद—

सः वेद धातुः पदवीम् परस्य, दुरन्त वीर्यस्य रथाङ्ग पाणेः ।
यः अमायया संततया अनुवृत्त्या, भजेत तत् पाद सरोज गन्धम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१	वह (व्यक्ति)	यः	८.	जो
वेद	७.	जानता है,	अमायया	१०.	निष्कपट भाव से
धातुः	५.	भगवान् के	संततया	९.	निरन्तर
पदवीम्	६.	लोक को	अनुवृत्त्या	११.	बार-बार
परस्य,	४.	सर्व श्रेष्ठ	भजेत,	१४	सेवन करता है
दुरन्त, वीर्यस्य	२.	अनन्त, पराक्रम वाले	तत् पाद	१२.	भगवान् के चरण
रथाङ्ग, पाणेः ।	३.	चक्र, सुदर्शनधारी	सरोज, गन्धम् ॥	१३.	कमल की, सुगन्ध का

श्लोकार्थ—वह व्यक्ति अनन्त पराक्रम वाले, चक्र सुदर्शनधारी सर्वश्रेष्ठ भगवान् के लोक को जनता है, जो निरन्तर निष्कपट भाव से बार-बार भगवान् के चरण कमल की सुगन्ध का सेवन करता है ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अथेह धन्या भगवन्त इत्थं, यद्वासुदेवेऽखिललोकनाथे।
कुर्वन्ति सर्वात्मकमात्मभावं, न यत्र भूयः परिवर्त उग्रः ॥३९॥

पदच्छेद—

अथ इह धन्याः भगवन्तः इत्थम्, यद् वासुदेवे अखिल लोकनाथे।
कुर्वन्ति सर्वात्मकम् आत्म भावम्, न यत्र भूयः परिवर्तः उग्रः ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	इस	**कुर्वन्ति**	११.	स्थापित करते हैं
इह	३.	संसार में	**सर्वात्मकम्**	९.	सम्पूर्ण रूप से
धन्याः	४.	(वे) धन्य (हैं)	**आत्मभावम्**	१०.	अपनापन
भगवन्तः	१.	हे महर्षियों !	**न**	१६.	नहीं (होता है)
इत्थम्,	६.	इस प्रकार	**यत्र**	१२.	इस संसार में
यद्	५.	जो	**भूयः**	१३.	(उनका) फिर से
वासुदेवे	८.	भगवान् वासुदेव में	**परिवर्तः**	१५.	आवागमन
अखिल, लोकनाथे।	७.	सम्पूर्ण विश्व के स्वामी	**उग्रः ॥**	१४.	कष्टकारी

श्लोकार्थ—हे महर्षियों ! इस संसार में वे धन्य हैं, जो इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व के स्वामी भगवान् वासुदेव में सम्पूर्ण रूप से अपनापन स्थापित करते हैं। इस संसार में उनका फिर से कष्टकारी आवागमन नहीं होता है।

चत्वारिंशः श्लोकः

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितं।
उत्तमश्लोकचरितं चकार भगवानृषिः ॥४०॥

पदच्छेद—

इदम् भागवतम् नाम, पुराणम् ब्रह्म सम्मितम्।
उत्तम श्लोक चरितम्, चकार भगवान् ऋषिः ॥

शब्दार्थ—

इदम्	५.	इस	**उत्तम**	९.	पुण्य
भागवतम्	६.	श्रीमद्भागवत	**श्लोक**	१०.	श्लोक (भगवान् श्रीकृष्ण) के
नाम	७.	नाम के	**चरितम्**	११.	चरित से युक्त
पुराणम्	८.	पुराण को	**चकार**	१२.	बनाया है
ब्रह्म	३.	वेद	**भगवान्**	१.	भगवान्
सम्मितम्।	४.	सम्मत	**ऋषिः ॥**	२.	वेद व्यास जी ने

श्लोकार्थ—भगवान् वेद व्यास जी ने वेद सम्मत इस श्रीमद्भागवत नाम के पुराण को पुण्य श्लोक भगवान् श्रीकृष्ण के चरित से युक्त बनाया है।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

निःश्रेयसाय लोकस्य धन्यं स्वस्त्ययनं महत् ।
तदिदं ग्राहयामास सुतमात्मवतां वरम् ॥४१॥

पदच्छेद—

निःश्रेयसाय लोकस्य, धन्यम् स्वस्त्ययनम् महत् ।
तद् इदम् ग्राहयामास, सुतम् आत्मवताम् वरम् ॥

शब्दार्थ—

निःश्रेयसाय	५. कल्याण के लिये	इदम्	६.	यह (भागवत महापुराण)
लोकस्य	४. लोक के	ग्राहयामास	११.	पढ़ाया था
धन्यम्	६. सुखदायी	सुतम्	३.	पुत्र (शुकदेव) को
स्वस्त्ययनम्	७. कल्याणकारी	आत्मवताम्	१.	(भगवान् वेदव्यास ने) आत्मज्ञानियों में
महत् ।	८. महान् (एवं)	वरम् ॥	२.	सर्व श्रेष्ठ
तद्	६. प्रसिद्ध			

श्लोकार्थ—भगवान् वेदव्यास जी ने आत्म ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ पुत्र शुकदेव को लोक के कल्याण के लिये सुखदायी, कल्याणकारी, महान् एवम् प्रसिद्ध यह भागवत महापुराण पढ़ाया था ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

सर्ववेदेतिहासानां सारं सारं समुद्धृतम् ।
स तु संश्रावयामास महाराजं परीक्षितम् ॥४२॥

पदच्छेद—

सर्व वेद इतिहासानाम् , सारम् सारम् समुद्धृतम् ।
सः तु संश्रावयामास, महाराजम् परीक्षितम् ॥

शब्दार्थ—

सर्व वेद	४. चारों वेद और	सः तु	१.	शुकदेव जी ने
इतिहासानाम्	५. इतिहासों की	संश्रावयामास	८.	(विधिवत्) सुनाया था
सारम् सारम्	६. सार वस्तु	महाराजम्	२.	महाराज
समुद्धृतम् ।	७. संकलित कर (इस पुराण को)	परीक्षितम् ॥	३.	परीक्षित् को

श्लोकार्थ—शुकदेव जी ने महाराज परीक्षित् को चारों वेद और इतिहासों की सार वस्तु संकलित कर इस पुराण को विधिवत् सुनाया था ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

प्रायोपविष्टं गङ्गायां परीतं परमर्षिभिः ।
कृष्णे स्वधामोपगते धर्मज्ञानादिभिः सह ॥४३॥

पदच्छेद—

प्रायोपविष्टम् गङ्गायाम्, परीतम् परमर्षिभिः ।
कृष्णे स्वधाम उपगते, धर्म ज्ञान आदिभिः सह ॥

शब्दार्थ—

प्रायोपविष्टम्	९. आमरण अनशन में बैठे थे	**स्वधाम**	४. गोलोक धाम
गङ्गायाम्	६. गंगा के तट पर	**उपगते**	५. पधार जाने पर
परीतम्	८. घिरे हुए (राजा परीक्षित्)	**धर्म ज्ञान**	१. धर्म ज्ञान
परमर्षिभिः ।	७. ऋषि-महर्षियों से	**आदिभिः सह ॥**	२. भक्ति और वैराग्य आदि के साथ
कृष्णे	३. श्रीकृष्ण के		

श्लोकार्थ—धर्म, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य आदि के साथ श्रीकृष्ण के गोलोक धाम पधार जाने पर गंगा के तट पर ऋषि-महर्षियों से घिरे हुये राजा परीक्षित् आमरण अनशन में बैठे थे ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

कलौ नष्टदृशामेष पुराणार्कोऽधुनोदितः ।
तत्र कीर्तयतो विप्रा विप्रर्षेर्भूरितेजसः ॥४४॥

पदच्छेद—

कलौ नष्ट दृशाम् एषः, पुराण अर्कः अधुना उदितः ।
तत्र कीर्तयतः विप्राः, विप्रर्षेः भूरि तेजसः ॥

शब्दार्थ—

कलौ	१. कलियुग में	**उदितः ।**	८. उग गया है
नष्ट	२. समाप्त हो गई है	**तत्र**	१३. गंगा तट पर
दृशाम्	३. दृष्टि जिनकी (ऐसे व्यक्तियों के लिये)	**कीर्तयतः**	१४. भागवत कथा कहते रहने पर (मैं भी वहाँ बैठा था)
एषः	४. यह	**विप्राः**	९. हे शौनकादि ऋषियों !
पुराण	५. पुराण रूपी	**विप्रर्षेः**	१०. महर्षि व्यास के
अर्कः	६. सूर्य	**भूरि**	११. अधिक
अधुना	७. अब	**तेजसः ॥**	१२. तेजस्वी (पुत्र शुकदेव जी के)

श्लोकार्थ—कलियुग में समाप्त हो गई है दृष्टि जिनकी, ऐसे व्यक्तियों के लिये यह पुराणरूपी सूर्य अब उग गया है । हे शौनकादि ऋषियों ! महर्षि व्यास के अधिक तेजस्वी पुत्र शुकदेव जी के गंगातट पर भागवत कथा कहते रहने पर मैं भी वहाँ बैठा था ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

अहं चाध्यगमं तत्र निविष्टस्तदनुग्रहात् ।
सोऽहं वः श्रावयिष्यामि यथाधीतं यथामति ॥४५॥

पदच्छेद—

अहम् च अध्यगमम् तत्र, निविष्टः तद् अनुग्रहात् ।
सः अहम् वः श्रावयिष्यामि, यथा अधीतम् यथा मति ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. मैं	अहम्	९. मैं
च	४. और	वः	१४. आप लोगों को (श्रीमद्भागवत)
अध्यगमम्	३. पहुँचा	श्रावयिष्यामि	१५. सुनाऊँगा
तत्र	२. वहाँ (गंगा तट पर)	यथा	११. तथा
निविष्टः	७. बैठ गया	अधीतम्	१०. अध्ययन के
तद्	५. उन (शुकदेव जी) की	यथा	१३. अनुसार
अनुग्रहात् ।	६. कृपा से	मति ॥	१२. बुद्धि के
सः	८. वही		

श्लोकार्थ—मैं वहाँ गंगा तट पर पहुँचा और उन शुकदेव जी की कृपा से बैठ गया। वही मैं अध्ययन के तथा बुद्धि के अनुसार आप लोगों को श्रीमद्भागवत सुनाऊँगा।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथम-
स्कन्धे नैमिषीयोपाख्याने तृतीयः अध्यायः ॥३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ चतुर्थः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

व्यास उवाच— इति ब्रुवाणं संस्तूय मुनीनां दीर्घसत्रिणाम् ।
वृद्धः कुलपतिः सूतं बह्वृचः शौनकोऽब्रवीत् ॥१॥

पदच्छेद—

इति ब्रुवाणम् संस्तूय, मुनीनाम् दीर्घ सत्रिणाम् ।
वृद्धः कुलपतिः सूतम् , बह्वृचः शौनकः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	८.	पूर्वोक्त प्रकार से	वृद्धः	४.	वयोवृद्ध
ब्रुवाणम्	९.	बोलते हुये	कुलपतिः	६.	आचार्य
संस्तूय	११.	स्तुति करके	सूतम्	१०.	सूत जी की
मुनीनाम्	३.	मुनियों में	बह्वृचः	५.	ऋग्वेदी
दीर्घ	१.	लम्बे समय तक	शौनकः	७.	शौनक जी ने
सत्रिणाम् ।	२.	यज्ञ करने वाले	अब्रवीत् ॥	१२.	(उनसे) कहा

श्लोकार्थ—लम्बे समय तक यज्ञ करने वाले मुनियों में वयोवृद्ध ऋग्वेदी आचार्य शौनक जी ने पूर्वोक्त प्रकार से बोलते हुये सूत जी की स्तुति करके उनसे कहा ।

द्वितीयः श्लोकः

शौनक उवाच— सूत सूत महाभाग वद नो वदतां वर ।
कथां भागवतीं पुण्यां यदाह भगवाञ्छुकः ॥२॥

पदच्छेद—

सूत सूत महाभाग, वद नः वदताम् वर ।
कथाम् भागवतीम् पुण्याम् , यद् आह भगवान् शुकः ॥

शब्दार्थ—

सूत सूत	४.	हे सूत जी ! (आप)	कथाम्	८.	कथा को
महाभाग	३.	बड़भागी	भागवतीम्	६.	भगवान् की (उस)
वद	९.	सुनावें	पुण्याम्	७.	पुण्यमयी
नः	५.	हमें	यद्	१०.	जिसे
वदताम्	१.	वक्ताओं में	आह	१२.	कहा था
वर ।	२.	श्रेष्ठ	भगवान्, शुकः ॥	११.	भगवान्, शुकदेव जी ने

श्लोकार्थ—वक्ताओं में श्रेष्ठ, बड़भागी हे सूत जी ! आप हमें भगवान् की उस पुण्यमयी कथा को सुनावें जिसे भगवान् शुकदेव जी ने कहा था ।

तृतीयः श्लोकः

कस्मिन् युगे प्रवृत्तेयं स्थाने वा केन हेतुना ।
कुतः संचोदितः कृष्णः कृतवान् संहितां मुनिः ॥३॥

पदच्छेद—

कस्मिन् युगे प्रवृत्ता इयम् , स्थाने वा केन हेतुना ।
कुतः संचोदितः कृष्णः, कृतवान् संहिताम् मुनिः ॥

शब्दार्थ—

कस्मिन्	१.	किस	हेतुना ।	६.	कारण से
युगे	२.	युग में	कुतः	९.	(तथा) किससे
प्रवृत्ता	८.	प्रारम्भ हुई	संचोदितः	१०.	प्रेरित होकर
इयम्	७.	यह (कथा)	कृष्णः	११.	वेद व्यास
स्थाने	३.	किस स्थान पर	कृतवान्	१४.	रचना की थी
वा	४.	अथवा	संहिताम्	१३.	(भागवत) संहिता की
केन	५.	किस	मुनिः ॥	१२.	मुनि ने

श्लोकार्थ—किस युग में किस स्थान पर अथवा किस कारण से यह कथा प्रारम्भ हुई तथा किससे प्रेरित होकर वेदव्यास मुनि ने भागवत संहिता की रचना की थी ।

चतुर्थः श्लोकः

तस्य पुत्रो महायोगी समदृङ् निर्विकल्पकः ।
एकान्तमतिरुन्निद्रो गूढो मूढ इवेयते ॥४॥

पदच्छेद—

तस्य पुत्रः महायोगी, समदृक् निर्विकल्पकः ।
एकान्त मतिः उन्निद्रः, गूढः मूढः इव ईयते ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनके	मतिः	७.	ब्रह्म में स्थित रहने वाले (ब्रह्मनिष्ठ)
पुत्रः	२.	पुत्र (शुकदेव जी)	उन्निद्रः	८.	संसार से सावधान
महायोगी	३.	महान् योगी	गूढः	९.	एकान्त सेवी (तथा)
समदृक्	४.	समान दृष्टि वाले	मूढः	१०.	मूर्ख की
निर्विकल्पकः ।	५.	भेद-भाव रहित	इव	११.	भाँति
एकान्त	६.	एकमात्र	ईयते ॥	१२.	चेष्टायें करते हुये से प्रतीत होते हैं

श्लोकार्थ—उनके पुत्र शुकदेव जी महान् योगी, समान दृष्टि वाले, भेद-भाव रहित, एकमात्र ब्रह्म में स्थित रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ, संसार से सावधान, एकान्त सेवी तथा मूर्ख की भाँति चेष्टायें करते हुए से प्रतीत होते हैं ।

पञ्चमः श्लोकः

दृष्ट्वानुयान्तमृषिमात्मजमप्यनग्नं, देव्यो ह्रिया परिदधुर्न सुतस्य चित्रम्।
तद्वीक्ष्य पृच्छति मुनौ जगदुस्तवास्ति, स्त्रीपुम्भिदा न तु सुतस्य विविक्तदृष्टेः ॥५॥

पदच्छेद—

दृष्ट्वा अनुयान्तम् ऋषिम् आत्मजम् अपि अनग्नम्, देव्यः ह्रिया परिदधुः न सुतस्य चित्रम्।
तद् वीक्ष्य पृच्छति मुनौ जगदुः तव अस्ति, स्त्री पुम् भिदा न तु सुतस्य विविक्त दृष्टेः॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	५. देखकर	पृच्छति	१३. पूछने पर (देवियों ने)
अनुयान्तम्	२. पीछे-पीछे आते हुए	मुनौ	१२. वेदव्यास मुनि के
ऋषिम्	४. वेदव्यास ऋषि को	जगदुः	१४. उत्तर दिया
आत्मजम्,	१. (नंगे) पुत्र शुकदेव जी के	तव	१५. आपको
अपि, अनग्नम्,	३. भी, वस्त्र पहने रहने पर	अस्ति,	१७. है
देव्यः, ह्रिया	६. देवियों ने, लज्जा से	स्त्री, पुम्, भिदा	१६. स्त्री और पुरुष का, भेद-ज्ञान
परिदधुः	७. वस्त्र पहन लिया (किन्तु)	न	२२. नहीं है
न	९. (देखकर) नहीं	तु	१८. किन्तु
सुतस्य	८. पुत्र शुकदेव जी को	सुतस्य	१९. (आपके) पुत्र शुकदेवजी की
चित्रम्।	१०. (यह) आश्चर्य (है)	विविक्त	२०. निर्मल
तद्, वीक्ष्य	११. उसे, देखकर	दृष्टेः॥	२१. दृष्टि में (यह भेद)

श्लोकार्थ—नंगे पुत्र शुकदेव जी के पीछे-पीछे आते हुए, वस्त्र पहने रहने पर भी वेदव्यास ऋषि को देखकर देवियों ने लज्जा से वस्त्र पहन लिया, किन्तु शुकदेव जी को देखकर नहीं, यह आश्चर्य है। उसे देखकर वेदव्यास मुनि के पूछने पर देवियों ने उत्तर दिया—आपको स्त्री और पुरुष का भेद-ज्ञान है, किन्तु आपके पुत्र शुकदेव जी की निर्मल दृष्टि में यह भेद नहीं है।

षष्ठः श्लोकः

कथमालक्षितः पौरैः सम्प्राप्तः कुरुजाङ्गलान्।
उन्मत्तमूकजडवद्विचरन् गजसाह्वये ॥६॥

पदच्छेद— कथम् आलक्षितः पौरैः, सम्प्राप्तः कुरुजाङ्गलान्।
उन्मत्त मूक जडवत्, विचरन् गजसाह्वये॥

शब्दार्थ—

कथम्, आलक्षितः	८. कैसे, पहिचाने गये	उन्मत्त, मूक	४. पागल, गूंगे (और)
पौरैः	७. पुरवासियों के द्वारा	जडवत्	५. मूर्ख की भाँति
सम्प्राप्तः	२. पहुँचे हुए (तथा)	विचरन्	६. विचरते हुये (शुकदेव जी)
कुरुजाङ्गलान्।	१. दिल्ली के पच्छिम प्रदेश में	गजसाह्वये॥	३. हस्तिनापुर में

श्लोकार्थ—दिल्ली के पच्छिम प्रदेश में पहुँचे हुये तथा हस्तिनापुर में पागल, गूंगे और मूर्ख की भाँति विचरते हुये शुकदेव जी पुरवासियों के द्वारा कैसे पहिचाने गये।

सप्तमः श्लोकः

कथं वा पाण्डवेयस्य राजर्षेर्मुनिना सह ।
संवादः समभूत्तात यत्रैषा सात्वती श्रुतिः ॥७॥

पदच्छेद—

कथम् वा पाण्डवेयस्य, राजर्षेः मुनिना सह ।
संवादः समभूत् तात, यत्र एषा सात्वती श्रुतिः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	७.	कैसे	समभूत्	९.	सम्भव हुआ
वा	१.	और	तात	२.	हे तात !
पाण्डवेयस्य	४.	पाण्डव नन्दन (परीक्षित्) का	यत्र	१०.	जहाँ पर
राजर्षेः	३.	राजर्षि	एषा	१२.	इस (भागवत पुराण का)
मुनिना	५.	शुकदेव मुनि के	सात्वती	११.	भक्तों से सम्बन्धित
सह ।	६.	साथ	श्रुतिः ॥	१३.	श्रवण सम्पन्न हुआ था
संवादः	८.	वार्तालाप			

श्लोकार्थ—और हे तात ! राजर्षि पाण्डव नन्दन परीक्षित् का शुकदेव मुनि के साथ कैसे वार्तालाप सम्भव हुआ; जहाँ पर भक्तों से सम्बन्धित इस भागवत पुराण का श्रवण सम्पन्न हुआ था ।

अष्टमः श्लोकः

स गोदोहनमात्रं हि गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
अवेक्षते महाभागस्तीर्थीकुर्वंस्तदाश्रमम् ॥८॥

पदच्छेद—

सः गोदोहन मात्रम् हि, गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
अवेक्षते महाभागः, तीर्थी कुर्वन् तद् आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वे	अवेक्षते	१२.	ठहरते हैं
गोदोहन	५.	एक गाय के दूहने	महाभागः	२.	महाभाग (शुकदेव जी)
मात्रम्	६.	जितने समय तक	तीर्थी	१०.	पवित्र
हि	७.	ही	कुर्वन्	११.	करते हुये
गृहेषु	४.	घरों में	तद्	८.	उनके
गृहमेधिनाम् ।	३.	गृहस्थों के	आश्रमम् ॥	९.	घरों को

श्लोकार्थ—वे महाभाग शुकदेव जी गृहस्थों के घरों में एक गाय के दूहने जितने समय तक ही उनके घरों को पवित्र करते हुये ठहरते हैं ।

नवमः श्लोकः

अभिमन्युसुतं सूत प्राहुर्भागवतोत्तमम् ।
तस्य जन्म महाश्चर्यं कर्माणि च गृणीहि नः ॥९॥

पदच्छेद—

अभिमन्यु सुतम् सूत, प्राहुः भागवत उत्तमम् ।
तस्य जन्म महत् आश्चर्यम्, कर्माणि च गृणीहि नः ॥

शब्दार्थ—

अभिमन्यु	२.	अभिमन्यु के	जन्म	९.	जन्म
सुतम्	३.	पुत्र (परीक्षित्) को	महत् आश्चर्यम्	८.	बड़े विचित्र
सूत	१.	हे सूत जी !	कर्माणि	११.	कार्यों को
प्राहुः	६.	कहा गया है	च	१०.	और
भागवत	४.	भगवद् भक्तों में	गृणीहि	१३.	बताइये
उत्तमम् ।	५.	श्रेष्ठ	नः ॥	१२.	(आप) हमें
तस्य	७.	उनके			

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित् को भगवद् भक्तों में श्रेष्ठ कहा गया है । उनके बड़े विचित्र जन्म और कार्यों को हमें बताइये ।

दशमः श्लोकः

स सम्राट् कस्य वा हेतोः पाण्डूनां मानवर्धनः ।
प्रायोपविष्टो गङ्गायामनादृत्याधिराट्श्रियम् ॥१०॥

पदच्छेद—

सः सम्राट् कस्य वा हेतोः, पाण्डूनाम् मान वर्धनः ।
प्रायोपविष्टः गङ्गायाम्, अनादृत्य अधिराट् श्रियम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वे	मान वर्धनः ।	३.	सम्मान को बढ़ाने वाले
सम्राट्	५.	सम्राट् परीक्षित्	प्रायोपविष्टः	१२.	आमरण अनशन में बैठे थे
कस्य	६.	किस	गङ्गायाम्	११.	गङ्गा के तट पर
वा	१.	तथा	अनादृत्य	१०.	अनादर करके
हेतोः	७.	कारण से	अधिराट्	८.	सम्राज्य की
पाण्डूनाम्	२.	पाण्डवों के	श्रियम् ॥	९.	लक्ष्मी का

श्लोकार्थ—तथा पाण्डवों के सम्मान को बढ़ाने वाले वे सम्राट् परीक्षित् किस कारण से सम्राज्य की लक्ष्मी का अनादर करके गङ्गा के तट पर आमरण अनशन में बैठे थे ।

एकादशः श्लोकः

नमन्ति यत्पादनिकेतमात्मनः, शिवाय हानीय धनानि शत्रवः ।
कथं स वीरः श्रियमङ्ग दुस्त्यजाम्, युवैषतोत्स्रष्टुमहो सहासुभिः ॥११॥

पदच्छेद— **नमन्ति यत् पाद निकेतम् आत्मनः, शिवाय हानीय धनानि शत्रवः ।**
कथम् सः वीरः श्रियम् अङ्ग दुस्त्यजाम्, युवा ऐषत उत्स्रष्टुम् अहो सह असुभिः ॥

शब्दार्थ—

नमन्ति	८. प्रणाम करते थे	**श्रियम्**	१२. राज्य लक्ष्मी को (अपने)
यत्, पाद, निकेतम्	७. जिनके चरणों की, चौकी को	**अङ्ग**	१. हे तात !
आत्मनः, शिवाय	४. अपने, कल्याण के लिये	**दुस्त्यजाम्**	११. जिसे छोड़ा न जा सके, उस
हानीय	६. समर्पित करके	**युवा**	१०. युवक ने
धनानि	५. बहुत-साधन	**ऐषत**	१६. इच्छा की थी
शत्रवः ।	३. शत्रुगण	**उत्स्रष्टुम्**	१४. छोड़ने की
कथम्	१५. क्यों	**अहो**	२. आश्चर्य है
सः वीर	९. उस महाबली	**सह, असुभिः ॥**	१३. प्राणों के साथ

श्लोकार्थ—हे तात ! आश्चर्य है, शत्रुगण अपने कल्याण के लिये बहुत सा-धन समर्पित करके जिनके चरणों की चौकी को प्रणाम करते थे, उस महाबली युवक ने, जिसे छोड़ा न जा सके, उस राज्य लक्ष्मी को अपने प्राणों के साथ छोड़ने की क्यों इच्छा की थी।

द्वादशः श्लोकः

शिवाय लोकस्य भवाय भूतये, य उत्तमश्लोकपरायणा जनाः ।
जीवन्ति नात्मार्थमसौ पराश्रयं, मुमोच निर्विद्य कुतः कलेवरम् ॥१२॥

पदच्छेद— **शिवाय लोकस्य भवाय भूतये, ये उत्तम श्लोक परायणाः जनाः ।**
जीवन्ति न आत्मार्थम् असौ पराश्रयम्, मुमोच निर्विद्य कुतः कलेवरम् ॥

शब्दार्थ—

शिवाय	६. मङ्गल	**जीवन्ति**	९. जीते हैं
लोकस्य	५. संसार के	**न**	११. नहीं (जीते अतः)
भवाय	७. उन्नति (और)	**आत्मार्थम्**	१०. स्वार्थवश
भूतये,	८. समृद्धि के लिये	**असौ**	१२. वे (राजा परीक्षित्)
ये	१. जो	**पराश्रयम्**	१३. दूसरों के उपकारक
उत्तम लोक	३. पुण्य कीर्ति (भगवान् में)	**मुमोच**	१६. त्याग दिये थे
परायणाः	४. तत्पर (हैं वे)	**निर्विद्य, कुतः**	१५. वैराग्य के द्वारा क्यों
जनाः ।	२. मनुष्य	**कलेवरम् ॥**	१४. अपने शरीर को

श्लोकार्थ—जो मनुष्य पुण्य कीर्ति भगवान् में तत्पर हैं, वे संसार के मङ्गल, उन्नति और समृद्धि के लिये जीते हैं, स्वार्थवश नहीं जीते । अतः वे राजा परीक्षित् दूसरों के उपकारक अपने शरीर को वैराग्य के द्वारा क्यों त्याग दिये थे ।

त्रयोदशः श्लोकः

तत्सर्वं नः समाचक्ष्व पृष्टो यदिह किंचन।
मन्ये त्वां विषये वाचां स्नातमन्यत्र छान्दसात् ॥१३॥

पदच्छेद—

तत् सर्वम् नः समाचक्ष्व, पृष्टः यद् इह किंचन।
मन्ये त्वाम् विषये वाचाम्, स्नातम् अन्यत्र छान्दसात् ॥

शब्दार्थ—

तत्	५.	वह	**मन्ये**	१४.	मानता हूँ
सर्वम्	६.	सब	**त्वाम्**	१२.	(मैं) आपको
नः, समाचक्ष्व	७.	हमें, सुनाइये	**विषये**	११.	विषय शास्त्रों में
पृष्टः	४.	पूछा गया है,	**वाचाम्**	१०.	वाणी के
यद्	२.	जो	**स्नातम्**	१३.	उच्चकोटि का विद्वान्
इह	१.	इस समय	**अन्यत्र**	९.	अतिरिक्त
किंचन।	३.	कुछ	**छान्दसात् ॥**	८.	वेद से

श्लोकार्थ—इस समय जो कुछ पूछा गया है, वह सब हमें सुनाइये। वेद से अतिरिक्त वाणी के विषय शास्त्रों में मैं आपको उच्चकोटि का विद्वान् मानता हूँ।

चतुर्दशः श्लोकः

सूत उवाच—

द्वापरे समनुप्राप्ते तृतीये युगपर्यये।
जातः पराशराद्योगी वासव्यां कलया हरेः ॥१४॥

पदच्छेद—

द्वापरे समनुप्राप्ते, तृतीये युग पर्यये।
जातः पराशरात् योगी, वासव्याम् कलया हरेः ॥

शब्दार्थ—

द्वापरे	४.	द्वापर के	**जातः**	११.	उत्पन्न हुये थे
समनुप्राप्ते	५.	आ जाने पर	**पराशरात्**	६.	महर्षि पराशर से
तृतीये	१.	तीसरे	**योगी**	१०.	योगिराज वेदव्यास
युग	२.	युग के	**वासव्याम्**	७.	वासवी के गर्भ में
पर्यये।	३.	परिवर्तन स्वरूप	**कलया**	९.	कला के द्वारा
			हरेः ॥	८.	भगवान् विष्णु की

श्लोकार्थ—तीसरे युग के परिवर्तन स्वरूप द्वापर के आ जाने पर महर्षि पराशर से वासवी के गर्भ में भगवाम् विष्णु की कला के द्वारा योगिराज वेदव्यास उत्पन्न हुये थे।

पञ्चदशः श्लोकः

स कदाचित्सरस्वत्या उपस्पृश्य जलं शुचि ।
विविक्तदेश आसीन उदिते रविमण्डले ॥१५॥

पदच्छेद—

सः कदाचित् सरस्वत्याः, उपस्पृश्य जलम् शुचि ।
विविक्त देशे आसीनः, उदिते रवि मण्डले ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे		विविक्त	१०. एकान्त
कदाचित्	२. एक समय		देशे	११. स्थान पर
सरस्वत्याः	६. सरस्वती नदी के		आसीनः	१२. बैठे थे
उपस्पृश्य	९. स्नानादि क्रिया करके		उदिते	५. उदय हो जाने पर
जलम्	८. जल में		रवि	३. सूर्य
शुचि ।	७. पवित्र		मण्डले ॥	४. मण्डल का

श्लोकार्थ—वे एक समय सूर्य मण्डल का उदय हो जाने पर सरस्वती नदी के पवित्र जल में स्नानादि क्रिया करके एकान्त स्थान पर बैठे थे ।

षोडशः श्लोकः

परावरज्ञः स ऋषिः कालेनाव्यक्त रंहसा ।
युगधर्म व्यतिकरं प्राप्तं भुवि युगे युगे ॥१६॥

पदच्छेद—

पर अवरज्ञः सः ऋषिः, कालेन अव्यक्त रंहसा ।
युग धर्म व्यतिकरम् , प्राप्तम् भुवि युगे युगे ॥

शब्दार्थ—

पर अवरज्ञः	१. भूत-भविष्य के ज्ञाता		युग धर्म	११. युग के धर्म की
सः	२. वे		व्यतिकरम्	१२. मिलावट को (देखकर सोचने लगे)
ऋषिः	३. महर्षि वेदव्यास		प्राप्तम्	१०. लायी हुई
कालेन	९. काल के द्वारा		भुवि	४. मृत्यु लोक में
अव्यक्त	७. सूक्ष्म		युगे	५. प्रत्येक
रंहसा ।	८. गतिवाले		युगे ॥	६. युग में

श्लोकार्थ—भूत-भविष्य के ज्ञाता वे महर्षि वेदव्यास मृत्युलोक में प्रत्येक युग में सूक्ष्म गतिवाले काल के द्वारा लायी हुई युग के धर्म की मिलावट को देखकर सोचने लगे ।

सप्तदशः श्लोकः

भौतिकानां च भावानां शक्तिह्रासं च तत्कृतम् ।
अश्रद्दधानान्निःसत्त्वान् दुर्मेधान् ह्रसितायुषः ॥१७॥

पदच्छेद—

भौतिकानाम् च भावानाम्, शक्ति ह्रासम् च तत् कृतम् ।
अश्रद्दधानान् निःसत्त्वान्, दुर्मेधान् ह्रसित आयुषः ॥

शब्दार्थ—

भौतिकानाम्	२.	भौतिक	**अश्रद्दधानान्**	६.	अश्रद्धालु
च	५.	और	**निःसत्त्वान्**	७.	निर्बल
भावानाम्	३.	पदार्थों की	**दुर्मेधान्**	८.	दुष्ट बुद्धि
शक्ति ह्रासम्	४.	शक्ति हीनता को	**ह्रसित**	१०.	अल्प
च	९.	तथा	**आयुषः ॥**	११.	आयु वाले (मनुष्यों को देखा)
तत् कृतम् ॥	१.	(उन्होंने) काल से की हुई			

श्लोकार्थ—उन्होंने काल से की हुई भौतिक पदार्थों की शक्ति हीनता को और अश्रद्धालु, निर्बल, दुष्ट बुद्धि तथा अल्प आयु वाले मनुष्यों को देखा ।

अष्टादशः श्लोकः

दुर्भगांश्च जनान् वीक्ष्य मुनिर्दिव्येन चक्षुषा ।
सर्ववर्णाश्रमाणां यद्दध्यौ हितममोघदृक् ॥१८॥

पदच्छेद—

दुर्भगान् च जनान् वीक्ष्य, मुनिः दिव्येन चक्षुषा ।
सर्व वर्ण आश्रमाणाम् यद्, दध्यौ हितम् अमोघ दृक् ॥

शब्दार्थ—

दुर्भगान्	२.	भाग्यहीन	**सर्व वर्ण**	१०.	चारों वर्ण (और)
च	१.	तथा	**आश्रमाणाम्**	११.	चारों आश्रमों के लिये
जनान्	३.	मनुष्यों को	**यद्**	१२.	जो
वीक्ष्य	४.	देखकर	**दध्यौ**	१४.	ध्यान किया
मुनिः	७.	वेदव्यास ऋषि ने	**हितम्**	१३.	हितकारी था, (उसका)
दिव्येन	८.	अलौकिक	**अमोघ**	५.	अचूक
चक्षुषा ।	९.	दृष्टि से	**दृक् ॥**	६.	दृष्टि वाले

श्लोकार्थ—तथा भाग्यहीन मनुष्यों को देखकर अचूक दृष्टि वाले वेदव्यास ऋषि ने आलौकिक दृष्टि से चारों वर्ण और चारों आश्रमों के लिये जो हितकारी था, उसका ध्यान किया ।

एकोनविंशः श्लोकः

चातुर्होत्रं कर्म शुद्धं प्रजानां वीक्ष्य वैदिकम् ।
व्यदधाद् यज्ञसन्तत्यै वेदमेकं चतुर्विधम् ॥१९॥

पदच्छेद—

चातुर्होत्रम् कर्म शुद्धम् , प्रजानाम् वीक्ष्य वैदिकम् ।
व्यदधात् यज्ञ सन्तत्यै, वेदम् एकम् चतुर्विधम् ॥

शब्दार्थ—

चातुर्होत्रम्	२. अग्निष्टोम (इत्यादि हवन)	व्यदधात्	१२. विभक्त किया
कर्म	३. कर्म को	यज्ञ	७. यज्ञ के
शुद्धम्	५. पवित्र	सन्तत्यै	८. विस्तार के लिये
प्रजानाम्	४. प्रजा के लिये	वेदम्	१०. वेद को
वीक्ष्य	६. जानकर (उन्होंने)	एकम्	९. एक
वैदिकम् ।	१. वेद विहित	चतुर्विधम् ॥	११. चार भागों में

श्लोकार्थ—वेद विहित अग्निष्टोम इत्यादि हवन कर्म को प्रजा के लिये पवित्र जानकर उन्होंने यज्ञ के विस्तार के लिये एक वेद को चार भागों में विभक्त किया ।

विंशः श्लोकः

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः ।
इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते ॥२०॥

पदच्छेद—

ऋग् यजुः सामन् अथर्वन् आख्याः, वेदाः चत्वारः उद्धृताः ।
इतिहास पुराणम् च, पञ्चमः वेदः उच्यते ॥

शब्दार्थ—

ऋग्	१. ऋग्वेद	उद्धृताः ।	८. विभाग (किये)
यजुः	२. यजुर्वेद	इतिहास	१०. (महाभारत इत्यादि) इतिहास (एवम्)
सामन्	३. सामवेद (और)	पुराणम्	११. पुराण को
अथर्वन्	४. अथर्ववेद	च	९. तथा
आख्याः	५. नाम से	पञ्चमः	१२. पाँचवाँ
वेदाः	६. वेद के	वेदः	१३. वेद
चत्वारः	७. चार	उच्यते ॥	१४. कहते हैं

श्लोकार्थ—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद नाम से वेद के चार विभाग किये । तथा महाभारत इत्यादि इतिहास एवं पुराण को पाँचवाँ वेद कहते हैं ।

एकविंशः श्लोकः

तत्रर्ग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः ।
वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत ॥२१॥

पदच्छेद—

तत्र ऋग्वेद धरः पैलः, सामगः जैमिनिः कविः ।
वैशम्पायनः एव एकः, निष्णातः यजुषाम् उत ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	उन चारों वेदों में से	**वैशम्पायनः**	९.	महर्षि वैशम्पायन
ऋग्वेद	२.	ऋग्वेद के	**एव**	१०.	ही
धरः	३.	प्रथम ज्ञाता	**एकः**	१२.	प्रथम
पैलः	४.	पैल ऋषि (और)	**निष्णातः**	१३.	जानकार (हुये थे)
सामगः	५.	सामवेद के	**यजुषाम्**	११.	यजुर्वेद के
जैमिनिः	६.	जैमिनि	**उत ॥**	८.	तथा
कविः ।	७.	महर्षि (हुये)			

श्लोकार्थ—उन चारों वेदों में से ऋग्वेद के प्रथम ज्ञाता पैल ऋषि और सामवेद के जैमिनि महर्षि हुये तथा महर्षि वैशम्पायन ही यजुर्वेद के प्रथम जानकार हुये ।

द्वाविंशः श्लोकः

अथर्वाङ्गिरसामासीत्सुमन्तुर्दारुणो मुनिः ।
इतिहासपुराणानां पिता मे रोमहर्षणः ॥२२॥

पदच्छेद—

अथर्वाङ्गिरसाम् आसीत्, सुमन्तुः दारुणः मुनिः ।
इतिहास पुराणानाम्, पिता मे रोमहर्षणः ॥

शब्दार्थ—

अथर्वाङ्गिरसाम्	४.	अथर्ववेद के	**इतिहास**	६.	इतिहास (और)
आसीत्	५.	प्रथम ज्ञाता (थे)	**पुराणानाम्**	७.	पुराणों के (प्रथम ज्ञाता)
सुमन्तुः	२.	सुमन्तु	**पिता**	९.	पिता
दारुणः	१.	दारुण के पुत्र	**मे**	८.	मेरे
मुनिः ।	३.	मुनि	**रोमहर्षणः ॥**	१०.	रोमहर्षण थे

श्लोकार्थ—दारुण के पुत्र सुमन्त मुनि अथर्ववेद के प्रथम ज्ञाता थे । इतिहास और पुराणों के प्रथम ज्ञाता मेरे पिता रोमहर्षण थे ।

त्रयोविंशः श्लोकः

त एत ऋषयो वेदं स्वं स्वं व्यस्यन्ननेकधा ।
शिष्यैः प्रशिष्यैस्तच्छिष्यैर्वेदास्ते शाखिनोऽभवन् ॥२३॥

पदच्छेद—

ते एते ऋषयः वेदम् , स्वम् स्वम् व्यस्यन् अनेकधा ।
शिष्यैः प्रशिष्यैः तत् शिष्यैः, वेदाः ते शाखिनः अभवन् ॥

शब्दार्थ—

ते	२.	पूर्वोक्त	प्रशिष्यैः	९.	प्रशिष्यों (तथा)
एते	१.	इन	तत्	१०.	उनके
ऋषयः	३.	ऋषिगणों ने	शिष्यैः	११.	शिष्यों के द्वारा
वेदम्	५.	वेद का	वेदाः	१३.	वेद
स्वम्-स्वम्	४.	अपने-अपने	ते	१२.	वे
व्यस्यन्	७.	विभाग किया (तदनन्तर)	शाखिनः	१४.	अनेक शाखा वाले
अनेकधा ।	६.	अनेक रूपों में	अभवन् ॥	१५.	हो गये
शिष्यैः	८.	शिष्यों			

श्लोकार्थ—इन पूर्वोक्त ऋषिगणों ने अपने-अपने वेद का अनेक रूपों में विभाग किया । तदनन्तर शिष्यों प्रशिष्यों तथा उनके शिष्यों के द्वारा वे वेद अनेक शाखाओं वाले हो गये ।

चतुर्विंशः श्लोकः

त एव वेदा दुर्मेधैर्धार्यन्ते पुरुषैर्यथा ।
एवं चकार भगवान् व्यासः कृपणवत्सलः ॥२४॥

पदच्छेद—

ते एव वेदाः दुर्मेधैः, धार्यन्ते पुरुषैः यथा ।
एवम् चकार भगवान् , व्यासः कृपण वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

ते, एव	१.	वे, ही	एवम्	११.	(उनका) उसी प्रकार से
वेदाः	२.	चारों वेद	चकार	१२.	विभाग कर दिया
दुर्मेधैः	३.	अल्प स्मरण शक्ति वाले	भगवान्	९.	भगवान्
धार्यन्ते	६.	धारण किये जा सकें	व्यासः	१०.	वेदव्यास जी ने
पुरुषैः	४.	पुरुषों के द्वारा	कृपण	७.	मन्द बुद्धि जनों पर
यथा ।	५.	जिस प्रकार	वत्सलः ॥	८.	दया करके

श्लोकार्थ—वे ही चारों वेद अल्प स्मरण शक्ति वाले पुरुषों के द्वारा जिस प्रकार धारण किये जा सकें; मन्द बुद्धि जनों पर दया करके भगवान् वेदव्यास जी ने उनका उसी प्रकार विभाग कर दिया ।

पञ्चविंशः श्लोकः

स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा ।
कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेय एवं भवेदिह ।
इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिना कृतम् ॥२५॥

पदच्छेद— स्त्री शूद्र द्विज बन्धूनाम्, त्रयी न श्रुति गोचरा ।
कर्म श्रेयसि मूढानाम्, श्रेयः एवम् भवेत् इह ।
इति भारतम् आख्यानम्, कृपया मुनिना कृतम् ॥

शब्दार्थ—

स्त्री, शूद्र	१. स्त्री, शूद्र (और)	श्रेयः	१०. कल्याण
द्विज, बन्धूनाम्	२. पतित द्विजातियों के लिए	एवम्, भवेत्	११. किस प्रकार, होवे
त्रयी	३. चारों वेद	इह ।	९. इस संसार में
न	५. नहीं है (अतः)	इति	१२. ऐसा विचार कर
श्रुति गोचरा ।	४. अध्ययन के विषय	भारतम्, आख्यानम्	१५. महाभारत नामक इतिहास ग्रन्थ
कर्म	७. कर्म के विषय में	कृपया	१४. कृपा करके
श्रेयसि	६. कल्याणकारी	मुनिना	१३. वेदव्यास मुनि ने
मूढानाम्	८. अज्ञानी जनों का	कृतम् ॥	१६. बनाया

श्लोकार्थ—स्त्री, शूद्र और पतित द्विजातियों के लिये चारों वेद अध्ययन के विषय नहीं है । अतः कल्याणकारी कर्म के विषय में अज्ञानी जनों का इस संसार में कल्याण किस प्रकार होवे ? ऐसा विचार कर वेदव्यास मुनि ने कृपा करके महाभारत नामक इतिहास ग्रन्थ बनाया ।

षड्विंशः श्लोकः

एवं प्रवृत्तस्य सदा भूतानां श्रेयसि द्विजाः ।
सर्वात्मकेनापि यदा नातुष्यद्धृदयं ततः ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् प्रवृत्तस्य सदा, भूतानाम् श्रेयसि द्विजाः ।
सर्वात्मकेन अपि यदा, न अतुष्यत् हृदयम् ततः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	६. इस प्रकार के (ग्रन्थ की रचना में)	सर्वात्मकेन	५. पूरी शक्ति से
प्रवृत्तस्य	७. लगे रहने पर	अपि	८. भी
सदा	४. सर्वदा	यदा	९. जब (व्यास जी का)
भूतानाम्	२. प्राणियों के	न	१३. नहीं (हुआ)
श्रेयसि	३. कल्याण के लिये	अतुष्यत्	१२. सन्तुष्ट
द्विजाः ।	१. हे शौनकादि ऋषियों !	हृदयम्	१०. मन
		ततः ॥	११. उससे

श्लोकार्थ—हे शौनकादि ऋषियों ! प्राणियों के कल्याण के लिये सर्वदा पूरी शक्ति से इस प्रकार के ग्रन्थ की रचना में लगे रहने पर भी जब व्यास जी का मन उससे सन्तुष्ट नहीं हुआ ।

सप्तविंशः श्लोकः

नातिप्रसीदद्धृदयः सरस्वत्यास्तटे शुचौ ।
वितर्कयन् विविक्तस्थ इदं प्रोवाच धर्मवित् ॥२७॥

पदच्छेद—

न अति प्रसीदत् हृदयः, सरस्वत्याः तटे शुचौ ।
वितर्कयन् विविक्तस्थः, इदम् प्रोवाच धर्मवित् ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं (हुआ अतः)	शुचौ ।	६.	पवित्र
अति	२.	अधिक	वितर्कयन्	९.	विचार करते हुये
प्रसीदत्	३.	प्रसन्न	विविक्तस्थः	८.	एकान्त में बैठकर
हृदयः	१.	(तब उनका) हृदय	इदम्	११.	यह
सरस्वत्याः	५.	सरस्वती नदी के	प्रोवाच	१२.	बोले
तटे	७.	तट पर	धर्मवित्	१०.	धर्म वेत्ता (व्यास जी)

श्लोकार्थ—तब उनका हृदय अधिक प्रसन्न नहीं हुआ । अतः सरस्वती नदी के पवित्र तट पर एकान्त में बैठकर विचार करते हुये धर्म वेत्ता व्यास जी यह बोले ।

अष्टाविंशः श्लोकः

धृतव्रतेन हि मया छन्दांसि गुरवोऽग्नयः ।
मानिता निर्व्यलीकेन गृहीतं चानुशासनम् ॥२८॥

पदच्छेद—

धृतवृतेन हि मया, छन्दांसि गुरवः अग्नयः ।
मानिता निर्व्यलीकेन, गृहीतम् च अनुशासनम् ॥

शब्दार्थ—

धृत	३.	धारण करके	अग्नयः ।	७.	अग्निदेव का
व्रतेन	२.	ब्रह्मचर्यादि व्रत को	मानिता	८.	सम्मान किया (है)
हि	४.	ही	निर्व्यलीकेन	१०.	निष्कपट भाव से
मया	१.	मैंने	गृहीतम्	१२.	ग्रहण किया है
छन्दांसि	५.	चारों वेदों का	च	९.	तथा
गुरवः	६.	गुरु (और)	अनुशासनम् ॥	११.	(उनके) आदेश को

श्लोकार्थ—मैंने ब्रह्मचर्यादि व्रत धारण करके ही चारों वेदों का, गुरु और अग्निदेव का सम्मान किया है तथा निष्कपट भाव से उनके आदेश को ग्रहण किया है ।

एकोनविंशः श्लोकः

भारत व्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दर्शितः ।
दृश्यते यत्र धर्मादि स्त्रीशूद्रादिभिरप्युत ॥२९॥

पदच्छेद—

भारत व्यपदेशेन, हि आम्नाय अर्थः च दर्शितः ।
दृश्यते यत्र धर्मादि, स्त्री शूद्र आदिभिः अपि उत ॥

शब्दार्थ—

भारत	२. महाभारत ग्रन्थ के	**दृश्यते**	१४. जान सकें
व्यपदेशेन	३. बहाने से	**यत्र**	९. उस (महाभारत ग्रन्थ से)
हि	६. ही	**धर्म आदि**	१३. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को
आम्नाय	४. वेद के	**स्त्री**	१०. स्त्री
अर्थः	५. अर्थ को	**शूद्र, आदिभिः**	११. शूद्र इत्यादि जन
च	१. तथा (मैंने)	**अपि**	१२. भी
दर्शितः ।	७. दिखाया है	**उत ॥**	८. ताकि

श्लोकार्थ—तथा मैंने महाभारत ग्रन्थ के बहाने से वेद के अर्थ को ही दिखाया हैं, ताकि उस महाभारत ग्रन्थ से स्त्री, शूद्र इत्यादि जन भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जान सकें ।

त्रिंशः श्लोकः

तथापि बत मे दैह्यो ह्यात्मा चैवात्मना विभुः ।
असम्पन्न इवाभाति ब्रह्मवर्चस्यसत्तमः ॥३०॥

पदच्छेद—

तथापि बत मे दैह्यः आत्मा च एव आत्मना विभुः ।
असम्पन्नः इव आभाति, ब्रह्म वर्चस्य सत्तमः ॥

शब्दार्थ—

तथा,पिबत	१. तो भी, खेद है (कि)	**आत्मना**	२. अपने स्वरूप से
मे	८. मेरी	**विभुः ।**	४. व्यापक
दैह्यः	९. शारीरिक	**असम्पन्नः**	११. अपूर्ण-काम
हि	३. ही	**इव**	१२. सी
आत्मा	१०. जीवात्मा	**आभाति**	१४. प्रतीत हो रही है
च	५. तथा	**ब्रह्म वर्चस्य**	६. ब्रह्म तेज से
एव	१३. ही	**सत्तमः ॥**	७. परिपूर्ण

श्लोकार्थ—तो भी खेद है कि अपने स्वरूप से ही व्यापक तथा ब्रह्मतेज से परिपूर्ण मेरी शारीरिक जीवात्मा अपूर्ण-काम सी ही प्रतीत हो रही है ।

एकत्रिंशः श्लोकः

किं वा भागवता धर्मा न प्रायेण निरूपिताः ।
प्रियाः परमहंसानां त एव ह्यच्युतप्रियाः ॥३१॥

पदच्छेद—

किम् वा भागवताः धर्माः, न प्रायेण निरूपिताः ।
प्रियाः परमहंसानाम् , ते एव हि अच्युत प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

किम्	२.	क्या (मैंने)	प्रियाः	११.	प्रिय (हैं)
वा	१.	अथवा	परमहंसानाम्	१०.	परमहंसों को
भागवताः	३.	भगवत् सम्बन्धी	ते	८.	वे
धर्माः	४.	लीलाओं का	एव	१२.	तथा
न	६.	नहीं	हि	९.	ही (लीलायें)
प्रायेण	५.	अधिकतर	अच्युत	१३.	भगवान् श्री कृष्ण को भी
निरूपिताः ।	७.	वर्णन किया है	प्रियाः ॥	१४.	प्रिय (हैं)

श्लोकार्थ—अथवा क्या मैंने भगवत् सम्बन्धी लीलाओं का अधिकतर वर्णन नहीं किया है ? वे ही लीलायें परम हंसों को प्रिय हैं तथा भगवान् श्री कृष्ण को भी प्रिय हैं ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

तस्यैवं खिलमात्मानं मन्यमानस्य खिद्यतः ।
कृष्णस्य नारदोऽभ्यागादाश्रमं प्रागुदाहृतम् ॥३२॥

पदच्छेद—

तस्य एवम् खिलम् आत्मानम् , मन्यमानस्य खिद्यतः ।
कृष्णस्य नारदः अभ्यागात्, आश्रमम् प्राग् उदाहृतम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	६.	उन	कृष्णस्य	७.	वेदव्यास जी के
एवम्	१.	इस प्रकार से	नारदः	११.	देवर्षि नारद जी
खिलम्	३.	अपूर्ण	अभ्यागात्	१२.	पधारे
आत्मानम्	२.	अपने को	आश्रमम्	१०.	आश्रम में
मन्यमानस्य	४.	मानते हुये (तथा)	प्राग्	८.	पहले
खिद्यतः ।	५.	खेद करते हुये	उदाहृतम् ॥	९.	बताये गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार से अपने को अपूर्ण मानते हुये तथा खेद करते हुये उन वेदव्यास जी के पहले बताये गये आश्रम में देवर्षि नारद जी पधारे ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तमभिज्ञाय सहसा प्रत्युत्थायागतं मुनिः ।
पूजयामास विधिवन्नारदं सुरपूजितम् ॥३३॥

पदच्छेद—

तम् अभिज्ञाय सहसा, प्रत्युत्थाय आगतम् मुनिः ।
पूजयामास विधिवत्, नारदम् सुर पूजितम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उन	**पूजयामास**	११.	पूजा की
अभिज्ञाय	७.	पहिचान कर	**विधिवत्**	१०.	विधि पूर्वक
सहसा	५.	अकस्मात्	**नारदम्**	४.	देवर्षि नारद जी को
प्रत्युत्थाय	९.	खड़े होकर (उनकी)	**सुर**	१.	देवताओं से
आगतम्	६.	आया हुआ	**पूजितम् ॥**	२.	पूजित
मुनिः ।	८.	वेदव्यास जी ने			

श्लोकार्थ—देवताओं से पूजित उन देवर्षि नारद जी को अकस्मात् आया हुआ पहिचान कर वेद व्यास जी ने खड़े होकर उनकी विधिवत् पूजा की ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
नैमिषीयोपाख्याने चतुर्थः अध्यायः ॥४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ पञ्चमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— अथ तं सुखमासीन उपासीनं बृहच्छ्रवाः ।

देवर्षिः प्राह विप्रर्षिं वीणापाणिः स्मयन्निव ॥१॥

पदच्छेद—

अथ तम् सुखम् आसीनः, उपासीनम् बृहत्श्रवाः ।

देवर्षिः प्राह विप्रर्षिम्, वीणा पाणिः स्मयन् इव ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	देवर्षिः	६.	देवर्षि नारद जी
तम्	८.	उन	प्राह	१२.	बोले
सुखम्	२.	सुखपूर्वक	विप्रर्षिम्	९.	महर्षि वेदव्यास जीसे
आसीनः	३.	बैठे हुये	वीणापाणिः	५.	हाथ में वीणा लिये हुये
उपासीनम्	७.	पास में बैठे हुये	स्मयन्	१०.	मुसकराते हुये
बृहत्श्रवाः ।	४.	बड़ी कीर्ति वाले (और)	इव ॥	११.	से

श्लोकार्थ—तदनन्तर सुखपूर्वक बैठे हुये, बड़ी कीर्ति वाले और हाथ में वीणा लिये देवर्षि नारदजी पास में बैठे हुये उन महर्षि वेदव्यास से मुसकराते हुये से बोले ।

द्वितीयः श्लोकः

नारद उवाच— पाराशर्य महाभाग भवतः कच्चिदात्मना ।

परितुष्यति शारीर आत्मा मानस एव वा ॥२॥

पदच्छेद—

पाराशर्य महाभाग, भवतः कच्चित् आत्मना ।

परितुष्यति शारीरः, आत्मा मानसः एव वा ॥

शब्दार्थ—

पाराशर्य	२.	पराशर पुत्र !	शारीरः	५.	शरीर में विद्यमान
महाभाग	१.	हे भाग्यशाली !	आत्मा	९.	जीवात्मा
भवतः	४.	आपके	मानसः	८.	अन्तःकरण विद्यमान
कच्चित्	३.	क्या	एव	७.	केवल
आत्मना ।	१०.	अपने (कर्म और चिन्तन) से	वा ॥	६.	अथवा
परितुष्यति	११.	सन्तुष्ट है			

श्लोकार्थ—हे भाग्यशाली पराशर पुत्र ! क्या आपके शरीर में विद्यमान अथवा केवल अन्तःकरण में विद्यमान जीवात्मा अपने कर्म और चिन्तन से सन्तुष्ट है ?

तृतीयः श्लोकः

जिज्ञासितं सुसम्पन्नमपि ते महदद्भुतम् ।
कृतवान् भारतं यस्त्वं सर्वार्थपरिबृंहितम् ॥३॥

पदच्छेद—

जिज्ञासितम् सुसम्पन्नम्, अपि ते महत् अद्भुतम् ।
कृतवान् भारतम् यः त्वम्, सर्वं अर्थं परिबृंहितम् ॥

शब्दार्थ—

जिज्ञासितम्	३. ज्ञान की इच्छा	कृतवान्	१२. बनाया है
सुसम्पन्नम्	४. परिपूर्ण हो गई है	भारतम्	११. महाभारत ग्रन्थ को
अपि	१. क्या	यः	५. क्योंकि
ते	२. आपके	त्वम्	६. आपने
महत्	६. महान्	सर्वं अर्थं	७. सभी अर्थों के कारण
अद्भुतम् ।	१०. आश्चर्यकारी	परिबृंहितम् ॥	८. परम विशाल (और)

श्लोकार्थ—क्या आपके ज्ञान की इच्छा परिपूर्ण हो गई है ? क्योंकि आपने सभी अर्थों के कारण परम विशाल और महान् आश्चर्यकारी महाभारत ग्रन्थ को बनाया है ।

चतुर्थः श्लोकः

जिज्ञासितमधीतं च यत्तद्ब्रह्म सनातनम् ।
अथापि शोचस्यात्मानमकृतार्थ इव प्रभो ॥४॥

पदच्छेद—

जिज्ञासितम् अधीतम् च, यद् तद् ब्रह्म सनातनम् ।
अथ अपि शोचसि आत्मानम्, अकृतार्थः इव प्रभो ॥

शब्दार्थ—

जिज्ञासितम्	६. विचार किया है	अथ	९. फिर
अधीतम्	८. जान भी लिया है	अपि	१०. भी
च	७. और	शोचसि	१४. शोक कर रहे हैं
यद्	२. जो	आत्मानम्	१३. अपने विषय में
तद्	५. उसके विषय में (आपने)	अकृतार्थः	११. असफल पुरुष की
ब्रह्म	४. परमात्मा (है)	इव	१२. भाँति (आप)
सनातनम् ।	३. सदा रहने वाला	प्रभो ॥	१. हे वेदव्यास जी !

श्लोकार्थ—हे वेदव्यास जी ! जो सदा रहने वाला परमात्मा है, उसके विषय में आपने विचार किया है और जान भी लिया है । फिर भी असफल पुरुष की भाँति आप अपने विषय में शोक कर रहे हैं ।

पञ्चमः श्लोकः

व्यास उवाच— अस्त्येव मे सर्वमिदं त्वयोक्तम्, तथापि नात्मा परितुष्यते मे ।
तन्मूलमव्यक्तमगाधबोधम्, पृच्छामहे त्वाऽऽत्मभवात्मभूतम् ॥५॥

पदच्छेद— अस्ति एव मे सर्वम् इदम् त्वया उक्तम्, तथापिन आत्मा परितुष्यते मे ।
तद् मूलम् अव्यक्तम् अगाध बोधम्, पृच्छामहे त्वा आत्मभव आत्मभूतम् ॥

शब्दार्थ—

अस्ति, एव	६.	उचित ही (है)	परितुष्यते	१०.	प्रसन्न हो रही है
मे	२.	मेरे विषय में	मे ।	८.	मेरी
सर्वम्	५.	सब कुछ	तद्मूलम्, अव्यक्तम्	११.	उसका, कारण, अज्ञात है
इदम्	४.	यह	अगाध, बोधम्	१२.	(अत:) अथाह, ज्ञान वाले
त्वया	१.	आपके द्वारा	पृच्छामहे	१६.	(मैं) पूछ रहा हूँ
उक्तम्,	३.	कहा गया	त्वा	१५.	आपसे
तथापि	७.	फिर भी	आत्मभव।	१३.	ब्रह्मा जी के
न, आत्मा	९.	नहीं, जीवात्मा	आत्मभूतम् ॥	१४.	मानस पुत्र

श्लोकार्थ—आपके द्वारा मेरे विषय में कहा गया यह सब कुछ उचित ही है, फिर भी मेरी जीवात्मा प्रसन्न नहीं हो रही है। उसका कारण अज्ञात है। अत: अथाह ज्ञान वाले, ब्रह्मा जी के मानस पुत्र आपसे मैं पूछता हूँ।

षष्ठः श्लोकः

स वै भवान् वेद समस्तगुह्यम्, उपासितो यत्पुरुषः पुराणः ।
परावरेशो मनसैव विश्वम्, सृजत्यवत्यत्ति गुणै रसङ्गः ॥६॥

पदच्छेद— सः वै भवान् वेद समस्त गुह्यम्, उपासितः यद् पुरुषः पुराणः ।
पर अवर ईशः मनसा एव विश्वम्, सृजति अवति अत्ति गुणैः असङ्गः ॥

शब्दार्थ—

सः वै, भवान्	१.	वही आप	पर, अवर	८.	पुरुष और प्रकृति के
वेद	३.	जानते हैं	ईशः	९.	स्वामी (भगवान्)
समस्त, गुह्यम्	२.	सम्पूर्ण, रहस्य को	मनसा, एव	११.	संकल्प मात्र से
उपासितः	७.	उपासना की है	विश्वम्, सृजति	१३.	जगत् का निर्माण
यत्	४.	क्योंकि, (आपने)	अवति, अत्ति	१४.	पालन और संहार करते हैं
पुरुषः	६.	परमात्मा की	गुणैः	१२.	तीनों गुणों के द्वारा
पुराणः।	५.	अनादि	असङ्गः ॥	१०.	स्वयं गुणों में अनासक्त होते हुए भी

श्लोकार्थ—वही आप सम्पूर्ण रहस्य को जानते हैं, क्योंकि आपने अनादि परमात्मा की उपासना की है। पुरुष और प्रकृति के स्वामी भगवान् स्वयं गुणों में अनासक्त होते हुये भी संकल्प मात्र से तीनों गुणों के द्वारा जगत् का निर्माण, पालन और संहार करते हैं।

सप्तमः श्लोकः

त्वं पर्यटन्नर्क इव त्रिलोकीम्, अन्तश्चरो वायुरिवात्मसाक्षी ।
परावरे ब्रह्मणि धर्मतो व्रतैः, स्नातस्य मे न्यूनमलं विचक्ष्व ॥७॥

पदच्छेद— त्वम् पर्यटन् अर्कः इव त्रिलोकीम्, अन्तः चरः वायुः इव आत्म साक्षी ।
पर अवरे ब्रह्मणि धर्मतः व्रतैः, स्नातस्य मे न्यूनम् अलम् विचक्ष्व ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	८. आप	पर	१२. परब्रह्म में
पर्यटन्	३. भ्रमण करने वाले (तथा)	अवरे ब्रह्मणि	११. शब्द ब्रह्म में (और)
अर्कः इव	१. सूर्य की भाँति	धर्मतः	९. नियम पूर्वक
त्रिलोकीम्,	२. त्रिलोकी में	व्रतैः	१०. योगानुष्ठान के द्वारा
अन्तः	५. अन्तःकरण में	स्नातस्य	१३. पारंगत
चरः	६. संचार करने वाले	मे, न्यूनम्	१४. मेरी, कमी को
वायुः इव	४. प्राण वायु के समान	अलम्	१५. सम्पूर्णरूप से
आत्म साक्षी ।	७. आत्मा के साक्षी	विचक्ष्व ॥	१६. बतलाइये

श्लोकार्थ—सूर्य की भाँति त्रिलोकी में भ्रमण करने वाले तथा प्राण वायु के समान अन्तःकरण में संचार करने वाले आत्मा के साक्षी आप नियम पूर्वक योगानुष्ठान के द्वारा शब्द ब्रह्म में और परब्रह्म में पारंगत मेरी कमी को सम्पूर्ण रूप से बतलाइये ।

अष्टमः श्लोकः

श्रीनारद उवाच— **भवतानुदितप्रायं यशो भगवतोऽमलम् ।**
येनैवासौ न तुष्येत मन्ये तद्दर्शनम् खिलम् ॥८॥

पदच्छेद— भवता अनुदित प्रायम्, यशः भगवतः अमलम् ।
येन एव असौ न तुष्येत, मन्ये तद् दर्शनम् खिलम् ॥

शब्दार्थ—

भवता	१. आपने	एव	९. ही
अनुदित	६. गान नहीं किया है	असौ	८. वह भगवान्
प्रायम्	५. प्रायः	न	१०. नहीं
यशः	४. यश का	तुष्येत	११. प्रसन्न होता हो
भगवतः	२. भगवान के	मन्ये	१५. मानता हूँ
अमलम् ।	३. निर्मल	तद्	१२. उस
येन	७. जिससे	दर्शनम्	१३. ज्ञान को (मैं)
		खिलम् ॥	१४. अधूरा

श्लोकार्थ—आपने भगवान् के निर्मल यश का प्रायः गान नहीं किया है। जिससे वह भगवान् ही प्रसन्न नहीं होता हो, उस ज्ञान को मैं अधूरा मानता हूँ ।

नवमः श्लोकः

यथा धर्मादयश्चार्था मुनिवर्यानुकीर्तिताः ।
न तथा वासुदेवस्य महिमा ह्यनुवर्णितः ॥९॥

पदच्छेद— यथा धर्म आदयः च अर्थाः, मुनिवर्य अनुकीर्तिताः ।
न तथा वासुदेवस्य, महिमा हि अनुवर्णितः ॥

शब्दार्थ—

यथा, धर्म	३.	जिस प्रकार, धर्म	न	११.	नहीं
आदयः	४.	अर्थ, काम और मोक्ष	तथा	८.	उस प्रकार से
च	२.	आपने	वासुदेवस्य	९.	भगवान् श्री कृष्ण की
अर्थाः	५.	पुरुषार्थों का	महिमा	१०.	लीलाओं का
मुनि वर्य	१.	हे मुनिवर्य !	हि	७.	निश्चित ही
अनुकीर्तिताः ।	६.	वर्णन किया है	अनुवर्णितः ॥	१२.	गान किया है

श्लोकार्थ—हे मुनिवर्य ! आपने जिस प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थों का वर्णन किया है, निश्चित ही उस प्रकार से भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान नहीं किया है ।

दशमः श्लोकः

न यद्वचश्चित्रपदं हरेर्यशो, जगत्पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित् ।
तद्वायसं तीर्थमुशन्ति मानसा, न यत्र हंसानिरमन्त्युशिक्क्षयाः ॥१०॥

पदच्छेद—न यद् वचः चित्र पदम् हरेः यशः, जगत् पवित्रम् प्रगृणीत कर्हिचित् ।
तद् वायसम् तीर्थम् उशन्ति मानसाः, न यत्र हंसाः निरमन्ति उशिक्क्षयाः ॥

शब्दार्थ—

न	७.	नहीं	तद्, वायसम्	९.	उसे (विद्वज्जन) कौओं के खिलाने के
यद् वचः	२.	जिस वाणी ने	तीर्थम्, उशन्ति	१०.	स्थान के समान, मानते हैं
चित्र पदम्	१.	अलंकारादि से युक्त पदों वाली	मानसाः,	१२.	मानसरोवर के निवासी
हरेः यशः,	५.	भगवान श्रीकृष्ण की कीर्ति का	न	१५.	नहीं
जगत्	३.	जगत् को	यत्र	११.	जहाँ
पवित्रम्	४.	पवित्र करने वाली	हंसाः	१४.	हंसरूपी परमहंस भक्त जन
प्रगृणीत	८.	गान किया	निरमन्ति	१६.	विहार करते हैं
कर्हिचित् ।	६.	कभी भी	उशिक्, क्षयाः ॥	१३.	कमनीय धाम वाले

श्लोकार्थ—अलंकार, गुण और रस से युक्त पदों वाली जिस वाणी ने जगत् को पवित्र करने वाली भगवान् श्रीकृष्ण की कीर्ति का कभी भी गान नहीं किया; उसे विद्वज्जन कौओं के खिलाने के स्थान के समान मानते हैं, जहाँ मानसरोवर के निवासी, कमनीय धाम वाले हंसरूपी परमहंस भक्त जन विहार नहीं करते हैं ।

एकादशः श्लोकः

तद्वाग्विसर्गो जनताघविप्लवो, यस्मिन् प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि ।
नामान्यनन्तस्य यशोऽङ्कितानि यच्छृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति साधवः ॥११॥

पदच्छेद— तद् वाग् विसर्गः जनता अघ विप्लवः, यस्मिन् प्रति श्लोकम् अबद्धवति अपि ।
नामानि अनन्तस्य यशः अङ्कितानि यत्, शृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति साधवः ॥

शब्दार्थ—

तद्, वाग्	७. वह, वाणी की	नामानि	६. शब्द (हैं)
विसर्गः, जनता	८. रचना, मनुष्यों के	अनन्तस्य	४. भगवान् श्रीकृष्ण की
अघ, विप्लवः	९. पापों का नाश करती है	यशः, अङ्कितानि	५. लीलाओं से, ओत प्रोत
यस्मिन्	१. जिसके	यत्,	१०. क्योंकि
पतिश्लोकम्	२. प्रत्येक श्लोक में	शृण्वन्ति	१२. (उसी का) श्रवण
अबद्धवति, अपि ।	३. अलंकार, गुण और रस न होने पर भी	गायन्ति, गृणन्ति	१३. गान और कीर्तन करते हैं
		साधवः ॥	११. सत् पुरुष

श्लोकार्थ—जिसके प्रत्येक श्लोक में अलंकार, गुण और रस न होने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं से ओत-प्रोत शब्द हैं; वह वाणी की रचना मनुष्यों के पापों का नाश करती है, क्योंकि सत् पुरुष उसी का श्रवण, गान और कीर्तन करते हैं ।

द्वादशः श्लोकः

नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं, न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम् ।
कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे, न चार्पितं कर्म यदप्यकारणम् ॥१२॥

पदच्छेद— नैष्कर्म्यम् अपि अच्युत भाव वर्जितम्, न शोभते ज्ञानम् अलम् निरञ्जनम् ।
कुतः पुनः शश्वद् अभद्रम् ईश्वरे, न च अर्पितम् कर्म यद् अपि अकारणम् ॥

शब्दार्थ—

नैष्कर्म्यम्	१. निष्काम कर्म से सम्बन्धित होने पर	शश्वद्, अभद्रम्	९. निरन्तर, अमंगलकारी (है)
अपि	२. भी	ईश्वरे,	१४. भगवान् में,
अच्युत	३. भगवान् श्रीकृष्ण की	न	१५. नही
भाव, वर्जितम्,	४. भक्ति से, रहित	च	१०. और
न, शोभते	७. शोभित नहीं होता है (तथा)	अर्पितम्	१६. समर्पित है
ज्ञानम्, अलम्	६. ज्ञान, बिल्कुल	कर्म	१२. कर्म
निरञ्जनम् ।	५. निर्मल	यद्	८. जो (ज्ञान)
कुतः	१८. (वे दोनों) कैसे (शोभित होंगे)	अपि	१३. भी (यदि)
पुनः	१७. तो फिर	अकारणम् ॥	११. निष्काम

श्लोकार्थ—निष्काम कर्म से सम्बन्धित होने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति से रहित निर्मल ज्ञान बिल्कुल शोभित नहीं होता है । तथा जो ज्ञान निरन्तर अमंगलकारी है और निष्काम कर्म भी यदि भगवान् में समर्पित नहीं है; तो फिर वे दोनों कैसे शोभित होंगे ?

त्रयोदशः श्लोकः

अथोमहाभाग भवानमोघदृक्, शुचिश्रवाः सत्यरतो धृतव्रतः ।
उरुक्रमस्याखिलबन्धमुक्तये, समाधिनानुस्मर तद्विचेष्टितम् ॥१३॥

पदच्छेद— अथो महाभाग भवान् अमोघ दृक्, शुचिश्रवाः सत्यरतः धृतव्रतः ।
उरुक्रमस्य अखिल बन्ध मुक्तये, समाधिना अनुस्मर तद् विचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

अथो, महाभाग	१. अतः, हे महाभाग व्यास जी	उरुक्रमस्य	१०. भगवान् त्रिविक्रम की
भवान्	६. आप	अखिल, बन्ध	७. सम्पूर्ण, बन्धनों से
अमोघ, दृक्	२. सफल, दृष्टि वाले	मुक्तये	८. मुक्ति पाने के लिये
शुचिश्रवाः	३. पवित्र कीर्ति से युक्त	समाधिना	९. समाधि के द्वारा (एकाग्र मन से)
सत्यरतः	४. सत्यपरायण (तथा)	अनुस्मर	१२. स्मरण कीजिये
धृतव्रतः ।	५. व्रत धारण करने वाले	तद्, विचेष्टितम् ॥	११. उन, लीलाओं का

श्लोकार्थ—अतः हे महाभाग व्यासजी ! सफल दृष्टि वाले, पवित्र कीर्ति से युक्त, सत्य परायण तथा व्रत धारण करने वाले आप सम्पूण बन्धनों से मुक्ति पाने के लिये समाधि के द्वारा एकाग्र मन से भगवान् त्रिविक्रम की उनलीलाओं का स्मरण कीजिये ।

चतुर्दशः श्लोकः

ततोऽन्यथा किञ्चन यद्विवक्षतः, पृथग्दृशस्तत्कृतरूपनामभिः ।
न कुत्रचित्क्वापि च दुःस्थिता मतिर्लभेत वाताहतनौरिवास्पदम् ॥१४॥

पदच्छेद—ततः अन्यथा किञ्चन यद् विवक्षतः, पृथग् दृशः तत्कृत रूप नामभिः ।
न कुत्रचित् क्वापि च दुःस्थिता मतिः, लभेत वात आहत नौः इव आस्पदम् ॥

शब्दार्थ—

ततः, अन्यथा	१. भगवत् लीला के, अतिरिक्त	कुत्रचित्	१०. कभी भी
किञ्चन, यद्	२. कुछ, और	क्वापि, च	९. कही भी, और
विवक्षतः	३. कहने की इच्छा रखने वाले (तथा)	दुःस्थिता, मतिः	८. चंचल, बुद्धि
पृथग्, दृशः	७. भिन्न दृष्टि वाले (प्राणियों की)	लभेत	१३. प्राप्त करती है
तत्कृत	४. निज इच्छा से निर्मित	वात, आहत	१५. वायु के झकोरे से, डगमगाती हुई
रूप	६. रूपों के कारण	नौः	१६. नौका (उचित ठौर नहीं पाती है)
नामभिः ।	५. नाम	इव	१४. जैसे
न	१२. नहीं	आस्पदम् ॥	११. उचित स्थान को

श्लोकार्थ—भगवत् लीला के अतिरिक्त और कुछ कहने की इच्छा रखने वाले तथा निज इच्छा से निर्मित नाम रूपों के कारण भिन्न दृष्टि वाले प्राणियों की चंचल बुद्धि कहीं भी और कभी भी उचित स्थान को नहीं प्राप्त करती है । जैसे वायु के झकोरे से डगमगाती हुई नौका उचित ठौर नहीं पाती है ।

पञ्चदशः श्लोकः

जुगुप्सितं धर्मकृतेऽनुशासतः, स्वभावरक्तस्य महान् व्यतिक्रमः ।
यद्वाक्यतो धर्म इतीतरः स्थितो, न मन्यते तस्य निवारणं जनः ॥१५॥

पदच्छेद— जुगुप्सितम् धर्मकृते अनुशासतः, स्वभावरक्तस्य महान् व्यतिक्रमः ।
यद् वाक्यतः धर्मः इति इतरः स्थितः, न मन्यते तस्य निवारणम् जनः ॥

शब्दार्थ—

जुगुप्सितम्	४. (पशु हिंसा युक्त) निन्दित कर्म का	**धर्मः**	१२. धर्म
धर्मकृते	३. धर्मानुष्ठान के लिये	**इति**	११. उसे ही
अनुशासतः	५. विधान करने वाले (आपसे)	**इतरः**	८. मूर्ख
स्वभाव	१. (हे व्यासजी) स्वभाव से ही	**स्थितः**	१३. मानते हैं (तथा)
रक्तस्य	२. विषयासक्त (मनुष्यों के)	**न, मन्यते**	१६. (प्रमाण) नहीं मानते हैं
महान् व्यतिक्रमः	६. बड़ा उलटा काम हो गया है	**तस्य**	१४. उस निन्दित कर्म का
यद्	७. क्योंकि	**निवारणम्**	१५. निषेध करने वाले (शास्त्र के वाक्य को)
वाक्यतः	१०. (शास्त्र का) वाक्य होने से	**जनः ॥**	९. लोग

श्लोकार्थ—हे व्यास जी ! स्वभाव से ही विषयासक्त मनुष्यों के धर्मानुष्ठान के लिये पशु हिंसा युक्त निन्दित कर्म का विधान करने वाले आपसे बड़ा उलटा काम हो गया है । क्योंकि मूर्ख लोग शास्त्र का वाक्य होने से उसे ही धर्म मानते हैं तथा उस निन्दित कर्म का निषेध करने वाले शास्त्र के वाक्य को प्रमाण नहीं मानते हैं ।

षोडशः श्लोकः

विचक्षणोऽस्यार्हति वेदितुं विभोरनन्तपारस्य निवृत्तितः सुखम् ।
प्रवर्तमानस्य गुणैरनात्मनस्ततो भवान्दर्शय चेष्टितं विभोः ॥१६॥

पदच्छेद—विचक्षणः अस्य अर्हति वेदितुम् विभोः, अनन्तपारस्य निवृत्तितः सुखम् ।
प्रवर्तमानस्य गुणैः अनात्मनः, ततः भवान् दर्शय चेष्टितम् विभोः ॥

शब्दार्थ—

विचक्षणः	१. (हे व्यास जी !) विद्वज्जन	**प्रवर्तमानस्य**	१२. नचाये जारहे (प्राणियों के लिये)
अस्य	३. इस	**गुणैः**	११. गुणों से
अर्हति	८. समर्थ हैं	**अनात्मनः,**	१०. आत्मज्ञान से रहित (तथा)
वेदितुम्	७. जानने में	**ततः**	९. इसलिये
विभोः	४. व्यापक (और)	**भवान्**	१३. आप
अनन्तपारस्य	५. अनन्त परमात्मा के	**दर्शय**	१६. गान करें
निवृत्तितः	२. निवृत्ति मार्ग से	**चेष्टितम्**	१५. लीलाओं का
सुखम् ।	६. आनन्द को	**विभोः ॥**	१४. भगवान् की

श्लोकार्थ—हे व्यास जी ! विद्वज्जन निवृतिमार्ग से इस व्यापक और अनन्त परमात्मा के आनन्द को जानने में समर्थ हैं, इसलिये आत्मज्ञान से रहित तथा गुणों से नचाये जा रहे प्राणियों के लिये आप भगवान् की लीलाओं का गान करें ।

सप्तदशः श्लोकः

त्यक्त्वा स्वधर्मं चरणाम्बुजं हरे
र्भजन्नपक्वोऽथ पतेत्ततो यदि ।
यत्र क्व वाभद्रमभूदमुष्य किं
को वार्थ आप्तोऽभजतां स्वधर्मतः ॥१७॥

पदच्छेद —

त्यक्त्वा स्वधर्मम् चरणअम्बुजम् हरेः,
भजन् अपक्वः अथ पतेत् ततः यदि ।
यत्र क्व वा अभद्रम् अभूत् अमुष्य किम् ,
कः वा अर्थः आप्तः अभजताम् स्वधर्मतः ॥

शब्दार्थ—

त्यक्त्वा	२.	छोड़कर	वा	११.	तो
स्वधर्मम्	१.	अपने धर्म को	अभद्रम्	१६.	अमङ्गल
चरणअम्बुजम्	४.	चरण कमल का	अभूत्	१७.	हुआ है ?
हरेः	३.	भगवान् श्री कृष्ण के	अमुष्य	१५.	उसका
भजन्	५.	भजन करता हुआ (व्यक्ति)	किम्,	१३.	क्या
अपक्वः	६.	बीच में	कः	२२.	कौन सा
अथ	७.	ही	वा	१८.	तथा
पतेत्	१०.	गिर जाता है	अर्थः	२३.	फल
ततः	९.	उस मार्ग से	आप्तः	२४.	प्राप्त हुआ है
यदि ।	८.	यदि	अभजताम्	२१.	भजन न करने वाले (प्राणियों को)
यत्र	१२.	भी	स्व	१९.	अपने
क्व	१४.	कहीं	धर्मतः ॥	२०.	धर्म के अनुसार रहने पर भी

श्लोकार्थ—अपने धर्म को छोड़कर भगवान् श्री कृष्ण के चरणकमल का भजन करता हुआ व्यक्ति बीच में ही यदि उस मार्ग से गिर जाता है तो भी क्या कहीं उसका अमङ्गल हुआ है ? तथा अपने धर्म के अनुसार रहने पर भी भजन न करने वाले प्राणियों को कौन सा फल प्राप्त हुआ है ?

अष्टादशः श्लोकः

तस्यैव हेतोः प्रयतेत कोविदो न लभ्यते यद्भ्रमतामुपर्यधः ।
तल्लभ्यते दुःखवदन्यतः सुखं कालेन सर्वत्र गभीररंहसा ॥१८॥

पदच्छेद— **तस्य एव हेतोः प्रयतेत कोविदः, न लभ्यते यद् भ्रमताम् उपरि अधः ।**
तद् लभ्यते दुःखवद् अन्यतः सुखम्, कालेन सर्वत्र गभीर रंहसा ॥

शब्दार्थ—

तस्य, एव	७. उस ही के	**तद्**	६. वह
हेतोः	८. निमित्त	**लभ्यते**	१६. प्राप्त हो जाता है
प्रयतेत	६. प्रयत्न करना चाहिये। (तथा)	**दुःख, वत्**	१३. दुःख के, समान
कोविदः,	५. पंडित जन को	**अन्यतः**	१४. बिना प्रयास के
न, लभ्यते	४. नहीं, प्राप्त होती है	**सुखम्**	१०. विषय सुख (तो)
यद्	३. जो वस्तु	**कालेन**	१२. काल के द्वारा
भ्रमताम्	२. भ्रमण करने पर भी	**सर्वत्र**	१५. सब जगह
उपरिअधः ।	१. ऊँची-नीची (नाना योनियों में)	**गभीर, रंहसा ॥**	११. गम्भीर, वेग वाले

श्लोकार्थ—ऊँची-नीची नाना योनियों में भ्रमण करने पर भी जो वस्तु नहीं प्राप्त होती है; पंडित जनको उसी के निमित्त प्रयत्न करना चाहिये। तथा वह विषय सुख तो गम्भीर वेग वाले काल के द्वारा दुःख के समान बिना प्रयास के सब जगह प्राप्त हो जाता है।

एकोनविंशः श्लोकः

न वै जनो जातु कथंचनाव्रजेन्मुकुन्दसेव्यन्यवदङ्ग संसृतिम् ।
स्मरन्मुकुन्दाङ्घ्र्युपगूहनं पुनर्विहातुमिच्छेन्न रसग्रहो यतः ॥१९॥

पदच्छेद— **न वै जनः जातु कथंचन आव्रजेत्, मुकुन्द सेवी अन्यवत् अङ्ग संसृतिम् ।**
स्मरन् मुकुन्द अङ्घ्रि उपगूहनम् पुनः, विहातुम् इच्छेत् न रसग्रहः यतः ॥

शब्दार्थ—

न	८. नहीं	**स्मरन्**	१५. स्मरण करता हुआ
वै	५. निश्चय ही	**मुकुन्द**	१२. भगवान् के
जनः	३. प्राणी	**अङ्घ्रि**	१३. चरणों के
जातु, कथंचन	६. कभी भी किसी भी तरह से	**उपगूहनम्**	१४. स्पर्श सुख का
आव्रजेत्	९. आता है	**पुनः, विहातुम्**	१६. फिर (उसे) छोड़ने की
मुकुन्द सेवी	२. भगवान् का भक्त	**इच्छेत्**	१८. इच्छा करता है
अन्यवत्	४. अभक्तों की तरह	**न**	१७. नहीं
अङ्ग	१. हे व्यास जी !	**रसग्रहः**	११. भक्ति रस का रसिक
संसृतिम् ।	७. संसार में	**यतः ॥**	१०. क्योंकि

श्लोकार्थ—हे व्यासजी ! भगवान् का भक्त प्राणी अभक्तों की तरह निश्चय ही कभी भी किसी भी तरह से संसार में नहीं आता है। क्योंकि भक्ति रस का रसिक भगवान् के चरणों के स्पर्श सुख का स्मरण करता हुआ फिर उसे छोड़ने की इच्छा नहीं करता है।

विंशः श्लोकः

इदं हि विश्वं भगवानिवेतरो, यतो जगत्स्थाननिरोधसम्भवाः ।
तद्धि स्वयं वेद भवांस्तथापि वै, प्रादेशमात्रं भवतः प्रदर्शितम् ॥२०॥

पदच्छेद— इदम् हि विश्वम् भगवान् इव इतरः, यतः जगत् स्थान निरोधसम्भवाः ।
तद्धि स्वयम् वेद भवान् तथापि वै, प्रादेश मात्रम् भवतः प्रदर्शितम् ॥

शब्दार्थ—

इदम्	१. यह	तद्धि, स्वयम्	९. इस बात को, स्वयम् भगवान्
हि	३. ही	वेद, भवान्	१०. जानते हैं (तथा) आप भी जानते हैं
विश्वम्, भगवान्	२. ब्रह्माण्ड भगवान् का	तथापि	११. फिर भी (मैंने)
इव	४. रूप है	वै	१४. ही
इतरः	८. (वह भगवान् उससे) भिन्न है	प्रादेश, मात्रम्	१३. संकेत, मात्र
यतः	५. (किन्तु) जिस भगवान् से	भवतः	१२. आपको
जगत्, स्थान	६. जगत् का पालन	प्रदर्शितम् ॥	१५. बताया है
निरोध, सम्भवाः ।	७. संहार (और) उत्पत्ति होती (है)		

श्लोकार्थ—यह ब्रह्माण्ड भगवान् का ही रूप है; किन्तु जिस भगवान् से जगत् का पालन, संहार और उत्पत्ति होती है; वह भगवान् उससे भिन्न है । इस बात को स्वयम् भगवान् जानते हैं तथा आप भी जानते हैं; फिर भी मैंने आपको संकेत मात्र ही बताया है ।

एकविंशः श्लोकः

त्वमात्मनाऽऽत्मानमवेह्यमोघदृक् परस्य पुंसः परमात्मनः कलाम् ।
अजं प्रजातं जगतः शिवाय तन्महानुभावाभ्युदयोऽधिगण्यताम् ॥२१॥

पदच्छेद— त्वम् आत्मना आत्मानम् अवेहि अमोघदृक् परस्य पुंसः परमात्मनः कलाम् ।
अजम् प्रजातम् जगतः शिवाय तत्, महानुभाव अभ्युदयः अधिगण्यताम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम् आत्मना	२. आप स्वयम्	अजम्	८. अजन्मा (होने पर भी आप)
आत्मानम्	३. अपने को	प्रजातम्	१०. जन्म लेते हैं
अवेहि	७. समझें	जगतः शिवाय	९. संसार के मङ्गल के लिये
अमोघदृक्,	१. सफल दृष्टि वाले हे व्यास जी !	तत्,	११. इसलिये
परस्यपुंसः	४. परम पुरुष	महानुभाव	१२. हे महाभाग व्यास जी ! (आप)
परमात्मनः	५. परमात्मा का	अभ्युदयः	१३. भगवत् लीला का
कलाम् ।	६. कलावतार	अधिगण्यताम् ॥	१४. वर्णन करें

श्लोकार्थ—सफल दृष्टि वाले हे व्यास जी ! आप स्वयम् अपने को परम पुरुष परमात्मा का कलावतार समझें । अजन्मा होने पर भी आप संसार के मङ्गल के लिये जन्म लेते हैं । इसलिये हे महाभाग व्यास जी ! आप भगवत् लीला का वर्णन करें ।

द्वाविंशः श्लोकः

इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा, स्विष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धि दत्तयोः ।
अविच्युतोऽर्थः कविभिर्निरूपितो, यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनम् ॥२२॥

पदच्छेद— **इदम् हि पुंसः तपसः श्रुतस्य वा, स्विष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धि दत्तयोः ।**
अविच्युतः अर्थः कविभिः निरूपितः, यद् उत्तमश्लोक गुण अनुवर्णनम् ॥

शब्दार्थ—

इदम् हि	११.	यही	**अविच्युतः**	९.	एक मात्र
पुंसः, तपसः	२.	मनुष्य की तपस्या	**अर्थः**	१०.	प्रयोजन
श्रुतस्य, वा	३.	वेदाध्ययन, अथवा	**कविभिः**	१.	विद्वानों ने
स्विष्टस्य	४.	यज्ञ	**निरूपितः**	१२.	बताया है
सूक्तस्य	५.	स्वाध्याय	**यद्**	१३.	कि
च	७.	और	**उत्तमश्लोक**	१४.	पुण्यकीर्ति भगवान् के
बुद्धि	६.	ज्ञान	**गुण**	१५.	यश का
दत्तयोः ।	८.	दान का	**अनुवर्णनम् ॥**	१६.	वर्णन किया जाय

श्लोकार्थ—विद्वानों ने मनुष्य की तपस्या, वेदाध्ययन अथवा यज्ञ, स्वाध्याय; ज्ञान और दान का एक मात्र प्रयोजन यही बताया है कि पुण्यकीर्ति भगवान् के यश का वर्णन किया जाय ।

त्रयोविंशः श्लोकः

अहं पुरातीतभवेऽभवं मुने, दास्यास्तु, कस्याश्चन वेदवादिनाम् ।
निरूपितो बालक एव योगिनां, शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षताम् ॥२३॥

पदच्छेद— **अहम् पुरा अतीतभवे अभवम् मुने, दास्याः तु कस्याश्चन वेद वादिनाम् ।**
निरूपितः बालकः एव योगिनाम्, शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षताम् ॥

शब्दार्थ—

अहम् पुरा	२.	मैं पहले	**वादिनाम् ।**	६.	ब्राह्मणों की
अतीतभवे	३.	पिछले कल्प में	**निरूपितः**	१६.	लगा दिया गया था
अभवम्	९.	उत्पन्न हुआ था (और)	**बालकः**	१०.	बचपन में
मुने,	१.	हे वेदव्यास मुनि !	**एव**	११.	ही
दास्याः	८.	दासी से	**योगिनाम्**	१४.	ऋषियों की
तु	४.	तो	**शुश्रूषणे**	१५.	सेवा में
कस्याश्चन	७.	किसी	**प्रावृषि**	१२.	वर्षा ऋतु में
वेद	५.	वेद ज्ञानी	**निर्विविक्षताम् ॥**	१३.	एक स्थान पर रहने वाले

श्लोकार्थ—हे वेद व्यास मुनि ! मैं पहले पिछले कल्प में तो वेदज्ञानी ब्राह्मणों की किसी दासी से उत्पन्न हुआ था । और बचपन में ही वर्षा ऋतु में एक स्थान पर रहने वाले ऋषियों की सेवा में लगा दिया गया था ।

चतुर्विंशः श्लोकः

ते मय्यपेताखिलचापलेऽर्भके, दान्तेऽधृतक्रीडनकेऽनुवर्तिनि ।
चक्रुः कृपां यद्यपि तुल्यदर्शनाः, शुश्रूषमाणे मुनयोऽल्पभाषिणि ॥२४॥

पदच्छेद— ते मयि अपेत अखिल चापले अर्भके, दान्ते अधृत क्रीडनके अनुवर्तिनि ।
चक्रुः कृपाम् यद्यपि तुल्य दर्शनाः, शुश्रूषमाणे मुनयः अल्प भाषिणि ॥

शब्दार्थ—

ते	१. वे		अनुवर्तिनि ।	१०. आज्ञाकारी
मयि	१३. मुझ		चक्रुः	१६. की थी
अपेत	६. रहित		कृपाम्	१५. कृपा
अखिल चापले	५. सम्पूर्ण चंचलता से		यद्यपि	३. यद्यपि
अर्भके,	१४. बालक पर		तुल्यदर्शनाः	४. समदर्शी थे (फिर भी उन्होंने)
दान्ते	७. जितेन्द्रिय		शुश्रूषमाणे	११. सेवा करने वाले (तथा)
अधृत	९. नहीं करने वाले		मुनयः	२. मुनिजन
क्रीडनके	८. खेलकूद		अल्प भाषिणि ॥	१२. कम बोलने वाले

श्लोकार्थ—वे मुनिजन यद्यपि समदर्शी थे; फिर भी उन्होंने सम्पूर्ण चंचलता से रहित, जितेन्द्रिय, खेलकूद नहीं करने वाले, आज्ञाकारी, सेवा करने वाले तथा कम बोलने वाले मुझ बालक पर कृपा की थी ।

पञ्चविंशः श्लोकः

उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजैः, सकृत्स्म भुञ्जे तदपास्तकिल्विषः ।
एवं प्रवृत्तस्य विशुद्धचेतसः, तद्धर्म एवात्मरुचिः प्रजायते ॥२५॥

पदच्छेद— उच्छिष्ट लेपान् अनुमोदितः द्विजैः, सकृत् स्म भुञ्जे तद् अपास्त किल्विषः ।
एवम् प्रवृत्तस्य विशुद्ध चेतसः, तद् धर्मे एव आत्म रुचिः प्रजायते ॥

शब्दार्थ—

उच्छिष्ट	४. जूठन को		एवम्	९. इस प्रकार
लेपान्	३. बरतन में लगे हुये		प्रवृत्तस्य	१०. सेवा में लगे रहने पर
अनुमोदितः	२. कहने पर (मैं)		विशुद्ध चेतसः	११. निर्मल चित्त वाले
द्विजैः,	१. ऋषियों के		तद्	१३. उनके
सकृत् स्म भुञ्जे	५. एकबार खाता था		धर्मे	१५. धर्म में
तद्	६. उसके कारण (मैं)		एव	१४. ही
अपास्त	८. रहित हो गया		आत्म रुचिः	१२. मेरी रुचि
किल्विषः ।	७. पापों से		प्रजायते ॥	१६. उत्पन्न हो गई

श्लोकार्थ—ऋषियों के कहने पर मैं बरतन में लगे हुए जूठन को एक बार खाता था । उसके कारण मैं पापो से रहित हो गया । इस प्रकार सेवा में लगे रहने पर निर्मलचित्त वाले मेरी रुचि उनके ही धर्म में उत्पन्न हो गई ।

षड्विंशः श्लोकः

तत्रान्वहं कृष्णकथाः प्रगायताम्, अनुग्रहेणाश्रृणवं मनोहराः ।
ताः श्रद्धया मेऽनुपद विश्रृण्वतः, प्रियश्रवस्यङ्ग ममाभवद्रुचिः ॥२६॥

पदच्छेद—तत्र अन्वहम् कृष्ण कथाः प्रगायताम्, अनुग्रहेण अश्रृणवम् मनोहराः ।
ताः श्रद्धया मे अनुपदम् विश्रृण्वतः, प्रियश्रवसि अङ्ग मम अभवत् रुचिः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	श्रद्धया	१२.	श्रद्धा से
अन्वहम्	६.	प्रतिदिन	मे	११.	अपनी
कृष्ण	३.	भगवान् श्रीकृष्ण की	अनुपदम्	१३.	प्रत्येक पद को
कथाः	५.	लीलाओं को	विश्रृण्वतः	१४.	सुनते हुये
प्रगायताम्	७.	गाने वाले (ऋषियों की)	प्रियश्रवसि	१७.	प्रियकीर्ति भगवान् में
अनुग्रहेण	८.	कृपा से	अङ्ग	१.	हे व्यास जी !
अश्रृणवम्	१०.	सुना था (तथा)	मम	१५.	मेरी
मनोहराः ।	४.	मनोहर	अभवत्	१८.	उत्पन्न हो गई
ताः	९.	(मैंने) उन्हें	रुचिः ॥	१६.	रुचि

श्लोकार्थ—हे व्यास जी ! वहाँ पर भगवान् श्री कृष्ण की मनोहर लीलाओं को प्रतिदिन गाने वाले ऋषियों की कृपा से मैंने उन्हें सुना था तथा अपनी श्रद्धा से प्रत्येक पद को सुनते हुये मेरी रुचि प्रियकीर्ति भगवान् में उत्पन्न हो गई ।

सप्तविंशः श्लोकः

तस्मिंस्तदा लब्धरुचेर्महामुने, प्रियश्रवस्यस्खलिता मतिर्मम ।
ययाहमेतत्सदसत्स्वमायया, पश्ये मयि ब्रह्मणि कल्पितं परे ॥२७॥

पदच्छेद— तस्मिन् तदा लब्ध रुचेः महामुने, प्रियश्रवसि अस्खलिता मतिः मम ।
यया अहम् एतत् सत् असत् स्वमायया, पश्ये मयि ब्रह्मणि कल्पितम् परे ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	३.	उन	एतत्	१२.	इस (जगत्) को
तदा	२.	उस समय	सत् असत्	९.	सत्य और असत्य रूप वाली
लब्ध रुचेः	५.	रुचि से युक्त	स्वमायया	१०.	प्रभु की माया के द्वारा
महामुने,	१.	हे महामुनि व्यास जी !	पश्ये	१६.	देखने लगा
प्रियश्रवसि	४.	प्रिय कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण में	मयि	१५.	अपनी आत्मा में
अस्खलिता	७.	स्थिर हो गई	ब्रह्मणि	१४.	ब्रह्म स्वरूप
मतिः, मम ।	६.	बुद्धि, मेरी	कल्पितम्	११.	रचित
यया, अहम्	८.	जिस (स्थितप्रज्ञा) से, मैं	परे ॥	१३.	पर

श्लोकार्थ—हे महामुनि व्यास जी ! उस समय उन प्रिय कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण में रुचि से युक्त मेरी बुद्धि स्थिर हो गई । जिस स्थितप्रज्ञा से मैं सत्य और असत्य रूप वाली प्रभु की माया के द्वारा रचित इस जगत् को परब्रह्म स्वरूप अपनी आत्मा में देखने लगा ।

अष्टाविंशः श्लोकः

इत्थं शरत्प्राघृषिकावृतू हरेः, विशृण्वतो मेऽनुसवं यशोऽमलम् ।
संकीर्त्यमानं मुनिभिर्महात्मभिः, भक्तिः प्रवृत्ताऽऽत्मरजस्तमोऽपहा ॥२८॥

पदच्छेद—

इत्थम् शरत् प्रावृषिकौ ऋतू हरेः, विशृण्वतः मे अनुसवम् यशः अमलम् ।
संकीर्त्यमानम् मुनिभिः महात्मभिः, भक्तिः प्रवृत्ता आत्म रजः तमः अपहा ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्, शरत्	१. इस प्रकार. शरद् (और)		अमलम् ।	७. निर्मल
प्रावृषिकौ, ऋतू	२. वर्षा (इन दोनों), ऋतुओं में		संकीर्त्यमानम्	५. गान किये जा रहे
हरेः,	६. भगवान् श्रीकृष्ण के		मुनिभिः	४. ऋषियों के द्वारा
विशृण्वतः	१०. श्रवण करते हुये		महात्मभिः	३. महात्मा
मे	११. मेरे (हृदय में)		भक्तिः, प्रवृत्ताः	१४. भक्ति, उत्पन्न हो गई
अनुसवम्	६. तीनों कालों की संध्याओं में		आत्म, रजः	१२. आत्मा के, रजोगुण (और)
यशः	८. यश का		तमः, अपहा ॥	१३. तमोगुण को, दूर करने वाली

श्लोकार्थ—इस प्रकार शरद् और वर्षा इन दोनों ऋतुओं में महात्मा ऋषियों के द्वारा गान किये जा रहे भगवान् श्री कृष्ण के निर्मल यश का तीनों कालों की संध्याओं में श्रवण करते हुये मेरे हृदय में आत्मा के रजो गुण और तमो गुण को दूर करने वाली भक्ति उत्पन्न हो गई ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तस्यैवं मेऽनुरक्तस्य प्रश्रितस्य हतैनसः ।
श्रद्दधानस्य बालस्य दान्तस्यानुचरस्य च ॥२९॥

पदच्छेद—

तस्य एवम् मे अनुरक्तस्य, प्रश्रितस्य हत एनसः ।
श्रद्दधानस्य बालस्य, दान्तस्य अनुचरस्य च ॥

शब्दार्थ—

तस्य एवम्	१. इस प्रकार	एनसः ।	४. पाप से
मे	१०. मुझ	श्रद्दधानस्य	६. श्रद्धालु
अनुरक्तस्य	२. अनुरागी	बालस्य	११. बालक पर (उन मुनियों ने कृपा की थी)
प्रश्रितस्य	३. विनयी	दान्तस्य	७. जितेन्द्रिय
हत	५. रहित	अनुचरस्य	६. सेवक
		च ॥	८. और

श्लोकार्थ—इस प्रकार अनुरागी, विनयी, पाप से रहित, श्रद्धालु, जितेन्द्रिय और सेवक मुझ बालक पर उन मुनियों ने कृपा की थी ।

त्रिंशः श्लोकः

ज्ञानं गुह्यतमं यत्तत्साक्षाद्भगवतोदितम् ।
अन्ववोचन् गमिष्यन्तः कृपया दीनवत्सलाः ॥३०॥

पदच्छेद—

ज्ञानम् गुह्यतमम् यत् तत्, साक्षात् भगवता उदितम् ।
अन्ववोचन् गमिष्यन्तः, कृपया दीन वत्सलाः ॥

शब्दार्थ—

ज्ञानम्	७.	ज्ञान का (मुझे)	उदितम् ।	१२.	कहा गया है
गुह्यतमम्	६.	रहस्यमय	अन्ववोचन्	८.	उपदेश किया
यत्	९.	जो	गमिष्यन्तः	३.	जाते समय
तत्	५.	उस	कृपया	४.	कृपा करके
साक्षात्	१०.	प्रत्यक्ष रूप से	दीन	१.	दीन दयालु
भगवता	११.	भगवान् के द्वारा	वत्सलाः ॥	२.	(उन) ऋषियों ने

श्लोकार्थ—दीनदयालु उन ऋषियों ने जाते समय कृपा करके उस रहस्य मय ज्ञान का मुझे उपदेश किया; जो प्रत्यक्षरूप से भगवान् के द्वारा कहा गया है ।

एकत्रिंशः श्लोकः

येनैवाहं भगवतो वासुदेवस्य वेधसः ।
मायानुभावमविदं येन गच्छन्ति तत्पदम् ॥३१॥

पदच्छेद—

येन एव अहम् भगवतः, वासुदेवस्य वेधसः ।
माया अनुभावम् अविदम्, येन गच्छन्ति तत् पदम् ॥

शब्दार्थ—

येन	१.	जिस ज्ञान से	अनुभावम्	८.	कार्य को
एव	२.	ही	अविदम्	९.	समझा हूँ (तथा)
अहम्	३.	मैं	येन	१०.	जिससे (ज्ञानी जन)
भगवतः	५.	भगवान्	गच्छन्ति	१३.	जाते हैं
वासुदेवस्य	६.	श्री कृष्ण की	तत्	११.	उस
वेधसः ।	४.	जगत् के निर्माता	पदम् ॥	१२.	परमधाम को
माया	७.	सत्त्व गुणमयी माया के			

श्लोकार्थ—जिस ज्ञान से ही मैं जगत् के निर्माता भगवान् श्रीकृष्ण की सत्त्वगुणमयी माया के कार्य को समझा हूँ तथा जिससे ज्ञानी जन उस परमधाम को जाते हैं ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

एतत्संसूचितं ब्रह्मंस्तापत्रयचिकित्सितम् ।
यदीश्वरे भगवति कर्म ब्रह्मणि भावितम् ॥३२॥

पदच्छेद—

एतत् संसूचितम् ब्रह्मन्, ताप त्रय चिकित्सितम् ।
यद् ईश्वरे भगवति, कर्म ब्रह्मणि भावितम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१०. यह (मैंने)	यद्	२. जो
संसूचितम्	११. संकेत मात्र बताया है	ईश्वरे	४. समर्थ
ब्रह्मन्	१. हे वेदज्ञानी व्यास जी !	भगवति	५. भगवान्
ताप त्रय	८. (वह) तीनों तापों की	कर्म	३. निष्काम कर्म
चिकित्सितम् ।	९. औषध है	ब्रह्मणि	६. श्री कृष्ण को
		भावितम् ॥	७. समर्पित है

श्लोकार्थ—हे वेदज्ञानी व्यास जी ! जो निष्काम कर्म समर्थ भगवान् श्री कृष्ण को समर्पित है, वह तीनों तापों की औषध है । यह मैंने संकेत मात्र बताया है ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

आमयो यश्च भूतानां जायते येन सुव्रत ।
तदेव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सितम् ॥३३॥

पदच्छेद—

आमयः यः च भूतानाम्, जायते येन सुव्रत ।
तद्एव हि आमयम् द्रव्यम्, न पुनाति चिकित्सितम् ॥

शब्दार्थ—

आमयः	६. रोग	तद्एव	९. वही
यः	५. जो	हि	८. क्या
च	१. और	आमयम्	१२. (उस) रोग को
भूतानाम्	३. प्राणियों को	द्रव्यम्	१०. पदार्थ
जायते	७. उत्पन्न होता है	न	१३. नहीं
येन	४. जिस (पदार्थ) से	पुनाति	१४. दूर करता है
सुव्रत ।	२. हे संयमी व्यास जी !	चिकित्सितम् ॥	११. औषध रूप से

श्लोकार्थ—और हे संयमी व्यास जी ! प्राणियों को जिस पदार्थ से जो रोग उत्पन्न होता है । क्या वही पदार्थ औषध रूप से उस रोग को नहीं दूर करता है ?

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वे संसृतिहेतवः ।
त एवात्मविनाशाय कल्पन्ते कल्पिताः परे ॥३४॥

पदच्छेद—

एवम् नृणाम् क्रिया योगाः, सर्वे संसृति हेतवः ।
ते एव आत्म विनाशाय, कल्पन्ते कल्पिताः परे ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इसी प्रकार	**ते**	८.	वे
नृणाम्	२.	मनुष्यों के	**एव**	९.	ही (कर्म)
क्रिया	४.	कर्म	**आत्म**	१२.	अपने आप
योगाः	५.	योग	**विनाशाय**	१३.	विनाश को
सर्वे	३.	सभी	**कल्पन्ते**	१४.	प्राप्त हो जाते हैं
संसृति	६.	संसार प्रपंच के	**कल्पिताः**	११.	सर्मपित कर दिये जाने पर
हेतवः ।	७.	कारण हैं	**परे ॥**	१०.	भगवान् को

श्लोकार्थ—इसी प्रकार मनुष्यों के सभी कर्म-योग संसार-प्रपंच के कारण हैं । वे ही कर्म भगवान् को सर्मपित कर दिये जाने पर अपने आप विनाश को प्राप्त हो जाते हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यदत्र क्रियते कर्म भगवत्परितोषणम् ।
ज्ञानं यत्तदधीनं हि भक्तियोगसमन्वितम् ॥३५॥

पदच्छेद—

यद् अत्र क्रियते कर्म, भगवत् परितोषणम् ।
ज्ञानम् यद् तद् अधीनम् हि, भक्ति योग समन्वितम् ॥

शब्दार्थ—

यद्	२.	जो	**यद्**	१३.	वह (आत्मिक)
अत्र	१.	इस संसार में	**तद्**	७.	उसके
क्रियते	६.	किया जाता है	**अधीनम्**	८.	वश में
कर्म	३.	कर्म	**हि**	९.	ही
भगवत्	४.	भगवान् की	**भक्ति**	१०.	भक्ति-
परितोषणम् ।	५.	प्रसन्नता के लिये	**योग**	११.	योग से
ज्ञानम्	१४.	ज्ञान है	**समन्वितम् ॥**	१२.	मिला हुआ

श्लोकार्थ—इस संसार में जो कर्म भगवान् की प्रसन्नता के लिये किया जाता है, उसके वश में ही भक्ति योग से मिला हुआ वह आत्मिक ज्ञान है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

कुर्वाणा यत्र कर्माणि भगवच्छिक्षयासकृत् ।
गृणन्ति गुणनामानि कृष्णस्यानुस्मरन्ति च ॥३६॥

पदच्छेद—

कुर्वाणाः यत्र कर्माणि, भगवत् शिक्षया असकृत् ।
गृणन्ति गुण नामानि, कृष्णस्य अनुस्मरन्ति च ॥

शब्दार्थ—

कुर्वाणाः	५.	करते हुये (मनुष्य)	गृणन्ति	१०.	कीर्तन करते हैं
यत्र	१.	उस (भगवदर्थ कर्म मार्ग में)	गुण	८.	गुणों का
कर्माणि	४.	कर्मों को	नामानि	७.	नामों का (और)
भगवत्	२.	भगवान् के	कृष्णस्य	६.	श्रीकृष्ण के
शिक्षया	३.	उपदेश से	अनुस्मरन्ति	१२.	स्मरण करते हैं
असकृत् ।	९.	बार-बार	च ॥	११.	और

श्लोकार्थ—उस भगवदर्थ कर्ममार्ग में भगवान् के उपदेश से कर्मों को करते हुये मनुष्य श्रीकृष्ण के नामों का और गुणों का बार-बार कीर्तन करते हैं और स्मरण करते हैं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि ।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च ॥३७॥

पदच्छेद—

नमः भगवते तुभ्यम्, वासुदेवाय धीमहि ।
प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय, नमः संकर्षणाय च ॥

शब्दार्थ—

नमः	४.	नमस्कार है	प्रद्युम्नाय	६.	प्रद्युम्न
भगवते	२.	भगवान्	अनिरुद्धाय	७.	अनिरुद्ध
तुभ्यम्	१.	आप	नमः	१०.	नमस्कार है
वासुदेवाय	३.	वासुदेव को	संकर्षणाय	९.	संकर्षण को (भी)
धीमहि ।	५.	(हम आपका) ध्यान करते हैं	च ॥	८.	और

श्लोकार्थ—आप भगवान् वासुदेव को नमस्कार है । हम आपका ध्यान करते हैं । प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और संकर्षण को भी नमस्कार है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

इति मूर्त्यभिधानेन मन्त्रमूर्तिममूर्तिकम् ।
यजते यज्ञपुरुषं स सम्यग्दर्शनः पुमान् ॥३८॥

पदच्छेद—

इति मूर्ति अभिधानेन, मन्त्र मूर्तिम् अमूर्तिकम् ।
यजते यज्ञपुरुषम्, सः सम्यक् दर्शनः पुमान् ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	इस	यजते	८.	पूजन करता है
मूर्ति	६.	चतुर्व्यूह मूर्ति के	यज्ञ पुरुषम्	४.	यज्ञ भगवान् का
अभिधानेन	७.	नाम से	सः	९.	वह
मन्त्र	२.	मन्त्र रूप	सम्यक्	१०.	वास्तविक
मूर्तिम्	३.	मूर्ति वाले	दर्शनः	१२.	ज्ञान से (परिपूर्ण है)
अमूर्तिकम् ।	१.	(जो पुरुष) प्राकृतमूर्ति से रहित	पुमान् ॥	१०.	पुरुष

श्लोकार्थ—जो पुरुष प्राकृत मूर्ति से रहित मन्त्र रूप मूर्तिवाले यज्ञ भगवान् का इस चतुर्व्यूह मूर्ति के नाम से पूजन करता है; वह पुरुष वास्तविक ज्ञान से परिपूर्ण है ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

इमं स्वनिगमं ब्रह्मन्नवेत्य मदनुष्ठितम् ।
अदान्मे ज्ञानमैश्वर्यं स्वस्मिन् भावं च केशवः ॥३९॥

पदच्छेद—

इमम् स्वनिगमम् ब्रह्मन्, अवेत्य मद् अनुष्ठितम् ।
अदात् मे ज्ञानम् ऐश्वर्यम्, स्वस्मिन् भावम् च केशवः ॥

शब्दार्थ—

इमम्, स्व	२.	इस, अपनी	मे	८.	मुझे
निगमम्	३.	आज्ञा को	ज्ञानम्	९.	आत्मज्ञान
ब्रह्मन्	१.	हे व्यास जी !	ऐश्वर्यम्	१०.	प्रभुता
अवेत्य	६.	जानकर	स्वस्मिन्	१२.	अपनी
मद्	४.	मेरे से	भावम्	१३.	भावरूपा (प्रेमाभक्ति)
अनुष्ठितम् ।	५.	पालन की जाती हुई	च	११.	और
अदात्	१४.	प्रदान की है	केशवः ॥	७.	श्री कृष्ण भगवान् ने

श्लोकार्थ—हे व्यास जी ! इस अपनी आज्ञा को मेरे से पालन की जाती हुई जानकर श्रीकृष्ण भगवान् ने मुझे आत्मज्ञान, प्रभुता और अपनी भावरूपा प्रेमाभक्ति प्रदान की है ।

चत्वारिंशः श्लोकः

त्वमप्यदभ्रश्रुत विश्रुतं विभोः,
समाप्यते येन विदां बुभुत्सितम्।
आख्याहि दुःखैर्मुहुरर्दितात्मनां,
संक्लेशनिर्वाणमुशन्ति नान्यथा ॥४०॥

पदच्छेद—

त्वम् अपि अदभ्र श्रुत विश्रुतम् विभोः,
समाप्यते येन विदाम् बुभुत्सितम्।
आख्याहि दुःखैः मुहुः अर्दित आत्मनाम्,
संक्लेश निर्वाणम् उशन्ति न अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

त्वम्, अपि	२.	आप भी	दुःखैः, मुहुः	३.	दुःखों के द्वारा, बार-बार
अदभ्र श्रुत	१.	हे बहुश्रुत व्यास जी !	अर्दित	५.	पीड़ित (प्राणियों के लिये)
विश्रुतम्	७.	कीर्ति का	आत्मनाम्,	४.	शरीर और मन से
विभोः,	६.	व्यापक भगवान् की	संक्लेश	१२.	(तथा उसी के द्वारा) कष्टों से
समाप्यते	११.	शान्त होती है	निर्वाणम्	१३.	मुक्ति
येन, विदाम्	९.	जिससे, विद्वानों की	उशन्ति	१४.	मिलती है
बुभुत्सितम्।	१०.	जिज्ञासा	न	१६.	नहीं (मिलती है)
आख्याहि	८.	व्याख्यान करें	अन्यथा ॥	१५.	दूसरे उपायों से

श्लोकार्थ—हे बहुश्रुत व्यास जी ! आप भी दुःखों के द्वारा बार-बार शरीर और मन से पीड़ित प्राणियों के लिये व्यापक भगवान् की कीर्तिका व्याख्यान करें, जिससे विद्वानों की जिज्ञासा शान्त होती है तथा उसी के द्वारा कष्टों से मुक्ति मिलती हैं। दूसरे उपायों से नहीं मिलती है।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
व्यासनारदसंवादे पञ्चमः अध्यायः ॥५॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
प्रथमः स्कन्धः
अथ षष्ठः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— एवं निशम्य भगवान् देवर्षेर्जन्म कर्म च।
भूयः पप्रच्छ तं ब्रह्मन् व्यासः सत्यवती सुतः ॥१॥

पदच्छेद—

एवम् निशम्य भगवान्, देवर्षेः जन्म कर्म च।
भूयः पप्रच्छ तम् ब्रह्मन्, व्यासः सत्यवती सुतः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	६.	इस प्रकार	**भूयः**	१३.	फिर
निशम्य	११.	सुनकर	**पप्रच्छ**	१४.	प्रश्न किया था
भगवान्	४.	भगवान्	**तम्**	१२.	उनसे
देवर्षेः	७.	देवर्षि नारदजी के	**ब्रह्मन्**	१.	हे ब्रह्मज्ञानी शौनकजी !
जन्म	८.	जन्म	**व्यासः**	५.	वेदव्यास जी ने
कर्म	१०.	कर्म को	**सत्यवती**	२.	सत्यवती
च।	९.	और	**सुतः ॥**	३.	नन्दन

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मज्ञानी शौनकजी ! सत्यवती नन्दन भगवान् वेदव्यासजी ने इस प्रकार देवर्षि नारद जी के जन्म और कर्म को सुनकर उनसे फिर प्रश्न किया था।

द्वितीयः श्लोकः

व्यास उवाच— भिक्षुभिर्विप्रवसिते विज्ञानादेष्टृभिस्तव।
वर्तमानो वयस्याद्ये ततः किमकरोद्भवान् ॥२॥

पदच्छेद—

भिक्षुभिः विप्रवसिते, विज्ञान आदेष्टृभिः तव।
वर्तमानः वयसि आद्ये, ततः किम् अकरोत् भवान् ॥

शब्दार्थ—

भिक्षुभिः	४.	महात्माओं के	**वयसि**	८.	अवस्था में
विप्रवसिते	५.	चले जाने पर	**आद्ये**	७.	बालक
विज्ञान	२.	आत्म-ज्ञान का	**ततः**	६.	तब
आदेष्टृभिः	३.	उपदेश देने वाले	**किम्**	११.	क्या
तव।	१.	आपको	**अकरोत्**	१२.	किया
वर्तमानः	९.	रहते हुये	**भवान् ॥**	१०.	आपने

श्लोकार्थ—आपको आत्म-ज्ञान का उपदेश देने वाले महात्माओं के चले जाने पर तब बालक अवस्था में रहते हुये आपने क्या किया ?

तृतीयः श्लोकः

स्वायम्भुव कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः ।
कथं चेदमुदस्राक्षीः काले प्राप्ते कलेवरम् ॥३॥

पदच्छेद—

स्वायम्भुव कया वृत्त्या, वर्तितम् ते परम् वयः ।
कथम् च इदम् उदस्राक्षीः, काले प्राप्ते कलेवरम् ॥

शब्दार्थ—

स्वायम्भुव	१.	हे ब्रह्मा के मानस पुत्र !	कथम्	११.	(आपने) किस प्रकार
कया	५.	किस	च	८.	और
वृत्त्या	६.	प्रकार	इदम्	१२.	इस
वर्तितम्	७.	व्यतीत हुई	उदस्राक्षीः	१४.	परित्याग किया
ते	२.	आपकी	काले	९.	मृत्यु का समय
परम्	३.	शेष	प्राप्ते	१०.	आ जाने पर
वयः ।	४.	आयु	कलेवरम् ॥	१३.	शरीर का

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मा के मानस पुत्र ! आपकी शेष आयु किस प्रकार व्यतीत हुई और मृत्यु का समय आ जाने पर आपने किस प्रकार इस शरीर का परित्याग किया ?

चतुर्थः श्लोकः

प्राक्कल्पविषयामेतां स्मृतिं ते सुरसत्तम ।
न ह्येष व्यवधात्काल एष सर्वनिराकृतिः ॥४॥

पदच्छेद—

प्राक् कल्प विषयाम् एताम् , स्मृतिम् ते सुर सत्तम ।
न हि एषः व्यवधात् कालः, एषः सर्व निराकृतिः ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	४.	पूर्व	न	१०.	(क्यों) नहीं
कल्प	५.	जन्म से	हि	१२.	क्योंकि
विषयाम्	६.	सम्बन्धित	एषः	२.	इस
एताम्	८.	इस	व्यवधात्	११.	नष्ट किया
स्मृतिम्	९.	स्मरण शक्ति को	कालः	३.	काल ने
ते	७.	आपकी	एषः	१३.	यह (काल)
सुर सत्तम ।	१.	देवताओं से पूजित हे नारद जी !	सर्व	१४.	सभी पदार्थों को
			निराकृतिः ॥	१५.	नष्ट कर देने वाला है

श्लोकार्थ—देवताओं से पूजित हे नारद जी ! इस काल ने पूर्व जन्म से संबन्धित आपकी इस स्मरण शक्ति को क्यों नहीं नष्ट किया ? क्योंकि यह काल सभी पदार्थों को नष्ट कर देने वाला है ।

पञ्चमः श्लोकः

नारद उवाच---

भिक्षुभिर्विप्रवसिते विज्ञानादेष्टृभिर्मम ।
वर्तमानो वयस्याद्ये तत एतदकारषम् ॥५॥

पदच्छेद—

भिक्षुभिः विप्रवसिते, विज्ञान आदेष्टृभिः मम ।
वर्तमानः वयसि आद्ये, ततः एतद् अकारषम् ॥

शब्दार्थ—

भिक्षुभिः	४.	महात्माओं के	वयसि	८.	अवस्था में
विप्रवसिते	५.	चले जाने पर	आद्ये	७.	प्रथम
विज्ञान	२.	आत्म ज्ञान का	ततः	६.	तदनन्तर
आदेष्टृभिः	३.	उपदेश देने वाले	एतद्	१०.	यह
मम ।	१.	मुझे	अकारषम् ॥	११.	किया
वर्तमानः	९.	रहते हुये (मैंने)			

श्लोकार्थ—मुझे आत्म-ज्ञान का उपदेश देने वाले महात्माओं के चले जाने पर तदनन्तर प्रथम अवस्था में रहते हुये मैंने यह किया ।

षष्ठः श्लोकः

एकात्मजा मे जननी योषिन्मूढा च किङ्करी ।
मय्यात्मजेऽनन्यगतौ चक्रे स्नेहानुबन्धनम् ॥६॥

पदच्छेद—

एक आत्मजा मे जननी, योषित् मूढा च किंकरी ।
मयि आत्मजे अनन्य गतौ, चक्रे स्नेह अनुबन्धनम् ॥

शब्दार्थ—

एक	१.	अकेली	किंकरी ।	६.	दासी
आत्मजा	२.	सन्तान वाली	मयि, आत्मजे	१०.	मुझ, पुत्र में
मे	७.	मेरी	अनन्यगतौ	९.	अन्य सहायक विहीन
जननी	८.	माँ ने	चक्रे	१३.	बाँधा था
योषित्	३.	जाति से स्त्री	स्नेह	११.	स्नेह का
मूढा	४.	अज्ञानी	अनुबन्धनम् ॥	१२.	प्रगाढ़ बन्धन
च	५.	और			

श्लोकार्थ—अकेली सन्तान वाली, जाति से स्त्री, अज्ञानी और दासी मेरी माँ ने अन्य सहायक-विहीन मुझ पुत्र में स्नेह का प्रगाढ़ बन्धन बाँधा था ।

सप्तमः श्लोकः

सास्वतन्त्रा न कल्पाऽऽसीद्योगक्षेमं ममेच्छती ।
ईशस्य हि वशे लोको योषा दारुमयी यथा ॥७॥

पदच्छेद—

सा अस्वतन्त्रा न कल्पा आसीत्, योग क्षेमम् मम इच्छती ।
ईशस्य हि वशे लोकः, योषा दारुमयी यथा ॥

शब्दार्थ—

सा	५.	वह (माँ)	ईशस्य	१३.	ईश्वर के
अस्वतन्त्रा	४.	पराधीन	हि	१४.	ही
न	७.	नहीं	वशे	१५.	अधीन है
कल्पा	६.	(कुछ करने में) समर्थ	लोकः	१२.	संसार
आसीत्	८.	थी (क्योंकि)	योषा	१०.	कठपुतली की
योग क्षेमम्	२.	योगक्षेम	दारुमयी	६.	काठ की
मम	१.	मेरा	यथा ॥	११.	भाँति
इच्छती ।	३.	चाहती हुई (भी)			

श्लोकार्थ—मेरा योग-क्षेम चाहती हुई भी पराधीन वह माँ कुछ करने में समर्थ नहीं थी; क्योंकि काठ की कठपुतली की भाँति संसार ईश्वर के ही अधीन है ।

अष्टमः श्लोकः

अहं च तद्ब्रह्मकुले ऊषिवांस्तदपेक्षया ।
दिग्देशकालाव्युत्पन्नो बालकः पञ्चहायनः ॥८॥

पदच्छेद—

अहम् च तद् ब्रह्म कुले, ऊषिवान् तद् अपेक्षया ।
दिग् देश काल अव्युत्पन्नः, बालकः पञ्च हायनः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	६.	मैं	अपेक्षया ।	६.	कारण
च	८.	ही	दिग्	१.	दिशा
तद्	१०.	उस	देश काल	२.	देश और काल से
ब्रह्म कुले	११.	ब्रह्म कुल में	अव्युत्पन्नः	३.	अनजान
ऊषिवान्	१२.	रहा	बालकः	५.	बालक
तद्	७.	उसके	पञ्च हायनः ॥	४.	पाँच वर्ष का

श्लोकार्थ—दिशा, देश और काल से अनजान, पाँच वर्ष का बालक मैं उसके ही कारण उस ब्रह्म-कुल में रहा ।

नवमः श्लोकः

एकदा निर्गतां गेहाद्दुहन्तीं निशि गां पथि ।
सर्पोऽदशत्पदा स्पृष्टः कृपणां कालचोदितः ॥९॥

पदच्छेद—

एकदा निर्गताम् गेहात् , दुहन्तीम् निशि गाम् पथि ।
सर्पः अदशत् पदा स्पृष्टः, कृपणाम् काल चोदितः ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एकबार	सर्पः	१३.	सर्प ने
निर्गताम्	६.	निकली हुई	अदशत्	१४.	डस लिया
गेहात्	५.	घर से	पदा	९.	पैर से
दुहन्तीम्	३.	दूहने के लिये	स्पृष्टः	१०.	छू जाने पर
निशि	४.	रात्रि में	कृपणाम्	७.	(उस) बेचारी को
गाम्	२.	गाय को	काल	११.	काल से
पथि ।	८.	मार्ग में	चोदितः ॥	१२.	प्रेरित होकर

श्लोकार्थ—एक बार गाय को दूहने के लिये रात्रि में घर से निकली हुई उस बेचारी को मार्ग में पैर से छू जाने पर काल से प्रेरित होकर सर्प ने डस लिया ।

दशमः श्लोकः

तदा तदहमीशस्य भक्तानां शमभीप्सतः ।
अनुग्रहं मन्यमानः प्रातिष्ठं दिशमुत्तराम् ॥१०॥

पदच्छेद—

तदा तद् अहम् ईशस्य, भक्तानाम् शम् अभीप्सतः ।
अनुग्रहम् मन्यमानः, प्रातिष्ठम् दिशम् उत्तराम् ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	तब	अभीप्सतः ।	६.	चाहने वाले
तद्	३.	उसे	अनुग्रहम्	८.	कृपा
अहम्	२.	मैं	मन्यमानः	९.	मानता हुआ
ईशस्य	७.	भगवान् की	प्रातिष्ठम्	१२.	चल दिया
भक्तानाम्	४.	भक्तों का	दिशम्	११.	दिशा में
शम्	५.	मंगल	उत्तराम् ॥	१०.	उत्तर

श्लोकार्थ—तब मैं उसे भक्तों का मंगल चाहने वाले भगवान् की कृपा मानता हुआ उत्तर दिशा में चल दिया ।

एकादशः श्लोकः

स्फीताञ्जनपदांस्तत्र पुरग्रामव्रजाकरान् ।
खेटखर्वटवाटीश्च वनान्युपवनानि च ॥११॥

पदच्छेद—

स्फीतान् जनपदान् तत्र, पुरग्राम व्रज आकरान् ।
खेट खर्वट वाटीः च, वनानि उपवनानि च ॥

शब्दार्थ—

स्फीतान्	२.	धन-धान्य से सम्पन्न	खेट	७.	खेड़े
जनपदान्	३.	देशों	खर्वट	८.	पड़ाव
तत्र	१.	(मैंने) उस मार्ग में	वाटीः	९.	वाटिकाओं
पुर ग्राम	४.	नगरों ग्रामों	च	१०.	और
व्रज	५.	पुरवे	वनानि	११.	वन
आकरान् ।	६.	खानें	उपवनानि	१३.	उपवनों को देखा
			च ॥	१२.	तथा

श्लोकार्थ—मैंने उस मार्ग में धन-धान्य से सम्पन्न देशों, नगरों, ग्रामों, पुरवे, खानें, खेड़े, पड़ाव, वाटिकाओं और वन तथा उपवनों को देखा ।

द्वादशः श्लोकः

चित्रधातुविचित्राद्रीनिभभग्नभुजद्रुमान् ।
जलाशयाञ्छिवजलान्नलिनीः सुरसेविताः ॥१२॥

पदच्छेद—

चित्र धातु विचित्र अद्रीन्, इभ भग्न भुज द्रुमान् ।
जलाशयान् शिवजलान्, नलिनीः सुरसेविताः ॥

शब्दार्थ—

चित्र धातु	१.	(मैंने) रंग विरंगी धातुओं से	द्रुमान् ।	७.	वृक्षों को
विचित्र	२.	अद्भुत	जलशयान्	९.	सरोवरों को
अद्रीन्	३.	पर्वतों को	शिवजलान्	८.	शीतल जल वाले
इभ	४.	हाथियों से	नलिनीः	१२.	कमलों को (देखा)
भग्न	५.	तोड़े गये	सुर	१०.	(तथा) देवताओं के
भुज	६.	शाखाओं वाले	सेविताः ॥	११.	काम आने वाले

श्लोकार्थ—मैंने रंग-विरंगी धातुओं से अद्भुत पर्वतों को, हाथियों से तोड़े गये शाखाओं वाले वृक्षों को, शीतल जल वाले सरोवरों को तथा देवताओं के काम आने वाले कमलों को देखा ।

त्रयोदशः श्लोकः

चित्रस्वनैः पत्ररथैर्विभ्रमद् भ्रमरश्रियः ।
नलवेणुशरस्तन्बकुशकीचकगह्वरम् ॥१३॥

पदच्छेद—

चित्र स्वनैः पत्ररथैः, विभ्रमत् भ्रमर श्रियः ।
नल वेणु शर स्तम्ब, कुश कीचक गह्वरम् ॥

शब्दार्थ—

चित्र	१. (मैंने) अनेक प्रकार के	नल	७. नरकट
स्वनैः	२. शब्द करने वाले	वेणु, शर	८. बेंत, सरकण्डे
पत्ररथैः	३. पक्षियों के साथ	स्तम्ब	९. घास-फूस
विभ्रमत्	६. सुशोभित (तथा)	कुश	१०. कुश (और)
भ्रमर	४. भौरों की	कीचक	११. बाँसों के कारण
श्रियः ।	५. शोभा से	गह्वरम् ॥	१२. घने (वन को देखा)

श्लोकार्थ—मैंने अनेक प्रकार के शब्द करने वाले पक्षियों के साथ भौरों की शोभा से सुशोभित तथा नरकट, बेंत, सरकण्डे, घास-फूस, कुश और बाँसों के कारण घने वन को देखा ।

चतुर्दशः श्लोकः

एक एवातियातोऽहमद्राक्षं विपिनं महत् ।
घोरं प्रतिभयाकारं व्यालोलूकशिवाजिरम् ॥१४॥

पदच्छेद—

एकः एव अतियातः अहम्, अद्राक्षम् विपिनम् महत् ।
घोरम् प्रतिभय आकारम्, व्याल उलूक शिवा अजिरम् ॥

शब्दार्थ—

एकः	१. अकेले	घोरम्	७. भयानक (तथा)
एव	२. ही	प्रतिभय	६. दूसरे भय के समान
अतियातः	३. जाता हुआ	आकारम्	५. शरीरधारी
अहम्	४. मैंने	व्याल	८. सर्प
अद्राक्षम्	१४. देखा	उलूक	९. उल्लू और
विपिनम्	१३. जंगल को	शिवा	१०. सियारों से
महत् ।	१२. विशाल	अजिरम् ॥	११. व्याप्त

श्लोकार्थ—अकेले ही जाता हुआ मैंने शरीरधारी दूसरे भय के समान भयानक तथा सर्प, उल्लू और सियारों से व्याप्त विशाल जंगल को देखा ।

पञ्चदशः श्लोकः

परिश्रान्तेन्द्रियात्माहं तृट्परीतो बुभुक्षितः ।
स्नात्वा पीत्वा ह्रदे नद्या उपस्पृष्टो गतश्रमः ॥१५॥

पदच्छेद—

परिश्रान्त इन्द्रिय आत्मा अहम्, तृट् परीतः बुभुक्षितः ।
स्नात्वा पीत्वा ह्रदे नद्याः, उपस्पृष्टः गत श्रमः ॥

शब्दार्थ—

परिश्रान्त	३.	थका हुआ	स्नात्वा	१०.	स्नान (तथा)
इन्द्रिय	१.	अङ्गों (और)	पीत्वा	११.	जलपान करके
आत्मा	२.	शरीर से	ह्रदे	८.	कुण्ड में
अहम्	६.	मैं	नद्याः	७.	नदी के
तृट् परीतः	५.	प्यास से व्याकुल	उपस्पृष्टः	९.	आचमन
बुभुक्षितः ।	४.	भूखा (और)	गत श्रमः ॥	१२.	थकावट से रहित हो गया

श्लोकार्थ—अङ्गों और शरीर से थका हुआ, भूखा और प्यास से व्याकुल मैं नदी के कुण्ड में आचमन, स्नान तथा जलपान करके थकावट से रहित हो गया ।

षोडशः श्लोकः

तस्मिन्निर्मनुजेऽरण्ये पिप्पलोपस्थ आस्थितः ।
आत्मनाऽऽत्मानमात्मस्थं यथाश्रुतमचिन्तयम् ॥१६॥

पदच्छेद—

तस्मिन् निर्मनुजे अरण्ये, पिप्पल उपस्थः आस्थितः ।
आत्मना आत्मानम् आत्मस्थम् , यथा श्रुतम् अचिन्तयम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उस	आत्मना	११.	अपने से
निर्मनुजे	२.	निर्जन	आत्मानम्	८.	परब्रह्म का
अरण्ये	३.	वन में	आत्मस्थम्	७.	आत्मा में स्थित
पिप्पल	४.	पीपल वृक्ष के	यथा	९.	जैसा
उपस्थः	५.	नीचे	श्रुतम्	१०.	महात्माओं से सुना था
आस्थितः ।	६.	आसन से बैठा हुआ (मैं)	अचिन्तयम् ॥	१२.	चिन्तन करने लगा

श्लोकार्थ—उस निर्जन वन में पीपल वृक्ष के नीचे आसन से बैठा हुआ मैं आत्मा में स्थित परब्रह्म का, जैसा महात्माओं से सुना था, अपने से चिन्तन करने लगा ।

सप्तदशः श्लोकः

ध्यायतश्चरणाम्भोजं भावनिर्जितचेतसा ।
औत्कण्ठ्याश्रुकलाक्षस्य हृद्यासीन्मे शनैर्हरिः ॥१७॥

पदच्छेद—

ध्यायतः चरण अम्भोजम्, भाव निर्जित चेतसा ।
औत्कण्ठ्य अश्रु कला अक्षस्य, हृदि आसीत् मे शनैः हरिः ॥

शब्दार्थ—

ध्यायतः	६. ध्यान करते हुये (तथा)	अश्रु कला	८. आँसुओं से छलकते
चरण	४. भगवान् के चरण	अक्षस्य	९. नेत्र वाले
अम्भोजम्	५. कमल का	हृदि	११. हृदय में
भाव	१. भक्ति-भाव से	आसीत्	१४. प्रकट हो गये
निर्जित	२. वश में किये हुये	मे	१०. मेरे
चेतसा ।	३. चित्त से	शनैः	१३. धीरे से
औत्कण्ठ्य	७. उत्कट लालसा के कारण	हरिः ॥	१२. भगवान् श्रीहरि

श्लोकार्थ—भक्ति-भाव से वश में किये हुय चित्त से भगवान् के चरण कमल का ध्यान करते हुये तथा उत्कट लालसा के कारण आँसुआ से छलकते नेत्र वाले मेरे हृदय में भगवान् श्रीहरि धीरे से प्रकट हो गये ।

अष्टादशः श्लोकः

प्रेमातिभरनिर्भिन्नपुलकाङ्गोऽतिनिर्वृतः ।
आनन्दसम्प्लवे लीनो नापश्यमुभयं मुने ॥१८॥

पदच्छेद—

प्रेम अतिभर निर्भिन्न, पुलक अङ्ग अति निर्वृतः ।
आनन्द सम्प्लवे लीनः, न अपश्यम् उभयम् मुने ॥

शब्दार्थ—

प्रेम	२. प्रेम के	आनन्द, सम्प्लवे	८. आनन्द की, बाढ़ में
अतिभर	३. अत्यन्त बढ़ जाने से	लीनः	९. डूबा हुआ (उस समय)
निर्भिन्न	४. आनन्दित (तथा)	न	११. नहीं
पुलक	५. पुलकित	अपश्यम्	१२. जान सका
अङ्ग	६. अंगों वाला (मैं)	उभयम्	१०. अपने को और भगवान् को
अतिनिर्वृतः ।	७. अतिशान्त हो गया (और)	मुने ॥	१. हे व्यास जी !

श्लोकार्थ—हे व्यास जी ! प्रेम के अत्यन्त बढ़ जाने से आनन्दित तथा पुलकित अङ्गों वाला मैं अतिशान्त हो गया और आनन्द की बाढ़ में डूबा हुआ उस समय अपने को और भगवान् को नहीं जान सका ।

एकोनविंशः श्लोकः

रूपं भगवतो यत्तन्मनःकान्तं शुचापहम् ।
अपश्यन् सहसोत्तस्थे वैक्लव्याद्दुर्मना इव ॥१९॥

पदच्छेद—

रूपम् भगवतः यत् तत्, मनः कान्तम् शुचा अपहम् ।
अपश्यन् सहसा उत्तस्थे, वैक्लव्यात् दुर्मनाः इव ॥

शब्दार्थ—

रूपम्	६.	स्वरूप है	**अपहम् ।**	५.	दूर करने वाला
भगवतः	१.	भगवान् का	**अपश्यन्**	९.	नहीं देखता हुआ (मैं)
यत्	२.	जो	**सहसा**	८.	अकस्मात्
तत्	७.	उसे	**उत्तस्थे**	१३.	उठ खड़ा हुआ
मनः कान्तम्	३.	मनो हारी (और)	**वैक्लव्यात्**	१२.	विकलता से
शुचा	४.	शोक को	**दुर्मनाः**	१०.	उदासीन की
			इव ॥	११.	भाँति

श्लोकार्थ—भगवान् का जो मनोहारी और शोक को दूर करने वाला स्वरूप है, उसे अकस्मात् नहीं देखता हुआ मैं उदासीन की भाँति विकलता से उठ खड़ा हुआ ।

विंशः श्लोकः

दिदृक्षुस्तदहं भूयः प्रणिधाय मनो हृदि ।
वीक्षमाणोऽपि नापश्यमवितृप्त इवातुरः ॥२०॥

पदच्छेद—

दिदृक्षुः तद् अहम् भूयः, प्रणिधाय मनः हृदि ।
वीक्षमाणः अपि न अपश्यम्, अवितृप्तः इव आतुरः ॥

शब्दार्थ—

दिदृक्षुः	२.	दर्शन का इच्छुक	**वीक्षमाणः**	११.	ध्यान लगाने पर
तद्	१.	उस रूप के	**अपि**	१२.	भी (उस रूप को)
अहम्	६.	मैं	**न**	१३.	नहीं
भूयः	७.	फिर से	**अपश्यम्**	१४.	देख सका
प्रणिधाय	१०.	समाहित करके	**अवितृप्तः**	३.	अतृप्त
मनः	९.	मन को	**इव**	४.	सा
हृदि ।	८.	हृदय में	**आतुरः ॥**	५.	व्याकुल होकर

श्लोकार्थ—उस रूप के दर्शन का इच्छुक, अतृप्त सा व्याकुल होकर मैं फिर से हृदय में मन को समाहित करके ध्यान लगाने पर भी उस रूप को नहीं देख सका ।

एकविंशः श्लोकः

एवं यतन्तं विजने मामाहागोचरो गिराम् ।
गम्भीरश्लक्ष्णया वाचा शुचः प्रशमयन्निव ॥२१॥

पदच्छेद—

एवम् यतन्तम् विजने, माम् आह अगोचरः गिराम् ।
गम्भीर श्लक्ष्णया वाचा, शुचः प्रशमयन् इव ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	इस प्रकार से	गम्भीर	७.	धीर (और)
यतन्तम्	५.	प्रयास करने वाले	श्लक्ष्णया	८.	मधुर
विजने	३.	निर्जन वन में	वाचा	९.	आकाशवाणी के द्वारा
माम्	६.	मुझसे	शुचः	१०.	शोक को
आह	१३.	कहा	प्रशमयन्	११.	शान्त करते हुये
अगोचरः	२.	अविषय (भगवान् ने)	इव ॥	१२.	से
गिराम् ।	१.	वाणी के			

श्लोकार्थ—वाणी के अविषय भगवान् ने निर्जन वन में इस प्रकार से प्रयास करने वाले मुझसे धीर और मधुर आकाशवाणी के द्वारा शोक को शान्त करते हुये-से कहा ।

द्वाविंशः श्लोकः

हन्तास्मिञ्जन्मनि भवान्न मां द्रष्टुमिहार्हति ।
अविपक्वकषायाणां दुर्दर्शोऽहं कुयोगिनाम् ॥२२॥

पदच्छेद—

हन्त अस्मिन् जन्मनि भवान्, न माम् द्रष्टुम् इह अर्हति ।
अविपक्व कषायाणाम्, दुर्दर्शः अहम् कुयोगिनाम् ॥

शब्दार्थ—

हन्त	१.	खेद है !	इह	६.	यहाँ
अस्मिन्	२.	इस	अर्हति ।	८.	समर्थ
जन्मनि	३.	जन्म में	अविपक्व	११.	अतृप्त
भवान्	४.	आप	कषायाणाम्	१२.	वासनाओं वाले
न	९.	नहीं (हैं)	दुर्दर्शः	१४.	नहीं देखा जा सकता हूँ
माम्	५.	मुझे	अहम्	१०.	क्योंकि (मैं)
द्रष्टुम्	७.	देखने में	कुयोगिनाम् ॥	१३.	अधूरे योगियों से

श्लोकार्थ—खेद है ! इस जन्म में आप मुझे यहाँ देखने में समर्थ नहीं हैं; क्योंकि मैं अतृप्त वासनाओं वाले अधूरे योगियों से नहीं देखा जा सकता हूँ ।

त्रयोविंशः श्लोकः

सकृद् यद् दर्शितं रूपमेतत्कामाय तेऽनघ।
मत्कामः शनकैः साधु सर्वान्मुञ्चति हृच्छयान् ॥२३॥

पदच्छेद—— सकृद् यद् दर्शितम् रूपम् , एतत् कामाय ते अनघ।
मत्कामः शनकैः साधु, सर्वान् मुञ्चति हृत् शयान् ॥

शब्दार्थ——

सकृद्	२.	(मैंने) एकबार	मत्कामः	९.	मेरी कामना करने वाला (साधक)
यद्	३.	जो	शनकैः	१३.	शीघ्र
दर्शितम्	५.	दिखाया है	साधु	१४.	भली भाँति
रूपम्	४.	स्वरूप	सर्वान्	१२.	सभी (वासनाओं) को
एतत्	६.	वह	मुञ्चति	१५.	छोड़ देता है
कामाय	८.	मनोरथ सिद्धि के लिये पर्याप्त है	हृत्	१०.	हृदय में
ते	७.	तुम्हारी	शयान् ॥	११.	स्थित
अनघ।	१.	हे निष्पाप नारद जी !			

श्लोकार्थ——हे निष्पाप नारद जी ! मैंने एक बार जो स्वरूप दिखाया है, वह तुम्हारी मनोरथ सिद्धि के लिये पर्याप्त है। मेरी कामना करने वाला साधक हृदय में स्थित सभी वासनाओं को शीघ्र भली-भाँति छोड़ देता है।

चतुर्विंशः श्लोकः

सत्सेवयादीर्घयापि जाता मयि दृढा मतिः।
हित्वावद्यमिमं लोकं गन्ता मज्जनतामसि ॥२४॥

पदच्छेद—— सत् सेवया अदीर्घया अपि, जाता मयि दृढा मतिः।
हित्वा अवद्यम् इमम् लोकम्, गन्ता मत् जनताम् असि ॥

शब्दार्थ——

सत्	१.	संतों की	हित्वा	१२.	छोड़कर
सेवया	२.	सेवा	अवद्यम्	१०.	निन्दित
अदीर्घया	३.	लम्बे समय तक न होने पर	इमम्	९.	(अतः) इस
अपि	४.	भी (उससे)	लोकम्	११.	लोक को
जाता	८.	उत्पन्न हो गई	गन्ता	१५.	प्राप्त
मयि	५.	मेरे में (तुम्हारी)	मत्	१३.	तुम (मेरे)
दृढा	६.	स्थिर	जनताम्	१४.	पार्षद पद को
मतिः।	७.	बुद्धि	असि ॥	१६.	करोगे

श्लोकार्थ——संतों की सेवा लम्बे समय तक न होने पर भी उससे मेरे में तुम्हारी स्थिर बुद्धि उत्पन्न हो गई। अतः इस निन्दित लोक को छोड़कर तुम मेरे पार्षद पद को प्राप्त करोगे।

पञ्चविंशः श्लोकः

मतिर्मयि निबद्धेयं न विपद्येत कर्हिचित् ।
प्रजासर्गनिरोधेऽपि स्मृतिश्च मदनुग्रहात् ॥२५॥

पदच्छेद—

मतिः मयि निबद्धा इयम्, न विपद्येत कर्हिचित् ।
प्रजा सर्ग निरोधे अपि, स्मृतिः च मद् अनुग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

मतिः	३.	बुद्धि	**प्रजा सर्ग**	८.	संसार की सृष्टि का
मयि, निबद्धा	१.	मेरे में, स्थित (तुम्हारी)	**निरोधे, अपि**	९.	प्रलय होने पर, भी
इयम्	२.	यह	**स्मृतिः**	१२.	स्मरण शक्ति (नष्ट नहीं होगी)
न	५.	नहीं	**च**	७.	और
विपद्येत	६.	विचलित होगी	**मद्**	१०.	मेरी
कर्हिचित् ।	४.	कभी भी	**अनुग्रहात् ॥**	११.	कृपा से (तुम्हारी)

श्लोकार्थ—मेरे में स्थित तुम्हारी यह बुद्धि कभी भी विचलित नहीं होगी और संसार की सृष्टि का प्रलय होने पर भी मेरी कृपा से तुम्हारी स्मरण शक्ति भी नष्ट नहीं होगी ।

षड्विंशः श्लोकः

एतावदुक्त्वोपरराम तन्महद्, भूतं नभोलिङ्गमलिङ्गमीश्वरम् ।
अहं च तस्मै महतां महीयसे, शीर्ष्णावनामं विदधेऽनुकम्पितः ॥२६॥

पदच्छेद—

एतावद् उक्त्वा उपरराम तद् महत्, भूतम् नभोलिङ्गम् अलिङ्गम् ईश्वरम् ।
अहम् च तस्मै महताम् महीयसे, शीर्ष्णा अवनामम् विदधे अनुकम्पितः ॥

शब्दार्थ—

एतावद्	५. इतना	**अहम्**	१०. मैं
उक्त्वा	६. कहकर	**च**	८. और (उनका)
उपरराम	७. [illegible] हो गये	**तस्मै**	१२. उन भगवान् को
तद्, महत्,	३. वे महान्	**महताम्, महीयसे**	११. तेजस्वियों में भी, तेजस्वी
भूतम्	४. भगवान्	**शीर्ष्णा, अवनामम्**	१३. सिर, झुकाकर
नभोलिङ्गम्	१. आकाश के समान व्यापक	**विदधे**	१४. प्रणाम किया
अलिङ्गम्, ईश्वरम् ।	२. अव्यक्त, (एव) सर्वशक्तिमान्	**अनुकम्पितः ॥**	९. कृपा पात्र

श्लोकार्थ—आकाश के समान व्यापक, अव्यक्त एवं सर्वशक्तिमान् वे महान् भगवान् इतना कहकर शान्त हो गये और उनका कृपा पात्र मैं तेजस्वियों में भी तेजस्वी उन भगवान् को सिर झुकाकर प्रणाम किया ।

सप्तविंशः श्लोकः

नामान्यनन्तस्य हतत्रपः पठन्, गुह्यानि भद्राणि कृतानि च स्मरन् ।
गां पर्यटंस्तुष्टमना गतस्पृहः, कालं प्रतीक्षन् विमदो विमत्सरः ॥२७॥

पदच्छेद—

नामानि अनन्तस्य हत त्रपः पठन्, गुह्यानि भद्राणि कृतानि च स्मरन् ।
गाम् पर्यटन् तुष्ट मनाः गत स्पृहः, कालम् प्रतीक्षन् विमदः विमत्सरः ॥

शब्दार्थ—

नामानि	३. नामों को	गाम्, पर्यटन्	१६. पृथ्वी पर, घूमता रहा
अनन्तस्य	२. श्रीकृष्ण के	तुष्ट मनाः	५. प्रसन्न मन से
हत त्रपः	१. लज्जा से रहित होकर	गत	१०. रहित होकर
पठन्,	४. जपता हुआ	स्पृहः,	९. इच्छा से
गुह्यानि	६. रहस्यमय (एवं)	कालम्	१४. मृत्यु के समय की
भद्राणि, कृतानि	७. मंगलकारी, लीलाओं का	प्रतीक्षन्	१५. प्रतीक्षा करता हुआ
च	१२. और	विमदः	११. निरभिमान
स्मरन् ।	८. ध्यान करता हुआ	विमत्सरः ॥	१३. ईर्ष्या से दूर (मैं)

श्लोकार्थ—लज्जा से रहित होकर श्रीकृष्ण के नामों को जपता हुआ, प्रसन्न मन से रहस्यमय एवं मंगलकारी लालाओं का ध्यान करता हुआ, इच्छा से रहित होकर निरभिमान और ईर्ष्या से दूर मैं मृत्यु के समय की प्रतीक्षा करता हुआ पृथ्वी पर घूमता रहा ।

अष्टाविंशः श्लोकः

एवं कृष्णमतेर्ब्रह्मन्नसक्तस्यामलात्मनः ।
कालः प्रादुरभूत्काले तडित्सौदामनी यथा ॥२८॥

पदच्छेद—

एवम् कृष्ण मतेः ब्रह्मन्, असक्तस्य अमल आत्मनः ।
कालः प्रादुरभूत् काले, तडित् सौदामनी यथा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	कालः	७. (मेरे मृत्य का) समय
कृष्ण मतेः	६. श्रीकृष्ण परायण	प्रादुरभूत्	८. आगया
ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मज्ञानी वेद व्यास जी !	काले	१०. वर्षाकाल में
असक्तस्य	५. आसक्ति रहित (तथा)	तडित्	१२. बिजली (चमक जाती है)
अमल	३. शुद्ध	सौदामनी	११. सुन्दर माला के समान
आत्मनः ।	४. अन्तःकरण वाले	यथा ॥	९. जैसे

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मज्ञानी वेदव्यास जी ! इस प्रकार शुद्ध अन्तःकरण वाले, आसक्ति रहित तथा श्रीकृष्ण परायण मेरे मृत्यु का समय आ गया । जैसे वर्षाकाल में सुन्दर माला के समान बिजली चमक जाती है ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

प्रयुज्यमाने मयि तां शुद्धां भागवतीं तनुम् ।
आरब्धकर्मनिर्वाणो न्यपतत् पाञ्चभौतिकः ॥२९॥

पदच्छेद—

प्रयुज्यमाने मयि ताम् , शुद्धाम् भागवतीम् तनुम् ।
आरब्ध कर्म निर्वाणः, न्यपतत् पाञ्चभौतिकः ॥

शब्दार्थ—

प्रयुज्यमाने	६.	प्राप्त हो जाने पर (और)	**आरब्ध**	७.	प्रारब्ध
मयि	१.	मुझे	**कर्म**	८.	कर्मों का
ताम्	४.	वह	**निर्वाणः**	९.	भोग पूरा हो जाने के बाद
शुद्धाम्	२.	शुद्ध	**न्यपतत्**	११.	छूट गया
भागवतीम्	३.	भगवत् पार्षद की	**पाञ्चभौतिकः ॥**	१०.	पञ्चभूतों से बना (यह शरीर)
तनुम् ।	५.	देह			

श्लोकार्थ—मुझे शुद्ध भगवत् पार्षद की वह देह प्राप्त हो जाने पर और प्रारब्ध कर्मों का भोग पूरा हो जाने के बाद पञ्चभूतों से बना यह शरीर छूट गया ।

त्रिंशः श्लोकः

कल्पान्त इदमादाय शयानेऽम्भस्युदन्वतः ।
शिशयिषोरनुप्राणं विविशेऽन्तरहं विभोः ॥३०॥

पदच्छेद—

कल्प अन्ते इदम् आदाय, शयाने अम्भसि उदन्वतः ।
शिशयिषोः अनुप्राणम्, विविशे अन्तः अहम् विभोः ॥

शब्दार्थ—

कल्प अन्ते	४.	कल्प के अन्त में	**शिशयिषोः**	७.	शयन करने के इच्छुक
इदम्	५.	इस जगत् को	**अनुप्राणम्**	११.	प्राणवायु के साथ
आदाय	६.	समेट कर	**विविशे**	१२.	प्रवेश कर गया
शयाने	३.	शयन करते रहने पर	**अन्तः**	९.	अन्तःकरण में
अम्भसि	२.	जल में (भगवान् के)	**अहम्**	१०.	मैं
उदन्वतः ।	१.	क्षीर सागर के	**विभोः ॥**	८.	ब्रह्मा जी के

श्लोकार्थ—क्षीर सागर के जल में भगवान् के शयन करते रहने पर कल्प के अन्त में इस जगत् को समेट कर शयन करने के इच्छुक ब्रह्मा जी के अन्तःकरण में मैं प्राणवायु के साथ प्रवेश कर गया ।

एकत्रिंशः श्लोकः

सहस्रयुगपर्यन्ते उत्थायेदं सिसृक्षतः ।

मरीचिमिश्रा ऋषयः प्राणेभ्योऽहं च जज्ञिरे ॥३१॥

पदच्छेद—

सहस्र युग पर्यन्ते, उत्थाय इदम् सिसृक्षतः ।

मरीचि मिश्राः ऋषयः, प्राणेभ्यः अहम् च जज्ञिरे ॥

शब्दार्थ—

सहस्र	१.	एक हजार	मरीचि	८.	मरीचि
युग	२.	चतुर्युगी के	मिश्राः	९.	इत्यादि
पर्यन्ते	३.	अन्त में	ऋषयः	१०.	छः ऋषियों के साथ
उत्थाय	४.	उठकर	प्राणेभ्यः	७.	प्राणों से
इदम्	५.	इस जगत् की	अहम्	११.	मैं
सिसृक्षतः ।	६.	सृष्टि करने की इच्छा रखने वाले (ब्रह्मा) जी के	च	१२.	भी
			जज्ञिरे ॥	१३.	उत्पन्न हुआ था

श्लोकार्थ—एक हजार चतुर्युगी के अन्त में उठकर इस जगत् की सृष्टि करने की इच्छा रखने वाले ब्रह्माजी के प्राणों से मरीचि इत्यादि छः ऋषियों के साथ मैं भी उत्पन्न हुआ था ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

अन्तर्बहिश्च लोकांस्त्रीन् पर्येम्यस्कन्दितव्रतः ।

अनुग्रहान्महाविष्णोरविघातगतिः क्वचित् ॥३२॥

पदच्छेद—

अन्तर् बहिः च लोकान् त्रीन्, पर्येमि अस्कन्दित व्रतः ।

अनुग्रहात् महाविष्णोः, अविघात गतिः क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

अन्तर्	५.	अन्दर	व्रतः ।	२.	व्रतधारी (मैं)
बहिः	७.	बाहर	अनुग्रहात्	१०.	कृपा से
च	६.	और	महाविष्णोः	९.	महाविष्णु की
लोकान्	४.	लोकों के	अविघात	१३.	नहीं रुकती (है)
त्रीन्	३.	तीनों	गतिः	११.	(मेरी) गति
पर्येमि	८.	घूमता रहता हूँ	क्वचित् ॥	१२.	कहीं भी
अस्कन्दित	१.	अखण्ड			

श्लोकार्थ—अखण्ड व्रतधारी मैं तीनों लोकों के अन्दर और बाहर घूमता रहता हूँ । महाविष्णु की कृपा से मेरी गति कहीं भी नहीं रुकती है ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

देवदत्तामिमां वीणां स्वरब्रह्मविभूषिताम् ।
मूर्च्छयित्वा हरिकथां गायमानश्चराम्यहम् ॥३३॥

पदच्छेद—

देवदत्ताम् इमाम् वीणाम्, स्वर ब्रह्म विभूषिताम् ।
मूर्च्छयित्वा हरि कथाम्, गायमानः चरामि अहम् ॥

शब्दार्थ—

देवदत्ताम्	५.	देवदत्ता नाम की	मूर्च्छयित्वा	७.	आलाप-तान को छेड़कर
इमाम्	४.	इस	हरि कथाम्	८.	भगवान् की लीला
वीणाम्	६.	वीणा पर	गायमानः	९.	गाता हुआ
स्वर ब्रह्म	२.	नाद-ब्रह्म से	चरामि	१०.	विचरण करता रहता हूँ
विभूषिताम् ।	३.	विभूषित	अहम् ॥	१.	मैं

श्लोकार्थ—मैं नाद-ब्रह्म से विभूषित इस देवदत्ता नाम की वीणा पर आलाप-तान को छेड़कर भगवान् की लीला गाता हुआ विचरण करता रहता हूँ ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

प्रगायतः स्ववीर्याणि तीर्थपादः प्रियश्रवाः ।
आहूत इव मे शीघ्रं दर्शनं याति चेतसि ॥३४॥

पदच्छेद—

प्रगायतः स्व वीर्याणि, तीर्थ पादः प्रिय श्रवाः ।
आहूतः इव मे शीघ्रम्, दर्शनम् याति चेतसि ॥

शब्दार्थ—

प्रगायतः	४.	गाते हुये (जानकर)	इव	८.	भाँति
स्व वीर्याणि	३.	अपनी लीलाओं को	मे	५.	मेरे
तीर्थ पादः	१.	तीर्थ रूप चरण वाले (तथा)	शीघ्रम्	९.	जल्दी
प्रिय श्रवाः ।	२.	सुन्दर यश वाले (भगवान्)	दर्शनम्	१०.	दर्शन
आहूतः	७.	बुलाये हुये की	याति	११.	दे देते हैं
			चेतसि ॥	६.	हृदय में

श्लोकार्थ—तीर्थ रूप चरण वाले तथा सुन्दर यश वाले भगवान् अपनी लीलाओं को गाते हुये जानकर मेरे हृदय में बुलाये हुये की भाँति जल्दी ही दर्शन दे देते हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एतद्ध्यातुरचित्तानां मात्रास्पर्शेच्छया मुहुः ।
भवसिन्धुप्लवो दृष्टो हरिचर्यानुवर्णनम् ॥३५॥

पदच्छेद—

एतद् हि आतुर चित्तानाम्, मात्रा स्पर्श इच्छया मुहुः ।
भव सिन्धु प्लवः दृष्टः, हरि चर्या अनुवर्णनम् ॥

शब्दार्थ—

एतद्	९.	यह	भव	१२.	संसार
हि	११.	ही	सिन्धु	१३.	सागर से (तरने की)
आतुर	५.	अशान्त	प्लवः	१४.	नौका के रूप में
चित्तानाम्	६.	चित्तवाले (प्राणियों के लिये)	दृष्टः	१५.	देखा गया है
मात्रा	१.	पाँचों विषयों के	हरि	७.	श्री कृष्ण
स्पर्श	२.	भोग की	चर्या	८.	लीला का
इच्छया	३.	इच्छा से	अनुवर्णनम् ॥	१०.	गान
मुहुः ।	४.	निरन्तर			

श्लोकार्थ—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द इन पाँचों विषयों के भोग की इच्छा से निरन्तर अशान्त चित्तवाले प्राणियों के लिये श्रीकृष्ण लीला का यह गान ही संसार सागर से तरने की नौका के रूप में देखा गया है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

यमादिभिर्योगपथैः कामलोभहतो मुहुः ।
मुकुन्दसेवया यद्वत्तथाऽऽत्माद्धा न शाम्यति ॥३६॥

पदच्छेद—

यम आदिभिः योग पथैः, काम लोभ हतः मुहुः ।
मुकुन्द सेवया यद्वत्, तथा आत्मा अद्धा न शाम्यति ॥

शब्दार्थ—

यम	१०.	यम-नियम	सेवया	८.	भक्ति से (मिलती है)
आदिभिः	११.	इत्यादि (अष्टांग)	यद्वत्	६.	जितनी (शान्ति)
योग पथैः	१२.	योगमार्ग से	तथा	९.	उतनी (शान्ति)
काम लोभ	२.	वासना और लालच से	आत्मा	५.	मन को
हतः	४.	घायल	अद्धा	१.	हे तात !
मुहुः ।	३.	निरन्तर	न	१३.	नहीं
मुकुन्द	७.	भगवान् श्रीकृष्ण की	शाम्यति ॥	१४.	मिलती है

श्लोकार्थ—हे तात ! वासना और लालच से निरन्तर घायल मन को जितनी शान्ति भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति से मिलती है, उतनी शान्ति यम-नियम इत्यादि अष्टांग योग मार्ग से नहीं मिलती है ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स ऀ तदिदमाख्यातं यत्पृष्टोऽहं त्वयानघ ।
जन्मकर्मरहस्यं मे भवतश्चात्मतोषणम् ॥३७॥

पदच्छेद—

सर्वम् तद् इदम् आख्यातम् , यत् पृष्टः अहम् त्वया अनघ ।
जन्म कर्म रहस्यम् मे; भवतः च आत्म तोषणम् ॥

शब्दार्थ—

सर्वम्	१५.	सब	अनघ ।	१.	हे निष्पाप व्यासजी !
तद्	६.	वह	जन्म, कर्म	८.	जन्म और कर्म का
इदम्	१४.	यह	रहस्यम्	६.	रहस्य
आख्यातम्	१६.	कह दिया	मे	७.	अपने
यत्	४.	जो	भवतः	११.	आपके
पृष्टः	५.	पूछा था	च	१०.	तथा
अहम्	३.	मुझ से	आत्म	१२.	आत्मा की
त्वया	२.	आपने	तोषणम् ॥	१३.	सन्तुष्टि

श्लोकार्थ—हे निष्पाप व्यासजी ! आपने मुझसे जो पूछा था, वह अपने जन्म और कर्म का रहस्य तथा आपके आत्मा की सन्तुष्टि, यह सब कह दिया ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच—

एवं सम्भाष्य भगवान्नारदो वासवीसुतम् ।
आमन्त्र्य वीणां रणयन् ययौ याद्दच्छिको मुनिः ॥३८॥

पदच्छेद—

एवम् सम्भाष्य भगवान्, नारदः वासवी सुतम् ।
आमन्त्र्य वीणाम् रणयन्, ययौ याद्दच्छिकः मुनिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	आमन्त्र्य	५.	आज्ञा लेकर
सम्भाष्य	४.	कहकर (और)	वीणाम्	१०.	वीणा को
भगवान्	७.	भगवान्	रणयन्	११.	बजाते हुये
नारदः	८.	देवर्षि नारद	ययौ	१२.	चल दिये
वासवी	१.	सत्यवती के	याद्दच्छिकः	६.	स्वेच्छाचारी
सुतम् ।	२.	पुत्र व्यासजी से	मुनिः ॥	९.	मुनि

श्लोकार्थ—सत्यवती के पुत्र व्यासजी से इस प्रकार कहकर और आज्ञा लेकर स्वेच्छाचारी भगवान् देवर्षि-नारद मुनि वीणा बजाते हुये चल दिये ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अहो देवर्षिर्धन्योऽयं यत्कीर्तिं शार्ङ्गधन्वनः ।
गायन्माद्यन्निदं तन्त्र्या रमयत्यातुरं जगत् ॥३६॥

पदच्छेद—

अहो देवर्षिः धन्यः अयम् , यत् कीर्तिम् शार्ङ्गधन्वनः ।
गायन् माद्यन् इदम् तन्त्र्या , रमयति आतुरम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहा !	**गायन्**	९.	गान करते हुये (तथा)
देवर्षिः	२.	देवर्षि नारद जी (आप)	**माद्यन्**	१०.	उससे प्रसन्न होते हुये
धन्यः	३.	धन्य हैं	**इदम्**	११.	इस
अयम्	५.	यह (आप)	**तन्त्र्या**	८.	वीणा पर
यत्	४.	जो	**रमयति**	१४.	आनन्दित करते हैं
कीर्तिम्	७.	लीलाओं का	**आतुरम्**	१२.	अशान्त
शार्ङ्गधन्वनः ।	६.	भगवान् श्री कृष्ण की	**जगत् ॥**	१३.	जगत् को

श्लोकार्थ—अहा ! देवर्षि नारदजी आप धन्य हैं; जो यह आप भगवान् श्री कृष्ण की लीलाओं का वीणा पर गान करते हुये तथा उससे प्रसन्न होते हुये इस अशान्त जगत् को आनन्दित करते हैं ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
व्यासनारदसंवादे षष्ठः अध्यायः ॥६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ सप्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

शौनक उवाच—

निर्गते नारदे सूत भगवान् बादरायणः ।
श्रुतवांस्तदभिप्रेतं ततः किमकरोद्विभुः ॥१॥

पदच्छेद—

निर्गते नारदे सूत, भगवान् बादरायणः ।
श्रुतवान् तद् अभिप्रेतम्, ततः किम् अकरोत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

निर्गते	३.	चले जाने पर	तद्	६.	उनके
नारदे	२.	नारद जी के	अभिप्रेतम्	७.	प्रिय वचनों को
सूत	१.	हे सूत जी !	ततः	९.	उसके बाद
भगवान्	४.	भगवान्	किम्	११.	क्या
बादरायणः ।	५.	वेदव्यास जी	अकरोत्	१२.	किया
श्रुतवान्	८.	सुनकर	विभुः ॥	१०.	उन्होंने

श्लोकार्थ—हे सूत जी ! नारद जी के चले जाने पर भगवान् वेदव्यास जी उनके प्रिय वचनों को सुनकर उसके बाद उन्होंने क्या किया ?

द्वितीयः श्लोकः

सूत उवाच—

ब्रह्मनद्यां सरस्वत्यामाश्रमः पश्चिमे तटे ।
शम्याप्रास इति प्रोक्त ऋषीणां सत्रवर्धनः ॥२॥

पदच्छेद—

ब्रह्म नद्याम् सरस्वत्याम्, आश्रमः पश्चिमे तटे ।
शम्याप्रासः इति प्रोक्तः, ऋषीणाम् सत्र वर्धनः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म नद्याम्	१.	ब्रह्म नदी	शम्याप्रासः	६.	शम्याप्रास
सरस्वत्याम्	२.	सरस्वती के	इति	७.	नाम से
आश्रमः	५.	आश्रम	प्रोक्तः	८.	कहा जाता था
पश्चिमे	३.	पश्चिम	ऋषीणाम्	९.	(जहाँ) ऋषियों के
तटे ।	४.	तट पर (व्यास जी का)	सत्र	१०.	लम्बे यज्ञ
			वर्धनः ॥	११.	चलते रहते थे

श्लोकार्थ—ब्रह्मनदी सरस्वती के पश्चिम तट पर व्यास जी का आश्रम शम्याप्रास नाम से कहा जाता था; जहाँ ऋषियों के लम्बे यज्ञ चलते रहते थे ।

तृतीयः श्लोकः

तस्मिन् स्व आश्रमे व्यासो बदरीखण्डमण्डिते ।
आसीनोऽप उपस्पृश्य प्रणिदध्यौ मनः स्वयम् ॥३॥

पदच्छेद—

तस्मिन् स्वे आश्रमे व्यासः, बदरीखण्ड मण्डिते ।
आसीनः अपः उपस्पृश्य, प्रणिदध्यौ मनः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	४.	उस	आसीनः	७.	आसन पर बैठकर (तथा)
स्वे	३.	अपने	अपः	८.	जल से
आश्रमे	५.	आश्रम में	उपस्पृश्य	९.	आचमन करके
व्यासः	६.	वेदव्यास जी ने	प्रणिदध्यौ	१२.	समाधि लगाई
बदरीखण्ड	१.	बदरी वन से	मनः	११.	मन को
मण्डिते ।	२.	सुशोभित	स्वयम् ॥	१०.	अपने

श्लोकार्थ—बदरीवन से सुशोभित अपने उस आश्रम में वेद व्यास जी ने आसन पर बैठ कर तथा जल से आचमन करके अपने मन की समाधि लगाई ।

चतुर्थः श्लोकः

भक्तियोगेन मनसि सम्यक् प्रणिहितेऽमले ।
अपश्यत्पुरुषं पूर्वं मायां च तदपाश्रयाम् ॥४॥

पदच्छेद—

भक्ति योगेन मनसि, सम्यक् प्रणिहिते अमले ।
अपश्यत् पुरुषम् पूर्वम् , मायाम् च तद् अपाश्रयाम् ॥

शब्दार्थ—

भक्ति योगेन	१.	भक्तिमार्ग से	पुरुषम्	७.	पुरुष को
मनसि	३.	मन में	पूर्वम्	६.	आदि
सम्यक्	४.	भली भाँति	मायाम्	११.	माया को
प्रणिहिते	५.	समाधि लगा लेने पर (उन्होंने)	च	८.	और
अमले ।	२.	शुद्ध	तद्	९.	उनके
अपश्यत्	१२.	देखा	अपाश्रयाम् ॥	१०.	अधीन

श्लोकार्थ—भक्ति मार्ग से शुद्ध मन में भली भाँति समाधि लगा लेने पर उन्होंने आदि पुरुष को और उनके अधीन माया को देखा ।

पञ्चमः श्लोकः

यया सम्मोहितो जीव आत्मानं त्रिगुणात्मकम् ।
परोऽपि मनुतेऽनर्थं तत्कृतं चाभिपद्यते ॥५॥

पदच्छेद—

यया सम्मोहितः जीवः, आत्मानम् त्रिगुणात्मकम् ।
परः अपि मनुते अनर्थम्, तत् कृतम् च अभिपद्यते ॥

शब्दार्थ—

यया	१. जिस (माया) से	**अपि**	५. भी
सम्मोहितः	२. मोहित	**मनुते**	८. मानता है
जीवः	३. प्राणी	**अनर्थम्**	११. अनर्थ को
आत्मानम्	६. अपने को	**तत्, कृतम्**	१०. उसके, कारण
त्रिगुणात्मकम् ।	७. सत्त्व, रज और तम गुण वाला	**च**	९. और
परः	४. तीनों गुणों से भिन्न होने पर	**अभिपद्यते ॥**	१२. भोगता है

श्लोकार्थ—जिस माया से मोहित प्राणी तीनों गुणों से भिन्न होने पर भी अपने को सत्त्व, रज और तम गुणों वाला मानता है और उसके कारण अनर्थ को भोगता है ।

षष्ठः श्लोकः

अनर्थोपशमं साक्षाद् भक्तियोगमधोक्षजे ।
लोकस्याजानतो विद्वांश्चक्रे सात्वतसंहिताम् ॥६॥

पदच्छेद—

अनर्थ उपशमम् साक्षात्, भक्ति योगम् अधोक्षजे ।
लोकस्य अजानतः विद्वान्, चक्रे सात्वत संहिताम् ॥

शब्दार्थ—

अनर्थ	१. अनर्थों की	**अजानतः**	६. मन्द बुद्धि
उपशमम्	२. शान्ति का साधन	**विद्वान्**	८. महर्षि वेद व्यासजी ने
साक्षात्	३. केवल	**चक्रे**	११. रचना की
भक्ति योगम्	५. भक्तियोग (ही है अतः)	**सात्वत**	९. पारमहंसी
अधोक्षजे ।	४. भगवान् में	**संहिताम् ॥**	१०. श्रीमद्भागवत संहिता की
लोकस्य	७. लोगों के लिये		

श्लोकार्थ—अनर्थों की शान्ति का साधन केवल भगवान् में भक्ति योग ही है; अतः मंद बुद्धि लोगों के लिये महर्षि वेद व्यास जी ने पारमहंसी श्रीमद्भागवत संहिता की रचना की ।

सप्तमः श्लोकः

यस्यां वै श्रूयमाणायां कृष्णे परमपूरुषे ।
भक्तिरुत्पद्यते पुंसः शोकमोहभयापहा ॥७॥

पदच्छेद—

यस्याम् वै श्रूयमाणायाम्, कृष्णे परम पूरुषे ।
भक्तिः उत्पद्यते पुंसः, शोक मोह भय अपहा ॥

शब्दार्थ—

यस्याम्	१.	जिस भागवत के	उत्पद्यते	१२.	उत्पन्न हो जाती है
वै	३.	ही	पुंसः	६.	मनुष्यों की
श्रूयमाणायाम्	२.	सुनते	शोक	७.	चिन्ता
कृष्णे	५.	श्री कृष्ण में	मोह	८.	अज्ञान (तथा)
परम पूरुषे।	४.	परात्पर पुरुष भगवान्	भय	९.	डर को
भक्तिः	११.	भक्ति	अपहा ॥	१०.	दूर करने वाली

श्लोकार्थ—जिस भागवत के सुनते ही परात्पर पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण में मनुष्यों की चिंता, अज्ञान तथा डर को दूर करने वाली भक्ति उत्पन्न हो जाती है ।

अष्टमः श्लोकः

स संहितां भागवतीं कृत्वानुक्रम्य चात्मजम् ।
शुकमध्यापयामास निवृत्तिनिरतं मुनिः ॥८॥

पदच्छेद—

सः संहिताम् भागवतीम्, कृत्वा अनुक्रम्य च आत्मजम् ।
शुकम् अध्यापयामास, निवृत्ति निरतम् मुनिः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन	आत्मजम् ।	१०.	अपने पुत्र
संहिताम्	४.	पुराण की	शुकम्	११.	शुकदेव जी को
भागवतीम्	३.	भागवत	अध्यापयामास	१२.	पढ़ाया
कृत्वा	५.	रचना करके	निवृत्ति	८.	संन्यास
अनुक्रम्य	७.	पुनः आवृत्ति करके (उसे)	निरतम्	९.	परायण
च	६.	और	मुनिः ॥	२.	वेद व्यास जी ने

श्लोकार्थ—उन वेद व्यास जी ने भागवत पुराण की रचना करके और पुनः आवृत्ति करके उसे संन्यास-परायण अपने पुत्र शुकदेव जी को पढ़ाया ।

नवमः श्लोकः

शौनक उवाच—

स वै निवृत्तिनिरतः सर्वत्रोपेक्षको मुनिः ।
कस्य वा बृहतीमेतामात्मारामः समभ्यसत् ॥९॥

पदच्छेद—

सः वै निवृत्ति निरतः, सर्वत्र उपेक्षकः मुनिः ।
कस्य वा बृहतीम् एताम्, आत्मारामः समभ्यसत् ॥

शब्दार्थ—

सः	७.	उन	कस्य	९.	किस
वै	५.	तथा	वा	१०.	कारण से
निवृत्ति	१.	संन्यास	बृहतीम्	११.	विशाल
निरतः	२.	परायण	एताम्	१२.	इस (श्रीमद्भागवत पुराण) का
सर्वत्र	३.	सभी पदार्थों के प्रति	आत्मारामः	६.	आत्मा में आनन्द लेने वाले
उपेक्षकः	४.	उदासीन	समभ्यसत् ॥	१३.	अभ्यास किया था
मुनिः ।	८.	शुकदेव मुनि ने			

श्लोकार्थ—संन्यास-परायण, सभी पदार्थों के प्रति उदासीन तथा आत्मा में आनन्द लेने वाले उन शुकदेव मुनि ने किस कारण से विशाल इस श्रीमद्भागवत पुराण का अभ्यास किया था ।

दशमः श्लोकः

सूत उवाच—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे ।
कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थम्भूतगुणो हरिः ॥१०॥

पदच्छेद—

आत्मारामाः च मुनयः, निर्ग्रन्थाः अपि उरुक्रमे ।
कुर्वन्ति अहैतुकीम् भक्तिम्, इत्थंभूत गुणः हरिः ॥

शब्दार्थ—

आत्मारामाः	३.	आत्मा में विहार करने वाले	कुर्वन्ति	९.	करते हैं
च	६.	ही	अहैतुकीम्	७.	निष्काम
मुनयः	४.	मुनिजन	भक्तिम्	८.	भक्ति योग
निर्ग्रन्थाः	१.	माया के बन्धन से रहित होने पर	इत्थंभूत	१०.	इस प्रकार के
अपि	२.	भी	गुणः	११.	मनोहर गुणों वाले
उरुक्रमे ।	५.	भगवान् श्री कृष्ण में	हरिः ॥	१२.	श्री हरि हैं

श्लोकार्थ—माया के बन्धन से रहित होने पर भी आत्मा में विहार करने वाले मुनिजन भगवान् श्रीकृष्ण में ही निष्काम भक्तियोग करते हैं, इस प्रकार के मनोहर गुणों वाले श्री हरि हैं ।

एकादशः श्लोकः

हरेर्गुणाक्षिप्तमतिर्भगवान् बादरायणिः ।
अध्यगान्महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः ॥११॥

पदच्छेद—

हरेः गुण आक्षिप्त मतिः, भगवान् बादरायणिः ।
अध्यगात् महद् आख्यानम्, नित्यम् विष्णु जन प्रियः ॥

शब्दार्थ—

हरेः	६. भगवान् श्रीकृष्ण के		अध्यगात्	१२. अध्ययन किया
गुण	७. गुणों में		महद्	१०. (इस) विशाल
आक्षिप्त	९. खिंच जाने के कारण		आख्यानम्	११. श्रीमद्भागवत पुराण का
मतिः	८. बुद्धि के		नित्यम्	१. सदा
भगवान्	४. भगवान्		विष्णु जन	२. वैष्णव भक्तों को
बादरायणिः ।	५. शुकदेव जी ने		प्रियः ॥	३. प्रिय लगने वाले

श्लोकार्थ—सदा वैष्णव भक्तों को प्रिय लगने वाले भगवान् शुकदेवजी ने भगवान् श्रीकृष्ण के गुणों में बुद्धि के खिंच जाने के कारण इस विशाल श्रीमद्भागवत पुराण का अध्ययन किया ।

द्वादशः श्लोकः

परीक्षितोऽथ राजर्षेर्जन्मकर्मविलापनम् ।
संस्थां च पाण्डुपुत्राणां वक्ष्ये कृष्णकथोदयम् ॥१२॥

पदच्छेद—

परीक्षितः अथ राजर्षेः, जन्म कर्म विलापनम् ।
संस्थाम् च पाण्डु पुत्राणाम्, वक्ष्ये कृष्ण कथा उदयम् ॥

शब्दार्थ—

परीक्षितः	३. परीक्षित् के		संस्थाम्	९. स्वर्गारोहण को
अथ	१. अब		च	७. तथा
राजर्षेः	२. राजर्षि		पाण्डु पुत्राणाम्	८. पाण्डवों के
जन्म	४. जन्म		वक्ष्ये	१०. कहूँगा (जिससे)
कर्म	५. कर्म और		कृष्ण कथा	११. भगवान् श्रीकृष्ण की कथायें
विलापनम् ।	६. मोक्ष को		उदयम् ॥	१२. उत्पन्न होती हैं

श्लोकार्थ—अब राजर्षि परीक्षित् के जन्म, कर्म और मोक्ष को तथा पाण्डवों के स्वर्गारोहण को कहूँगा; जिससे भगवान् श्रीकृष्ण की कथायें उत्पन्न होती हैं ।

त्रयोदशः श्लोकः

यदा मृधे कौरवसृञ्जयानां, वीरेष्वथो वीरगतिं गतेषु ।
वृकोदराविद्धगदाभिमर्श, भग्नोरुदण्डे धृतराष्ट्रपुत्रे ॥१३॥

पदच्छेद—

यदा मृधे कौरव सृञ्जयानाम्, वीरेषु अथो वीर गतिम् गतेषु ।
वृकोदर आविद्ध गदा अभिमर्श, भग्न उरुदण्डे धृतराष्ट्र पुत्रे ॥

शब्दार्थ—

यदा	८. जब	वृकोदर	९. भीमसेन की
मृधे	१. महाभारत युद्ध में	आविद्ध	१२. घायल
कौरव	२. कौरव और	गदा	१०. गदा के
सृञ्जयानाम्,	३. पाण्डवों के	अभिमर्श,	११. प्रहार से
वीरेषु	४. वीरों के	भग्न	१५. टूट गई थी
अथो	७. अनन्तर	उरुदण्डे	१४. जंघा
वीरगतिम्	५. वीरगति	धृतराष्ट्र पुत्रे ॥	१३. दुर्योधन की
गतेषु ।	६. प्राप्त हो जाने के		

श्लोकार्थ—महाभारत युद्ध में कौरव और पाण्डवों के वीरों के वीरगति प्राप्त हो जाने के अनन्तर जब भीमसेन की गदा के प्रहार से घायल दुर्योधन की जंघा टूट गई थी ।

चतुर्दशः श्लोकः

भर्तुः प्रियं द्रौणिरिति स्म पश्यन्, कृष्णासुतानां स्वपतां शिरांसि ।
उपाहरद्विप्रियमेव तस्य, जुगुप्सितं कर्म विगर्हयन्ति ॥१४॥

पदच्छेद—

भर्तुः प्रियम् द्रौणिः इति स्म पश्यन्, कृष्णा सुतानाम् स्वपताम् शिरांसि ।
उपाहरत् विप्रियम् एव तस्य, जुगुप्सितम् कर्म विगर्हयन्ति ॥

शब्दार्थ—

भर्तुः	२. स्वामी दुर्योधन का	उपाहरत्	९. भेंट किये (किन्तु)
प्रियम्	३. प्रिय (कार्य है)	विप्रियम्	१०. (उसे भी यह कार्य) अप्रिय
द्रौणिः	१. (तब) अश्वत्थामा ने	एव	११. ही (लगा)
इति, स्म पश्यन्,	४. ऐसा, समझकर	तस्य,	८. दुर्योधन को
कृष्णा, सुतानाम्	६. द्रौपदी के, पुत्रों के	जुगुप्सितम्	१२. (क्योंकि) नीच
स्वपताम्	५. सोते हुये	कर्म	१३. कर्म की
शिरांसि ।	७. मस्तक (काटकर)	विगर्हयन्ति ॥	१४. (सभी) निन्दा करते हैं

श्लोकार्थ—तब अश्वत्थामा ने "स्वामी दुर्योधन का प्रिय कार्य है" ऐसा समझकर, सोते हुये द्रौपदी के पुत्रों के मस्तक काटकर दुर्योधन को भेंट किये। किन्तु उसे भी यह कार्य अप्रिय ही लगा; क्योंकि नीच कर्म की सभी निंदा करते हैं ।

पञ्चदशः श्लोकः

माता शिशूनां निधनं सुतानां, निशम्य घोरं परितप्यमाना ।
तदारुदद्बाष्पकलाकुलाक्षी, तां सान्त्वयन्नाह किरीटमाली ॥१५॥

पदच्छेद—
माता शिशूनाम् निधनम् सुतानाम्, निशम्य घोरम् परितप्यमाना ।
तदा अरुदत् बाष्प कला आकुल अक्षी, ताम् सान्त्वयन् आह किरीट माली ॥

शब्दार्थ—

माता	८. माता (द्रौपदी)	तदा अरुदत्	९. उस समय विलाप करने लगी
शिशूनाम्	७. बच्चों की	बाष्प कला	५. आँसुओं के समूह से
निधनम्	२. मृत्यु को	आकुल अक्षी	६. कातर नेत्रों वाली
सुतानाम्,	१. पुत्रों को	ताम्, सान्त्वयन्	१०. उसे, सान्त्वना देते हुये
निशम्य, घोरम्	३. सुनकर, अत्यन्त	आह	१२. कहा था
परितप्यमाना ।	४. सन्ताप करती हुई (और)	किरीटमाली ॥	११. अर्जुन ने

श्लोकार्थ—पुत्रों की मृत्यु को सुनकर अत्यन्त सन्ताप करती हुई और आँसुओं के समूह से कातर नेत्रों वाली बच्चों की माता द्रौपदी उस समय विलाप करने लगी । उसे सान्त्वना देते हुये अर्जुन ने कहा था ।

षोडशः श्लोकः

तदा शुचस्ते प्रमृजामि भद्रे, यद् ब्रह्मबन्धोः शिर आततायिनः ।
गाण्डीवमुक्तैर्विशिखैरुपाहरे, त्वाऽऽक्रम्य यत्स्नास्यसि दग्धपुत्रा ॥१६॥

पदच्छेद— **तदा शुचः ते प्रमृजामि भद्रे, यद् ब्रह्मबन्धोः शिरः आततायिनः ।**
गाण्डीव मुक्तैः विशिखैः उपाहरे, त्वा आक्रम्य यत् स्नास्यसि दग्ध पुत्रा ॥

शब्दार्थ—

तदा	४. तब	गाण्डीव	१०. गाण्डीव धनुष से
शुचः	३. शोक के (आँसुओं को मैं)	मुक्तैः	११. निकले हुये
ते	२. तुम्हारे	विशिखैः	१२. बाणों के द्वारा (काटकर)
प्रमृजामि	५. पोछूँगा	उपाहरे,	१४. भेंट करूँगा
भद्रे,	१. हे कल्याणि !	त्वा	१३. तुम्हें
यद्	६. जब (उस)	आक्रम्य	१६. चढ़कर
ब्रह्मबन्धोः	८. ब्रह्मणाधम अश्वत्थामा के	यत्	१५. (तुम) जिस पर
शिरः	९. सिर को	स्नास्यसि	१८. स्नान करोगी
आततायिनः ।	७. आततायी	दग्ध पुत्रा ॥	१७. पुत्रों के दाह संस्कार के अनन्तर

श्लोकार्थ—हे कल्याणि ! तुम्हारे शोक के आँसुओं को मैं तब पोछूँगा, जब उस आततायी ब्रह्मणाधम अश्वत्थामा के सिर को गाण्डीव धनुष से निकले हुये बाणों के द्वारा काट कर तुम्हें भेंट करूँगा; तुम जिस पर चढ़कर पुत्रों के दाह संस्कार के अनन्तर स्नान करोगी ।

सप्तदशः श्लोकः

इति प्रियां वल्गुविचित्रजल्पैः, स सान्त्वयित्वाच्युतमित्रसूतः ।
अन्वाद्रवद् दंशित उग्रधन्वा, कपिध्वजो गुरुपुत्रं रथेन ॥१७॥

पदच्छेद—

इति प्रियाम् वल्गु विचित्र जल्पैः, सः सान्त्वयित्वा अच्युत मित्र सूतः ।
अन्वाद्रवत् दंशितः उग्र धन्वा, कपि ध्वजः गुरु पुत्रम् रथेन ॥

शब्दार्थं—

इति	१.	इस प्रकार	मित्र सूतः ।	११.	मित्र एवं सारथी (बनाकर)
प्रियाम्	४.	प्रिया (द्रौपदी) को	अन्वाद्रवत्	१४.	पीछे दौड़े
वल्गु	२.	मनोहर और	दंशितः	६.	क्रुद्ध हुए
विचित्र, जल्पैः,	३.	अद्भुत, वचनों से	उग्र धन्वा,	७.	महाधनुर्धर
सः	८.	वे	कपि ध्वजः	९.	अर्जुन
सान्त्वयित्वा	५.	समझाकर	गुरु पुत्रम्	१३.	अश्वत्थामा के
अच्युत	१०.	श्री कृष्ण को	रथेन ॥	१२.	रथ से

श्लोकार्थं—इस प्रकार मनोहर और अद्भुत वचनों से प्रिया द्रौपदी को समझाकर क्रुद्ध हुए महाधनुर्धर वे अर्जुन श्रीकृष्ण को मित्र एवं सारथी बनाकर रथ से अश्वत्थामा के पीछे दौड़े ।

अष्टादशः श्लोकः

तमापतन्तं स विलक्ष्य दूरात्, कुमारहोद्विग्नमना रथेन ।
पराद्रवत्प्राणपरीप्सुरुर्व्यां, यावद्गमं रुद्रभयाद्यथार्कः ॥१८॥

पदच्छेद—

तम् आपतन्तम् सः विलक्ष्य दूरात्, कुमारहा उद्विग्नमनाः रथेन ।
पराद्रवत् प्राण परीप्सुः उर्व्याम्, यावद् गमम् रुद्र भयात् यथा अर्कः ॥

शब्दार्थं—

तम्	६.	उन (अर्जुन) को	पराद्रवत्	१३.	भागा
आपतन्तम्	५.	पीछा करते हुये	प्राण	९.	प्राण
सः	३.	वह (अश्वत्थामा)	परीप्सुः	१०.	बचाने की इच्छा से
विलक्ष्य	८.	देखकर	उर्व्याम्,	१२.	पृथ्वी पर
दूरात्,	७.	दूर से ही	यावद् गमम्	११.	पूरी शक्ति से
कुमारहा	१.	कुमारों का हत्यारा (तथा)	रुद्र भयात्	१५.	शंकर जी के कोप से
उद्विग्न मनाः	२.	व्याकुल चित्त वाला	यथा	१४.	जैसे
रथेन ।	४.	रथ से	अर्कः ॥	१६.	सूर्य (भागे थे)

श्लोकार्थं—कुमारों का हत्यारा तथा व्याकुल चित्त वाला वह अश्वत्थामा रथ से पीछा करते हुये उन अर्जुन को दूर से ही देखकर प्राण बचाने की इच्छा से पूरी शक्ति से पृथ्वी पर भागा । जैसे शंकर जी के कोप से सूर्य भागे थे ।

एकोनविंशः श्लोकः

यदाशरणमात्मानमैक्षत श्रान्तवाजिनम् ।
अस्त्रं ब्रह्मशिरो मेने आत्मत्राणं द्विजात्मजः ॥१६॥

पदच्छेद—

यदा अशरणम् आत्मानम्, ऐक्षत श्रान्त वाजिनम् ।
अस्त्रम् ब्रह्मशिरः मेने, आत्म त्राणम् द्विज आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब	**अस्त्रम् ब्रह्मशिरः**	६.	ब्रह्मास्त्र को ही
अशरणम्	७.	अरक्षित	**मेने**	१२.	समझा
आत्मानम्	६.	अपने को	**आत्म**	१०.	अपना
ऐक्षत	८.	देखा (तब)	**त्राणम्**	११.	रक्षक
श्रान्त	५.	थक जाने से	**द्विज**	२.	विप्र
वाजिनम् ।	४.	घोड़ों के	**आत्मजः ॥**	३.	पुत्र (अश्वत्थामा) ने

श्लोकार्थ—जब विप्र-पुत्र अश्वत्थामा ने घोड़ों के थक जाने से अपने को अरक्षित देखा, तब ब्रह्मास्त्र को ही अपना रक्षक समझा ।

विंशः श्लोकः

अथोपस्पृश्य सलिलं संदधे तत्समाहितः ।
अजानन्नुपसंहारं प्राणकृच्छ्र उपस्थिते ॥२०॥

पदच्छेद—

अथ उपस्पृश्य सलिलम्, संदधे तत् समाहितः ।
अजानन् उपसंहारम्, प्राणकृच्छ्रे उपस्थिते ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	**समाहितः ।**	८.	ध्यान लगाकर
उपस्पृश्य	७.	आचमन करके (और)	**अजानन्**	५.	नहीं जानता हुआ भ
सलिलम्	६.	जल से	**उपसंहारम्**	४.	लौटाने की विधि
संदधे	१०.	चला दिया	**प्राण कृच्छ्रे**	२.	प्राण संकट में
तत्	९.	उस ब्रह्मास्त्र को	**उपस्थिते ॥**	३.	आजाने पर (अश्वत्थामा ने)

श्लोकार्थ—तदनन्तर प्राण संकट में आ जाने पर अश्वत्थामा ने लौटाने की विधि नहीं जानता हुआ भी जल से आचमन करके और ध्यान लगा कर उस ब्रह्मास्त्र को चला दिया ।

एकविंशः श्लोकः

ततः प्रादुष्कृतं तेजः प्रचण्डं सर्वतोदिशम् ।
प्राणापदमभिप्रेक्ष्य विष्णुं जिष्णुरुवाच ह ॥२१॥

पदच्छेद—

ततः प्रादुष्कृतम् तेजः, प्रचण्डम् सर्वतो दिशम् ।
प्राण आपदम् अभिप्रेक्ष्य, विष्णुम् जिष्णुः उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	आपदम्	७.	संकट में
प्रादुष्कृतम्	३.	प्रकट हुये	अभिप्रेक्ष्य	८.	देखकर
तेजः	५.	तेज से	विष्णुम्	१०.	श्रीकृष्ण से
प्रचण्डम्	४.	प्रचण्ड	जिष्णुः	६.	अर्जुन ने
सर्वतोदिशम्	२.	सभी दिशाओं में	उवाच	११.	कहा
प्राण ।	६.	प्राण को	ह ॥	१२.	यह इतिहास प्रसिद्ध है

श्लोकार्थ—तदनन्तर सभी दिशाओं में प्रकट हुये प्रचण्ड तेज से प्राण को संकट में देखकर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा, यह इतिहास प्रसिद्ध है ।

द्वाविंशः श्लोकः

अर्जुन उवाच--

कृष्ण कृष्ण महाबाहो भक्तानामभयंकर ।
त्वमेको दह्यमानानामपवर्गोऽसि संसृतेः ॥२२॥

पदच्छेद—

कृष्ण कृष्ण महाबाहो, भक्तानाम् अभयंकर ।
त्वम् एकः दह्यमानानाम् , अपवर्गः असि संसृतेः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण कृष्ण	४.	हे श्रीकृष्ण !	एकः	७.	एकमात्र
महाबाहो	१.	अनन्त शक्ति वाले (और)	दह्यमानानाम्	६.	जलते हुये प्राणियों के लिये
भक्तानाम्	२.	भक्तों को	अपवर्गः	९.	मुक्ति के साधन
अभयंकर ।	३.	अभय प्रदान करने वाले	असि	१०.	हो
त्वम्	८.	तुम (ही)	संसृतेः ॥	५.	संसार के

श्लोकार्थ—अनन्त शक्ति वाले और भक्तों को अभय प्रदान करने वाले हे श्रीकृष्ण ! संसार के जलते हुये प्राणियों के लिये एकमात्र तुम्हीं मुक्ति के साधन हो ।

त्रयोविंशः श्लोकः

त्वमाद्यः पुरुषः साक्षादीश्वरः प्रकृतेः परः ।
मायां व्युदस्य चिच्छक्त्या कैवल्ये स्थित आत्मनि ॥२३॥

पदच्छेद—

त्वम् आद्यः पुरुषः साक्षात्, ईश्वरः प्रकृतेः परः ।
मायाम् व्युदस्य चित् शक्त्या, कैवल्ये स्थितः आत्मनि ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२.	तुम्हीं	मायाम्	१०.	माया को
आद्यः	३.	आदि	व्युदस्य	११.	दूर करके
पुरुषः	४.	पुरुष	चित्	८.	ज्ञान
साक्षात्	१.	एक मात्र	शक्त्या	९.	शक्ति के द्वारा
ईश्वरः	५.	परमेश्वर	कैवल्ये	१२.	आनन्द स्वरूप
प्रकृतेः	६.	प्रकृति से	स्थितः	१४.	विद्यमान हो
परः ।	७.	परे (तथा)	आत्मनि ॥	१३.	आत्मा में

श्लोकार्थ—एक मात्र तुम्हीं आदि पुरुष, परमेश्वर, प्रकृति से परे तथा ज्ञान शक्ति के द्वारा माया को दूर करके आनन्द स्वरूप आत्मा में विद्यमान हो ।

चतुर्विंशः श्लोकः

स एव जीवलोकस्य मायामोहितचेतसः ।
विधत्से स्वेन वीर्येण श्रेयो धर्मादिलक्षणम् ॥२४॥

पदच्छेद—

सः एव जीव लोकस्य, माया मोहित चेतसः ।
विधत्से स्वेन वीर्येण, श्रेयः धर्म आदि लक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वही	विधत्से	१२.	विधान करते हो
एव	२.	तुम	स्वेन	३.	अपने
जीव लोकस्य	८.	प्राणी मात्र के	वीर्येण	४.	प्रभाव से
माया	५.	अज्ञान के कारण	श्रेयः	११.	कल्याण का
मोहित	६.	भ्रान्त	धर्म आदि	९.	धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष
चेतसः ।	७.	चित्त	लक्षणम् ॥	१०.	स्वरूप

श्लोकार्थ—वही तुम अपने प्रभाव से अज्ञान के कारण भ्रान्त-चित्त प्राणी-मात्र के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष स्वरूप कल्याण का विधान करते हो ।

पञ्चविंशः श्लोकः

तथायं चावतारस्ते भुवो भारजिहीर्षया ।
स्वानां चानन्यभावानामनुध्यानाय चासकृत् ॥२५॥

पदच्छेद—

तथा अयम् च अवतारः ते, भुवः भार जिहीर्षया ।
स्वानाम् च अनन्य भावानाम्, अनुध्यानाय च असकृत् ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	एवम्	**स्वानाम्**	१०.	अपने
अयम्	३.	यह	**च**	९.	और
च	४.	प्रसिद्ध	**अनन्य**	११.	अनन्य
अवतारः	५.	अवतार	**भावानाम्**	१२.	भक्तों के
ते	२.	तुम्हारा	**अनुध्यानाय**	१४.	स्मरण के लिये
भुवः	६.	पृथ्वी के	**च**	१५.	ही (हुआ है)
भार	७.	बोझ को	**असकृत् ॥**	१३.	निरन्तर
जिहीर्षया ।	८.	उतारने की इच्छा से			

श्लोकार्थ—एवम् तुम्हारा यह प्रसिद्ध अवतार पृथ्वी के बोझ को उतारने की इच्छा से और अपने अनन्य भक्तों के निरन्तर स्मरण के लिये ही हुआ है ।

षड्विंशः श्लोकः

किमिदं स्वित्कुतो वेति देवदेव न वेद्म्यहम् ।
सर्वतोमुखमायाति तेजः परमदारुणम् ॥२६॥

पदच्छेद—

किम् इदम् स्वित् कुतः वा इति, देव देव न वेद्मि अहम् ।
सर्वतो मुखम् आयाति, तेजः परम दारुणम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	३.	क्या	**देव देव**	१.	हे देवाधिदेव !
इदम्	२.	यह	**न वेद्मि**	९.	नहीं जानता हूँ (किन्तु)
स्वित्	४.	वस्तु है	**अहम् ।**	८.	मैं
कुतः	६.	कहाँ से (आ रही है)	**सर्वतो मुखम्**	१०.	सभी ओर से
वा	५.	और	**आयाति**	१३.	आ रहा है
इति	७.	यह	**तेजः**	१२.	तेज
			परम दारुणम् ॥	११.	अत्यन्त प्रचण्ड

श्लोकार्थ—हे देवाधिदेव ! यह क्या वस्तु है और कहाँ से आ रही है ? यह मैं नहीं जानता हूँ; किन्तु सभी ओर से अत्यन्व प्रचण्ड तेज आ रहा है ।

सप्तविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—

वेत्थेदं द्रोणपुत्रस्य ब्राह्ममस्त्रं प्रदर्शितम् ।
नैवासौ वेद संहारं प्राणबाध उपस्थिते ॥२७॥

पदच्छेद—

वेत्थ इदम् द्रोण पुत्रस्य, ब्राह्मम् अस्त्रम् प्रदर्शितम् ।
न एव असौ वेद संहारम्, प्राण बाधे उपस्थिते ॥

शब्दार्थ—

वेत्थ	८.	समझो	न एव	११.	नहीं
इदम्	१.	इसे	असौ	९.	वह (इसके)
द्रोणपुत्रस्य	५.	अश्वत्थामा का	वेद	१२.	जानता है
ब्राह्मम्	६.	ब्रह्म	संहारम्	१०.	लौटाने की विधि को
अस्त्रम्	७.	अस्त्र	प्राण बाधे	२.	प्राण संकट में
प्रदर्शितम् ।	४.	चलाया गया	उपस्थिते ॥	३.	आ जाने पर

श्लोकार्थ—इसे प्राण संकट में आ जाने पर चलाया गया अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र समझो। वह इसके लौटाने की विधि को नहीं जानता है।

अष्टाविंशः श्लोकः

न ह्यस्यान्यतमं किञ्चिदस्त्रं प्रत्यवकर्शनम् ।
जह्यस्त्रतेज उन्नद्धमस्त्रज्ञो ह्यस्त्रतेजसा ॥२८॥

पदच्छेद—

न हि अस्य अन्यतमम् किंचित्, अस्त्रम् प्रत्यवकर्शनम् ।
जहि अस्त्र तेजः उन्नद्धम्, अस्त्रज्ञः हि अस्त्र तेजसा ॥

शब्दार्थ—

न हि	६.	नहीं (है अतः)	जहि	१२.	लौटाओ
अस्य	४.	इसको	अस्त्र तेजः	११.	ब्रह्मास्त्र के तेज को
अन्यतमम्	२.	दूसरा	उन्नद्धम्	१०.	(इस) प्रचण्ड
किंचित्	१.	कोई	अस्त्रज्ञः	७.	ब्रह्मास्त्र को जानने वाले (तुम)
अस्त्रम्	३.	अस्त्र	हि	९.	ही
प्रत्यवकर्शनम् ।	५.	लौटाने वाला	अस्त्र तेजसा ॥	८.	(अपने) ब्रह्मास्त्र के तेज से

श्लोकार्थ—कोई दूसरा अस्त्र इसको लौटाने वाला नहीं है, अतः ब्रह्मास्त्र को जानने वाले तुम अपने ब्रह्मास्त्र के तेज से ही इस प्रचण्ड ब्रह्मास्त्र के तेज को लौटाओ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच—

श्रुत्वा भगवता प्रोक्तं फाल्गुनः परवीरहा ।
स्पृष्ट्वापस्तं परिक्रम्य ब्राह्मं ब्राह्माय संदधे ॥२९॥

पदच्छेद—

श्रुत्वा भगवता प्रोक्तम्, फाल्गुनः पर वीरहाः ।
स्पृष्ट्वा अपः तम् परिक्रम्य, ब्राह्मम् ब्राह्माय संदधे ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	५.	सुनने के पश्चात्	अपः	६.	जल से
भगवता	३.	भगवान् के	तम्	८.	उन (भगवान् की)
प्रोक्तम्	४.	वचन को	परिक्रम्य	९.	परिक्रमा करके
फाल्गुनः	२.	अर्जुन ने	ब्राह्मम्	११.	(अपने) ब्रह्मास्त्र को
पर वीरहाः ।	१.	शत्रु-वीरों का नाश करने वाले	ब्राह्माय	१०.	ब्रह्मास्त्र की शान्ति के लिये
स्पृष्ट्वा	७.	आचमन करके (और)	संदधे ॥	१२.	चलाया

श्लोकार्थ—शत्रु-वीरों का नाश करने वाले अर्जुन ने भगवान् के वचन को सुनने के पश्चात् जल से आचमन करके और उन भगवान् की परिक्रमा करके ब्रह्मास्त्र की शान्ति के लिये अपने ब्रह्मास्त्र को चलाया ।

त्रिंशः श्लोकः

संहत्यान्योन्यमुभयोस्तेजसी शरसंवृते ।
आवृत्य रोदसी खं च ववृधातेऽर्कवह्निवत् ॥३०॥

पदच्छेद—

संहत्य अन्योन्यम् उभयोः, तेजसी शर संवृते ।
आवृत्य रोदसी खम् च, ववृधाते अर्क वह्निवत् ॥

शब्दार्थ—

संहत्य	५.	टकराकर (तथा)	रोदसी	६.	दिशाओं
अन्योन्यम्	४.	आपस में	खम्	८.	अकाश को
उभयोः	२.	दोनों ब्रह्मास्त्रों के	च	७.	और
तेजसी	३.	दोनों तेज	ववृधाते	१२.	बढ़ने लगे
शर संवृते ।	१.	बाण से लिपटे हुये	अर्क	१०.	(प्रलय काल के) सूर्य एवं
आवृत्य	९.	ढककर	वह्निवत् ॥	११.	अग्नि की भाँति

श्लोकार्थ—बाण से लिपटे हुये दोनों ब्रह्मास्त्रों के दोनों तेज आपस में टकराकर तथा दिशाओं और आकाश को ढककर प्रलयकाल के सूर्य एवं अग्नि की भाँति बढ़ने लगे ।

एकत्रिंशः श्लोकः

दृष्ट्वास्त्रतेजस्तु तयोस्त्रींल्लोकान् प्रदहन्महत् ।
दह्यमानाः प्रजाः सर्वाः सांवर्तकममंसत ॥३१॥

पदच्छेद—

दृष्ट्वा अस्त्र तेजः तु तयोः, त्रीन् लोकान् प्रदहत् महत् ।
दह्यमानाः प्रजाः सर्वाः, सांवर्तकम् अमंसत ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	७.	देखकर	महत् ।	३.	भयंकर रूप से
अस्त्र तेजः	६.	ब्रह्मास्त्रों के तेज को	दह्यमानाः	६.	जलती हुई
तु	८.	तदनन्तर	प्रजाः	११.	प्रजा ने (उसे)
तयोः	५.	उन दोनों के	सर्वाः	१०.	सारी
त्रीन्	१.	तीनों	सांवर्तकम्	१२.	सांवर्तक नाम की अग्नि
लोकान्	२.	लोकों को	अमंसत ॥	१३.	समझा था
प्रदहत्	४.	जलाने वाले			

श्लोकार्थ—तीनों लोकों को भयंकर रूप से जलाने वाले उन दोनों (अर्जुन तथा अश्वत्थामा) के ब्रह्मास्त्रों के तेज को देखकर तदनन्तर जलती हुई सारी प्रजा ने उसे सांवर्तक नाम की अग्नि समझा था ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

प्रजोपप्लवमालक्ष्य लोकव्यतिकरं च तम् ।
मतं च वासुदेवस्य संजहारार्जुनो द्वयम् ॥३२॥

पदच्छेद—

प्रजा उपप्लवम् आलक्ष्य, लोक व्यतिकरम् च तम् ।
मतम् च वासुदेवस्य, संजहार अर्जुनः द्वयम् ॥

शब्दार्थ—

प्रजा	२.	प्रजा के	मतम्	११.	सम्मति को जानकर
उपप्लवम्	३.	संकट	च	६.	तथा
आलक्ष्य	८.	देखकर	वासुदेवस्य	१०.	भगवान् श्रीकृष्ण की
लोक	५.	लोकों की	संजहार	१३.	लौटा लिया
व्यतिकरम्	७.	परस्पर टकराहट को	अर्जुनः	१.	अर्जुन ने
च	४.	और	द्वयम् ॥	१२.	दोनों (ब्रह्मास्त्रों) को
तम् ।	६.	उस			

श्लोकार्थ—अर्जुन ने प्रजा के संकट और लोकों की उस परस्पर टकराहट को देखकर तथा भगवान् श्रीकृष्ण की सम्मति को जानकर दोनों ब्रह्मास्त्रों को लौटा लिया ।

त्रयस्त्रिंश: श्लोक:

तत आसाद्य तरसा दारुणं गौतमीसुतम्।
बबन्धामर्षताम्राक्षः पशुं रशनया यथा ॥३३॥

पदच्छेद—

ततः आसाद्य तरसा, दारुणम् गौतमी सुतम्।
बबन्ध अमर्ष ताम्र अक्षः, पशुम् रशनया यथा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	अमर्ष	२.	क्रोध से
आसाद्य	६.	पकड़कर	ताम्र	३.	लाल
तरसा	८.	वेग से	अक्षः	४.	नेत्रों वाले (अर्जुन ने)
दारुणम्	५.	क्रूर	पशुम्	१०.	पशु के
गौतमी	६.	गौतमी के	रशनया	१२.	रस्सी से
सुतम्।	७.	पुत्र अश्वत्थामा को	यथा ॥	११.	समान
बबन्ध	१३.	बाँध लिया			

श्लोकार्थ—तदनन्तर क्रोध से लाल नेत्रों वाले अर्जुन ने क्रूर गौतमी के पुत्र अश्वत्थामा को वेग से पकड़कर पशु के समान रस्सी से बाँध लिया।

चतुस्त्रिंश: श्लोक:

शिबिराय निनीषन्तं दाम्ना बद्ध्वा रिपुं बलात्।
प्राहार्जुनं प्रकुपितो भगवानम्बुजेक्षणः ॥३४॥

पदच्छेद—

शिबिराय निनीषन्तम्, दाम्ना बद्ध्वा रिपुम् बलात्।
प्राह अर्जुनम् प्रकुपितः, भगवान् अम्बुज ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

शिबिराय	७.	शिविर की ओर	प्राह	१२.	बोले
निनीषन्तम्	९.	ले जाने की इच्छा वाले	अर्जुनम्	१०.	अर्जुन से
दाम्ना	५.	रस्सी से	प्रकुपितः	११.	क्रुद्ध होकर
बद्ध्वा	६.	बांधकर	भगवान्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण
रिपुम्	४.	शत्रु को	अम्बुज	१.	कमल
बलात्।	८.	बल पूर्वक	ईक्षणः ॥	२.	नयन

श्लोकार्थ—कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण शत्रु को रस्सी से बांधकर शिविर की ओर बलपूर्वक ले जाने की इच्छा वाले अर्जुन से क्रुद्ध होकर बोले।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

मैनं पार्थार्हसि त्रातुं ब्रह्मबन्धुमिमं जहि ।
योऽसावनागसः सुप्तानवधीन्निशि बालकान् ॥३५॥

पदच्छेद—

मा एनम् पार्थ अर्हसि त्रातुम् , ब्रह्म बन्धुम् इमम् जहि ।
यः असौ अनागसः सुप्तान् , अवधीत् निशि बालकान् ॥

शब्दार्थ—

मा	५.	नहीं	यः	७.	क्योंकि
एनम्	२.	इस	असौ	८.	इसने
पार्थ	१.	हे अर्जुन !	अनागसः	११.	निरपराध
अर्हसि	६.	उचित है	सुप्तान्	१०.	सोये हुये
त्रातुम्	४.	रक्षा करना	अवधीत्	१३.	हत्या की है (अतः)
ब्रह्म बन्धुम्	३.	अधम ब्राह्मण की	निशि	९.	रात्रि में
इमम्	१४.	इसे	बालकान् ॥	१२.	बालकों को
जहि ।	१५.	मारो			

श्लोकार्थ—हे अर्जुन ! इस अधम ब्रह्मण की रक्षा करना उचित नहीं है; क्योंकि इसने रात्रि में सोये हुये निरपराध बालकों की हत्या की है । अतः इसे मारो ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

मत्तं प्रमत्तमुन्मत्तं सुप्तं बालं स्त्रियं जडम् ।
प्रपन्नं विरथं भीतं न रिपुं हन्ति धर्मवित् ॥३६॥

पदच्छेद—

मत्तम् प्रमत्तम् उन्मत्तम् , सुप्तम् बालम् स्त्रियम् जडम् ।
प्रपन्नम् विरथम् भीतम् , न रिपुम् हन्ति धर्मवित् ॥

शब्दार्थ—

मत्तम्	२.	असावधान	प्रपन्नम्	९.	शरणागत
प्रमत्तम्	३.	नशे में चूर	विरथम्	१०.	रथ हीन (तथा)
उन्मत्तम्	४.	पागल	भीतम्	११.	भयभीत
सुप्तम्	५.	सोये हुये	न	१३.	नहीं
बालम्	६.	बालक	रिपुम्	१२.	शत्रु को
स्त्रियम्	७.	स्त्री	हन्ति	१४.	मारता है
जडम् ।	८.	मूर्ख	धर्मवित् ॥	१.	धर्मवेत्ता (वीर)

श्लोकार्थ—धर्मवेत्ता वीर असावधान, नशे में चूर, पागल, सोये हुये, बालक, स्त्री, मूर्ख, शरणागत, रथहीन तथा भयभीत शत्रु को नहीं मारता है ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स्वप्राणान् यः परप्राणैः प्रपुष्णात्यघृणः खलः ।
तद्वधस्तस्य हि श्रेयो यद्दोषाद्यात्यधः पुमान् ॥३७॥

पदच्छेद— स्व प्राणान् यः पर प्राणैः, प्रपुष्णाति अघृणः खलः ।
तद् वधः तस्य हि श्रेयः, यद् दोषात् याति अधः पुमान् ॥

शब्दार्थ—

स्व	६.	अपने	तद् वधः	९.	उसका वध
प्राणान्	७.	प्राणों को	तस्य	१०.	उसके लिये
यः	१.	जो	हि	११.	ही
पर	४.	दूसरों के	श्रेयः	१२.	कल्याणकारी (होता है)
प्राणैः	५.	प्राणों से	यद्	१३.	क्योंकि (जीवित रहने पर)
प्रपुष्णाति	८.	पुष्ट करता है	दोषात्	१४.	(अपने ही) अपराधों से
अघृणः	२.	निर्दयी	याति	१७.	पतन होता है
खलः ।	३.	दुष्ट (प्राणी)	अधः	१६.	नीचे की ओर
			पुमान् ॥	१५.	उस मनुष्य का

श्लोकार्थ—जो निर्दयी दुष्ट प्राणी दूसरों के प्राणों से अपने प्राणों को पुष्ट करता है, उसका वध उसके लिये ही कल्याणकारी होता है; क्योंकि जीवित रहने पर अपने ही अपराधों से उस मनुष्य का नीचे की ओर पतन होता है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

प्रतिश्रुतं च भवता पाञ्चाल्यै शृण्वतो मम ।
आहरिष्ये शिरस्तस्य यस्ते मानिनि पुत्रहा ॥३८॥

पदच्छेद—

प्रतिश्रुतम् च भवता, पाञ्चाल्यै शृण्वतः मम ।
आहरिष्ये शिरः तस्य, यः ते मानिनि पुत्रहा ॥

शब्दार्थ—

प्रतिश्रुतम्	५.	प्रतिज्ञा की (थी)	आहरिष्ये	१३.	उतार कर लाऊँगा
च	६.	कि	शिरः	१२.	मस्तक
भवता	३.	आपने	तस्य	११.	उसका
पाञ्चाल्यै	४.	द्रौपदी से	यः	८.	जो
शृण्वतः	२.	सुनते रहने पर	ते	९.	तुम्हारे
मम ।	१.	मेरे	मानिनि	७.	मान करने वाली हे (प्रिये)
			पुत्रहा ॥	१०.	पुत्रों का हत्यारा है

श्लोकार्थ—मेरे सुनते रहने पर आपने द्रौपदी से प्रतिज्ञा की थी कि मान करने वाली हे प्रिये ! जो तुम्हारे पुत्रों का हत्यारा है, उसका मस्तक उतार कर लाऊँगा ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तदसौ वध्यतां पाप आततायात्मबन्धुहा ।
भर्तुश्च विप्रियं वीर कृतवान् कुलपांसनः ॥३९॥

पदच्छेद—

तद् असौ वध्यताम् पापः, आततायी आत्म बन्धुहा ।
भर्तुः च विप्रियम् वीर, कृतवान् कुल पांसनः ॥

शब्दार्थ—

तद्	१. अतः		**भर्तुः**	१०. (अपने) स्वामी दुर्योधन का
असौ	५. उस		**च**	११. भी
वध्यताम्	७. वध करो		**विप्रियम्**	१२. अप्रिय कार्य
पापः	६. पापी का		**वीर**	८. हे वीर अर्जुन !
आततायी	४. आततायी		**कृतवान्**	१३. किया है
आत्म	२. अपने		**कुल पांसनः ॥**	९. (उस) कुल कलंकी ने
बन्धुहा ।	३. पुत्रों के हत्यारे			

श्लोकार्थ—अतः अपने पुत्रों के हत्यारे आततायी उस पापी का वध करो । हे वीर अर्जुन ! उस कुल-कलंकी ने अपने स्वामी दुर्योधन का भी अप्रिय कार्य किया है ।

चत्वारिंशः श्लोकः

एवं परीक्षता धर्मं पार्थः कृष्णेन चोदितः ।
नैच्छद्धन्तुं गुरुसुतं यद्यप्यात्महनं महान् ॥४०॥

पदच्छेद—

एवम् परीक्षता धर्मम्, पार्थः कृष्णेन चोदितः ।
न ऐच्छत् हन्तुम् गुरु सुतम्, यद्यपि आत्म हनम् महान् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५. इस प्रकार		**ऐच्छत्**	१४. इच्छा की
परीक्षता	३. परीक्षा करते हुये		**हन्तुम्**	१२. मारने की
धर्मम्	२. धर्म की		**गुरु सुतम्**	११. गुरु के पुत्र को
पार्थः	४. अर्जुन से		**यद्यपि**	७. यद्यपि (वह)
कृष्णेन	१. श्रीकृष्ण ने		**आत्म**	८. (अपने) पुत्रों का
चोदितः ।	६. कहा था		**हनम्**	९. हत्यारा था (फिर भी)
न	१३. नहीं		**महान् ॥**	१०. उदार (अर्जुन ने)

श्लोकार्थ—श्री कृष्ण ने धर्म की परीक्षा करते हुये अर्जुन से इस प्रकार कहा था । यद्यपि वह अपने पुत्रों का हत्यारा था; फिर भी उदार अर्जुन ने गुरु के पुत्र को मारने की इच्छा नहीं की ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अथोपेत्य स्वशिबिरं गोविन्दप्रियसारथिः ।
न्यवेदयत्तं प्रियायै शोचन्त्या आत्मजान् हतान् ॥४१॥

पदच्छेद—

अथ उपेत्य स्व शिबिरम्, गोविन्द प्रिय सारथिः ।
न्यवेदयत् तम् प्रियायै, शोचन्त्यै आत्मजान् हतान् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	न्यवेदयत्	१२.	सौंप दिया
उपेत्य	६.	पहुँच कर	तम्	७.	उसे
स्व शिबिरम्	५.	अपने पड़ाव में	प्रियायै	११.	(अपनी) प्रिया द्रौपदी को
गोविन्द	२.	श्री कृष्ण ही	शोचन्त्यै	१०.	शोक करती हुई
प्रिय	४.	मित्र हैं (ऐसे अर्जुन ने)	आत्मजान्	९.	अपने पुत्रों के लिये
सारथिः ।	३.	जिनके सारथि (और)	हतान् ॥	८.	मरे हुये

श्लोकार्थ—तदनन्दर श्रीकृष्ण ही जिनके सारथी और मित्र हैं, ऐसे अर्जुन ने अपने पड़ाव में पहुँचकर उसे मरे हुये अपने पुत्रों के लिये शोक करती हुई अपनी प्रिया द्रौपदी को सौंप दिया ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तथाऽऽहृतं पशुवत्पाशबद्धम्, अवाङ्मुखं कर्मजुगुप्सितेन ।
निरीक्ष्य कृष्णापकृतं गुरोः सुतम्, वामस्वभावा कृपया ननाम च ॥४२॥

पदच्छेद—

तथा आहृतम् पशुवत् पाश बद्धम्, अवाङ् मुखम् कर्म जुगुप्सितेन ।
निरीक्ष्य कृष्णा अपकृतम् गुरोः सुतम् , वाम स्वभावा कृपया ननाम च ॥

शब्दार्थ—

तथा	४.	उस प्रकार	कृष्णा	१.	द्रौपदी ने
आहृतम्	५.	लाये हुये	अपकृतम्	१०.	अपमानित
पशुवत्	२.	पशु के समान	गुरोः सुतम्,	११.	गुरु के पुत्र को
पाश बद्धम्	३.	रस्सी से बाँधकर	वाम	१३.	स्त्री
अवाङ् मुखम्	९.	नीचे मुख किये हुये	स्वभावा	१४	स्वभाव के कारण
कर्म	८.	कर्म से	कृपया	१५.	आदर के साथ
जुगुप्सितेन ।	७.	निन्दित	ननाम	१६.	प्रमाण किया
निरीक्ष्य	१२.	देखकर	च ॥	६.	और

श्लोकार्थ—द्रौपदी ने पशु के समान रस्सी से बाँधकर उस प्रकार लाये हुये और निन्दित कर्म से नीचे मुख किये हुये अपमानित गुरु के पुत्र को देखकर स्त्री स्वभाव के कारण आदर के साथ प्रणाम किया ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

उवाच चासहन्त्यस्य बन्धनानयनं सती ।
मुच्यतां मुच्यतामेष ब्राह्मणो नितरां गुरुः ॥४३॥

पदच्छेद—

उवाच च असहन्ती अस्य, बन्धन आनयनम् सती ।
मुच्यताम् मुच्यताम् एषः, ब्राह्मणः नितराम् गुरुः ॥

शब्दार्थ—

उवाच	७.	बोली	**मुच्यताम्**	९.	छोड़ दो
च	१.	तथा	**मुच्यताम्**	१०.	छोड़ दो
असहन्ती	५.	नहीं सहन करती हुई	**एषः**	८.	इनको
अस्य	२.	उस (अश्वत्थामा) को	**ब्राह्मणः**	११.	ब्राह्मण
बन्धन	३.	बाँधकर	**नितराम्**	१२.	अत्यन्त
आनयनम्	४.	लाने की प्रक्रिया को	**गुरुः ॥**	१३.	पूज्य होता है
सती ।	६.	सती (द्रौपदी)			

श्लोकार्थ—तथा उस अश्वत्थामा को बाँधकर लाने की प्रक्रिया को नहीं सहन करती हुई सती द्रौपदी बोली, इनको छोड़ दो ! छोड़ दो !! ब्राह्मण अत्यन्त पूज्य होता है ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सरहस्यो धनुर्वेदः सविसर्गोपसंयमः ।
अस्त्रग्रामश्च भवता शिक्षितो यदनुग्रहात् ॥४४॥

पदच्छेद—

स रहस्यः धनुर्वेदः, स विसर्गः उपसंयमः ।
अस्त्र ग्रामः च भवता, शिक्षितः यद् अनुग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

स रहस्यः	२.	रहस्य के साथ	**च**	५.	और
धनुर्वेदः	३.	धनुर्विद्या को (तथा)	**भवता**	१.	आपने
स विसर्गः	४.	प्रयोग करने	**शिक्षितः**	१०.	सीखा है
उपसंयमः ।	६.	लौटाने की विधि के साथ	**यद्**	८.	जिनकी
अस्त्र ग्रामः	७.	सम्पूर्ण शस्त्रास्त्रों को	**अनुग्रहात् ॥**	९.	कृपा से

श्लोकार्थ—आपने रहस्य के साथ धनुर्विद्या को तथा प्रयोग करने और लौटाने की विधि के साथ सम्पूर्ण शस्त्रास्त्रों को जिनकी कृपा से सीखा है ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

स एष भगवान् द्रोणः प्रजारूपेण वर्तते ।
तस्यात्मनोऽर्धं पत्न्यास्ते नान्वगाद्वीरसूः कृपी ॥४५॥

पदच्छेद—

स: एष: भगवान् द्रोण:, प्रजारूपेण वर्तते ।
तस्य आत्मनः अर्धम् पत्नी आस्ते, न अन्वगात् वीरसूः कृपी ॥

शब्दार्थ—

स:	२.	वही	आत्मनः अर्धम्	८.	अर्धांगिनी
एष:	१.	यह	पत्नी	९.	पत्नी
भगवान्	३.	भगवान्	आस्ते	११.	विद्यमान हैं
द्रोण:	४.	द्रोणाचार्य	न	१३.	नहीं
प्रजारूपेण	५.	पुत्र रूप में	अन्वगात्	१४.	(उनका) अनुगमन किया
वर्तते ।	६.	हैं	वीरसूः	१२.	(जिसने) वीरपुत्र की ममता से
तस्य	७.	उनकी	कृपी ॥	१०.	कृपी (अभी)

श्लोकार्थ—यह वही भगवान् द्रोणाचार्य पुत्र रूप में हैं। उनकी अर्धांगिनी पत्नी कृपी अभी विद्यमान हैं, जिसने वीर पुत्र की ममता से उनका अनुगमन नहीं किया।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तद्धर्मज्ञ महाभाग भवद्भिर्गौरवं कुलम् ।
वृजिनं नार्हति प्राप्तुं पूज्यं वन्द्यमभीक्ष्णशः ॥४६॥

पदच्छेद—

तद् धर्मज्ञ महाभाग, भवद्भिः गौरवम् कुलम् ।
वृजिनम् न अर्हति प्राप्तुम्, पूज्यम् वन्द्यम् अभीक्ष्णशः ॥

शब्दार्थ—

तद्	६.	इसलिये	न	९.	नहीं
धर्मज्ञ	१.	हे धर्मज्ञानी !	अर्हति	१०.	उचित है
महाभाग	२.	हे महाभाग !	प्राप्तुम्	८.	देना
भवद्भिः	३.	आपसे	पूज्यम्	१२.	पूजनीय (और)
गौरवम्	५.	प्रतिष्ठा को (प्राप्त किया है)	वन्द्यम्	१३.	वन्दनीय हैं
कुलम् ।	४.	कुल ने	अभीक्ष्णशः ॥	११.	(क्योंकि ये) नित्य
वृजिनम्	७.	(इन्हें) व्यथा			

श्लोकार्थ—हे धर्मज्ञानी ! हे महाभाग ! आपसे कुल ने प्रतिष्ठा को प्राप्त किया है। इसलिये इन्हें व्यथा देना उचित नहीं है, क्योंकि ये नित्य पूजनीय और वन्दनीय हैं।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

मा रोदीदस्य जननी गौतमी पतिदेवता ।
यथाहं मृतवत्साऽऽर्ता रोदिम्यश्रुमुखी मुहुः ॥४७॥

पदच्छेद—

मा रोदीत् अस्य जननी, गौतमी पतिदेवता ।
यथा अहम् मृत वत्सा आर्ता, रोदिमि अश्रु मुखी मुहुः ॥

शब्दार्थ—

मा	१३.	न	**अहम्**	२.	मैं
रोदीत्	१४.	रोवें	**मृत वत्सा**	३.	पुत्रों के मर जाने से
अस्य	९.	(उस प्रकार) इनकी	**आर्ता**	४.	दुःखी होकर
जननी	१०.	माता	**रोदिमि**	८.	रो रही हूँ
गौतमी	१२.	गौतमी	**अश्रु**	६.	आँसू बहाती हुई
पतिदेवता ।	११.	पतिव्रता	**मुखी**	५.	मुख पर
यथा	१.	जैसे	**मुहुः ॥**	७.	निरन्तर

श्लोकार्थ—जैसे मैं पुत्रों के मर जाने से दुःखी होकर मुख पर आँसू बहाती हुई निरन्तर रो रही हूँ। उस प्रकार इनकी माता पतिव्रता गौतमी न रोवें।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

यैः कोपितं ब्रह्मकुलं राजन्यैरजितात्मभिः ।
तत्कुलं प्रदहत्याशु सानुबन्धं शुचार्पितम् ॥४८॥

पदच्छेद—

यैः कोपितम् ब्रह्म कुलम्, राजन्यैः अजित आत्मभिः ।
तत् कुलम् प्रदहति आशु, सानुबन्धम् शुचा अर्पितम् ॥

शब्दार्थ—

यैः	१.	जिन	**कुलम्**	७.	ब्रह्म कुल (उन्हें)
कोपितम्	५.	क्रुद्ध कर दिया जाता है	**प्रदहति**	१२.	भस्मसात् कर देता है
ब्रह्म कुलम्	४.	ब्रह्म कुल	**आशु**	११.	शीघ्र ही
राजन्यैः	३.	राजाओं से	**सानुबन्धम्**	१०.	कुटुम्ब के साथ
अजित आत्मभिः ।	२.	अजितेन्द्रिय	**शुचा**	८.	शोक की अग्नि में
तत्	६.	वह	**अर्पितम् ॥**	९.	डालकर

श्लोकार्थ—जिन अजितेन्द्रिय राजाओं से ब्रह्मकुल क्रुद्ध कर दिया जाता है, वह ब्रह्मकुल उन्हें शोक की अग्नि में डालकर कुटुम्ब के साथ शीघ्र ही भस्मसात् कर देता है।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

सूत उवाच—

धर्म्यं न्याय्यं सकरुणं निर्व्यलीकं समं महत्।
राजा धर्मसुतो राज्ञ्याः प्रत्यनन्दद्वचो द्विजाः ॥४९॥

पदच्छेद—

धर्म्यम् न्याय्यम् स करुणम्, निर्व्यलीकम् समम् महत्।
राजा धर्म सुतः राज्ञ्याः, प्रत्यनन्दत् वचः द्विजाः ॥

शब्दार्थ—

धर्म्यम्	४.	धर्म से युक्त	**राजा**	२.	राजा
न्याय्यम्	५.	न्यायपूर्ण	**धर्म सुतः**	३.	युधिष्ठिर ने
स करुणम्	६.	करुणा के साथ	**राज्ञ्याः**	९.	रानी द्रौपदी के
निर्व्यलीकम्	७.	निष्कपट (और)	**प्रत्यनन्दत्**	१२.	स्वागत किया
समम्	८.	समता से परिपूर्ण	**वचः**	११.	वचन का
महत्।	१०.	महत्त्वपूर्ण	**द्विजाः ॥**	१.	हे महर्षियों !

श्लोकार्थ—हे महर्षियों ! राजा युधिष्ठिर ने धर्म से युक्त, न्याय पूर्ण, करुणा के साथ, निष्कपट और समता से परिपूर्ण रानी द्रौपदी के महत्त्वपूर्ण वचन का स्वागत किया।

पञ्चाशः श्लोकः

नकुलः सहदेवश्च युयुधानो धनंजयः।
भगवान् देवकीपुत्रो ये चान्ये याश्च योषितः ॥५०॥

पदच्छेद—

नकुलः सहदेवः च, युयुधानः धनंजयः।
भगवान् देवकी पुत्रः, ये च अन्ये याः च योषितः ॥

शब्दार्थ—

नकुलः	१.	नकुल	**ये**	९.	जो
सहदेवः	२.	सहदेव	**च**	८.	तथा
च	५.	और	**अन्ये**	१०.	दूसरे (नर)
युयुधानः	३.	सात्यकी	**याः**	१२.	जो
धनंजयः।	४.	अर्जुन	**च**	११.	एवम्
भगवान्	६.	भगवान्	**योषितः ॥**	१३.	नारियां (थीं उन्होंने भी द्रौपदी के वचन का समर्थन किया)
देवकी पुत्रः	७.	श्रीकृष्ण ने			

श्लोकार्थ—नकुल, सहदेव, सात्यकी, अर्जुन और भगवान् श्रीकृष्ण ने तथा जो दूसरे नर एवं जो नारियां थी, उन्होंने भी द्रौपदी के वचन का समर्थन किया।

एकपञ्चाशः श्लोकः

तत्राहामर्षितो भीमस्तस्य श्रेयान् वधः स्मृतः ।
न भर्तुर्नात्मनश्चार्थे योऽहन् सुप्तान् शिशून् वृथा ॥५१॥

पदच्छेद—

तत्र आह अमर्षितः भीमः, तस्य श्रेयान् वधः स्मृतः ।
न भर्तुः न आत्मनः च अर्थे, यः अहन् सुप्तान् शिशून् वृथा ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	उस समय	भर्तुः	९.	स्वामी के लिये
आह	४.	बोले (कि)	न, आत्मनः	११.	नहीं, अपने
अमर्षितः	२.	क्रुद्ध होकर	च	१०.	और
भीमः	३.	भीमसेन	अर्थे	१२.	प्रयोजन से (अर्थात्)
तस्य	१५.	उसका	यः	५.	जिसने
श्रेयान्	१७.	श्रेष्ठ	अहन्	१४.	हत्या की है
वधः	१६.	वध	सुप्तान्	६.	सोये हुये
स्मृतः ।	१८.	कहा गया है	शिशून्	७.	बच्चों की
न	८.	न (तो)	वृथा ॥	१३.	व्यर्थ में

श्लोकार्थ—उस समय क्रुद्ध होकर भीमसेन बोले कि जिसने सोये हुये बच्चों की न तो स्वामी के लिये और न ही अपने प्रयोजन से अर्थात् व्यर्थ में हत्या की है, उसका वध श्रेष्ठ कहा गया है।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

निशम्य भीमगदितं द्रौपद्याश्च चतुर्भुजः ।
आलोक्य वदनं सख्युरिदमाह हसन्निव ॥५२॥

पदच्छेद—

निशम्य भीम गदितम्, द्रौपद्याः च चतुर्भुजः ।
आलोक्य वदनम् सख्युः, इदम् आह हसन् इव ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	६.	सुनकर (तथा)	आलोक्य	९.	देखकर
भीम	२.	भीमसेन के	वदनम्	८.	मुख को
गदितम्	५.	वचन को	सख्युः	७.	मित्र अर्जुन के
द्रौपद्याः	४.	द्रौपदी के	इदम्	१२.	यह
च	३.	और	आह	१३.	कहा
चतुर्भुजः ।	१.	चतुर्भुज (भगवान् श्रीकृष्ण ने)	हसन्	१०.	हँसते हुये
			इव ॥	११.	से

श्लोकार्थ—चतुर्भुज भगवान् श्रीकृष्ण ने भीमसेन के और द्रौपदी के वचन को सुनकर तथा मित्र अर्जुन के मुख को देखकर हँसते हुये से यह कहा।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

श्रीकृष्ण उवाच—

ब्रह्मबन्धुर्न हन्तव्य आततायी वधार्हणः ।
मयैवोभयमाम्नातं परिपाह्यनुशासनम् ॥५३॥

पदच्छेद—

ब्रह्म बन्धुः न हन्तव्यः, आततायी वध अर्हणः ।
मया एव उभयम् आम्नातम् , परिपाहि अनुशासनम् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म बन्धुः	१.	पतित ब्राह्मण को (भी)	**मया**	७.	मैंने
न	२.	नहीं	**एव**	८.	ही
हन्तव्यः	३.	मारना चाहिये (और)	**उभयम्**	९.	(ये) दोनों बातें
आततायी	४.	अत्याचारी	**आम्नातम्**	१०.	कही हैं
वध	५.	वध के	**परिपाहि**	१२.	पालन करो
अर्हणः ।	६.	योग्य है	**अनुशासनम् ॥**	११.	(अतः मेरी) आज्ञा का

श्लोकार्थ—पतित ब्राह्मण को भी नहीं मारना चाहिये और अत्याचारी वध के योग्य है । मैंने ही ये दोनों बातें कही हैं; अतः मेरी आज्ञा का पालन करो ।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

कुरु प्रतिश्रुतं सत्यं यत्तत्सान्त्वयता प्रियाम् ।
प्रियं च भीमसेनस्य पाञ्चाल्या मह्यमेव च ॥५४॥

पदच्छेद—

कुरु प्रतिश्रुतम् सत्यम्, यत् तत् सान्त्वयता प्रियाम् ।
प्रियम् च भीमसेनस्य, पाञ्चाल्याः मह्यम् एव च ॥

शब्दार्थ—

कुरु	७.	करो	**प्रियम्**	१४.	(जो) प्रिय है (उसे करो)
प्रतिश्रुतम्	४.	प्रतिज्ञा की थी	**च**	८.	तथा
सत्यम्	६.	सत्य	**भीमसेनस्य**	९.	भीमसेन
यत्	३.	जो	**पाञ्चाल्याः**	१०.	पांचाली
तत्	५.	उसे	**मह्यम्**	१२.	मुझे
सान्त्वयता	२.	सान्त्वना देते हुये (तुमने)	**एव**	१३.	भी
प्रियाम् ।	१.	प्रिया (द्रौपदी) को	**च ॥**	११.	और

श्लोकार्थ—प्रिया द्रौपदी को सन्त्वना देते हुये तुमने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे सत्य करो तथा भीमसेन पांचाली और मुझे भी जो प्रिय है, उसे करो ।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

सूत उवाच—

अर्जुनः सहसाऽऽज्ञाय हरेर्हार्दमथासिना ।
मणिं जहार मूर्धन्यं द्विजस्य सहमूर्धजम् ॥५५॥

पदच्छेद—

अर्जुनः सहसा आज्ञाय, हरेः हार्दम् अथ असिना ।
मणिम् जहार मूर्धन्यम्, द्विजस्य सह मूर्धजम् ॥

शब्दार्थ—

अर्जुनः	१. अर्जुन ने	मणिम्	१२. मणि को
सहसा	४. अकस्मात्	जहार	१३. निकाल लिया
आज्ञाय	५. समझकर	मूर्धन्यम्	११. मस्तक की
हरेः	२. भगवान् श्रीकृष्ण के	द्विजस्य	१०. अश्वत्थामा के
हार्दम्	३. आशय को	सह	९. साथ
अथ	६. तदनन्तर	मूर्धजम् ॥	८. बालों के
असिना ।	७. तलवार से		

श्लोकार्थ—अर्जुन ने भगवान् श्रीहरि के आशय को अकस्मात् समझकर तदनन्तर तलवार से बालों के साथ अश्वत्थामा के मस्तक की मणि को निकाल लिया ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

विमुच्य रशनाबद्धं बालहत्याहतप्रभम् ।
तेजसा मणिना हीनं शिबिरान्निरयापयत् ॥५६॥

पदच्छेद—

विमुच्य रशना बद्धम्, बाल हत्या हत प्रभम् ।
तेजसा मणिना हीनम् शिबिरात् निरयापयत् ॥

शब्दार्थ—

विमुच्य	७. मुक्त करके	मणिना	५. मणि से
रशना बद्धम्	१. रस्सी से बँधे	हीनम्	६. हीन (अश्वत्थामा को)
बाल हत्या	२. बालकों की हत्या से	शिबिरात्	८. शिबिर से
हत प्रभम् ।	३. नष्ट श्री वाले (और)	निरयापयत् ॥	९. बाहर निकाल दिया
तेजसा	४. तेजस्वी		

श्लोकार्थ—रस्सी से बँधे, बालकों की हत्या से नष्ट श्री वाले और तेजस्वी मणि से हीन अश्वत्थामा को मुक्त करके शिबिर से बाहर निकाल दिया ।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

वपनं द्रविणादानं स्थानान्निर्यापणं तथा ।
एष हि ब्रह्मबन्धूनां वधो नान्योऽस्ति दैहिकः ॥५७॥

पदच्छेद—

वपनम् द्रविण आदानम्, स्थानात् निर्यापणम् तथा ।
एषः हि ब्रह्म बन्धूनाम्, वधः न अन्यः अस्ति दैहिकः ॥

शब्दार्थ—

वपनम्	१.	मुण्डन कर देना	ब्रह्म	८.	ब्राह्मणों का
द्रविण आदानम्	२.	धन छीन लेना	बन्धूनाम्	९.	पतित
स्थानात्	४.	(अपने) स्थान से	वधः	१०.	वध (कहा गया है)
निर्यापणम्	५.	निकाल देना	न	१३.	नहीं
तथा ।	३.	और	अन्यः	११.	दूसरा
एषः	६.	यह	अस्ति	१४.	कहा गया है
हि	७.	ही	दैहिकः ॥	१२.	शारीरिक वध

श्लोकार्थ—मुण्डन कर देना, धन छीन लेना और अपने स्थान से निकाल देना, यही पतित ब्राह्मणों का वध कहा गया है; दूसरा शारीरिक वध नहीं कहा गया है ।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

पुत्रशोकातुराः सर्वे पाण्डवाः सह कृष्णया ।
स्वानां मृतानां यत्कृत्यं चक्रुर्निर्हरणादिकम् ॥५८॥

पदच्छेद—

पुत्र शोक आतुराः सर्वे, पाण्डवाः सह कृष्णया ।
स्वानाम् मृतानाम् यत् कृत्यम्, चक्रुः निर्हरण आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

पुत्र शोक	१.	पुत्र शोक से	स्वानाम्	७.	अपने
आतुराः	२.	व्याकुल	मृतानाम्	८.	मरे हुये पुत्रों की
सर्वे	३.	सभी	यत्	९.	जो
पाण्डवाः	४.	पाण्डवों ने	कृत्यम्	११.	क्रिया थी (उसे)
सह	६.	साथ	चक्रुः	१२.	सम्पन्न किया
कृष्णया ।	५.	द्रौपदी के	निर्हरण आदिकम् ॥	१०.	दाह इत्यादि

श्लोकार्थ—पुत्र शोक से व्याकुल सभी पाण्डवों ने दौपदी के साथ अपने मरे हुये पुत्रों की जो दाह इत्यादि क्रिया थी, उसे सम्पन्न किया ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
द्रौणिनिग्रहो नाम सप्तमः अध्यायः ॥७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
प्रथमः स्कन्धः
अथ अष्टमः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— अथ ते सम्परेतानां स्वानामुदकमिच्छताम्।
दातुं सकृष्णा गङ्गायां पुरस्कृत्य ययुः स्त्रियः ॥१॥

पदच्छेद— अथ ते सम्परेतानाम्, स्वानाम् उदकम् इच्छताम्।
दातुम् स कृष्णाः गङ्गायाम्, पुरस्कृत्य ययुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थं—

अथ	१.	तदनन्तर	दातुम्	६.	(जलाञ्जली) देने के लिये
ते	७.	वे पाण्डव	स कृष्णाः	८.	भगवान् श्रीकृष्ण के साथ
सम्परेतानाम्	५.	मृतकों को	गङ्गायाम्	११.	गंगातट पर
स्वानाम्	४.	अपने	पुरस्कृत्य	१०.	आगे करके
उदकम्	२.	जल की	ययुः	१२.	गये
इच्छताम्।	३.	इच्छा रखने वाले	स्त्रियः ॥	९.	स्त्रियों को

श्लोकार्थ—तदनन्तर जल की इच्छा रखने वाले अपने मृतकों को जलाञ्जली देने के लिये वे पाण्डव भगवान् श्रीकृष्ण के साथ स्त्रियों को आगे करके गंगातट पर गये।

द्वितीयः श्लोकः

ते निनीयोदकं सर्वे विलप्य च भृशं पुनः।
आप्लुता हरिपादाब्जरजः पूतसरिज्जले ॥२॥

पदच्छेद— ते निनीय उदकम् सर्वे, विलप्य च भृशम् पुनः।
आप्लुताः हरि पाद अब्ज, रजः पूत सरित् जले ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	उन	आप्लुताः	१६.	स्नान किया
निनीय	४.	देकर	हरि	९.	भगवान् श्रीकृष्ण के
उदकम्	३.	जलाञ्जली	पाद	१०.	चरण
सर्वे	२.	सबों ने	अब्ज	११.	कमल के
विलप्य	८.	विलाप करके	रजः	१२.	पराग से
च	५.	और	पूत	१३.	पवित्र
भृशम्	७.	बहुत	सरित्	१४.	(गंगा) नदी के
पुनः।	६.	फिर से	जले ॥	१५.	जल में

श्लोकार्थ—उन सबों ने जलाञ्जली देकर और फिर से बहुत विलाप करके भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमल के पराग से पवित्र गंगा नदी के जल में स्नान किया।

तृतीयः श्लोकः

तत्रासीनं कुरुपतिं धृतराष्ट्रं सहानुजम् ।
गान्धारीं पुत्रशोकार्तां पृथां कृष्णां च माधवः ॥३॥

पदच्छेद—

तत्र आसीनम् कुरुपतिम्, धृतराष्ट्रम् सह अनुजम् ।
गान्धारीम् पुत्र शोक आर्ताम्, पृथाम् कृष्णाम् च माधवः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	**गान्धारीम्**	८.	गान्धारी
आसीनम्	५.	बैठे हुए	**पुत्र शोक**	११.	पुत्र शोक से
कुरुपतिम्	६.	युधिष्ठिर को	**आर्ताम्**	१२.	दुःखित
धृतराष्ट्रम्	७.	धृतराष्ट्र	**पृथाम्**	९.	कुन्ती
सह	४.	साथ	**कृष्णाम्**	१३.	द्रौपदी को (सान्त्वना दी)
अनुजम् ।	३.	भाइयों के	**च**	१०.	तथा
			माधवः ॥	१.	श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—श्री कृष्ण ने वहाँ पर भाइयों के साथ बैठे हुए युधिष्ठिर को, धृतराष्ट्र, गान्धारी कुन्ती तथा पुत्र शोक से दुःखित द्रौपदी को सान्त्वना दी ।

चतुर्थः श्लोकः

सान्त्वयामास मुनिभिर्हतबन्धूञ् शुचार्पितान् ।
भूतेषु कालस्य गतिं दर्शयन्नप्रतिक्रियाम् ॥४॥

पदच्छेद—

सान्त्वयामास मुनिभिः, हत बन्धुन् शुचा अर्पितान् ।
भूतेषु कालस्य गतिम्, दर्शयन् अप्रतिक्रियाम् ॥

शब्दार्थ—

सान्त्वयामास	१०.	समझाया	**भूतेषु**	१.	प्राणियों में
मुनिभिः	६.	मुनियों के साथ	**कालस्य**	२.	काल की
हत बन्धुन्	७.	मृतक पुत्रों वाले (तथा)	**गतिम्**	३.	गति को
शुचा	८.	शोक में	**दर्शयन्**	५.	बताते हुये (भगवान् श्रीषण ने)
अर्पितान् ।	९.	पड़े हुये पाण्डवों को	**अप्रतिक्रियाम् ॥**	४.	अबाध

श्लोकार्थ—प्राणियों में काल की गति को अबाध बताते हुये भगवान् श्री कृष्ण ने मुनियों के साथ मृतक पुत्रों वाले तथा शोक में पड़े हुये पाण्डवों को समझाया ।

पञ्चमः श्लोकः

साधयित्वाजातशत्रोः स्वं राज्यं कितवैर्हृतम् ।
घातयित्वासतो राज्ञः कचस्पर्शक्षतायुषः ॥५॥

पदच्छेद—

साधयित्वाअजात शत्रोः, स्वम् राज्यम् कितवैः हृतम् ।
घातयित्वा असतः राज्ञः, कच स्पर्श क्षत आयुषः ॥

शब्दार्थ—

	०.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	घातयित्वा	१३.	मरवाया
साधयित्वा	६.	दिलाने के प्रसंग में	असतः	११.	दुष्ट
अजात शत्रोः	१.	शत्रु रहित युधिष्ठर को	राज्ञः	१२.	राजाओं को
स्वम्	४.	अपना	कच	७.	(द्रौपदी के) बालों को
राज्यम्	५.	राज्य	स्पर्श	८.	छूने से
कितवैः	२.	धूर्तों के द्वारा	क्षत	९.	नष्ट
हृतम् ।	३.	छलपूर्वक जीता हुआ	आयुषः ॥	१०.	आयु वाले

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने शत्रु रहित युधिष्ठिर को धूर्तों के द्वारा छलपूर्वक जीता हुआ अपना राज्य दिलाने के प्रसंग में द्रौपदी के बालों को छूने से नष्ट आयु वाले दुष्ट राजाओं को मरवाया ।

षष्ठः श्लोकः

याजयित्वाश्वमेधैस्तं त्रिभिरुत्तमकल्पकैः ।
तद्यशः पावनं दिक्षु शतमन्योरिवातनोत् ॥६॥

पदच्छेद—

याजयित्वा अश्वमेधैः तम् , त्रिभिः उत्तम कल्पकैः ।
तद् यशः पावनम् दिक्षु , शतमन्योः इव आतनोत् ॥

शब्दार्थ—

याजयित्वा	६.	यज्ञ कराकर	तद्	९.	उनके
अश्वमेधैः	५.	अश्वमेध	यशः	११.	यश को
तम्	१.	युधिष्ठिर के द्वारा	पावनम्	१०.	पवित्र
त्रिभिः	४.	तीन	दिक्षु	१२.	सभी दिशाओं में
उत्तम	२.	उत्तम	शतमन्योः	७.	इन्द्र के (यश की)
कल्पकैः ।	३.	विधानों से परिपूर्ण	इव	८.	भांति
			आतनोत् ॥	१३.	फैलाया

श्लोकार्थ—युधिष्ठिर के द्वारा उत्तम विधानों से परिपूर्ण तीन अश्वमेध यज्ञ कराकर इन्द्र के यश की भाँति उनके पवित्र यश को सभी दिशाओं में फैलाया ।

सप्तमः श्लोकः

आमन्त्र्य पाण्डुपुत्रांश्च शैनेयोद्धवसंयुतः ।
द्वैपायनादिभिर्विप्रैः पूजितैः प्रतिपूजितः ॥७॥

पदच्छेद—

आमन्त्र्य पाण्डु पुत्रान् च , शैनेय उद्धव संयुतः ।
द्वैपायन आदिभिः विप्रैः , पूजितैः प्रति पूजितः ॥

शब्दार्थ—

आमन्त्र्य	२.	सलाह लेकर	**द्वैपायन**	८.	वेदव्यास
पाण्डु पुत्रान्	१.	पाण्डवों से (जाने की)	**आदिभिः**	९.	इत्यादि
च	४.	और	**विप्रैः**	१०.	ब्राह्मणों से
शैनेय	३.	सात्यकि	**पूजितैः**	७.	सम्मानित
उद्धव	५.	उद्धव के	**प्रति पूजितः ॥**	११.	स्वयं पूजित हुये
संयुतः ।	६.	साथ (भगवान् श्री कृष्ण)			

श्लोकार्थ—पाण्डवों से जाने की सलाह लेकर सात्यकि और उद्धव के साथ भगवान् श्रीकृष्ण सम्मानित वेदव्यास इत्यादि ब्राह्मणों से स्वयं पूजित हुये ।

अष्टमः श्लोकः

गन्तुं कृतमतिर्ब्रह्मन् द्वारकां रथमास्थितः ।
उपलेभेऽभिधावन्तीमुत्तरां भयविह्वलाम् ॥८॥

पदच्छेद—

गन्तुम् कृत मतिः ब्रह्मन् , द्वारकाम् रथम् आस्थितः ।
उपलेभे अभिधावन्तीम् , उत्तराम् भय विह्वलाम् ॥

शब्दार्थ—

गन्तुम्	३.	जाने की	**उपलेभे**	११.	पास में देखा
कृत मतिः	४.	इच्छा किये हुये (तथा)	**अभिधावन्तीम्**	९.	सामने से दौड़कर आती हुई
ब्रह्मन्	१.	ब्रह्मज्ञानी हे शौनक जी !	**उत्तराम्**	१०.	उत्तरा को
द्वारकाम्	२.	द्वारकापुरी को	**भय**	७.	डर से
रथम्	५.	रथ पर	**विह्वलाम् ॥**	८.	घबराई हुई (और)
आस्थितः ।	६.	बैठे हुयें (भगवान् श्रीकृष्ण ने)			

श्लोकार्थ—ब्रह्मज्ञानी हे शौनक जी ! द्वारकापुरी को जाने की इच्छा किये हुये तथा रथ पर बैठे हुये भगवान् श्रीकृष्ण ने डर से घबराई हुई और सामने से दौड़कर आती हुई उत्तरा को पास में देखा ।

नवमः श्लोकः

उत्तरोवाच्--

पाहि पाहि महायोगिन् देव देव जगत्पते ।
नान्यं त्वदभयं पश्ये यत्र मृत्युः परस्परम् ॥९॥

पदच्छेद—

पाहि पाहि महायोगिन्, देव देव जगत्पते ।
न अन्यम् त्वद् अभयम् पश्ये, यत्र मृत्युः परस्परम् ॥

शब्दार्थ—

पाहि पाहि	४.	(आप मेरी) रक्षा करें रक्षा करें	**त्वद्**	५.	आपसे
महायोगिन्	१.	हे महायोगी !	**अभयम्**	७.	अभय देने वाला
देव देव	२.	हे देवाधिदेव !	**पश्ये**	९.	देखती हूँ
जगत्पते ।	३.	हे जगदीश्वर !	**यत्र**	१०.	(क्योंकि) इस संसार में (प्राणी)
न	८.	नहीं	**मृत्युः**	१२.	मृत्यु के कारण (बने हुये हैं)
अन्यम्	६.	भिन्न (किसी को)	**परस्परम् ॥**	११.	आपस में (एक दूसरे की)

श्लोकार्थ—हे महायोगी ! हे देवाधिदेव ! हे जगदीश्वर ! आप मेरी रक्षा करें, रक्षा करें। आपसे भिन्न किसी को अभय देने वाला नहीं देखती हूँ। क्योंकि इस संसार में प्राणी आपस में एक दूसरे की मृत्यु के कारण बने हुये हैं।

दशमः श्लोकः

अभिद्रवति मामीश शरस्तप्तायसो विभो ।
कामं दहतु मां नाथ मा मे गर्भो निपात्यताम् ॥१०॥

पदच्छेद—

अभिद्रवति माम् ईश, शरः तप्त आयसः विभो ।
कामम् दहतु माम् नाथ, मा मे गर्भः निपात्यताम् ॥

शब्दार्थ—

अभिद्रवति	७.	पीछा कर रहा है	**कामम्, दहतु**	१०.	भले ही, जला दे
माम्	६.	मेरा	**माम्**	९.	मुझे
ईश	२.	हे जगदीश्वर !	**नाथ**	८.	हे स्वामी ! (वह)
शरः	५.	बाण	**मा**	१३.	न
तप्त	४.	जलता हुआ	**मे**	११.	(किन्तु) मेरे
आयसः	३.	लोहे का	**गर्भः**	१२.	गर्भ को
विभो ।	१.	हे भगवान् !	**निपात्यताम् ॥**	१४.	नष्ट करे

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! हे जगदीश्वर ! लोहे का जलता हुआ बाण मेरा पीछा कर रहा है। हे स्वामी ! वह मुझे भले ही जला दे, किन्तु मेरे गर्भ को नष्ट न करे।

एकादशः श्लोकः

सूत उवाच—

उपधार्य वचस्तस्या भगवान् भक्तवत्सलः ।
अपाण्डवमिदं कर्तुं द्रौणेरस्त्रमबुध्यत ॥११॥

पदच्छेद—

उपधार्य वचः तस्याः, भगवान् भक्त वत्सलः ।
अपाण्डवम् इदम् कर्तुम् , द्रौणेः अस्त्रम् अबुध्यत ॥

शब्दार्थ—

उपधार्य	५.	सुनकर	अपाण्डवम्	७.	पाण्डवों से रहित
वचः	४.	वचन को	इदम्	६.	इस (जगत् को)
तस्याः	३.	उत्तरा के	कर्तुम्	८.	करने के लिये
भगवान्	२.	भगवान् श्री कृष्ण ने	द्रौणेः	९.	(उसे) अश्वत्थामा का
भक्त वत्सलः ।	१.	भक्तों पर दया करने वाले	अस्त्रम्	१०.	ब्रह्मास्त्र
			अबुध्यत ॥	११.	समझा

श्लोकार्थ—भक्तों पर दया करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने उत्तरा के वचन को सुनकर इस जगत् को पाण्डवों से रहित करने के लिये उसे अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र समझा ।

द्वादशः श्लोकः

तर्ह्येवाथ मुनिश्रेष्ठ पाण्डवाः पञ्च सायकान् ।
आत्मनोऽभिमुखान् दीप्तानालक्ष्यास्त्राण्युपाददुः ॥१२॥

पदच्छेद—

तर्हि एव अथ मुनिश्रेष्ठ, पाण्डवाः पञ्च सायकान् ।
आत्मनः अभिमुखान् दीप्तान् , आलक्ष्य अस्त्राणि उपाददुः ॥

शब्दार्थ—

तर्हि एव	३.	उसी समय	आत्मनः	५.	अपने
अथ	२.	तदनन्तर	अभिमुखान्	६.	सामने
मुनिश्रेष्ठ	१.	हे मुनिवर शौनक जी !	दीप्तान्	७.	जलते हुये
पाण्डवाः	४.	पाँचों पाण्डवों ने	आलक्ष्य	१०.	देखकर
पञ्च	८.	पाँच	अस्त्राणि	११.	(अपने-अपने) अस्त्रों को
सायकान्	९.	बाणों को आते	उपाददुः ॥	१२.	उठा लिया

श्लोकार्थ—हे मुनिवर शौनक जी ! तदनन्तर उसी समय पाँचों पाण्डवों ने अपने सामने जलते हुये पाँच बाणों को आते देखकर अपने-अपने अस्त्रों को उठा लिया ।

त्रयोदशः श्लोकः

व्यसनं वीक्ष्य तत्तेषामनन्यविषयात्मनाम् ।
सुदर्शनेन स्वास्त्रेण स्वानां रक्षां व्यधाद्विभुः ॥१३॥

पदच्छेद—

व्यसनम् वीक्ष्य तत् तेषाम्, अनन्य विषय आत्मनाम् ।
सुदर्शनेन स्व अस्त्रेण, स्वानाम् रक्षाम् व्यधात् विभुः ॥

शब्दार्थ—

व्यसनम्	६.	विपत्ति को	सुदर्शनेन	९.	सुदर्शन चक्र से
वीक्ष्य	७.	देखकर	स्व अस्त्रेण	८.	अपने अस्त्र
तत्	५.	उस	स्वानाम्	१०.	अपने जनों की
तेषाम्	४.	उन (पाण्डवों) की	रक्षाम्	११.	रक्षा
अनन्य विषय	३.	दूसरे विषयों में नहीं रमाने वाले	व्यधात्	१२.	की थी
आत्मनाम् ।	२.	आत्मा को	विभुः ॥	१.	भगवान् श्री कृष्ण ने

श्लोकार्थ—भगवान् श्री कृष्ण ने आत्मा को दूसरे विषयों में नहीं रमाने वाले उन पाण्डवों की उस विपत्ति को देखकर अपने अस्त्र सुदर्शन चक्र से अपने जनों की रक्षा की थी ।

चतुर्दशः श्लोकः

अन्तःस्थः सर्वभूतानामात्मा योगेश्वरो हरिः ।
स्वमाययाऽऽवृणोद्गर्भं वैराट्याः कुरुतन्तवे ॥१४॥

पदच्छेद—

अन्तः स्थः सर्व भूतानाम्, आत्मा योगेश्वरः हरिः ।
स्व मायया आवृणोत् गर्भम्, वैराट्याः कुरुतन्तवे ॥

शब्दार्थ—

अन्तःस्थः	२.	अन्तःकरण में स्थित	स्व मायया	७.	अपनी माया से
सर्व भूतानाम्	१.	सभी प्राणियों के	आवृणोत्	१०.	ढक लिया
आत्मा	३.	आत्मारूप	गर्भम्	९.	गर्भ को
योगेश्वरः	४.	योगिराज	वैराट्याः	८.	विराट् पुत्री (उत्तरा) के
हरिः ।	५.	श्री कृष्ण ने	कुरुतन्तवे ॥	६.	कुरु वंश की रक्षा के लिये

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित, आत्मारूप, योगिराज श्री कृष्ण ने कुरु वंश की रक्षा के लिये अपनी माया से विराट् पुत्री उत्तरा के गर्भ को ढक लिया ।

पञ्चदशः श्लोकः

यद्यप्यस्त्रं ब्रह्मशिरस्त्वमोघं चाप्रतिक्रियम् ।
वैष्णवं तेज आसाद्य समशाम्यद् भृगूद्वह ॥१५॥

पदच्छेद— यद्यपि अस्त्रम् ब्रह्मशिरः, तु अमोघम् च अप्रतिक्रियम् ।
वैष्णवम् तेजः आसाद्य, समशाम्यत् भृगु उद्वह ॥

शब्दार्थ—

यद्यपि	३. यद्यपि	वैष्णवम्	१०. नारायण अस्त्र के
अस्त्रम्	४. (ब्रह्मा का) अस्त्र	तेजः	११. तेज को
ब्रह्मशिरः	५. ब्रह्मास्त्र	आसाद्य	१२. पाकर
तु	९. किन्तु	समशाम्यत्	१३. (वह) शान्त हो गया
अमोघम्	६. निष्फल न होने वाला	भृगु	१. भृगुवंश को
च	७. और	उद्वह ॥	२. धारण करने वाले
अप्रतिक्रियम् ।	८. निवारण न किया जानेवाला (हैं)		(हे शौनकजी)

श्लोकार्थ—भृगुवंश को धारण करने वाले हे शौनक जी ! यद्यपि ब्रह्मा का अस्त्र ब्रह्मास्त्र निष्फल न होने वाला और निवारण न किया जाने वाला है; किन्तु नारायण अस्त्र के तेज को पाकर वह शान्त हो गया ।

षोडशः श्लोकः

मा मंस्था ह्येतदाश्चर्यं सर्वाश्चर्यमयेऽच्युते ।
य इदं मायया देव्या सृजत्यवति हन्त्यजः ॥१६॥

पदच्छेद— मा मंस्थाः हि एतद् आश्चर्यम् , सर्व आश्चर्यमये अच्युते ।
यः इदम् मायया देव्या, सृजति अवति हन्ति अजः ॥

शब्दार्थ—

मा	६. नहीं	यः	९. वही
मंस्थाः	७. मानना चाहिये	इदम्	१३. इस (विश्व) को
हि	८. क्योंकि	मायया	११. माया
एतद्	४. इसे	देव्या	१२. देवी के द्वारा
आश्चर्यम्	५. आश्चर्य	सृजति	१४. बनाते
सर्व	१. सभी प्रकार के	अवति	१५. रक्षा करते (तथा)
आश्चर्यमये	२. आश्चर्यों से युक्त	हन्ति	१६. संहार करते हैं
अच्युते ।	३. भगवान् श्रीकृष्ण के विषय में	अजः ॥	१०. अजन्मा (भगवान्)

श्लोकार्थ—सभी प्रकार के आश्चर्यों से युक्त भगवान् श्रीकृष्ण के विषय में इसे आश्चर्य नहीं मानना चाहिये ; क्योंकि वही अजन्मा भगवान् माया देवी के द्वारा इस विश्व को बनाते, रक्षा करते तथा संहार करते हैं ।

सप्तदशः श्लोकः

ब्रह्मतेजोविनिर्मुक्तैरात्मजैः सह कृष्णया ।
प्रयाणाभिमुखं कृष्णमिदमाह पृथा सती ॥१७॥

पदच्छेद—

ब्रह्म तेजः विनिर्मुक्तैः, आत्मजैः सह कृष्णया ।
प्रयाण अभिमुखम् कृष्णम्, इदम् आह पृथा सती ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म तेजः	१.	ब्रह्मास्त्र से	अभिमुखम्	९.	तैयार
विनिर्मुक्तैः	२.	मुक्त हुये	कृष्णम्	१०.	श्रीकृष्ण से
आत्मजैः	३.	अपने पुत्रों के (और)	इदम्	११.	यह
सह	५.	साथ	आह	१२.	बोली
कृष्णया ।	४.	द्रौपदी के	पृथा	७.	कुन्ती
प्रयाण	८.	प्रस्थान करने के लिये	सती ॥	६.	सती

श्लोकार्थ—ब्रह्मास्त्र से मुक्त हुये अपने पुत्रों के और द्रौपदी के साथ सती कुन्ती प्रस्थान करने के लिये तैयार श्रीकृष्ण से यह बोली ।

अष्टादशः श्लोकः

कुन्ती उवाच—

नमस्ये पुरुषं त्वाऽऽद्यमीश्वरं प्रकृतेः परम् ।
अलक्ष्यं सर्वभूतानामन्तर्बहिरवस्थितम् ॥१८॥

पदच्छेद—

नमस्ये पुरुषम् त्वा आद्यम्, ईश्वरम् प्रकृतेः परम् ।
अलक्ष्यम् सर्व भूतानाम्, अन्तर् बहिः अवस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

नमस्ये	१२.	(मैं) नमस्कार करती हूँ	परम् ।	७.	परे (एवम्)
पुरुषम्	९.	पुरुष	अलक्ष्यम्	५.	(इन्द्रियों से) अगोचर
त्वा	१०.	तुम	सर्व	१.	सभी
आद्यम्	८.	आदि	भूतानाम्	२.	प्राणियों के
ईश्वरम्	११.	जगदीश्वर को	अन्तर् बहिः	३.	अन्दर और बाहर
प्रकृतेः	६.	प्रकृति से	अवस्थितम् ॥	४.	विराजमान

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के अन्दर और बाहर विराजमान, इन्द्रियों से अगोचर, प्रकृति से परे एवम् आदि पुरुष तुम जगदीश्वर को मैं नमस्कार करती हूँ ।

एकोनविंशः श्लोकः

मायाजवनिकाच्छन्नमज्ञाधोक्षजमव्ययम् ।
न लक्ष्यसे मूढदृशा नटो नाट्यधरो यथा ॥१९॥

पदच्छेद—

माया जवनिका आच्छन्नम्, अज्ञा अधोक्षजम् अव्ययम् ।
न लक्ष्यसे मूढ दृशा, नटः नाट्यधरः यथा ॥

शब्दार्थ—

माया	१.	माया रूपी	**न**	११.	नहीं
जवनिका	२.	परदे से	**लक्ष्यसे**	१२.	पहिचाने जाते हैं
आच्छन्नम्	३.	ढके हुये (आप)	**मूढ दृशा**	१०.	अज्ञान दृष्टि वाले व्यक्तियों से
अज्ञा	६.	(और) मैं अज्ञानी प्राणी हूँ	**नटः**	८.	नाटक करने वाले के
अधोक्षजम्	५.	भगवान् विष्णु के रूप (हैं)	**नाट्य धरः**	७.	नाटक का वेश धारण कर लेने पर
अव्ययम् ।	४.	अविनाशी	**यथा ॥**	९.	समान (आप भी)

श्लोकार्थ—माया रूपी परदे से ढके हुये आप अविनाशी भगवान् विष्णु के रूप हैं और मैं अज्ञानी प्राणी हूँ । नाटक का वेश धारण कर लेने पर नाटक करने वाले के समान आप भी अज्ञान दृष्टि वाले व्यक्तियों से नहीं पहचाने जाते हैं ।

विंशः श्लोकः

तथा परमहंसानां मुनीनाममलात्मनाम् ।
भक्तियोगविधानार्थं कथं पश्येम हि स्त्रियः ॥२०॥

पदच्छेद—

तथा परम हंसानाम्, मुनीनाम् अमल आत्मनाम् ।
भक्ति योग विधानार्थम्, कथम् पश्येम हि स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

तथा	४.	और	**भक्ति योग**	७.	प्रेममयी भक्ति के
परम हंसानाम्	२.	जीवनमुक्त परम हंसों	**विधानार्थम्**	८.	विधान के लिये हैं (अतः)
मुनीनाम्	३.	विचारशील मुनियों	**कथम्**	१०.	(आपको) कैसे
अमल	५.	शुद्ध	**पश्येम**	११.	जान सकती हैं
आत्मनाम् ।	६.	अन्तःकरण वाले (मनुष्यों) की	**हि**	१.	क्योंकि (आप)
			स्त्रियः ॥	९.	(हम अबोध) स्त्रीजन

श्लोकार्थ—क्योंकि आप जीवनमुक्त परम हंसों, विचारशील मुनियों और शुद्ध अन्तःकरण वाले मनुष्यों की प्रेममयी भक्ति के विधान के लिये हैं; अतः हम अबोध स्त्रीजन आपको कैसे जान सकतीहैं ?

एकविंश: श्लोक:

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च ।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥२१॥

पदच्छेद—

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी नन्दनाय च ।
नन्द गोप कुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णाय	१.	कृष्ण स्वरूप वाले	नन्द गोप	६.	बाबानंद गोप के
वासुदेवाय	२.	वासुदेव के पुत्र	कुमाराय	७.	पुत्र
देवकी	३.	देवकी को	गोविन्दाय	८.	गोविन्द भगवान् (आपको)
नन्दनाय	४.	आनन्दित करने वाले	नमो नमः ॥	९.	(मैं) नमस्कार करती हूँ
च ।	५.	और			

श्लोकार्थ—कृष्ण स्वरूप वाले, वासुदेव के पुत्र, देवकी को आनन्दित करने वाले और बाबा नंद गोप के पुत्र गोविन्द भगवान् आपको मैं नमस्कार करती हूँ ।

द्वाविंश: श्लोक:

नमः पङ्कजनाभाय नमः पङ्कजमालिने ।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥२२॥

पदच्छेद—

नमः पङ्कज नाभाय, नमः पङ्कज मालिने ।
नमः पङ्कज नेत्राय, नमः ते पङ्कज अङ्घ्रये ॥

शब्दार्थ—

नमः	३.	नमस्कार है	नमः	९.	(आपको) नमस्कार है (तथा)
पङ्कज	२.	कमल वाले (आपको)	पङ्कज	७.	कमल के समान
नाभाय	१.	नाभि में	नेत्राय	८.	विशाल और कोमल नेत्रों वाले
नमः	६.	नमस्कार है	नमः	१३.	नमस्कार है
पङ्कज	४.	कमल की	ते	१२.	आपको
मालिने ।	५.	वनमाला धारण करने वाले (आपको)	पङ्कज	१०.	कमल के समान
			अङ्घ्रये ॥	११.	कोमल चरणों वाले

श्लोकार्थ—नाभि में कमल वाले आपको नमस्कार है। कमल की वनमाला धारण करने वाले आपको नमस्कार है । कमल के समान विशाल और कोमल नेत्रों वाले आपको नमस्कार है तथा कमल के समान कोमल चरणों वाले आपको नमस्कार है ।

त्रयोविंशः श्लोकः

यथा हृषीकेश खलेन देवकी, कंसेन रुद्धातिचिरं शुचार्पिता ।
विमोचिताहं च सहात्मजा विभो, त्वयैव नाथेन मुहुर्विपद्गणात् ॥२३॥

पदच्छेद—**यथा हृषीकेश खलेन देवकी, कंसेन रुद्धा अतिचिरम् शुचा अर्पिता ।**
विमोचिता अहम् च सह आत्मजा विभो, त्वया एव नाथेन मुहुः विपद् गणात् ॥

शब्दार्थ—

यथा	२. जैसे	**अहम् च**	१६. मुझे भी
हृषीकेश	१. हे इन्द्रियों के स्वामी ! (आपने)	**सह**	१५. साथ
खलेन	३. दुष्ट	**आत्मजा**	१४. पुत्रों के
देवकी,	८. माता देवकी को	**विभो,**	१०. हे प्रभु !
कंसेन	४. कंस के द्वारा	**त्वया**	११. आप
रुद्धा	५. कारागार में कैद की गई (और)	**एव**	१३. ही
अतिचिरम्	६. बहुत काल तक	**नाथेन**	१२. स्वामी ने
शुचा अर्पिता ।	७. शोक में डाली गई	**मुहुः**	१८. बार-बार (बचाया है)
विमोचिता	९. मुक्त कराया (उसी प्रकार)	**विपद् गणात् ॥**	१७. विपत्तियों के समूह से

श्लोकार्थ—हे इन्द्रियों के स्वामी ! आपने जैसे दुष्ट कंस के द्वारा कारागार में कैद की गई और बहुत काल तक शोक में डाली गई माता देवकी को मुक्त कराया । उसी प्रकार हे प्रभु ! आप स्वामी ने ही पुत्रों के साथ मुझे भी विपत्तियों के समूह से बार-बार बचाया है ।

चतुर्विंशः श्लोकः

विषान्महाग्नेः पुरुषाददर्शनात्, असत्सभाया वनवासकृच्छ्रतः ।
मृधे मृधेऽनेकमहारथास्त्रतो, द्रौण्यस्त्रतश्चास्म हरेऽभिरक्षिताः ॥२४॥

पदच्छेद—**विषात् महाग्नेः पुरुषात् आदर्शनात्, असत् सभायाः वनवास कृच्छ्रतः ।**
मृधे मृधे अनेक महारथ अस्त्रतः, द्रौणी अस्त्रतः च आस्म हरे अभिरक्षिताः ॥

शब्दार्थ—

विषात्, महाग्नेः	१. विष से, लाक्षागृह की अग्नि से	**अस्त्रतः,**	९. अस्त्रों से
पुरुषात्	४. हिडिम्बादि राक्षसों से	**द्रौणी**	११. अश्वत्थामा के
अदर्शनात्,	३. अदर्शनीय	**अस्त्रतः**	१२. ब्रह्मास्त्र से (भी)
असत्, सभायाः	५. दुष्ट दुर्योधनादि की, सभा से	**च**	१०. और
वनवास, कृच्छ्रतः ।	६. वनवास के, दुःख से	**आस्म**	१४. हुये हैं
मृधे मृधे	७. बार-बार के युद्धों में	**हरे**	१. हे हरि भगवान् ! (आपके द्वारा)
अनेक, महारथ	८. अनेकों, महारथियों के	**अभिरक्षिताः ॥**	१३. (हम) भली भाँति रक्षित

श्लोकार्थ—हे हरि भगवान् ! आपके द्वारा विष से, लाक्षागृह की अग्नि से, अदर्शनीय हिडिम्बादि राक्षसों से, दुष्ट दुर्योधनादि की सभा से, वनवास के दुःख से, बार-बार के युद्धों में अनेकों महारथियों के अस्त्रों से और अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से भी हम भली भाँति रक्षित हुये हैं ।

पञ्चविंशः श्लोकः

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो ।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥२५॥

पदच्छेद—

विपदः सन्तु नः शश्वत् , तत्र तत्र जगद्गुरो ।
भवतः दर्शनम् यत् स्यात् , अपुनर्भव दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

विपदः	३.	विपत्तियाँ	**भवतः**	११.	आपका
सन्तु	५.	आती रहें	**दर्शनम्**	१२.	दर्शन
नः	२.	हमारे ऊपर	**यत्**	६.	क्योंकि
शश्वत्	४.	सदा	**स्यात्**	१३.	होगा
तत्र	७.	तब	**अपुनर्भव**	९.	मोक्ष
तत्र	८.	तब	**दर्शनम् ॥**	१०.	दिलाने वाला
जगद्गुरो ।	१.	हे जगद्गुरो !			

श्लोकार्थ—हे जगद्गुरो ! हमारे ऊपर विपत्तियाँ सदा आती रहें, क्योंकि तब-तब मोक्ष दिलाने वाला आपका दर्शन होगा ।

षड्विंशः श्लोकः

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदः पुमान् ।
नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिञ्चनगोचरम् ॥२६॥

पदच्छेद—

जन्म ऐश्वर्य श्रुत श्रीभिः, एधमान मदः पुमान् ।
न एव अर्हति अभिधातुम् वै, त्वाम् अकिञ्चन गोचरम् ॥

शब्दार्थ—

जन्म	१.	उच्च कुल में जन्म	**न एव**	१३.	नहीं
ऐश्वर्य	२.	प्रभुता	**अर्हति**	१४.	ले सकता है
श्रुत	३.	अध्ययन (और)	**अभिधातुम्**	१२.	नाम
श्रीभिः	४.	सम्पत्ति के कारण	**वै**	८.	निश्चय ही
एधमान	५.	बढ़ते हुये	**त्वाम्**	११.	आपका
मदः	६.	अभिमान वाला	**अकिंचन**	९.	गरीबों के
पुमान् ।	७.	पुरुष	**गोचरम् ॥**	१०.	प्रिय

श्लोकार्थ—उच्च कुल में जन्म, प्रभुता, अध्ययन और सम्पत्ति के कारण बढ़ते हुये अभिमान वाला पुरुष निश्चय ही गरीबों के प्रिय आपका नाम नहीं ले सकता है ।

सप्तविंशः श्लोकः

नमोऽकिंचनवित्ताय निवृत्तगुणवृत्तये ।

आत्मारामाय शान्ताय कैवल्यपतये नमः ॥२७॥

पदच्छेद—

नमः अकिञ्चन वित्ताय, निवृत्त गुण वृत्तये ।

आत्मन् आरामाय शान्ताय, कैवल्य पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	६.	नमस्कार है	आत्मन्	७.	आत्मा में ही
अकिंचन	१.	निर्धनों के	आरामाय	८.	विहार करने वाले (और)
वित्ताय	२.	धन स्वरूप (और)	शान्ताय	९.	शान्त स्वरूप
निवृत्त	३.	मोक्ष मार्ग के	कैवल्य	१०.	मोक्ष के
गुण	४.	गुणों में	पतये	११.	स्वामी (आपको)
वृत्तये ।	५.	विचरने वाले (आपको)	नमः ॥	१२.	नमस्कार है

श्लोकार्थ—निर्धनों के धनस्वरूप और मोक्ष मार्ग के गुणों में विचरने वाले आपको नमस्कार है। आत्मा में ही विहार करने वाले और शान्त स्वरूप मोक्ष के स्वामी आपको नमस्कार है।

अष्टाविंशः श्लोकः

मन्ये त्वां कालमीशानमनादिनिधनं विभुम् ।

समं चरन्तं सर्वत्र भूतानां यन्मिथः कलिः ॥२८॥

पदच्छेद—

मन्ये त्वाम् कालम् ईशानम् , अनादि निधनम् विभुम् ।

समम् चरन्तम् सर्वत्र, भूतानाम् यत् मिथः कलिः ॥

शब्दार्थ—

मन्ये	१०.	जानती हूँ	समम्	६.	समान रूप से
त्वाम्	१.	मैं (तुम्हें)	चरन्तम्	७.	विचरण करने वाले
कालम्	९.	काल रूप में	सर्वत्र	५.	सभी जगह
ईशानम्	८.	नियन्ता (तथा)	भूतानाम्	१२.	सभी प्राणी
अनादि	२.	उत्पत्ति और	यत्	११.	जबकि
निधनम्	३.	नाश से रहित	मिथः	१३.	आपस में
विभुम् ।	४.	व्यापक	कलिः ॥	१४.	कलह करते हैं

श्लोकार्थ—हे श्री कृष्ण ! मैं तुम्हें उत्पत्ति और नाश से रहित, व्यापक, सभी जगह समान रूप से विचरण करने वाले, नियन्ता तथा काल रूप में जानती हूँ; जबकि सभी प्राणी आपस में कलह करते हैं।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

न वेद कश्चिद्भगवंश्चिकीर्षितं, तवेहमानस्य नृणां विडम्बनम् ।
न यस्य कश्चिद्दयितोऽस्ति कर्हिचिद्, द्वेष्यश्च यस्मिन् विषमा मतिर्नृणाम् ॥२९॥

पदच्छेद—

न वेद कश्चित् भगवन् चिकीर्षितम्, तव ईहमानस्य नृणाम् विडम्बनम् ।
न यस्य कश्चित् दयितः अस्ति कर्हिचित्, द्वेष्यः च यस्मिन् विषमा मतिः नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

न वेद	७. नहीं जानता है	यस्य, कश्चित्	८. जिस (आपका) कोई
कश्चित्	६. कोई भी	दयितः,	९. प्रिय
भगवन्	१. हे भगवन् !	अस्ति	१३. है
चिकीर्षितम्	५. सृष्टि की इच्छा को	कर्हिचित्, द्वेष्यः	११. कभी भी (कोई) शत्रु
तव	४. तुम्हारी	च	१०. अथवा
ईहमानस्य	३. चेष्टा करने वाले	यस्मिन्	१४. उस आपके विषय में
नृणाम्, विडम्बनम् ।	२. मानव, लीला की	विषमा	१६. विपरीत है
न	१२. नहीं	मतिः, नृणाम् ॥	१५. बुद्धि, मनुष्यों की

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मानव लीला की चेष्टा करने वाले तुम्हारी सृष्टि की इच्छा को कोई भी नहीं जानता है । जिस आपका कोई प्रिय अथवा कभी भी कोई शत्रु नहीं है, उस आपके विषय में मनुष्यों की बुद्धि विपरीत है ।

त्रिंशः श्लोकः

जन्म कर्म च विश्वात्मन्नजस्याकर्तुरात्मनः ।
तिर्यङ्नृषिषु यादःसु तदत्यन्तविडम्बनम् ॥३०॥

पदच्छेद—

जन्म कर्म च विश्वात्मन्, अजस्य अकर्तुः आत्मनः ।
तिर्यक् नृ ऋषिषु यादःसु, तद् अत्यन्त विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

जन्म	८. (जो) जन्म	आत्मनः ।	७. आपके
कर्म	१०. कर्म (हुये हैं)	तिर्यक्	२. पशु-पक्षी
च	९. और	नृ ऋषिषु	३. मनुष्य, ऋषि (और)
विश्वात्मन्	१. हे सम्पूर्ण विश्व की आत्मा !	यादःसु	४. जलचर रूप में
अजस्य	५. अजन्मा (तथा)	तद्, अत्यन्त	११. वे सभी, दिव्य
अकर्तुः	६. अकर्ता	विडम्बनम् ॥	१२. लीलायें (हैं)

श्लोकार्थ—हे सम्पूर्ण विश्व की आत्मा ! पशु-पक्षी, मनुष्य, ऋषि और जलचर रूप में अजन्मा तथा अकर्ता आपके जो जन्म और कर्म हुये हैं, वे सभी दिव्य लीलायें हैं ।

एकत्रिंशः श्लोकः

गोप्याददे त्वयि कृतागसि दाम तावद्,
या ते दशाश्रुकलिलाञ्जनसम्भ्रमाक्षम् ।
वक्त्रं निनीय भयभावनया स्थितस्य,
सा मां विमोहयति भीरपि यद्बिभेति ॥३१॥

पदच्छेद—

गोपी आददे त्वयि कृत आगसि दाम तावद्,
या ते दशा अश्रु कलिल अञ्जन सम्भ्रम अक्षम् ।
वक्त्रम् निनीय भय भावनया स्थितस्य,
सा माम् विमोहयति भीः अपि यद् बिभेति ॥

शब्दार्थ—

गोपी	४.	माता जशोदा ने (जब)	अक्षम् ।	१२.	नेत्रों से युक्त
आददे	६.	उठाई थी	वक्त्रम्	१३.	मुख को
त्वयि	१.	तुम्हारे	निनीय	१६.	नीचे झुकाकर
कृत	३.	करने पर	भय	१४.	डर की
आगसि	२.	अपराध	भावनया	१५.	भावना से
दाम	५.	(बाँधने के लिये) रस्सी	स्थितस्य,	१७.	खड़े हुये
तावद्,	७.	उस समय	सा	२१.	वह (छवि)
या	१९.	जो	माम्	२२.	मुझे
ते	१८.	तुम्हारी	विमोहयति	२३.	मोहित कर रही है
दशा	२०.	छवि थी	भीः	२५.	भय
अश्रु	८.	आँसुओं से	अपि	२६.	भी
कलिल	९.	बहते हुये	यद्	२४.	जिससे
अञ्जन	१०.	काजल (और)	बिभेति ॥	२७.	डरता है (आश्चर्य है उनकी यह दशा)
सम्भ्रम	११.	चंचल			

श्लोकार्थ—तुम्हारे अपराध करने पर माता यशोदा ने जब बाँधने के लिये रस्सी उठाई थी, उस समय आँसुओं से बहते हुये काजल और चंचल नेत्रों से युक्त मुख को डर की भावना से नीचे झुकाकर खड़े हुये तुम्हारी जो छवि थी, वह छवि मुझे मोहित कर रही है। जिससे भय भी डरता है, आश्चर्य है, उसकी यह दशा ?

द्वात्रिंशः श्लोकः

केचिदाहुरजं जातं पुण्यश्लोकस्य कीर्तये ।
यदोः प्रियस्यान्ववाये मलयस्येव चन्दनम् ॥३२॥

पदच्छेद—

केचित् आहुः अजम् जातम्, पुण्य श्लोकस्य कीर्तये ।
यदोः प्रियस्य अन्ववाये, मलयस्य इव चन्दनम् ॥

शब्दार्थ—

केचित्	१.	(हे भगवन्) कुछ लोग	यदोः	५.	यदु के
आहुः	१२.	मानते हैं	प्रियस्य	४.	प्रिय
अजम्	२.	अजन्मा (आपको)	अन्ववाये	७.	(उनके) वंश में
जातम्	११.	उत्पन्न हुआ	मलयस्य	८.	मलयाचल में
पुण्य श्लोकस्य	३.	पवित्र नामधारी (एवं)	इव	१०.	भाँति
कीर्तये ।	६.	यश के लिये	चन्दनम् ॥	९.	चन्दन की

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! कुछ लोग अजन्मा आपको पवित्र नामधारी एवं प्रिय यदु के यश के लिये उनके वंश में मलयाचल में चन्दन की भाँति उत्पन्न हुआ मानते हैं ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अपरे वसुदेवस्य देवक्यां याचितोऽभ्यगात्
अजस्त्वमस्य क्षेमाय वधाय च सुरद्विषाम् ॥३३॥

पदच्छेद—

अपरे वसुदेवस्य, देवक्याम् याचितः अभ्यगात् ।
अजः त्वम् अस्य क्षेमाय, वधाय च सुरद्विषाम् ॥

शब्दार्थ—

अपरे	१.	दूसरे लोग (आपको)	त्वम्	७.	आप
वसुदेवस्य	३.	वसुदेवजी की धर्मपत्नी	अस्य	८.	इस (संसार) के
देवक्याम्	४.	देवकी के गर्भ से	क्षेमाय	९.	कल्याण के लिये
याचितः	२.	(पूर्व जन्म के) वरदान से	वधाय	१२.	वध के लिये (अवतार लिये हैं)
अभ्यगात् ।	५.	उत्पन्न मानते हैं (किन्तु)	च	१०.	और
अजः	६.	अजन्मा	सुरद्विषाम् ॥	११.	देव-द्रोही दैत्यों के

श्लोकार्थ—दूसरे लोग आपको पूर्व जन्म के वरदान से वसुदेव जी की धर्मपत्नी देवकी के गर्भ से उत्पन्न मानते हैं । किन्तु अजन्मा आप इस संसार के कल्याण के लिये और देव-द्रोही दैत्यों के वध के लिये अवतार लिये हैं ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

भारावतारणायान्ये भुवो नाव इवोदधौ ।
सीदन्त्या भूरिभारेण जातो ह्यात्मभुवार्थितः ॥३४॥

पदच्छेद—

भार अवतारणाय अन्ये, भुवः नावः इव उदधौ ।
सीदन्त्याः भूरि भारेण, जातः हि आत्मभुवा अर्थितः ॥

शब्दार्थ—

भार	९.	बोझ को	सीदन्त्याः	५.	डगमगाती हुई
अवतारणाय	१०.	उतारने के लिये	भूरि	३.	बहुत
अन्ये	१.	अन्य लोग	भारेण	४.	बोझ से
भुवः		पृथ्वी के	जातः	१४.	उत्पन्न हुआ (मानते हैं)
नावः	६.	नौका की	हि	११.	ही
इव	७.	भाँति	आत्मभुवा	१२.	ब्रह्माजी के द्वारा
उदधौ ।	२.	समुद्र में	अर्थितः ॥	१३.	प्रार्थना करने पर (आपको)

श्लोकार्थ—अन्य लोग समुद्र में बहुत बोझ से डगमगाती हुई नौका की भाँति पृथ्वी के बोझ को उतारने के लिये ही ब्रह्मा जी के द्वारा प्रर्थना करने पर आपको उत्पन्न हुआ मानते हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

भवेऽस्मिन् क्लिश्यमानानामविद्याकामकर्मभिः ।
श्रवणस्मरणार्हाणि करिष्यन्निति केचन ॥३५॥

पदच्छेद—

भवे अस्मिन् क्लिश्यमानानाम्, अविद्या काम कर्मभिः ।
श्रवण स्मरण अर्हाणि, करिष्यन् इति केचन ॥

शब्दार्थ—

भवे	२.	संसार में	श्रवण	७.	श्रवण (और)
अस्मिन्	१.	इस	स्मरण	८.	स्मरण के
क्लिश्यमानानाम्	६.	कष्ट पाते हुये (प्राणियों) के	अर्हाणि	९.	योग्य (लीलालों) को
अविद्या	३.	मोह	करिष्यन्	१०.	करने के लिए (आप उत्पन्न हुऐं) हैं
काम	४.	कामना (और)	इति	१२.	ऐसा (मानते हैं)
कर्मभिः ।	५.	कर्मों के बंधन के कारण	केचन ॥	११.	कुछ लोग

श्लोकार्थ—इस संसार में मोह, कामना और कर्मों के बंधन के कारण कष्ट पाते हुये प्राणियों के श्रवण और स्मरण के योग्य लीलाओं को करने के लिये आप उत्पन्न हुये हैं, कुछ लोग ऐसा मानते हैं ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

शृण्वन्ति गायन्ति गृणन्त्यभीक्ष्णशः, स्मरन्ति नन्दन्ति तवेहितं जनाः ।
त एव पश्यन्त्यचिरेण तावकं, भवप्रवाहोपरमं पदाम्बुजम् ॥३६

पदच्छेद—शृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति अभीक्ष्णशः, स्मरन्ति नन्दन्ति तव ईहितम् जनाः ।
ते एव पश्यन्ति अचिरेण तावकम्, भव प्रवाह उपरमम् पद अम्बुजम् ॥

शब्दार्थं—

शृण्वन्ति, गायन्ति	४. सुनते हैं, गाते हैं	ते, एव	८. वे, ही
गृणन्ति	५. कीर्तन करते हैं	पश्यन्ति	१४. दर्शन करते हैं
अभीक्ष्णशः,	३. बारम्बार	अचिरेण	१३. शीघ्र
स्मरन्ति	६. स्मरण करते हैं (और)	तावकम्	११. तुम्हारे
नन्दन्ति	७. आनन्दित होते हैं	भव	९. संसार के
तव, ईहितम्	२. तुम्हारी, लीलाओं को	प्रवाह, उपरमम्	१०. आवागमन को, रोकने वाले
जनाः ।	१. (हे भगवन् ! जो) जन	पद, अम्बुजम् ॥	१२. चरण-कमल का

श्लोकार्थं—हे भगवन् ! जो जन तुम्हारी लीलाओं को बारम्बार सुनते हैं, गाते हैं, कीर्तन करते हैं, स्मरण करते हैं और आनन्दित होते हैं; वे ही संसार के आवागमन को रोकने वाले तुम्हारे चरण-कमल का शीघ्र दर्शन करते हैं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अप्यद्य नस्त्वं स्वकृतेहित प्रभो, जिहाससि स्वित्सुहृदोऽनुजीविनः ।
येषां न चान्यद्भवतः पदाम्बुजात्, परायणं राजसु योजितांहसाम् ॥३७॥

पदच्छेद—अपि अद्य नः त्वम् स्वकृत ईहित प्रभो, जिहाससि स्वित् सुहृदः अनुजीविनः ।
येषाम् न च अन्यत् भवतः पद अम्बुजात्, परायणम् राजसु योजित अंहसाम् ॥

शब्दार्थं—

अपि	२. क्या	न	१८. नहीं है
अद्य	६. आज	च	१५. और
नः	४. हम	अन्यत्	१४. दूसरा
त्वम्	३. आप	भवतः	१२. आपके
स्वकृत ईहित, प्रभो,	१. स्वयं लीलाधारी, हे भगवन्	पद अम्बुजात्,	१३. चरण-कमल से (भिन्न)
जिहाससि	७. छोड़ना चाहते हैं	परायणम्	१७. आश्रय
स्वित्	१६. कोई	राजसु	८. राजाओं से
सुहृदः, अनुजीविनः ।	५. मित्रों, (और) सेवकों को	योजित	१०. किये हुये
येषाम्	११. जिन (पाण्डवों) का	अंहसाम् ॥	९. विरोध

श्लोकार्थं—स्वयं लीलाधारी हे भगवन् ! क्या आप हम मित्रों और सेवकों को आज छोड़ना चाहते हैं ? राजाओं से विरोध किये हुए जिन पाण्डवों का आपके चरण-कमल से भिन्न दूसरा और कोई आश्रय नहीं है ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

के वयं नामरूपाभ्यां यदुभिः सह पाण्डवाः ।
भवतोऽदर्शनं यर्हि हृषीकाणामिवेशितुः ॥३८॥

पदच्छेद—

के वयम् नाम रूपाभ्याम्, यदुभिः सह पाण्डवाः ।
भवतः अदर्शनम् यर्हि, हृषीकाणाम् इव ईशितुः ॥

शब्दार्थ—

के	१३. कौन (होंगे ?)	भवतः	५. आप
वयम्	६. हम	अदर्शनम्	६. नहीं होंगे (उस समय)
नाम	११. ख्याति और	यर्हि	४. (उसी प्रकार) जिस समय
रूपाभ्याम्	१२. प्रभाव से	हृषीकाणाम्	३. इन्द्रियों की (शक्ति नष्ट हो जाती है)
यदुभिः	७. यादवों के	इव	१. जैसे
सह	८. साथ	ईशितुः ॥	२. जीव के (बिना)
पाण्डवाः ।	१०. पाण्डव-गण		

श्लोकार्थ—जैसे जीव के बिना इन्द्रियों की शक्ति नष्ट हो जाती है; उसी प्रकार जिस समय आप नहीं होंगे, उस समय यादवों के साथ हम पाण्डव-गण ख्याति और प्रभाव से कौन होंगे ? अर्थात् कुछ भी नहीं रहेंगे ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

नेयं शोभिष्यते तत्र यथेदानीं गदाधर ।
त्वत्पदैरङ्किता भाति स्वलक्षणविलक्षितैः ॥३९॥

पदच्छेद—

न इयम् शोभिष्यते तत्र, यथा इदानीम् गदाधर ।
त्वत् पदैः अङ्किता भाति, स्व लक्षण विलक्षितैः ॥

शब्दार्थ—

न	११. नहीं	गदाधर ।	१. हे गदाधर !
इयम्	१०. यह	त्वत् पदैः	४. तुम्हारे चरणों से
शोभिष्यते	१२. शोभा पायेगी	अङ्किता	५. चिह्नित (यह भूमि)
तत्र	९. तुम्हारे चले जाने पर	भाति	८. शोभित हो रही है
यथा	७. जितनी	स्व लक्षण	२. अपने लक्षणों से
इदानीम्	६. इस समय	विलक्षितैः ॥	३. निराले

श्लोकार्थ—हे गदाधर ! अपने लक्षणों से निराले तुम्हारे चरणों से चिह्नित यह भूमि इस समय जितनी शोभित हो रही है; तुम्हारे चले जाने पर यह शोभा नहीं पायेगी ।

चत्वारिंशः श्लोकः

इमे जनपदाः स्वृद्धाः सुपक्वौषधिवीरुधः ।
वनाद्रिनद्युदन्वन्तो ह्येधन्ते तव वीक्षितैः ॥४०॥

पदच्छेद—

इमे जनपदाः स्वृद्धाः, सुपक्व ओषधि वीरुधः ।
वन अद्रि नदी उदन्वन्तः, हि एधन्ते तव वीक्षितैः ॥

शब्दार्थ—

इमे	२.	ये	अद्रि	८.	पर्वत
जनपदाः	३.	नगर	नदी	९.	सरिता और
स्वृद्धाः	१.	अत्यन्त सम्पन्न	उदन्वन्तः	१०.	समुद्र
सुपक्व	४.	फली-फूली	हि	१३.	ही
ओषधि	५.	फसल	एधन्ते	१४.	वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं
वीरुधः ।	६.	वनस्पति	तव	११.	तुम्हारे
वन	७.	जंगल	वीक्षितैः ॥	१२.	दर्शन से

श्लोकार्थ—अत्यन्त सम्पन्न ये नगर, फली-फूली फसल, वनस्पति, जंगल, पर्वत, सरिता और समुद्र तुम्हारे दर्शन से ही वृद्धि को प्राप्त हो रहे हैं ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अथ विश्वेश विश्वात्मन् विश्वमूर्ते स्वकेषु मे ।
स्नेहपाशमिमं छिन्धि दृढं पाण्डुषु वृष्णिषु ॥४१॥

पदच्छेद—

अथ विश्व ईश विश्वात्मन्, विश्वमूर्ते स्वकेषु मे ।
स्नेह पाशम् इमम् छिन्धि, दृढम् पाण्डुषु वृष्णिषु ॥

शब्दार्थ—

अथ	१०.	अब	स्नेह पाशम्	९.	मोह-बन्धन को
विश्व ईश	३.	हे जगदीश !	इमम्	८.	इस
विश्वात्मन्	१.	जगत् की आत्मा	छिन्धि	१२.	काट दो
विश्वमूर्ते	२.	विश्वमूर्त्ति	दृढम्	११.	दृढ़ता से
स्वकेषु	४.	स्वजन	पाण्डुषु	५.	पाण्डवों और
मे ।	७.	मेरे	वृष्णिषु ॥	६.	यादवों में (व्यास)

श्लोकार्थ—जगत् की आत्मा, विश्वमूर्त्ति, हे जगदीश ! स्वजन पाण्डवों और यादवों में व्यास मेरे इस मोह-बन्धन को अब दृढ़ता से काट दो ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

त्वयि मेऽनन्यविषया मतिर्मधुपतेऽसकृत् ।
रतिमुद्वहतादद्धा गङ्गेवौघमुदन्वति ॥४२॥

पदच्छेद—

त्वयि मे अनन्य विषया, मतिः मधुपते असकृत् ।
रतिम् उद्वहतात् अद्धा, गङ्गा इव ओघम् उदन्वति ॥

शब्दार्थ—

त्वयि	२.	तुम्हारे में	रतिम्	१३.	भक्ति-भाव को
मे	५.	मेरी	उद्वहतात्	१४.	धारण करती रहे
अनन्य	३.	अनन्य	अद्धा	१२.	अधिकाधिक
विषया	४.	भाव से रहने वाली	गङ्गा	८.	गंगा जी की
मतिः	६.	बुद्धि	इव	१०.	समान
मधुपते	१.	हे माधव !	ओघम्	९.	धारा के
असकृत् ।	११.	निरन्तर	उदन्वति ॥	७.	समुद्र में (गिरती हुई)

श्लोकार्थ—हे माधव ! तुम्हारे में अनन्य-भाव से रहने वाली मेरी बुद्धि समुद्र में गिरती हुई गंगाजी की धारा के समान निरन्तर अधिकाधिक भक्ति-भाव को धारण करती रहे ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग्, राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य ।
गोविन्द गोद्विजसुरार्तिहरावतार, योगेश्वराखिलगुरो भगवन्नमस्ते ॥४३॥

पदच्छेद—

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्णि ऋषभ अवनि ध्रुक्, राजन्य वंश दहन अनपवर्ग वीर्य ।
गोविन्द गो द्विज सुर आर्ति हर अवतार, योगेश्वर अखिल गुरो भगवन् नमः ते ॥

शब्दार्थ—

श्रीकृष्ण	१.	हे श्रीकृष्ण !	गोविन्द	९.	हे गोविन्द !
कृष्णसख	२.	अर्जुन के मित्र	गो द्विज सुर	१०.	गो, ब्राह्मण और देवों की
वृष्णि, ऋषभ	३.	वृष्णि वंश के, शिरोमणि	आर्ति हर	११.	पीड़ा हरने के लिये
अवनि, ध्रुक्,	४.	पृथ्वी के, दुष्ट	अवतार,	१२.	अवतार लेने वाले
राजन्यवंश	५.	राजाओं के लिये	योगेश्वर	१३.	हे योगिराज !
दहन	६.	अग्नि स्वरूप	अखिलगुरो, भगवन्	१४.	सबके गुरु, हे भगवन् !
अनपवर्ग	७.	अनन्त	नमः	१६.	नमस्कार है
वीर्य ।	८.	पराक्रम शाली	ते ॥	१५.	आपको

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! अर्जुन के मित्र, वृष्णि वंश के शिरोमणि, पृथ्वी के दुष्ट राजाओं के लिये अग्नि-स्वरूप, अनन्त पराक्रमशाली, हे गोविन्द ! गो, ब्राह्मण और देवों की पीड़ा हरने के लिये अवतार लेने वाले, हे योगिराज ! सबके गुरु, हे भगवन् ! आपको नमस्कार है ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

पृथयेत्थं कलपदैः परिणूताखिलोदयः ।
मन्दं जहास वैकुण्ठो मोहयन्निव मायया ॥४४॥

पदच्छेद—

पृथया इत्थम् कल पदैः, परिणूत अखिल उदयः ।
मन्दम् जहास वैकुण्ठः, मोहयन् इव मायया ॥

शब्दार्थ—

पृथया	१.	कुन्ती	मन्दम्	११.	धीरे-धीरे
इत्थम्	२.	इस प्रकार	जहास	१२.	मुसकाये
कल पदैः	३.	सुन्दर शब्दों से	वैकुण्ठः	७.	भगवान् श्रीकृष्ण
परिणूत	६.	गान कर रही हैं वे	मोहयन्	९.	मोहित करते हुए
अखिल	४.	जिनकी सम्पूर्ण	इव	१०.	से
उदयः ।	५.	लीलाओं का	मायया ॥	८.	अपनी माया से

श्लोकार्थ—कुन्ती इस प्रकार सुन्दर शब्दों से जिनकी सम्पूर्ण लीलाओं का गान कर रही हैं; वे भगवान् श्रीकृष्ण अपनी माया से मोहित करते हुए से धीरे-धीरे मुसकाये ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तां बाढमित्युपामन्त्र्य प्रविश्य गजसाह्वयम् ।
स्त्रियश्च स्वपुरं यास्यन् प्रेम्णा राज्ञा निवारितः ॥४५॥

पदच्छेद—

ताम् बाढम् इति उपामन्त्र्य, प्रविश्य गजसाह्वयम् ।
स्त्रियः च स्व पुरम् यास्यन् , प्रेम्णा राज्ञा निवारितः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१.	उस (कुन्ती) से	स्त्रियः	५.	स्त्रियों से (बिदा लेने के लिए)
बाढम्	२.	ठीक है	च	८.	तथा
इति	३.	ऐसा	स्व पुरम्	९.	अपनी द्वारकापुरी में
उपामन्त्र्य	४.	कहकर	यास्यन्	१०.	जाने की इच्छा करने पर
प्रविश्य	७.	प्रवेश किया	प्रेम्णा	१२.	प्रेम से
गजसाह्वयम् ।	६.	हस्तिनापुर में	राज्ञा	११.	राजा युधिष्ठिर ने (उन्हें)
			निवारितः ॥	१३.	रोक लिया

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उस कुन्ती से 'ठीक है' ऐसा कहकर स्त्रियों से बिदा लेने के लिए हस्तिनापुर में प्रवेश किया तथा अपनी द्वारकापुरी में जाने की इच्छा करने पर राजा युधिष्ठिर ने उन्हें प्रेम से रोक लिया ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

व्यासाद्यैरीश्वरेहाज्ञैः कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ।
प्रबोधितोऽपीतिहासैर्नाबुध्यत शुचार्पितः ॥४६॥

पदच्छेद—

व्यास आद्यैः ईश्वर ईहा ज्ञैः, कृष्णेन अद्भुत कर्मणा ।
प्रबोधितः अपि इतिहासैः, न अबुध्यत शुचा अर्पितः ॥

शब्दार्थ—

व्यास	३.	वेदव्यास	**प्रबोधितः**	९.	समझाये जाने पर
आद्यैः	४.	इत्यादि ऋषियों के द्वारा (और)	**अपि**	१०.	भी
ईश्वर	१.	भगवान् की	**इतिहासैः**	८.	इतिहास (के दृष्टान्तों) से
ईहा ज्ञैः	२.	लीलाओं के जानकार	**न**	१३.	नहीं
कृष्णेन	७.	(स्वयं) श्रीकृष्ण के द्वारा	**अबुध्यत**	१४.	समझ सके
अद्भुत	५.	अलौकिक	**शुचा**	११.	शोक में
कर्मणा ।	६.	लीलाधारी	**अर्पितः ॥**	१२.	पड़े हुये (राजा युधिष्ठिर)

श्लोकार्थ—भगवान् की लीलाओं के जानकार वेदव्यास इत्यादि ऋषियों के द्वारा और अलौकिक लीलाधारी स्वयं श्रीकृष्ण के द्वारा इतिहास के दृष्टान्तों से समझाये जाने पर भी शोक में पड़े हुये राजा युधिष्ठिर नहीं समझ सके ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

आह राजा धर्मसुतश्चिन्तयन् सुहृदां वधम् ।
प्राकृतेनात्मना विप्राः स्नेहमोहवशं गतः ॥४७॥

पदच्छेद—

आह राजा धर्म सुतः, चिन्तयन् सुहृदाम् वधम् ।
प्राकृतेन आत्मना विप्राः, स्नेह मोह वशम् गतः ॥

शब्दार्थ—

आह	१२.	बोले	**प्राकृतेन**	२.	बन्धन युक्त
राजा	११.	राजा (युधिष्ठिर)	**आत्मना**	३.	आत्मा के कारण
धर्म सुतः	१०.	धर्मराज के पुत्र	**विप्राः**	१.	हे महर्षियों !
चिन्तयन्	९.	शोक करते हुए	**स्नेह मोह**	४.	ममता और मोह के
सुहृदाम्	७.	संबन्धियों के	**वशम्**	५.	अधीन
वधम् ।	८.	वध के विषय में	**गतः ॥**	६.	पड़े हुये (फलस्वरूप)

श्लोकार्थ—हे महर्षियों ! बन्धन-युक्त आत्मा के कारण ममता और मोह के अधीन पड़े हुए, फलस्वरूप संबन्धियों के वध के विषय में शोक करते हुए धर्मराज के पुत्र राजा युधिष्ठिर बोले ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

अहो मे पश्यताज्ञानं हृदि रूढं दुरात्मनः ।
पारक्यस्यैव देहस्य बह्व्यो मेऽक्षौहिणीर्हताः ॥४८॥

पदच्छेद—

अहो मे पश्यत अज्ञानम्, हृदि रूढम् दुरात्मनः ।
पारक्यस्य एव देहस्य, बह्व्यः मे अक्षौहिणीः हताः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अरे !	पारक्यस्य	९.	परायी
मे	३.	मेरे	एव	११.	ही
पश्यत	७.	देखिये (जिसके कारण)	देहस्य	१०.	देह के लिये
अज्ञानम्	६.	अज्ञान को	बह्व्यः	१२.	अनेकों
हृदि	४.	हृदय में	मे	८.	मेरी
रूढम्	५.	उत्पन्न	अक्षौहिणीः	१३.	अक्षौहिणी सेनायें
दुरात्मनः ।	२.	दुष्टात्मा	हताः ॥	१४.	मारी गयीं

श्लोकार्थ—अरे ! दुष्टात्मा मेरे हृदय में उत्पन्न अज्ञान को देखिये; जिसके कारण मेरी परायी देह के लिये ही अनेकों अक्षौहिणी सेनायें मारी गयीं ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

बालद्विजसुहृन्मित्रपितृभ्रातृगुरुद्रुहः ।
न मे स्यान्निरयान्मोक्षो ह्यपि वर्षायुतायुतैः ॥४९॥

पदच्छेद—

बाल द्विज सुहृद् मित्र, पितृ भ्रातृ गुरु द्रुहः ।
न मे स्यात् निरयात् मोक्षः, हि अपि वर्ष अयुत अयुतैः ॥

शब्दार्थ—

बाल, द्विज	१.	बालक, ब्राह्मण	मे	८.	मेरा
सुहृद्	२.	संबन्धी	स्यात्	१६.	होगा
मित्र	३.	सखा	निरयात्	१२.	नरक से
पितृ	४.	चाचा-ताऊ	मोक्षः	१४.	छुटकारा
भ्रातृ	५.	भाई और	हि	१३.	अवश्य
गुरु	६.	गुरुजनों से	अपि	११.	भी
द्रुहः ।	७.	विरोध करने के कारण	वर्ष	१०.	वर्षों में
न	१५.	नहीं	अयुत, अयुतैः ॥	९.	कोटि, कोटि

श्लोकार्थ—बालक, ब्राह्मण, संबन्धी, सखा, चाचा-ताऊ, भाई और गुरुजनों से विरोध करने के कारण मेरा कोटि-कोटि वर्षों में भी नरक से अवश्य छुटकारा नहीं होगा ।

पञ्चाशः श्लोकः

नैनो राज्ञः प्रजाभर्तुर्धर्मयुद्धे वधो द्विषाम् ।
इति मे न तु बोधाय कल्पते शासनं वचः ॥५०॥

पदच्छेद—

न एनः राज्ञः प्रजा भर्तुः, धर्म युद्धे वधः द्विषाम् ।
इति मे न तु बोधाय, कल्पते शासनम् वचः ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं (है)	इति	२.	यह
एनः	१०.	पाप	मे	१२.	मुझे
राज्ञः	७.	राजा के द्वारा	न	१४.	नहीं
प्रजा भर्तुः	६.	प्रजा पालक	तु	४.	कि
धर्म युद्धे	५.	न्यायोचित युद्ध में	बोधाय	१३.	समझाने में
वधः	९.	वध करना	कल्पते	१५.	समर्थ है
द्विषाम् ।	८.	शत्रुओं का	शासनम्	१.	शास्त्र का
			वचः ॥	३.	वचन

श्लोकार्थ—शास्त्र का यह वचन कि "न्यायोचित युद्ध में प्रजा पालक राजा के द्वारा शत्रुओं का वध करना पाप नहीं है" मुझे समझाने में समर्थ नहीं है ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

स्त्रीणां मद्धतबन्धूनां द्रोहो योऽसाविहोत्थितः ।
कर्मभिर्गृहमेधीयैर्नाहं कल्पो व्यपोहितुम् ॥५१॥

पदच्छेद—

स्त्रीणाम् मद् हत बन्धूनाम्, द्रोहः यः असौ इह उत्थितः ।
कर्मभिः गृहमेधीयैः, न अहम् कल्पः व्यपोहितुम् ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीणाम्	३.	स्त्रियों का	उत्थितः ।	७.	उत्पन्न हुआ है
मद् हत	१.	मेरे द्वारा मारे गये	कर्मभिः	११.	यज्ञानुष्ठानों से (उसका)
बन्धूनाम्	२.	सम्बन्धियों वाली	गृहमेधीयैः	१०.	गृहस्थोचित
द्रोहः	६.	अपकार-मूलक पाप	न	१४.	नहीं (हूँ)
यः	४.	जो	अहम्	९.	मैं
असौ	५.	वह	कल्पः	१३.	समर्थ
इह	८.	इस संसार में	व्यपोहितुम् ॥	१२.	नाश करने में

श्लोकार्थ—मेरे द्वारा मारे गये सम्बन्धियों वाली स्त्रियों का जो वह अपकार-मूलक पाप उत्पन्न हुआ है; इस संसार में मैं गृहस्थोचित यज्ञानुष्ठानों से उसका नाश करने में समर्थ नहीं हूँ ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

यथा पङ्केन पङ्काम्भः सुरया वा सुराकृतम् ।
भूतहत्यां तथैवैकां न यज्ञैर्मार्ष्टुमर्हति ॥५२॥

पदच्छेद—

यथा पङ्केन पङ्क अम्भः, सुरया वा सुरा कृतम् ।
भूत हत्याम् तथैव एकाम्, न यज्ञैः मार्ष्टुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	भूत हत्याम्	११.	प्राणियों की हत्या की
पङ्केन	२.	कीचड़ के द्वारा	तथैव	८.	उसी प्रकार
पङ्क अम्भः	३.	गन्दा पानी	एकाम्	९.	एक मात्र
सुरया	५.	मदिरा के द्वारा	न	१३.	नहीं
वा	४.	अथवा	यज्ञैः	१०.	यज्ञानुष्ठानों से
सुरा	६.	मदिरा की	मार्ष्टुम्	१२.	शुद्धि
कृतम् ।	७.	मादकता (शुद्ध नहीं की जा सकती)	अर्हति ॥	१४.	की जा सकती है

श्लोकार्थ—जैसे कीचड़ के द्वारा गन्दा पानी अथवा मदिरा के द्वारा मदिरा की मादकता शुद्ध नहीं की जा सकती; उसी प्रकार एकमात्र यज्ञानुष्ठानों से प्राणियों की हत्या की शुद्धि नहीं की जा सकती है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
कुन्तीस्तुतिर्युधिष्ठिरानुतापो नाम अष्टमः अध्यायः ॥८॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ नवमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—

इति भीतः प्रजाद्रोहात्सर्वधर्मविवित्सया ।
ततो विनशनं प्रागाद् यत्र देवव्रतोऽपतत् ।।१।।

पदच्छेद—

इति भीतः प्रजा द्रोहात्, सर्व धर्म विवित्सया ।
ततः विनशनम् प्रागात्, यत्र देवव्रतः अपतत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	ततः	७.	तदनन्तर
भीतः	४.	डरे हुये (राजा युधिष्ठिर)	विनशनम्	८.	कुरुक्षेत्र में
प्रजा	२.	प्रजा के	प्रागात्	९.	गये
द्रोहात्	३.	अपकार से	यत्र	१०.	जहाँ
सर्व धर्म	५.	सभी (वर्णाश्रम) धर्मों को	देवव्रतः	११.	भीष्म पितामह
विवित्सया ।	६.	जानने की इच्छा से	अपतत् ॥	१२.	(शरशय्या पर) पड़े हुये थे

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रजा के अपकार से डरे हुये राजा युधिष्ठिर सभी वर्णाश्रम धर्मों को जानने की इच्छा से तदनन्तर कुरुक्षेत्र में गये, जहाँ भीष्मपितामह शरशय्या पर पड़े हुये थे ।

द्वितीयः श्लोकः

तदा ते भ्रातरः सर्वे, सदश्वैः स्वर्णभूषितैः ।
अन्वगच्छन् रथैर्विप्रा व्यासधौम्यादयस्तथा ।।२।।

पदच्छेद—

तदा ते भ्रातरः सर्वे, सद् अश्वैः स्वर्ण भूषितैः ।
अन्वगच्छन् रथैः विप्राः, व्यास धौम्य आदयः तथा ॥

शब्दार्थ—

तदा	२.	उस समय	अन्वगच्छन्	१२.	पीछे-पीछे गये
ते	३.	वे	रथैः	११.	रथों से
भ्रातरः	५.	भाई	विप्राः	१.	हे ऋषियों !
सर्वे	४.	सभी	व्यास, धौम्य	७.	वेद व्यास, धौम्य
सद्, अश्वैः	९.	उत्तम, घोड़ों से जुते और	आदयः	८.	इत्यादि (ऋषि भी)
स्वर्ण, भूषितैः ।	१०.	सुवर्ण से, अलंकृत	तथा ॥	६.	तथा

श्लोकार्थ—हे ऋषियों ! उस समय वे सभी भाई तथा वेद व्यास, धौम्य इत्यादि ऋषि भी उत्तम घोड़ों से जुते हुये और सुवर्ण से अलंकृत रथों से पीछे-पीछे गये ।

तृतीयः श्लोकः

भगवानपि विप्रर्षे रथेन सधनंजयः ।
स तैर्व्यरोचत नृपः कुबेर इव गुह्यकैः ॥३॥

पदच्छेद—

भगवान् अपि विप्रर्षे, रथेन स धनंजयः ।
सः तै व्यरोचत नृपः, कुबेरः इव गुह्यकैः

शब्दार्थ—

भगवान्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण	तैः	९.	उन सबके साथ
अपि	४.	भी	व्यरोचत	१२.	बहुत अच्छे लग रहे थे
विप्रर्षे	१.	हे शौनक जी !	नृपः	११.	राजा युधिष्ठिर
रथेन	५.	रथ से (वहाँ गये)	कुबेरः	७.	कुबेर के
स धनंजयः ।	२.	अर्जुन के साथ	इव	८.	समान (उस समय)
सः	१०.	वे	गुह्यकैः ॥	६.	यक्षों के साथ

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! अर्जुन के साथ भगवान् श्रीकृष्ण भी रथ से वहाँ गये । यक्षों के साथ कुबेर के समान उस समय उन सबके साथ वे राजा युधिष्ठिर बहुत अच्छे लग रहे थे ।

चतुर्थः श्लोकः

दृष्ट्वा निपतितं भूमौ दिवश्च्युतमिवामरम् ।
प्रणेमुः पाण्डवा भीष्मं सानुगाः सह चक्रिणा ॥४॥

पदच्छेद —

दृष्ट्वा निपतितम् भूमौ, दिवः च्युतम् इव अमरम् ।
प्रणेमुः पाण्डवाः भीष्मम्, स अनुगाः सह चक्रिणा ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	१२.	देखकर	प्रणेमुः	१४.	प्रणाम किया
निपतितम्	११.	पड़े हुए	पाण्डवाः	५.	पाण्डवों ने
भूमौ	१०.	भूमि पर	भीष्मम्	१३.	भीष्म पितामह को
दिवः	६.	स्वर्ग से	स	२.	और
च्युतम्	७.	गिरे हुए	अनुगाः	१.	अनुचरों
इव	९.	समान	सह	४.	साथ
अमरम् ।	८.	देवता के	चक्रिणा ।	३.	भगवान् श्रीकृष्ण के

श्लोकार्थ—अनुचरों और भगवान् श्रीकृष्ण के साथ पाण्डवों ने स्वर्ग से गिरे हुए देवता के समान भूमि पर पड़े हुए देख कर भीष्म पितामह को प्रणाम किया ।

पञ्चमः श्लोकः

तत्र ब्रह्मर्षयः सर्वे देवर्षयश्च सत्तम ।
राजर्षयश्च तत्रासन् द्रष्टुं भरतपुङ्गवम् ॥५॥

पदच्छेद—

तत्र ब्रह्मर्षयः सर्वे, देवर्षयः च सत्तम ।
राजर्षयः च तत्र आसन् , द्रष्टुम् भरत पुङ्गवम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२. वहाँ पर		राजर्षयः	८. राजर्षि गण
ब्रह्मर्षयः	४. ब्रह्मर्षि		च तत्र	७. तथा
सर्वे	३. सभी		आसन्	१२. उपस्थित थे
देवर्षयः	६. देवर्षि		द्रष्टुम्	११. देखने के लिये
च	५. और		भरत	९. भरतवंशियों में
सत्तम ।	१. हे शौनक जी !		पुङ्गवम् ॥	१०. श्रेष्ठ (भीष्म पितामह) को

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! वहाँ पर सभी ब्रह्मर्षि और देवर्षि तथा राजर्षि गण भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्म पितामह को देखने के लिये उपस्थित थे ।

षष्ठः श्लोकः

पर्वतो नारदो धौम्यो भगवान् बादरायणः ।
बृहदश्वो भरद्वाजः सशिष्यो रेणुकासुतः ॥६॥

पदच्छेद—

पर्वतः नारदः धौम्यः, भगवान् बादरायणः ।
बृहदश्वः भरद्वाजः, स शिष्यः रेणुका सुतः ॥

शब्दार्थ—

पर्वतः	१. पर्वत ऋषि		बृहदश्वः	६. बृहदश्व
नारदः	२. देवर्षि नारद		भरद्वाजः	७. भरद्वाज (और)
धौम्यः	३. धौम्य ऋषि		स शिष्यः	१०. शिष्यों के साथ (पधारे)
भगवान्	४. भगवान्		रेणुका	८. रेणुका के
बादरायणः ।	५. वेदव्यास		सुतः ॥	९. पुत्र (परशुराम जी)

श्लोकार्थ—वहाँ पर पर्वत ऋषि, देवर्षि नारद, धौम्य ऋषि, भगवान् वेदव्यास, बृहदश्व, भरद्वाज और रेणुका के पुत्र परशुराम जी शिष्यों के साथ पधारे ।

सप्तमः श्लोकः

वसिष्ठ इन्द्रप्रमदस्त्रितो गृत्समदोऽसितः ।
कक्षीवान् गौतमोऽत्रिश्च कौशिकोऽथ सुदर्शनः ॥७॥

पदच्छेद—

वसिष्ठः इन्द्रप्रमदः, त्रितः गृत्समदः असितः ।
कक्षीवान् गौतमः अत्रिः च, कौशिकः अथ सुदर्शनः ॥

शब्दार्थ—

वसिष्ठः	२.	वसिष्ठ	**गौतमः**	८.	गौतम
इन्द्रप्रमदः	३.	इन्द्रप्रमद	**अत्रिः**	९.	अत्रि
त्रितः	४.	त्रित	**च**	११.	और
गृत्समदः	५.	गृत्समद	**कौशिकः**	१०.	विश्वामित्र
असितः ।	६.	असित	**अथ**	१.	तदनन्तर (वहाँ पर)
कक्षीवान्	७.	कक्षीवान्	**सुदर्शनः ॥**	१२.	सुदर्शन ऋषि (भी पधारे)

श्लोकार्थ—तदनन्तर वहाँ पर वसिष्ठ, इन्द्रप्रमद, त्रित, गृत्समद, असित, कक्षीवान्, गौतम, अत्रि, विश्वामित्र और सुदर्शन ऋषि भी पधारे ।

अष्टमः श्लोकः

अन्ये च मुनयो ब्रह्मन् ब्रह्मरातादयोऽमलाः ।
शिष्यैरुपेता आजग्मुः कश्यपाङ्गिरसादयः ॥८॥

पदच्छेद—

अन्ये च मुनयः ब्रह्मन्, ब्रह्मरात आदयः अमलाः ।
शिष्यैः उपेताः आजग्मुः, कश्यप आङ्गिरस आदयः ॥

शब्दार्थ—

अन्ये	९.	दूसरे	**अमलाः ।**	४.	परमहंस
च	५.	और	**शिष्यैः, उपेताः**	११.	शिष्यों के साथ
मुनयः	१०.	मुनिजन (भी)	**आजग्मुः**	१२.	पधारे
ब्रह्मन्	१.	हे शौनक जी ! (वहाँ पर)	**कश्यप**	६.	कश्यप
ब्रह्मरात	२.	शुकदेव	**आङ्गिरस**	७.	अंगिरा पुत्र बृहस्पति
आदयः	३.	इत्यादि	**आदयः ॥**	८.	आदि

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! वहाँ पर शुकदेव इत्यादि परमहंस और कश्यप, अंगिरा-पुत्र बृहस्पति आदि दूसरे मुनिजन भी शिष्यों के साथ पधारे ।

नवमः श्लोकः

तान् समेतान् महाभागानुपलभ्य वसूत्तमः ।
पूजयामास धर्मज्ञो देशकालविभागवित् ॥९॥

पदच्छेद—

तान् समेतान् महाभागान्, उपलभ्य वसूत्तमः ।
पूजयामास धर्मज्ञः, देश काल विभाग वित् ॥

शब्दार्थ—

तान्	७.	उन	पूजयामास	१०.	पूजा की
समेतान्	६.	पधारे हुए	धर्मज्ञः	४.	धर्म धुरन्धर
महाभागान्	८.	बड़भागी (ऋषियों) को	देश काल	१.	देश और काल के
उपलभ्य	९.	पाकर (उनकी)	विभाग	२.	विभाग को
वसूत्तमः ।	५.	भीष्म पितामह ने	वित् ॥	३.	जानने वाले

श्लोकार्थ—देश और काल के विभाग को जानने वाले धर्म-धुरन्धर भीष्म पितामह ने पधारे हुए उन बड़भागी ऋषियों को पाकर उनकी पूजा की ।

दशमः श्लोकः

कृष्णं च तत्प्रभावज्ञ आसीनं जगदीश्वरम् ।
हृदिस्थं पूजयामास माययोपात्तविग्रहम् ॥१०॥

पदच्छेद—

कृष्णम् च तत् प्रभावज्ञः, आसीनम् जगदीश्वरम् ।
हृदिस्थम् पूजयामास, मायया उपात्त विग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णम्	११.	श्रीकृष्ण की	हृदि	८.	हृदय में
च	७.	तथा	स्थम्	९.	विराजमान
तत्	१.	भगवान् के	पूजयामास	१२.	पूजा की
प्रभावज्ञः	२.	प्रभाव के जानकार (भीष्मपितामह ने)	मायया	४.	माया से
आसीनम्	३.	पास में बैठे गए	उपात्त	६.	धारण करने वाले
जगदीश्वरम् ।	१०.	जगदीश्वर	विग्रहम् ॥	५.	शरीर

श्लोकार्थ—भगवान् के प्रभाव के जानकार भीष्म पितामह ने पास में बैठे हुए, माया से शरीर धारण करने वाले तथा हृदय में विराजमान जगदीश्वर श्रीकृष्ण की पूजा की ।

एकादशः श्लोकः

पाण्डुपुत्रानुपासीनान् प्रश्रयप्रेमसंगतान् ।
अभ्याचष्टानुरागास्रैरन्धीभूतेन चक्षुषा ॥११॥

पदच्छेद—

पाण्डुपुत्रान् उपासीनान्, प्रश्रय प्रेम संगतान् ।
अभ्याचष्ट अनुराग अस्रैः, अन्धीभूतेन चक्षुषा ॥

शब्दार्थ—

पाण्डुपुत्रान्	९.	पाण्डवों से	अभ्याचष्ट	१०.	कहा
उपासीनान्	८.	पास में बैठे हुये	अनुराग	१.	(भीष्म पितामह ने) प्रेम के
प्रश्रय	५.	विनय और	अस्रैः	२.	आँसुओं के द्वारा
प्रेम	६.	प्रेम में	अन्धीभूतेन	३.	अन्धी हुई
संगतान् ।	७.	पगे (तथा)	चक्षुषा ॥	४.	आँख से

श्लोकार्थ—भीष्म पितामह ने प्रेम के आँसुओं के द्वारा अन्धी हुई आँख से विनय और प्रेम में पगे तथा पास में बैठे हुये पाण्डवों से कहा ।

द्वादशः श्लोकः

अहो कष्टमहोऽन्याय्यं यद्यूयं धर्मनन्दनाः ।
जीवितुं नार्हथ क्लिष्टं विप्रधर्माच्युताश्रयाः ॥१२॥

पदच्छेद—

अहो कष्टम् अहो अन्याय्यम्, यद् यूयम् धर्म नन्दनाः ।
जीवितुम् न अर्हथ क्लिष्टम्, विप्र धर्म अच्युत आश्रयाः ॥

शब्दार्थ—

अहो कष्टम्	१.	अरे ! कष्ट है	न	११.	नहीं
अहो अन्याय्यम्	२.	अरे ! अन्याय है	अर्हथ	१२.	योग्य थे
यद्	३.	कि	क्लिष्टम्	९.	क्लेश के साथ
यूयम्	८.	तुम लोग	विप्र धर्म	४.	ब्राह्मण, धर्म और
धर्म नन्दनाः ।	७.	धर्म के पुत्र	अच्युत	५.	श्रीकृष्ण के
जीवितुम्	१०.	जीने के	आश्रयाः ॥	६.	आश्रित

श्लोकार्थ—अरे ! कष्ट है, अरे अन्याय है कि ब्राह्मण, धर्म और श्रीकृष्ण के आश्रित धर्म के पुत्र तुम लोग क्लेश के साथ जीने के योग्य नहीं थे ।

त्रयोदशः श्लोकः

संस्थितेऽतिरथे पाण्डौ पृथा बालप्रजा वधूः ।
युष्मत्कृते बहून् क्लेशान् प्राप्ता तोकवती मुहुः ॥१३॥

पदच्छेद—

संस्थिते अतिरथे पाण्डौ, पृथा बाल प्रजा वधूः ।
युष्मत् कृते बहून् क्लेशान् , प्राप्ता तोकवती मुहुः ॥

शब्दार्थ—

संस्थिते	३.	दिवंगत हो जाने पर	युष्मत् कृते	८.	तुम लोगों के लिए
अतिरथे	१.	महारथी	बहून्	१०.	बहुत से
पाण्डौ	२.	पाण्डु के	क्लेशान्	११.	कष्टों को
पृथा	६.	कुन्ती	प्राप्ता	१२.	उठाया है
बाल प्रजा	४.	अबोध बच्चों वाली	तोकवती	५.	लड़कौरी
वधूः ।	७.	रानी ने	मुहुः ॥	९.	बारम्बार

श्लोकार्थ—महारथी पाण्डु के दिवंगत हो जाने पर अबोध बच्चों वाली लड़कौरी कुन्ती रानी ने तुम लोगों के लिए बारम्बार बहुत से कष्टों को उठाया है ।

चतुर्दशः श्लोकः

सर्वं कालकृतं मन्ये भवतां च यदप्रियम् ।
सपालो यद्वशे लोको वायोरिव घनावलिः ॥१४॥

पदच्छेद—

सर्वम् काल कृतम् मन्ये, भवताम् च यद् अप्रियम् ।
स पालः यद् वशे लोकः, वायोः इव घन अवलिः ॥

शब्दार्थ—

सर्वम्	५.	सबको	स पालः	९.	लोक पालों के सहित
काल कृतम्	६.	काल भगवान् के द्वारा किया हुआ	यद् वशे	८.	जिस (काल) के अधीन
मन्ये	७.	मानता हूँ	लोकः	१०.	सारा संसार (है)
भवताम्	१.	आप लोगों को	वायोः	१२.	वायु के (अधीन)
च	४.	तथा	इव	११.	जैसे
यद्	२.	जो	घन	१३.	बादलों का
अप्रियम् ।	३.	कष्ट (हुआ है; मैं उसे)	अवलिः ॥	१४.	समूह (रहता है)

श्लोकार्थ—आप लोगों को जो कष्ट हुआ है; मैं उसे तथा सबको काल-भगवान् के द्वारा किया हुआ मानता हूँ। जिस काल के अधीन लोक-पालों के सहित सारा संसार है । जैसे वायु के अधीन बादलों का समूह रहता है ।

पञ्चदशः श्लोकः

यत्र धर्मसुतो राजा गदापाणिर्वृकोदरः ।
कृष्णोऽस्त्री गाण्डिवं चापं सुहृत्कृष्णस्ततो विपत् ॥१५॥

पदच्छेद—

यत्र धर्म सुतः राजा, गदा पाणिः वृकोदरः ।
कृष्णः अस्त्री गाण्डिवम् चापम् , सुहृत् कृष्णः ततः विपत् ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	जहाँ	अस्त्री	८.	अस्त्रधारी (हों)
धर्म	२.	धर्मराज के	गाण्डिवम्	९.	गाण्डीव
सुतः	३.	पुत्र युधिष्ठिर	चापम्	१०.	धनुष (हो और)
राजा	४.	राजा (हों)	सुहृत्	१२.	मित्र (हों)
गदा पाणिः	६.	हाथ में गदा लिये हुये (हों)	कृष्णः	११.	भगवान् श्रीकृष्ण
वृकोदरः ।	५.	भीमसेन	ततः	१३.	फिर भी
कृष्णः	७.	अर्जुन	विपत् ॥	१४.	विपत्ति (हो ! यह आश्चर्य है)

श्लोकार्थ—जहाँ धर्मराज के पुत्र युधिष्ठिर राजा हों, भीमसेन हाथ में गदा लिये हों, अर्जुन अस्त्रधारी हों, गाण्डीव धनुष हो और भगवान् श्रीकृष्ण मित्र हों; फिर भी विपत्ति हो ! यह आश्चर्य है ।

षोडशः श्लोकः

न ह्यस्य कर्हिचिद्राजन् पुमान् वेद विधित्सितम् ।
यद्विजिज्ञासया युक्ता मुह्यन्ति कवयोऽपि हि ॥१६॥

पदच्छेद—

न हि अस्य कर्हिचित् राजन् , पुमान् वेद विधित्सितम् ।
यद् विजिज्ञासया युक्ताः, मुह्यन्ति कवयः अपि हि ॥

शब्दार्थ—

न	७.	नहीं	विधित्सितम् ।	४.	लीलाओं को
हि	६.	भी	यद्	११.	इन्हें
अस्य	३.	इन (श्रीकृष्ण) की	विजिज्ञासया	१२.	जानने की इच्छा से
कर्हिचित्	५.	कभी	युक्ताः	१३.	युक्त होने पर
राजन्	१.	हे राजन् !	मुह्यन्ति	१४.	मोहित हो जाते हैं
पुमान्	२.	मनुष्य	कवयः अपि	१०.	विद्वान् लोग भी
वेद	८.	जान सकता है	हि ॥	९.	क्योंकि

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मनुष्य इन श्रीकृष्ण की लीलाओं को कभी भी नहीं जान सकता है; क्योंकि विद्वान् लोग भी इन्हें जानने की इच्छा से युक्त होने पर मोहित हो जाते हैं ।

सप्तदशः श्लोकः

तस्मादिदं दैवतन्त्रं व्यवस्य भरतर्षभ ।
तस्यानुविहितोऽनाथा नाथ पाहि प्रजाः प्रभो ॥१७॥

पदच्छेद—

तस्मात् इदम् दैव तन्त्रम्, व्यवस्य भरत ऋषभ ।
तस्य अनुविहितः अनाथाः, नाथ पाहि प्रजाः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	**अनुविहितः**	१२.	निर्धारित किये गये हो
इदम्	५.	इसे	**अनाथाः**	८.	अनाथ
दैव तन्त्रम्	६.	ईश्वर का विधान	**नाथ**	४.	स्वामी (युधिष्ठिर ! तुम)
व्यवस्य	७.	मानकर	**पाहि**	१०.	रक्षा करो (तुम)
भरत ऋषभ ।	२.	भरतवंशियों में श्रेष्ठ	**प्रजाः**	९.	प्रजा की
तस्य	११.	इसी (कार्य) के लिए	**प्रभो ॥**	३.	समर्थ (एवम्)

श्लोकार्थ—इसलिये भरतवंशियों में श्रेष्ठ, समर्थ एवं स्वामी युधिष्ठिर ! तुम इसे ईश्वर का विधान मानकर अनाथ प्रजा की रक्षा करो । तुम इसी कार्य के लिये निर्धारित किये गये हो ।

अष्टादशः श्लोकः

एष वै भगवान् साक्षादाद्यो नारायणः पुमान् ।
मोहयन्मायया लोकं गूढश्चरति वृष्णिषु ॥१८॥

पदच्छेद—

एषः वै भगवान् साक्षात्, आद्यः नारायणः पुमान् ।
मोहयन् मायया लोकम्, गूढः चरति वृष्णिषु ॥

शब्दार्थ—

एषः वै	१.	ये (श्रीकृष्ण) ही	**मोहयन्**	९.	मोहित करते हुए
भगवान्	३.	ईश्वर	**मायया**	७.	अपनी माया से
साक्षात्	२.	प्रत्यक्ष	**लोकम्**	८.	जगत् को
आद्यः	४.	आदि कारण	**गूढः**	११.	छिपकर
नारायणः	५.	नारायण और	**चरति**	१२.	लीला कर रहे हैं
पुमान् ।	६.	परम पुरुष (हैं ये)	**वृष्णिषु ॥**	१०.	वृष्णिकुल में

श्लोकार्थ—ये श्रीकृष्ण ही प्रत्यक्ष ईश्वर, आदि कारण, नारायण और परम पुरुष हैं । ये अपनी माया से जगत् को मोहित करते हुए वृष्णिकुल में छिपकर लीला कर रहे हैं ।

एकोनविंशः श्लोकः

अस्यानुभावं भगवान् वेद गुह्यतमं शिवः ।
देवर्षिर्नारदः साक्षाद्भगवान् कपिलो नृप ॥१९॥

पदच्छेद—

अस्य अनुभावम् भगवान्, वेद गुह्यतमम् शिवः ।
देवर्षिः नारदः साक्षात्, भगवान् कपिलः नृप ॥

शब्दार्थ—

अस्य	२.	इनके	देवर्षिः	७.	देवर्षि
अनुभावम्	४.	प्रभाव को	नारदः	८.	नारद (और)
भगवान्	५.	भगवान्	साक्षात्	९.	साक्षात्
वेद	१२.	जानते हैं	भगवान्	१०.	भगवान्
गुह्यतमम्	३.	अत्यन्त रहस्यमय	कपिलः	११.	कपिल (ही)
शिवः ।	६.	शंकर	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इनके अत्यन्त रहस्यमय प्रभाव को भगवान् शंकर, देवर्षि नारद और साक्षात् भगवान् कपिल ही जानते हैं ।

विंशः श्लोकः

यं मन्यसे मातुलेयं प्रियं मित्रं सुहृत्तमम् ।
अकरोः सचिवं दूतं सौहृदादथ सारथिम् ॥२०॥

पदच्छेद—

यम् मन्यसे मातुलेयम्, प्रियम् मित्रम् सुहृत्तमम् ।
अकरोः सचिवम् दूतम्, सौहृदात् अथ सारथिम् ॥

शब्दार्थ—

यम्	१.	(तुम) जिन्हें	अकरोः	१२.	बनाया है
मन्यसे	६.	समझते हो	सचिवम्	९.	मन्त्री
मातुलेयम्	२.	ममेरा भाई	दूतम्	१०.	दूत (एवम्)
प्रियम्	३.	प्रिय	सौहृदात्	८.	प्रेमभाव से
मित्रम्	४.	मित्र (तथा)	अथ	७.	और (जिन्हें)
सुहृत्तमम् ।	५.	अत्यन्त हितैषी	सारथिम् ॥	११.	सारथी

श्लोकार्थ—तुम जिन्हें ममेरा भाई, प्रिय मित्र तथा अत्यन्त हितैषी समझते हो और जिन्हें प्रेम भाव से मन्त्री, दूत एवम् सारथी बनाया है ।

एकविंशः श्लोकः

सर्वात्मनः समदृशो ह्यद्वयस्यानहंकृतेः ।
तत्कृतं मतिवैषम्यं निरवद्यस्य न क्वचित् ॥२१॥

पदच्छेद—

सर्व आत्मनः सम दृशः, हि अद्वयस्य अनहंकृतेः ।
तत् कृतम् मति वैषम्यम्, निरवद्यस्य न क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

सर्व आत्मनः	१.	सबकी आत्मा	**कृतम्**	९.	कारण
सम दृशः	२.	समदर्शी	**मति**	७.	बुद्धि में
हि	५.	तथा	**वैषम्यम्**	११.	विषमता
अद्वयस्य	३.	अखण्ड	**निरवद्यस्य**	६.	निष्कलंक (भगवान् श्री कृष्ण) की
अनहंकृतेः ।	४.	अहंकार से रहित	**न**	१२.	नहीं (आती है)
तत्	८.	उन सबों के	**क्वचित् ॥**	१०.	कभी

श्लोकार्थ—सबकी आत्मा, समदर्शी, अखण्ड, अहङ्कार से रहित तथा निष्कलंक भगवान् श्रीकृष्ण की बुद्धि में उन सबों के कारण कभी विषमता नहीं आती है ।

द्वाविंशः श्लोकः

तथाप्येकान्तभक्तेषु पश्य भूपानुकम्पितम् ।
यन्मेऽसूंस्त्यजतः साक्षात्कृष्णो दर्शनमागतः ॥२२॥

पदच्छेद—

तथापि एकान्त भक्तेषु, पश्य भूप अनुकम्पितम् ।
यद् मे असून् त्यजतः साक्षात्, कृष्णः दर्शनम् आगतः ॥

शब्दार्थ—

तथापि	२.	फिर भी	**मे**	१०.	मुझे
एकान्त	३.	(अपने) अनन्य	**असून्**	८.	प्राणों को
भक्तेषु	४.	भक्तों के प्रति	**त्यजतः**	९.	छोड़ते समय
पश्य	६.	देखो	**साक्षात्**	११.	स्वयम्
भूप	१.	हे राजन् !	**कृष्णः**	१२.	भगवान् श्रीकृष्ण
अनुकम्पितम् ।	५.	(इनकी) कृपा तो	**दर्शनम्**	१३.	दर्शन देने
यद्	७.	जो कि	**आगतः ॥**	१४.	आये हैं

श्लोकार्थ—हे राजन् ! फिर भी अपने अनन्य भक्तों के प्रति इनकी कृपा तो देखो; जो कि प्राणों को छोड़ते समय मुझे स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण दर्शन देने आये हैं ।

त्रयोविंशः श्लोकः

भक्त्याऽऽवेश्य मनो यस्मिन् वाचा यन्नाम कीर्तयन् ।
त्यजन् कलेवरं योगी मुच्यते कामकर्मभिः ॥२३॥

पदच्छेद—

भक्त्या आवेश्य मनः यस्मिन्, वाचा यद् नाम कीर्तयन् ।
त्यजन् कलेवरम् योगी, मुच्यते काम कर्मभिः ॥

शब्दार्थ—

भक्त्या	२.	भक्ति-भाव से	कीर्तयन् ।	७.	कीर्तन करता हुआ
आवेश्य	४.	लगाकर (और)	त्यजन्	१०.	छोड़ते समय
मनः	३.	मन को	कलेवरम्	९.	शरीर को
यस्मिन्	१.	इनमें	योगी	८.	योगी
वाचा	५.	वाणी से	मुच्यते	१२.	मुक्त हो जाता है
यद् नाम	६.	इनके नाम का	काम कर्मभिः ॥	११.	भोग-बन्धन से

श्लोकार्थ—इनमें भक्ति-भाव से मन को लगाकर और वाणी से इनके नाम का कीर्तन करता हुआ योगी शरीर को छोड़ते समय भोग-बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

चतुर्विंशः श्लोकः

स देवदेवो भगवान् प्रतीक्षतां, कलेवरं यावदिदं हिनोम्यहम् ।
प्रसन्नहासारुणलोचनोल्लसन्मुखाम्बुजो ध्यानपथश्चतुर्भुजः ॥२४॥

पदच्छेद—

सः देव देवः भगवान् प्रतीक्षताम्, कलेवरम् यावद् इदम् हिनोमि अहम् ।
प्रसन्न हास अरुण लोचन उल्लसत्, मुख अम्बुजः ध्यान पथः चतुर्भुजः ॥

शब्दार्थ—

सः	११.	वे	प्रसन्न	१.	मधुर
देव देवः	१०.	देवाधिदेव	हास	२.	मुसकान और
भगवान्	१२.	भगवान् श्रीकृष्ण (मेरी तब तक)	अरुण	३.	लाल
प्रतीक्षताम्,	१३.	प्रतीक्षा करें	लोचन	४.	नेत्रों से
कलेवरम्	१७.	शरीर को	उल्लसत्,	५.	सुशोभित
यावद्	१४.	जब तक (कि)	मुख	६.	मुख
इदम्	१६.	इस	अम्बुजः	७.	कमल वाले
हिनोमि	१८.	छोड़ूँ	ध्यान पथः	८.	समाधि के अवलम्ब
अहम् ।	१५.	मैं	चतुर्भुजः ॥	९.	चार भुजाधारी (एवम्)

श्लोकार्थ—मधुर मुसकान और लाल नेत्रों से सुशोभित मुख कमल वाले, समाधि के अवलम्ब, चार भुजाधारी एवं देवाधिदेव वे भगवान् श्रीकृष्ण मेरी तब तक प्रतीक्षा करें; जब तक कि मैं इस शरीर को छोड़ूँ ।

पञ्चविंशः श्लोकः

सूत उवाच—

युधिष्ठिरस्तदाकर्ण्य शयानं शरपञ्जरे ।
अपृच्छद्विविधान्धर्मानृषीणां चानुशृण्वताम् ॥२५॥

पदच्छेद—

युधिष्ठिरः तद् आकर्ण्य, शयानम् शर पञ्जरे ।
अपृच्छत् विविधान् धर्मान्, ऋषीणाम् च अनुशृण्वताम् ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरः	३. युधिष्ठिर ने	अपृच्छत्	१०. पूछा
तद्	१. पूर्वोक्त (वचन) को	विविधान्	८. अनेक
आकर्ण्य	२. सुनकर	धर्मान्	९. धर्मों के विषय में
शयानम्	५. सोये हुये (भीष्म पितामह) से	ऋषीणाम् च	७. ऋषीयों के सामने
शर पञ्जरे ।	४. बाण की शय्या पर	अनुशृण्वताम् ॥	६. सुनते हुए

श्लोकार्थ—पूर्वोक्त वचन को सुनकर युधिष्ठिर ने बाण की शय्या पर सोये हुये भीष्म पितामह से सुनते हुए ऋषियों के सामने अनेक धर्मों के विषय में पूछा ।

षड्विंशः श्लोकः

पुरुषस्वभावविहितान् यथावर्णं यथाश्रमम् ।
वैराग्यरागोपाधिभ्यामाम्नातोभयलक्षणान् ॥२६॥

पदच्छेद—

पुरुष स्वभाव विहितान्, यथा वर्णम् यथा आश्रमम् ।
वैराग्य राग उपाधिभ्याम्, आम्नात उभय लक्षणान् ॥

शब्दार्थ—

पुरुष	३. पुरुषों के	वैराग्य राग	६. त्याग और भोग के
स्वभाव	४. स्वभाव के आधार पर	उपाधिभ्याम्	७. नाम से
विहितान्	५. विधान किये गये (तथा)	आम्नात	८. कहे गये
यथा वर्णम्	१. (युधिष्ठिर ने) जाति के अनुसार और	उभय	९. (प्रवृत्ति और निवृत्ति) दोनों
यथा आश्रमम् ।	२. आश्रम के अनुसार	लक्षणान् ॥	१०. प्रकार के (धर्मों को पूछा)

श्लोकार्थ—युधिष्ठिर ने जाति के अनुसार और आश्रम के अनुसार पुरुषों के स्वभाव के आधार पर विधान किये गये तथा त्याग और भोग के नाम से कहे गये प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों प्रकार के धर्मों को पूछा ।

सप्तविंशः श्लोकः

दानधर्मान् राजधर्मान् मोक्षधर्मान् विभागशः ।
स्त्रीधर्मान् भगवद्धर्मान् समासव्यासयोगतः ॥२७॥

पदच्छेद—

दान धर्मान् राज धर्मान्, मोक्ष धर्मान् विभागशः ।
स्त्री धर्मान् भगवद् धर्मान्, समास व्यास योगतः ॥

शब्दार्थ—

दान धर्मान्	१. (भीष्मपितामह ने) दान के धर्मों को	स्त्री धर्मान्	४. स्त्रियों के धर्मों को (तथा)
राज धर्मान्	२. राजा के धर्मों को	भगवद् धर्मान्	५. भगवत् सम्बन्धी धर्मों को
मोक्ष धर्मान्	३. मोक्ष के धर्मों को	समास	७. संक्षेप और
विभागशः ।	६. विभागपूर्वक	व्यास योगतः ॥	८. विस्तार के साथ (बताया)

श्लोकार्थ—भीष्मपितामह ने दान के धर्मों को, राजा के धर्मों को, मोक्ष के धर्मों को, स्त्रियों के धर्मों को तथा भगवत् सम्बन्धी धर्मों को विभाग-पूर्वक संक्षेप और विस्तार के साथ बताया ।

अष्टाविंशः श्लोकः

धर्मार्थकाममोक्षांश्च सहोपायान् यथा मुने ।
नानाख्यानेतिहासेषु वर्णयामास तत्त्ववित् ॥२८॥

पदच्छेद—

धर्म अर्थ काम मोक्षान् च, सह उपायान् यथा मुने ।
नाना आख्यान इतिहासेषु, वर्णयामास तत्त्ववित् ॥

शब्दार्थ—

धर्म, अर्थ	७.	धर्म, अर्थ	मुने ।	१.	हे मुनिवर !
काम	८.	काम और	नाना	३.	अनेक
मोक्षान्	९.	मोक्ष का	आख्यान	४.	कथाओं और
च	१०.	भी	इतिहासेषु	५.	इतिहासों के (दृष्टान्तों) से
सह उपायान्	६.	उपायों के साथ	वर्णयामास	१२.	वर्णन किया
यथा	११.	विधिवत्	तत्त्ववित् ॥	२.	तत्त्वज्ञानी (भीष्मपितामह) ने

श्लोकार्थ—हे मुनिवर ! तत्त्वज्ञानी भीष्मपितामह ने अनेक कथाओं और इतिहासों के दृष्टान्तों से उपायों के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का भी विधिवत् वर्णन किया ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

धर्मं प्रवदतस्तस्य स कालः प्रत्युपस्थितः।
यो योगिनश्छन्दमृत्योर्वाञ्छितस्तूत्तरायणः ॥२९॥

पदच्छेद—

धर्मम् प्रवदतः तस्य, सः कालः प्रत्युपस्थितः।
यः योगिनः छन्द मृत्योः, वाञ्छितः तु उत्तरायणः ॥

शब्दार्थ—

धर्मम्	१.	धर्म की	यः	८.	जो
प्रवदतः	२.	व्याख्या करते हुए	योगिनः	११.	योगियों को
तस्य	३.	उन (भीष्म पितामह) के सामने	छन्द मृत्योः	१०.	इच्छा मृत्यु वाले
सः	४.	वह	वाञ्छितः	१२.	प्रिय है
कालः	६.	समय	तु	९.	कि
प्रत्युपस्थितः।	७.	आगया	उत्तरायणः॥	५.	उत्तरायण का

श्लोकार्थ—धर्म की व्याख्या करते हुए उन भीष्मपितामह के सामने वह उत्तरायण का समय आगया; जो कि इच्छा मृत्युवाले योगियों को प्रिय है।

त्रिंशः श्लोकः

तदोपसंहृत्य गिरः सहस्रणी-विमुक्तसङ्गं मन आदिपूरुषे।
कृष्णे लसत्पीतपटे चतुर्भुजे, पुरःस्थितेऽमीलितदृग्व्यधारयत् ॥३०॥

पदच्छेद—

तदा उपसंहृत्य गिरः सहस्रणीः, विमुक्त संगम् मनः आदिपूरुषे।
कृष्णे लसत् पीत पटे चतुर्भुजे, पुरः स्थिते अमीलित दृग् व्यधारयत् ॥

शब्दार्थ—

तदा	२.	उस समय	लसत्	१०.	पहने
उपसंहृत्य	४.	समेट कर	पीत पटे	९.	पीताम्बर
गिरः	३.	वाणी को	चतुर्भुजे	११.	चार भुजाधारी
सहस्रणीः,	१.	महारथी (भीष्मपितामह) ने	पुरः	७.	सामने
विमुक्त संगम्	१४.	निरासंग	स्थिते	८.	खड़े हुए
मनः	१५.	मन को	अमीलित	५.	अपलक
आदिपूरुषे।	१२.	आदिपुरुष	दृग्	६.	दृष्टि से
कृष्णे	१३.	भगवान् श्रीकृष्ण में	व्यधारयत्॥	१६.	लगा दिया

श्लोकार्थ—महारथी भीष्मपितामह ने उस समय वाणी को समेटकर अपलक दृष्टि से सामने खड़े हुए, पीताम्बर पहने, चार भुजाधारी आदिपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण में निरासंग मन को लगा दिया।

एकत्रिंशः श्लोकः

विशुद्धया धारणया हताशुभ-स्तदीक्षयैवाशु गतायुधव्यथः ।
निवृत्तसर्वेन्द्रियवृत्तिविभ्रम-स्तुष्टाव जन्यं विसृजञ्जनार्दनम् ॥३१॥

पदच्छेद— विशुद्धया धारणया हत अशुभः, तद् ईक्षया एव आशु गत आयुध व्यथः ।
निवृत्त सर्व इन्द्रिय वृत्ति विभ्रमः, तुष्टाव जन्यम् विसृजन् जनार्दनम् ॥

शब्दार्थ—

विशुद्धया	१.	निर्मल	व्यथः ।	८.	पीड़ा से
धारणया, हत	२.	ध्यान से, नष्ट	निवृत्त	१३.	समाप्त हो जाने से
अशुभः,	३.	कर्मों वाले (भीष्मपितामह जी)	सर्व, इन्द्रिय	१०.	सभी इन्द्रियों की ।
तद्, ईक्षया	४.	भगवान् श्रीकृष्ण की, दृष्टि से	वृत्ति	१२.	शक्ति के
एव	६.	ही	विभ्रमः,	११.	क्रिया (और)
आशु	५.	शीघ्र	तुष्टाव	१६.	स्तुति करने लगे
गत	९.	रहित होकर	जन्यम्, विसृजन्	१४.	प्राणों को छोड़ते समय
आयुध	७.	शस्त्रों की	जनार्दनम् ॥	१५.	भगवान् श्रीकृष्ण की

श्लोकार्थ—निर्मल ध्यान से नष्ट कर्मों वाले भीष्मपितामह जी भगवान् श्रीकृष्ण की दृष्टि से शीघ्र ही शस्त्रों की पीड़ा से रहित होकर सभी इन्द्रियों की क्रिया और शक्ति के समाप्त हो जाने से प्राणों को छोड़ते समय भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करने लगे ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीभीष्म उवाच—

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा, भगवति सात्वतपुङ्गवे विभूम्नि ।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं, प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः ॥३२॥

पदच्छेद—इति मतिः उपकल्पिता वितृष्णा, भगवति सात्वत पुङ्गवे विभूम्नि ।
स्व सुखम् उपगते क्वचित् विहर्तुम्, प्रकृतिम् उपेयुषि यद् भव प्रवाहः ॥

शब्दार्थ—

इति	९.	इस	स्व सुखम्	१.	आत्मानन्द में
मतिः	११.	बुद्धि को	उपगते	२.	लीन रहने वाले (तथा)
उपकल्पिता	१२.	लगाता हूँ	क्वचित् विहर्तुम्,	३.	कहीं लीला करने के लिए
वितृष्णा,	१०.	निष्काम	प्रकृतिम्	४.	माया को
भगवति	८.	भगवान् श्रीकृष्ण में	उपेयुषि	५.	स्वीकार करने वाले
सात्वत पुङ्गवे	६.	भक्त रक्षकों में श्रेष्ठ	यद् भव	१३.	जिससे सृष्टि की
विभूम्नि ।	७.	सर्वव्यापी	प्रवाहः ॥	१४.	परम्परा (चलती है)

श्लोकार्थ—आत्मानन्द में लीन रहने वाले तथा कहीं लीला करने के लिए माया को स्वीकार करने वाले, भक्त रक्षकों में श्रेष्ठ, सर्वव्यापी भगवान् श्रीकृष्ण में इस निष्काम बुद्धि को लगाता हूँ; जिससे सृष्टि की परम्परा चलती है ।

त्रयस्त्रिंश: श्लोक:

त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं, रविकरगौरवराम्बरं दधाने ।
वपुरलककुलावृताननाब्जं, विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या ॥३३॥

पदच्छेद—

त्रिभुवन कमनम् तमाल वर्णम्, रवि कर गौर वर अम्बरम् दधाने ।
वपुः अलक कुल आवृत आनन अब्जम्, विजय सखे रतिः अस्तु मे अनवद्या ॥

शब्दार्थ—

त्रिभुवन कमनम्	१. तीनों लोकों में सुन्दर	अलक कुल	७. घुंघराले बालों के समूह से
तमाल वर्णम्,	२. तमाल के समान श्याम वर्ण	आवृत	९. ढके हुए
रवि कर	३. सूर्य की किरणों के समान	आनन अब्जम्	८. मुख-कमल को
गौर वर, अम्बरम्	४. चमकीले मनोहर, पीताम्बर को	विजयसखे	१०. हे अर्जुन के मित्र ! (आप में)
दधाने ।	६. धारण किये हुए (तथा)	रतिः अस्तु	१२. प्रीति होवे
वपुः	५. शरीर पर	मे अनवद्या ॥	११. मेरी निष्कपट

श्लोकार्थ—तीनों लोकों में सुन्दर, तमाल के समान श्याम वर्ण, सूर्य की किरणों के समान चमकीले मनोहर पीताम्बर को शरीर पर धारण किये हुए तथा घुंघराले बालों के समूह से मुख-कमल को ढके हुए हे अर्जुन के मित्र ! आपमें मेरी निष्कपट प्रीति होवे ।

चतुस्त्रिंश: श्लोक:

युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक्-कचलुलितश्रमवार्यलंकृतास्ये ।
मम निशितशरैर्विभिद्यमान-त्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा ॥३४॥

पदच्छेद—

युधि तुरग रजः विधूम्र विष्वक्, कच लुलित श्रम वारि अलंकृत आस्ये ।
मम निशित शरैः विभिद्यमान, त्वचि विलसत् कवचे अस्तु कृष्णे आत्मा ॥

शब्दार्थ—

युधि	१. युद्ध में	मम	९. मेरे
तुरग रजः	२. घोड़ों की खुर से उठी धूली से	निशित शरैः	१०. तीखे बाणों से
विधूम्र	३. मटमैले (और)	विभिद्यमान	११. बींधी जाती हुई
विष्वक्,	४. बिखरे	त्वचि	१२. चमड़ी वाले (एवं)
कच लुलित	५. बालों से व्याप्त	विलसत् कवचे	१३. कवच पहने हुए
श्रम वारि	६. पसीने की बूंदों से	अस्तु	१६. लीन हो
अलंकृत	७. सुशोभित	कृष्णे	१४. भगवान् श्रीकृष्ण में
आस्ये ।	८. मुखमण्डल वाले	आत्मा ॥	१५. (मेरी) आत्मा

श्लोकार्थ—युद्ध में घोड़ों की खुर से उठी धूली से मटमैले और बिखरे बालों से व्याप्त, पसीने की बूँदों से सुशोभित मुखमण्डल वाले, मेरे तीखे बाणों से बींधी जाती हुई चमड़ी वाले एवं कवच पहने हुए भगवान् श्रीकृष्ण में मेरी आत्मा लीन हो ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये, निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा, हृतवति पार्थसखे रतिर्ममास्तु ॥३५॥

पदच्छेद—सपदि सखि वचः निशम्य मध्ये, निज परयोः बलयोः रथम् निवेश्य।
स्थितवति पर सैनिक आयुः अक्ष्णा, हृतवति पार्थ सखे रतिः मम अस्तु ॥

शब्दार्थ—

सपदि	३. तत्काल	स्थितवति	९. स्थित हुए (तथा)
सखि वचः	१. अर्जुन के वचन को	पर सैनिक आयुः	११. शत्रु के सैनिकों की आयु को
निशम्य	२. सुनकर	अक्ष्णा,	१०. दृष्टिपात से
मध्ये	६. मध्य में	हृतवति	१२. हर लेने वाले
निज परयोः	४. अपनी और शत्रु पक्ष की	पार्थसखे	१३. भगवान् श्रीकृष्ण में
बलयोः	५. सेना के	रतिः	१५. प्रीति
रथम्	७. रथ को	मम	१४. मेरी
निवेश्य।	८. ले जाकर	अस्तु ॥	१६. होवे

श्लोकार्थ—अर्जुन के वचन को सुनकर तत्काल अपनी और शत्रु पक्ष की सेना के मध्य में रथ को ले जाकर स्थित हुए तथा दृष्टिपात से शत्रु के सैनिकों की आयु को हर लेनेवाले भगवान् श्रीकृष्ण में मेरी प्रीति होवे।

षट्त्रिंशः श्लोकः

व्यवहितपृतनामुखं निरीक्ष्य, स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यः, चरणरतिः परमस्य तस्य मेऽस्तु ॥३६॥

पदच्छेद—व्यवहित पृतना मुखम् निरीक्ष्य, स्व जन वधात् विमुखस्य दोष बुद्ध्या।
कुमतिम् अहरत् आत्म विद्यया यः, चरण रतिः परमस्य तस्य मे अस्तु ॥

शब्दार्थ—

व्यवहित	१. सज्जित हुई	अहरत्	११. दूर कर दिया
पृतना, मुखम्	२. सेना के, सेनापतियों को	आत्म विद्यया	१०. आत्मज्ञान के उपदेश से
निरीक्ष्य,	३. देखने के पश्चात्	यः	९. जिन्होंने
स्वजन	५. संबन्धिजनों की	चरण रतिः	१५. चरणों में अनुराग
वधात्	६. हत्या से	परमस्य	१४. भगवान् श्रीकृष्ण के
विमुखस्य	७. विरत हुए (अर्जुन) के	तस्य	१३. उन
दोष बुद्ध्या।	४. पाप समझकर	मे	१२. मेरा
कुमतिम्	८. अज्ञान को	अस्तु ॥	१६. होवे

श्लोकार्थ—सज्जित हुई सेना के सेनापतियों को देखने के पश्चात् पाप समझकर संबन्धिजनों की हत्या से विरत हुए अर्जुन के अज्ञान को जिन्होंने आत्मज्ञान के उपदेश से दूर कर दिया; मेरा उन भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों में अनुराग होवे।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा-मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः ।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गु-र्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः ॥३७॥

पदच्छेद—स्व निगमम् अपहाय मत् प्रतिज्ञाम्, ऋतम् अधिकर्तुम् अवप्लुतः रथस्थः ।
धृत रथ चरणः अभ्ययात् चलद्गुः, हरिः इव हन्तुम् इभम् गत उत्तरीयः ॥

शब्दार्थ—

स्व निगमम्	४. अपनी प्रतिज्ञा को	रथ चरणः	८. रथ के चक्के को
अपहाय	५. छोड़कर	अभ्ययात्	१६. (मेरे पर) दौड़े थे
मत् प्रतिज्ञाम्,	१. मेरी प्रतिज्ञा को	चलद्गुः,	११. पृथ्वी को कँपा देनेवाले
ऋतम्	२. सत्य	हरिः	१४. सिंह के
अधिकर्तुम्	३. करने के लिये (जो)	इव	१५. समान
अवप्लुतः	७. कूद पड़े थे (और)	हन्तुम्	१३. मारने के लिये
रथस्थः।	६. रथ से	इभम्	१२. (भगवान् श्रीकृष्ण) हाथी को
धृत	६. धारण किये हुये	गत उत्तरीयः ॥	१०. खिसकते दुपट्टे वाले (तथा)

श्लोकार्थ—मेरी प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिये जो अपनी प्रतिज्ञा को छोड़कर रथ से कूद पड़े थे और रथ के चक्के को धारण किये हुए, खिसकते दुपट्टेवाले तथा पृथ्वी को कपा देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण हाथी को मारने के लिये सिंह के समान मेरे पर दौड़े थे ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

शितविशिखहतो विशीर्णदंशः, क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे ।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं, स भवतु मे भगवान् गतिर्मुकुन्दः ॥३८॥

पदच्छेद—शित विशिख हतः विशीर्ण दंशः, क्षतज परिप्लुतः आयतायिनः मे ।
प्रसभम् अभिससार मद् वधार्थम्, सः भवतु मे भगवान् गतिः मुकुन्दः ॥

शब्दार्थं—

शित विशिख	३. तीखे बाणों से	अभिससार	१०. सामने झपटे
हतः	४. घायल	मद् वधार्थम्,	८. मेरे वध के लिये
विशीर्ण दंशः,	५. छिन्न-भिन्न कवचवाले (और)	सः	११. वे
क्षतज	६. लहु से	भवतु	१६. होवें
परिप्लुतः	७. लहुलुहान (जो भगवान्)	मे	१४. मुझे
आततायिनः	२. पापी के	भगवान्	१२. भगवान्
मे ।	१. मुझ	गतिः	१५. सद्गति देने वाले
प्रसभम्	६. (अर्जुन के रोकने पर भी) हठात्	मुकुन्दः ॥	१३. श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—मुझ पापी के तीखे बाणों से घायल, छिन्न-भिन्न कवचवाले और लहु से लहुलुहान जो भगवान् मेरे वध के लियें अर्जुन के रोकने पर भी हठात् सामने झपटे; वे भगवान् श्रीकृष्ण मुझे सद्गति देने वाले होवें ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

विजयरथकुटुम्ब आत्ततोत्रे, धृतहयरश्मिनि तच्छ्रियेक्षणीये ।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोर्यमिह निरीक्ष्य हता गताः सरूपम् ॥३९॥

पदच्छेद—**विजय रथ कुटुम्बे आत्त तोत्रे, धृत हय रश्मिनि तद् श्रिया ईक्षणीये ।**
भगवति रतिः अस्तु मे मुमूर्षोः, यम् इह निरीक्ष्य हताः गताः सरूपम् ॥

शब्दार्थ—

विजय रथ	१. अर्जुन के रथ की	**रतिः अस्तु**	१०. प्रीति होवे
कुटुम्बे	२. रक्षा में तत्पर	**मे मुमूर्षोः,**	९. मुझ मरने वाले की
आत्त तोत्रे,	३. चाबुक लिये हुए	**यम्**	११. जिन्हें
धृत	५. पकड़े हुए (तथा)	**इह**	१३. इस (युद्ध) में
हय रश्मिनि	४. घोड़ों की, लगाम	**निरीक्ष्य**	१२. देखकर
तद् श्रिया	६. उस शोभा से	**हताः**	१४. मारे गये (सैनिक)
ईक्षणीये ।	७. दर्शनीय	**गताः**	१६. प्राप्त हो गये (हैं)
भगवति	८. भगवान् श्रीकृष्ण में	**सरूपम् ॥**	१५. सारूप्य मुक्ति को

श्लोकार्थ—अर्जुन के रथ की रक्षा में तत्पर, चाबुक लिये हुए, घोड़ों की लगाम पकड़े हुए तथा उस शोभा से दर्शनीय भगवान् श्रीकृष्ण में मुझ मरने वाले की प्रीति होवे; जिन्हें देखकर इस युद्ध में मारे गये सैनिक सारूप्य मुक्ति को प्राप्त हो गये हैं ।

चत्वारिंशः श्लोकः

ललितगतिविलासवल्गुहास - प्रणयनिरीक्षणकल्पितोरुमानाः ।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्धाः, प्रकृतिमगन् किल यस्य गोपवध्वः ॥४०॥

पदच्छेद—**ललित गति विलास वल्गु हास, प्रणय निरीक्षण कल्पित उरु मानाः ।**
कृतम् अनुकृतवत्यः उन्मद अन्धाः, प्रकृतिम् अगन् किल यस्य गोप वध्वः ॥

शब्दार्थ—

ललित गति	१. मनोहर गति	**अनुकृतवत्यः**	१०. अनुकरण करती हुई
विलास	२. हाव-भाव पूर्ण	**उन्मद अन्धाः,**	८. प्रेम दिवानी होकर
वल्गु हास,	३. मधुर मुसकान और	**प्रकृतिम्**	१२. स्वरूप को
प्रणय निरीक्षण	४. प्रेमभरी चितवन से	**अगन्**	१४. प्राप्त हो गयीं हैं
कल्पित	६. की गईं	**किल**	१३. ही
उरु मानाः ।	५. बहुत सम्मानित	**यस्य**	११. जिनके
कृतम्	९. लीला का	**गोप वध्वः ॥**	७. गोपियाँ

श्लोकार्थ—जिस भगवान् की मनोहर गति, हाव-भाव पूर्ण मधुर मुसकान और प्रेमभरी चितवन से बहुत सम्मानित की गयीं गोपियाँ प्रेम-दिवानी होकर लीला का अनुकरण करती हुई जिनके स्वरूप को ही प्राप्त हो गयीं हैं ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

मुनिगणनृपवर्यसंकुलेऽन्तः, सदसि युधिष्ठिरराजसूय एषाम् ।
अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो, मम दृशिगोचर एष आविरात्मा ॥४१॥

पदच्छेद—

मुनि गण नृप वर्य संकुले अन्तः, सदसि युधिष्ठिर राजसूये एषाम् ।
अर्हणम् उपपेदे ईक्षणीयः, मम दृशि गोचरः एषः आविरात्मा ॥

शब्दार्थ—

मुनि गण	३. मुनिजन और	अर्हणम्	८. पूजा
नृप वर्य	४. प्रधान राजाओं से	उपपेदे	९. प्राप्त की थी
संकुले	५. भरे	ईक्षणीयः,	१०. दर्शनीय
अन्तःसदसि	६. सभा भवन के अन्दर	मम	१२. मेरी
युधिष्ठिर	१. राजा युधिष्ठिर के	दृशि गोचरः	१३. आँखों के सामने
राजसूये	२. राजसूय यज्ञ में	एषः	११. ये (भगवान् श्रीकृष्ण)
एषाम् ।	७. (जिन्होंने) उन सबकी	आविरात्मा ॥	१४. साक्षात् उपस्थित (हैं)

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में मुनिजन और प्रधान राजाओं से भरे सभा-भवन के अन्दर जिन्होंने उन सबकी पूजा प्राप्त की थी; दर्शनीय ये भगवान् श्रीकृष्ण मेरी आँखों के सामने साक्षात् उपस्थित हैं ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तमिममहमजं शरीरभाजां, हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकल्पितानाम् ।
प्रतिदृशमिव नैकधार्कमेकं, समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः ॥४२॥

पदच्छेद—

तम् इमम् अहम् अजम् शरीर भाजाम् , हृदि हृदि धिष्ठितम् आत्म कल्पितानाम् ।
प्रतिदृशम् इव नैकधा अर्कम् एकम् , समधिगतः अस्मि विधूत भेद मोहः ॥

शब्दार्थ—

तम् , इमम्	११. अत्यन्त प्रसिद्ध इस	इव	२. जैसे
अहम्	६. (उसी प्रकार)मैं(स्वयम्)	नैकधा	५. अनेक रूपों में (दिखाई देता है)
अजम्	१२. अजन्मा को	अर्कम्	४. सूर्य
शरीर भाजाम्,	८. समस्त प्राणियों के	एकम् ,	३. एक ही
हृदि हृदि	९. हृदय में	समधिगतः	१५. शरण
धिष्ठितम्	१०. विराजमान (एवं)	अस्मि	१६. लेता हूँ
आत्म कल्पितानाम् ।	७. परमात्मा से रचित	विधूत	१४. रहित होकर
प्रतिदृशम्	१. हर-एक की दृष्टि में	भेद, मोहः ॥	१३. भेद बुद्धि और अज्ञान से

श्लोकार्थ—हर-एक की दृष्टि में जैसे एक ही सूर्य अनेक रूपों में दिखाई देता है; उसी प्रकार मैं स्वयम् परमात्मा से रचित समस्त प्राणियों के हृदय में विराजमान एवं अत्यन्त प्रसिद्ध इस अजन्मा की भेदबुद्धि और अज्ञान से रहित होकर शरण लेता हूँ ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

सूत उवाच—

कृष्ण एवं भगवति मनोवाग्दृष्टिवृत्तिभिः ।
आत्मन्यात्मानमावेश्य सोऽन्तः श्वास उपारमत् ॥४३॥

पदच्छेद—

कृष्णे एवम् भगवति, मनः वाक् दृष्टि वृत्तिभिः ।
आत्मनि आत्मानम् आवेश्य, सः अन्तः श्वासः उपारमत् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णे	८.	श्रीकृष्ण में	**आत्मानम्**	५.	अपनी आत्मा को
एवम्	१.	इस प्रकार	**आवेश्य**	६.	लगाकर (तथा)
भगवति	७.	भगवान्	**सः**	२.	वे (भीष्मपितामह जी)
मनःवाक्	३.	मन, वाणी	**अन्तः**	११.	अन्दर (रोककर)
दृष्टि वृत्तिभिः ।	४.	नेत्र और चित्तवृत्ति के साथ	**श्वासः**	१०.	प्राणवायु को
आत्मनि	६.	आत्मस्वरूप	**उपारमत् ॥**	१२.	चिर शान्त हो गये

श्लोकार्थं—इस प्रकार वे भीष्मपितामह जी मन, वाणी, नेत्र और चित्तवृत्ति के साथ अपनी आत्मा को आत्मस्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण में लगाकर तथा प्राणवायु को अन्दर रोककर चिर शान्त हो गये ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सम्पद्यमानमाज्ञाय भीष्मं ब्रह्मणि निष्कले ।
सर्वे बभूवुस्ते तूष्णीं वयांसीव दिनात्यये ॥४४॥

पदच्छेद—

सम्पद्यमानम् आज्ञाय, भीष्मम् ब्रह्मणि निष्कले ।
सर्वे बभूवुः ते तूष्णीम्, वयांसि इव दिन अत्यये ॥

शब्दार्थ—

सम्पद्यमानम्	६.	लीन हुआ	**बभूवुः**	१२.	हो गये
आज्ञाय	७.	जानकर	**ते**	१.	वे
भीष्मम्	३.	भीष्मपितामह को	**तूष्णीम्**	११.	शान्त
ब्रह्मणि	५.	ब्रह्म में	**वयांसि**	६.	पक्षियों की
निष्कले ।	४.	निर्गुण	**इव**	१०.	भाँति
सर्वे	२.	सभी (उपस्थित जन)	**दिन अत्यये ॥**	८.	दिन के अन्त में

श्लोकार्थ—वे सभी उपस्थित जन भीष्मपितामह को निर्गुण ब्रह्म में लीन हुआ जानकर दिन के अन्त में पक्षियों की भाँति शान्त हो गये ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तत्र दुन्दुभयो नेदुर्देवमानववादिताः ।
शशंसुः साधवो राज्ञां खात्पेतुः पुष्पवृष्टयः ॥४५॥

पदच्छेद—

तत्र दुन्दुभयः नेदुः, देव मानव वादिताः ।
शशंसुः साधवः राज्ञाम्, खात् पेतुः पुष्प वृष्टयः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	(उस समय) वहाँ पर	शशंसुः	९.	प्रशंसा करने लगे (तथा)
दुन्दुभयः	५.	नगाड़े	साधवः	७.	संतजन
नेदुः	६.	बजने लगे	राज्ञाम्	८.	राजाओं की
देव	२.	देवताओं (और)	खात्	१०.	आकाश से
मानव	३.	मनुष्यों के द्वारा	पेतुः	१२.	होने लगी
वादिताः ।	४.	बजाये गये	पुष्प वृष्टयः ॥	११.	फूलों की वर्षा

श्लोकार्थ—उस समय वहाँ पर देवताओं और मनुष्यों के द्वारा बजाये गये नगाड़े बजने लगे । संतजन राजाओं की प्रशंसा करने लगे तथा आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्य निर्हरणादीनि सम्परेतस्य भार्गव ।
युधिष्ठिरः कारयित्वा मुहूर्तं दुःखितोऽभवत् ॥४६॥

पदच्छेद—

तस्य निर्हरण आदीनि, सम्परेतस्य भार्गव ।
युधिष्ठिरः कारयित्वा, मुहूर्तम् दुःखितः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	३.	उनके	युधिष्ठिरः	२.	युधिष्ठिर
निर्हरण	५.	दाह संस्कार	कारयित्वा	७.	कराकर
आदीनि	६.	आदि क्रियाओं को	मुहूर्तम्	८.	कुछ क्षणों के लिये
सम्परेतस्य	४.	मृत शरीर की	दुःखितः	९.	शोक मग्न
भार्गव ।	१.	हे शौनक जी !	अभवत् ॥	१०.	हो गये थे

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! युधिष्ठिर उनके मृत शरीर की दाह संस्कार आदि क्रियाओं को कराकर कुछ क्षणों के लिये शोक मग्न हो गये थे ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तुष्टुवुर्मुनयो हृष्टाः कृष्णं तद्गुह्यनामभिः ।
ततस्ते कृष्णहृदयाः स्वाश्रमान् प्रययुः पुनः ॥४७॥

पदच्छेद—

तुष्टुवुः मुनयः हृष्टाः, कृष्णम् तद् गुह्य नामभिः ।
ततः ते कृष्ण हृदयाः, स्व आश्रमान् प्रययुः पुनः ॥

शब्दार्थ—

तुष्टुवुः	६.	स्तुति करने लगे	ततः	७.	उसके पश्चात्
मुनयः	१.	वे मुनिजन	ते	८.	उन्होंने
हृष्टाः	२.	प्रसन्न होकर	कृष्ण	१०.	कृष्णमय बनाकर
कृष्णम्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण की	हृदयाः	९.	हृदय को
तद्	४.	उनके	स्व आश्रमान्	१२.	अपने आश्रमों को
गुह्य नामभिः ।	५.	रहस्यमय नामों से	प्रययुः	१३.	प्रस्थान किया
			पुनः ॥	११.	फिर

श्लोकार्थ—वे मुनिजन प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण की उनके रहस्यमय नामों से स्तुति करने लगे । उसके पश्चात् उन्होंने हृदय को कृष्णमय बनाकर फिर अपने आश्रमों को प्रस्थान किया ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

ततो युधिष्ठिरो गत्वा सहकृष्णो गजाह्वयम् ।
पितरं सान्त्वयामास गान्धारीं च तपस्विनीम् ॥४८॥

पदच्छेद—

ततः युधिष्ठिरः गत्वा, सह कृष्णः गजाह्वयम् ।
पितरम् सान्त्वयामास, गान्धारीम् च तपस्विनीम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	पितरम्	७.	चाचा धृतराष्ट्र को
युधिष्ठिरः	२.	युधिष्ठिर ने	सान्त्वयामास	११.	सान्त्वना दी थी
गत्वा	६.	जाकर	गान्धारीम्	१०.	चाची गान्धारी को
सह	४.	साथ	च	८.	और
कृष्णः	३.	भगवान् श्रीकृष्ण के	तपस्विनीम् ॥	९.	पतिव्रता
गजाह्वयम् ।	५.	हस्तिनापुर में			

श्लोकार्थ—तदनन्तर युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण के साथ हस्तिनापुर में जाकर चाचा धृतराष्ट्र को और पतिव्रता चाची गान्धारी को सान्त्वना दी थी ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

पित्रा चानुमतो राजा वासुदेवानुमोदितः ।
चकार राज्यं धर्मेण पितृपैतामहं विभुः ॥४६॥

पदच्छेद—

पित्रा च अनुमतः राजा, वासुदेव अनुमोदितः ।
चकार राज्यम् धर्मेण, पितृ पैतामहम् विभुः ॥

शब्दार्थ—

पित्रा	३.	चाचा धृतराष्ट्र की	**चकार**	१२.	शासन किया था
च	५.	और	**राज्यम्**	१०.	राज्य का
अनुमतः	४.	अनुमति से	**धर्मेण**	११.	धर्म पूर्वक
राजा	२.	राजा युधिष्ठिर ने	**पितृ**	८.	पिता
वासुदेव	६.	भगवान् श्रीकृष्ण का	**पैतामहम्**	६.	पितामह से प्राप्त
अनुमोदितः ।	७.	समर्थन पाकर	**विभुः ॥**	१.	समर्थ

श्लोकार्थ—समर्थ राजा युधिष्ठिर ने चाचा धृतराष्ट्र की अनुमति से और भगवान् श्रीकृष्ण का समर्थन पाकर पिता-पितामह से प्राप्त राज्य का धर्मपूर्वक शासन किया था ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
युधिष्ठिरराज्यप्रलम्भो नाम नवमः अध्यायः ॥६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ दशमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

शौनक उवाच—हत्वा स्वरिक्थस्पृध आततायिनो, युधिष्ठिरो धर्मभृतां वरिष्ठः।
सहानुजैः प्रत्यवरुद्धभोजनः, कथं प्रवृत्तः किमकारषीत्ततः ॥१॥

पदच्छेद— हत्वा स्व रिक्थ स्पृधः आततायिनः, युधिष्ठिरः धर्म भृताम् वरिष्ठः।
सह अनुजैः प्रत्यवरुद्ध भोजनः, कथम् प्रवृत्तः किम् अकारषीत् ततः ॥

शब्दार्थ—

हत्वा	११. मारकर	सह	७. साथ
स्व रिक्थ	८. अपनी पैतृक सम्पत्ति के	अनुजैः	६. भाइयों के
स्पृधः	९. विरोधी	प्रत्यवरुद्ध	४. दूर रहने वाले
आततायिनः,	१०. पापियों को	भोजनः	३. भोग विलास से
युधिष्ठिरः	५. महाराज युधिष्ठिर	कथम् , प्रवृत्तः	१२. कैसे, राज्यकार्य में प्रवृत्त हुये (और)
धर्म भृताम्	१. धार्मिकों में	किम् , अकारषीत्	१४. क्या, किया
वरिष्ठः।	२. शिरोमणि (तथा)	ततः ॥	१३. उसके पश्चात् (उन्होंने)

श्लोकार्थ—धार्मिकों में शिरोमणि तथा भोग विलास से दूर रहने वाले महाराज युधिष्ठिर भाइयों के साथ अपनी पैतृक सम्पत्ति के विरोधी पापियों को मारकर कैसे राज्य कार्य में प्रवृत्त हुये और उसके पश्चात् उन्होंने क्या किया ?

द्वितीयः श्लोकः

सूत उवाच— वंशं कुरोर्वंशदवाग्निनिर्हृतं, संरोहयित्वा भवभावनो हरिः।
निवेशयित्वा निजराज्य ईश्वरो, युधिष्ठिरं प्रीतमना बभूव ह ॥२॥

पदच्छेद— वंशम् कुरोः वंश दवाग्नि निर्हृतम् , संरोहयित्वा भव भावनः हरिः।
निवेशयित्वा निज राज्ये ईश्वरः, युधिष्ठिरम् प्रीत मनाः बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

वंशम्	७. कुल को	निवेशयित्वा	११. स्थापित करके
कुरोः	६. महाराज कुरु के	निज राज्ये	१०. उनके राज्य में
वंश	४. (आपसी कलहरूपी) बांस वनके	ईश्वरः,	२. सर्व समर्थ
दवाग्नि, निर्हृतम्	५. दावानल से, जले हुये	युधिष्ठिरम्	९. महाराज युधिष्ठिर को
संरोहयित्वा	८. (फिर से) जीवित करके (तथा)	प्रीत मनाः	१३. प्रसन्न चित्त
भव भावनः	१. संसार के रक्षक (एवं)	बभूव	१४. हो गये थे
हरिः।	३. भगवान् श्रीकृष्ण	ह ॥	१२. निश्चय ही

श्लोकार्थ—संसार के रक्षक एवं सर्वसमर्थ भगवान् श्री कृष्ण आपसी कलहरूपी बांस वन के दावानल से जले हुये महाराज कुरु के कुल को फिर से जीवित करके तथा महाराज युधिष्ठिर को उनके राज्य में स्थापित करके निश्चय ही प्रसन्न चित्त हो गये थे।

तृतीयः श्लोकः

निशम्य भीष्मोक्तमथाच्युतोक्तं, प्रवृत्तविज्ञानविधूतविभ्रमः ।
शशास गामिन्द्र इवाजिताश्रयः, परिध्युपान्तामनुजानुवर्तितः ॥३॥

पदच्छेद—

निशम्य भीष्म उक्तम् अथ अच्युत उक्तम्, प्रवृत्त विज्ञान विधूत विभ्रमः ।
शशास गाम् इन्द्रः इव अजित आश्रयः, परिधि उपान्ताम् अनुज अनुवर्तितः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	४. सुनकर	**शशास**	१६. शासन किया था
भीष्म उक्तम्	१. भीष्मपितामह के वचन को	**गाम् इन्द्रः इव**	१५. पृथ्वी का इन्द्र के समान
अथ	२. तथा	**अजित**	९. श्रीकृष्ण के
अच्युत उक्तम्,	३. भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी को	**आश्रयः,**	१०. सहारे (तथा)
प्रवृत्त	६. उदय हो जाने के कारण	**परिधि**	१३. समुद्रों से
विज्ञान	५. (हृदय में) विशेष ज्ञान का	**उपान्ताम्**	१४. घिरी हुई
विधूत	८. रहित (महाराज युधिष्ठिर ने)	**अनुज**	११. आज्ञाकारी
विभ्रमः ।	७. भ्रान्ति से	**अनुवर्तितः ॥**	१२. भाइयों की सहायता से

श्लोकार्थ—भीष्मपितामह के वचन को तथा भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी को सुनकर हृदय में विशेष ज्ञान का उदय हो जाने के कारण भ्रान्ति से रहित महाराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के सहारे तथा आज्ञाकारी भाइयों की सहायता से समुद्रों से घिरी हुई पृथ्वी का इन्द्र के समान शासन किया था ।

चतुर्थः श्लोकः

कामं ववर्ष पर्जन्यः सर्वकामदुघा मही ।
सिषिचुः स्म व्रजान् गावः पयसोधस्वतीर्मुदा ॥४॥

पदच्छेद—

कामम् ववर्ष पर्जन्यः, सर्व काम दुघा मही ।
सिषिचुः स्म व्रजान् गावः, पयसा ऊधस्वतीः मुदा ॥

शब्दार्थ—

कामम्	२. पर्याप्त	**सिषिचुः स्मः**	१२. सींचती थीं
ववर्ष	३. वर्षा करते थे	**व्रजान्**	९. गोशालाओं को
पर्जन्यः	१. (महाराज युधिष्ठिर के राज्य में) मेघ	**गावः**	८. गायें
सर्व काम	५. सभी कामनाओं को	**पयसा**	११. दूध से
दुघा	६. देने वाली (थी)	**ऊधस्वतीः**	७. बड़े-बड़े थनों वाली
मही ।	४. पृथ्वी	**मुदा ॥**	१०. प्रसन्नता पूर्वक

श्लोकार्थ—महाराज युधिष्ठिर के राज्य में मेघ पर्याप्त वर्षा करते थे । पृथ्वी सभी कामनाओं को देने वाली थी । बड़े-बड़े थनों वाली गायें गोशालाओं को प्रसन्नतापूर्वक दूध से सींचती थीं ।

पञ्चमः श्लोकः

नद्यः समुद्रा गिरयः सवनस्पतिवीरुधः ।
फलन्त्योषधयः सर्वाः काममन्वृतु तस्य वै ॥५॥

पदच्छेद—

नद्यः समुद्राः गिरयः, स वनस्पति वीरुधः ।
फलन्ति ओषधयः सर्वाः, कामम् अनु ऋतु तस्य वै ॥

शब्दार्थ—

नद्य	२.	नदियाँ	ओषधयः	८.	ओषधियां
समुद्राः	३.	सभी समुद्र	सर्वाः	७.	सभी
गिरयः	४.	सारे पर्वत	कामम्	१०.	इच्छानुसार
स वनस्पति	५.	वनस्पतियों के साथ	अनु ऋतु	९.	प्रत्येक ऋतु में
वीरुधः ।	६.	लतायें (और)	तस्य	१.	महाराज युधिष्ठिर के राज्य में
फलन्ति	१२.	फलती थीं	वै ॥	११.	निश्चय पूर्वक

श्लोकार्थ—महाराज युधिष्ठिर के राज्य में नदियाँ, सभी समुद्र, सारे पर्वत, वनस्पतियों के साथ लतायें और सभी ओषधियाँ प्रत्येक ऋतु में इच्छानुसार निश्चय पूर्वक फलती थीं ।

षष्ठः श्लोकः

नाधयो व्याधयः क्लेशा दैवभूतात्महेतवः ।
अजातशत्रावभवन् जन्तूनां राज्ञि कर्हिचित् ॥६॥

पदच्छेद—

न आधयः व्याधयः क्लेशाः, दैव भूत आत्म हेतवः ।
अजात शत्रौ अभवन् , जन्तूनाम् राज्ञि कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

न	१३.	नहीं	हेतवः ।	८.	कारण से होने वाले
आधयः	९.	मानसिक (या)	अजात	२.	रहित
व्याधयः	१०.	शारीरिक	शत्रौ	१.	शत्रुओं से
क्लेशाः	११.	कष्ट	अभवन्	१४.	होते थे
दैव	५.	देवताओं	जन्तूनाम्	४.	प्राणियों को
भूत	६.	अन्य प्राणियों (तथा)	राज्ञि	३.	महाराज युधिष्ठिर के राज्य में
आत्म	७.	अपने	कर्हिचित् ॥	१२.	कभी

श्लोकार्थ—शत्रुओं से रहित महाराज युधिष्ठिर के राज्य में प्राणियों को देवताओं, अन्य प्राणियों तथा अपने कारण से होने वाले मानसिक या शारीरिक कष्ट कभी नहीं होते थे ।

सप्तमः श्लोकः

उषित्वा हास्तिनपुरे मासान् कतिपयान् हरिः ।
सुहृदां च विशोकाय स्वसुश्च प्रियकाम्यया ॥७॥

पदच्छेद—

उषित्वा हास्तिनपुरे, मासान् कतिपयान् हरिः ।
सुहृदाम् च विशोकाय , स्वसुः च प्रिय काम्यया ॥

शब्दार्थ—

उषित्वा	१२.	निवास किया था	**च**	१.	तदनन्तर
हास्तिनपुरे	११.	हस्तिनापुर के राज्य में	**विशोकाय**	४.	शोक रहित करने के लिये
मासान्	१०.	महीने	**स्वसुः**	६.	बहन सुभद्रा को
कतिपयान्	९.	कुछ	**च**	५.	तथा
हरिः ।	२.	भगवान् श्री कृष्ण ने	**प्रिय**	७.	प्रसन्न करने की
सुहृदाम्	३.	मित्र-सम्बन्धियों को	**काम्यया ॥**	८.	कामना से

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण ने मित्र-सम्बन्धियों को शोक रहित करने के लिये तथा बहन सुभद्रा को प्रसन्न करने की कामना से कुछ महीने हस्तिनापुर के राज्य में निवास किया था ।

अष्टमः श्लोकः

आमन्त्र्य चाभ्यनुज्ञातः परिष्वज्याभिवाद्य तम् ।
आरुरोह रथं कैश्चित्परिष्वक्तोऽभिवादितः ॥८॥

पदच्छेद—

आमन्त्र्य च अभ्यनुज्ञातः, परिष्वज्य अभिवाद्य तम् ।
आरुरोह रथम् कैश्चित्, परिष्वक्तः अभिवादितः ॥

शब्दार्थ—

आमन्त्र्य	१.	परामर्श करके	**आरुरोह**	८.	चढ़ गये (उस समय)
च	२.	और (जाने के लिये)	**रथम्**	७.	रथ पर
अभ्यनुज्ञातः	३.	(उनसे) अनुमति पाकर	**कैश्चित्**	९.	(समान आयु वाले) कुछ लोगों ने
परिष्वज्य	५.	आलिंगन (तथा)	**परिष्वक्तः**	१०.	(उनका) आलिंगन किया (एवम्)
अभिवाद्य	६.	प्रणाम करके	**अभिवादितः ॥**	११.	(कम आयु वालों ने) प्रणाम किया
तम् ।	४.	उनका			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर से परामर्श करके और जाने के लिये उनसे अनुमति पाकर उनका आलिंगन तथा प्रणाम करके रथ पर चढ़ गये । उस समय समान आयु वाले कुछ लोगों ने उनका आलिंगन किया एवम् कम आयु वालों ने प्रणाम किया ।

नवमः श्लोकः

सुभद्रा द्रौपदी कुन्ती विराटतनया तथा ।
गान्धारी धृतराष्ट्रश्च युयुत्सुर्गौतमो यमौ ॥६॥

पदच्छेद—

सुभद्रा द्रौपदी कुन्ती, विराट तनया तथा ।
गान्धारी धृतराष्ट्रः च, युयुत्सुः गौतमः यमौ ॥

शब्दार्थ—

सुभद्रा	१.	(उस समय) सुभद्रा	गान्धारी	७.	गान्धारी
द्रौपदी	२.	द्रौपदी	धृतराष्ट्रः	८.	धृतराष्ट्र
कुन्ती	३.	कुन्ती	च	६.	और
विराट	४.	राजा विराट की पुत्री	युयुत्सुः	१०.	युयुत्सु
तनया	५.	उत्तरा	गौतमः	११.	कृपाचार्य
तथा ।	६.	तथा	यमौ ॥	१२.	नकुल एवं सहदेव (भगवान् के विरह को नहीं सह सके तथा मूर्छित होगये)

श्लोकार्थ—उस समय सुभद्रा, द्रौपदी, कुन्ती, राजा विराट की पुत्री उत्तरा तथा गान्धारी, धृतराष्ट्र और युयुत्सु, कृपाचार्य, नकुल एवं सहदेव भगवान् के विरह को नहीं सह सके तथा मूर्छित हो गये ।

दशमः श्लोकः

वृकोदरश्च धौम्यश्च स्त्रियो मत्स्यसुतादयः ।
न सेहिरे विमुह्यन्तो विरहं शार्ङ्गधन्वनः ॥१०॥

पदच्छेद—

वृकोदरः च धौम्यः च, स्त्रियः मत्स्य सुता आदयः ।
न सेहिरे विमुह्यन्तः, विरहम् शार्ङ्गधन्वनः ॥

शब्दार्थ—

वृकोदरः	१.	भीमसेन	आदयः ।	६.	इत्यादि
च	२.	और	न	११.	नहीं
धौम्यः	३.	धौम्य ऋषि	सेहिरे	१२.	सह सकी थीं
च	४.	तथा	विमुह्यन्तः	८.	मूर्छित होती हुई
स्त्रियः	७.	स्त्रियाँ	विरहम्	१०.	वियोग को
मत्स्य सुता	५.	सत्यवती	शार्ङ्गधन्वनः ॥	६.	शार्ङ्गपाणि भगवान् श्रीकृष्ण के

श्लोकार्थ—भीमसेन और धौम्य ऋषि तथा सत्यवती इत्यादि स्त्रियाँ मूर्छित होती हुई शार्ङ्गपाणि भगवान् श्रीकृष्ण के वियोग को नहीं सह सकी थीं ।

एकादशः श्लोकः

सत्सङ्गान्मुक्तदुःसङ्गो हातुं नोत्सहते बुधः ।
कीर्त्यमानं यशो यस्य सकृदाकर्ण्य रोचनम् ॥११॥

पदच्छेद—

सत् सङ्गात् मुक्त दुःसङ्गः, हातुम् न उत्सहते बुधः ।
कीर्त्यमानम् यशः यस्य, सकृत् आकर्ण्य रोचनम् ॥

शब्दार्थ—

सत् सङ्गात्	१.	सत्सङ्ग के कारण	**कीर्त्यमानम्**	६.	गायी जाती हुई
मुक्त	३.	दूर रहने वाले	**यशः**	८.	कीर्ति को
दुःसङ्गः	२.	कुसङ्ग से	**यस्य**	५.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) की
हातुम्	११.	(उसे) छोड़ने का	**सकृत्**	९.	एकबार भी
न	१२.	नहीं	**आकर्ण्य**	१०.	सुनकर
उत्सहते	१३.	उत्साह करते हैं	**रोचनम् ॥**	७.	रुचिकर
बुधः ।	४.	विद्वज्जन			

श्लोकार्थ—सत्सङ्ग के कारण कुसङ्ग से दूर रहने वाले विद्वज्जन जिस भगवान् श्रीकृष्ण की गायी जाती हुई रुचिकर कीर्ति को एकबार भी सुनकर उसे छोड़ने का उत्साह नहीं करते हैं ।

द्वादशः श्लोकः

तस्मिन्न्यस्तधियः पार्थाः सहेरन् विरहं कथम् ।
दर्शनस्पर्शसंलापशयनासनभोजनैः ॥१२॥

पदच्छेद—

तस्मिन् न्यस्त धियः पार्थाः, सहेरन् विरहम् कथम् ।
दर्शन स्पर्श संलाप, शयन आसन भोजनैः ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	८.	उन भगवान् श्रीकृष्ण में	**दर्शन**	१.	दर्शन
न्यस्त	९.	अर्पित किये हुए	**स्पर्श**	२.	स्पर्श
धियः	७.	बुद्धि को	**संलाप**	३.	वार्तालाप
पार्थाः	१०.	पाण्डव	**शयन**	४.	सोना
सहेरन्	१३.	सह सकते थे	**आसन**	५.	उठना-बैठना (और)
विरहम्	११.	(उनके) वियोग को	**भोजनैः ॥**	६.	भोजन आदि क्रियाओं के द्वारा
कथम् ।	१२.	कैसे			

श्लोकार्थ—दर्शन, स्पर्श, वार्तालाप, सोना, उठना, बैठना और भोजन इत्यादि क्रियाओं के द्वारा बुद्धि को उन भगवान् श्रीकृष्ण में अर्पित किये हुये पाण्डव उनके वियोग को कैसे सह सकते थे ?

त्रयोदशः श्लोकः

सर्वे तेऽनिमिषैरक्षैस्तमनुद्रुतचेतसः ।
वीक्षन्तः स्नेहसम्बद्धा विचेलुस्तत्र तत्र ह ॥१३॥

पदच्छेद—

सर्वे ते अनिमिषैः अक्षैः, तम् अनुद्रुत चेतसः ।
वीक्षन्तः स्नेह सम्बद्धाः, विचेलुः तत्र तत्र ह ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	४.	सभी (पाण्डव)	वीक्षन्तः	८.	देखते हुए
ते	३.	वे	स्नेह	९.	प्रेम से
अनिमिषैः	६.	अपलक	सम्बद्धाः	१०.	बँधे होने के कारण
अक्षैः	७.	आँखा से	विचेलुः	१४.	दौड़ने लगे
तम्	५.	उन (भगवान् श्रीकृष्ण) को	तत्र	१२.	इधर
अनुद्रुत	१.	द्रवित	तत्र	१३.	उधर
चेतसः ।	२.	हृदय वाले	ह ॥	११.	उस समय

श्लोकार्थ—द्रवित हृदय वाले वे सभी पाण्डव उन भगवान् श्रीकृष्ण को अपलक आँखों से देखते हुए प्रेम से बँधे होने के कारण उस समय इधर-उधर दौड़ने लगे ।

चतुर्दशः श्लोकः

न्यरुन्धन्नुद्गलद्बाष्पमौत्कण्ठ्याद्देवकीसुते ।
निर्यात्यगारान्नोऽभद्रमिति स्याद्बान्धवस्त्रियः ॥१४॥

पदच्छेद—

न्यरुन्धन् उद्गलद् वाष्पम् , औत्कण्ठ्यात् देवकी सुते ।
निर्याति अगारात् नो अभद्रम् , इति स्यात् बान्धव स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

न्यरुन्धन्	१३.	रोक लिया	नो	७.	न
उद्गलद्	११.	निकलते हुए	अभद्रम्	६.	असगुन
वाष्पम्	१२.	आँसुओं को	इति	९.	इसलिये
औत्कण्ठ्यात्	१०.	उत्कण्ठा के वश	स्यात्	८.	होवे
देवकीसुते ।	५.	भगवान् श्रीकृष्ण को	बान्धव	१.	बान्धवों की
निर्याति	४.	निकलते समय	स्त्रियः ॥	२.	स्त्रियों ने
अगारात्	३.	भवन से			

श्लोकार्थ—बान्धवों की स्त्रियों ने भवन से निकलते समय भगवान् श्रीकृष्ण को असगुन न होवे; इसलिये उत्कण्ठा के वश निकलते हुए आँसुओं को रोक लिया ।

पञ्चदशः श्लोकः

मृदङ्गशङ्खभेर्यश्च वीणापणवगोमुखाः ।
धुन्धुर्यानकघण्टाद्या नेदुर्दुन्दुभयस्तथा ॥१५॥

पदच्छेद—

मृदङ्ग शङ्ख भेर्यः च, वीणा पणव गोमुखाः ।
धुन्धुरी आनक घण्टा आद्याः, नेदुः दुन्दुभयः तथा ॥

शब्दार्थ—

मृदङ्ग	१. (उस समय) मृदङ्ग	**धुन्धुरी**	८. धुन्धरी
शङ्ख	२. शंख	**आनक**	६. नगाड़े
भेर्यः	३. भेरी	**घण्टा**	१०. घण्टा
च	४. और	**आद्याः**	१३. इत्यादि बाजे
वीणा	५. वीणा	**नेदुः**	१४. बजने लगे
पणव	६. पणव	**दुन्दुभयः**	१२. दुन्दुभी
गोमुखाः ।	७. गोमुख	**तथा ॥**	११. एवम्

श्लोकार्थ—उस समय मृदङ्ग, शंख, भेरी और वीणा, पणव, गोमुख, धुन्धरी, नगाड़े घण्टा एवम् दुन्दुभी इत्यादि बाजे बजने लगे ।

षोडशः श्लोकः

प्रासादशिखरारूढाः कुरुनार्यो दिदृक्षया ।
ववृषुः कुसुमैः कृष्णं प्रेमव्रीडास्मितेक्षणाः ॥१६॥

पदच्छेद—

प्रासाद शिखर आरूढाः, कुरु नार्यः दिदृक्षया ।
ववृषुः कुसुमैः कृष्णम् , प्रेम व्रीडा स्मित ईक्षणाः ॥

शब्दार्थ—

प्रासाद	१. (उस समय) महल की	**कुसुमैः**	११. फूलों की
शिखर	२. अटारी पर	**कृष्णम्**	६. भगवान् श्रीकृष्ण को
आरूढाः	३. चढ़ी हुई	**प्रेम**	५. स्नेह
कुरु नार्यः	४. कुरु कुल की स्त्रियाँ	**व्रीडा**	६. लज्जा (और)
दिदृक्षया ।	१०. देखने की इच्छा से	**स्मित**	७. मुसकान भरी
ववृषुः	१२. वर्षा करने लगीं	**ईक्षणाः ॥**	८. चितवन से

श्लोकार्थ—उस समय महल की अटारी पर चढ़ी हुई कुरु कुल की स्त्रियाँ स्नेह, लज्जा और मुसकान भरी चितवन से भगवान् श्रीकृष्ण को देखने की इच्छा से फूलों की वर्षा करने लगीं ।

सप्तदशः श्लोकः

सितातपत्रं जग्राह मुक्तादामविभूषितम् ।
रत्नदण्डं गुडाकेशः प्रियः प्रियतमस्य ह ॥१७॥

पदच्छेद—

सित आतपत्रम्, जग्राह, मुक्ता दाम विभूषितम् ।
रत्न दण्डम् गुडाकेशः, प्रियः प्रियतमस्य ह ॥

शब्दार्थ—

सित	८.	सफेद	रत्न दण्डम्	५.	रत्नों के दण्ड वाले (एवं)
आतपत्रम्	९.	छत्र	गुडाकेशः	२.	निद्रा को जीतने वाले
जग्राह	१०.	उठाया	प्रियः	३.	प्रिय (अर्जुन) ने
मुक्ता दाम	६.	मोतियों की झालर से	प्रियतमस्य	४.	प्रियतम भगवान् श्रीकृष्ण के
विभूषितम् ।	७.	सुशोभित	ह ॥	१.	उस समय

श्लोकार्थ—उस समय निद्रा को जीतने वाले प्रिय अर्जुन ने प्रियतम भगवान् श्रीकृष्ण के रत्नों के दण्ड वाले एवं मोतियों की झालर से सुशोभित सफेद छत्र उठाया ।

अष्टादशः श्लोकः

उद्धवः सात्यकिश्चैव व्यजने परमाद्भुते ।
विकीर्यमाणः कुसुमै रेजे मधुपतिः पथि ॥१८॥

पदच्छेद—

उद्धवः सात्यकिः च एव, व्यजने परम अद्भुते ।
विकीर्यमाणः कुसुमैः, रेजे मधुपतिः पथि ॥

शब्दार्थ—

उद्धवः	१.	(उस समय) उद्धव	अद्भुते ।	५.	विचित्र
सात्यकिः	३.	सात्यकि	विकीर्यमाणः	१०.	वर्षा से
च	२.	और	कुसुमैः	९.	पुष्पों की
एव	७.	इस प्रकार	रेजे	१२.	(भगवान् श्रीकृष्ण) सुशोभित हुये थे
व्यजने	६.	चँवर (डुलाने लगे)	मधुपतिः	११.	मधु दैत्य को मारने वाले
परम	४.	अत्यन्त	पथि ॥	८.	मार्ग में

श्लोकार्थ—उस समय उद्धव और सात्यकि अत्यन्त विचित्र चँवर डुलाने लगे । इस प्रकार मार्ग में पुष्पों की वर्षा से मधु दैत्य को मारने वाले भगवान् श्रीकृष्ण सुशोभित हुए थे ।

एकोनविंशः श्लोकः

अश्रूयन्ताशिषः सत्यास्तत्र तत्र द्विजेरिताः ।
नानुरूपानुरूपाश्च निर्गुणस्य गुणात्मनः ॥१६॥

पदच्छेद—

अश्रूयन्त आशिषः सत्याः, तत्र तत्र द्विज ईरिताः ।
न अनुरूप अनुरूपाः च, निर्गुणस्य गुणात्मनः ॥

शब्दार्थ—

अश्रूयन्त	११.	सुनाई पड़ने लगे	न अनुरूप	४.	अयोग्य
आशिषः	६.	आशीर्वाद	अनुरूपाः	७.	योग्य
सत्याः	८.	सत्य	च	५.	और
तत्र तत्र	१०.	जहाँ-तहाँ	निर्गुणस्य	३.	(भगवान् श्रीकृष्ण के) निर्गुण स्वरूप के
द्विज	१.	ब्राह्मणों के द्वारा	गुणात्मनः ॥	६.	सगुण रूप के
ईरिताः ।	२.	दिये गये			

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के द्वारा दिये गये भगवान् श्रीकृष्ण के निर्गुणस्वरूप के अयोग्य और सगुण रूप के योग्य सत्य आशीर्वाद जहाँ-तहाँ सुनाई पड़ने लगे ।

विंशः श्लोकः

अन्योन्यमासीत्संजल्प उत्तमश्लोकचेतसाम् ।
कौरवेन्द्रपुरस्त्रीणां सर्वश्रुतिमनोहरः ॥२०॥

पदच्छेद—

अन्योन्यम् आसीत् संजल्पः, उत्तम श्लोक चेतसाम् ।
कौरव इन्द्रपुर स्त्रीणाम्, सर्व श्रुति मनोहरः ॥

शब्दार्थ—

अन्योन्यम्	६.	आपसी	कौरव	३	कौरव (और)
आसीत्	१०.	लग रही थी	इन्द्रपुर	४.	इन्द्रप्रस्थ की
संजल्पः	७.	बातचीत	स्त्रीणाम्	५.	स्त्रियों की
उत्तमश्लोक	१.	पवित्रकीर्ति (भगवान् श्री कृष्ण) में	सर्वश्रुति	८.	सबके कानों को
चेतसाम् ।	२.	चित्त लगाई	मनोहरः ॥	६.	सुहावनी

श्लोकार्थ—उस समय पवित्र कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण में चित्त लगाई कौरव और इन्द्रप्रस्थ की स्त्रियों की आपसी बातचीत सबके कानों को सुहावनी लग रही थी ।

एकविंशः श्लोकः

स वै किलायं पुरुषः पुरातनो, य एक आसीदविशेष आत्मनि ।
अग्रे गुणेभ्यो जगदात्मनीश्वरे, निमीलितात्मन्निशि सुप्तशक्तिषु ॥२१॥

पदच्छेद— **सः वै किल अयम् पुरुषः पुरातनः, यः एकः आसीत् अविशेषः आत्मनि ।**
अग्रे गुणेभ्यः जगत् आत्मनि ईश्वरे, निमीलित आत्मन् निशि सुप्त शक्तिषु ॥

शब्दार्थ—

सः वै	४.	वही	अग्रे	१५.	परे
किल	७.	हैं	गुणेभ्यः	१४.	(सत, रज, तम) तीनों गुणों से
अयम्	३.	ये	जगत् आत्मनि	१०.	विश्व की आत्मा
पुरुषः	६.	परम पुरुष	ईश्वरे,	११.	ईश्वर में
पुरातनः,	५.	सनातन	निमीलित	२.	छिपाई हुई (हे सखि !)
यः	८	जो	आत्मन्	१.	अपने को
एकः, आसीत्	१८.	अकेले ही, विद्यमान थे	निशि	९.	प्रलय काल में
अविशेषः	१७.	निर्गुण रूप से	सुप्त	१३.	सो जाने पर
आत्मनि ।	१६.	अपने स्वरूप में	शक्तिषु ॥	१२.	प्रकृति के

श्लोकार्थ—अपने को छिपाई हुई हे सखि ! ये वही सनातन परम पुरुष हैं, जो प्रलय काल में विश्व की आत्मा ईश्वर में प्रकृति के सो जाने पर सत, रज, तम तीनों गुणों से परे अपने स्वरूप में निर्गुणरूप से अकेले ही विद्यमान थे ।

द्वाविंशः श्लोकः

स एव भूयो निजवीर्यचोदितां, स्वजीवमायां प्रकृतिं सिसृक्षतीम् ।
अनामरूपात्मनि रूपनामनी, विधित्समानोऽनुससार शास्त्रकृत् ॥२२॥

पदच्छेद— **सः एव भूयः निज वीर्य चोदिताम्, स्व जीव मायाम् प्रकृतिम् सिसृक्षतीम् ।**
अनामरूप आत्मनि रूप नामनी, विधित्समानः अनुससार शास्त्रकृत् ॥

शब्दार्थ—

सः एव	२.	उन्हीं भगवान् श्री कृष्ण ने	सिसृक्षतीम् ।	१२.	सृष्टि करने की इच्छा वाली
भूयः	५.	पुनः	अनामरूप	३.	नाम और रूप से रहित
निज वीर्य	८.	अपनी काल शक्ति से	आत्मनि	४.	अपने स्वरूप में
चोदिताम्,	९.	प्रेरित	रूप नामनी,	६.	नाम और रूप की
स्व जीव	१०.	अपने अंशभूत जीवों को	विधित्समानः	७.	रचना करने की इच्छा करते ही
मायाम्	११.	मोहित करने वाली (तथा)	अनुससार	१४.	अनुसरण किया था
प्रकृतिम्	१३.	प्रकृति का	शास्त्रकृत् ॥	१.	वेद और शास्त्रों के रचयिता

श्लोकार्थ—वेद और शास्त्रों के रचयिता उन्हीं भगवान् श्री कृष्ण ने नाम और रूप से रहित अपने स्वरूप में पुनः नाम और रूप की रचना करने की इच्छा करते ही अपनी काल शक्ति से प्रेरित अपने अंशभूत जीवों को मोहित करने वाली तथा सृष्टि करने की इच्छा वाली प्रकृति का अनुसरण किया था ।

त्रयोविंशः श्लोकः

स वा अयं यत्पदमत्र सूरयो, जितेन्द्रिया निर्जितमातरिश्वनः।
पश्यन्ति भक्त्युत्कलितामलात्मना, नन्वेष सत्त्वं परिमार्ष्टुमर्हति ॥२३॥

पदच्छेद—सः वा अयम् यत् पदम् अत्र सूरयः, जित इन्द्रियाः निर्जित मातरिश्वनः।
पश्यन्ति भक्ति उत्कलित अमल आत्मना, ननु एषः सत्त्वम् परिमार्ष्टुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

सः वा	२. वही हैं	पश्यन्ति	११. साक्षात्कार करते हैं
अयम्	१. ये	भक्ति उत्कलित	६. भक्ति से प्रफुल्लित और
यत्, पदम्	३. जिनके, स्वरूप का	अमल आत्मना,	१०. शुद्ध अन्तःकरण के द्वारा
अत्र	८. इस (संसार) में	ननु	१२. निश्चय पूर्वक
सूरयः,	७. योगिजन	एषः	१३. ये ही (भगवान् श्रीकृष्ण)
जित इन्द्रियाः	४. इन्द्रियों को वशमें रखनेवाले (और)	सत्त्वम्	१४. जीवों को
निर्जित	६. जीतने वाले	परिमार्ष्टुम्	१५. पवित्र करने में
मातरिश्वनः।	५. प्राणवायु को	अर्हति ॥	१६. समर्थ हैं

श्लोकार्थ—ये वही हैं, जिनके स्वरूप का इन्द्रियों को वश में रखने वाले और प्राणवायु को जीतने वाले योगि जन इस संसार में भक्ति से प्रफुल्लित और शुद्ध अन्तःकरण के द्वारा साक्षात्कार करते हैं। निश्चयपूर्वक ये ही भगवान् श्रीकृष्ण जीवों को पवित्र करने में समर्थ हैं।

चतुर्विंशः श्लोकः

स वा अयं सख्यनुगीतसत्कथो, वेदेषु गुह्येषु च गुह्यवादिभिः।
य एक ईशो जगदात्मलीलया, सृजत्यवत्यत्ति न तत्र सज्जते ॥२४॥

पदच्छेद—सः वा अयम् सखि अनुगीत सत् कथः, वेदेषु गुह्येषु च गुह्य वादिभिः।
यः एकः ईशः जगत् आत्म लीलया, सृजति अवति अत्ति न तत्र सज्जते ॥

शब्दार्थ—

सः वा	१९. वही हैं	यः, एकः	८. जो, एक अद्वितीय
अयम्	१८. ये	ईशः	९. ईश्वर
सखि	१. हे सखि!	जगत्	११. संसार का
अनुगीत	७. गान किया है (तथा)	आत्म लीलया,	१०. अपनी लीला से
सत् कथः,	६. जिनके सुन्दर गुणों का	सृजति	१२. सृजन
वेदेषु	३. वेदों में	अवति,	१३. पालन (और)
गुह्येषु	५. रहस्यात्मक शास्त्रों में	अत्ति	१४. संहार करते हैं (किन्तु)
च	४. और	न	१६. नहीं
गुह्य वादिभिः।	२. रहस्य बताने वाले (वेद व्यास इत्यादि मुनियों ने)	तत्र	१५. उसमें
		सज्जते ॥	१७. आसक्त होते हैं

श्लोकार्थ—हे सखि! रहस्य बताने वाले वेद व्यास इत्यादि मुनियों ने वेदों में और रहस्यात्मक शास्त्रों में जिनके सुन्दर गुणों का गान किया है तथा जो एक अद्वितीय ईश्वर अपनी लीला से संसार का सृजन, पालन और संहार करते हैं, किन्तु उसमें आसक्त नहीं होते हैं। ये वही हैं।

पञ्चविंशः श्लोकः

यदा ह्यधर्मेण तमोधियो नृपा, जीवन्ति तत्रैष हि सत्त्वतः किल।
धत्ते भगं सत्यमृतं दयां यशो, भवाय रूपाणि दधद्युगे युगे ॥२५॥

पदच्छेद—यदा हि अधर्मेण तमः धियः नृपाः, जीवन्ति तत्र एषः हि सत्त्वतः किल।
धत्ते भगम् सत्यम् ऋतम् दयाम् यशः, भवाय रूपाणि दधत् युगे युगे॥

शब्दार्थ—

यदा	१. जब	धत्ते	१६. प्रकट करते हैं
हि	४. ही	भगम्	१२. ऐश्वर्य
अधर्मेण	३. अधर्म से	सत्यम्	१३. सत्य
तमः धियः, नृपाः,	२. तामसी बुद्धि वाले, राजा लोग	ऋतम्	१४. ऋत (पारलौकिक सत्य)
जीवन्ति	५. जीते हैं	दयाम्, यशः,	१५. करुणा (और), कीर्ति को
तत्र, एषः हि	६. तब, यही (श्रीकृष्ण भगवान्)	भवाय	११. संसार के कल्याण के लिये
सत्त्वतः	८. सत्त्वगुण से	रूपाणि, दधत्	१०. अवतारों को, धारण करते हुये
किल।	७. निश्चयपूर्वक	युगे, युगे॥	९. प्रत्येक, युग में

श्लोकार्थ—जब तामसी बुद्धि वाले राजा लोग अधर्म से ही जीते हैं, तब यही श्रीकृष्ण भगवान् निश्चयपूर्वक सत्त्वगुण से प्रत्येक युग में अवतारों को धारण करते हुये संसार के कल्याण के लिये ऐश्वर्य, सत्य, ऋत, करुणा और कीर्ति को प्रकट करते हैं।

षड्विंशः श्लोकः

अहो अलं श्लाघ्यतमं यदोः कुल-महो अलं पुण्यतमं मधोर्वनम्।
यदेष पुंसामृषभः श्रियः पतिः, स्वजन्मना चङ्क्रमणेन चाञ्चति ॥२६॥

पदच्छेद—अहो अलम् श्लाघ्यतमम् यदोः कुलम्, अहो अलम् पुण्यतमम् मधोः वनम्।
यत् एषः पुंसाम् ऋषभः श्रियः पतिः, स्व जन्मना चङ्क्रमणेन च अञ्चति॥

शब्दार्थ—

अहो	१. सखि! बड़े हर्ष का विषय है कि	यत्	८. क्योंकि
अलम्	३. अत्यन्त	एषः	११. इन (भगवान् श्रीकृष्ण) ने
श्लाघ्यतमम्	४. प्रशंसनीय है (और)	पुंसाम्, ऋषभः	९. पुरुषों में, श्रेष्ठ
यदोः कुलम्,	२. यदुकुल	श्रियः पतिः,	१०. लक्ष्मी के पति
अहो	५. बड़ी खुशी की बात है (कि)	स्व जन्मना	१२. अपने जन्म से
अलम्, पुण्यतमम्	७. अति, पवित्र है	चङ्क्रमणेन	१४. भ्रमण से
मधोः वनम्।	६. मधुवन	च	१३. और
		अञ्चति॥	१५. (उन्हें) सुशोभित किया है

श्लोकार्थ—सखि! बड़े हर्ष का विषय है कि यदुकुल अत्यन्त प्रशंसनीय है और बड़ी खुशी की बात है कि मधुवन अति पवित्र है, क्योंकि पुरुषों में श्रेष्ठ लक्ष्मी के पति इन भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने जन्म से और भ्रमण से उन्हें सुशोभित किया है।

सप्तविंशः श्लोकः

अहो बत स्वर्यशसस्तिरस्करी, कुशस्थली पुण्ययशस्करी भुवः ।
पश्यन्ति नित्यं यदनुग्रहेषितं, स्मितावलोकं स्वपतिं स्म यत्प्रजाः ॥२७॥

पदच्छेद— **अहो बत स्वः यशसः तिरस्करी, कुशस्थली पुण्य यशस्करी भुवः । पश्यन्ति नित्यम् यत् अनुग्रह इषितम्, स्मित अवलोकम् स्व पतिम् स्म यत् प्रजाः ॥**

शब्दार्थ—

अहो बत	१. अहा बड़ा आश्चर्य है कि	**नित्यम्**	१४. सदा
स्वः यशसः	२. स्वर्ग लोक की कीर्ति का	**यत्, अनुग्रह**	१०. स्वयं की, कृपा से
तिरस्करी,	३. तिरस्कार करने वाली	**इषितम्,**	११. प्राप्त हुये (और)
कुशस्थली	४. द्वारकापुरी	**स्मित अवलोकम्**	१२. मुस्कान भरी चितवन वाले
पुण्य	६. पुण्य (और)	**स्व पतिम्**	१३. अपने स्वामी (भगवान् श्रीकृष्ण) को
यशस्करी	७. यश को बढ़ाने वाली (हैं)	**स्म**	१६. है
भुवः ।	५. पृथ्वी के	**यत्**	८. क्योंकि
पश्यन्ति	१५. देखती रहती	**प्रजाः ॥**	९. वहाँ की जनता

श्लोकार्थ—अहा बड़ा आश्चर्य है कि स्वर्गलोक की कीर्ति का तिरस्कार करने वाली द्वारकापुरी पृथ्वी के पुण्य और यश को बढ़ाने वाली है । क्योंकि वहाँ कि जनता स्वयं की कृपा से प्राप्त हुये और मुसकान भरी चितवन वाले अपने स्वामी भगवान् श्री कृष्ण को सदा देखती रहती है ।

अष्टाविंशः श्लोकः

नूनं व्रतस्नानहुतादिनेश्वरः, समर्चितो ह्यस्य गृहीतपाणिभिः ।
पिबन्ति याः सख्यधरामृतं मुहु-र्व्रजस्त्रियः सम्मुमुहुर्यदाशयाः ॥२८॥

पदच्छेद— **नूनम् व्रत स्नान हुत आदिना ईश्वरः, समर्चितः हि अस्य गृहीत पाणिभिः । पिबन्ति या सखि अधर अमृतम् मुहुः, व्रज स्त्रियः सम्मुमुहुः यद् आशयाः ॥**

शब्दार्थ—

नूनम्	७. निश्चय	**पिबन्ति**	१३. पान करती हैं
व्रत, स्नान	४. उपवास, स्नान (और)	**याः**	१०. जो कि
हुत आदिना	५. हवन आदि (अनुष्ठानों) के द्वारा	**सखि**	१. हे सखि !
ईश्वरः,	६. भगवान् श्री कृष्ण की	**अधर अमृतम्**	११. इनके अधर सुधा का
समर्चितः	९. बहुत पूजा की है	**मुहुः,**	१२. बार-बार
हि	८. ही	**व्रज स्त्रियः**	१५. गोपियाँ
अस्य	२. इन (भगवान् श्री कृष्ण) की	**सम्मुमुहुः**	१६. मूर्छित हो जाती थीं
गृहीत पाणिभिः ।	३. पटरानियों ने	**यद् आशयाः ॥**	१४. जिसकी कल्पना मात्र से

श्लोकार्थ—हे सखि ! इन भगवान् श्री कृष्ण की पटरानियों ने उपवास, स्नान और हवन आदि अनुष्ठानों के द्वारा भगवान् श्री कृष्ण की निश्चय ही बहुत पूजा की है, जो कि इनके अधर सुधा का बार-बार पान करती हैं, जिसकी कल्पना मात्र से गोपियाँ मूर्छित हो जाती थीं ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

या वीर्यशुल्केन हृताः स्वयंवरे, प्रमथ्य चैद्यप्रमुखान् हि शुष्मिणः ।
प्रद्युम्नसाम्बाम्बसुतादयोऽपरा, याश्चाहृता भौमवधे सहस्रशः ॥२६॥

पदच्छेद—याः वीर्य शुल्केन हृताः स्वयंवरे, प्रमथ्य चैद्य प्रमुखान् हि शुष्मिणः ।
प्रद्युम्न साम्ब अम्ब सुत आदयः अपराः, याः च आहृताः भौम वधे सहस्रशः ॥

शब्दार्थ—

याः	८. जो	प्रद्युम्न, साम्ब	१०. प्रद्युम्न, साम्व
वीर्य	५. पराक्रम के	अम्ब सुत	११. अम्बादि पुत्रों वाली
शुल्केन	७. मूल्य से	आदयः	१२. सभी रानियाँ
हृताः	६. लाई गयी थीं वे	अपराः,	१८. दूसरी (रानियाँ भी धन्य हैं)
स्वयंवरे,	१. स्वयंवर में	याः	१६. जो
प्रमथ्य	४. मान मर्दन करके	च	१३. और
चैद्य प्रमुखान्	३. शिशुपाल आदि प्रधान राजाओं का	आहृताः	१७. लाई गई थीं (वे)
हि	६. ही	भौम वधे	१४. भौमासुर को मार कर
शुष्मिणः ।	२. घमंडी	सहस्रशः ॥	१५. हजारों की संख्या में

श्लोकार्थ—स्वयंवर में घमंडी शिशुपाल आदि प्रधान राजाओं का मानमर्दन करके पराक्रम के ही मूल्य से जो लाई गई थीं, वे प्रद्युम्न-साम्व, आम्वादि पुत्रों वाली सभी रानियाँ और भौमासुर को मार कर हजारों की संख्या में जो लाई गई थीं, वे दूसरी रानियाँ भी धन्य हैं ।

त्रिंशः श्लोकः

एताः परं स्त्रीत्वमपास्तपेशलं, निरस्तशौचं बत साधु कुर्वते ।
यासां गृहात्पुष्करलोचनः पति-र्न जात्वपैत्याहृतिभिर्हृदि स्पृशन् ॥३०॥

पदच्छेद—एताः परम् स्त्रीत्वम् अपास्त पेशलम् , निरस्त शौचम् बत साधु कुर्वते ।
यासाम् गृहात् पुष्कर लोचनः पतिः, न जातु अपैति आहृतिभिः हृदि स्पृशन् ॥

शब्दार्थ—

एताः	१. इन सभी (रानियों) ने	यासाम् , गृहात्	६. जिनके, भवन से
परम्	७. अत्यन्त	पुष्कर लोचनः	१०. कमल नयन
स्त्रीत्वम्	६. स्त्री धर्म को	पतिः,	११. स्वामो (भगवान् श्रीकृष्ण)
अपास्त	३. रहित (तथा)	न	१६. नहीं
पेशलम् ,	२. स्वतन्त्रता से	जातु	१५. कभी
निरस्त	५. दूर	अपैति	१७. दूर होते हैं
शौचम्	४. पवित्रता से	आहृतिभिः	१२. उपहारों के द्वारा
बत	१८. यह आश्चर्य है	हृदि	१३. हृदय को
साधु कुर्वते ।	८. पवित्र बना दिया	स्पृशन् ॥	१४. छूते हुये

श्लोकार्थ—इन सभी रानियों ने स्वतन्त्रता से रहित तथा पवित्रता से दूर स्त्री धर्म को अत्यन्त पवित्र बना दिया है, जिनके भवन से कमल नयन स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण उपहारों के द्वारा हृदय को छूते हुये कभी दूर नहीं होते हैं, यह आश्चर्य है ।

एकत्रिंशः श्लोकः

एवंविधा गदन्तीनां स गिरः पुरयोषिताम् ।
निरीक्षणेनाभिनन्दन् सस्मितेन ययौ हरिः ॥३१॥

पदच्छेद—

एवम् विधाः गदन्तीनाम्, सः गिरः पुर योषिताम् ।
निरीक्षणेन अभिनन्दन्, सस्मितेन ययौ हरिः ॥

शब्दार्थ—

एवम् विधाः	३.	इस प्रकार की	**निरीक्षणेन**	८.	चितवन से
गदन्तीनाम्	५.	बोलती हुई	**अभिनन्दन्**	९.	अभिनन्दन करते हुये
सः	१.	उन	**सस्मितेन**	७.	मुस्कान भरी
गिरः	४.	वाणी को	**ययौ**	१०.	प्रस्थान किया
पुर योषिताम् ।	६.	हस्तिनापुर की स्त्रियों का	**हरिः ॥**	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—उन भगवान् श्रीकृष्ण ने इस प्रकार की वाणी को बोलती हुई हस्तिनापुर की स्त्रियों का मुसकान भरी चितवन से अभिनन्दन करते हुये प्रस्थान किया ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

अजातशत्रुः पृतनां गोपीथाय मधुद्विषः ।
परेभ्यः शङ्कितः स्नेहात्प्रायुङ्क्त चतुरङ्गिणीम् ॥३२॥

पदच्छेद—

अजात शत्रुः पृतनाम्, गोपीथाय मधु द्विषः ।
परेभ्यः शङ्कितः स्नेहात्, प्रायुङ्क्त चतुरङ्गिणीम् ॥

शब्दार्थ—

अजात शत्रुः	१.	शत्रुओं से रहित (महाराज युधिष्ठिर) ने	**शङ्कितः**	३.	शंका से
पृतनाम्	८.	सेना को	**स्नेहात्**	६.	प्रेमवश
गोपीथाय	५.	रक्षा के लिये	**प्रायुङ्क्त**	९.	(उनके साथ) भेज दिया
मधु द्विषः ।	४.	मधुसूदन (भगवान् श्रीकृष्ण) की	**चतुरङ्गिणीम् ॥**	७.	रथ, हाथी, घोड़े और पैदल
परेभ्यः	२.	शत्रुओं की			

श्लोकार्थ—शत्रुओं से रहित महाराज युधिष्ठिर ने शत्रुओं की शंका से मधुसूदन भगवान् श्रीकृष्ण की रक्षा के के लिये प्रेमवश रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सेना को उनके साथ भेज दिया ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अथ दूरागताञ् शौरिः कौरवान् विरहातुरान् ।
संनिवर्त्य दृढं स्निग्धान् प्रायात्स्वनगरीं प्रियैः ॥३३॥

पदच्छेद—

अथ दूर आगतान् शौरिः, कौरवान् विरह आतुरान् ।
संनिवर्त्य दृढम् स्निग्धान्, प्रायात् स्व नगरीम् प्रियैः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	**संनिवर्त्य**	१०.	लौटाकर
दूर	३.	दूर तक	**दृढम्**	७.	अत्यन्त
आगतान्	४.	साथ में आये हुये	**स्निग्धान्**	८.	प्रेम से युक्त
शौरिः	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	**प्रायात्**	१४.	प्रस्थान किया
कौरवान्	९.	कुरुवंशी पांडवों को	**स्व**	१२.	अपनी
विरह	५.	वियोग से	**नगरीम्**	१३.	नगरी (द्वारकापुरी) को
आतुरान् ।	६.	व्याकुल (और)	**प्रियैः ॥**	११.	उद्धव, सात्यकि इत्यादि प्रियजनों के साथ

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण ने दूर तक साथ में आये हुये, वियोग से व्याकुल और अत्यन्त प्रेम से युक्त कुरुवंशी पाण्डवों को लौटाकर उद्धव, सात्यकि इत्यादि प्रियजनों के साथ अपनी नगरी द्वारकापुरी को प्रस्थान किया ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

कुरुजाङ्गलपाञ्चालान् शूरसेनान् सयामुनान् ।
ब्रह्मावर्तं कुरुक्षेत्रं मत्स्यान् सारस्वतानथ ॥३४॥

पदच्छेद—

कुरु जाङ्गल पाञ्चालान्, शूरसेनान् स यामुनान् ।
ब्रह्मावर्तम् कुरुक्षेत्रम्, मत्स्यान् सारस्वतान् अथ ॥

शब्दार्थ—

कुरु जाङ्गल	२.	कुरुक्षेत्र का जाङ्गल देश	**ब्रह्मावर्तम्**	६.	ब्रह्मावर्त
पाञ्चालान्	३.	पंजाब देश	**कुरुक्षेत्रम्**	७.	कुरुक्षेत्र
शूरसेनान्	४.	मथुरा देश	**मत्स्यान्**	८.	मत्स्य देश और
स यामुनान् ।	५.	यमुना नदी का तटवर्ती प्रदेश	**सारस्वतान्**	९.	सारस्वत देशों को पार करते हुये चले
			अथ ॥	१.	तदनन्तर (भगवान् श्री कृष्ण)

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्री कृष्ण कुरुक्षेत्र का जांगल देश, पंजाब देश, मथुरा देश, यमुना नदी का तटवर्ती प्रदेश, ब्रह्मावर्त, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश और सारस्वत देशों को पार करते हुये चले ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

मरुधन्वमतिक्रम्य सौवीराभीरयोः परान् ।
आनर्तान् भार्गवोपागाच्छ्रान्तवाहो मनाग्विभुः ॥३५॥

पदच्छेद— **मरुधन्वम् अतिक्रम्य, सौवीर आभीरयोः परान् ।**
आनर्तान् भार्गव उपागात्, श्रान्त वाहः मनाग् विभुः ॥

शब्दार्थ—

मरुधन्वम्	५. मरुस्थल को	**आनर्तान्**	१०. आनर्त देश में
अतिक्रम्य	६. पार कर	**भार्गव**	१. हे शौनक जी !
सौवीर	७. सौवीर (और)	**उपागात्**	११. पहुँचे
आभीरयोः	८. आभीर देशों से	**श्रान्त वाहः**	३. थके हुये घोड़ों वाले
परान् ।	९. पश्चिम में स्थित	**मनाग्**	२. कुछ
		विभुः ॥	४. भगवान् श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! कुछ थके हुये घोड़ों वाले भगवान् श्री कृष्ण मरुस्थल को पार कर सौवीर और आभीर देशों से पश्चिम में स्थित आनर्त देश में पहुँचे ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

तत्र तत्र ह तत्रत्यैर्हरिः प्रत्युद्यतार्हणः ।
सायं भेजे दिशं पश्चाद् गविष्ठो गां गतस्तदा ॥३६॥

पदच्छेद— **तत्र तत्र ह तत्रत्यैः, हरिः प्रत्युद्यत अर्हणः ।**
सायम् भेजे दिशम् पश्चात्, गविष्ठः गाम् गतः तदा ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२. उन	**सायम्**	१४. सायंकाल का
तत्र	३. उन स्थानों पर	**भेजे**	१५. सन्ध्या वन्दन करते थे
ह	१. यह प्रसिद्ध है कि	**दिशम्**	१३. दिशा में
तत्रत्यैः	४. वहाँ के निवासियों के द्वारा	**पश्चात्**	१२. पश्चिम
हरिः	८. भगवान् श्री कृष्ण	**गविष्ठः**	७. रथ पर बैठे हुये
प्रत्युद्यत	५. स्वयं समर्पित	**गाम्**	९. पृथ्वी पर
अर्हणः ।	६. पूजा को प्राप्त करते हुये (तथा)	**गतः**	१०. उतर कर
		तदाः ॥	११. उस समय

श्लोकार्थ—यह प्रसिद्ध है कि उन-उन स्थानों पर वहाँ के निवासियों के द्वारा स्वयं समर्पित पूजा को प्राप्त करते हुये तथा रथ पर बैठे हुये भगवान् श्री कृष्ण पृथ्वी पर उतर कर उस समय पश्चिम दिशा में सायंकाल का सन्ध्यावन्दन करते थे ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे नैमिषीयोपाख्याने
श्रीकृष्णद्वारकागमनं नाम दशमः अध्यायः ॥१०॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ एकादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— आनर्तान् स उपव्रज्य स्वृद्धाञ्जनपदान् स्वकान् ।
दध्मौ दरवरं तेषां विषादं शमयन्निव ॥१॥

पदच्छेद— आनर्तान् सः उपव्रज्य, स्वृद्धान् जनपदान् स्वकान् ।
दध्मौ दरवरम् तेषाम्, विषादम् शमयन् इव ॥

शब्दार्थ—

आनर्तान्	४. आनर्त		दध्मौ	१२. बजाया
सः	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने		दरवरम्	११. श्रेष्ठ शंख को
उपव्रज्य	६. पहुँचकर		तेषाम्	७. वहाँ की जनता के
स्वृद्धान्	३. भरे-पूरे सम्पन्न		विषादम्	८. कष्ट को
जनपदान्	५. देश में		शमयन्	९. शान्त करते हुये
स्वकान् ।	२. अपने		इव ॥	१०. से

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने भरे-पूरे सम्पन्न आनर्त देश में पहुँचकर वहाँ की जनता के कष्ट को शान्त करते हुये से श्रेष्ठ शंख को बजाया ।

द्वितीयः श्लोकः

स उच्चकाशे धवलोदरो दरो-ऽप्युरुक्रमस्याधरशोणशोणिमा ।
दाध्मायमानः करकञ्जसम्पुटे, यथाब्जखण्डे कलहंस उत्स्वनः ॥२॥

पदच्छेद—सः उच्चकाशे धवल उदरः दरः, अपि उरुक्रमस्य अधर शोण शोणिमा ।
दाध्मायमानः कर कञ्ज सम्पुटे, यथा अब्ज खण्डे कल हंसः उत्स्वनः ॥

शब्दार्थ—

सः	१२. वह	दाध्मायमानः	८. बजाया जाता हुआ
उच्चकाशे	१४. अत्यन्त शोभित हो रहा था	कर, कञ्ज	६. हस्तरूपी, कमलों के
धवल, उदरः	९. सफेद, मध्य भागवाला तथा	सम्पुटे,	७. मध्य में
दरः, अपि	१३. शंख, भी	यथा	१. जैसे
उरुक्रमस्य	५. भगवान् श्रीकृष्ण के	अब्ज, खण्डे	२. कमल के, मध्य में
अधर	१०. अधरों की	कल हंसः	३. सुन्दर हंस
शोण, शोणिमा ।	११. लाली से, लाल	उत्स्वनः ॥	४. शब्द करता है (उसी प्रकार)

श्लोकार्थ—जैसे कमल के मध्य में सुन्दर हंस शब्द करता है, उसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण के हस्तरूपी कमलों के मध्य में बजाया जाता हुआ, सफेद मध्य भाग वाला तथा अधरों की लाली से लाल वह शंख भी अत्यन्त शोभित हो रहा था ।

तृतीयः श्लोकः

तमुपश्रुत्य निनदं जगद्भयभयावहम् ।
प्रत्युद्ययुः प्रजाः सर्वा भर्तृदर्शनलालसाः ॥३॥

पदच्छेद—

तम् उपश्रुत्य निनदम् , जगद् भय भय आवहम् ।
प्रत्युद्ययुः प्रजाः सर्वाः, भर्तृ दर्शन लालसाः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उस	प्रत्युद्ययुः	१०.	सामने पहुँचो
उपश्रुत्य	५.	सुनकर	प्रजाः	७.	जनता
निनदम्	४.	शंख ध्वनि को	सर्वाः	६.	सारी
जगद् भय	१.	जगत् के भय को	भर्तृ	८.	स्वामी के
भय आवहम् ।	२.	भयभीत कर देने वाली	दर्शन लालसाः ॥	९.	दर्शन की इच्छा से

श्लोकार्थ—जगत् के भय को भयभीत कर देने वाली उस शंख ध्वनि को सुनकर सारी जनता स्वामी के दर्शन की इच्छा से सामने पहुँची ।

चतुर्थः श्लोकः

तत्रोपनीतबलयो रवेर्दीपमिवादृताः ।
आत्मारामं पूर्णकामं निजलाभेन नित्यदा ॥४॥

पदच्छेद—

तत्र उपनीत बलयः, रवेः दीपम् इव आदृताः ।
आत्म आरामम् पूर्ण कामम् , निज लाभेन नित्यदा ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ की (जनता ने)	आदृताः ।	१२.	स्वागत किया
उपनीत	५.	समर्पित	आत्म	१०.	आत्मा में
बलयः	६.	उपहारों द्वारा	आरामम्	११.	विहार करने वाले (श्रीकृष्ण का)
रवेः	२.	सूर्य को	पूर्ण कामम्	९.	परिपूर्ण मनोरथों वाले (तथा)
दीपम्	३.	दीप दान के	निज लाभेन	७.	अपने आत्म लाभ से
इव	४.	समान	नित्यदा ॥	८.	सदा

श्लोकार्थ—वहाँ की जनता ने सूर्य को दीपदान के समान समर्पित उपहारों द्वारा अपने आत्मलाभ से सदा परिपूर्ण मनोरथों वाले तथा आत्मा में विहार करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण का स्वागत किया ।

पञ्चमः श्लोकः

प्रीत्युत्फुल्लमुखाः प्रोचुर्हर्षगद्गदया गिरा ।
पितरं सर्वसुहृदमवितारमिवार्भकाः ॥५॥

पदच्छेद— प्रीति उत्फुल्ल मुखाः प्रोचुः, हर्ष गद् गदया गिरा ।
पितरम् सर्व सुहृदम्, अवितारम् इव अर्भकाः ॥

शब्दार्थ—

प्रीति	७.	प्रसन्नता के कारण	पितरम्	३.	पिता से
उत्फुल्ल	८.	खिले	सर्व	१०.	सब के
मुखाः	९.	मुखवाले (वहाँ के निवासी)	सुहृदम्	११.	मित्र और
प्रोचुः	१३.	बोले	अवितारम्	१२.	संरक्षक (भगवान् श्री कृष्ण) से
हर्ष	४.	खुशी के मारे	इव	१.	जैसे
गद्गदया	५.	गदगद	अर्भकाः ॥	२.	बच्चे
गिरा ।	६.	वाणी में (बोलते हैं, उसी तरह)			

श्लोकार्थ—जैसे बच्चे पिता से खुशी के मारे गदगद वाणी में बोलते हैं, उसी तरह प्रसन्नता के कारण खिले मुखवाले वहाँ के निवासी सबके मित्र और संरक्षक भगवान् श्रीकृष्ण से बोले ।

षष्ठः श्लोकः

नताः स्म ते नाथ सदाङ्घ्रिपङ्कजं, विरिञ्चवैरिञ्च्यसुरेन्द्रवन्दितम् ।
परायणं क्षेममिहेच्छतां परं, न यत्र कालः प्रभवेत् परः प्रभुः ॥६॥

पदच्छेद—नताः स्म ते नाथ सदा अङ्घ्रि पङ्कजम्, विरिञ्चि वैरिञ्च्य सुरेन्द्र वन्दितम् ।
परायणम् क्षेमम् इह इच्छताम् परम्, न यत्र कालः प्रभवेत् परः प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

नताः स्म	१३.	प्रणत हैं	क्षेमम्	३.	कल्याण
ते	१०.	आपके	इह	२.	इस संसार में
नाथ	१.	हे स्वामिन् !	इच्छताम्	४.	चाहने वाले (लोगों) का
सदा	१२.	नित्य	परम्,	५.	सर्वोत्तम
अङ्घ्रि, पङ्कजम्	११.	चरण कमलों में (हम)	न	१७.	नहीं
विरिञ्चि वैरिञ्च्य	७.	ब्रह्मा, शम्भु और	यत्र	१४.	जहाँ पर
सुरेन्द्र	८.	इन्द्र से	कालः	१६.	काल (भी)
वन्दितम् ।	९.	पूजित	प्रभवेत्	१८.	समर्थ हो सकता है
परायणम्	६.	आश्रय (तथा)	परः प्रभुः ॥	१५.	सर्व शक्तिमान्

श्लोकार्थ—हे स्वामिन् ! इस संसार में कल्याण चाहने वाले लोगों का सर्वोत्तम आश्रय तथा ब्रह्मा, शम्भु और इन्द्र से पूजित आपके चरण कमलों में हम नित्य प्रणत हैं; जहाँ पर सर्व शक्तिमान् काल भी समर्थ नहीं हो सकता है ।

सप्तमः श्लोकः

भवाय नस्त्वं भव विश्वभावन, त्वमेव माताथ सुहृत् पतिः पिता ।
त्वं सद्गुरुर्नः परमं च दैवतं, यस्यानुवृत्त्या कृतिनो बभूविम ॥७॥

पदच्छेद— भवाय नः त्वम् भव विश्व भावन, त्वम् एव माता अथ सुहृत् पतिः पिता ।
त्वम् सद् गुरुः नः परमम् च दैवतम्, यस्य अनुवृत्त्या कृतिनः बभूविम ॥

शब्दार्थ—

भवाय	४.	मंगल के लिये	**त्वम्**	९.	आपही
नः	३.	हमारे	**सद् गुरुः**	११.	श्रेष्ठ गुरु
त्वम्	२.	आप	**नः**	१०.	हमारे
भव	५.	होवें	**परमम्**	१३.	सर्वोत्तम
विश्व भावन,	१.	हे जगत् के रक्षक !	**च**	१२.	और
त्वम् एव माता	६.	आप ही माता	**दैवतम्,**	१४.	देवता हैं
अथ	८.	तथा	**यस्य अनुवृत्त्या**	१५.	जिस आपकी सेवा से (हमलोग)
सुहृत् पतिः पिता ।	७.	मित्र, पति, पिता हैं	**कृतिनः बभूविम ॥**	१६.	भाग्यशाली हुये हैं

श्लोकार्थ—हे जगत् के रक्षक ! आप हमारे मंगल के लिये होवें । आप-ही माता, मित्र, पति और पिता हैं तथा आपही हमारे श्रेष्ठ गुरु और सर्वोत्तम देवता हैं; जिस आपकी सेवा से हम लोग भाग्यशाली हुये हैं ।

अष्टमः श्लोकः

अहो सनाथा भवता स्म यद्वयं, त्रैविष्टपानामपि दूरदर्शनम् ।
प्रेमस्मितस्निग्धनिरीक्षणाननं, पश्येम रूपं तव सर्वसौभगम् ॥८॥

पदच्छेद— अहो सनाथाः भवता स्म यत् वयम् , त्रैविष्टपानाम् अपि दूर दर्शनम् ।
प्रेम स्मित स्निग्ध निरीक्षण आननम्, पश्येम रूपम् तव सर्व सौभगम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	सौभाग्य है कि	**प्रेम**	९.	प्रेमभरी
सनाथाः	४.	सनाथ	**स्मित**	१०.	मुसकान और
भवता	३.	आपसे	**स्निग्ध**	११.	भोली
स्म	५.	हैं	**निरीक्षण**	१२.	चितवन वाले
यत्	६.	क्योंकि	**आननम्**	१३.	मुख से युक्त
वयम् ,	२.	हम लोग	**पश्येम**	१६.	(हम) देखते हैं
त्रैविष्टपानाम् अपि	७.	देवताओं से भी	**रूपम्**	१५.	स्वरूप को
दूरं दर्शनम् ।	८.	अलभ्य दर्शन वाले (तथा)	**तव सर्व सौभगम् ॥**	१४.	आपके सबसे सुन्दर

श्लोकार्थ—सौभाग्य है कि हम लोग आपसे सनाथ हैं; क्योंकि देवताओं से भी अलभ्य दर्शन वाले तथा प्रेमभरी मुसकान और भोली चितवन वाले मुख से युक्त आपके सबसे सुन्दर स्वरूप को हम देखते हैं ।

नवमः श्लोकः

यर्ह्यम्बुजाक्षापससार भो भवान्, कुरून् मधून् वाथ सुहृद्दिदृक्षया ।
तत्राब्दकोटिप्रतिमः क्षणो भवेद्, रविं विनाक्ष्णोरिव नस्तवाच्युत ॥९॥

पदच्छेद— यर्हि अम्बुज अक्ष अपससार भो भवान्, कुरून् मधून् वा अथ सुहृद् दिदृक्षया ।
तत्र अब्द कोटि प्रतिमः क्षणः भवेत्, रविम् विना अक्ष्णोः इव नः तव अच्युत ॥

शब्दार्थ—

यर्हि	३.	जब	तत्र	११.	उस समय
अम्बुज अक्ष	२.	कमलनयन !	अब्द कोटि	१९.	करोड़ों वर्षों के
अपससार	१०.	चले जाते हैं	प्रतिमः	२०.	समान
भो	१.	हे	क्षणः	१८.	एक क्षण
भवान्,	४.	आप	भवेत्,	२१.	हो जाता है
कुरून्	५.	पाण्डवों	रविम्	१३.	सूर्य के
मधून्	७.	मथुरावासी	विना अक्ष्णोः	१४.	विना आँखों के
वा अथ	६.	और	इव	१५.	समान
सुहृद्	८.	मित्रों को	नः	१७.	हमारा
दिदृक्षया ।	९.	देखने की इच्छा से	तव	१६.	आपके (विना)
			अच्युत ॥	१२.	हे श्री कृष्ण !

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! जब आप पाण्डवों और मथुरावासी मित्रों को देखने की इच्छा से चले जाते हैं; उस समय हे श्री कृष्ण ! सूर्य के विना आँखों के समान आप के विना हमारा एक क्षण करोड़ों वर्षों के समान हो जाता है ।

दशमः श्लोकः

इति चोदीरिता वाचः प्रजानां भक्तवत्सलः ।
शृण्वानोऽनुग्रहं दृष्ट्या वितन्वन् प्राविशत्पुरीम् ॥१०॥

पदच्छेद— इति, च उदीरिताः वाचः, प्रजानाम् भक्त वत्सलः ।
शृण्वानः अनुग्रहम् दृष्ट्या, वितन्वन् प्राविशत् पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	शृण्वानः	६.	सुनते हुये
च	७.	और	अनुग्रहम्	८.	करुणामयी
उदीरिताः	३.	कही गई	दृष्ट्या	९.	दृष्टि से
वाचः	५.	वाणी को	वितन्वन्	१०.	देखते हुये
प्रजानाम्	४.	जनता की	प्राविशत्	१२.	प्रवेश किया
भक्त वत्सलः ।	१.	भगवान् श्री कृष्ण ने	पुरीम् ॥	११.	द्वारका पुरी में

श्लोकार्थ—भगवान् श्री कृष्ण ने इस प्रकार कही गई जनता की वाणी को सुनते हुये और करुणामयी दृष्टि से देखते हुये द्वारका पुरी में प्रवेश किया ।

एकादशः श्लोकः

मधुभोजदशार्हार्हकुकुरान्धकवृष्णिभिः ।
आत्मतुल्यबलैर्गुप्तां नागैर्भोगवतीमिव ॥११॥

पदच्छेद—

मधु भोज दशार्ह अर्ह, कुकुर अन्धक वृष्णिभिः ।
आत्म तुल्य बलैः गुप्ताम् , नागैः भोगवतीम् इव ॥

शब्दार्थ—

मधु	७.	मधुकुल	**आत्म**	४.	(उसी प्रकार वह नगरी) अपने
भोज	८.	भोज	**तुल्य**	५.	समान
दशार्ह	९.	दशार्ह	**बलैः**	६.	बलशाली
अर्ह	१०.	अर्ह	**गुप्ताम्**	१३.	सुरक्षित थी
कुकुर	११.	कुकुर	**नागैः**	२.	नागों से
अन्धक	१२.	अन्धक (और)	**भोगवतीम्**	३.	पातालपुरी (रक्षित है)
वृष्णिभिः ।	१३.	वृष्णिकुल के यादवों से	**इव ॥**	१.	जिस प्रकार

श्लोकार्थ—जिस प्रकार नागों से पातालपुरी रक्षित है, उसी प्रकार वह नगरी अपने समान बलशाली मधुकुल, भोज, दशार्ह, अर्ह, कुकुर, अन्धक और वृष्णि कुल के यादवों से सुरक्षित थी ।

द्वादशः श्लोकः

सर्वर्तुसर्वविभवपुण्यवृक्षलताश्रमैः ।
उद्यानोपवनारामैर्वृतपद्माकरश्रियम् ॥१२॥

पदच्छेद—

सर्व ऋतु सर्व विभव, पुण्य वृक्ष लता आश्रमैः ।
उद्यान उपवन आरामैः, वृत पद्माकर श्रियम् ॥

शब्दार्थ—

सर्व	१.	(वह नगरी) सभी	**उद्यान**	७.	बगीचे
ऋतु	२.	ऋतुओं में	**उपवन**	८.	वाटिका (तथा)
सर्व विभव	३.	सारे वैभव	**आरामैः**	९.	क्रीडा वनों से (एवं)
पुण्य वृक्ष	४.	पवित्र वृक्षों (और)	**वृत**	१२.	घिरी हुई (थी)
लता	५.	लताओं के	**पद्माकर**	१०.	सरोवर के कमलों की
आश्रमैः ।	६.	कुंजों	**श्रियम् ।**	११.	शोभा से

श्लोकार्थ—वह नगरी सभी ऋतुओं में सारे वैभव, पवित्र वृक्षों और लताओं के कुंजों, बगीचे, वाटिका तथा क्रीडा वनों से एवम् सरोवर के कमलों की शोभा से घिरी हुई थी ।

त्रयोदशः श्लोकः

गोपुरद्वारमार्गेषु कृतकौतुकतोरणाम् ।
चित्रध्वजपताकाग्रैरन्तःप्रतिहतातपाम् ॥१३॥

पदच्छेद—

गोपुर द्वार मार्गेषु, कृत कौतुक तोरणाम् ।
चित्र ध्वज पताकाग्रैः, अन्तः प्रतिहत आतपाम् ॥

शब्दार्थ—

गोपुर	१.	नगर के फाटक	चित्र	७.	अनेक रंगों की
द्वार	२.	दरवाजों (और)	ध्वज	८.	ध्वजाओं (और)
मार्गेषु	३.	सड़कों पर	पताकाग्रैः	९.	झण्डियां से
कृत	६.	लगाई गई (थीं)	अन्तः	११.	अन्दर
कौतुक	४.	स्वागतार्थ	प्रतिहत	१२.	नहीं आरही थी
तोरणाम् ।	५.	वन्दनवारें	आतपाम् ॥	१०.	सूर्य की धूप

श्लोकार्थ—नगर के फाटक, दरवाजों और सड़कों पर स्वागतार्थ वन्दनवारें लगाई गई थीं। अनेक रंगों की ध्वजाओं और झण्डियों से सूर्य की धूप अन्दर नहीं आरही थी।

चतुर्दशः श्लोकः

सम्मार्जितमहामार्ग रथ्यापणकचत्वराम् ।
सिक्तां गन्धजलैरुप्तां फलपुष्पाक्षताङ्कुरैः ॥१४॥

पदच्छेद—

सम्मार्जित महामार्ग, रथ्या आपणक चत्वराम् ।
सिक्ताम् गन्ध जलैः उप्ताम्, फल पुष्प अक्षत अङ्कुरैः ॥

शब्दार्थ—

सम्मार्जित	५.	साफ सुथरे कर दिये गये थे	गन्ध जलैः	६.	सुगन्धित जल से
महामार्ग	१.	(वहाँ के) राजमार्ग	उप्ताम्	१२.	विखेरे गये थे
रथ्या	२.	गलियाँ	फल	८.	फल
आपणक	३.	छोटे-बड़े बाजार (और)	पुष्प	९.	फूल
चत्वराम् ।	४.	चौक	अक्षत	१०.	चावल और
सिक्ताम्	७.	सींचे गये थे (तथा)	अङ्कुरैः ॥	११.	दुर्वा अंकुर

श्लोकार्थ—वहां के राजमार्ग, गलियां, छोटे-बड़े बाजार और चौक साफ सुथरे कर दिये गये थे; सुगन्धित जल से सींचे गये थे तथा फल, फूल, चावल और दुर्वा अंकुर विखेरे गये थे।

पञ्चदशः श्लोकः

द्वारि द्वारि गृहाणां च दध्यक्षतफलेक्षुभिः ।
अलंकृतां पूर्णकुम्भैर्बलिभिर्धूपदीपकैः ॥१५॥

पदच्छेद—

द्वारि द्वारि गृहाणाम् च, दधि अक्षत फल इक्षुभिः ।
अलंकृताम् पूर्ण कुम्भैः, बलिभिः धूप दीपकैः ॥

शब्दार्थ—

द्वारि	२.	प्रत्येक	इक्षुभिः ।	७.	ईखों से
द्वारि	३.	दरवाजों पर	अलंकृताम्	१४.	सजाई गई थी
गृहाणाम्	१.	घरों के	पूर्ण	९.	जल से भरे
च	८.	और	कुम्भैः	१०.	कलशों से
दधि	४.	दही	बलिभिः	११.	उपहारों से (तथा)
अक्षत	५.	चावल	धूप	१२.	धूप और
फल	६.	फल (तथा)	दीपकैः ॥	१३.	दीपों से (वह नगरी)

श्लोकार्थ—घरों के प्रत्येक दरवाजों पर दही, चावल, फल तथा ईखों से और जल से भरे कलशों से, उपहारों से तथा धूप और दीपों से वह नगरी सजाई गई थी ।

षोडशः श्लोकः

निशम्य प्रेष्ठमायान्तं वसुदेवो महामनाः ।
अक्रूरश्चोग्रसेनश्च रामश्चाद्भुतविक्रमः ॥१६॥

पदच्छेद—

निशम्य प्रेष्ठम् आयान्तम्, वसुदेवः महामनाः ।
अक्रूरः च उग्रसेनः च, रामः च अद्भुत विक्रमः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	१२.	सुनकर (अत्यन्त हर्षित हुये)	च	४.	और
प्रेष्ठम्	१०.	अत्यन्त प्यारे भगवान् श्रीकृष्ण को	उग्रसेन	५.	उग्रसेन जी
आयान्तम्	११.	आया हुआ	च	६.	तथा
वसुदेवः	२.	वसुदेव जी	रामः	९.	बलराम जी
महामनाः ।	१.	उदार हृदय वाले	च	१३.	और (अगवानी करने गये)
अक्रूरः	३.	अक्रूर	अद्भुत	७.	अतुल
			विक्रमः ॥	८.	बलशाली

श्लोकार्थ—उदार हृदय वाले वसुदेव जी अक्रूर और उग्रसेन जी तथा अतुल बलशाली बलराम जी अत्यन्त प्यारे भगवान् श्री कृष्ण को आया हुआ सुनकर अत्यन्त हर्षित हुये और उनकी अगवानी करने गये ।

सप्तदशः श्लोकः

प्रद्युम्नश्चारुदेष्णश्च साम्बो जाम्बवतीसुतः ।
प्रहर्षवेगोच्छ्वशितशयनासनभोजनाः ॥१७॥

पदच्छेद— प्रद्युम्नः चारुदेष्णः च, साम्बः जाम्बवती सुतः ।
प्रहर्ष वेग उच्छ्वशित, शयन आसन भोजनाः ॥

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नः	१. प्रद्युम्न	प्रहर्ष वेग	६. प्रसन्नता के कारण
चारुदेष्णः	२. चारुदेष्ण	उच्छ्वशित	१०. छोड़ दिया
च	३. और	शयन	७. सोना
साम्बः	५. साम्ब ने	आसन	८. बैठना और
जाम्बवती सुतः ।	४. जाम्बवती के पुत्र	भोजनाः ॥	९. भोजन करना

श्लोकार्थ—प्रद्युम्न, चारुदेष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने प्रसन्नता के कारण सोना, बैठना और भोजन करना छोड़ दिया ।

अष्टादशः श्लोकः

वारणेन्द्रं पुरस्कृत्य ब्राह्मणैः ससुमङ्गलैः ।
शङ्खतूर्यनिनादेन ब्रह्मघोषेण चादृताः ।
प्रत्युज्जग्मू रथैर्हृष्टाः प्रणयागतसाध्वसाः ॥१८॥

पदच्छेद— वारणेन्द्रम् पुरस्कृत्य, ब्राह्मणैः स सुमङ्गलैः ।
शङ्ख तूर्य निनादेन, ब्रह्म घोषेण च आदृताः ।
प्रत्युज्जग्मुः रथैः हृष्टाः, प्रणय आगत साध्वसाः ॥

शब्दार्थ—

वारणेन्द्रम्	४. गजराज को	च	१०. तथा
पुरस्कृत्य	५. आगे करके	आदृताः ।	१४. आदर पूर्वक (भगवान् श्रीकृष्ण की)
ब्राह्मणैः	६. ब्राह्मणों और	प्रत्युज्जग्मुः	१५. अगवानी करने के लिये गये ।
स सुमङ्गलैः ।	७. मंगलकारी वस्तुओं को लेकर	रथैः	१३. रथों पर चढ़कर
शङ्ख तूर्य	८. शंख और तुरही की	हृष्टाः	१२. प्रसन्न होते हुये (और)
निनादेन	९. ध्वनि	प्रणय	१. प्रेम के
ब्रह्म घोषेण	११. वेद पाठ के साथ	आगत	२. कारण
		साध्वसाः ॥	३. घबड़ाये हुये (वे लोग)

श्लोकार्थ—प्रेम के कारण घबड़ाये हुये वे लोग गजराज को आगे करके ब्राह्मणों और मंगलकारी वस्तुओं को लेकर; शंख और तुरही की ध्वनि तथा वेद पाठ के साथ; प्रसन्न होते हुये और रथों पर चढ़कर आदर पूर्वक भगवान् श्री कृष्ण की अगवानी करने के लिये गये ।

एकानविंशः श्लोकः

वारमुख्याश्च शतशो यानैस्तद्दर्शनोत्सुकाः ।
लसत्कुण्डलनिर्भातकपोलवदनश्रियः ॥१९॥

पदच्छेद—

वारमुख्याः च शतशः, यानैः तद् दर्शन उत्सुकाः ।
लसत् कुण्डल निर्भात, कपोल वदन श्रियः ॥

शब्दार्थ—

वारमुख्याः	१२.	वाराङ्गनायें	**लसत्**	५.	मनोहर
च	१.	तथा	**कुण्डल**	६.	कुण्डलों से
शतशः	११.	सैंकड़ों	**निर्भात**	७.	चमकते
यानैः	१३.	पालकियों से (गईं)	**कपोल**	८.	गाल (और)
तद्	२.	उन (भगवान् श्रीकृष्ण) के	**वदन**	९.	मुख की
दर्शन	३.	दर्शन के लिये	**श्रियः ॥**	१०.	कांति वाली
उत्सुकाः ।	४.	उतावली (एवं)			

श्लोकार्थ—तथा उन भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन के लिये उतावली एवं मनोहर कुण्डलों से चमकते गाल और मुख की कांति वाली सैंकड़ों वाराङ्गनायें पालकियों से गईं ।

विंशः श्लोकः

नटनर्तकगन्धर्वाः सूतमागधवन्दिनः ।
गायन्ति चोत्तमश्लोकचरितान्यद्भुतानि च ॥२०॥

पदच्छेद—

नट नर्तक गन्धर्वाः, सूत मागध वन्दिनः ।
गायन्ति च उत्तम श्लोक, चरितानि अद्भुतानि च ॥

शब्दार्थ—

नट	२.	अभिनय करने वाले	**गायन्ति**	१२.	गाने लगे
नर्तक	३.	नाचने वाले (और)	**च**	५.	तथा
गन्धर्वाः	४.	गान करने वाले	**उत्तमश्लोक**	९.	पवित्र नाम वाले (भगवान् श्रीकृष्ण) की
सूत	६.	विरद बखानने वाले	**चरितानि**	११.	लीलाओं को
मागध	७.	मागध (और)	**अद्भुतानि**	१०.	अनोखी
वन्दिनः ।	८.	वन्दिजन	**च ॥**	१.	तथा (उस समय)

श्लोकार्थ—तथा उस समय अभिनय करने वाले, नाचने वाले और गान करने वाले तथा विरद बखानने वाले मागध और वन्दिजन पवित्र नाम वाले भगवान् श्रीकृष्ण की अनोखी लीलाओं को गाने लगे ।

एकविंशः श्लोकः

भगवांस्तत्र बन्धूनां पौराणामनुवर्तिनाम् ।
यथाविध्युपसंगम्य सर्वेषां मानमादधे ॥२१॥

पदच्छेद—

भगवान् तत्र बन्धूनाम्, पौराणाम् अनुवर्तिनाम् ।
यथा विधि उपसंगम्य, सर्वेषाम् मानम् आदधे ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	भगवान् (श्रीकृष्ण) ने	यथाविधि	६.	विधि पूर्वक
तत्र	१.	वहाँ पर	उपसंगम्य	७.	मिलकर
बन्धूनाम्	३.	बन्धु, बान्धवों से (और)	सर्वेषाम्	८.	(उन) सबका
पौराणाम्	५.	पुरवासियों से	मानम्	९.	सम्मान
अनुवर्तिनाम् ।	४.	पीछे आने वाले	आदधे ॥	१०.	किया

श्लोकार्थ—वहाँ पर भगवान् श्रीकृष्ण ने बन्धु, बान्धवों से और पीछे आने वाले पुरवासियों से विधिपूर्वक मिलकर उन सबका सम्मान किया ।

द्वाविंशः श्लोकः

प्रह्वाभिवादनाश्लेषकरस्पर्शस्मितेक्षणैः ।
आश्वास्य चाश्वपाकेभ्यो वरैश्चाभिमतैर्विभुः ॥२२॥

पदच्छेद—

प्रह्व अभिवादन आश्लेष, कर स्पर्श स्मित ईक्षणैः ।
आश्वास्य च आ श्वपाकेभ्यः, वरैः च अभिमतैः विभुः ॥

शब्दार्थ—

प्रह्व	२.	प्रणाम	आश्वास्य	१३.	प्रसन्न किया
अभिवादन	३.	मंगल वचन	च	६.	और
आश्लेष	४.	आलिंगन	आ श्वपाकेभ्यः	१२.	चाण्डाल तक को
कर स्पर्श	५.	हाथ मिलाकर	वरैः	११.	वरदानों से
स्मित	७.	मुस्कानभरी	च	९.	तथा
ईक्षणैः ।	८.	चितवन से	अभिमतैः	१०.	चाहे गये
			विभुः ॥	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने प्रणाम, मंगल वचन, आलिंगन, हाथ मिलाकर और मुसकान भरी चितवन से तथा चांहे गये वरदानों से चाण्डाल तक को प्रसन्न किया ।

त्रयोविंशः श्लोकः

स्वयं च गुरुभिर्विप्रैः सदारैः स्थविरैरपि ।
आशीर्भिर्युज्यमानोऽन्यैर्वन्दिभिश्चाविशत्पुरम् ॥२३॥

पदच्छेद—

स्वयम् च गुरुभिः विप्रैः, स दारैः स्थविरैः अपि ।
आशीर्भिः युज्यमानः अन्यैः, वन्दिभिः च आविशत् पुरम् ॥

शब्दार्थ—

स्वयम्	१	भगवान् श्रीकृष्ण ने	**आशीर्भिः**	९.	आशीर्वादों से
च	३.	और	**युज्यमानः**	१०.	युक्त होते हुए
गुरुभिः	२.	गुरुजनों के	**अन्यैः**	११.	दूसरे
विप्रैः	५.	ब्राह्मणों के	**वन्दिभिः**	१२.	वन्दिजनों के साथ
स दारैः	४.	सपत्नीक	**च**	६.	तथा
स्थविरैः	७.	वृद्धों के	**आविशत्**	१४.	प्रवेश किया
अपि ।	८.	भी	**पुरम् ॥**	१३.	नगर में

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने गुरुजनों के और सपत्नीक ब्राह्मणों के तथा वृद्धों के भी आशीर्वादों से युक्त होते हुये दूसरे वन्दिजनों के साथ नगर में प्रवेश किया ।

चतुर्विंशः श्लोकः

राजमार्गं गते कृष्णे द्वारकायाः कुलस्त्रियः ।
हर्म्याण्यारुरुहुर्विप्र तदीक्षणमहोत्सवाः ॥२४॥

पदच्छेद—

राजमार्गम् गते कृष्णे, द्वारकायाः कुल स्त्रियः ।
हर्म्याणि आरुरुहुः विप्र, तद् ईक्षण महोत्सवाः ॥

शब्दार्थ—

राजमार्गम्	३.	राजमार्ग में	**आरुरुहुः**	११.	चढ़ गईं
गते	४.	आजाने पर	**विप्र**	१.	हे शौनक जी !
कृष्णे	२.	भगवान् श्रीकृष्ण के	**तद्**	७.	उन (भगवान् श्रीकृष्ण) के
द्वारकायाः	५.	द्वारकापुरी की	**ईक्षण**	८.	दर्शन का
कुल स्त्रियः ।	६.	कुलीन नारियाँ	**महोत्सवाः ॥**	९.	महान् उत्सव मनाती हुईं
हर्म्याणि	१०.	अटारियों पर			

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! श्रीकृष्ण के राजमार्ग में आजाने पर द्वारकापुरी की कुलीन नारियाँ उन भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन का महान् उत्सव मनाती हुईं अटारियों पर चढ़ गईं ।

पञ्चविंशः श्लोकः

नित्यं निरीक्षमाणानां यदपि द्वारकौकसाम् ।
नैव तृप्यन्ति हि दृशः श्रियोधामाङ्गमच्युतम् ॥२५॥

पदच्छेद—

नित्यम् निरीक्षमाणानाम्, यदपि द्वारका ओकसाम् ।
न एव तृप्यन्ति हि दृशः, श्रियः धाम अङ्गम् अच्युतम् ॥

शब्दार्थ—

नित्यम्	७.	सदा	तृप्यन्ति	१२.	तृप्त होती हैं
निरीक्षमाणानाम्	८.	दर्शन करते हैं (फिर भी)	हि	१०.	कभी भी
यदपि	६.	यद्यपि	दृशः	९.	(उनकी) आँखें
द्वारका	१.	द्वारका के	श्रियः धाम	३.	लक्ष्मी को
ओकसाम् ।	२.	निवासी	अङ्गम्	४.	(अपने शरीर में) बसाने वाले
न एव	११.	नहीं	अच्युतम् ॥	५.	(लक्ष्मीनारायण) भगवान् श्री कृष्ण का

श्लोकार्थ—द्वारका के निवासी लक्ष्मी को अपने शरीर में बसाने वाले लक्ष्मी नारायण भगवान् श्री कृष्ण का यद्यपि सदा दर्शन करते हैं; फिर भी उनकी आँखें कभी भी तृप्त नहीं होती हैं ।

षड्विंशः श्लोकः

श्रियो निवासो यस्योरः पानपात्रं मुखं दृशाम् ।
बाहवो लोकपालानां सारङ्गाणां पदाम्बुजम् ॥२६॥

पदच्छेद—

श्रियः निवासः यस्य उरः, पान पात्रम् मुखम् दृशाम् ।
बाहवः लोक पालानाम्, सारङ्गाणाम् पद अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

श्रियः	२.	लक्ष्मी का	दृशाम् ।	६.	आँखों का
निवासः	३.	निवास स्थान (है)	बाहवः	८.	भुजायें
यस्य उरः	१.	जिस भगवान् का वक्षःस्थल	लोकपालानाम्	९.	लोक पालों का (निवास स्थान है)
पान	४.	(सौन्दर्य रस) पीने के लिए	सारङ्गाणाम्	१२.	भक्तजनों का (घर है)
पात्रम्	७.	प्याला है	पद	१०.	(और) चरण
मुखम्	५.	मुख मण्डल	अम्बुजम् ॥	११.	कमल

श्लोकार्थ—जिस भगवान् का वक्षःस्थल लक्ष्मी का निवास स्थान है, सौन्दर्य रस पीने के लिए मुख-मण्डल आँखों का प्याला है, भुजायें लोक पालों का निवास स्थान है और चरण कमल भक्त जनों का घर है ।

सप्तविंशः श्लोकः

सितातपत्रव्यजनैरुपस्कृतः, प्रसूनवर्षैरभिवर्षितः पथि ।
पिशङ्गवासा वनमालया बभौ, घनो यथार्कोडुपचापवैद्युतैः ॥२७॥

पदच्छेद—

सित आतपत्र व्यजनैः उपस्कृतः, प्रसून वर्षैः अभिवर्षितः पथि ।
पिशङ्ग वासा वन मालाया बभौ, घनः यथा अर्क उडुप चाप वैद्युतैः ॥

शब्दार्थ—

सित	१. (उस समय) सफेद	**पिशङ्ग वासा**	८. पीताम्बर धारी (भगवान् श्रीकृष्ण)
आतपत्र	२. छत्र (और)	**वन मालया**	९. वन माला से
व्यजनैः	३. चंवरों से	**बभौ,**	१०. शोभा पा रहे थे
उपस्कृतः,	४. विभूषित (तथा)	**घनः**	१२. मेघ
प्रसून वर्षैः	६. पुष्पों की वर्षा से	**यथा**	११. जैसे
अभिवर्षितः	७. घिरे हुये	**अर्क उडुप**	१३. सूर्य चन्द्रमा (और)
पथि ।	५. मार्ग में	**चाप वैद्युतैः ॥**	१४. इन्द्र धनुष से शोभा पाता है

श्लोकार्थ—उस समय सफेद छत्र और चंवरों से विभूषित तथा मार्ग में पुष्पों की वर्षा से घिरे हुये, पीताम्बर धारी श्रीकृष्ण वनमाला से शोभा पा रहे थे। जैसे मेघ सूर्य, चन्द्रमा और इन्द्र धनुष से शोभा पाता है।

अष्टाविंशः श्लोकः

प्रविष्टस्तु गृहं पित्रोः परिष्वक्तः स्वमातृभिः ।
ववन्दे शिरसा सप्त देवकीप्रमुखा मुदा ॥२८॥

पदच्छेद—

प्रविष्टः तु गृहम् पित्रोः, परिष्वक्तः स्व मातृभिः ।
ववन्दे शिरसा सप्त, देवकी प्रमुखाः मुदा ॥

शब्दार्थ—

प्रविष्टः	४. प्रवेश करके	**ववन्दे**	१२. प्रणाम किया
तु	१. तदनन्तर (भगवान् श्री कृष्ण ने)	**शिरसा**	१०. सिर झुकाकर
गृहम्	३. घर में	**सप्त**	९. सातों माताओं को
पित्रोः	२. माता-पिता के	**देवकी**	७. देवकी इत्यादि
परिष्वक्तः	६. आलिंगन को प्राप्त किया (तथा)	**प्रमुखाः**	८. प्रधान
स्व मातृभिः ।	५. अपनी माताओं के द्वारा	**मुदा ॥**	११. प्रसन्नतापूर्वक

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्री कृष्ण ने माता-पिता के घर में प्रवेश करके अपनी माताओं के द्वारा आलिंगन को प्राप्त किया तथा देवकी इत्यादि प्रधान सातों माताओं को सिर झुकाकर प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम किया।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

ताः पुत्रमङ्कमारोप्य स्नेहस्नुतपयोधराः ।
हर्षविह्वलितात्मानः सिषिचुर्नेत्रजैर्जलैः ॥२९॥

पदच्छेद—

ताः पुत्रम् अङ्कम् आरोप्य, स्नेह स्नुत पयोधराः ।
हर्ष विह्वलित आत्मानः, सिषिचुः नेत्रजैः जलैः ॥

शब्दार्थ—

ताः	७.	उन माताओं ने	हर्ष	१.	प्रसन्नता से
पुत्रम्	८.	पुत्र श्रीकृष्ण को	विह्वलित	२.	उत्कंठित
अङ्कम्	९.	गोद में	आत्मानः	३.	मनवाली (और)
आरोप्य	१०.	बैठाकर	सिषिचुः	१३.	(उन्हें) सींचा
स्नेह	४.	वात्सल्य प्रेम के कारण	नेत्रजैः	११.	आँखों से निकलते हुये
स्नुत	६.	दूध बहाती हुई	जलैः ॥	१२.	(आँसुओं के) जल से
पयोधराः ।	५.	स्तनों से			

श्लोकार्थ—उस समय प्रसन्नता से उत्कंठित मनवाली और वात्सल्य प्रेम के कारण स्तनों से दूध बहाती हुई उन माताओं ने पुत्र श्रीकृष्ण को गोद में बैठाकर आँखों से निकलते हुये आँसुओं के जल से उन्हें सींचा ।

त्रिंशः श्लोकः

अथाविशत् स्वभवनं सर्वकाममनुत्तमम् ।
प्रासादा यत्र पत्नीनां सहस्राणि च षोडश ॥३०॥

पदच्छेद—

अथ आविशत् स्व भवनम् , सर्व कामम् अनुत्तमम् ।
प्रासादाः यत्र पत्नीनाम् , सहस्राणि च षोडश ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर (भगवान् श्रीकृष्ण ने)	प्रासादाः	१२.	महल (थे)
आविशत्	७.	प्रवेश किया	यत्र	८.	जहाँ पर
स्व	५.	अपने	पत्नीनाम्	९.	(उनकी) पत्नियों के
भवनम्	६.	भवन में	सहस्राणि	११.	हजार
सर्व कामम्	२.	सभी कामनाओं से परिपूर्ण	च	३.	और
अनुत्तमम् ।	४.	अनुपम	षोडश ॥	१०.	सोलह

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण ने सभी कामनाओं से परिपूर्ण और अनुपम अपने भवन में प्रवेश किया, जहाँ पर उनकी पत्नियों के सोलह हजार महल थे ।

एकत्रिंशः श्लोकः

पत्न्यः पतिं प्रोष्य गृहानुपागतं, विलोक्य संजातमनोमहोत्सवाः ।
उत्तस्थुरारात् सहसाऽऽसनाशयात्, साकं व्रतैर्व्रीडितलोचनाननाः ॥३१॥

पदच्छेद—**पत्न्यः पतिम् प्रोष्य गृहान् उपागतम्, विलोक्य संजात मनः महोत्सवाः ।**
उत्तस्थुः आरात् सहसा आसन आशयात्, साकम् व्रतैः व्रीडित लोचन आननाः ॥

शब्दार्थ—

पत्न्यः	८. रानियाँ	**उत्तस्थुः**	१६. खड़ी हो गईं
पतिम्	१. पति (भगवान् श्रीकृष्ण) को	**आरात्**	१५. समीप में
प्रोष्य	२. परदेश से	**सहसा**	१३. अकस्मात्
गृहान्	३. घर में	**आसन, आशयात्,**	१४. आसन को, छोड़कर
उपागतम्,	४. आया हुआ	**साकम्**	१२. साथ
विलोक्य	५. देखकर	**व्रतैः**	११. (प्रवास) व्रत के
संजात	१०. मनाती हुईं	**व्रीडित**	६. लज्जित
मनः, महोत्सवाः ।	९. मनसे, महान् आनन्दोत्सव	**लोचन, आननाः ॥**	७. नेत्र (और), मुखों वाली

श्लोकार्थ—पति भगवान् श्रीकृष्ण को परदेश से घर में आया हुआ देखकर लज्जित नेत्र और मुखों वाली रानियाँ मन से महान् आनन्दोत्सव मनाती हुईं प्रवास व्रत के साथ अकस्मात् आसन को छोड़कर समीप में खड़ी हो गईं ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

तमात्मजैर्दृष्टिभिरन्तरात्मना, दुरन्तभावाः परिरेभिरे पतिम् ।
निरुद्धमप्यास्रवदम्बुनेत्रयो-र्विलज्जतीनां भृगुवर्य वैक्लवात् ॥३२॥

पदच्छेद—**तम् आत्मजैः दृष्टिभिः अन्तर् आत्मना, दुरन्त भावाः परिरेभिरे पतिम् ।**
निरुद्धम् अपि आस्रवत् अम्बु नेत्रयोः, विलज्जतीनाम् भृगुवर्य वैक्लवात् ॥

शब्दार्थ—

तम्	५. उन	**निरुद्धम् अपि**	१३. रोके जाने पर
आत्मजैः	२. (अपने) पुत्रों के साथ	**आस्रवत्**	१४. ढुलक पड़े थे
दृष्टिभिः	३. नेत्रों से (और)	**अम्बु**	१२. आँसू
अन्तर् आत्मना,	४. अन्तर्मन से	**नेत्रयोः,**	११. आँखों के
दुरन्त भावाः	१. गम्भीर भावों वाली (रानियों) ने	**विलज्जतीनाम्**	१०. लजाती हुई (रानियों) के
परिरेभिरे	७. आलिंगन किया	**भृगुवर्य**	८. हे भृगुवंशी शौनकजी! (उस समय)
पतिम् ।	६. पति (भगवान् श्रीकृष्ण) का	**वैक्लवात् ॥**	९. विवशता के कारण

श्लोकार्थ—गम्भीर भावों वाली रानियों ने अपने पुत्रों के साथ नेत्रों से और अन्तर्मन से उन पति भगवान् श्रीकृष्ण का आलिंगन किया । हे भृगुवंशी शौनकजी ! उस समय विवशता के कारण लजाती हुई रानियों के आँखों से आँसू रोके जाने पर ढुलक पड़े थे ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यद्यप्यसौ पार्श्वगतो रहोगतः, तथापि तस्याङ्घ्रियुगं नवं नवम् ।
पदे पदे का विरमेत तत्पदात्, चलापि यच्छ्रीर्न जहाति कर्हिचित् ॥३३॥

पदच्छेद—यद्यपि असौ पार्श्व गतः रहो गतः, तथापि तस्य अङ्घ्रि युगम् नवम् नवम् ।
पदे पदे का विरमेत तत् पदात्, चला अपि यत् श्रीः न जहाति कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

यद्यपि, असौ	१. यद्यपि, वे (भगवान् श्रीकृष्ण)	विरमेत	१०. अलग होना चाहेगी ?
पार्श्व गतः	३. बगल में रहते हैं	तत् पदात्,	९. उनके चरणों से
रहो गतः,	२. एकान्त में (उनके)	चला अपि	१२. चंचल होने पर भी
तथापि, तस्य	४. फिर भी, उन (भगवान्) के	यत्	११. क्योंकि
अङ्घ्रि युगम्	५. चरण युगल	श्रीः	१३. लक्ष्मी जी
नवम् नवम् ।	७. नये-नये (प्रतीत होते हैं अतः)	न	१५. नहीं
पदे पदे	६. पग-पग पर	जहाति	१६. छोड़ती हैं
का	८. कौन (स्त्री)	कर्हिचित् ॥	१४. (उन्हें) कभी

श्लोकार्थ—यद्यपि वे भगवान् श्रीकृष्ण एकान्त में उनके बगल में रहते हैं; फिर भी उन भगवान् के चरण युगल पग पग पर नये-नये प्रतीत होते हैं। अतः कौन स्त्री उनके चरणों से अलग होना चाहेगी ? क्योंकि चंचल होने पर भी लक्ष्मी जी उन्हें कभी नहीं छोड़ती हैं।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

एवं नृपाणां क्षितिभारजन्मनाम्, अक्षौहिणीभिः परिवृत्ततेजसाम् ।
विधाय वैरं श्वसनो यथानलम्, मिथो वधेनोपरतो निरायुधः ॥३४॥

पदच्छेद— एवम् नृपाणाम् क्षिति भार जन्मनाम्, अक्षौहिणीभिः परिवृत्त तेजसाम् ।
विधाय वैरम् श्वसनः यथा अनलम्, मिथः वधेन उपरतः निरायुधः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	वैरम्	८. शत्रुता
नृपाणाम्	७. राजाओं में	श्वसनः	१६. वायु (स्वयं शान्त हो जाता है)
क्षिति भार	२. पृथ्वी के भार रूप में	यथा	१४. जैसे
जन्मनाम्,	३. जन्म लेने वाले (तथा)	अनलम्,	१५. अग्नि को (उत्पन्न करके)
अक्षौहिणीभिः	४. चतुरंगिणी सेनाओं से	मिथः	११. परस्पर एक दूसरे के
परिवृत्त	५. बढ़े हुये	वधेन	१२. वध के उपरांत
तेजसाम् ।	६. पराक्रम वाले	उपरतः	१३. शान्त हो गये
विधाय	९. उत्पन्न करके (तथा स्वयं)	निरायुधः ॥	१०. अस्त्र से रहित (भगवान् श्रीकृष्ण भी)

श्लोकार्थ—इस प्रकार पृथ्वी के भार रूप में जन्म लेने वाले तथा चतुरंगिणी सेनाओं से बढ़े हुये पराक्रम वाले राजाओं में शत्रुता उत्पन्न करके तथा स्वयं अस्त्र से रहित भगवान् श्रीकृष्ण भी परस्पर एक दूसरे के वध के उपरान्त शान्त हो गये। जैसे अग्नि को उत्पन्न करके वायु स्वयं शान्त हो जाता है।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

स एष नरलोकेऽस्मिन्नवतीर्णः स्वमायया ।
रेमे स्त्रीरत्नकूटस्थो भगवान् प्राकृतो यथा ॥३५॥

पदच्छेद— सः एषः नर लोके अस्मिन् , अवतीर्णः स्व मायया ।
रेमे स्त्री रत्न कूटस्थः, भगवान् प्राकृतः यथा ॥

शब्दार्थ—

सः एषः	५.	उन्हीं	**स्त्री**	८.	स्त्रियों के
नर लोके	२.	मृत्युलोक में	**रत्न**	७.	सर्वश्रेष्ठ
अस्मिन्	१.	इस	**कूटस्थः**	९.	समूह में स्थित रहकर
अवतीर्णः	४.	अवतार लेकर	**भगवान्**	६.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
स्व माययाः ।	३.	अपनी माया से	**प्राकृतः**	१०	साधारण मानव की
रेमे	१२.	विहार किया था	**यथा ॥**	११.	भाँति

श्लोकार्थ—इस मृत्युलोक में अपनी माया से अवतार लेकर उन्हीं भगवान् श्रीकृष्ण ने सर्वश्रेष्ठ स्त्रियों के समूह में स्थित रहकर साधारण मानव की भाँति विहार किया था ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

उद्दामभावपिशुनामलवल्गुहास–व्रीडावलोकनिहतो मदनोऽपि यासाम् ।
सम्मुह्य चापमजहात्प्रमदोत्तमास्ता, यस्येन्द्रियं विमथितुं कुहकैर्न शेकुः ॥३६॥

पदच्छेद—उद्दाम भाव पिशुन अमल वल्गु हास, व्रीडा अवलोक निहतः मदनः अपि यासाम् ।
सम्मुह्य चापम् अजहात् प्रमदा उत्तमाः ताः, यस्य इन्द्रियम् विमथितुम् कुहकैः न शेकुः ॥

शब्दार्थ—

उद्दाम	२.	उन्मत्त	**चापम्**	१०.	धनुष धारण करना
भाव पिशुन	३.	हाव-भाव की सूचक	**अजहात्**	११.	छोड़ दिया था
अमल	४.	निर्मल (और)	**प्रमदा**	१४.	स्त्रियाँ
वल्गु हास,	५.	सुन्दर हंसी (तथा)	**उत्तमाः**	१३.	उत्तम
व्रीडा अवलोक	६.	लज्जा भरी चितवन से	**ताः,**	१२.	वे
निहतः	७.	घायल	**यस्य इन्द्रियम्**	१६.	भगवान् श्रीकृष्ण के मन को
मदनः अपि	८.	कामदेव ने भी	**विमथितुम्**	१७.	विचलित करने में
यासाम् ।	१.	जिन (रानियों) के	**कुहकैः**	१५.	अपने इन्द्र जाल से
सम्मुह्य	९.	मोहित होकर	**न शेकुः ॥**	१८.	नहीं समर्थ हो सकी थीं

श्लोकार्थ—जिन रानियों के उन्मत्त हाव-भाव की सूचक निर्मल और सुन्दर हंसी तथा लज्जा भरी चितवन से घायल कामदेव ने भी मोहित होकर धनुष धारण करना छोड़ दिया था, वे उत्तम स्त्रियाँ अपने इन्द्रजाल से भगवान् श्रीकृष्ण के मन को विचलित करने में समर्थ नहीं हो सकी थीं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तमयं मन्यते लोको ह्यसङ्गमपि सङ्गिनम् ।
आत्मौपम्येन मनुजं व्यापृण्वानं यतोऽबुधः ॥३७॥

पदच्छेद— **तम् अयम् मन्यते लोकः, हि असङ्गम् अपि सङ्गिनम् ।**
आत्म औपम्येन मनुजम्, व्यापृण्वानम् यतः अबुधः ॥

शब्दार्थ—

तम्	७.	उन (भगवान् श्री कृष्ण) की	**सङ्गिनम् ।**	८.	आसक्ति से युक्त (तथा)
अयम्	१.	यह	**आत्म**	३.	अपनी आत्मा के
मन्यते	१२.	मानता है	**औपम्येन**	४.	समान
लोकः	२.	संसार	**मनुजम्**	१०.	मनुष्य
हि	११.	ही	**व्यापृण्वानम्**	९.	व्यवहार करने वाला
असंगम्	५.	आसक्ति से रहित होने पर	**यतः**	१३.	क्योंकि (यह संसार)
अपि	६.	भी	**अबुधः ॥**	१४.	अज्ञानी (है)

श्लोकार्थ—यह संसार अपनी आत्मा के समान आसक्ति से रहित होने पर भी उन भगवान् श्री कृष्ण को आसक्ति से युक्त तथा व्यवहार करने वाला मनुष्य ही मानता है; क्योंकि यह संसार अज्ञानी है।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदाऽऽत्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

पदच्छेद— **एतद् ईशनम् ईशस्य, प्रकृतिस्थः अपि तद् गुणैः ।**
न युज्यते सदा आत्मस्थैः, यथा बुद्धिः तद् आश्रया ॥

शब्दार्थ—

एतद्	१३.	यही	**न**	९.	नहीं
ईशनम्	१५.	प्रभुता (है)	**युज्यते**	१०.	लिप्त होती है (वैसे ही)
ईशस्य	१४.	प्रभु की	**सदा**	५.	नित्य
प्रकृतिस्थः	११.	माया में स्थित होकर	**आत्मस्थैः**	६.	आत्मा में स्थित
अपि	१२.	भी (परमात्मा लिप्त नहीं होता है)	**यथा**	१.	जैसे
तद्	७.	उसके	**बुद्धिः**	४.	बुद्धि
गुणैः ।	८.	गुणों में	**तद्**	२.	भगवान् के
			आश्रया ॥	३.	आश्रय में रहने वाली

श्लोकार्थ—जैसे भगवान् के आश्रय में रहने वाली बुद्धि नित्य आत्मा में स्थित उसके गुणों में लिप्त नहीं होती है, वैसे ही माया में स्थित होकर भी परमात्मा लिप्त नहीं होता है। यही प्रभु की प्रभुता है।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तं मेनिरेऽबला मूढाः स्त्रैणं चानुव्रतं रहः ।
अप्रमाणविदो भर्तुरीश्वरं मतयो यथा ॥३९॥

पदच्छेद—

तम् मेनिरे अबलाः मूढाः, स्त्रैणम् च अनुव्रतम् रहः ।
अप्रमाण विदः भर्तुः, ईश्वरम् मतयः यथा ॥

शब्दार्थ—

तम्	१०.	भगवान् श्रीकृष्ण को	**रहः ।**	१३.	एकान्त में (अपना सेवक)
मेनिरे	१४.	मानती थीं	**अप्रमाण**	६.	ऐश्वर्य को न
अबलाः	९.	रानियाँ	**विदः**	७.	जानने वाली
मूढाः	८.	अज्ञानी	**भर्तुः**	५.	स्वामी के
स्त्रैणम्	११.	स्त्री परायण	**ईश्वरम्**	३.	ईश्वर को
च	१२.	और	**मतयः**	२.	अहंकार बुद्धियाँ
अनुव्रतम्	४.	सेवक (मानती हैं वैसे ही)	**यथा ॥**	१.	जैसे

श्लोकार्थ—जैसे अहंकार बुद्धियाँ ईश्वर को सेवक मानती हैं, वैसे ही स्वामी के ऐश्वर्य को न जानने वाली अज्ञानी रानियाँ भगवान् श्री कृष्ण को स्त्री-परायण और एकान्त में अपना सेवक मानती थीं ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
नैमिषीयोपाख्याने श्रीकृष्णद्वारकाप्रवेशो नाम एकादशः अध्यायः ॥११॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ द्वादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

शौनक उवाच— अश्वत्थाम्नोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोरुतेजसा ।
उत्तराया हतो गर्भ ईशेनाजीवितः पुनः ॥१॥

पदच्छेद—

अश्वत्थाम्ना उपसृष्टेन, ब्रह्म शीर्ष्णा उरु तेजसा ।
उत्तरायाः हतः गर्भः, ईशेन आजीवितः पुनः ॥

शब्दार्थ—

अश्वत्थाम्ना	२.	अश्वत्थामा के द्वारा	हतः	६.	नष्ट हुये
उप सृष्टेन	३.	छोड़े गये	गर्भः	८.	गर्भ को
ब्रह्मशीर्ष्णा	५.	ब्रह्मास्त्र से	ईशेन	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
उरु तेजसा ।	४.	अत्यन्त तेजस्वी	आजीवितः	१०.	जीवित कर दिया था
उत्तरायाः	७.	उत्तरा के	पुनः ॥	९.	फिर से

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा के द्वारा छोड़े गये अत्यन्त तेजस्वी ब्रह्मास्त्र से नष्ट हुये उत्तरा के गर्भ को फिर से जीवित कर दिया था ।

द्वितीयः श्लोकः

तस्य जन्म महाबुद्धेः कर्माणि च महात्मनः ।
निधनं च यथैवासीत्स प्रेत्य गतवान् यथा ॥२॥

पदच्छेद—

तस्य जन्म महाबुद्धेः, कर्माणि च महात्मनः ।
निधनम् च यथा एव आसीत्, सः प्रेत्य गतवान् यथा ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उस	यथा	४.	जिस प्रकार से
जन्म	५.	जन्म	एव	१५.	(उसे हम) अवश्य सुनना चाहते हैं
महाबुद्धेः	२.	महाज्ञानी	आसीत्	९.	हुआ
कर्माणि	६.	कर्म	सः	११.	वे
च	७.	और	प्रेत्य	१२.	मरने के बाद
महात्मनः ।	३.	महात्मा परीक्षित् का	गतवान्	१४.	गति को प्राप्त हुये
निधनम्	८.	मरण	यथा ॥	१३.	जिस
च	१०.	तथा			

श्लोकार्थ—उस महाज्ञानी महात्मा परीक्षित् का जिस प्रकार से जन्म, कर्म और मरण हुआ तथा वे मरने के के बाद जिस गति से प्राप्त हुये; उसे हम अवश्य सुनना चाहते हैं ।

तृतीयः श्लोकः

तदिदं श्रोतुमिच्छामो गदितुं यदि मन्यसे ।
ब्रूहि नः श्रद्दधानानां यस्य ज्ञानमदाच्छुकः ॥३॥

पदच्छेद—

तत् इदम् श्रोतुम् इच्छामः, गदितुम् यदि मन्यसे ।
ब्रूहि नः श्रद्दधानानाम्, यस्य ज्ञानम् अदात् शुकः ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	प्रसिद्ध कथा को	**ब्रूहि**	१०.	कहें
इदम्	१.	इस	**नः**	९.	हम लोगों से
श्रोतुम्	३.	(हम) सुनना	**श्रद्दधानानाम्**	८.	श्रद्धा रखने वाले
इच्छामः	४.	चाहते हैं	**यस्य**	११.	जिन्हें
गदितुम्	६.	कहना	**ज्ञानम्**	१३.	(भागवत) ज्ञान का उपदेश
यदि	५.	यदि (आप)	**अदात्**	१४.	किया था
मन्यसे ।	७.	उचित समझते हैं (तो)	**शुकः ॥**	१२.	शुकदेव मुनि ने

श्लोकार्थ—इस प्रसिद्ध कथा को हम सुनना चाहते हैं। यदि आप कहना उचित समझते हैं तो श्रद्धा रखने वाले हम लोगों मे कहें, जिन्हें शुकदेव मुनि ने भागवत ज्ञान का उपदेश दिया था।

चतुर्थः श्लोकः

सूत उवाच—

अपीपलद्धर्मराजः पितृवद् रञ्जयन् प्रजाः ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः कृष्णपादाब्जसेवया ॥४॥

पदच्छेद—

अपीपलत् धर्मराजः, पितृवत् रञ्जयन् प्रजाः ।
निःस्पृहः सर्वं कामेभ्यः, कृष्ण पाद अब्ज सेवया ॥

शब्दार्थ—

अपीपलत्	१०.	(उसका) पालन किया था	**निःस्पृहः**	५.	इच्छा से रहित
धर्मराजः	६.	धर्मराज युधिष्ठिर ने	**सर्वं कामेभ्यः**	४.	सभी कामनाओं की
पितृवत्	७.	पिता के समान	**कृष्ण**	१.	श्रीकृष्ण के
रञ्जयन्	९.	प्रसन्न करते हुये	**पाद अब्ज**	२.	चरण कमलों की
प्रजाः ।	८.	जनता को	**सेवया ॥**	३.	सेवा के कारण

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के चरण कमलों की सेवा के कारण सभी कामनाओं की इच्छा से रहित धर्मराज युधिष्ठिर ने पिता के समान जनता को प्रसन्न करते हुये उसका पालन किया था।

पञ्चमः श्लोकः

सम्पदः क्रतवो लोका महिषी भ्रातरो मही ।
जम्बूद्वीपाधिपत्यं च यशश्च त्रिदिवं गतम् ॥५॥

पदच्छेद—

सम्पदः क्रतवः लोकाः, महिषी भ्रातरः मही ।
जम्बूद्वीप आधिपत्यम् च, यशः च त्रिदिवम् गतम् ॥

शब्दार्थ—

सम्पदः	१.	अतुल धन	जम्बूद्वीप	८.	भारतवर्ष पर
क्रतवः	२.	बड़े-बड़े यज्ञ (एवम्)	आधिपत्यम्	९.	अधिकार था
लोकाः	३.	उत्तम प्रजा को (प्राप्त किया था)	च यशः	१०.	और कीर्ति
महिषी	४.	पटरानी	च	६.	तथा
भ्रातरः	५.	भाई	त्रिदिवम्	११.	स्वर्गलोक तक
मही ।	७.	पृथ्वी (सब उनके अनुकूल थे)	गतम् ॥	१२.	फैली हुई थी

श्लोकार्थ—उन्होंने अतुल धन, बड़े-बड़े यज्ञ एवं उत्तम प्रजा को प्राप्त किया था । पटरानी, भाई तथा पृथ्वी सब उनके अनुकूल थे । भारतवर्ष पर अधिकार था और कीर्ति स्वर्गलोक तक फैली हुई थी ।

षष्ठः श्लोकः

किं ते कामाः सुरस्पार्हा मुकुन्दमनसो द्विजाः ।
अधिजह्रुर्मुदं राज्ञः क्षुधितस्य यथेतरे ॥६॥

पदच्छेद—

किम् ते कामाः सुर स्पार्हाः, मुकुन्द मनसः द्विजाः ।
अधिजह्रुः मुदम् राज्ञः, क्षुधितस्य यथा इतरे ॥

शब्दार्थ—

किम्	३.	क्या	द्विजाः ।	७.	हे शौनकादि ऋषियों !
ते	१३.	वे (विषय)	अधिजह्रुः	६.	दे सकती है (अर्थात् नहीं, उसी प्रकार)
कामाः	१४.	भोग (सुख नहीं देते थे)	मुदम्	५.	सुख
सुर	११.	देवताओं को भी	राज्ञः	१०.	राजा युधिष्ठिर को
स्पार्हाः	१२.	लुभाने वाले	क्षुधितस्य	२.	भूखे मनुष्य को
मुकुन्द	८.	भगवान् श्रीकृष्ण में	यथा	१.	जैसे
मनसः	९.	मन को रमाये हुए	इतरे ॥	४.	(भोजन के अतिरिक्त) दूसरी (वस्तु)

श्लोकार्थ—जैसे भूखे मनुष्य को क्या भोजन के अतिरिक्त दूसरी वस्तु सुख दे सकती है ? अर्थात् नहीं । उसी प्रकार हे शौनकादि ऋषियों ! भगवान् श्रीकृष्ण में मन को रमाये हुए राजा युधिष्ठिर को देवताओं को भी लुभाने वाले वे विषय-भोग सुख नहीं देते थे ।

सप्तमः श्लोकः

मातुर्गर्भगतो वीरः स तदा भृगुनन्दन ।
ददर्श पुरुषं कञ्चिद्दह्यमानोऽस्त्रतेजसा ॥७॥

पदच्छेद—

मातुः गर्भ गतः वीरः, सः तदा भृगुनन्दन ।
ददर्श पुरुषम् कञ्चित्, दह्यमानः अस्त्र तेजसा ॥

शब्दार्थ—

मातुः	२.	माता के	**ददर्श**	१२.	देखा
गर्भ गतः	३.	गर्भ में विद्यमान (एवं)	**पुरुषम्**	११.	पुरुष को
वीरः	८.	बलशाली (शिशु ने)	**कञ्चित्**	१०.	किसी
सः	७.	उस	**दह्यमानः**	६.	जलते हुए
तदा	९.	उस समय	**अस्त्र**	४.	ब्रह्मास्त्र के
भृगुनन्दन ।	१.	हे शौनक जी !	**तेजसा ॥**	५.	तेज से

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! माता के गर्भ में विद्यमान एवं ब्रह्मास्त्र के तेज से जलते हुए उस बलशाली शिशु ने उस समय किसी पुरुष को देखा ।

अष्टमः श्लोकः

अङ्गुष्ठमात्रममलं स्फुरत्पुरटमौलिनम् ।
अपीच्यदर्शनं श्यामं तडिद्वाससमच्युतम् ॥८॥

पदच्छेद—

अङ्गुष्ठ मात्रम् अमलम्, स्फुरत् पुरट मौलिनम् ।
अपीच्य दर्शनम् श्यामम्, तडित् वाससम् अच्युतम् ॥

शब्दार्थ—

अङ्गुष्ठ मात्रम्	१.	(उसने) अंगूठे के बराबर	**दर्शनम्**	७.	रूप से युक्त
अमलम्	२.	निर्मल	**श्यामम्**	८.	सांवले (तथा)
स्फुरत्	३.	चमकते हुये	**तडित्**	९.	बिजली के समान (पीले)
पुरट	४.	सुवर्ण के	**वाससम्**	१०.	पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए
मौलिनम् ।	५.	मुकुट वाले	**अच्युतम् ॥**	११.	भगवान् श्रीकृष्ण को (देखा)
अपीच्य	६.	मनोहर			

श्लोकार्थ—उसने अंगूठे के बराबर, निर्मल, चमकते हुए सुवर्ण के मुकुट वाले, मनोहर रूप से युक्त, सांवले तथा बिजली के समान पीले पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्ण को देखा ।

नवमः श्लोकः

श्रीमद्दीर्घचतुर्बाहुं तप्तकाञ्चनकुण्डलम् ।
क्षतजाक्षं गदापाणिमात्मनः सर्वतोदिशम् ॥
परिभ्रमन्तमुल्काभां भ्रामयन्तं गदां मुहुः ॥९॥

पदच्छेद— **श्रीमद् दीर्घ चतुर् बाहुम्, तप्त काञ्चन कुण्डलम् ।**
क्षतज अक्षम् गदा पाणिम्, आत्मनः सर्वतः दिशम् ॥
परिभ्रमन्तम् उल्का आभाम्, भ्रामयन्तम् गदाम् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

श्रीमद्, दीर्घ	१. (उसशिशुने) सुन्दर (और) लम्बी	आत्मनः	६. अपने
चतुर् बाहुम्	२. चार भुजाओं से युक्त	सर्वतः, दिशम् ।	७. चारों, ओर
तप्त काञ्चन	३. तपाये हुये सुवर्ण के	परिभ्रमन्तम्	८. (स्वयं) घूमते हुये (और)
कुण्डलम् ।	४. कुण्डल पहने	उल्का, आभाम्	९. लूका के, प्रकाश के समान
क्षतज, अक्षम्	५. लाल, नेत्रों वाले (तथा)	भ्रामयन्तम्	११. घुमाते हुये
गदा पाणिम्	१२. गदाधर (भगवान् श्री कृष्ण को देखा)	गदाम्, मुहुः ॥	१०. गदा को, बार-बार

श्लोकार्थ—उस शिशु ने सुन्दर और लम्बी चार भुजाओं से युक्त, तपाये हुये सुवर्ण के कुण्डल पहने, लाल नेत्रों वाले तथा अपने चारों ओर स्वयम् घूमते हुये और लूका के प्रकाश के समान गदा को बार-बार घुमाते हुये गदाधर भगवान् श्री कृष्ण को देखा।

दशमः श्लोकः

अस्त्रतेजः स्वगदया नीहारमिव गोपतिः ।
विधमन्तं संनिकर्षे पर्यैक्षत क इत्यसौ ॥१०॥

पदच्छेद— **अस्त्र तेजः स्व गदया, नीहारम् इव गोपतिः ।**
विधमन्तम् संनिकर्षे, पर्यैक्षत कः इति असौ ॥

शब्दार्थ—

अस्त्र तेजः	४. ब्रह्मास्त्र के तेज को	विधमन्तम्	६. शान्त करते हुये उस पुरुष को
स्व गदया	५. अपनी गदा से	संनिकर्षे	७. समीप में
नीहारम्	१. (उस शिशु ने) कोहरे को	पर्यैक्षत	८. देखा
इव	३. समान	कः	१०. कौन है
गोपतिः ।	२. सूर्य के	इति, असौ ॥	९. और सोचा कि, यह

श्लोकार्थ—उस शिशु ने कोहरे को सूर्य के समान ब्रह्मास्त्र के तेज को अपनी गदा से शान्त करते हुये उस पुरुष को समीप में देखा और सोचा कि यह कौन है ?

एकादशः श्लोकः

विधूय तदमेयात्मा भगवान् धर्मगुब् विभुः ।
मिषतो दशमासस्य तत्रैवान्तर्दधे हरिः ॥११॥

पदच्छेद—

विधूय तद् अमेय आत्मा, भगवान् धर्म गुप् विभुः ।
मिषतः दश मासस्य, तत्र एव अन्तर्दधे हरिः ॥

शब्दार्थ—

विधूय	८.	नष्ट करके	**विभुः ।**	३.	व्यापक (तथा)
तद्	७.	उस (ब्रह्मास्त्र के तेज) को	**मिषतः**	११.	देखते-देखते
अमेय	१.	अतुलित	**दश**	९.	दस
आत्मा	२.	सामर्थ्यवान्	**मासस्य**	१०.	महीने के (शिशु परीक्षित्) के
भगवान्	५.	भगवान्	**तत्र, एव**	१२.	वहीं पर
धर्म गुप्	४.	धर्म के रक्षक	**अन्तर्दधे**	१३.	अन्तर्धान हो गये
			हरिः ॥	६.	श्री कृष्ण

श्लोकार्थ—अतुलित सामर्थ्यवान, व्यापक तथा धर्म के रक्षक भगवान् श्रीकृष्ण उस ब्रह्मास्त्र के तेज को नष्ट करके दस महीने के शिशु परीक्षित् के देखते-देखते वहीं पर अन्तर्धान हो गये ।

द्वादशः श्लोकः

ततः सर्वगुणोदर्के सानुकूलग्रहोदये ।
जज्ञे वंशधरः पाण्डोर्भूयः पाण्डुरिवौजसा ॥१२॥

पदच्छेद—

ततः सर्व गुण उदर्के, सानुकूल ग्रह उदये ।
जज्ञे वंश धरः पाण्डोः, भूयः पाण्डुः इव ओजसा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	**वंश**	१२.	वंश को
सर्व गुण	२.	सभी प्रकार के गुणों को	**धरः**	१३.	चलाने वाला (शिशु परीक्षित्)
उदर्के	३.	विकसित करने वाले	**पाण्डोः**	११.	राजा पाण्डु के
सानुकूल	४.	अनुकूल	**भूयः**	८.	पुनः
ग्रह	५.	ग्रहों का	**पाण्डुः**	९.	पाण्डु के ही
उदये ।	६.	उदय हो जाने पर	**इव**	१०.	समान
जज्ञे	१४.	उत्पन्न हुआ	**ओजसा ॥**	७.	तेज में

श्लोकार्थ—तदनन्तर सभी प्रकार के गुणों को विकसित करने वाले अनुकूल ग्रहों का उदय हो जाने पर तेज में पुनः पाण्डु के ही समान राजा पाण्डु के वंश को चलाने वाला शिशु परीक्षित् उत्पन्न हुआ ।

त्रयोदशः श्लोकः

तस्य प्रीतमना राजा विप्रैर्धौम्यकृपादिभिः ।
जातकं कारयामास वाचयित्वा च मङ्गलम् ॥१३॥

पदच्छेद—

तस्य प्रीत मनाः राजा, विप्रैः धौम्य कृप आदिभिः ।
जातकम् कारयामास, वाचयित्वा च मङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१०.	उस (बालक परीक्षित्) का	आदिभिः ।	६.	इत्यादि
प्रीत मनाः	३.	प्रसन्न मन से	जातकम्	११.	जातकर्म संस्कार
राजा	२.	राजा युधिष्ठिर ने	कारयामास	१२.	सम्पन्न कराया
विप्रैः	७.	ब्राह्मणों के द्वारा	वाचयित्वा	९.	पाठ कराकर
धौम्य	४.	धौम्य ऋषि और	च	१.	तदनन्तर
कृप	५.	कृपाचार्य	मङ्गलम् ॥	८.	मंगल

श्लोकार्थ—तदनन्तर राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्न मन से धौम्य ऋषि और कृपाचार्य इत्यादि ब्राह्मणों के द्वारा मंगल पाठ कराकर उस बालक परीक्षित् का जातकर्म संस्कार सम्पन्न कराया ।

चतुर्दशः श्लोकः

हिरण्यं गां महीं ग्रामान् हस्त्यश्वान्नृपतिर्वरान् ।
प्रादात्स्वन्नं च विप्रेभ्यः प्रजातीर्थे स तीर्थवित् ॥१४॥

पदच्छेद—

हिरण्यम् गाम् महीम् ग्रामान् , हस्ति अश्वान् नृपतिः वरान् ।
प्रादात् सु अन्नम् च विप्रेभ्यः, प्रजा तीर्थे सः तीर्थवित् ॥

शब्दार्थ—

हिरण्यम्	७.	सुवर्ण	प्रादात्	१५.	दान दिया
गाम्	८.	गाय	सु अन्नम्	१४.	सुन्दर अन्न का
महीम्	९.	पृथ्वी	च	१३.	और
ग्रामान्	१०.	गाँव	विप्रेभ्यः	५.	ब्राह्मणों को
हस्ति	११.	हाथी	प्रजा तीर्थे	४.	(नाल काटने के पहले) संतान के निमित्त
अश्वान्	१२.	घोड़े	सः	२.	उन
नृपतिः	३.	राजा युधिष्ठिर ने	तीर्थवित् ॥	१.	समय के जानकार
वरान् ।	६.	उत्तम			

श्लोकार्थ—समय के जानकर उन राजा युधिष्ठिर ने नाल काटने के पहले संतान के निमित्त ब्राह्मणों को उत्तम सुवर्ण, गाय, पृथ्वी, गाँव, हाथी, घोड़े और सुन्दर अन्न का दान दिया ।

पञ्चदशः श्लोकः

तमूचुर्ब्राह्मणास्तुष्टा राजानं प्रश्रयान्वितम् ।
एष ह्यस्मिन् प्रजातन्तौ पुरूणां पौरवर्षभ ॥१५॥

पदच्छेद—

तम् ऊचुः ब्राह्मणाः तुष्टाः, राजानम् प्रश्रय अन्वितम् ।
एषः हि अस्मिन् प्रजा तन्तौ, पुरूणाम् पौरवर्षभ ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	उन	**एषः**	६.	यह बालक
ऊचुः	७.	कहा	**हि**	१०.	ही
ब्राह्मणाः	१.	ब्राह्मणों ने	**अस्मिन्**	११.	इस
तुष्टाः	२.	प्रसन्न होकर	**प्रजा तन्तौ**	१३.	वंश परम्परा को (चलायेगा)
राजानम्	६.	राजा युधिष्ठिर से	**पुरूणाम्**	१२.	पुरुवंश की
प्रश्रय	३.	विनय से	**पौरवर्षभ ॥**	८.	हे पुरुवंशियों में श्रेष्ठ (राजा युधिष्ठिरजी)
अन्वितम् ।	४.	युक्त			

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर विनय से युक्त उन राजा युधिष्ठिर से कहा, हे पुरुवंशियों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर ! यह बालक ही इस पुरुवंश की वंश परम्परा को चलायेगा ।

षोडशः श्लोकः

दैवेनाप्रतिघातेन शुक्ले संस्थामुपेयुषि ।
रातो वोऽनुग्रहार्थाय विष्णुना प्रभविष्णुना ॥१६॥

पदच्छेद—

दैवेन अप्रतिघातेन, शुक्ले संस्थाम् उपेयुषि ।
रातः वः अनुग्रहार्थाय, विष्णुना प्रभविष्णुना ॥

शब्दार्थ—

दैवेन	४.	काल की गति से	**रातः**	१०.	(इस बालक को) दिया है
अप्रतिघातेन	३.	न रोके जा सकने वाली	**वः**	८.	आप लोगों पर
शुक्ले	५.	निर्मल (पुरुवंश) को	**अनुग्रहार्थाय**	६.	कृपा करके
संस्थाम्	६.	समाप्त	**विष्णुना**	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
उपेयुषि ।	७.	होता हुआ (जानकर)	**प्रभविष्णुना ॥**	१.	सामर्थ्यशाली

श्लोकार्थ—सामर्थ्यशाली भगवान् श्रीकृष्ण ने न रोके जा सकने वाली काल की गति से निर्मल पुरुवंश को समाप्त होता हुआ जानकर आप लोगों पर कृपा करके इस बालक को दिया है ।

सप्तदशः श्लोकः

तस्मान्नाम्ना विष्णुरात इति लोके बृहच्छ्रवाः ।
भविष्यति न संदेहो महाभागवतो महान् ॥१७॥

पदच्छेद—

तस्मात् नाम्ना विष्णुरातः, इति लोके बृहत् श्रवाः ।
भविष्यति न संदेहः, महत् भागवतः महान् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये (यह बालक)	भविष्यति	१०.	होगा
नाम्ना	५.	नाम से	न	१२.	नहीं (है)
विष्णुरातः	३.	विष्णुरात	संदेहः	११.	(इसमें) संदेह
इति	४.	इस	महत्	७.	महान्
लोके	२.	संसार में	भागवतः	८.	भगवद् भक्त (एवं)
बृहत् श्रवाः।	६.	परम यशस्वी	महान् ॥	९.	महापुरुष

श्लोकार्थ—इसलिये यह बालक संसार में विष्णुरात इस नाम से परम यशस्वी, महान् भगवद् भक्त एवं महापुरुष होगा । इसमें संदेह नहीं है ।

अष्टादशः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—

अप्येष वंश्यान् राजर्षीन् पुण्यश्लोकान् महात्मनः ।
अनुवर्तिता स्विद्यशसा साधुवादेन सत्तमाः ॥१८॥

पदच्छेद—

अपि एषः वंश्यान् राजर्षीन् , पुण्य श्लोकान् महात्मनः ।
अनुवर्तिता स्वित् यशसा , साधुवादेन सत्तमाः ॥

शब्दार्थ—

अपि	२.	क्या	महात्मनः ।	९.	महात्मा
एषः	३.	यह (बालक)	अनुवर्तिता	११.	अनुसरण
वंश्यान्	६.	(हमारे) वंश के	स्वित्	१२.	करेगा
राजर्षीन्	१०.	राजर्षियों का	यशसा	५.	यश से
पुण्य	७.	पवित्र	साधुवादेन	४.	(अपने) उत्तम
श्लोकान्	८.	कीर्ति वाले	सत्तमाः ॥	१.	हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों !

श्लोकार्थ—हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों ! क्या यह बालक अपने उत्तम यश से हमारे वंश के पवित्र कीर्ति वाले महात्मा राजर्षियों का अनुसरण करेगा ?

एकोनविंशः श्लोकः

ब्राह्मणा ऊचुः— पार्थ प्रजाविता साक्षादिक्ष्वाकुरिव मानवः ।
ब्रह्मण्यः सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यथा ॥१९॥

पदच्छेद—

पार्थ प्रजा अविता साक्षात्, इक्ष्वाकुः इव मानवः ।
ब्रह्मण्यः सत्य संधः च, रामः दाशरथिः यथा ॥

शब्दार्थ—

पार्थ	१.	हे युधिष्ठिर ! (यह बालक)	ब्रह्मण्यः	१२.	ब्राह्मणों और वेदों का रक्षक
प्रजा	६.	प्रजा का	सत्य	१३.	(एवं) सत्य
अविता	७.	पालन करेगा	संधः	१४.	प्रतिज्ञा करने वाला (होगा)
साक्षात्	३.	साक्षात्	च	८.	और
इक्ष्वाकुः	४.	राजा इक्ष्वाकु के	रामः	१०.	भगवान् श्री राम के
इव	५.	समान	दाशरथिः	९.	दशरथ नन्दन
मानवः ।	२.	मनु के पुत्र	यथा ॥	११.	समान

श्लोकार्थ—हे युधिष्ठिर ! यह बालक मनु के पुत्र साक्षात् राजा इक्ष्वाकु के समान प्रजा का पालन करेगा और दशरथ नन्दन भगवान् श्री राम के समान ब्राह्मणों और वेदों का रक्षक एवम् सत्य प्रतिज्ञा करने वाला होगा ।

विंशः श्लोकः

एष दाता शरण्यश्च यथा ह्यौशीनरः शिबिः ।
यशो वितनिता स्वानां दौष्यन्तिरिव यज्वनाम् ॥२०॥

पदच्छेद—

एषः दाता शरण्यः च, यथा हि औशीनरः शिबिः ।
यशः वितनिता स्वानाम्, दौष्यन्तिः इव यज्वनाम् ॥

शब्दार्थ—

एषः	१.	यह बालक	शिबिः ।	३.	शिवि के
दाता	८.	दान करने वाला (होगा तथा)	यशः	१३.	कीर्ति को
शरण्यः	६.	शरणागत रक्षक	वितनिता	१४.	फैलायेगा
च	७.	और	स्वानाम्	१२.	अपने कुल की
यथा	४.	समान	दौष्यन्तिः	१०.	दुष्यन्त के पुत्र भरत के
हि	५.	ही	इव	११.	समान
औशीनरः	२.	उशीनर देश के राजा	यज्वनाम् ॥	९.	यज्ञ करने वालों में

श्लोकार्थ—यह बालक उशीनर देश के राजा शिवि के समान ही शरणागत रक्षक और दान करने वाला होगा तथा यज्ञ करने वालों में दुष्यन्त के पुत्र भरत के समान अपने कुल की कीर्ति को फैलायेगा ।

एकविंशः श्लोकः

धन्विनामग्रणीरेष तुल्यश्चार्जुनयोर्द्वयोः ।
हुताश इव दुर्धर्षः समुद्र इव दुस्तरः ॥२१॥

पदच्छेद—

धन्विनाम् अग्रणीः एषः, तुल्यः च अर्जुनयोः द्वयोः ।
हुताशः इव दुर्धर्षः, समुद्रः इव दुस्तरः ॥

शब्दार्थ—

धन्विनाम्	२. धनुर्धारियों में	हुताशः	७. अग्नि के
अग्रणीः	६. आगे रहने वाला	इव	८. समान
एषः	१. यह (बालक)	दुर्धर्षः	९. तेजस्वी (एवम्)
तुल्यः	५. समान	समुद्रः	१०. समुद्र के
च	९. एवम्	इव	११. समान
अर्जुनयोः	३. सहस्रार्जुन तथा दादा अर्जुन	दुस्तरः ॥	१२. दुर्लंघ्य (होगा)
द्वयोः ।	४. दोनों के		

श्लोकार्थ—यह बालक धनुर्धारियों में सहस्रार्जुन तथा दादा अर्जुन दोनों के समान आगे रहने वाला, अग्नि के समान तेजस्वी एवम् समुद्र के समान दुर्लंघ्य होगा।

द्वाविंशः श्लोकः

मृगेन्द्र इव विक्रान्तो निषेव्यो हिमवानिव ।
तितिक्षुर्वसुधेवासौ सहिष्णुः पितराविव ॥२२॥

पदच्छेद—

मृगेन्द्रः इव विक्रान्तः, निषेव्यः हिमवान् इव ।
तितिक्षुः वसुधा इव असौ, सहिष्णुः पितरौ इव ॥

शब्दार्थ—

मृगेन्द्रः	२. सिंह के	वसुधा	८. पृथ्वी से
इव	३. समान	इव	९. समान
विक्रान्तः	४. पराक्रमी	असौ	१. यह (बालक)
निषेव्यः	७. आश्रय देने वाला	सहिष्णुः	१३. धैर्यशाली (होगा)
हिमवान्	५. हिमालय के	पितरौ	११. माता-पिता के
इव ।	६. समान	इव ॥	१२. समान
तितिक्षुः	१०. सहनशील (और)		

श्लोकार्थ—यह बालक सिंह के समान पराक्रमी, हिमालय के समान आश्रय देने वाला, पृथ्वी के समान सहनशील और माता-पिता के समान धैर्यशाली होगा।

त्रयोविंशः श्लोकः

पितामहसमः साम्ये प्रसादे गिरिशोपमः ।
आश्रयः सर्वभूतानां यथा देवो रमाश्रयः ॥२३॥

पदच्छेद—

पितामह समः साम्ये, प्रसादे गिरिश उपमः ।
आश्रयः सर्व भूतानाम्, यथा देवः रमा आश्रयः ॥

शब्दार्थ—

पितामह	२. दादा के	**आश्रयः**	१२. पालन करने वाला (होगा)
समः	३. समान	**सर्व**	१०. सभी
साम्ये	१. (यह बालक) समता में	**भूतानाम्**	११. प्राणियों का
प्रसादे	४. कृपा करने वालों में	**यथा**	९. समान
गिरिश	५. शंकर जी के	**देवः**	८. भगवान् के
उपमः ।	६. समान (एवम्)	**रमा आश्रयः ॥**	७. लक्ष्मी के पति विष्णु

श्लोकार्थ—यह बालक समता में दादा के समान, कृपा करने वालों में शंकर जी के समान एवम् लक्ष्मी के पति विष्णु भगवान् के समान सभी प्राणियों का पालन करने वाला होगा ।

चतुर्विंशः श्लोकः

सर्वसद्गुणमाहात्म्ये एष कृष्णमनुव्रतः ।
रन्तिदेव इवोदारो ययातिरिव धार्मिकः ॥२४॥

पदच्छेद—

सर्व सद् गुण माहात्म्ये, एषः कृष्णम् अनुव्रतः ।
रन्तिदेवः इव उदारः, ययातिः इव धार्मिकः ॥

शब्दार्थ—

सर्व	२. सभी	**रन्तिदेवः**	७. राजा रन्तिदेव के
सद् गुण	३. उत्तम गुणों की	**इव**	८. समान
माहात्म्ये	४. महिमा में	**उदारः**	९. उदार (और)
एषः	१. यह (बालक)	**ययातिः**	१०. राजा ययाति के
कृष्णम्	५. भगवान् श्रीकृष्ण का	**इव**	११. समान
अनुव्रतः ।	६. अनुकरण करने वाला	**धार्मिकः ॥**	१२. धार्मिक (होगा)

श्लोकार्थ—यह बालक सभी उत्तम गुणों की महिमा में भगवान् श्रीकृष्ण का अनुकरण करने वाला, राजा रन्तिदेव के समान उदार और राजा ययाति के समान धार्मिक होगा ।

पञ्चविंशः श्लोकः

धृत्या बलिसमः कृष्णे प्रह्लाद इव सद्ग्रहः ।
आहर्तैषोऽश्वमेधानां वृद्धानां पर्युपासकः ॥२५॥

पदच्छेद—

धृत्या बलि समः कृष्णे, प्रह्लादः इव सद् ग्रहः ।
आहर्ता एषः अश्वमेधानाम्, वृद्धानाम् पर्युपासकः ॥

शब्दार्थ—

धृत्या	२.	धैर्य में	आहर्ता	९.	करने वाला (एवम्)
बलि समः	३.	राजा बलि के समान (तथा)	एषः	१.	यह (बालक)
कृष्णे	६.	भगवान् श्रीकृष्ण में	अश्वमेधानाम्	८.	अनेकों अश्वमेध यज्ञों को
प्रह्लादः	४.	प्रह्लाद के	वृद्धानाम्	१०.	गुरुजनों का
इव	५.	समान	पर्युपासकः ॥	११.	सेवक होगा ।
सद् ग्रहः ।	७.	दृढ़ निश्चय वाला			

श्लोकार्थ—यह बालक धैर्य में राजा बलि के समान तथा प्रह्लाद के समान भगवान् श्रीकृष्ण में दृढ़ निश्चय वाला अनेकों अश्वमेध यज्ञों को करने वाला एवम् गुरुजनों का सेवक होगा ।

षड्विंशः श्लोकः

राजर्षीणां जनयिता शास्ता चोत्पथगामिनाम् ।
निग्रहीता कलेरेष भुवो धर्मस्य कारणात् ॥२६॥

पदच्छेद—

राजर्षीणाम् जनयिता, शास्ता च उत्पथ गामिनाम् ।
निग्रहीता कलेः एषः, भुवः धर्मस्य कारणात् ॥

शब्दार्थ—

राजर्षीणाम्	२.	राजर्षि पुत्रों को	निग्रहीता	१२.	दमन करेगा
जनयिता	३.	उत्पन्न करेगा	कलेः	११.	कलियुग का
शास्ता	६.	दण्ड देगा	एषः	१.	यह (बालक)
च	७.	तथा	भुवः	८.	पृथ्वी और
उत्पथ	४.	कुमार्ग में	धर्मस्य	९.	धर्म की
गामिनाम् ।	५.	जाने वालों को	कारणात् ॥	१०.	रक्षा करने के लिये

श्लोकार्थ—यह बालक राजर्षि पुत्रों को उत्पन्न करेगा, कुमार्ग में जाने वालों को दण्ड देगा तथा पृथ्वी और धर्म की रक्षा करने के लिये कलियुग का दमन करेगा ।

सप्तविंशः श्लोकः

तक्षकादात्मनो मृत्युं द्विजपुत्रोपसर्जितात् ।
प्रपत्स्यत उपश्रुत्य मुक्तसङ्गः पदं हरेः ॥२७॥

पदच्छेद—

तक्षकात् आत्मनः मृत्युम् , द्विज पुत्र उपसर्जितात् ।
प्रपत्स्यते उपश्रुत्य, मुक्त सङ्गः पदम् हरेः ॥

शब्दार्थ—

तक्षकात्	४.	तक्षक सर्प से	**प्रपत्स्यते**	१२.	शरण लेगा
आत्मनः	५.	अपनी	**उपश्रुत्य**	७.	सुनकर (तथा)
मृत्युम्	६.	मृत्यु को	**मुक्त**	८.	आसक्ति से
द्विज	१.	(यह बालक) ब्राह्मण	**सङ्गः**	९.	रहित होकर
पुत्र	२.	पुत्र के द्वारा	**पदम्**	११.	चरणों को
उपसर्जितात् ।	३.	(शाप से) भेजे गये	**हरेः ॥**	१०.	भगवान् श्री कृष्ण के

श्लोकार्थ—यह बालक ब्राह्मण पुत्र के द्वारा शाप से भेजे गये तक्षक सर्प से अपनी मृत्यु को सुनकर तथा आसक्ति से रहित होकर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की शरण लेगा ।

अष्टाविंशः श्लोकः

जिज्ञासितात्मयाथात्म्यो मुनेर्व्याससुतादसौ ।
हित्वेदं नृप गङ्गायां यास्यत्यद्धाकुतोभयम् ॥२८॥

पदच्छेद—

जिज्ञासित आत्म याथात्म्यः, मुनेः व्यास सुतात् असौ ।
हित्वा इदम् नृप गङ्गायाम् , यास्यति अद्धा अकुतो भयम् ॥

शब्दार्थ—

जिज्ञासित	७.	जानने के बाद	**इदम्**	९.	इस (शरीर) का
आत्म	५.	आत्मा के	**नृप**	१.	हे राजा युधिष्ठिर !
याथात्म्यः	६.	वास्तविक स्वरूप को	**गङ्गायाम्**	८.	गंगा तट पर
मुनेः	४.	मुनि से	**यास्यति**	१४.	प्राप्त करेगा
व्यास सुतात्	३.	व्यास जी के पुत्र (शुकदेव)	**अद्धा**	११.	निश्चय ही
असौ ।	२.	यह (बालक)	**अकुतो**	१२.	अभय
हित्वा	१०.	त्याग करके	**भयम् ॥**	१३.	पद को

श्लोकार्थ—हे राजा युधिष्ठिर ! यह बालक व्यास जी के पुत्र शुकदेव मुनि से आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने के बाद गंगा तट पर इस शरीर का त्याग करके निश्चय ही अभय पद को प्राप्त करेगा ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

इति राज्ञ उपादिश्य विप्रा जातककोविदाः ।
लब्धापचितयः सर्वे प्रतिजग्मुः स्वकान् गृहान् ॥२९॥

पदच्छेद—

इति राज्ञे उपादिश्य, विप्राः जातक कोविदाः ।
लब्ध अपचितयः सर्वे, प्रतिजग्मुः स्वकान् गृहान् ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	इस प्रकार	लब्ध	८.	पाकर
राज्ञे	४.	राजा युधिष्ठिर को	अपचितयः	७.	उपहार
उपादिश्य	६.	बतलाकर (तथा)	सर्वे	९.	सभी
विप्राः	३.	ब्राह्मण	प्रतिजग्मुः	१२.	चले गये
जातक	१.	फलित ज्योतिष शास्त्र के	स्वकान्	१०.	अपने-अपने
कोविदाः ।	२.	जानकार	गृहान् ॥	११.	घरों को

श्लोकार्थ—फलित ज्योतिष शास्त्र के जानकार ब्राह्मण राजा युधिष्ठिर को इस प्रकार बतलाकर तथा उपहार पाकर सभी अपने-अपने घरों को चले गये ।

त्रिंशः श्लोकः

स एष लोके विख्यातः परीक्षिदिति यत्प्रभुः ।
गर्भे दृष्टमनुध्यायन् परीक्षेत नरेष्विह ॥३०॥

पदच्छेद—

सः एषः लोके विख्यातः, परीक्षित् इति यत् प्रभुः ।
गर्भे दृष्टम् अनुध्यायन्, परीक्षेत नरेषु इह ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वही	प्रभुः ।	८.	समर्थ (वह बालक)
एषः	२.	यह बालक	गर्भे	९.	गर्भ में
लोके	३.	संसार में	दृष्टम्	१०.	देखे गये (पुरुष) का
विख्यातः	६.	प्रसिद्ध हुआ	अनुध्यायन्	११.	स्मरण करता हुआ
परीक्षित्	४.	परीक्षित्	परीक्षेत	१४.	परीक्षा करता था (कि इनमेंसे वह कौन पुरुष है)
इति	५.	इस नाम से	नरेषु	१३.	मनुष्यों में
यत्	७.	क्योंकि	इह ॥	१२.	संसार के

श्लोकार्थ—वही यह बालक संसार में परीक्षित् इस नाम से प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि समर्थ वह बालक गर्भ में देखे गये पुरुष का स्मरण करता हुआ संसार के मनुष्यों में परीक्षा करता था कि इनमें से वह कौन पुरुष है ?

एकत्रिंशः श्लोकः

स राजपुत्रो ववृधे आशु शुक्ल इवोडुपः ।
आपूर्यमाणः पितृभिः काष्ठाभिरिव सोऽन्वहम् ॥३१॥

पदच्छेद—

सः राजपुत्रः ववृधे, आशु शुक्ले इव उडुपः ।
आपूर्यमाणः पितृभिः, काष्ठाभिः इव सः अन्वहम् ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	वह	आपूर्यमाणः	२.	पालन-पोषण से
राजपुत्रः	४.	राजकुमार	पितृभिः	१.	माता-पिता के
ववृधे	१३.	बढ़ने लगा	काष्ठाभिः	५.	कलाओं से
आशु	११.	शीघ्र	इव	६.	परिपूर्ण
शुक्ले	७.	शुक्ल पक्ष के	सः	१२.	ही
इव	९.	समान	अन्वहम् ॥	१०.	प्रतिदिन
उडुपः ।	८.	चन्द्रमा के			

श्लोकार्थ—माता-पिता के पालन-पोषण से वह राजकुमार कलाओं से परिपूर्ण शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान प्रतिदिन शीघ्र ही बढ़ने लगा ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

यक्ष्यमाणोऽश्वमेधेन ज्ञातिद्रोहजिहासया ।
राजालब्धधनो दध्यावन्यत्र करदण्डयोः ॥३२॥

पदच्छेद—

यक्ष्यमाणः अश्वमेधेन, ज्ञाति द्रोह जिहासया ।
राजा अलब्ध धनः दध्यौ, अन्यत्र कर दण्डयोः ॥

शब्दार्थ—

यक्ष्यमाणः	५.	यजन करने की इच्छा वाले	अलब्ध	११.	न होने के कारण
अश्वमेधेन	४.	अश्वमेध यज्ञ से	धनः	१०.	धन
ज्ञाति	१.	अपने बन्धुओं के	दध्यौ	१२.	चिन्ता में पड़ गये
द्रोह	२.	वध का	अन्यत्र	९.	अतिरिक्त
जिहासया ।	३.	प्रायश्चित्त करने के लिये	कर	७.	कर और
राजा	६.	राजा (युधिष्ठिर)	दण्डयोः ॥	८.	दण्ड के

श्लोकार्थ—अपने बन्धुओं के वध का प्रायश्चित्त करने के लिये अश्वमेध यज्ञ से यजन करने की इच्छा वाले राजा युधिष्ठिर कर और दण्ड के अतिरिक्त धन न होने के कारण चिन्ता में पड़ गये ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तदभिप्रेतमालक्ष्य भ्रातरोऽच्युतचोदिताः ।
धनं प्रहीणमाजह्रुरुदीच्यां दिशि भूरिशः ॥३३॥

पदच्छेद—

तद् अभिप्रेतम् आलक्ष्य, भ्रातरः अच्युत चोदिताः ।
धनम् प्रहीणम् आजह्रुः, उदीच्याम् दिशि भूरिशः ॥

शब्दार्थ—

तद्	१.	उन (राजा युधिष्ठिर) की	**धनम्**	११.	धन
अभिप्रेतम्	२.	इच्छा को	**प्रहीणम्**	९.	छोड़ा हुआ
आलक्ष्य	३.	जानकर	**आजह्रुः**	१२.	उठा लाये
भ्रातरः	४.	सब भाई	**उदीच्याम्**	७.	उत्तर
अच्युत	५.	भगवान् श्री कृष्ण की	**दिशि**	८.	दिशा से
चोदिताः ।	६.	प्रेरणा से	**भूरिशः ॥**	१०.	बहुत सा

श्लोकार्थ—उन राजा युधिष्ठिर की इच्छा को जानकर सब भाई भगवान् श्री कृष्ण की प्रेरणा से उत्तर दिशा से छोड़ा हुआ बहुत सा धन उठा लाये ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तेन सम्भृतसम्भारो धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ।
वाजिमेधैस्त्रिभिर्भीतो यज्ञैः समयजद्धरिम् ॥३४॥

पदच्छेद—

तेन सम्भृत सम्भारः, धर्म पुत्रः युधिष्ठिरः ।
वाजिमेधैः त्रिभिः भीतः, यज्ञैः समयजत् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

तेन	५.	उस धन से	**वाजिमेधैः**	९.	अश्वमेध
सम्भृत	७.	जुटाकर	**त्रिभिः**	८.	तीन
सम्भारः	६.	यज्ञ सामग्री	**भीतः**	१.	धर्म से डरने वाले
धर्म	२.	धर्म के	**यज्ञैः**	१०.	यज्ञों से
पुत्रः	३.	पुत्र	**समयजत्**	१२.	पूजन किया
युधिष्ठिरः ।	४.	राजा युधिष्ठिर ने	**हरिम् ॥**	११.	भगवान् विष्णु का

श्लोकार्थ—धर्म से डरने वाले धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर ने उस धन से यज्ञ सामग्री जुटाकर तीन अश्वमेध यज्ञों से भगवान् विष्णु का पूजन किया ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

आहूतो भगवान् राज्ञा याजयित्वा द्विजैर्नृपम् ।
उवास कतिचिन्मासान् सुहृदां प्रियकाम्यया ॥३५॥

पदच्छेद—

आहूतः भगवान् राज्ञा, याजयित्वा द्विजैः नृपम् ।
उवास कतिचित् मासान्, सुहृदाम् प्रिय काम्यया ॥

शब्दार्थ—

आहूतः	२.	बुलाये गये	**उवास**	१२.	रहे थे
भगवान्	३.	भगवान् श्री कृष्ण	**कतिचित्**	१०.	कुछ
राज्ञा	१.	राजा युधिष्ठिर के द्वारा	**मासान्**	११.	महीने (वहाँ पर)
याजयित्वा	६.	यज्ञ को सम्पन्न कराकर	**सुहृदाम्**	७.	मित्रों को
द्विजैः	४.	ब्राह्मणों से	**प्रिय**	८.	प्रसन्न करने की
नृपम् ।	५.	राजा के	**काम्यया ॥**	९.	कामना से

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर के द्वारा बुलाये गये भगवान् श्री कृष्ण ब्राह्मणों से राजा के यज्ञ को सम्पन्न कराकर मित्रों को प्रसन्न करने की कामना से कुछ महीने वहाँ पर रहे थे ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

ततो राज्ञाभ्यनुज्ञातः कृष्णया सह बन्धुभिः ।
ययौ द्वारवतीं ब्रह्मन् सार्जुनो यदुभिर्वृतः ॥३६॥

पदच्छेद—

ततः राज्ञा अभ्यनुज्ञातः, कृष्णया सह बन्धुभिः ।
ययौ द्वारवतीम् ब्रह्मन् , स अर्जुनः यदुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तदनन्तर	**ययौ**	१२.	पधारे
राज्ञा	६.	राजा युधिष्ठिर की	**द्वारवतीम्**	११.	द्वारकापुरी को
अभ्यनुज्ञातः	७.	अनुमति पाकर (भगवान् श्रीकृष्ण)	**ब्रह्मन्**	१.	हे शौनक जी !
कृष्णया	३.	द्रौपदी (एवम्)	**स अर्जुनः**	१०.	अर्जुन के साथ
सह	५.	साथ	**यदुभिः**	८.	यादवों से
बन्धुभिः ।	४.	अन्य भाइयों के	**वृतः ॥**	९.	घिरे हुये (और)

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! तदनन्तर द्रौपदी एवम् अन्य भाइयों के साथ राजा युधिष्ठिर की अनुमति पाकर भगवान् श्री कृष्ण यादवों से घिरे हुये और अर्जुन के साथ द्वारकापुरी को पधारे ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे नैमिषीयोपाख्याने परीक्षिज्जन्माद्युत्कर्षो नाम द्वादशः अध्यायः ॥१२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ त्रयोदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच— विदुरस्तीर्थयात्रायां मैत्रेयादात्मनो गतिम् ।
ज्ञात्वागाद्धास्तिनपुरं तयावाप्तविविसितः ॥१॥

पदच्छेद— विदुरः तीर्थ यात्रायाम्, मैत्रेयात् आत्मनः गतिम् ।
ज्ञात्वा अगात् हास्तिनपुरम्, तया अवाप्त विवित्सितः ॥

शब्दार्थ—

विदुरः	१.	विदुर जी	ज्ञात्वा	७.	जानकर
तीर्थ	२.	तीर्थ	अगात्	९.	लौट आये
यात्रायाम्	३.	यात्रा में	हास्तिनपुरम्	८.	हस्तिनापुर में
मैत्रेयात्	४.	मैत्रेय ऋषि से	तया	१०.	उस ज्ञान से
आत्मनः	५.	आत्मा के	अवाप्त	१२.	परिपूर्ण हो गई थी
गतिम् ।	६.	ज्ञान को	विवित्सितः ॥	११.	(उनके) ब्रह्मज्ञान की इच्छा

श्लोकार्थ—विदुर जी तीर्थ यात्रा में मैत्रेय ऋषि से आत्मा के ज्ञान को जानकर हस्तिनापुर में लौट आये। उस ज्ञान से उनके ब्रह्म ज्ञान की इच्छा परिपूर्ण हो गई थी।

द्वितीयः श्लोकः

यावतः कृतवान् प्रश्नान् क्षत्ता कौषारवाग्रतः ।
जातैकभक्तिर्गोविन्दे तेभ्यश्चोपरराम ह ॥२॥

पदच्छेद— यावतः कृतवान् प्रश्नान्, क्षत्ता कौषारव अग्रतः ।
जात एक भक्तिः गोविन्दे, तेभ्यः च उपरराम ह ॥

शब्दार्थ—

यावतः	४.	जितने	एक	९.	अनन्य
कृतवान्	६.	किये थे	भक्तिः	१०.	भक्ति
प्रश्नान्	५.	प्रश्न	गोविन्दे	८.	भगवान् श्री कृष्ण में
क्षत्ता	१.	दासी पुत्र (विदुर जी) ने	तेभ्यः	७.	उन प्रश्नों के (उत्तर से)
कौषारव	२.	कुषारु मुनि के पुत्र मैत्रेय जी के	च	१३.	विषयों से
अग्रतः ।	३.	सामने	उपरराम	१४.	विराम ले लिया था
जात	११.	उत्पन्न हो जाने के कारण	ह ॥	१२.	उन्होंने

श्लोकार्थ—दासी पुत्र विदुर जी ने कुषारु मुनि के पुत्र मैत्रेय जी के सामने जितने प्रश्न किये थे, उन प्रश्नों के उत्तर से भगवान् श्री कृष्ण में अनन्य भक्ति उत्पन्न हो जाने के कारण उन्होंने विषयों से विराम ले लिया था।

तृतीयः श्लोकः

तं बन्धुमागतं दृष्ट्वा धर्मपुत्रः सहानुजः ।
धृतराष्ट्रो युयुत्सुश्च सूतः शारद्वतः पृथा ॥३॥

पदच्छेद—

तम् बन्धुम् आगतम् दृष्ट्वा, धर्मपुत्रः सह अनुजः ।
धृतराष्ट्रः युयुत्सुः च, सूतः शारद्वतः पृथा ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उन		धृतराष्ट्रः	८. धृतराष्ट्र
बन्धुम्	२. भाई विदुर जी को		युयुत्सुः	९. युयुत्सु
आगतम्	३. आया हुआ		च	१२. और
दृष्ट्वा	४. देखकर		सूतः	१०. संजय
धर्मपुत्रः	७. धर्मराज युधिष्ठिर		शारद्वतः	११. कृपाचार्य
सह	६. साथ		पृथा ॥	१३. कुन्ती
अनुजः ।	५. छोटे भाइयों के			(सब अगवानी करने गये)

श्लोकार्थ—उन भाई विदुर जी को आया हुआ देखकर छोटे भाइयों के साथ धर्मराज युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, युयुत्सु, संजय, कृपाचार्य और कुन्ती सब अगवानी करने गये ।

चतुर्थः श्लोकः

गान्धारी द्रौपदी ब्रह्मन् सुभद्रा चोत्तरा कृपी ।
अन्याश्च जामयः पाण्डोर्ज्ञातयः ससुताः स्त्रियः ॥४॥

पदच्छेद—

गान्धारी द्रौपदी ब्रह्मन् , सुभद्रा च उत्तरा कृपी ।
अन्याः च जामयः पाण्डोः, ज्ञातयः स सुताः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

गान्धारी	२. गान्धारी		अन्याः	८. दूसरी
द्रौपदी	३. द्रौपदी		च	१०. तथा
ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् शौनक जी !		जामयः	९. पुत्रवधुयें
सुभद्रा	४. सुभद्रा		पाण्डोः	११. पाण्डव परिवार के
च	७. और		ज्ञातयः	१२. भाई बन्धु (और)
उत्तरा	५. उत्तरा		स सुताः	१३. पुत्रों सहित
कृपी ।	६. कृपी		स्त्रियः ॥	१४. स्त्रियाँ भी (गईं)

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् शौनक जी ! गान्धारी, द्रौपदी, सुभद्रा, उत्तरा, कृपी और दूसरी पुत्रवधुयें तथा पाण्डव परिवार के भाई बन्धु और पुत्रों सहित स्त्रियाँ भी गईं ।

पञ्चमः श्लोकः

प्रत्युज्जग्मुः प्रहर्षेण प्राणं तन्व इवागतम् ।
अभिसंगम्य विधिवत् परिष्वङ्गाभिवादनैः ॥५॥

पदच्छेद—

प्रत्युज्जग्मुः प्रहर्षेण, प्राणम् तन्वे इव आगतम् ।
अभिसंगम्य विधिवत्, परिष्वङ्ग अभिवादनैः ॥

शब्दार्थ—

प्रत्युज्जग्मुः	६. स्वागत करने के लिये गये (तथा)	**आगतम् ।**	४. आगया हो (इस प्रकार)
प्रहर्षेण	५. प्रसन्नता के साथ	**अभिसंगम्य**	७. (उनके) सामने जाकर
प्राणम्	३. प्राण	**विधिवत्**	८. यथायोग्य
तन्वे	२. शरीर में	**परिष्वङ्ग**	९. आलिंगन (और)
इव	१. जैसे	**अभिवादनैः ॥**	१०. प्रणाम के द्वारा (उनसे मिले)

श्लोकार्थ—जैसे शरीर में प्राण आगया हो, इस प्रकार प्रसन्नता के साथ सभी लोग विदुरजी का स्वागत करने के लिये गये तथा उनके सामने जाकर यथायोग्य आलिंगन और प्रमाण के द्वारा उनसे मिले ।

षष्ठः श्लोकः

मुमुचुः प्रेमबाष्पौघं विरहौत्कण्ठ्यकातराः ।
राजा तमर्हयाञ्चक्रे कृतासनपरिग्रहम् ॥६॥

पदच्छेद—

मुमुचुः प्रेम बाष्प ओघम्, विरह औत्कण्ठ्य कातराः ।
राजा तम् अर्हयाञ्चक्रे, कृत आसन परिग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

मुमुचुः	७. बहाने लगे (तथा)	**राजा**	८. राजा युधिष्ठिर ने
प्रेम	४. प्रेम भरे	**तम्**	१२. उन (विदुर जी) की
बाष्प	५. आँसुओं के	**अर्हयाञ्चक्रे**	१३. पूजा की
ओघम्	६. प्रवाह को	**कृत**	११. कराकर
विरह	१. वियोग की	**आसन**	९. आसन
औत्कण्ठ्य	२. उत्कण्ठा से	**परिग्रहम् ॥**	१०. ग्रहण
कातराः ।	३. दुःखित (सभी लोग)		

श्लोकार्थ—वियोग की उत्कण्ठा से दुःखित सभी लोग प्रेम भरे आँसुओं के प्रवाह को बहाने लगे तथा राजा युधिष्ठिर ने आसन ग्रहण कराकर उन विदुर जी की पूजा की ।

सप्तमः श्लोकः

तं भुक्तवन्तं विश्रान्तमासीनं सुखमासने ।
प्रश्रयावनतो राजा प्राह तेषां च शृण्वताम् ॥७॥

पदच्छेद—

तम् भुक्तवन्तम् विश्रान्तम्, आसीनम् सुखम् आसने ।
प्रश्रय अवनतः राजा, प्राह तेषाम् च शृण्वताम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१०.	उन (विदुर जी) से	प्रश्रय	१.	विनय से
भुक्तवन्तम्	४.	भोजन	अवनतः	२.	नम्र होकर
विश्रान्तम्	६.	विश्राम करके	राजा	३.	राजा युधिष्ठिर ने
आसीनम्	९.	बैठे हुये	प्राह	१३.	कहा
सुखम्	८.	सुख पूर्वक	तेषाम्	११.	सभी बन्धुओं के
आसने ।	७.	आसन पर	च	५.	और
			शृण्वताम् ॥	१२.	सुनते रहने पर

श्लोकार्थ—विनय से नम्र होकर राजा युधिष्ठिर ने भोजन और विश्राम करके आसन पर सुखपूर्वक बैठे हुये उन विदुर जी से सभी बन्धुओं के सुनते रहने पर कहा ।

अष्टमः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—

अपि स्मरथ नो युष्मत्पक्षच्छायासमेधितान् ।
विपद्गणाद्विषाग्न्यादेर्मोचिता यत्समातृकाः ॥८॥

पदच्छेद—

अपि स्मरथ नः युष्मत्, पक्ष छाया समेधितान् ।
विपद् गणात् विष अग्नि आदेः, मोचिताः यत् स मातृकाः ॥

शब्दार्थ—

अपि	५.	क्या (आप)	गणात्	१०.	समूह से
स्मरथ	६.	स्मरण करते थे	विष	११.	विष (तथा)
नः	४.	हम लोगों का	अग्नि	१२.	लाक्षागृह की अग्नि
युष्मत्	१.	आपके	आदेः	१३.	इत्यादि (उपद्रवों) से
पक्ष छाया	२.	पंखों की छाया में	मोचिताः	१४.	बचाया था
समेधितान् ।	३.	पले हुये	यत्	७.	क्योंकि (आपने)
विपद्	९.	आपत्तियों के	स मातृकाः ॥	८.	माता के साथ (हम लोगों) को

श्लोकार्थ—आपके पंखों की छाया में पले हुये हम लोगों का क्या आप स्मरण करते थे ? क्योंकि आपने माता के साथ हम लोगों को आपत्तियों के समूह से, विष तथा लाक्षागृह की अग्नि इत्यादि उपद्रवों से बचाया था ।

नवमः श्लोकः

कया वृत्त्या वर्तितं वश्चरद्भिः क्षितिमण्डलम् ।
तीर्थानि क्षेत्रमुख्यानि सेवितानीह भूतले ॥९॥

पदच्छेद—

कया वृत्त्या वर्तितम् वः, चरद्भिः क्षिति मण्डलम् ।
तीर्थानि क्षेत्र मुख्यानि, सेवितानि इह भूतले ॥

शब्दार्थ—

कया	५.	किस	मण्डलम् ।	२.	मण्डल पर
वृत्त्या	६.	प्रकार से	तीर्थानि	१०.	(कौन से) तीर्थों का (और)
वर्तितम्	७.	जीवन निर्वाह किया है (तथा)	क्षेत्र मुख्यानि	११.	प्रधान क्षेत्रों का
वः	४.	आपने	सेवितानि	१२.	सेवन किया है
चरद्भिः	३.	विचरते हुये	इह	८.	इस
क्षिति	१.	भू	भूतले ॥	९.	भूतल पर

श्लोकार्थ—भू-मण्डल पर विचरते हुए आपने किस प्रकार से जीवह निर्वाह किया है तथा इस भूतल पर कौन से तीर्थों का और प्रधान क्षेत्रों का सेवन किया है ?

दशमः श्लोकः

भवद्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो ।
तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तःस्थेन गदाभृता ॥१०॥

पदच्छेद—

भवद् विधाः भागवताः, तीर्थ भूताः स्वयम् विभो ।
तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि, स्व अन्तःस्थेन गदाभृता ॥

शब्दार्थ—

भवद्	२.	आप	तीर्थी	११.	पवित्र
विधाः	३.	जैसे	कुर्वन्ति	१२.	बना देते हैं
भागवताः	४.	भगवद् भक्त	तीर्थानि	१०.	तीर्थों को (भी)
तीर्थभूताः	६.	तीर्थों के समान हैं (तथा)	स्व अन्तः	७.	अपने हृदय में
स्वयम्	५.	स्वयम्	स्थेन	८.	विराजमान
विभो ।	१.	हे विदुर जी !	गदाभृता ॥	९.	भगवान् विष्णु के द्वारा

श्लोकार्थ—हे विदुर जी ! आप जैसे भगवद्-भक्त स्वयं तीर्थों के समान हैं तथा अपने हृदय में विराजमान भगवान् विष्णु के द्वारा तीर्थों को भी पवित्र बना देते हैं ।

एकादशः श्लोकः

अपि नः सुहृदस्तात बान्धवाः कृष्णदेवताः ।
दृष्टाः श्रुता वा यदवः स्वपुर्यां सुखमासते ॥११॥

पदच्छेद—

अपि नः सुहृदः तात, बान्धवाः कृष्ण देवताः ।
दृष्टाः श्रुताः वा यदवः, स्व पुर्याम् सुखम् आसते ॥

शब्दार्थ—

अपि	७.	क्या	दृष्टाः	८.	(आपने) देखा है
नः	४.	हमारे	श्रुताः	१०.	सुना है
सुहृदः	५.	मित्र	वा	९.	अथवा
तात	१.	हे तात विदुर जी !	यदवः	११.	(वे) यादव लोग
बान्धवाः	६.	बन्धुओं को	स्व पुर्याम्	१२.	अपनी नगरी में
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण को ही	सुखम्	१३.	सुखपूर्वक
देवताः ।	३.	आराध्य देव मानने वाले	आसते ॥	१४.	(तो) हैं

श्लोकार्थ—हे तात विदुर जी ! श्रीकृष्ण को ही आराध्य देव मानने वाले हमारे मित्र बन्धुओं को क्या आपने देखा है अथवा सुना है ? वे यादव लोग अपनी नगरी में सुखपूर्वक तो हैं ?

द्वादशः श्लोकः

इत्युक्तो धर्मराजेन सर्वं तत् समवर्णयत् ।
यथानुभूतं क्रमशो विना यदुकुलक्षयम् ॥१२॥

पदच्छेद—

इति उक्तः धर्म राजेन, सर्वम् तत् समवर्णयत् ।
यथा अनुभूतम् क्रमशः, विना यदु कुल क्षयम् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	यथा	५.	अनुसार
उक्तः	३.	पूछे जाने पर (विदुर जी ने)	अनुभूतम्	४.	अपने अनुभव के
धर्मराजेन	१.	धर्मराज राजा युधिष्ठिर के द्वारा	क्रमशः	९.	क्रम से
सर्वम्	११.	सब का	विना	८.	छोड़कर
तत्	१०.	उन	यदु कुल	६.	यदु कुल के
समवर्णयत् ।	१२.	भली भाँति वर्णन किया	क्षयम् ॥	७.	संहार को

श्लोकार्थ—धर्मराज राजा युधिष्ठिर के द्वारा इस प्रकार पूछे जाने पर विदुर जी ने अपने अनुभव के अनुसार यदु कुल के संहार को छोड़कर क्रम से उन सबका भली भाँति वर्णन किया ।

त्रयोदशः श्लोकः

नन्वप्रियं दुर्विषहं नृणां स्वयमुपस्थितम् ।
नावेदयत् सकरुणो दुःखितान् द्रष्टुमक्षमः ॥१३॥

पदच्छेद—

ननु अप्रियम् दुर्विषहम् , नृणाम् स्वयम् उपस्थितम् ।
न आवेदयत् स करुणः , दुःखितान् द्रष्टुम् अक्षमः ॥

शब्दार्थ—

ननु	५.	निश्चय ही	**न**	११.	(यदुवंश के विनाश को) नहीं
अप्रियम्	४.	विपत्ति को	**आवेदयत्**	१२.	बताया था
दुर्विषहम्	६.	सहन नहीं कर सकता है (अतः)	**स करुणः**	१०.	दयालु विदुर जी ने
नृणाम्	१.	मनुष्य	**दुःखितान्**	७.	(पाण्डवों को) दुःखी
स्वयम्	२.	अपने आप (अकस्मात्)	**द्रष्टुम्**	८.	देखने में
उपस्थितम् ।	३.	आयी हुई	**अक्षमः ॥**	९.	असमर्थ

श्लोकार्थ—मनुष्य अपने आप अकस्मात् आयी हुई विपत्ति को निश्चय ही सहन नहीं कर सकता है । अतः पाण्डवों को दुःखी देखने में असमर्थ दयालु विदुर जी ने यदुवंश के विनाश को नहीं बताया था ।

चतुर्दशः श्लोकः

कञ्चित्कालमथावात्सीत्सत्कृतो देववत्सुखम् ।
भ्रातुर्ज्येष्ठस्य श्रेयस्कृत्सर्वेषां प्रीतिमावहन् ॥१४॥

पदच्छेद—

कञ्चित् कालम् अथ अवात्सीत् , सत्कृतः देववत् सुखम् ।
भ्रातुः ज्येष्ठस्य श्रेयस्कृत् , सर्वेषाम् प्रीतिम् आवहन् ॥

शब्दार्थ—

कञ्चित्	१०.	कुछ	**सुखम् ।**	१२.	सुखपूर्वक
कालम्	११.	समय तक (हस्तिनापुर में)	**भ्रातुः**	५.	भाई के
अथ	१.	तदनन्तर	**ज्येष्ठस्य**	४.	बड़े
अवात्सीत्	१३.	निवास किये	**श्रेयस्कृत्**	६.	कल्याणकारी (विदुर जी)
सत्कृतः	३.	सत्कार पाकर	**सर्वेषाम्**	७.	सबको
देववत्	२.	देवताओं के समान	**प्रीतिम्**	८.	प्रसन्न
			आवहन् ॥	९.	करते हुये

श्लोकार्थ—तदनन्तर देवताओं के समान सत्कार पाकर बड़े भाई के कल्याणकारी विदुर जी सबको प्रसन्न करते हुये कुछ समय तक हस्तिनापुर में सुखपूर्वक निवास किये ।

पञ्चदशः श्लोकः

अबिभ्रदर्यमा दण्डं यथावदघकारिषु ।
यावद्दधार शूद्रत्वं शापाद्वर्षशतं यमः ॥१५॥

पदच्छेद—

अबिभ्रत् अर्यमा दण्डम्, यथावत् अघकारिषु ।
यावत् दधार शूद्रत्वम्, शापात् वर्ष शतम् यमः ॥

शब्दार्थ—

अबिभ्रत्	१२.	धारण किया था	दधार	६.	धारण किये रहे
अर्यमा	८.	सूर्य ने	शूद्रत्वम्	५	शूद्र का रूप
दण्डम्	११.	दण्ड शासन को	शापात्	२.	शाप के कारण
यथावत्	१०.	कर्मानुसार	वर्ष	४.	वर्ष तक
अघकारिषु ।	९.	पापियों के	शतम्	३.	स
यावत्	७.	तब तक	यमः ॥	१.	(एकबार) यमराज

श्लोकार्थ—एकबार यमराज शाप के कारण सौ वर्ष तक शूद्र का रूप धारण किये रहे, तब तक सूर्य ने पापियों के कर्मानुसार दण्ड शासन को धारण किया था ।

षोडशः श्लोकः

युधिष्ठिरो लब्धराज्यो दृष्ट्वा पौत्रं कुलंधरम् ।
भ्रातृभिर्लोकपालाभैर्मुमुदे परया श्रिया ॥१६॥

पदच्छेद—

युधिष्ठिरः लब्ध राज्यः, दृष्ट्वा पौत्रम् कुलंधरम् ।
भ्रातृभिः लोकपाल आभैः, मुमुदे परया श्रिया ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरः	३.	राजा युधिष्ठिर	भ्रातृभिः	९.	चारों भाइयों के साथ
लब्ध	२.	प्राप्त करके	लोकपाल	७.	लोक पालों के
राज्यः	१.	राज्य	आभैः	८.	समान
दृष्ट्वा	६.	देखकर	ममुदे	१२.	प्रसन्न थे
पौत्रम्	५.	पौत्र को	परया	१०.	(अपनी) अतुल
कुलंधरम् ।	४.	वंश को चलाने वाले	श्रिया ॥	११.	सम्पत्ति से

श्लोकार्थ—राज्य प्राप्त करके राजा युधिष्ठिर वंश को चलाने वाले पौत्र को देखकर लोकपालों के समान चारों भाइयों के साथ अपनी अतुल सम्पत्ति से प्रसन्न थे ।

सप्तदशः श्लोकः

एवं गृहेषु सक्तानां प्रमत्तानां तदीहया ।
अत्यक्रामदविज्ञातः कालः परमदुस्तरः ॥१७॥

पदच्छेद—

एवम् गृहेषु सक्तानाम् , प्रमत्तानाम् तद् ईहया ।
अत्यक्रामत् अविज्ञातः, कालः परम दुस्तरः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	अत्यक्रामत्	१०. उपस्थित हो गया
गृहेषु	२. गृहस्थाश्रम में	अविज्ञातः	६. अपरिचित (और)
सक्तानाम्	३. लिपटे हुए (और)	कालः	९. मृत्यु का काल
प्रमत्तानाम्	५. भूले हुए (पाण्डवों) का	परम	७. बिल्कुल
तद् , ईहया ।	४. उसी की झंझटों से (अपने को)	दुस्तरः ॥	८. अटल

श्लोकार्थ—इस प्रकार गृहस्थाश्रम में लिपटे हुए और उसी की झंझटों से अपने को भूले हुए पाण्डवों का अपरिचित और बिल्कुल अटल मृत्यु का काल उपस्थित हो गया ।

अष्टादशः श्लोकः

विदुरस्तदभिप्रेत्य धृतराष्ट्रमभाषत ।
राजन्निर्गम्यतां शीघ्रं पश्येदं भयमागतम् ॥१८॥

पदच्छेद—

विदुरः तद् अभिप्रेत्य , धृतराष्ट्रम् अभाषत ।
राजन् निर्गम्यताम् शीघ्रम् , पश्य इदम् भयम् आगतम् ॥

शब्दार्थ—

विदुरः	१. विदुर जी	निर्गम्यताम्	१२. निकल चलिये
तद्	२. उस (काल की गति) को	शीघ्रम्	११. जल्दी ही
अभिप्रेत्य	३. जानकर	पश्य	१०. देखिये (और घर से)
धृतराष्ट्रम्	४. राजा धृतराष्ट्र से	इदम्	८. इस
अभाषत ।	५. बोले	भयम्	९. (मृत्यु रूपी) भय को
राजन्	६. हे राजन् !	आगतम् ॥	७. आये हुये

श्लोकार्थ—विदुर जी उस काल की गति को जानकर राजा धृतराष्ट्र से बोले, हे राजन् ! आये हुए इस मृत्युरूपी भय को देखिये और घर से जल्दी ही निकल चलिये ।

एकोनविंशः श्लोकः

प्रतिक्रिया न यस्येह कुतश्चित्कर्हिचित्प्रभो ।
स एव भगवान् कालः सर्वेषां नः समागतः ॥१९॥

पदच्छेद—

प्रतिक्रिया न यस्य इह, कुतश्चित् कर्हिचित् प्रभो ।
सः एव भगवान् कालः, सर्वेषाम् नः समागतः ॥

शब्दार्थ—

प्रतिक्रिया	६.	टालने का उपाय	**सः एव**	१०.	वही
न	७.	नहीं (है)	**भगवान्**	११.	सर्व समर्थ
यस्य	३.	जिसको	**कालः**	१२.	मृत्यु का काल
इह	२.	इस संसार में	**सर्वेषाम्**	९.	सबों का
कुतश्चित्	४.	किसी तरह	**नः**	८.	हम
कर्हिचित्	५.	कभी भी	**समागतः ॥**	१३.	आगया है
प्रभो ।	१.	हे राजन् !			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस संसार में जिसको किसी तरह कभी भी टालने का उपाय नहीं है, हम सबों का वही सर्व समर्थ मृत्यु का काल आगया है ।

विंशः श्लोकः

येन चैवाभिपन्नोऽयं प्राणैः प्रियतमैरपि ।
जनः सद्यो वियुज्येत किमुतान्यैर्धनादिभिः ॥२०॥

पदच्छेद—

येन च एव अभिपन्नः अयम्, प्राणैः प्रियतमैः अपि ।
जनः सद्यः वियुज्येत, किमुत अन्यैः धन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

येन	१.	जिस (काल) के	**जनः**	५.	प्राणी
च	३.	जब	**सद्यः**	९.	शीघ्र
एव	१०.	ही	**वियुज्येत**	११.	विलग हो जाता है
अभिपन्नः	२.	वश हो जाने पर	**किमुत**	१५.	बात ही क्या है
अयम्	४.	यह	**अन्यैः**	१२.	(तब) दूसरे
प्राणैः	७.	प्राणों से	**धन**	१३.	धन दौलत
प्रियतमैः	६.	अत्यन्त प्रिय	**आदिभिः ॥**	१४.	इत्यादि की (तो)
अपि ।	८.	भी			

श्लोकार्थ—जिस काल के वश हो जाने पर जब यह प्राणी अत्यन्त प्रिय प्राणों से भी शीघ्र ही विलग हो जाता है, तब दूसरे धन दौलत इत्यादि की तो बात ही क्या है ।

एकविंशः श्लोकः

पितृभ्रातृसुहृत्पुत्रा हतास्ते विगतं वयः ।
आत्मा च जरया ग्रस्तः परगेहमुपाससे ॥२१॥

पदच्छेद—

पितृ भ्रातृ सुहृत् पुत्राः, हताः ते विगतम् वयः ।
आत्मा च जरया ग्रस्तः, पर गेहम् उपाससे ॥

शब्दार्थ—

पितृ	२.	पिता	**वयः ।**	७.	अवस्था
भ्रातृ	३.	भ्राता	**आत्मा**	९.	शरीर
सुहृत्	४.	मित्र (और)	**च**	१२.	तथा
पुत्राः	५.	पुत्र	**जरया**	१०.	बुढ़ापे से
हताः	६.	नष्ट हो गये हैं	**ग्रस्तः**	११.	जकड़ लिया गया है
ते	१.	आपके	**पर गेहम्**	१३.	पराये घर में
विगतम्	८.	बीत गई है	**उपाससे ॥**	१४.	पड़े हुये हैं

श्लोकार्थ—आप के पिता, भ्राता, मित्र और पुत्र नष्ट हो गये हैं, अवस्था बीत गई है, शरीर बुढ़ापे से जकड़ लिया गया है तथा पराये घर में पड़े हुये हैं ।

द्वाविंशः श्लोकः

अहो महीयसी जन्तोर्जीविताशा यया भवान् ।
भीमापवर्जितं पिण्डमादत्ते गृहपालवत् ॥२२॥

पदच्छेद—

अहो महीयसी जन्तोः, जीवित आशा यया भवान् ।
भीम अपवर्जितम् पिण्डम् , आदत्ते गृहपालवत् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	आश्चर्य है !	**भवान् ।**	७.	आप
महीयसी	५.	बड़ी प्रबल (होती है)	**भीम**	८.	भीमसेन के द्वारा
जन्तोः	२.	मनुष्य की	**अपवर्जितम्**	९.	दिये गये
जीवित	३.	जीने की	**पिण्डम्**	१०.	अन्न को
आशा	४.	इच्छा	**आदत्ते**	१२.	ग्रहण कर रहे हैं
यया	६.	जिस आशा से	**गृहपालवत् ॥**	११.	पालतू कुत्ते के समान

श्लोकार्थ—आश्चर्य है ! मनुष्य की जीने की इच्छा बड़ी प्रबल होती है; जिस आशा से आप भीमसेन के द्वारा दिये गये अन्न को पालतू कुत्ते के समान ग्रहण कर रहे हैं ।

त्रयोविंशः श्लोकः

अग्निर्निसृष्टो दत्तश्च गरो दाराश्च दूषिताः ।
हृतं क्षेत्रं धनं येषां तद्दत्तैरसुभिः कियत् ॥२३॥

पदच्छेद—

अग्निः निसृष्टः दत्तः च , गरः दाराः च दूषिताः ।
हृतम् क्षेत्रम् धनम् येषाम् , तद् दत्तैः असुभिः कियत् ॥

शब्दार्थ—

अग्निः	१. (आपने जिन्हें) आग में	**हृतम्**	१२. अधिकार कर लिया
निसृष्टः	२. जलाया	**क्षेत्रम्**	१०. राज्य (और)
दत्तः	५. दिया	**धनम्**	११. धन-सम्पत्ति पर
च	३. और	**येषाम्**	९. जिनके
गरः	४. विष	**तद्**	१३. उन्हीं के द्वारा
दाराः	६. (जिनकी) पत्नी (द्रौपदी) को	**दत्तैः**	१४. दिये गये (अन्न) से
च	८. तथा	**असुभिः**	१५. प्राणों को रखने में
दूषिताः ।	७. अपमानित किया	**कियत् ॥**	१६. क्या (गौरव है)

श्लोकार्थ—आपने जिन्हें आग में जलाया और विष दिया, जिनकी पत्नी द्रौपदी को अपमानित किया तथा जिनके राज्य और, धन-सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया; उन्हीं के द्वारा दिये गये अन्न से प्राणों को रखने में क्या गौरव है ?

चतुर्विंशः श्लोकः

तस्यापि तव देहोऽयं कृपणस्य जिजीविषोः ।
परैत्यनिच्छतो जीर्णो जरया वाससी इव ॥२४॥

पदच्छेद—

तस्य अपि तव देहः अयम् , कृपणस्य जिजीविषोः ।
परैति अनिच्छतः जीर्णः , जरया वाससी इव ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. (हे भाई धृतराष्ट्र) ऐसा होने पर	**परैति**	१३. नष्ट होता जा रहा है
अपि	२. भी	**अनिच्छतः**	८. न चाहने पर भी
तव	५. आपका	**जीर्णः**	१२. क्षीण होकर
देहः	७. शरीर	**जरया**	११. बुढ़ापे से
अयम्	६. यह	**वाससी**	९. पुराने वस्त्र के
कृपणस्य	४. कायर	**इव ॥**	१०. समान
जिजीविषोः ।	३. जीने की इच्छा वाले		

श्लोकार्थ—हे भाई धृतराष्ट्र ! ऐसा होने पर भी जीने की इच्छा वाले कायर आपका यह शरीर न चाहने पर भी पुराने वस्त्र के समान बुढ़ापे से क्षीण होकर नष्ट होता जा रहा है ।

पञ्चविंशः श्लोकः

गतस्वार्थमिमं देहं विरक्तो मुक्तबन्धनः ।
अविज्ञातगतिर्जह्यात् स वै धीर उदाहृतः ॥२५॥

पदच्छेद—

गत स्वार्थम् इमम् देहम्, विरक्तः मुक्त बन्धनः ।
अविज्ञात गतिः जह्यात्, सः वै धीरः उदाहृतः ॥

शब्दार्थ—

गत	७.	रहित	अविज्ञात	२.	न जानने वाला (जो पुरुष)
स्वार्थम्	६.	स्वार्थ साधन से	गतिः	१.	मृत्यु को
इमम्	८.	इस	जह्यात्	१०.	छोड़ता है
देहम्	९.	शरीर को	सः	११.	वही
विरक्तः	३.	वैराग्य भाव से	वै	१२.	(पुरुष)
मुक्त	५.	काटकर	धीरः,	१३.	धैर्यशाली
बन्धनः ।	४.	(संसार के) बन्धन को	उदाहृतः ॥	१४.	कहा गया है

श्लोकार्थ—मृत्यु को न जानने वाला जो पुरुष वैराग्य भाव से संसार के बन्धन को काटकर स्वार्थ-साधन से रहित इस शरीर को छोड़ता है, वही पुरुष धैर्यशाली कहा गया है ।

षड्विंशः श्लोकः

यः स्वकात्परतो वेह जातनिर्वेद आत्मवान् ।
हृदि कृत्वा हरिं गेहात्प्रव्रजेत्स नरोत्तमः ॥२६॥

पदच्छेद—

यः स्वकात् परतः वा इह, जात निर्वेदः आत्मवान् ।
हृदि कृत्वा हरिम् गेहात्, प्रव्रजेत् सः नर उत्तमः ॥

शब्दार्थ—

यः	४.	जो (व्यक्ति)	हृदि	८.	हृदय में
स्वकात्	५.	स्वयं	कृत्वा	१०.	बैठाकर
परतः	७.	दूसरों के समझाने से	हरिम्	९.	भगवान् हरि को
वा	६.	अथवा	गेहात्	११.	घर से
इह	१.	इस संसार में	प्रव्रजेत्	१२.	संन्यास लेकर चला जाता है
जात निर्वेदः	२.	अनासक्त (और)	सः	१३.	वही
आत्मवान् ।	३.	जितेन्द्रिय	नर उत्तमः ॥	१४.	उत्तम पुरुष है

श्लोकार्थ—इस संसार में अनासक्त और जितेन्द्रिय जो व्यक्ति स्वयम् अथवा दूसरों के समझाने से हृदय में भगवान् हरि को बैठाकर घर से संन्यास लेकर चला जाता है; वही उत्तम पुरुष है ।

सप्तविंशः श्लोकः

अथोदीचीं दिशं यातु स्वैरज्ञातगतिर्भवान् ।
इतोऽर्वाक प्रायशः कालः पुंसां गुणविकर्षणः ॥२७॥

पदच्छेद—

अथ उदीचीम् दिशम् यातु, स्वैः अज्ञात गतिः भवान् ।
इतः अर्वाक् प्रायशः कालः, पुंसाम् गुण विकर्षणः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	अब	**इतः**	८.	(क्योंकि) इससे
उदीचीम्, दिशम्	६.	उत्तर, दिशा की ओर	**अर्वाक्**	६.	आगे आने वाला
यातु	७.	प्रस्थान कर दें	**प्रायशः**	१३.	प्रायः
स्वैः	३.	अपने जनों से	**कालः**	१०.	समय
अज्ञात	५.	बिना बताये ही	**पुंसाम्**	११.	मनुष्यों के
गतिः	४.	जाने की बात	**गुण**	१२.	उत्तम गुणों को
भवान् ।	२.	आप	**विकर्षणः ॥**	१४.	समाप्त कर देने वाला (होगा)

श्लोकार्थ—अब आप अपने जनों से जाने की बात बिना बताये ही उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर दें, क्योंकि इससे आगे आने वाला समय मनुष्यों के उत्तम गुणों को प्रायः समाप्त कर देने वाला होगा।

अष्टाविंशः श्लोकः

एवं राजा विदुरेणानुजेन, प्रज्ञाचक्षुर्बोधित आजमीढः ।
छित्वा स्वेषु स्नेहपाशान्द्रढिम्नो, निश्चक्राम भ्रातृसंदर्शिताध्वा ॥२८॥

पदच्छेद—

एवं राजा विदुरेण अनुजेन, प्रज्ञाचक्षुः बोधितः आजमीढः ।
छित्वा स्वेषु स्नेह पाशान् द्रढिम्नः, निश्चक्राम भ्रातृ संदर्शित अध्वा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	**छित्वा**	११.	काट कर
राजा	७.	राजा धृतराष्ट्र	**स्वेषु, स्नेह**	८.	आत्मीय जनों से, प्रेम के
विदुरेण	२.	विदुर जी के द्वारा	**पाशान्**	१०.	बन्धनों को
अनुजेन	१.	अपने छोटे भाई	**द्रढिम्नः**	६.	मजबूत
प्रज्ञाचक्षुः	६.	अन्धे (ज्ञान नेत्र वाले)	**निश्चक्राम**	१४.	निकल पड़े
बोधितः	४.	समझाये जाने पर	**भ्रातृ**	१२.	भाई के द्वारा
आजमीढः ।	५.	अजमेर देश के अधिपति	**संदर्शित, अध्वा ॥**	१३.	दिखाये हुए, रास्ते से

श्लोकार्थ—अपने छोटे भाई विदुर जी के द्वारा इस प्रकार समझाये जाने पर अजमेर देश के अधिपति अन्धे राजा धृतराष्ट्र आत्मीय जनों से प्रेम के मजबूत बन्धनों को काटकर भाई के द्वारा दिखाये हुए रास्ते से निकल पड़े।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

पतिं प्रयान्तं सुबलस्य पुत्री, पतिव्रता चानुजगाम साध्वी ।
हिमालयं न्यस्तदण्डप्रहर्षं, मनस्विनामिव सत्सम्प्रहारः ॥२९॥

पदच्छेद— **पतिम् प्रयान्तम् सुबलस्य पुत्री, पतिव्रता च अनुजगाम साध्वी ।**
हिमालयम् न्यस्त दण्ड प्रहर्षम्, मनस्विनाम् इव सत् सम्प्रहारः ॥

शब्दार्थ—

पतिम्	५.	अपने पति धृतराष्ट्र को	हिमालयम्	१२.	हिमालय की ओर
प्रयान्तम्	१३.	संन्यास भाव से जाते हुए (देखकर)	न्यस्त दण्ड	१०.	संन्यासियों के लिये
सुबलस्य	३.	राजा सुबल की	प्रहर्षम्,	११.	सुखदायी
पुत्री,	४.	पुत्री (गान्धारी) ने	मनस्विनाम्	६.	वीर पुरुषों पर हुए
पतिव्रता, च	१.	पतिव्रता और	इव	९.	भाँति
अनुजगाम	१४.	(उनके) पीछे-पीछे गमन किया	सत्	७.	न्यायोचित
साध्वी ।	२.	तपस्वनी	सम्प्रहारः ॥	८.	शस्त्र-आघात की

श्लोकार्थ—पतिव्रता और तपस्विनी राजा सुबल की पुत्री गान्धारी ने अपने पति धृतराष्ट्र को, वीर पुरुषों पर हुए न्यायोचित शस्त्र-आघात की भाँति संन्यासियों के लिये सुखदायी हिमालय पर्वत की ओर संन्यास भाव से जाते हुये देखकर उनके पीछे-पीछे गमन किया ।

त्रिंशः श्लोकः

अजातशत्रुः कृतमैत्रो हुताग्नि-विप्रान् नत्वा तिलगोभूमिरुक्मैः ।
गृहं प्रविष्टो गुरुवन्दनाय, न चापश्यत्पितरौ सौबलीं च ॥३०॥

पदच्छेद—**अजातशत्रुः कृत मैत्रः हुत अग्निः, विप्रान् नत्वा तिल गो भूमि रुक्मैः ।**
गृहम् प्रविष्टः गुरु वन्दनाय, न च अपश्यत् पितरौ सौबलीम् च ॥

शब्दार्थ—

अजात शत्रुः	१.	राजा युधिष्ठिर ने	**गृहम्, प्रविष्टः**	१०.	घर में, प्रवेश किया
कृत मैत्रः	२.	सन्ध्यावन्दन करके	**गुरु वन्दनाय,**	९.	गुरुजनों को प्रणाम करने के लिये
हुत	४.	हवन करके (और)	**न**	१५.	नहीं
अग्निः,	३.	अग्नि में	**च**	११.	किन्तु (उन्होंने वहाँ पर)
विप्रान्	७.	ब्राह्मणों का	**अपश्यत्**	१६.	देखा
नत्वा	८.	सम्मान करके	**पितरौ**	१२.	दोनों पिता (धृतराष्ट्र और विदुरजी) को
तिल, गौ, भूमि	५.	तिल, गौ, भूमि (तथा)	**सौबलीम्**	१४.	माता गान्धारी को
रुक्मैः ।	६.	सुवर्ण के द्वारा	**च ॥**	१३.	तथा

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर ने सन्ध्यावन्दन करके, अग्नि में हवन करके और तिल, गौ, भूमि तथा सुवर्ण के द्वारा ब्राह्मणों का सम्मान करके गुरुजनों को प्रणाम करने के लिये घर में प्रवेश किया; किन्तु उन्होंने वहाँ पर दोनों पिता धृतराष्ट्र और विदुर जी को तथा माता गान्धारी को नहीं देखा ।

एकत्रिंशः श्लोकः

तत्र सञ्जयमासीनं पप्रच्छोद्विग्नमानसः ।
गावल्गणे क्व नस्तातो वृद्धो हीनश्च नेत्रयोः ॥३१॥

पदच्छेद— तत्र सञ्जयम् आसीनम्, पप्रच्छ उद्विग्न मानसः ।
गावल्गणे क्व नः तातः, वृद्धः हीनः च नेत्रयोः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	३.	वहाँ पर	**क्व**	१४.	कहाँ (हैं)
सञ्जयम्	५.	संजय से	**नः**	८.	हमारे
आसीनम्	४.	बैठे हुये	**तातः**	१३.	पिता (धृतराष्ट्र)
पप्रच्छ	६.	पूछा	**वृद्धः**	९.	वृद्ध
उद्विग्न	१.	व्याकुल	**हीनः**	१२.	रहित
मानसः ।	२.	चित्त (युधिष्ठिर) ने	**च**	१०.	और
गावल्गणे	७.	हे गावल्गण के पुत्र संजय !	**नेत्रयोः ॥**	११.	नेत्रों से

श्लोकार्थ—व्याकुल चित्त युधिष्ठिर ने वहाँ पर बैठे हुये संजय से पूछा, हे गावल्गण के पुत्र संजय ! हमारे वृद्ध और नेत्रों से रहित पिता धृतराष्ट्र कहाँ हैं ?

द्वात्रिंशः श्लोकः

अम्बा च हतपुत्राऽऽर्ता पितृव्यः क्व गतः सुहृत् ।
अपि मय्यकृतप्रज्ञे हतबन्धुः स भार्यया ।
आशंसमानः शमलं गङ्गायां दुःखितोऽपतत् ॥३२॥

पदच्छेद— अम्बा च हत पुत्रा आर्ता, पितृव्यः क्व गतः सुहृत् ।
अपि मयि अकृत प्रज्ञे, हत बन्धुः सः भार्यया ।
आशंसमानः शमलम्, गङ्गायाम् दुःखितः अपतत् ॥

शब्दार्थ—

अम्बा, च	२.	माता, और	**हत बन्धुः**	१०.	मृत पुत्रों वाले
हत पुत्रा, आर्ता	१.	मृत पुत्रों वाली, दुःखिया	**सः भार्यया ।**	११.	वे, पत्नी गान्धारी के साथ
पितृव्यः, क्व	४.	चाचा, कहाँ	**आशंसमानः**	९.	आशंका करते हुये
गतः	५.	गये	**शमलम्**	८.	अपराध की
सुहृत् ।	३.	हितैषी	**गङ्गायाम्**	१३.	गंगा में
अपि, मयि	६.	क्या, मुझ	**दुःखितः**	१२.	दुःखी होकर
अकृत प्रज्ञे	७.	मन्द बुद्धि से	**अपतत् ॥**	१४.	कूद गये

श्लोकार्थ—मृत पुत्रों वाली दुःखिया माता और हितैषी चाचा कहाँ गये ? क्या मुझ मन्द बुद्धि से अपराध की आशङ्का करते हुये मृत पुत्रों वाले वे पत्नी गान्धारी के साथ दुःखी होकर गङ्गा में कूद गये ?

त्रयस्त्रिंशः श्लोक

पितर्युपरते पाण्डौ सर्वान् नः सुहृदः शिशून् ।
अरक्षतां व्यसनतः पितृव्यौ क्व गतावितः ॥३३॥

पदच्छेद—

पितरि उपरते पाण्डौ, सर्वान् नः सुहृदः शिशून् ।
अरक्षताम् व्यसनतः, पितृव्यौ क्व गतौ इतः ॥

शब्दार्थ—

पितरि	१. हमारे पिता		शिशून् ।	५. बाल्यावस्था में	
उपरते	३. मर जाने पर		अरक्षताम्	१०. रक्षा की थी (वे दोनों)	
पाण्डौ	२. पाण्डु के		व्यसनतः	९. विपत्तियों से	
सर्वान्	७. सभी		पितृव्यौ	४. दोनों चाचाओं ने	
नः	६. हम		क्व	१२. कहाँ	
सुहृदः	८. बन्धुओं की		गतौ	१३. चले गये	
			इतः ॥	११. यहाँ से	

श्लोकार्थ—हमारे पिता पाण्डु के मर जाने पर दोनों चाचाओं ने बाल्यावस्था में हम सभी बन्धुओं की विपत्तियों से रक्षा की थी । वे दोनों यहाँ से कहाँ चले गये ?

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच—

कृपया स्नेहवैक्लव्यात् सूतो विरहकर्शितः ।
आत्मेश्वरमचक्षाणो न प्रत्याहातिपीडितः ॥३४॥

पदच्छेद—

कृपया स्नेह वैक्लव्यात्, सूतः विरह कर्शितः ।
आत्म ईश्वरम् अचक्षाणः, न प्रत्याह अति पीडितः ॥

शब्दार्थ—

कृपया	३. दयाभाव (और)	आत्म ईश्वरम्	९. अपने स्वामी धृतराष्ट्र को
स्नेह	४. प्रेम की	अचक्षाणः	१०. न देखते हुये (युधिष्ठिर के प्रश्न का)
वैक्लव्यात्	५. विकलता से	न	११. नहीं
सूतः	८. संजय जी ने	प्रत्याह	१२. उत्तर दिया
विरह	१. वियोग से	अति	६. अत्यन्त
कर्शितः ।	२. आतुर (तथा)	पीडितः ॥	७. दुःखित

श्लोकार्थ—वियोग से आतुर तथा दया भाव और प्रेम की विकलता से अत्यन्त दुःखित संजय जी ने अपने अपने स्वामी धृतराष्ट्र को न देखते हुये युधिष्ठिर के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

विमृज्याश्रूणि पाणिभ्यां विष्टभ्यात्मानमात्मना ।
अजातशत्रुं प्रत्यूचे प्रभोः पादावनुस्मरन् ॥३५॥

पदच्छेद—

विमृज्य अश्रूणि पाणिभ्याम्, विष्टभ्य आत्मानम् आत्मना ।
अजातशत्रुम् प्रत्यूचे, प्रभोः पादौ अनुस्मरन् ॥

शब्दार्थ—

विमृज्य	३.	पोंछकर (तथा)	अजातशत्रुम्	१०.	युधिष्ठिर से
अश्रूणि	२.	आँसुओं को	प्रत्यूचे	११.	कहा
पाणिभ्याम्	१.	दोनों हाथों से	प्रभोः	७.	(अपने) स्वामी (धृतराष्ट्र) के
विष्टभ्य	६.	स्थिर करके (संजय ने)	पादौ	८.	चरणों का
आत्मानम्	५.	मन को	अनुस्मरन् ॥	९.	स्मरण करते हुये
आत्मना ।	४.	बुद्धि से			

श्लोकार्थ—दोनों हाथों से आँसुओं को पोंछ कर तथा बुद्धि से मन को स्थिर करके संजय ने अपने स्वामी धृतराष्ट्र के चरणों का स्मरण करते हुए युधिष्ठिर से कहा ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

संजय उवाच—

नाहं वेद व्यवसितं पित्रोर्वः कुलनन्दन ।
गान्धार्या वा महाबाहो मुषितोऽस्मि महात्मभिः ॥३६॥

पदच्छेद—

न अहम् वेद व्यवसितम्, पित्रोः वः कुलनन्दन ।
गान्धार्याः वा महाबाहो, मुषितः अस्मि महात्मभिः ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं	गान्धार्याः	६.	माता गान्धारी के
अहम्	२.	मैं	वा	५.	अथवा
वेद	९.	जानता हूँ	महाबाहो	१०.	हे महान् बाहु वाले युधिष्ठिर जी
व्यवसितम्	७.	संकल्प को	मुषितः	१२.	(मैं) ठगा गया
पित्रोः	४.	दोनों चाचाओं के	अस्मि	१३.	हूँ
वः	३.	आपके	महात्मभिः ॥	११.	उन महात्माओं के द्वारा
कुलनन्दन ।	१.	हे कुरु कुल नन्दन युधिष्ठिर जी !			

श्लोकार्थ—हे कुरु कुल नन्दन युधिष्ठिर जी ! मैं आपके दोनों चाचाओं के अथवा माता गान्धारी के संकल्प को नहीं जानता हूँ । हे महान् बाहु वाले युधिष्ठिर जी ! उन महात्माओं के द्वारा मैं ठगा गया हूँ ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अथाजगाम भगवान्नारदः सहतुम्बुरुः ।
प्रत्युत्थायाभिवाद्याह सानुजोऽभ्यर्चयन्निव ॥३७॥

पदच्छेद— अथ आजगाम भगवान्, नारदः सह तुम्बुरुः ।
प्रत्युत्थाय अभिवाद्य आह, स अनुजः अभ्यर्चयन् इव ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	उसी समय	प्रत्युत्थाय	८.	खड़े होकर (और)
आजगाम	६.	(वहाँ पर) पधारे	अभिवाद्य	९.	प्रणाम करके (उनसे)
भगवान्	४.	देवर्षि	आह	१२.	बोले
नारदः	५.	नारद जी	स अनुजः	७.	(राजा युधिष्ठिर) भाइयों के साथ
सह	३.	साथ	अभ्यर्चयन्	१०.	आदर
तुम्बुरुः ।	२.	तुम्बुरु गन्धर्व के	इव ॥	११.	के साथ

श्लोकार्थ—उसी समय तुम्बुरु गन्धर्व के साथ देवर्षि नारद जी वहाँ पर पधारे। राजा युधिष्ठिर भाइयों के साथ खड़े होकर और प्रणाम करके उनसे आदर के साथ बोले।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—

नाहं वेद गतिं पित्रोर्भगवन् क्व गतावितः ।
अम्बा वा हतपुत्राऽऽर्ता क्व गता च तपस्विनी ॥३८॥

पदच्छेद— न अहम् वेद गतिम् पित्रोः, भगवन् क्व गतौ इतः ।
अम्बा वा हत पुत्रा आर्ता, क्व गता च तपस्विनी ॥

शब्दार्थ—

न	५.	नहीं	अम्बा	१६.	माता (गान्धारी)
अहम्	२.	मैं (अपने)	वा	१०.	तथा
वेद	६.	पा रहा हूँ	हत	११.	मृत
गतिम्	४.	पता	पुत्रा	१२.	पुत्रों वाली
पित्रोः	३.	दोनों चाचाओं का	आर्ता	१३.	दुःखिया
भगवन्	१.	हे देवर्षि नारद जी !	क्व	१७.	कहाँ
क्व	८.	(वे दोनों) कहाँ	गता	१८.	चली गईं हैं
गतौ	९.	चले गये	च	१४.	और
इतः ।	७.	यहाँ से	तपस्विनी ॥	१५.	तपस्विनी

श्लोकार्थ—हे देवर्षि नारदजी ! मैं अपने दोनों चचाओं का पता नहीं पा रहा हूँ, यहाँ से दोनों वे कहाँ चले गये ? तथा मृत पुत्रों वाली, दुःखिया और तपस्विनी माता गान्धारी कहाँ चली गईं हैं ?

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

कर्णधार इवापारे भगवान् पारदर्शकः ।
अथाबभाषे भगवान्नारदो मुनिसत्तमः ॥३९॥

पदच्छेद---
कर्णधारः इव अपारे, भगवान् पारदर्शकः ।
अथ आबभाषे भगवान् , नारदः मुनि सत्तमः ॥

शब्दार्थ---

कर्णधारः	३.	खिवैया के	अथ	६.	तदनन्तर
इव	४.	समान	आबभाषे	१०.	बोले
अपारे	२.	अपार संसार समुद्र में	भगवान्	८.	भगवान्
भगवान्	१.	भगवन् ! आपही	नारदः	९.	नारद जी
पारदर्शकः ।	५.	किनारा दिखाने वाले हैं	मुनि सत्तमः ॥	७.	मुनियों में श्रेष्ठ

श्लोकार्थ---राजा युधिष्ठिर ने कहा, भगवन् ! आपही अपार संसार समुद्र में खिवैया के समान किनारा दिखाने वाले हैं । तदनन्तर मुनियों में श्रेष्ठ भगवान् नारद जी बोले ।

चत्वारिंशः श्लोकः

मा कंचन शुचो राजन् यदीश्वरवशं जगत् ।
लोकाः सपाला यस्येमे वहन्ति बलिमीशितुः ।
स संयुनक्ति भूतानि स एव वियुनक्ति च ॥४०॥

पदच्छेद---
मा कंचन शुचः राजन् , यत् ईश्वर वशम् जगत् ।
लोकाः स पालाः यस्य इमे , वहन्ति बलिम् ईशितुः ।
सः संयुनक्ति भूतानि, सः एव वियुनक्ति च ॥

शब्दार्थ---

मा	३.	मत करो	इमे	९.	ये
कंचन, शुचः	२.	किसी का, शोक	वहन्ति	१४.	पालन करते हैं
राजन्	१.	हे राजन् !	बलिम्	१३.	आदेश का
यत्	४.	क्योंकि	ईशितुः ।	१२.	स्वामी के
ईश्वर	६.	काल भगवान् के	सः	१५.	वही (प्रभु)
वशम्	७.	आधीन (है)	संयुनक्ति	१७.	आपस में मिलाता है
जगत् ।	५.	(यह) संसार	भूतानि	१६.	प्राणियों को
लोकाः	१०.	चौदह लोक	सः एव	१९.	वही (उन्हें)
सपालाः	८.	लोकपालों के सहित	वियुनक्ति	२०.	अलग करता है
यस्य	११.	जिस	च ॥	१८.	और

श्लोकार्थ---हे राजन् ! किसी का शोक मत करो; क्योंकि यह संसार काल भगवान् के आधीन है । लोकपालों के सहित ये चौदह लोक जिस स्वामी के आदेश का पालन करते हैं, वही प्रभु प्राणियों को आपस में मिलाता है और वही उन्हें अलग करता है ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यथा गावो नसि प्रोतास्तन्त्यां बद्धाः स्वदामभिः ।
वाक्तन्त्यां नामभिर्बद्धा वहन्ति बलिमीशितुः ॥४१॥

पदच्छेद---

यथा गावः नसि प्रोताः, तन्त्याम् बद्धाः स्व दामभिः ।
वाक् तन्त्याम् नामभिः बद्धाः, वहन्ति बलिम् ईशितुः ॥

शब्दार्थ---

यथा	१.	जैसे	वाक्	८.	(सांसारिक प्राणी) वेदवाणी रूपी
गावः	२.	बैल	तन्त्याम्	९.	रस्सी में
नसि	३.	नाक में	नामभिः	१०.	अनेक नामों से
प्रोताः	४.	नथे रहते हैं (और)	बद्धाः	११.	जुड़े हुये
तन्त्याम्	६.	एक लम्बी रस्सी में	वहन्ति	१४.	पालन करते हैं
बद्धाः	७.	बंधे रहते हैं (उसी प्रकार)	बलिम्	१३.	आज्ञा का
स्व दामभिः ।	५.	गले की रस्सियों से	ईशितुः ॥	१२.	ईश्वर की

श्लोकार्थ---जैसे बैल नाक में नथे रहते हैं और गले की रस्सियों से एक लम्बी रस्सी में बंधे रहते हैं, उसी प्रकार सांसारिक प्राणी वेदवाणी रूपी रस्सी में अनेक नामों से जुड़े हुये ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

यथा क्रीडोपस्कराणां संयोगविगमाविह ।
इच्छया क्रीडितुः स्यातां तथैवेशेच्छया नृणाम् ॥४२॥

पदच्छेद---

यथा क्रीडा उपस्कराणाम्, संयोग विगमौ इह ।
इच्छया क्रीडितुः स्याताम्, तथैव ईश इच्छया नृणाम् ॥

शब्दार्थ---

यथा	१.	जिस प्रकार	**क्रीडितुः**	६.	खिलाड़ी की
क्रीडा	२.	खेल की	**स्याताम्**	८.	होता है
उपस्कराणाम्	३.	सामग्रियों का	**तथैव**	९.	उसी प्रकार
संयोग	४.	परस्पर संयोग और	**ईश**	१२.	ईश्वर की
विगमौ	५.	वियोग	**इच्छया**	१३.	इच्छा से होता है
इह ।	१०.	इस संसार में	**नृणाम् ॥**	११.	मनुष्यों का (मिलना और बिछुड़ना)
इच्छया	७.	इच्छा से			

श्लोकार्थ---जिस प्रकार खेल की सामग्रियों का परस्पर संयोग और वियोग खिलाड़ी की इच्छा से होता है, उसी प्रकार इस संसार में मनुष्यों का मिलना और बिछुड़ना ईश्वर की इच्छा से होता है ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

यन्मन्यसे ध्रुवं लोकमध्रुवं वा न चोभयम् ।
सर्वथा न हि शोच्यास्ते स्नेहादन्यत्र मोहजात् ॥४३॥

पदच्छेद—

यत् मन्यसे ध्रुवम् लोकम्, अध्रुवम् वा न च उभयम् ।
सर्वथा न हि शोच्याः ते, स्नेहात् अन्यत्र मोहजात् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	क्योंकि (तुम)	**उभयम् ।**	७.	दोनों रूपों से
मन्यसे	९.	मानते हो (अतः)	**सर्वथा**	१४.	बिल्कुल
ध्रुवम्	३.	नित्य	**न हि**	१६.	नहीं (हैं)
लोकम्	२.	लोक को	**शोच्याः**	१५.	शोक के योग्य
अध्रुवम्	५.	अनित्य	**ते**	१३.	वे (चाचा आदि)
वा	६.	अथवा	**स्नेहात्**	११.	आसक्ति के
न	८.	रहित	**अन्यत्र**	१२.	अतिरिक्त
च	४.	या	**मोहजात् ॥**	१०.	अज्ञान से उत्पन्न

श्लोकार्थ—क्योंकि तुम लोक को नित्य या अनित्य अथवा दोनों रूपों से रहित मानते हो। अतः अज्ञान से उत्पन्न आसक्ति के अतिरिक्त वे चाचा आदि बिल्कुल शोक के योग्य नहीं हैं।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्माज्जह्यङ्ग वैक्लव्यमज्ञानकृतमात्मनः ।
कथं त्वनाथाः कृपणा वर्तेरंस्ते च मां विना ॥४४॥

पदच्छेद—

तस्मात् जहि अङ्ग वैक्लव्यम्, अज्ञान कृतम् आत्मनः ।
कथम् तु अनाथाः कृपणाः, वर्तेरन् ते च माम् विना ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	**तु**	१४.	इस
जहि	१६.	छोड़ दो	**अनाथाः**	३.	अशरण
अङ्ग	२.	हे तात युधिष्ठिर !	**कृपणाः**	५.	दीन
वैक्लव्यम्	१५.	विकलता को	**वर्तेरन्**	१०.	रहते होंगे
अज्ञान	११.	मोह से	**ते**	६.	वे (चाचा आदि)
कृतम्	१२.	उत्पन्न	**च**	४.	और
आत्मनः ।	१३.	मन की	**माम्**	७.	मेरे
कथम्	९.	कैसे	**विना ॥**	८.	बगैर

श्लोकार्थ—इसलिये हे तात युधिष्ठिर ! अशरण और दीन वे चाचा आदि मेरे बगैर कैसे रहते होंगे; मोह से उत्पन्न मन की इस विकलता को छोड़ दो।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

कालकर्मगुणाधीनो देहोऽयं पाञ्चभौतिकः ।
कथमन्यांस्तु गोपायेत्सर्पग्रस्तो यथा परम् ॥४५॥

पदच्छेद—

काल कर्म गुण अधीनः, देहः अयम् पाञ्चभौतिकः ।
कथम् अन्यान् तु गोपायेत् , सर्प ग्रस्तः यथा परम् ॥

शब्दार्थ—

काल	७.	मृत्यु	अन्यान्	१४.	दूसरों की
कर्म	८.	भले-बुरे कर्म (और)	तु	५.	उसी प्रकार
गुण	६.	सत्, रज, तम गुणों के	गोपायेत्	१५.	रक्षा कर सकता है
अधीनः	१०.	वश में रहने वाला	सर्प	२.	साँप के
देहः	१२.	शरीर	ग्रस्तः	३.	मुँह में पड़ा हुआ (व्यक्ति)
अयम्	११.	यह	यथा	१.	जैसे
पाञ्चभौतिकः ।	६.	पञ्च तत्त्वों से रचित(तथा)	परम् ॥	४.	दूसरों की (रक्षा नहीं कर सकता)
कथम्	१३.	कैसे			

श्लोकार्थ—जैसे साँप के मुँह मे पड़ा हुआ व्यक्ति दूसरों की रक्षा नहीं कर सकता, उसी प्रकार पञ्च तत्त्वों से रचित तथा मृत्यु, भले-बुरे कर्म और सत्, रज, तम गुणों के वश में रहने वाला यह शरीर कैसे दूसरों की रक्षा कर सकता है ?

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

अहस्तानि सहस्तानामपदानि चतुष्पदाम् ।
फल्गूनि तत्र महतां जीवो जीवस्य जीवनम् ॥४६॥

पदच्छेद—

अ हस्तानि स हस्तानाम् , अ पदानि चतुष्पदाम् ।
फल्गूनि तत्र महताम् , जीवः जीवस्य जीवनम् ॥

शब्दार्थ—

अ हस्तानि	१.	बिना हाथ वाले	तत्र	५.	उनमें भी
स हस्तानाम्	२.	हाथ वालों के (और)	महताम्	७.	बड़ों के (इस प्रकार)
अ पदानि	३.	बिना पैर वाले	जीवः	८.	एक प्राणी
चतुष्पदाम् ।	४.	चार पैर वालों के	जीवस्य	६.	दूसरे प्राणी का
फल्गूनि	६.	छोटे	जीवनम् ॥	१०.	जीवन-आहार है

श्लोकार्थ—बिना हाथ वाले हाथ वालों के और बिना पैर वाले चार पैर वालों के, उनमें भी छोटे बड़ों के, इस प्रकार एक प्राणी दूसरे प्राणी का जीवन-आहार है ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तदिदं भगवान् राजन्नेक आत्माऽऽत्मनां स्वदृक् ।
अन्तरोऽनन्तरो भाति पश्य तं माययोरुधा ॥४७॥

पदच्छेद—

तत् इदम् भगवान् राजन् ; एकः आत्मा आत्मनाम् स्वदृक् ।
अन्तरः अनन्तरः भाति, पश्य तम् मायया उरुधा ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	वे ही	स्वदृक् ।	८.	स्वयम् प्रकाशमान
इदम्	३.	ये	अन्तरः	९.	(मेरे) अन्दर (और)
भगवान्	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	अनन्तरः	१०.	बाहर
राजन्	१.	हे राजा युधिष्ठिर !	भाति	११.	प्रकाशित हो रहे हैं
एकः	६.	एक	पश्य	१४.	देखो
आत्मा	७.	आत्मस्वरूप	तम् , मायया	१२.	उन्हें, माया के द्वारा
आत्मनाम्	५.	प्राणियों में	उरुधा ॥	१३.	अनेक रूपों में

श्लोकार्थ—हे राजा युधिष्ठिर ! वे ही ये भगवान् श्रीकृष्ण प्राणियों में एक आत्मस्वरूप, स्वयम् प्रकाशमान मेरे अन्दर और बाहर प्रकाशित हो रहे हैं, उन्हें माया के द्वारा अनेक रूपों में देखो ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

सोऽयमद्य महाराज भगवान् भूतभावनः ।
कालरूपोऽवतीर्णोऽस्यामभावाय सुरद्विषाम् ॥४८॥

पदच्छेद—

सः अयम् अद्य महाराज, भगवान् भूत भावनः ।
काल रूपः अवतीर्णः अस्याम् , अभावाय सुर द्विषाम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वे ही	काल रूपः	३.	काल स्वरूप
अयम्	५.	ये	अवतीर्णः	१२.	अवतार लिये हैं
अद्य	११.	इस समय	अस्याम्	७.	इस (पृथ्वी) पर
महाराज	१.	हे महाराज युधिष्ठिर !	अभावाय	१०.	विनाश के लिये
भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण	सुर	८.	देवताओं के
भूत भावनः ।	२.	प्राणियों के रक्षक (और)	द्विषाम् ॥	९.	द्रोही राक्षसों के

श्लोकार्थ—हे महाराज युधिष्ठिर ! प्राणियों के रक्षक और कालस्वरूप वे ही ये भगवान् श्रीकृष्ण इस पृथ्वी पर देवताओं के द्रोही राक्षसों के विनाश के लिये इस समय अवतार लिये हैं ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

निष्पादितं देवकृत्यमवशेषं प्रतीक्षते ।
तावद् यूयमवेक्षध्वं भवेद् यावदिहेश्वरः ॥४९॥

पदच्छेद—

निष्पादितम् देव कृत्यम्, अवशेषम् प्रतीक्षते ।
तावत् यूयम् अवेक्षध्वम्, भवेत् यावत् इह ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

निष्पादितम्	३.	पूरा कर लिया है (और)	यूयम्	११.	तुम लोग (भी)
देव	१.	देवताओं के	अवेक्षध्वम्	१२.	प्रतीक्षा करो
कृत्यम्	२.	कार्य को	भवेत्	९.	रहते हैं
अवशेषम्	४.	बचे हुये कार्य की	यावत्	७.	जब तक
प्रतीक्षते ।	५.	प्रतीक्षा कर रहे हैं (अतः)	इह	६.	इस पृथ्वी पर
तावत्	१०.	तब तक	ईश्वरः ॥	८.	भगवान् श्री कृष्ण

श्लोकार्थ—भगवान् श्री कृष्ण ने देवताओं के कार्य को पूरा कर लिया है और बचे हुये कार्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं; अतः इस पृथ्वी पर जब तक भगवान् श्री कृष्ण रहते हैं, तब तक तुम लोग भी प्रतीक्षा करो ।

पञ्चाशः श्लोकः

धृतराष्ट्रः सह भ्रात्रा गान्धार्या च स्वभार्यया ।
दक्षिणेन हिमवत ऋषीणामाश्रमं गतः ॥५०॥

पदच्छेद—

धृतराष्ट्रः सह भ्रात्रा, गान्धार्या च स्व भार्यया ।
दक्षिणेन हिमवतः, ऋषीणाम् आश्रमम् गतः ॥

शब्दार्थ—

धृतराष्ट्रः	१.	राजा धृतराष्ट्र	भार्यया ।	५.	पत्नी
सह	७.	साथ	दक्षिणेन	९.	दक्षिण की ओर
भ्रात्रा	२.	भाई के	हिमवतः	८.	हिमालय से
गान्धार्या	६.	गान्धारी के	ऋषीणाम्	१०.	सप्त ऋषियों के
च	३.	और	आश्रमम्	११.	आश्रम में
स्व	४.	अपनी	गतः ॥	१२.	चले गये हैं

श्लोकार्थ—राजा धृतराष्ट्र भाई के और अपनी पत्नी गान्धारी के साथ हिमालय से दक्षिण की ओर सप्त ऋषियों के आश्रम में चले गये हैं ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

स्रोतोभिः सप्तभिर्या वै स्वर्धुनी सप्तधा व्यधात् ।
सप्तानां प्रीतये नाना सप्तस्रोतः प्रचक्षते ॥५१॥

पदच्छेद—

स्रोतोभिः सप्तभिः या वै, स्वर्धुनी सप्तधा व्यधात् ।
सप्तानाम् प्रीतये नाना, सप्त स्रोतः प्रचक्षते ॥

शब्दार्थ—

स्रोतोभिः	७.	धाराओं के द्वारा	**व्यधात् ।**	९.	बँट गई हैं
सप्तभिः	६.	सात	**सप्तानाम्**	३.	सातों (ऋषियों) की
या	१.	जो	**प्रीतये**	४.	प्रसन्नता के लिये
वै	५.	ही	**नाना**	१०.	(उन) अनेक (धाराओं को)
स्वर्धुनी	२.	गंगा	**सप्त स्रोतः**	११.	सप्त स्रोत नाम से
सप्तधा	८.	सात रूपों में	**प्रचक्षते ॥**	१२.	कहते हैं

श्लोकार्थ—जो गंगा सातों ऋषियों की प्रसन्नता के लिये ही सात धाराओं के द्वारा सात रूपों में बँट गई हैं; उन अनेक धाराओं को सप्त स्रोत नाम से कहते हैं ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

स्नात्वानुसवनं तस्मिन्हुत्वा चाग्नीन्यथाविधि ।
अब्भक्ष उपशान्तात्मा स आस्ते विगतैषणः ॥५२॥

पदच्छेद—

स्नात्वा अनुसवनम् तस्मिन्, हुत्वा च अग्नीन् यथा विधि ।
अप् भक्षः उपशान्त आत्मा, सः आस्ते विगत एषणः ॥

शब्दार्थ—

स्नात्वा	४.	स्नान करके (तथा)	**अप् भक्षः**	८.	केवल जल का आहार करते हुये
अनुसवनम्	३.	तीनों काल	**उपशान्त**	९.	शान्त
तस्मिन्	२.	उस (आश्रम) में	**आत्मा**	१०.	चित्त
हुत्वा	७.	हवन करके	**सः**	१.	वे (धृतराष्ट्र)
च	११.	और	**आस्ते**	१४.	स्थित हैं
अग्नीन्	५.	तीनों अग्नियों में	**विगत**	१३.	रहित होकर
यथा विधि ।	६.	विधिपूर्वक	**एषणः ॥**	१२.	कामनाओं से

श्लोकार्थ—वे धृतराष्ट्र उस आश्रम में तीनों काल स्नान करके तथा तीनों अग्नियों में विधिपूर्वक हवन करके केवल जल का आहार करते हुये शान्त चित्त और कामनाओं से रहित होकर स्थित हैं ।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

जितासनो जितश्वासः प्रत्याहृतषडिन्द्रियः ।
हरिभावनया ध्वस्तरजःसत्त्वतमोमलः ॥५३॥

पदच्छेद—

जित आसनः जित श्वासः, प्रत्याहृत षड् इन्द्रियः ।
हरि भावनया ध्वस्त, रजः सत्त्व तमः मलः ॥

शब्दार्थ—

जित आसनः	१. आसन को जीतकर	**ध्वस्त**	१०. नष्ट हो गये हैं
जित श्वासः	२. श्वास को रोककर (तथा)	**रजः**	६. (उनके) रजोगुण
प्रत्याहृत	४. विषयों से अलग कर	**सत्त्व**	७. सत्त्वगुण (और)
षड् इन्द्रियः ।	३. छओं इन्द्रियों को	**तमः**	८. तमो गुण के
हरि भावनया	५. (निरन्तर) भगवान् का ध्यान लगाने से	**मलः ॥**	९. कर्म

श्लोकार्थ—आसन को जीतकर, श्वास को रोककर तथा छओं इन्द्रियों को विषयों से अलग कर निरन्तर भगवान् का ध्यान लगाने से उनके रजोगुण, सत्त्वगुण और तमोगुण के कर्म नष्ट हो गये हैं ।

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

विज्ञानात्मनि संयोज्य क्षेत्रज्ञे प्रविलाप्य तम् ।
ब्रह्मण्यात्मानमाधारे घटाम्बरमिवाम्बरे ॥५४॥

पदच्छेद—

विज्ञान आत्मनि संयोज्य, क्षेत्रज्ञे प्रविलाप्य तम् ।
ब्रह्मणि आत्मानम् आधारे, घट अम्बरम् इव अम्बरे ॥

शब्दार्थ—

विज्ञान	१. (उन्होंने) अहङ्कार को	**ब्रह्मणि**	११. परमात्मा रूप
आत्मनि	२. बुद्धि तत्त्व में	**आत्मानम्**	१०. जीवात्मा को
संयोज्य	३. मिलाकर (और)	**आधारे**	१२. आधार में (विलीन कर लिया है)
क्षेत्रज्ञे	५. जीवात्मा में	**घट अम्बरम्**	८. घटाकाश के
प्रविलाप्य	६. विलीन करके	**इव**	९. समान
तम् ।	४. उस (बुद्धि तत्त्व) को	**अम्बरे ॥**	७. महाकाश में

श्लोकार्थ—उन्होंने अहङ्कार को बुद्धितत्त्व में मिलाकर और उस बुद्धितत्त्व को जीवात्मा में विलीन करके महाकाश में घटाकाश के समान जीवात्मा को परमात्मा रूप अ धार में विलीन कर लिया है ।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

ध्वस्तमायागुणोदर्को निरुद्धकरणाशयः।
निवर्तिताखिलाहार आस्ते स्थाणुरिवाचलः।
तस्यान्तरायो मैवाभूः संन्यस्ताखिलकर्मणः ॥५५॥

पदच्छेद— ध्वस्त माया गुण उदर्कः, निरुद्ध करण आशयः।
निवर्तित अखिल आहारः, आस्ते स्थाणुः इव अचलः।
तस्य अन्तरायः मा एव अभूः, संन्यस्त अखिल कर्मणः ॥

शब्दार्थ—

ध्वस्त	३. मिटा करके	स्थाणुः, इव	९. ठूँठ के, समान
माया, गुण	१. माया के, सत्त्वादि गुणों से	अचलः।	८. अचल
उदर्कः	२. होने वाले परिणामों को	तस्य,अन्तरायः	१४. उनके मार्ग में, विघ्नरूप
निरुद्ध	५. अलग करके (तथा)	मा एव	१५. मत
करण, आशयः।	४. इन्द्रियों को, विषयों से	अभूः	१६. होवो
निर्वर्तित	७. त्याग करके	संन्यस्त	१२. संन्यास लेकर
अखिल, आहारः	६. सभी प्रकार के, आहार का	अखिल	१०. सम्पूर्ण
आस्ते	१३. स्थित हैं	कर्मणः ॥	११ कर्मों से

श्लोकार्थ—इस समय राजा धृतराष्ट्र माया के सत्त्वादि गुणों से होने वाले परिणामों को मिटा करके, इन्द्रियों को विषयों से अलग करके तथा सभी प्रकार के आहार का त्याग करके अचल ठूँठ के समान सम्पूर्ण कर्मों से संन्यास लेकर स्थित हैं। उनके मार्ग में तुम विघ्नरूप मत होवो।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

स वा अद्यतनाद् राजन् परतः पञ्चमेऽहनि।
कलेवरं हास्यति स्वं तच्च भस्मीभविष्यति ॥५६॥

पदच्छेद— सः वा अद्यतनात् राजन्, परतः पञ्चमे अहनि।
कलेवरम् हास्यति स्वम्, तत् च भस्मी भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

सः वा	२. वे (राजा धृतराष्ट्र)	हास्यति	८. छोड़ देंगे
अद्यतनात्	३. आज से	स्वम्	६. अपने
राजन्	१. हे राजा युधिष्ठिर !	तत्	१०. वह (शरीर)
परतः, पञ्चमे	४. आगे के, पाँचवे	च	९. और
अहनि।	५. दिन	भस्मी	११. भस्मसात्
कलेवरम्	७. शरीर को	भविष्यति ॥	१२. हो जावेगा

श्लोकार्थ—हे राजा युधिष्ठिर! वे राजा धृतराष्ट्र आज से आगे के पाँचवे दिन अपने शरीर को छोड़ देंगे और वह शरीर भस्मसात् हो जावेगा।

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

दह्यमानेऽग्निभिर्देहे पत्युः पत्नी सहोटजे ।
बहिः स्थिता पतिं साध्वी तमग्निमनुवेक्ष्यति ॥५७॥

पदच्छेद—

दह्यमाने अग्निभिः देहे, पत्युः पत्नी सह उटजे ।
बहिः स्थिता पतिम् साध्वी, तम् अग्निम् अनुवेक्ष्यति ॥

शब्दार्थ—

दह्यमाने	६.	जलते देखकर	बहिः	७.	बाहर
अग्निभिः	५.	अग्नियों से	स्थिता	८.	खड़ी हुई
देहे	४.	शरीर को	पतिम्	११.	पति का (अनुगमन करती हुई)
पत्युः	३.	पति के	साध्वी	९.	पतिव्रता
पत्नी	१०.	धर्मपत्नी (गान्धारी)	तम्	१२.	उस
सह	२.	साथ	अग्निम्	१३.	अग्नि में
उटजे ।	१.	पर्णकुटी के	अनुवेक्ष्यति ॥	१४.	प्रवेश कर जायेंगी

श्लोकार्थ—पर्णकुटी के साथ पति के शरीर को अग्नियों से जलते देखकर बाहर खड़ी हुई पतिव्रता धर्म पत्नी गान्धारी पति का अनुगमन करती हुई उस अग्नि में प्रवेश कर जायेंगी ।

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

विदुरस्तु तदाश्चर्यं निशाम्य कुरुनन्दन ।
हर्षशोकयुतस्तस्माद् गन्ता तीर्थनिषेवकः ॥५८॥

पदच्छेद—

विदुरः तु तत् आश्चर्यम्, निशाम्य कुरुनन्दन ।
हर्ष शोक युतः तस्मात्, गन्ता तीर्थ निषेवकः ॥

शब्दार्थ—

विदुरः	२.	विदुर जी	शोक	८.	चिन्ता से
तुः	३.	तो	युतः	९.	युक्त होते हुये
तत्	४.	उस	तस्मात्	१२.	उस स्थान से
आश्चर्यम्	५.	अद्भुत घटना को	गन्ता	१३.	चले जायेंगे
निशाम्य	६.	देखकर	तीर्थ	१०.	तीर्थों का
कुरुनन्दन ।	१.	हे राजा युधिष्ठिर !	निषेवकः ॥	११.	भ्रमण करने के लिये
हर्ष	७.	प्रसन्नता (और)			

श्लोकार्थ—हे राजा युधिष्ठिर ! विदुर जी तो उस अद्भुत घटना को देखकर प्रसन्नता और चिन्ता से युक्त होते हुये तीर्थों का भ्रमण करने के लिये उसे स्थान से चले जायँगे ।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

इत्युक्त्वाथारुहत् स्वर्गं नारदः सहतुम्बुरुः ।
युधिष्ठिरो वचस्तस्य हृदि कृत्वाजहाच्छुचः ॥५९॥

पदच्छेद——

इति उक्त्वा अथ आरुहत् स्वर्गम्, नारदः सह तुम्बुरुः ।
युधिष्ठिरः वचः तस्य, हृदि कृत्वा अजहात् शुचः ॥

शब्दार्थ——

इति	२.	ऐसा	युधिष्ठिरः	९.	राजा युधिष्ठर ने
उक्त्वा	३.	कहकर	वचः	११.	वचन को
अथ	८.	तदनन्तर	तस्य	१०.	उनके
आरुहत्	७.	चले गये	हृदि	१२.	हृदय में
स्वर्गम्	६.	स्वर्ग को	कृत्वा	१३.	धारण करके
नारदः	१.	देवर्षि नारद जी	अजहात्	१५.	छोड़ दिया
सह	५.	साथ	शुचः ॥	१४.	शोक करना
तुम्बुरुः ।	४.	तुम्बुरु गन्धर्व के			

श्लोकार्थ——देवर्षि नारद जी ऐसा कहकर तुम्बुरु गन्धर्व के साथ स्वर्ग को चले गये। तदनन्तर राजा युधिष्ठिर ने उनके वचन को हृदय में धारण करके शोक करना छोड़ दिया।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे परमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
नैमिषीयोपाख्याने त्रयोदशः अध्यायः ॥१३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ चतुर्दशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—

सम्प्रस्थिते द्वारकायां जिष्णौ बन्धुदिदृक्षया ।
ज्ञातुं च पुण्यश्लोकस्य कृष्णस्य च विचेष्टितम् ॥१॥

पदच्छेद— सम्प्रस्थिते द्वारकायाम्, जिष्णौ बन्धु दिदृक्षया ।
ज्ञातुम् च पुण्य श्लोकस्य, कृष्णस्य च विचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

सम्प्रस्थिते	१२.	प्रस्थान किया था	च	७.	और
द्वारकायाम्	११.	द्वारकापुरी को	पुण्य	२.	पवित्र
जिष्णौ	१०.	अर्जुन ने	श्लोकस्य	३.	नाम वाले
बन्धु	८.	हितैषियों को	कृष्णस्य	४.	भगवान् श्रीकृष्ण की
दिदृक्षया ।	९.	देखने की इच्छा से	च	१.	तदनन्तर
ज्ञातुम्	६.	जानने के लिये	विचेष्टितम् ॥	५.	लीलाओं को

श्लोकार्थ—तदनन्तर पवित्र नाम वाले भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं को जानने के लिये और हितैषियों को देखने की इच्छा से अर्जुन ने द्वारकापुरी को प्रस्थान किया था ।

द्वितीयः श्लोकः

व्यतीता कतिचिन्मासास्तदा नायात्ततोऽर्जुनः ।
र्श घोररूपाणि निमित्तानि कुरूद्वहः ॥२॥

पदच्छेद— व्यतीताः कतिचित् मासाः, तदा न आयात् ततः अर्जुनः ।
ददर्श घोर रूपाणि, निमित्तानि कुरु उद्वहः ॥

शब्दार्थ—

व्यतीताः	३.	बीत गये	अर्जुनः ।	५.	अर्जुन
कतिचित्	१.	कितने ही	ददर्श	१४.	देखने लगे थे
मासाः	२.	महीने	घोर	११.	भयानक
तदा	४.	तब भी	रूपाणि	१२.	रूप वाले
न	७.	नहीं	निमित्तानि	१३.	स्वप्नादि लक्षणों को
आयात्	८.	आये (उस समय)	कुरु	९.	कुरुवंश के
ततः	६.	वहाँ से	उद्वहः ॥	१०.	धारक (राजा युधिष्ठिर)

श्लोकार्थ—कितने ही महीने बीत गये तब भी अर्जुन वहाँ से नहीं आये । उस समय कुरुवंश के धारक राजा युधिष्ठिर भयानक रूप वाले स्वप्नादि लक्षणों को देखने लगे थे ।

तृतीयः श्लोकः

कालस्य च गतिं रौद्रां विपर्यस्तर्तुधर्मिणः।
पापीयसीं नृणां वार्तां क्रोधलोभानृतात्मनाम् ॥३॥

पदच्छेद—

कालस्य च गतिम् रौद्राम्, विपर्यस्त ऋतु धर्मिणः।
पापीयसीम् नृणाम् वार्ताम्, क्रोध लोभ अनृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

कालस्य	४.	काल के	**पापीयसीम्**	१३.	पाप से परिपूर्ण
च	७.	तथा	**नृणाम्**	१२.	मनुष्यों के
गतिम्	६.	प्रभाव को	**वार्ताम्**	१४.	वृत्तान्त को (देखा)
रौद्राम्	५.	भयंकर	**क्रोध**	८.	क्रोध
विपर्यस्त	३.	उलट देने वाले	**लोभ**	९.	लोभ और
ऋतु	१.	(राजा युधिष्ठिर ने) ऋतुओं के	**अनृत**	१०.	झूठे
धर्मिणः।	२.	धर्म को	**आत्मनाम् ॥**	११.	स्वभाव वाले

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर ने ऋतुओं के धर्म को उलट देने वाले काल के भयंकर प्रभाव को तथा क्रोध, लोभ और झूठे स्वभाव वाले मनुष्यों के पाप से परिपूर्ण वृत्तांत को देखा।

चतुर्थः श्लोकः

जिह्मप्रायं व्यवहृतं शाठ्यमिश्रं च सौहृदम्।
पितृमातृसुहृद्भ्रातृदम्पतीनां च कल्कनम् ॥४॥

पदच्छेद—

जिह्म प्रायम् व्यवहृतम्, शाठ्य मिश्रम् च सौहृदम्।
पितृ मातृ सुहृत् भ्रातृ, दम्पतीनाम् च कल्कनम् ॥

शब्दार्थ—

जिह्म	२.	कुटिलता से	**पितृ**	९.	पिता
प्रायम्	३.	भरा हुआ है	**मातृ**	१०.	माता
व्यवहृतम्	१.	(लोगों का) व्यवहार	**सुहृत्**	११.	मित्र
शाठ्य	६.	धूर्तता से	**भ्रातृ**	१२.	भाई (और)
मिश्रम्	-७.	मिला हुआ है	**दम्पतीनाम्**	१३.	पति-पत्नी में परस्पर
च	४.	और	**च**	८.	तथा
सौहृदम्।	५.	मैत्री-भाव	**कल्कनम् ॥**	१४.	कलह व्याप्त है

श्लोकार्थ—उन्होंने देखा कि लोगों का व्यवहार कुटिलता से भरा हुआ है और मैत्री-भाव धूर्तता से मिला हुआ है तथा पिता, माता, मित्र, भाई और पति-पत्नी में परस्पर कलह व्याप्त है।

पञ्चमः श्लोकः

निमित्तान्यत्यरिष्टानि काले त्वनुगते नृणाम् ।
लोभाद्यधर्मप्रकृतिं दृष्ट्वोवाचानुजं नृपः ॥५॥

पदच्छेद—

निमित्तानि अति अरिष्टानि, काले तु अनुगते नृणाम् ।
लोभ आदि अधर्म प्रकृतिम्, दृष्ट्वा उवाच अनुजम् नृपः ॥

शब्दार्थ—

निमित्तानि	७.	अपसगुनों को (और)	**लोभ आदि**	९.	लोभ इत्यादि
अति	५.	अधिक	**अधर्म**	१०.	पाप
अरिष्टानि	६.	अमंगलकारी	**प्रकृतिम्**	११.	स्वभाव को
काले	२.	कलियुग के	**दृष्ट्वा**	१२.	देखकर
तु	४.	ही	**उवाच**	१४.	कहा
अनुगते	३.	आ जाने से	**अनुजम्**	१३.	छोटे भाई (भीमसेन से)
नृणाम् ।	८.	मनुष्यों के	**नृपः ॥**	१.	राजा युधिष्ठिर ने

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर ने कलियुग के आ जाने से ही अधिक अमङ्गलकारी अपसगुनों को और मनुष्यों के लोभ इत्यादि पाप स्वभाव को देखकर छोटे भाई भीमसेन से कहा ।

षष्ठः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—

सम्प्रेषितो द्वारकायां जिष्णुर्बन्धुदिदृक्षया ।
ज्ञातुं च पुण्यश्लोकस्य कृष्णस्य च विचेष्टितम् ॥६॥

पदच्छेद—

सम्प्रेषितः द्वारकायाम्, जिष्णुः बन्धु दिदृक्षया ।
ज्ञातुम् च पुण्य श्लोकस्य, कृष्णस्य च विचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

सम्प्रेषितः	११.	भेजा है	**ज्ञातुम्**	४.	जानने के लिये
द्वारकायाम्	१०.	द्वारकापुरी में	**च**	५.	और
जिष्णुः	९.	अर्जुन को	**पुण्यश्लोकस्य**	१.	पवित्र कीर्ति
बन्धु	६.	सम्बन्धियों को	**कृष्णस्य**	२.	भगवान् श्रीकृष्ण की
दिदृक्षया ।	७.	देखने की इच्छा से	**च**	८.	ही
			विचेष्टितम् ॥	३.	लीलाओं को

श्लोकार्थ—पवित्र कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं को जानने के लिये और सम्बन्धियों को देखने की इच्छा से ही अर्जुन को द्वारकापुरी में भेजा है ।

सप्तमः श्लोकः

गताः सप्ताधुना मासा भीमसेन तवानुजः ।
नायाति कस्य वा हेतोर्नाहं वेदेदमञ्जसा ॥७॥

पदच्छेद—

गताः सप्त अधुना मासाः, भीमसेन तव अनुजः ।
न आयाति कस्य वा हेतोः, न अहम् वेद इदम् अञ्जसा ॥

शब्दार्थ—

गताः	५.	बीत गये	कस्य	९.	किस
सप्त	३.	सात	वा	८.	न जाने
अधुना	२.	अब	हेतोः	१०.	कारण से
मासाः	४.	महीने	न	१६.	नहीं
भीमसेन	१.	हे भीमसेन !	अहम्	१४.	मैं
तव	६.	तुम्हारे	वेद	१७.	समझ पा रहा हूँ
अनुजः ।	७.	छोटे भाई (अर्जुन)	इदम्	१३.	इसे
न	११.	नहीं	अञ्जसा ॥	१५.	आसानी से
आयाति	१२.	आये			

श्लोकार्थ—हे भीमसेन ? अब सात महीने बीत गये । तुम्हारे छोटे भाई अर्जुन न जाने किस कारण से नहीं आये । इसे मैं आसानी से नहीं समझ पा रहा हूँ ।

अष्टमः श्लोकः

अपि देवर्षिणाऽऽदिष्टः स कालोऽयमुपस्थितः ।
यदाऽऽत्मनोऽङ्गमाक्रीडं भगवानुत्सिसृक्षति ॥८॥

पदच्छेद—

अपि देवर्षिणा आदिष्टः, सः कालः अयम् उपस्थितः ।
यदा आत्मनः अङ्गम् आक्रीडम्, भगवान् उत्सिसृक्षति ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	क्या	यदा	८.	जबकि
देवर्षिणा	२.	देवर्षि नारद जी के द्वारा	आत्मनः	१०.	अपने
आदिष्टः	३.	बताया हुआ	अङ्गम्	१२.	शरीर को
सः	४.	वह	आक्रीडम्	११.	लीला
कालः	५.	समय	भगवान्	९.	भगवान् श्रीकृष्ण
अयम्	६.	अब	उत्सिसृक्षति ॥	१३.	छोड़ने की इच्छा करते हैं
उपस्थितः ।	७.	आ गया है			

श्लोकार्थ—क्या देवर्षि नारद जी के द्वारा बताया हुआ वह समय अब आ गया है ? जबकि भगवान् श्रीकृष्ण अपने लीला-शरीर को छोड़ने की इच्छा करते हैं ।

नवमः श्लोकः

यस्मान्नः सम्पदो राज्यं दाराः प्राणाः कुलं प्रजाः ।
आसन् सपत्नविजयो लोकाश्च यदनुग्रहात् ॥९॥

पदच्छेद—

यस्मात् नः सम्पदः राज्यम् , दाराः प्राणाः कुलम् प्रजाः ।
आसन् सपत्न विजयः, लोकाः च यत् अनुग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

यस्मात्	१.	जिस भगवान् श्रीकृष्ण से	**आसन्**	९.	मिले हैं
नः	२.	हमें	**सपत्न**	१३.	शत्रुओं पर
सम्पदः	३.	सम्पत्ति	**विजयः**	१४.	विजय (और)
राज्यम्	४.	राज्य	**लोकाः**	१५.	उत्तम लोकों की प्राप्ति हुई है
दाराः	५.	स्त्री	**च**	१०.	तथा
प्राणाः	६.	प्राण	**यत्**	११.	जिस भगवान् की
कुलम्	७.	वंश (और)	**अनुग्रहात् ॥**	१२.	कृपा से
प्रजाः ।	८.	सन्तान			

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्रीकृष्ण से हमें सम्पत्ति, राज्य, स्त्री, प्राण, वंश और सन्तान मिले हैं तथा जिस भगवान् की कृपा से शत्रुओं पर विजय और उत्तम लोकों की प्राप्ति हुई है ।

दशमः श्लोकः

पश्योत्पातान्नरव्याघ्र दिव्यान् भौमान् सदैहिकान् ।
दारुणाञ्शंसतोऽदूराद्भयं नो बुद्धिमोहनम् ॥१०॥

पदच्छेद—

पश्य उत्पातान् नर व्याघ्र, दिव्यान् भौमान् स दैहिकान् ।
दारुणान् शंसतः अदूरात् , भयम् नः बुद्धि मोहनम् ॥

शब्दार्थ—

पश्य	७.	देखो	**शंसतः**	८.	(इन्हें) कहते हुए
उत्पातान्	६.	उपद्रवों को	**अदूरात्**	१३.	समीप में (प्रतीत हो रहा है)
नरव्याघ्र	१.	हे पुरुष सिंह !	**भयम्**	१२.	भय
दिव्यान्	२.	आकाश में	**नः**	९.	हमारी
भौमान्	३.	भूमि पर (और)	**बुद्धि**	१०.	बुद्धि को
स दैहिकान् ।	४.	शरीर में होने वाले	**मोहनम् ॥**	११.	भ्रम में डालने वाला
दारुणान्	५.	भयंकर			

श्लोकार्थ—हे पुरुष सिंह ! आकाश में, भूमि पर और शरीर में होने वाले भयंकर उपद्रवों को देखो । इन्हें कहते हुए हमारी बुद्धि को भ्रम में डालने वाला भय समीप में प्रतीत हो रहा है ।

एकादशः श्लोकः

ऊर्वक्षिबाहवो मह्यं स्फुरन्त्यङ्ग पुनः पुनः ।
वेपथुश्चापि हृदये आराद्दास्यन्ति विप्रियम् ॥११॥

पदच्छेद—

ऊरु अक्षि बाहवः मह्यम् , स्फुरन्ति अङ्ग पुनः पुनः ।
वेपथुः च अपि हृदये, आरात् दास्यन्ति विप्रियम् ॥

शब्दार्थ—

ऊरु	३.	जंघा	वेपथुः	१०.	कम्पन
अक्षि	४.	आँख (और)	च	८.	तथा
बाहवः	५.	भुजायें	अपि	११.	भी
मह्यम्	२.	मेरी	हृदये	९.	हृदय में होने वाला
स्फुरन्ति	७.	फड़क रही हैं	आरात्	१२.	शीघ्र ही
अङ्ग	१.	हे तात !	दास्यन्ति	१४.	देगा
पुनः पुनः ।	६.	बार-बार	विप्रियम् ॥	१३.	अमंगल को

श्लोकार्थ—हे तात ! मेरी जंघा, आँख और भुजायें बार-बार फड़क रही हैं तथा हृदय में होने वाला कम्पन भी शीघ्र ही अमंगल को देगा ।

द्वादशः श्लोकः

शिवैषोद्यन्तमादित्यमभि रौत्यनलानना ।
मामङ्ग सारमेयोऽयमभिरेभत्यभीरुवत् ॥१२॥

पदच्छेद—

शिवा एषा उद्यन्तम् आदित्यम् , अभि रौति अनल आनना ।
माम् अङ्ग सारमेयः अयम् , अभिरेभति अभीरुवत् ॥

शब्दार्थ—

शिवा	४.	सियारिन	माम्	१२.	मेरे
एषा	३.	यह	अङ्ग	८.	हे तात !
उद्यन्तम्	५.	उगते हुए	सारमेयः	१०.	कुत्ता (भी)
आदित्यम्	६.	सूर्य के	अयम्	९.	यह
अभि रौति	७.	सामने रो रही है	अभि	१३.	सामने
अनल	२.	आग उलगती हुई	रेभति	१४.	भौंक रहा है
आनना।	१.	मुख से	अभीरुवत् ॥	११.	निडर होकर

श्लोकार्थ—मुख से आग उगलती हुई यह सियारिन उगते हुये सूर्य के सामने रो रही है। हे तात ! यह कुत्ता भी निडर होकर मेरे सामने भौंक रहा है ।

त्रयोदशः श्लोकः

शस्ताः कुर्वन्ति मां सव्यं दक्षिणं पशवोऽपरे।
वाहांश्च पुरुषव्याघ्र लक्षये रुदतो मम ॥१३॥

पदच्छेद—

शस्ताः कुर्वन्ति माम् सव्यम्, दक्षिणम् पशवः अपरे।
वाहान् च पुरुष व्याघ्र, लक्षये रुदतः मम ॥

शब्दार्थ—

शस्ताः	३.	पूज्य (पशु गाय इत्यादि)	वाहान्	११.	(घोड़े आदि) वाहनों को
कुर्वन्ति	९.	कर रहे हैं	च	१०.	तथा
माम्	४.	मुझे	पुरुष	१.	हे पुरुष
सव्यम्	५.	बाँयी ओर (तथा)	व्याघ्र	२.	सिंह ! (भीमसेन)
दक्षिणम्	८.	दाहिनी ओर	लक्षये	१४.	देख रहा हूँ
पशवः	७.	पशु (गदहे इत्यादि)	रुदतः	१३.	रोते हुये
अपरे।	६.	अपूज्य	मम ॥	१२.	अपनी ओर

श्लोकार्थ—हे पुरुष सिंह भीमसेन ! पूज्य पशु गाय इत्यादि मुझे बाँयी ओर तथा अपूज्य पशु गदहे इत्यादि दाहिनी ओर कर रहे हैं तथा घोड़े आदि वाहनों को अपनी ओर रोते हुये देख रहा हूँ।

चतुर्दशः श्लोकः

मृत्युदूतः कपोतोऽयमुलूकः कम्पयन् मनः।
प्रत्युलूकश्च कुह्वानैरनिद्रौ शून्यमिच्छतः ॥१४॥

पदच्छेद—

मृत्यु दूतः कपोतः अयम्, उलूकः कम्पयन् मनः।
प्रत्युलूकः च कुह्वानैः, अनिद्रौ शून्यम् इच्छतः ॥

शब्दार्थ—

मृत्यु दूतः	१.	मृत्यु की सूचना देने वाले	प्रत्युलूकः	६.	कौआ
कपोतः	२.	पेंडुकी	च	४.	और
अयम्	५.	यह	कुह्वानैः	१०.	कठोर शब्दों से
उलूकः	३.	उल्लू	अनिद्रौ	९.	रात्रि में
कम्पयन्	८.	कंपाते हुये	शून्यम्	११.	(जगत् को) शून्य कर देना
मनः।	७.	मन को	इच्छतः ॥	१२.	चाहते हैं

श्लोकार्थ—मृत्यु की सूचना देने वाले पेंडुकी, उल्लू और यह कौआ मन को कंपाते हुये रात्रि में कठोर शब्दों से जगत् को शून्य कर देना चाहते हैं।

पञ्चदशः श्लोकः

धूम्रा दिशः परिधयः कम्पते भूः सहाद्रिभिः।
निर्घातश्च महांस्तात साकं च स्तनयित्नुभिः ॥१५॥

पदच्छेद—

धूम्राः दिशः परिधयः, कम्पते भूः सह अद्रिभिः।
निर्घातः च महान् तात, साकम् च स्तनयित्नुभिः ॥

शब्दार्थ—

धूम्राः	५.	धूमिल (पड़ गये हैं)	**निर्घातः**	१४.	आवाज हो रही है
दिशः	२.	दिशायें	**च**	३.	तथा
परिधयः	४.	(सूर्य और चन्द्र मण्डल के) बाहरी घेरे	**महान्**	१३.	बहुत बड़ी
कम्पते	६.	कांप रही है	**तात**	१.	हे तात !
भूः	८.	पृथ्वी	**साकम्**	१२.	साथ
सह	७.	साथ	**च**	१०.	तथा
अद्रिभिः।	६.	पर्वतों के	**स्तनयित्नुभिः ॥**	११.	बादलों (की ध्वनि) के

श्लोकार्थ—हे तात ! दिशायें तथा सूर्य और चन्द्र मण्डल के बाहरी घेरे धूमिल पड़ गये हैं। पर्वतों के साथ पृथ्वी काँप रही है तथा बादलों की ध्वनि के साथ बहुत बड़ी आवाज हो रही है।

षोडशः श्लोकः

वायुर्वाति खरस्पर्शो रजसा विसृजंस्तमः।
असृग् वर्षन्ति जलदा बीभत्समिव सर्वतः ॥१६॥

पदच्छेद—

वायुः वाति खर स्पर्शः, रजसा विसृजन् तमः।
असृग् वर्षन्ति जलदाः, बीभत्सम् इव सर्वतः ॥

शब्दार्थ—

वायुः	५.	हवा	**असृग्**	११.	खून की
वाति	६.	चल रही है (तथा)	**वर्षन्ति**	१२.	वर्षा कर रहे हैं
खर स्पर्शः	४.	तीखी लगने वाली	**जलदाः**	७.	बादल
रजसा	१.	धूल से	**बीभत्सम्**	८.	घिनौने दृश्य के
विसृजन्	३.	फैलाती हुई	**इव**	६.	समान
तमः।	२.	अन्धकार को	**सर्वतः ॥**	१०.	चारों तरफ

श्लोकार्थ—धूल से अन्धकार को फैलाती हुई, तीखी लगने वाली हवा चल रही है तथा बादल घिनौने दृश्य के समान चारों तरफ खून की वर्षा कर रहें हैं।

सप्तदशः श्लोकः

सूर्यं हतप्रभं पश्य ग्रहमर्दं मिथो दिवि ।
ससंकुलैर्भूतगणैर्ज्वलिते इव रोदसी ॥१७॥

पदच्छेद—

सूर्यम् हत प्रभम् पश्य, ग्रह मर्दम् मिथः दिवि ।
स संकुलैः भूत गणैः, ज्वलिते इव रोदसी ॥

शब्दार्थ—

सूर्यम्	३.	सूर्य को (और)	स संकुलैः	९.	भीड़ से
हत प्रभम्	२.	कांति से हीन	भूत	७.	जीव
पश्य	६.	देखो (इस समय)	गणैः	८.	समूह की
ग्रह मर्दम्	५.	ग्रहों की टकराहट को	ज्वलिते	११.	जलता हुआ
मिथः	४.	परस्पर	इव	१२.	सा (दिखाई दे रहा है)
दिवि ।	१.	हे तात ! आकाश में	रोदसी ॥	१०.	पृथ्वी और आकाश

श्लोकार्थ—हे तात ! आकाश में कांति से हीन सूर्य को और परस्पर ग्रहों की टकराहट को देखो । इस समय जीव समूह की भीड़ से पृथ्वी और आकाश जलता हुआ-सा दिखाई दे रहा है ।

अष्टादशः श्लोकः

नद्यो नदाश्च क्षुभिताः सरांसि च मनांसि च ।
न ज्वलत्यग्निराज्येन कालोऽयं किं विधास्यति ॥१८॥

पदच्छेद—

नद्यः नदाः च क्षुभिताः, सरांसि च मनांसि च ।
न ज्वलति अग्निः आज्येन, कालः अयम् किम् विधास्यति ॥

शब्दार्थ—

नद्यः	१.	नदियाँ	न	११.	नहीं
नदाः	२.	नद	ज्वलति	१२.	जल रही है
च	३.	और	अग्निः	१०.	आग
क्षुभिताः	७.	उफन रहे हैं	आज्येन	९.	घी से
सरांसि	४.	सरोवर	कालः	१४.	समय
च	५.	तथा	अयम्	१३.	यह
मनांसि	६.	(मनुष्यों के) मन	किम्	१५.	(न जाने) क्या
च ।	८.	एवम्	विधास्यति ॥	१६.	करेगा

श्लोकार्थ—नदियाँ, नद और सरोवर तथा मनुष्यों के मन उफन रहे हैं एवम् घी से आग नहीं जल रही है । यह समय न जाने क्या करेगा ?

एकोनविंशः श्लोकः

न पिबन्ति स्तनं वत्सा न दुह्यन्ति च मातरः ।
रुदन्त्यश्रुमुखा गावो न हृष्यन्त्यृषभा व्रजे ॥१९॥

पदच्छेद— न पिबन्ति स्तनम् वत्साः, न दुह्यन्ति च मातरः ।
रुदन्ति अश्रु मुखाः गावः, न हृष्यन्ति ऋषभाः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

न	३.	नहीं	रुदन्ति	१२.	रोती हैं (तथा)
पिबन्ति	४.	पी रहे हैं	अश्रु	११.	आँसू बहा कर
स्तनम्	२.	थनों को	मुखाः	१०.	मुख पर
वत्साः	१.	बछड़े	गावः	५.	गऊ
न	७.	नहीं	न	१५.	नहीं
दुह्यन्ति	८.	दूहने देती हैं	हृष्यन्ति	१६.	प्रसन्न हो रहे हैं
च	९.	और	ऋषभाः	१४.	सांड
मातरः ।	६.	मातायें	व्रजे ॥	१३.	गोशालाओं में

श्लोकार्थ—बछड़े थनों को नहीं पी रहे हैं, गऊ मातायें दुहने नहीं देती हैं और मुख पर आंसू बहाकर रोती हैं तथा गोशालाओं में सांड प्रसन्न नहीं हो रहे हैं ।

विंशः श्लोकः

दैवतानि रुदन्तीव स्विद्यन्ति ह्युच्चलन्ति च ।
इमे जनपदा ग्रामाः पुरोद्यानाकराश्रमाः ।
भ्रष्टश्रियो निरानन्दाः किमघं दर्शयन्ति नः ॥२०॥

पदच्छेद— दैवतानि रुदन्ति इव, स्विद्यन्ति हि उच्चलन्ति च ।
इमे जनपदाः ग्रामाः, पुर उद्यान आकर आश्रमाः ।
भ्रष्ट श्रियः निरानन्दाः, किम् अघम् दर्शयन्ति नः ॥

शब्दार्थ—

दैवतानि	१.	देवताओं की मूर्तियाँ	आकर	९.	खानें और
रुदन्ति इव	२.	रोती हुई सी	आश्रमाः ।	१०.	आश्रम
स्विद्यन्ति हि	३.	पसीने से तर हो रही हैं (तथा)	भ्रष्ट श्रियः	११.	शोभा से रहित (एवं)
उच्चलन्ति	४.	डगमगा रही हैं	निरानन्दाः	१२.	आनन्द विहीन होते हुए
च ।	५.	और	किम्	१४.	कौन सा
इमे, जनपदाः	६.	ये, महानगर	अघम्	१५.	दुःख
ग्रामाः	७.	गाँव	दर्शयन्ति	१६.	दिखायेंगे
पुर, उद्यान	८.	छोटे नगर, बगीचे	नः ॥	१३.	हमें

श्लोकार्थ—देवताओं की मूर्तियाँ रोती हुई सी पसीने से तर हो रही हैं तथा डगमगा रही हैं और ये महानगर, गाँव, छोटे नगर, बगीचे, खानें और आश्रम शोभा से रहित एवम् आनन्द विहीन होते हुए हमें कौन सा दुःख दिखायेंगे ?

एकविंशः श्लोकः

मन्य एतैर्महोत्पातैर्नूनं भगवतः पदैः ।
अनन्यपुरुषश्रीभिर्हीना भूर्हतसौभगा ॥२१॥

पदच्छेद—

मन्ये एतैः महत् उत्पातैः, नूनम् भगवतः पदैः ।
अनन्य पुरुष श्रीभिः, हीना भूः हत सौभगा ॥

शब्दार्थ—

मन्ये	५.	मानता हूँ (कि)	**अनन्य**	९.	दूसरे
एतैः	१.	इन	**पुरुष**	१०	मनुष्यों में (नहीं मिलने वाले)
महत्	२.	महान्	**श्रीभिः**	११.	शुभ लक्षणों से युक्त
उत्पातैः	३.	उपद्रवों से (मैं)	**हीना**	१४.	रहित हो गई (है)
नूनम्	४.	निश्चय	**भूः**	८.	पृथ्वी
भगवतः	१२.	भगवान् श्री कृष्ण के	**हत**	७.	हीना
पदैः ।	१३.	चरण कमलों से	**सौभगा ॥**	६.	भाग्य

श्लोकार्थ—इन महान् उपद्रवों से मैं निश्चय मानता हूँ कि भाग्य-हीना पृथ्वी दूसरे मनुष्यों में नहीं मिलने वाले शुभ लक्षणों से युक्त भगवान् श्री कृष्ण के चरण कमलों से रहित हो गई है ।

द्वाविंशः श्लोकः

इति चिन्तयतस्तस्य दृष्टारिष्टेन चेतसा ।
राज्ञः प्रत्यागमद् ब्रह्मन् यदुपुर्याः कपिध्वजः ॥२२॥

पदच्छेद—

इति चिन्तयतः तस्य, दृष्ट अरिष्टेन चेतसा ।
राज्ञः प्रत्यागमत् ब्रह्मन्, यदु पुर्याः कपिध्वजः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	**चेतसा ।**	३.	मन से
चिन्तयतः	४.	चिन्ता करते हुये (और)	**राज्ञः**	८.	राजा युधिष्ठिर के सामने
तस्य	७.	उन	**प्रत्यागमत्**	११.	लौट आये
दृष्ट	६.	देखते हुये	**ब्रह्मन्**	१.	हे शौनक जी !
अरिष्टेन	५.	उत्पातों को	**यदुपुर्याः**	१०.	द्वारकापुरी से
			कपिध्वजः ॥	९.	अर्जुन

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! इस प्रकार मन से चिन्ता करते हुये और उत्पातों को देखते हुये उन राजा युधिष्ठिर के सामने अर्जुन द्वारकापुरी से लौट आये ।

त्रयोविंशः श्लोकः

तं पादयोर्निपतितमयथापूर्वमातुरम् ।
अधोवदनमब्बिन्दून् सृजन्तं नयनाब्जयोः ॥२३॥

पदच्छेद—

तम् पादयोः निपतितम्, अयथा पूर्वम् आतुरम् ।
अधोवदनम् अप् बिन्दून्, सृजन्तम् नयन अब्जयोः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उन अर्जुन को	अधोवदनम्	६.	नीचे मुख किये (और)
पादयोः	१.	(राजा युधिष्ठिर ने) पैरों में	अप् बिन्दून्	९.	आंसुओं की बूँदे
निपतितम्	२.	पड़े हुये	सृजन्तम्	१०.	गिराते हुये (देखा)
अयथा पूर्वम्	४.	पहले से बदले हुये	नयन	७.	नेत्र
आतुरम् ।	५.	घवड़ाये हुये	अब्जयोः ॥	८.	कमलों से

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर ने पैरों में पड़े हुये उन अर्जुन को पहले से बदले हुये, घवड़ाये हुये, नीचे मुख किये और नेत्र-कमलों से आँसुओं की बूँदे गिराते हुये देखा ।

चतुर्विंशः श्लोकः

विलोक्योद्विग्नहृदयः विच्छायमनुजं नृपः ।
पृच्छतिस्म सुहृन्मध्ये संस्मरन् नारदेरितम् ॥२४॥

पदच्छेद—

विलोक्य उद्विग्न हृदयः, विच्छायम् अनुजम् नृपः ।
पृच्छति स्म सुहृत् मध्ये, संस्मरन् नारद ईरितम् ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	६.	देखकर	पृच्छति स्म	१२.	(उनसे) पूछा
उद्विग्न	१.	व्याकुल	सुहृत्	७.	मित्रों के
हृदयः	२.	मन	मध्ये	८.	बीच
विच्छायम्	५.	कांति-हीन	संस्मरन्	११.	स्मरण करते हुये
अनुजम्	४.	छोटे भाई (अर्जुन को)	नारद	९.	नारद जी के
नृपः ।	३.	राजा (युधिष्ठिर) ने	ईरितम् ॥	१०.	वचन का

श्लोकार्थ—व्याकुल मन राजा युधिष्ठिर ने छोटे भाई अर्जुन को कांति-हीन देखकर मित्रों के बीच नारद जी के वचन का स्मरण करते हुये उनसे पूछा ।

पञ्चविंशः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—

कच्चिदानर्तपुर्यां नः स्वजनाः सुखमासते ।
मधुभोजदशार्हार्हसात्वतान्धकवृष्णयः ॥२५॥

पदच्छेद—

कच्चित् आनर्त पुर्याम् नः, स्व जनाः सुखम् आसते ।
मधु भोज दशार्ह अर्ह, सात्वत अन्धक वृष्णयः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	१२.	क्या	मधु	३.	मधु
आनर्त	१.	द्वारका	भोज	४.	भोज
पुर्याम्	२.	पुरी में	दशार्ह	५.	दशार्ह
नः	१०.	हमारे	अर्ह	६.	अर्ह
स्व जनाः	११.	अपने लोग	सात्वत	७.	सात्वत
सुखम्	१३.	सुखपूर्वक	अन्धक	८.	अन्धक (और)
आसते ।	१४.	हैं	वृष्णयः ॥	९.	वृष्णिवंशी

श्लोकार्थ—द्वारकापुरी में मधु, भोज, दशार्ह, अर्ह, सात्वत, अन्धक और वृष्णि वंशी हमारे अपने लोग क्या सुखपूर्वक हैं ?

षड्विंशः श्लोकः

शूरो मातामहः कच्चित्स्वस्त्यास्ते वाथ मारिषः ।
मातुलः सानुजः कच्चित्कुशल्यानकदुन्दुभिः ॥२६॥

पदच्छेद—

शूरः मातामहः कच्चित्, स्वस्ति आस्ते वा अथ मारिषः ।
मातुलः स अनुजः कच्चित्, कुशली आनक दुन्दुभिः ॥

शब्दार्थ—

शूरः	३.	शूरसेन	मारिषः ।	८.	पूज्य
मातामहः	२.	नाना	मातुलः	९.	मामा
कच्चित्	१.	क्या	स अनुजः	११.	छोटे भाई के साथ
स्वस्ति	४.	कुशल पूर्वक	कच्चित्	७.	क्या
आस्ते	५.	हैं	कुशली	१२.	सकुशल (हैं)
वा अथ	६.	तथा	आनक दुन्दुभिः ॥	१०.	वसुदेव जी

श्लोकार्थ—क्या नाना शूरसेन कुशल पूर्वक हैं ? तथा क्या पूज्य मामा वसुदेव जी छोटे भाई के साथ सकुशल हैं ?

सप्तविंशः श्लोकः

सप्त स्वसारस्तत्पत्न्यो मातुलान्यः सहात्मजाः ।
आसते सस्नुषाः क्षेमं देवकीप्रमुखाः स्वयम् ॥२७॥

पदच्छेद—

सप्त स्वसारः तत् पत्न्यः, मातुलान्यः सह आत्मजाः ।
आसते स स्नुषाः क्षेमम्, देवकी प्रमुखाः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

सप्त	६. सातों	**आसते**	१३. हैं
स्वसारः	७. बहिनें	**स स्नुषाः**	१०. बहुओं के साथ (तथा)
तत्	१. उन (वसुदेव जी) की	**क्षेमम्**	१२. कुशल पूर्वक (तो)
पत्न्यः	२. पत्नियाँ (अर्थात्)	**देवकी**	५. देवकी (इत्यादि)
मातुलान्यः	३. (हमारी) मामियाँ	**प्रमुखाः**	४. प्रमुख
सह	९. साथ (और)	**स्वयम् ॥**	११. स्वयम् (भी)
आत्मजाः ।	८. पुत्रों के		

श्लोकार्थ—उन वसुदेव जी की पत्नियाँ अर्थात् हमारी मामियाँ प्रमुख-देवकी इत्यादि सातों बहिनें पुत्रों के साथ और बहुओं के साथ तथा स्वयम् भी कुशल पूर्वक तो हैं ?

अष्टाविंशः श्लोकः

कच्चिद्राजाऽऽहुको जीवत्यसत्पुत्रोऽस्य चानुजः ।
हृदीकः ससुतोऽक्रूरो जयन्तगदसारणाः ॥२८॥

पदच्छेद—

कच्चित् राजा आहुकः जीवति, असत् पुत्रः अस्य च अनुजः ।
हृदीकः स सुतः अक्रूरः, जयन्त गद सारणाः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	५. क्या	**अनुजः ।**	९. छोटे भाई (देवक)
राजा	३. राजा	**हृदीकः**	११. हृदीक
आहुकः	४. उग्रसेन	**स सुतः**	१०. पुत्र (कृतवर्मा) के साथ
जीवति	६. जीवित हैं	**अक्रूरः**	१२. अक्रूर जी
असत्	१. दुष्ट	**जयन्त**	१३. जयन्त
पुत्रः	२. (कंस) पुत्र वाले	**गद**	१४. गद (और)
अस्य	८. उनके	**सारणाः॥**	१५. सारण (कुशल पूर्वक हैं)
च	७. तथा		

श्लोकार्थ—दुष्ट कंस पुत्र वाले राजा उग्रसेन क्या जीवित हैं ? तथा उनके छोटे भाई देवक, पुत्र कृतवर्मा के साथ हृदीक, अक्रूर, जयन्त, गद और सारण कुशल पूर्वक हैं ?

एकोनत्रिंशः श्लोकः

आसते कुशलं कच्चिद्ये च शत्रुजिदादयः ।
कच्चिदास्ते सुखं रामो भगवान् सात्वतां प्रभुः ॥२९॥

पदच्छेद—

आसते कुशलम् कच्चित्, ये च शत्रुजित् आदयः ।
कच्चित् आस्ते सुखम् रामः, भगवान् सात्वताम् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

आसते	६.	हैं	कच्चित्	१२.	क्या
कुशलम्	५.	कुशल-पूर्वक	आस्ते	१४.	हैं
कच्चित्	४.	क्या	सुखम्	१३.	सुखपूर्वक
ये	१.	जो	रामः	११.	बलरामजी
च	७.	तथा	भगवान्	१०.	भगवान्
शत्रुजित्	२.	शत्रुजित्	सात्वताम्	८.	सात्वत वंशियों के
आदयः ।	३.	इत्यादि यादव वीर (हैं वे)	प्रभुः ॥	९.	स्वामी

श्लोकार्थ—जो शत्रुजित् इत्यादि यादव वीर हैं, वे क्या कुशलपूर्वक हैं ? तथा सात्वत वंशियों के स्वामी भगवान् बलराम जी क्या सुख-पूर्वक हैं ?

त्रिंशः श्लोक

प्रद्युम्नः सर्ववृष्णीनां सुखमास्ते महारथः ।
गम्भीररयोऽनिरुद्धो वर्धते भगवानुतः ॥३०॥

पदच्छेद—

प्रद्युम्नः सर्व वृष्णीनाम्, सुखम् आस्ते महारथः ।
गम्भीर रयः अनिरुद्धः, वर्धते भगवान् उत ॥

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नः	४.	प्रद्युम्न	गम्भीर	८.	बड़े
सर्व	१.	सभी	रयः	९.	फुर्तीले
वृष्णीनाम्	२.	वृष्णि वंशी यादवों में	अनिरुद्धः	११.	अनिरुद्ध जी
सुखम्	५.	सुख पूर्वक	वर्धते	१२.	सकुशल हैं
आस्ते	६.	हैं	भगवान्	१०.	भगवान्
महारथः ।	३.	महारथी	उत ॥	७.	तथा

श्लोकार्थ—सभी वृष्णि वंशी यादवों में महारथी प्रद्युम्न सुखपूर्वक हैं ? तथा बड़े फुर्तीले भगवान् अनिरुद्ध जी सकुशल हैं ?

एकत्रिंशः श्लोकः

सुषेणश्चारुदेष्णश्च साम्बो जाम्बवती सुतः ।
अन्ये च कार्ष्णिप्रवराः सपुत्रा ऋषभादयः ॥३१॥

पदच्छेद—

सुषेणः चारुदेष्णः च, साम्बः जाम्बवती सुतः ।
अन्ये च कार्ष्णि प्रवराः, स पुत्राः ऋषभ आदयः ॥

शब्दार्थ—

सुषेणः	१.	सुषेण	अन्ये	१२.	दूसरे (यादव गण)
चारुदेष्णः	२.	चारुदेष्ण	च	७.	तथा
च	३.	और	कार्ष्णि	८.	यदुवंशियों में
साम्बः	६.	साम्ब	प्रवराः	९.	श्रेष्ठ
जाम्बवती	४.	जाम्बवती के	स पुत्राः	१३.	पुत्रों सहित (सुखपूर्वक हैं)
सुतः ।	५.	पुत्र	ऋषभः	१०.	ऋषभ
			आदयः ॥	११.	इत्यादि

श्लोकार्थ—सुषेण, चारुदेष्ण और जाम्बवती के पुत्र साम्ब तथा यदुवंशियों में श्रेष्ठ ऋषभ इत्यादि दूसरे यादव गण पुत्रों सहित सुखपूर्वक हैं ?

द्वात्रिंशः श्लोकः

तथैवानुचराः शौरेः श्रुतदेवोद्धवादयः ।
सुनन्दनन्दशीर्षण्या ये चान्ये सात्वतर्षभाः ॥३२॥

पदच्छेद—

तथैव अनुचराः शौरेः, श्रुतदेव उद्धव आदयः ।
सुनन्द नन्द शीर्षण्याः, ये च अन्ये सात्वत ऋषभाः ॥

शब्दार्थ—

तथैव	१.	उसी प्रकार	नन्द	९.	नन्द (इत्यादि)
अनुचराः	३.	सेवक	शीर्षण्याः	७.	प्रधान
शौरेः	२.	भगवान् श्री कृष्ण के	ये	१२.	जो
श्रुतदेव	४.	श्रुतदेव	च	१०.	और
उद्धव	५.	उद्धव	अन्ये	११.	दूसरे
आदयः ।	६.	इत्यादि (तथा)	सात्वत	१३.	यादवों में
सुनन्द	८.	सुनन्द	ऋषभाः ॥	१४.	श्रेष्ठ हैं (वे सुखपूर्वक हैं)

श्लोकार्थ—उसी प्रकार भगवान् श्री कृष्ण के सेवक श्रुतदेव, उद्धव इत्यादि तथा प्रधान सुनन्द, नन्द इत्यादि और दूसरे जो यादवों में श्रेष्ठ हैं, वे सुख पूर्वक हैं ?

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अपि स्वस्त्यासते सर्वे रामकृष्णभुजाश्रयाः ।
अपि स्मरन्ति कुशलमस्माकं बद्धसौहृदाः ॥३३॥

पदच्छेद—

अपि स्वस्ति आसते सर्वे, राम कृष्ण भुज आश्रयाः ।
अपि स्मरन्ति कुशलम् , अस्माकम् बद्ध सौहृदाः ॥

शब्दार्थ—

अपि	६.	क्या	आश्रयाः ।	४.	सुरक्षित
स्वस्ति	७.	कुशलपूर्वक	अपि	११.	क्या (कभी)
आसते	८.	हैं	स्मरन्ति	१४.	स्मरण करते हैं
सर्वे	५.	सभी (यादव लोग)	कुशलम्	१३.	कुशल समाचार का
राम	१.	बलराम और	अस्माकम्	१२.	हमारे
कृष्ण	२.	श्री कृष्ण के	बद्ध	१०.	रखने वाले (वे लोग)
भुज	३.	बाहुवल से	सौहृदाः ॥	९.	मैत्री भाव

श्लोकार्थ—बलराम और श्री कृष्ण के बाहुवल से सुरक्षित सभी यादव लोग क्या कुशलपूर्वक हैं ? मैत्री भाव रखने वाले वे लोग क्या कभी हमारे कुशल समाचार का स्मरण करते हैं ?

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

भगवानपि गोविन्दो ब्रह्मण्यो भक्तवत्सलः ।
कच्चित्पुरे सुधर्मायां सुखमास्ते सुहृद्वृतः ॥३४॥

पदच्छेद—

भगवान् अपि गोविन्दः, ब्रह्मण्यः भक्त वत्सलः ।
कच्चित् पुरे सुधर्मायाम् , सुखम् आस्ते सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	३.	भगवान्	पुरे	६.	द्वारकापुरी की
अपि	५.	भी	सुधर्मायाम्	७.	सुधर्मा सभा में
गोविन्दः	४.	श्रीकृष्ण	सुखम्	११.	सुख पूर्वक
ब्रह्मण्यः	१.	ब्राह्मणों के प्रेमी (और)	आस्ते	१२.	हैं
भक्त वत्सलः ।	२.	भक्तों के स्नेही	सुहृद्	८.	मित्रों से
कच्चित्	१०.	क्या	वृतः ॥	९.	घिरे हुये

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के प्रेमी और भक्तों के स्नेही भगवान् श्री कृष्ण भी द्वारकापुरी की सुधर्मा सभा में मित्रों से घिरे हुये क्या सुखपूर्वक हैं ?

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

मङ्गलाय च लोकानां क्षेमाय च भवाय च ।
आस्ते यदुकुलाम्भोधावाद्योऽनन्तसखः पुमान् ॥३५॥

पदच्छेद—

मङ्गलाय च लोकानाम्, क्षेमाय च भवाय च ।
आस्ते यदु कुल अम्भोधौ, आद्यः अनन्त सखः पुमान् ॥

शब्दार्थ—

मङ्गलाय	९.	परम मङ्गल के लिये	आस्ते	१४.	विराजमान हैं
च	८.	और	यदु कुल	१२.	यदु वंश रूपी
लोकानाम्	६.	लोकों के	अम्भोधौ	१३.	समुद्र में
क्षेमाय	७.	परम कल्याण के लिये	आद्यः	४.	आदि
च	१०.	तथा	अनन्त	२.	शेषनाग बलराम जी के
भवाय	११.	उन्नति के लिये	सखः	३.	मित्र
च ।	१.	एवम्	पुमान् ॥	५.	पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—एवम् शेषनाग बलराम जी के मित्र आदि पुरुष भगवान् श्रीकृष्ण लोकों के परम कल्याण के लिये और परम मङ्गल के लिये तथा उन्नति के लिये यादव वंश रूपी समुद्र में विराजमान हैं ?

षट्त्रिंशः श्लोकः

यद्बाहुदण्डगुप्तायां स्वपुर्यां यदवोऽर्चिताः ।
क्रीडन्ति परमानन्दं महापौरुषिका इव ॥३६॥

पदच्छेद—

यद् बाहु दण्ड गुप्तायाम्, स्व पुर्याम् यदवः अर्चिताः ।
क्रीडन्ति परम आनन्दम्, महापौरुषिकाः इव ॥

शब्दार्थ—

यद्	१.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) की	अर्चिताः ।	८.	सम्मानित होकर
बाहु दण्ड	२.	भुजारूपी दण्ड से	क्रीडन्ति	१०.	क्रीडा करते हैं
गुप्तायाम्	३.	सुरक्षित	परम आनन्दम्	९.	बड़े आनन्द से
स्व पुर्याम्	४.	अपनी द्वारकापुरी में	महापौरुषिकाः	६.	भगवान् विष्णु के पार्षदों के
यदवः	५.	यादव लोग	इव ॥	७.	समान

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्रीकृष्ण की भुजारूपी दण्ड से सुरक्षित अपनी द्वारकापुरी में यादव लोग भगवान् विष्णु के पार्षदों के समान सम्मानित होकर बड़े आनन्द से क्रीडा करते हैं ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

यत्पादशुश्रूषणमुख्यकर्मणा, सत्यादयो द्व्यष्टसहस्रयोषितः ।
निर्जित्य संख्ये त्रिदशांस्तदाशिषो, हरन्ति वज्रायुधवल्लभोचिताः ॥३७॥

पदच्छेद—यत् पाद शुश्रूषण मुख्य कर्मणा, सत्या आदयः द्वि अष्ट सहस्र योषितः ।
निर्जित्य संख्ये त्रिदशान् तद् आशिषः, हरन्ति वज्र आयुध वल्लभ उचिताः ॥

शब्दार्थ—

यत्	८.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) के	योषितः ।	७.	स्त्रियाँ
पाद, शुश्रूषण	९.	चरणों की, सेवा को	निर्जित्य	२.	पराजित करके (लाई गईं)
मुख्य	१०.	प्रधान	संख्ये, त्रिदशान्	१.	युद्ध में, देवताओं को
कर्मणा,	११.	कार्य मानने से	तद् आशिषः,	१५.	उन भोग पदार्थों का
सत्या	३.	सत्यभामा	हरन्ति	१६.	उपभोग करती हैं
आदयः	४.	इत्यादि	वज्र आयुध	१२.	इन्द्र की
द्वि अष्ट	५.	सोलह	वल्लभ	१३.	प्रिया (इन्द्राणी) के
सहस्र	६.	हजार	उचिताः ॥	१४.	योग्य

श्लोकार्थ—युद्ध में देवताओं को पराजित करके लाई गईं सत्यभामा इत्यादि सोलह हजार स्त्रियाँ जिस भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की सेवा को प्रधान कार्य मानने से इन्द्र की प्रिया इन्द्राणी के योग्य उन भोग पदार्थों का उपभोग करती हैं ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

यद्बाहुदण्डाभ्युदयानुजीविनो, यदुप्रवीरा ह्यकुतोभया मुहुः ।
अधिक्रमन्त्यङ्घ्रिभिराहृतां बलात्, सभां सुधर्मां सुरसत्तमोचिताम् ॥३८॥

पदच्छेद—यद् बाहु दण्ड अभ्युदय अनुजीविनः, यदु प्रवीराः हि अकुतोभयाः मुहुः ।
अधिक्रमन्ति अङ्घ्रिभिः आहृताम् बलात्, सभाम् सुधर्माम् सुर सत्तम उचिताम् ॥

शब्दार्थ—

यद्	२.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) के	अधिक्रमन्ति	१६.	रौंदते रहते हैं
बाहु दण्ड	३.	भुजारूपी दण्ड के	अङ्घ्रिभिः	१४.	अपने चरणों से
अभ्युदय	४.	प्रभाव से	आहृताम्	९.	लाई गई
अनुजीविनः,	५.	सुरक्षित	बलात्,	८.	बलपूर्वक
यदु प्रवीराः	६.	यादव वीर	सभाम्	१३.	सभा को
हि	१.	निश्चय ही	सुधर्माम्	१२.	सुधर्मा
अकुतोभयाः	७.	निर्भय होकर	सुर सत्तम	१०.	श्रेष्ठ देवताओं के
मुहुः ।	१५.	बार-बार	उचिताम् ॥	११.	योग्य

श्लोकार्थ—निश्चय ही, जिस भगवान् श्रीकृष्ण के भुजा रूपी दण्ड के प्रभाव से सुरक्षित यादव वीर निर्भय होकर बलपूर्वक लाई गई, श्रेष्ठ देवताओं के योग्य सुधर्मा सभा को अपने चरणों से बार-बार रौंदते रहते हैं ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

कच्चित्तेऽनामयं तात भ्रष्टतेजा विभासि मे ।
अलब्धमानोऽवज्ञातः किं वा तात चिरोषितः ॥३९॥

पदच्छेद—

कच्चित् ते अनामयम् तात, भ्रष्ट तेजाः विभासि मे ।
अलब्ध मानः अवज्ञातः, किम् वा तात चिर उषित ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	२.	क्या	**अलब्ध मानः**	१२.	सम्मान न पाकर
ते	३.	तुम्हारा	**अवज्ञातः**	१४.	अपमानित हुए हो
अनामयम्	४.	कुशल है	**किम्**	१३.	क्या
तात	१.	हे तात !	**वा**	८.	अथवा
भ्रष्ट तेजाः	६.	तेज से हीन	**तात**	९.	हे तात अर्जुन !
विभासि	७.	दिखाई पड़ रहे हो	**चिर**	१०.	बहुत दिनों तक
मे ।	५.	मुझे (तुम)	**उषितः ॥**	११.	रहने से

श्लोकार्थ—हे तात ! क्या तुम्हारा कुशल है ? मुझे तुम तेज से हीन दिखाई पड़ रहे हो । अथवा हे तात अर्जुन ! बहुत दिनों तक रहने से सम्मान न पाकर क्या अपमानित हुए हो ?

चत्वारिंशः श्लोकः

कच्चिन्नाभिहतोऽभावैः शब्दादिभिरमङ्गलैः ।
न दत्तमुक्तमर्थिभ्य आशया यत्प्रतिश्रुतम् ॥४०॥

पदच्छेद—

कच्चित् न अभिहतः अभावैः, शब्द आदिभिः अमङ्गलैः ।
न दत्तम् उक्तम् अर्थिभ्यः, आशया यत् प्रतिश्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	१.	(हे तात) कहीं	**न**	१३.	नहीं
न	७.	नहीं किये गये हो (अथवा)	**दत्तम्**	१४.	दे सके हो
अभिहतः	६.	अपमानित (तो)	**उक्तम्**	१२.	कही हुई (वस्तु को)
अभावैः	२.	न कहने योग्य	**अर्थिभ्यः**	८.	याचकों को
शब्द	४.	वचन	**आशया**	९.	आशा से (देने की)
आदिभिः	५.	इत्यादि से	**यत्**	१०.	जो
अमङ्गलैः ।	३.	अशुभ	**प्रतिश्रुतम् ॥**	११.	प्रतिज्ञा की हो (क्या उस)

श्लोकार्थ—हे तात ! कहीं न कहने योग्य अशुभ वचन इत्यादि से अपमानित तो नहीं किये हो ? अथवा याचकों को आशा से देने की जो प्रतिज्ञा की हो, क्या उस कही हुई वस्तु को नहीं दे सके हो ?

एकचत्वारिंशः श्लोकः

कच्चित्त्वं ब्राह्मणं बालं गां वृद्धं रोगिणं स्त्रियम् ।
शरणोपसृतं सत्त्वं नात्याक्षीः शरणप्रदः ॥४१॥

पदच्छेद— **कच्चित् त्वम् ब्राह्मणम् बालम् , गाम् वृद्धम् रोगिणम् स्त्रियम् ।**
शरण उपसृतम् सत्त्वम् , न अत्याक्षीः शरण प्रदः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	१२.	कहीं	**स्त्रियम् ।**	१०.	स्त्री (इत्यादि)
त्वम्	२.	तुमने	**शरण**	३.	शरण में
ब्राह्मणम्	५.	ब्राह्मण	**उपसृतम्**	४.	आये हुये
बालम्	६.	बालक	**सत्त्वम्**	११.	जीवों को
गाम्	७.	गाय	**न**	१३.	नहीं
वृद्धम्	८.	वृद्ध	**अत्याक्षीः**	१४.	त्याग तो दिया है
रोगिणम्	९.	रोगी (और)	**शरण प्रदः ॥**	१.	शरण देने वाले (हे तात)

श्लोकार्थ—शरण देने वाले हे तात ! तुमने शरण में आये हुए ब्राह्मण, बालक, गाय, वृद्ध, रोगी और स्त्री इत्यादि जीवों को कहीं त्याग तो नहीं दिया है ?

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

कच्चित्त्वं नागमोऽगम्यां गम्यां वासत्कृतां स्त्रियम् ।
पराजितो वाथ भवान्नोत्तमैर्नासमैः पथि ॥४२॥

पदच्छेद— **कच्चित् त्वम् न अगमः अगम्याम् , गम्याम् वा असत् कृताम् स्त्रियम् ।**
पराजितः वा अथ भवान् , न उत्तमैः न असमैः पथि ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	१.	कहीं	**स्त्रियम् ।**	८.	स्त्री का
त्वम्	२.	तुमने	**पराजितः**	१६.	हार तो गये हैं
न	४.	नहीं	**वा अथ**	१०.	अथवा
अगमः	५.	गमन तो किया है	**भवान्**	११.	आप
अगम्याम्	३.	परायी स्त्री के साथ	**न**	१५.	नहीं
गम्याम्	७.	अपनी	**न उत्तमैः**	१३.	छोटे लोगों से (या)
वा	६.	अथवा	**न असमैः**	१४.	बराबरी वालों से
असत् कृताम्	९.	अपमान (तो नहीं किया है)	**पथि ॥**	१२.	मार्ग में

श्लोकार्थ—हे तात ! कहीं तुमने परायी स्त्री के साथ गमन तो नहीं किया है ? अथवा अपनी स्त्री का अपमान तो नहीं किया है ? अथवा आप मार्ग में छोटे लोगों से या बराबरी वालों से हार तो नहीं गये हैं ?

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

अपि स्वित्पर्यभुङ्क्थास्त्वं सम्भोज्यान् वृद्धबालकान्।
जुगुप्सितं कर्म किंचित्कृतवान्न यदक्षमम् ॥४३॥

पदच्छेद— अपि स्वित् पर्यभुङ्क्थाः त्वम्, सम्भोज्यान् वृद्ध बालकान्।
जुगुप्सितम् कर्म किंचित्, कृतवान् न यद् अक्षमम् ॥

शब्दार्थ—

अपि स्वित्	१.	क्या	**जुगुप्सितम्**	८.	निन्दित
पर्यभुङ्क्थाः	६.	भोजन कर लिया है ?	**कर्म**	९.	कार्य (तो)
त्वम्	२.	तुमने	**किंचित्**	७.	(या) कोई
सम्भोज्यान्	३.	भोजन कराने के योग्य	**कृतवान्**	११.	किया है
वृद्ध	४.	वृद्धों (और)	**न**	१०.	नहीं
बालकान्।	५.	बालकों को (छोड़कर)	**यद् अक्षमम् ॥**	१२.	जो तुम्हारे करने योग्य नहीं था

श्लोकार्थ—हे तात ! क्या तुमने भोजन करने योग्य वृद्धों और बालकों को छोड़कर भोजन कर लिया है ? या कोई निन्दित कार्य तो नहीं किया है, जो तुम्हारे करने योग्य नहीं था ?

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

कच्चित् प्रेष्ठतमेनाथ हृदयेनात्मबन्धुना ।
शून्योऽस्मि रहितो नित्यं मन्यसे तेऽन्यथा न रुक् ॥४४॥

पदच्छेद— कच्चित् प्रेष्ठतमेन अथ, हृदयेन आत्म बन्धुना ।
शून्यः अस्मि रहितः नित्यम्, मन्यसे ते अन्यथा न रुक् ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	९.	निश्चय ही (तुम)	**अस्मि**	८.	हो गया हूँ
प्रेष्ठतमेन	२.	अति प्रिय	**रहितः**	५.	बिछुड़कर
अथ	११.	इसके अतिरिक्त	**नित्यम्**	६.	हमेशा के लिए
हृदयेन	१.	प्राणों के समान	**मन्यसे**	१०.	(ऐसा) मान रहे हो
आत्म	३.	अपने	**ते**	१२.	तुम्हें
बन्धुना।	४.	हितैषी (भगवान् श्रीकृष्ण) से	**अन्यथा**	१३.	और कोई दूसरी
शून्यः	७.	(मैं) शून्य	**न रुक् ॥**	१४.	वेदना नहीं है

श्लोकार्थ—हे तात ! प्राणों के समान अतिप्रिय अपने हितैषी भगवान् श्री कृष्ण से बिछुड़कर हमेशा के लिये मैं शून्य हो गया हूँ, निश्चय ही तुम ऐसा मान रहे हो । इसके अतिरिक्त तुम्हें और कोई दूसरी वेदना नहीं है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
युधिष्ठिरवितर्को नाम चतुर्दशः अध्यायः ॥१४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ पञ्चदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

एवं कृष्णसखः कृष्णो भ्रात्रा राज्ञाऽऽविकल्पितः ।
नानाशङ्कास्पदं रूपं कृष्णविश्लेषकर्शितः ॥१॥

पदच्छेद—

एवम् कृष्ण सखः कृष्णः, भ्रात्रा राज्ञा आविकल्पितः ।
नाना शङ्का आस्पदम् रूपम् , कृष्ण विश्लेष कर्शितः ॥

शब्दार्थं—

एवम्	७. इस प्रकार	नाना	१०.	अनेक
कृष्ण	४. श्री कृष्ण के	शङ्का	११.	आशंकाओं से
सखः	५. सखा	आस्पदम्	१२.	युक्त (था)
कृष्णः	६. अर्जुन से	रूपम्	९.	(उनका) मुख
भ्रात्रा, राज्ञा	१. भाई, राजा युधिष्ठिर ने	कृष्ण, विश्लेष	२.	श्रीकृष्ण के विरह से
आविकल्पितः ।	८. अनेक प्रश्नों को पूछा (उस समय)	कर्शितः ॥	३.	दुःखित (और)

श्लोकार्थं—भाई राजा युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण के विरह से दुःखित और श्रीकृष्ण के सखा अर्जुन से इस प्रकार अनेक प्रश्नों को पूछा । उस समय उनका मुख अनेक आशङ्काओं से युक्त था ।

द्वितीयः श्लोकः

शोकेन शुष्यद्वदनहृत्सरोजो हतप्रभः ।
विभुं तमेवानुध्यायन्नाशक्नोत्प्रतिभाषितुम् ॥२॥

पदच्छेद—

शोकेन शुष्यद् वदन, हृद् सरोजः हत प्रभः ।
विभुम् तम् एव अनुध्यायन् , न अशक्नोत् प्रतिभाषितुम् ॥

शब्दार्थं—

शोकेन	१. शोक से	विभुम्	८.	व्यापक भगवान् (श्रीकृष्ण) का
शुष्यद्	२. सूखते	तम्	७.	उस
वदन	३. मुख (और)	एव	९.	ही
हृद्	४. हृदय	अनुध्यायन्	१०.	ध्यान करते हुये
सरोजः	५. कमल वाले (तथा)	न अशक्नोत्	१२.	समर्थ न हो सके
हत प्रभः ।	६. कान्ति हीन (अर्जुन)	प्रतिभाषितुम् ॥	११.	उत्तर देने में

श्लोकार्थं—शोक से सूखते मुख और हृदय कमल वाले तथा कान्ति हीन अर्जुन उस व्यापक भगवान् श्रीकृष्ण का ही ध्यान करते हुये उत्तर देने में समर्थ न हो सके ।

तृतीयः श्लोकः

कृच्छ्रेण संस्तभ्य शुचः पाणिनाऽऽमृज्य नेत्रयोः ।
परोक्षेण समुन्नद्धप्रणयौत्कण्ठ्यकातरः ॥३॥

पदच्छेद—

कृच्छ्रेण संस्तभ्य शुचः, पाणिना आमृज्य नेत्रयोः ।
परोक्षेण समुन्नद्ध, प्रणयं औत्कण्ठ्य कातरः ॥

शब्दार्थ—

कृच्छ्रेण	६.	कठिनाई से	परोक्षेण	१.	(भगवान् के) आँखों से ओझल होने के कारण
संस्तभ्य	८.	दबाकर (तथा)	समुन्नद्ध	२.	बढ़े हुए
शुचः	७.	व्यथा को	प्रणयः	३.	प्रेम की
पाणिना	९.	हाथ से	औत्कण्ठ्य	४.	उत्कण्ठा से
आमृज्य	११.	पोंछ कर (बोले)	कातरः ॥	५.	व्याकुल (अर्जुन)
नेत्रयोः ।	१०.	आँसुओं को			

श्लोकार्थ—भगवान् के आँखों से ओझल होने के कारण बढ़े हुए प्रेम की उत्कण्ठा से व्याकुल अर्जुन कठिनाई से व्यथा को दबाकर तथा हाथ से आँसुओं को पोंछकर बोले ।

चतुर्थः श्लोकः

सख्यं मैत्रीं सौहृदं च सारथ्यादिषु संस्मरन् ।
नृपमग्रजमित्याह बाष्पगद्गदया गिरा ॥४॥

पदच्छेद—

सख्यम् मैत्रीम् सौहृदम् च, सारथ्य आदिषु संस्मरन् ।
नृपम् अग्रजम् इति आह, बाष्प गद्गदया गिरा ॥

शब्दार्थ—

सख्यम्	३.	सखा-भाव	नृपम्	१२.	राजा (युधिष्ठिर) से
मैत्रीम्	४.	मित्रता	अग्रजम्	११.	बड़े भाई
सौहृदम्	६.	प्रेम का	इति	१३.	इस प्रकार
च	५.	और	आह	१४.	कहा
सारथ्य	१.	सारथी	बाष्प	८.	आँसुओं के कारण
आदिषु	२.	आदि कर्म करते समय (भगवान् के)	गद्गदया	९.	गद्गद
संस्मरन् ।	७.	स्मरण करते हुए (अर्जुन ने)	गिरा ॥	१०.	वाणी में

श्लोकार्थ—सारथी आदि कर्म करते समय भगवान् के सखा-भाव, मित्रता और प्रेम का स्मरण करते हुए अर्जुन ने आँसुओं के कारण गद्-गद वाणी में बड़े भाई राजा युधिष्ठिर से इस प्रकार कहा ।

पञ्चमः श्लोकः

अर्जुन उवाच—

वञ्चितोऽहं महाराज हरिणा बन्धुरूपिणा ।
येन मेऽपहृतं तेजो देवविस्मापनं महत् ॥५॥

पदच्छेद—

वञ्चितः अहम् महाराज, हरिणा बन्धु रूपिणा ।
येन मे अपहृतम् तेजः, देव विस्मापनम् महत् ॥

शब्दार्थ—

वञ्चितः	५.	ठगा गया हूँ	**मे**	९.	मेरे
अहम्	४.	मैं	**अपहृतम्**	१२.	छीन लिया है
महाराज	१.	हे महाराज !	**तेजः**	११.	पराक्रम को
हरिणा	३.	भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा	**देव**	७.	देवताओं को
बन्धु रूपिणा ।	२.	हितैषी का रूप धारण किये हुए	**विस्मापनम्**	८.	आश्चर्य में डालने वाले
येन	६.	उन्होंने	**महत् ॥**	१०.	महान्

श्लोकार्थ—हे महाराज ! हितैषी का रूप धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा मैं ठगा गया हूँ । उन्होंने देवताओं को आश्चर्य में डालने वाले मेरे महान् पराक्रम को छीन लिया है ।

षष्ठः श्लोकः

यस्य क्षणवियोगेन लोको ह्यप्रियदर्शनः ।
उक्थेन रहितो ह्येष मृतकः प्रोच्यते यथा ॥६॥

पदच्छेद—

यस्य क्षण वियोगेन, लोकः हि अप्रिय दर्शनः ।
उक्थेन रहितः हि एषः, मृतकः प्रोच्यते यथा ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिस (भगवान्) के	**उक्थेन**	९.	प्राण से
क्षण	२.	एक क्षण के	**रहितः**	१०.	रहित
वियोगेन	३.	विरह से	**हि**	१२.	ही
लोकः	४.	संसार	**एषः**	११.	यह (शरीर)
हि	५.	ही	**मृतकः**	१३.	मुर्दा
अप्रिय	६.	असुन्दर	**प्रोच्यते**	१४.	कहा जाता है
दर्शनः ।	७.	लगने लगता है	**यथा ॥**	८.	जैसे

श्लोकार्थ—जिस भगवान् के एक क्षण के विरह से संसार ही असुन्दर लगने लगता है; जैसे प्राण से रहित यह शरीर ही मुर्दा कहा जाता है ।

सप्तमः श्लोकः

यत्संश्रयाद् द्रुपदगेहमुपागतानाम् , राज्ञां स्वयंवरमुखे स्मरदुर्मदानाम् ।
तेजो हृतं खलु मयाभिहतश्च मत्स्यः, सज्जीकृतेन धनुषाधिगता च कृष्णा ॥७॥

पदच्छेद— **यद् संश्रयात् द्रुपद गेहम् उपागतानाम् , राज्ञाम् स्वयंवर मुखे स्मर दुर्मदानाम् ।**
तेजः हृतम् खलु मया अभिहतः च मत्स्यः, सज्जीकृतेन धनुषा अधिगता च कृष्णा ॥

शब्दार्थ—

यद्, संश्रयात्	१. जिस (श्री कृष्ण) के, सहारे	**खलु**	९. बिल्कुल
द्रुपद गेहम्	३. राजा द्रुपद के घर	**मया**	२. मैंने
उपागतानाम्	५. आये हुये (तथा)	**अभिहतः**	१४. वेध किया
राज्ञाम्	७. राजाओं के	**च**	११. तदनन्तर
स्वयंवर मुखे	४. स्वयंवर के मध्य	**मत्स्यः,**	१३. मछली का
स्मर दुर्मदानाम् ।	६. काम-वासना से मतवाले	**सज्जीकृतेन, धनुषा**	१२. सजाये गये धनुष से
तेजः	८. तेज को	**अधिगता**	१६. प्राप्त किया था
हृतम्	१०. समाप्त कर दिया था	**च कृष्णा ॥**	१५. और, द्रौपदी को

श्लोकार्थ—जिस श्री कृष्ण के सहारे मैंने राजा द्रुपद के घर स्वयंवर के मध्य आये हुये तथा काम-वासना से मतवाले राजाओं के तेज को बिल्कुल समाप्त कर दिया था। तदनन्तर सजाये हुये धनुष से मछली का वेध किया और द्रौपदी को प्राप्त किया था।

अष्टमः श्लोकः

यत्संन्निधावहमु खाण्डवमग्नयेऽदा-मिन्द्रं च सामरगणं तरसा विजित्य ।
लब्धा सभा मयकृताद्भुतशिल्पमाया, दिग्भ्योऽहरन्नृपतयो बलिमध्वरे ते ॥८॥

पदच्छेद—**यद् सन्निधौ अहम् उ खाण्डवम् अग्नये अदाम्, इन्द्रम् च सामर गणम् तरसा विजित्य ।**
लब्धा सभा मय कृता अद्भुत शिल्प माया, दिग्भ्यः अहरन् नृपतयः बलिम् अध्वरे ते ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जिस (भगवान् श्री कृष्ण) की	**लब्धा**	१५. प्राप्त किया था (फलस्वरूप)
सन्निधौ, अहम् उ	२. उपस्थिति में, मैंने ही	**सभा**	१४. सभा को
खाण्डवम्	७. खाण्डव वन को	**मय कृता**	११. मय दानव के द्वारा, बनायी गई
अग्नये	८. अग्निदेव की तृप्ति के लिये	**अद्भुत, शिल्प**	१२. अनोखे, कला-कौशल और
अदाम्,	९. दिया था	**माया,**	१३. इन्द्रजाल से युक्त
इन्द्रम्	४. इन्द्र को	**दिग्भ्यः**	१८. सभी दिशाओं से
च	१०. तथा	**अहरन्**	२०. भेंट किया था।
सामर गणम्	३. देवताओं की सेना के साथ	**नृपतयः,बलिम्**	१९. राजाओं ने उपहार
तरसा	५. बल पूर्वक	**अध्वरे**	१७. राज सूय यज्ञ में
विजित्य ।	६. जीतकर	**ते ॥**	१६. आपके

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्री कृष्ण की उपस्थिति में मैंने ही देवताओं की सेना के साथ इन्द्र को बलपूर्वक जीतकर खाण्डव वन को अग्निदेव की तृप्ति के लिये दिया था तथा मय दानव के द्वारा बनायी गई, अनोखे कला कौशल और इन्द्रजाल से युक्त सभा को प्राप्त किया; फलस्वरूप आपके राजसूय यज्ञ में सभी दिशाओं से राजाओं ने उपहार भेंट किया था।

नवमः श्लोकः

यत्तेजसा नृपशिरोऽङ्घ्रिमहन्मखार्थे,
आर्योऽनुजस्तव गजायुतसत्त्ववीर्यः।
तेनाहृताः प्रमथनाथमखाय भूपा,
यन्मोचितास्तदनयन् बलिमध्वरे ते ॥९॥

पदच्छेद—

यत् तेजसा नृप शिरः अङ्घ्रिम् अहत् मख अर्थे,
आर्यः अनुजः तव गज अयुत सत्त्व वीर्यः।
तेन आहृताः प्रमथ नाथ मखाय भूपाः,
यद् मोचिताः तद् अनयन् बलिम् अध्वरे ते ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिस (भगवान् श्री कृष्ण) के	वीर्यः।	६.	पराक्रम वाले
तेजसा	२.	प्रभाव से	तेन	१६.	उस (जरासंध) के द्वारा
नृप	१२.	राजाओं के	आहृताः	२०.	पकड़े गये
शिरः	१३.	शिर पर	प्रमथ	१७.	भूत-प्रेतों के
अङ्घ्रिम्	१४.	पैर रखने वाले (जरासंध) का	नाथ	१८.	स्वामी महाभैरव के
अहत्	१५.	वध किया था (तथा उन्होंने)	मखाय	१९.	यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिये
मख	१०.	राजसूय यज्ञ के	भूपाः,	२२.	राजाओं को
अर्थे,	११.	निमित्त	यद्	२१.	जिन
आर्यः	९.	(मेरे) पूज्य (भीमसेन) ने	मोचिताः	२३.	छुड़ाया था
अनुजः	८.	छोटे भाई (एवं)	तद्	२४.	उन (राजाओं) ने
तव	७.	आपके	अनयन्	२८.	चढ़ाई थी
गज	४.	हाथियों के	बलिम्	२७.	भेंट
अयुत	३.	दस हजार	अध्वरे	२६.	यज्ञ में
सत्त्व	५.	बल और	ते॥	२५.	आपके

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्री कृष्ण के प्रभाव से दस हजार हाथियों के बल और पराक्रम वाले आपके छोटे भाई एवम् मेरे पूज्य भीमसेन ने राजसूय यज्ञ के निमित्त, राजाओं के सिर पर पैर रखने वाले जरासंध का वध किया था तथा उन्होंने उस जरासंध के द्वारा भूत-प्रेतों के स्वामी महाभैरव के यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिये पकड़े गये जिन राजाओं को छुड़ाया था; उन राजाओं ने आपके यज्ञ में भेंट चढ़ाई थी।

दशमः श्लोकः

पत्न्यास्तवाधिमखक्लृप्तमहाभिषेक-
श्लाघिष्ठचारुकबरं कितवैः सभायाम् ।
स्पृष्टं विकीर्य पदयोः पतिताश्रुमुख्या,
यस्तत्स्त्रियोऽकृत हतेशविमुक्तकेशाः ॥१०॥

पदच्छेद—

पत्न्याः तव अधिमख क्लृप्त महा अभिषेक,
श्लाघिष्ठ चारु कबरम् कितवैः सभायाम् ।
स्पृष्टम् विकीर्य पदयोः पतिता अश्रु मुख्या,
यः तत् स्त्रियः अकृत हत ईश विमुक्त केशाः ॥

शब्दार्थ—

पत्न्याः	४. धर्मपत्नी (द्रौपदी) के	पदयोः	१६. (भगवान् श्री कृष्ण के) पैरों में
तव	३. आपकी	पतिता	१७. पड़ गई (फलस्वरूप)
अधिमख	५. यज्ञ में	अश्रु	१५. आँसू बहाती हुई
क्लृप्त	६. किये गये	मुख्या,	१४. मुख पर
महा	७. राज्य	यः	१८. उन्होंने
अभिषेक,	८. अभिषेक से	तत्	१९. उन (दुष्टों की)
श्लाघिष्ठ	९. पवित्र एवं	स्त्रियः	२०. स्त्रियों को
चारु	१०. सुन्दर	अकृत	२५. बना दिया था
कबरम्	११. केश पाश को	हत	२२. मर जाने से
कितवैः	१. दुष्टों ने	ईश	२१. (अपने-अपने) पतियों के
सभायाम् ।	२. सभा में	विमुक्त	२३. खुले
स्पृष्टम्	१२. छूने का साहस किया (अतः वह)	केशाः ॥	२४. केशों वाली
विकीर्य	१३. केशों को विखेर कर (तथा)		

श्लोकार्थ—दुष्टों ने सभा में आपकी धर्म पत्नी द्रौपदी के, यज्ञ में किये गये राज्य-अभिषेक से पवित्र एवं सुन्दर केश-पाश को छूने का साहस किया। अतः वह केशों को विखेर कर तथा मुख पर आँसू बहाती हुई भगवान् श्री कृष्ण के पैरों में पड़ गई। फलस्वरूप उन्होंने उन दुष्टों की स्त्रियों को अपने-अपने पतियों के मर जाने से खुले केशों वाली बना दिया था।

एकादशः श्लोकः

योनो जुगोप वनमेत्य दुरन्तकृच्छ्राद् ,
दुर्वाससोऽरिरचितादयुताग्रभुग्यः ।
शाकान्नशिष्टमुपयुज्य यतस्त्रिलोकीं,
तृप्ताममंस्त सलिले विनिमग्नसङ्घः ॥११॥

पदच्छेद—

यः नः जुगोप वनम् एत्य दुरन्त कृच्छ्रात् ,
दुर्वाससः अरि रचितात् अयुत अग्र भुग् यः ।
शाक अन्न शिष्टम् उपयुज्य यतः त्रिलोकीम् ,
तृप्ताम् अमंस्त सलिले विनिमग्न सङ्घः ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जिस (श्री कृष्ण) ने	यः ।	११. वे (दुर्वासा ऋषि)
नः	९. हमारी	शाक	१७. साग और
जुगोप	१०. रक्षा की थी	अन्न	१८. अन्न का
वनम्	७. वन में	शिष्टम्	१६. (बटलोई में) बचे हुये
एत्य	८. आकर	उपयुज्य	१९. भोग लगाकर
दुरन्त	५. (क्रोध-स्वरूप) अपार	यतः	१५. क्योंकि (भगवान् ने)
कृच्छ्रात्,	६. संकट से	त्रिलोकीम्,	२०. तीनों लोकों को
दुर्वाससः	४. दुर्वासा ऋषि के	तृप्ताम्	२१. तृप्त कर दिया था (अतः)
अरि	२. शत्रु (दुर्योधन) की	अमंस्त	२५. तृप्त समझे (और वहाँ से भाग गये)
रचितात्	३. कूट नीति से भेजे गये	सलिले	२२. नदी के जल में
अयुत	१२. दस हजार (शिष्यों) के	विनिमग्न	२४. नहाते हुये (दुर्वासा ऋषि सबको)
अग्र	१३. साथ	सङ्घः ॥	२३. शिष्य गणों के साथ
भुग्	१४. भोजन करते थे		

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्री कृष्ण ने शत्रु दुर्योधन की कूटनीति से भेजे गये दुर्वासा ऋषि के क्रोध-स्वरूप अपार संकट से वन में आकर हमारी रक्षा की थी। वे महर्षि दुर्वासा दस हजार शिष्यों के साथ भोजन करते थे। क्योंकि भगवान् ने बटलोई में बचे हुये साग और अन्न का भोग लगाकर तीनों लोकों को तृप्त कर दिया था, अतः नदी के जल में शिष्य गणों के साथ नहाते हुये दुर्वासा ऋषि सबको तृप्त समझे और वहाँ से भाग गये।

द्वादशः श्लोकः

यत्तेजसाथ भगवान् युधि शूलपाणिः,
विस्मापितः सगिरिजोऽस्त्रमदान्निजं मे।
अन्येऽपि चाहममुनैव कलेवरेण,
प्राप्तो महेन्द्रभवने महदासनार्धम् ॥१२॥

पदच्छेद—

यत् तेजसा अथ भगवान् युधि शूल पाणिः,
विस्मापितः स गिरिजः अस्त्रम् अदात् निजम् मे।
अन्ये अपि च अहम् अमुना एव कलेवरेण,
प्राप्तः महेन्द्र भवने महत् आसन अर्धम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) के	मे।	१४. मुझे
तेजसा	२. प्रताप से (मैंने)	अन्ये	१२. दूसरे (लोकपालादिकों) ने
अथ	१०. तदनन्तर (उन्होंने)	अपि	१३. भी
भगवान्	८. भगवान् शिव को	च	११. और
युधि	३. युद्ध में	अहम्	१८. मैंने
शूल	७. त्रिशूल लिये	अमुना एव	१९. इसी
पाणिः,	६. हाथ में	कलेवरेण,	२०. शरीर से
विस्मापितः	९. आश्चर्य में डाल दिया था	प्राप्तः	२६. प्राप्त किया था
स	५. साथ	महेन्द्र	२१. इन्द्र की
गिरिजः	४. पार्वती के	भवने	२२. सभा में
अस्त्रम्	१६. हथियार	महत्	२३. महान्
अदात्	१७. दिये (तथा)	आसन	२४. इन्द्रासन का
निजम्	१५. अपने-अपने	अर्धम् ॥	२५. आंधा भाग

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्रीकृष्ण के प्रताप से मैंने युद्ध में पार्वती के साथ हाथ में त्रिशूल लिए भगवान् शिव को आश्चर्य में डाल दिया था। तदनन्तर उन्होंने और दूसरे लोकपालादिकों ने भी मुझे अपने अपने हथियार दिये थे तथा मैंने इसी शरीर से इन्द्र की सभा में महान् इन्द्रासन का आधा भाग प्राप्त किया था।

त्रयोदशः श्लोकः

तत्रैव मे विहरतो भुजदण्डयुग्मं,
गाण्डीवलक्षणमरातिवधाय देवाः ।
सेन्द्राः श्रिता यदनुभावितमाजमीढ,
तेनाहमद्य मुषितः पुरुषेण भूम्ना ॥१३॥

पदच्छेद—

तत्र एव मे विहरतः भुज दण्ड युग्मम् ;
गाण्डीव लक्षणम् अराति वधाय देवाः ।
स इन्द्राः श्रिताः यद् अनुभावितम् आजमीढ,
तेन अहम् अद्य मुषितः पुरुषेण भूम्ना ॥

शब्दार्थ—

तत्र एव	१. वहीं	इन्द्राः	४. इन्द्र के
मे	२. मेरे	श्रिताः	१४. सहारा लिया था
विहरतः	३. विहार करते रहने पर	यद्	१६. (यह सब) जिनकी
भुज	१२. बाहु	अनुभावितम्	१७. कृपा का फल था
दण्ड	१३. दण्डों का	आजमीढ,	१५. हे अजमेर प्रान्त के महाराज !
युग्मम्,	११. (मेरे) दोनों	तेन	२०. उन्हीं
गाण्डीव	६. गाण्डीव धनुष को	अहम्	१८. मैं
लक्षणम्	१०. धारण करने वाले	अद्य	१९. आज
अराति	७. दानवों के	मुषितः	२३. ठगा गया हूँ
वधाय	८. वध के लिये	पुरुषेण	२२. आदिपुरुष के द्वारा
देवाः ।	६. सभी देवताओं ने	भूम्ना ॥	२१. सर्व व्यापक
स	५. साथ		

श्लोकार्थ—वहीं मेरे विहार करते रहने पर इन्द्र के साथ सभी देवताओं ने दानवों के वध के लिये गाण्डीव धनुष को धारण करने वाले मेरे दोनों बाहु दण्डों का सहारा लिया था। हे अजमेर देश के महाराज ! यह सब जिनकी कृपा का फल था, मैं आज उन्हीं सर्वव्यापक आदिपुरुष के द्वारा ठगा गया हूँ।

चतुर्दशः श्लोकः

यदुबान्धवः कुरुबलाब्धिमनन्तपारम्,
एको रथेन ततरेऽहमतार्यसत्त्वम् ।
प्रत्याहृतं बहुधनं च मया परेषां,
तेजास्पदं मणिमयं च हृतं शिरोभ्यः ॥१४॥

पदच्छेद—

यद् बान्धवः कुरु बल अब्धिम् अनन्त पारम्,
एकः रथेन ततरे अहम् अतार्य सत्त्वम् ।
प्रत्याहृतम् बहु धनम् च मया परेषाम्,
तेज आस्पदम् मणिमयम् च हृतम् शिरोभ्यः ॥

शब्दार्थ—

यद्	१.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) का	प्रत्याहृतम्	१८.	लौटा लिया
बान्धवः	२.	बन्धु होने से	बहु	१६.	सभी
कुरु	६.	कौरवों की	धनम्	१७.	गोधन को
बल	११.	सेनारूपी	च	१४.	और
अब्धिम्	१२.	समुद्र के	मया	१५.	मैंने (ही राजाविराट् के)
अनन्त	७.	अगणित एवं	परेषाम्,	२०.	शत्रुओं के
पारम्,	८.	अपार (तथा)	तेज	२२.	प्रकाश
एकः	४.	अकेले ही	आस्पदम्	२३.	फैलाने वाले
रथेन	५.	रथ से	मणिमयम्	२४.	रत्नों के आभूषणों को
ततरे	१३.	पार उतर गया	च	१६.	तथा
अहम्	३.	मैं	हृतम्	२५.	उतरवा लिया था
अतार्य	६.	बड़े-बड़े	शिरोभ्यः ॥	२१.	शिरों से
सत्त्वम् ।	१०.	दुस्तर जीवों वाली			

श्लोकार्थ— जिस भगवान् श्रीकृष्ण का बन्धु होने से मैं अकेले ही रथ से कौरवों की अगणित एवम् अपार तथा बड़े-बड़े दुस्तर जीवों वाली सेनारूपी समुद्र के पार उतर गया और मैंने ही राजा विराट् के सभी गोधन को लौटा लिया तथा शत्रुओं के शिरों से प्रकाश फैलाने वाले रत्नों के आभूषणों को उतरवा लिया था ।

पञ्चदशः श्लोकः

यो भीष्मकर्णगुरुशल्यचमूष्वदभ्र-
राजन्यवर्यरथमण्डलमण्डितासु ।
अग्रेचरो मम विभो रथयूथपानाम्,
आयुर्मनांसि च दृशा सह ओज आर्च्छत् ॥१५॥

पदच्छेद—

यः भीष्म कर्ण गुरु शल्य चमूषु अदभ्र,
राजन्य वर्य रथ मण्डल मण्डितासु ।
अग्रेचरः मम विभो रथ यूथपानाम्,
आयुः मनांसि च दृशा सह ओजः आर्च्छत् ॥

शब्दार्थं—

यः	२.	जो (भगवान् श्रीकृष्ण)	**अग्रेचरः**	१५.	आगे रहते हुये
भीष्म	६.	भीष्म पितामह	**मम**	१४.	मेरे
कर्ण	१०.	कर्ण	**विभो**	१.	हे भाई जी !
गुरु	११.	द्रोणाचार्य और	**रथ यूथपानाम्,**	१७.	महारथियों के
शल्य	१२.	शल्य की	**आयुः**	२०.	आयु
चमूषु	१३.	सेनाओं के बीच	**मनांसि**	२२.	बुद्धि को (भी)
अदभ्र,	५.	अगणित	**च**	२१.	और
राजन्य	४.	राजाओं के	**दृशा**	१६.	(अपनी) दृष्टि से
वर्य	३.	प्रधान,	**सह**	१९.	साथ-साथ (उनकी)
रथ	६.	रथों के	**ओजः**	१८.	पराक्रम के
मण्डल	७.	झुण्ड से	**आर्च्छत् ॥**	२३.	हर लिया करते थे
मण्डितासु ।	८.	घिरी हुई			

श्लोकार्थ—हे भाई जी ! जो भगवान् श्रीकृष्ण प्रधान राजाओं के अगणित रथों के झुण्ड से घिरी हुई भीष्म पितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य और शल्य की सेनाओं के बीच मेरे आगे रहते हुए अपनी दृष्टि से महारथियों के पराक्रम के साथ-साथ उनकी आयु और बुद्धि को भी हर लिया करते थे ।

षोडशः श्लोकः

यद्दोष्षु मा प्रणिहितं गुरुभीष्मकर्ण-
नप्तृत्रिगर्तशलसैन्धवबाह्लिकाद्यैः ।
अस्त्राण्यमोघमहिमानि निरूपितानि,
नो पस्पृशुर्नृहरिदासमिवासुराणि ॥१६॥

पदच्छेद—

यद् दोष्षु मा प्रणिहितम् गुरु भीष्म कर्ण,
नप्तृ त्रिगर्त शल सैन्धव बाह्लिक आद्यैः ।
अस्त्राणि अमोघ महिमानि निरूपितानि,
नो पस्पृशुः नृहरि दासम् इव असुराणि ॥

शब्दार्थ—

यद्	१. जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) की	**आद्यैः ।**	१३. आदि राजाओं ने
दोष्षु	२. भुजाओं पर	**अस्त्राणि**	१६. अस्त्र
मा	४. मेरे ऊपर	**अमोघ**	१५. अचूक
प्रणिहितम्	३. आश्रित	**महिमानि**	१४. बड़े-बड़े
गुरु	५. द्रोणाचार्य	**निरूपितानि,**	१७. छोड़े (किन्तु वे सब मेरा)
भीष्म	६. भीष्म पितामह	**नो**	१८. नहीं
कर्ण,	७. कर्ण	**पस्पृशुः**	१९. स्पर्श (तक) कर सके
नप्तृ	८. भूरिश्रवा	**नृहरि**	२२. नृसिंह भगवान् के
त्रिगर्त	९. सुशर्मा	**दासम्**	२३. भक्त प्रह्लाद का
शल	१०. शल्य	**इव**	२०. जैसे
सैन्धव	११. जयद्रथ (और)	**असुराणि ॥**	२१. दैत्यों के अस्त्र
बाह्लिक	१२. बाह्लीक		

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्री कृष्ण की भुजाओं पर आश्रित मेरे ऊपर द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, कर्ण, भूरिश्रवा, सुशर्मा, शल्य, जयद्रथ और बाह्लीक इत्यादि राजाओं ने बड़े-बड़े अचूक अस्त्र छोड़े; किन्तु वे सब मेरा स्पर्श तक नहीं कर सके । जैसे दैत्यों के अस्त्र नृसिंह भगवान् के भक्त प्रह्लाद का स्पर्श नहीं कर सके थे ।

सप्तदशः श्लोकः

सौत्ये वृतः कुमतिनाऽऽत्मद ईश्वरो मे,
यत्पादपद्ममभवाय भजन्ति भव्याः ।
मां श्रान्तवाहमरयो रथिनो भुविष्ठं,
न प्राहरन् यदनुभावनिरस्तचित्ताः ॥१७॥

पदच्छेद—

सौत्ये वृतः कुमतिना आत्मदः ईश्वरः मे,
यत् पाद पद्मम् अभवाय भजन्ति भव्याः ।
माम् श्रान्त वाहम् अरयः रथिनः भुविष्ठम्,
न प्राहरन् यत् अनुभाव निरस्त चित्ताः ॥

शब्दार्थ—

सौत्ये	११. सारथी का काम	माम्	२२. मुझ पर
वृतः	१२. लिया था	श्रान्त	१९. थके
कुमतिना	७. (मुझ) कुबुद्धि ने	वाहम्	२०. घोड़ों वाले (एवं)
आत्मदः	८. स्वयं को	अरयः	१८. शत्रु गण
ईश्वरः	१०. (उस) भगवान् श्रीकृष्ण से	रथिनः	१७. महारथी
मे,	९. मेरे (अधीन करने वाले)	भुविष्ठम्,	२१. भूमि पर स्थित
यत्	३. जिस (भगवान्) के	न	२३. नहीं
पाद	४. चरण	प्राहरन्	२४. प्रहार (तक) कर सके थे
पद्मम्	५. कमल का	यत्	१३. जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) की
अभवाय	२. मोक्ष की कामना से	अनुभाव	१४. कृपा से
भजन्ति	६. भजन करते हैं	निरस्त	१५. मोहित
भव्याः ।	१. योगिजन	चित्ताः ॥	१६. बुद्धि वाले

श्लोकार्थ—योगिजन मोक्ष की कामना से जिस भगवान् के चरण कमल का भजन करते हैं; मुझ कुबुद्धि ने स्वयं को मेरे अधीन करने वाले उस भगवान् श्रीकृष्ण से सारथी का काम लिया था। जिस भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से मोहित बुद्धि वाले महारथी शत्रुगण थके घोड़ों वाले एवं भूमि पर स्थित मुझ पर प्रहार तक नहीं कर सके थे।

अष्टादशः श्लोकः

नर्माण्युदाररुचिरस्मितशोभितानि,
हे पार्थ हेऽर्जुन सखे कुरुनन्दनेति ।
संजल्पितानि नरदेव हृदि स्पृशानि,
स्मर्तुंर्लुंठन्ति हृदयं मम माधवस्य ॥१८॥

पदच्छेद—

नर्माणि उदार रुचिर स्मित शोभितानि,
हे पार्थ हे अर्जुन सखे कुरुनन्दन इति ।
संजल्पितानि नरदेव हृदि स्पृशानि,
स्मर्तुः लुठन्ति हृदयम् मम माधवस्य ॥

शब्दार्थ—

नर्माणि	२.	विनोद भरे हुये	संजल्पितानि	१५.	वचन
उदार	३.	स्पष्ट और	नरदेव	१.	हे महाराज !
रुचिरः	४.	मधुर	हृदि	७.	हृदय को
स्मित	५.	मुसकान से	स्पृशानि,	८.	छूने वाले
शोभितानि,	६.	सुन्दर लगने वाले (तथा)	स्मर्तुः	१६.	स्मरण करते हुयें
हे पार्थ	९.	हे पार्थ	लुठन्ति	१९.	व्याकुल कर देते हैं
हे अर्जुन	१०.	हे अर्जुन	हृदयम्	१८.	मन को
सखे	११.	हे सखे	मम	१७.	मेरे
कुरुनन्दन	१२.	हे कुरुनन्दन	माधवस्य ॥	१४.	भगवान् श्रीकृष्ण के
इति ।	१३.	इस प्रकार के			

श्लोकार्थ—हे महाराज ! विनोद भरे हुये, स्पष्ट और मधुर मुसकान से सुन्दर लगने वाले तथा हृदय को छूने वाले हे पार्थ ! हे अर्जुन ! हे सखे ! हे कुरुनन्दन ! इस प्रकार के श्रीकृष्ण के वचन स्मरण करते हुये मेरे मन को व्याकुल कर देते हैं ।

एकोनविंशः श्लोकः

शय्यासनाटनविकत्थनभोजनादि-
ष्वैक्याद्वयस्य ऋतवानिति विप्रलब्धः ।
सख्युः सखेव पितृवत्तनयस्य सर्वं,
सेहे महान्महितया कुमतेरघं मे ॥१९॥

पदच्छेद—

शय्या आसन अटन विकत्थन भोजन आदिषु,
ऐक्यात् वयस्य ऋतवान् इति विप्रलब्धः ।
सख्युः सखा इव पितृवत् तनयस्य सर्वम्,
सेहे महान् महितया कुमतेः अघम् मे ॥

शब्दार्थ—

शय्या	१. सोने	सखा	१३. एक मित्र के
आसन	२. बैठने	इव	१४. समान (तथा)
अटन	३. घूमने	पितृवत्	१६. पिता के समान (श्रीकृष्ण)
विकत्थन	४. बड़ाई करने (एवं)	तनयस्य	१५. पुत्र के (अपराधों को)
भोजन	५. भोजन	सर्वम्,	२१. सभी
आदिषु,	६. इत्यादि क्रियाओं मे	सेहे	२३. सह लेते थे
ऐक्यात्	७. एक साथ रहने के कारण	महान्	१७. (अपनी) बहुत बड़ी
वयस्य	८. हे मित्र !	महितया	१८. महत्ता से
ऋतवान्	९. (तुम महान्) सत्यवादी (हो)	कुमतेः	२०. दुर्बुद्धि के
इति	१०. ऐसा (मैं)	अघम्	२२. अपराधों को
विप्रलब्धः ।	११. व्यंग्य बोला करता था	मे ॥	१९. मुझ
सख्युः	१२. (किन्तु) मित्र की (बात को)		

श्लोकार्थ—सोने, बैठने, घूमने, बड़ाई करने एवम् भोजन इत्यादि क्रियाओं में एक साथ रहने के कारण "हे मित्र ! तुम महान् सत्यवादी हो" ऐसा मैं व्यंग्य बोला करता था। किन्तु मित्र की बात को एक मित्र के समान तथा पुत्र के अपराधों को पिता के समान भगवान् श्रीकृष्ण अपनी बहुत बड़ी महत्ता से मुझ दुर्बुद्धि के सभी अपराधों को सह लेते थे।

विंशः श्लोकः

सोऽहं नृपेन्द्र रहितः पुरुषोत्तमेन, सख्या प्रियेण सुहृदा हृदयेन शून्यः ।
अध्वन्युरुक्रमपरिग्रहमङ्ग रक्षन्, गोपैरसद्भिरबलेव विनिर्जितोऽस्मि ॥२०॥

पदच्छेद—सः अहम् नृपेन्द्र रहितः पुरुषोत्तमेन, सख्या प्रियेण सुहृदा हृदयेन शून्यः ।
अध्वनि उरुक्रम परिग्रहम् अङ्ग रक्षन् , गोपैः असद्भिः अबला इव विनिर्जितः अस्मि ॥

शब्दार्थ—

सः, अहम्	२. वही, मैं	अध्वनि	९. मार्ग में
नृपेन्द्र	१. हे महाराज !	उरुक्रम, परिग्रहम्	१०. श्रीकृष्ण की, पटरानियों की
रहितः	६. बिछुड़कर (अपने)	अङ्ग	८. हे तात !
पुरुषोत्तमेन,	५. भगवान् श्रीकृष्ण से	रक्षन् ,	११. रक्षा करता हुआ (मैं)
सख्या, प्रियेण	३. मित्र, प्रिय (एवं)	गोपैः, असद्भिः	१३. ग्वालों से, दुष्ट
सुहृदा	४. परम-हितैषी	अबला, इव	१२. अनाथ स्त्री के, समान
हृदयेन, शून्यः।	७. प्राणों से, रहित (हो गया हूँ)	विनिर्जितः अस्मि ॥	१४. हार गया हूँ

श्लोकार्थ—हे महाराज ! वही मैं प्रिय मित्र एवं परम हितैषी भगवान् श्रीकृष्ण से बिछुड़कर अपने प्राणों से रहित हो गया हूँ । हे तात ! मार्ग में भगवान् श्रीकृष्ण की पटरानियों की रक्षा करता हुआ मैं अनाथ स्त्री के समान दुष्ट ग्वालों से हार गया हूँ ।

एकविंशः श्लोकः

तद्वै धनुस्त इषवः स रथो हयास्ते, सोऽहं रथी नृपतयो यत आनमन्ति ।
सर्वं क्षणेन तदभूदसदीशरिक्तं, भस्मन् हुतं कुहकराद्धमिवोप्तमूष्याम् ॥२१॥

पदच्छेद—
तद् वै धनुः ते इषवः सः रथः हयाः ते, सः अहम् रथी नृपतयः यतः आनमन्ति ।
सर्वम् क्षणेन तद् अभूत् असत् ईश रिक्तम् , भस्मन् हुतम् कुहक राद्धम् इव उप्तम् ऊष्याम् ॥

शब्दार्थ—

तद् वै, धनुः	१. वही (गाण्डीव) धनुष	क्षणेन	१६. क्षण भर में
ते इषवः, सः रथः	२. वे ही बाण, वही रथ	तद्	१०. वह
हयाः	४. घोड़े (और)	अभूत्	१८. हो गया
ते,	३. वे ही	असत्	१७. निस्सार
सः अहम् , रथी	५. वही मैं, महारथी (हूँ)	ईश, रिक्तम् ,	९. भगवान् श्रीकृष्ण के, बिना
नृपतयः	७. राजा लोग	भस्मन् , हुतम्	१२. राख में, हवन
यतः	६. जिससे	कुहक, राद्धम्	१३. कपटपूर्ण, सेवा (और)
आनमन्ति ।	८. झुकते थे (किन्तु)	इव	१५. समान
सर्वम्	११. सब-कुछ	उप्तम् ,ऊष्याम् ॥	१४. बीज के, ऊसर में

श्लोकार्थ—वही गाण्डीव धनुष, वे ही बाण, वही रथ, वे ही घोड़े और वही मैं महारथी हूँ; जिससे राजा लोग झुकते थे । किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण के बिना वह सब-कुछ राख में हवन, कपट पूर्ण सेवा और ऊसर में बीज के समान क्षणभर में निस्सार हो गया ।

द्वाविंशः श्लोकः

राजंस्त्वयाभिपृष्टानां सुहृदां नः सुहृत्पुरे ।
विप्रशापविमूढानां निघ्नतां मुष्टिभिर्मिथः ॥२२॥

पदच्छेद—

राजन् त्वया अभिपृष्टानाम् , सुहृदाम् नः सुहृत् पुरे ।
विप्र शाप विमूढानाम् , निघ्नताम् मुष्टिभिः मिथः ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१.	हे महाराज !	विप्र	७.	ब्राह्मणों के
त्वया	२.	आपने	शाप	८.	शाप से
अभिपृष्टानाम्	६.	पूछा है (वे सब)	विमूढानाम्	९.	मोहित होकर
सुहृदाम्	५.	मित्रों के विषय में	निघ्नताम्	१२.	मार डाले
नः	४.	अपने (जिन)	मुष्टिभिः	११.	मुट्ठियों (के प्रहार) से
सुहृत् पुरे ।	३.	द्वारकावासी	मिथः ॥	१०.	परस्पर एक दूसरे को

श्लोकार्थ—हे महाराज ! आपने द्वारकावासी अपने जिन मित्रों के विषय में पूछा है; वे सब ब्राह्मणों के शाप से मोहित होकर परस्पर एक दूसरे को मुट्ठियों के प्रहार से मार डाले ।

त्रयोविंशः श्लोकः

वारुणीं मदिरां पीत्वा मदोन्मथितचेतसाम् ।
अजानतामिवान्योन्यं चतुःपञ्चावशेषिताः ॥२३॥

पदच्छेद—

वारुणीम् मदिराम् पीत्वा, मद उन्मथित चेतसाम् ।
अजानताम् इव अन्योन्यम् , चतुः पञ्च अवशेषिताः ॥

शब्दार्थ—

वारुणीम्	१.	वारुणी	अजानताम्	९.	न पहचानते हुए (उनमें)
मदिराम्	२.	मदिरा को	इव	७.	मानों
पीत्वा	३.	पीकर	अन्योन्यम्	८.	परस्पर एक दूसरे को
मद	४.	नशे से	चतुः	१०.	चार
उन्मथित	५.	पागल	पञ्च	११.	पाँच ही
चेतसाम् ।	६.	चित्त वाले (वे सब)	अवशेषिताः ॥	१२.	जीवित बचे हैं

श्लोकार्थ—वारुणी मदिरा को पीकर नशे से पागल चित्तवाले वे सब मानों परस्पर एक दूसरे को न पहचानते हुए उनमें चार-पांच ही जीवित बचे हैं ।

चतुर्विंशः श्लोकः

प्रायेणैतद्भगवत ईश्वरस्य विचेष्टितम् ।
मिथो निघ्नन्ति भूतानि भावयन्ति च यन्मिथः ॥२४॥

पदच्छेद—

प्रायेण एतद् भगवतः, ईश्वरस्य विचेष्टितम् ।
मिथः निघ्नन्ति भूतानि, भावयन्ति च यद् मिथः ॥

शब्दार्थ—

प्रायेण	३.	प्रायः	**निघ्नन्ति**	९.	नाश करते हैं
एतद्	४.	यही	**भूतानि**	७.	प्राणी
भगवतः	२.	प्रभु की	**भावयन्ति**	१२.	पालन करते हैं
ईश्वरस्य	१.	सर्व समर्थ	**च**	१०.	और
विचेष्टितम् ।	५.	लीला (है)	**यद्**	६.	जिससे कि
मिथः	८.	परस्पर एक दूसरे का	**मिथः ॥**	११.	परस्पर एक दूसरे का

श्लोकार्थ—सर्व समर्थ प्रभु की प्रायः यही लीला है; जिससे कि प्राणी परस्पर एक दूसरे का नाश करते हैं और परस्पर एक दूसरे का पालन करते हैं ।

पञ्चविंशः श्लोकः

जलौकसां जले यद्वन्महान्तोऽदन्त्यणीयसः ।
दुर्बलान् बलिनो राजन् महान्तो बलिनो मिथः ॥२५॥

पदच्छेद—

जल ओकसाम् जले यद्वत् , महान्तः अदन्ति अणीयसः ।
दुर्बलान् बलिनः राजन् , महान्तः बलिनः मिथः ॥

शब्दार्थ—

जल ओकसाम्	४.	जलचरों के बीच	**दुर्बलान्**	८.	दुर्बलों को (तथा)
जले	३.	जल में	**बलिनः**	७.	बलशाली
यद्वत्	२.	जिस प्रकार	**राजन्**	१.	हे महाराज !
महान्तः	५.	बड़े (जलचर)	**महान्तः**	९.	बड़े (और)
अदन्ति	१२.	खा जाते हैं	**बलिनः**	१०.	बलवान्
अणीयसः ।	६.	छोटों को	**मिथः ॥**	११.	परस्पर एक दूसरे को

श्लोकार्थ—हे महाराज ! जिस प्रकार जल में जलचरों के बीच बड़े जलचर छोटों को, बलशाली दुर्बलों को तथा बड़े और बलवान् परस्पर एक दूसरे को खा जाते हैं ।

षड्विंशः श्लोकः

एवं बलिष्ठैर्यदुभिर्महद्भिरितरान् विभुः ।
यदून् यदुभिरन्योन्यं भूभारान् संजहार ह ॥२६॥

पदच्छेद—

एवम् बलिष्ठैः यदुभिः, महद्भिः इतरान् विभुः ।
यदून् यदुभिः अन्योन्यम्, भू भारान् संजहार ह ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	उसी प्रकार	**यदून्**	९.	यादवों को (लड़ाकर)
बलिष्ठैः	३.	बहुत बलशाली	**यदुभिः**	७.	यादवों से
यदुभिः	५.	यादवों से	**अन्योन्यम्**	८.	परस्पर
महद्भिः	४.	महान्	**भू भारान्**	१०.	पृथ्वी के बोझ को
इतरान्	६.	दूसरे (राजाओं) को (एवं)	**संजहार**	१२.	मिटा दिया है
विभुः ।	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	**ह ॥**	११.	अवश्य

श्लोकार्थ—उसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने बहुत बलशाली महान् यादवों से दूसरे राजाओं को एवं यादवों से परस्पर यादवों को लड़ाकर पृथ्वी के बोझ को अवश्य मिटा दिया है ।

सप्तविंशः श्लोकः

देशकालार्थयुक्तानि हृत्तापोपशमानि च ।
हरन्ति स्मरतश्चित्तं गोविन्दाभिहितानि मे ॥२७॥

पदच्छेद—

देश काल अर्थ युक्तानि, हृत् ताप उपशमानि च ।
हरन्ति स्मरतः चित्तम्, गोविन्द अभिहितानि मे ॥

शब्दार्थ—

देश काल	१.	देश, काल और	**हरन्ति**	१२.	हर लेती है
अर्थ	२.	प्रयोजन से	**स्मरतः**	९.	स्मरण करते ही
युक्तानि	३.	परिपूर्ण	**चित्तम्**	११.	मन को
हृत् ताप	५.	मन की पीड़ा को	**गोविन्द**	७.	भगवान् श्रीकृष्ण की
उपशमानि	६.	शान्त करने वाली	**अभिहितानि**	८.	वाणी
च ।	४.	एवम्	**मे ॥**	१०.	मेरे

श्लोकार्थ—देश, काल और प्रयोजन से परिपूर्ण एवम् मन की पीड़ा को शान्त करने वाली भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी स्मरण करते ही मेरे मन को हर लेती है ।

अष्टाविंशः श्लोकः

सूत उवाच—

एवं चिन्तयतो जिष्णोः कृष्णपादसरोरुहम् ।
सौहार्देनातिगाढेन शान्ताऽऽसीद् विमला मतिः ॥२८॥

पदच्छेद—

एवम् चिन्तयतः जिष्णोः, कृष्ण पाद सरोरुहम् ।
सौहार्देन अतिगाढेन, शान्ता आसीत् विमला मतिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	**सौहार्देन**	३.	प्रेमा-भक्ति से
चिन्तयतः	७.	ध्यान करते हुए	**अतिगाढेन**	२.	प्रगाढ़
जिष्णोः	८.	अर्जुन की	**शान्ता**	११.	शान्त
कृष्ण	४.	भगवान् श्री कृष्ण के	**आसीत्**	१२.	हो गयी थी
पाद	५.	चरण	**विमला**	९.	निर्मल
सरोरुहम् ।	६.	कमलों का	**मतिः ॥**	१०.	बुद्धि

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रगाढ़ प्रेमा-भक्ति से भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमलों का ध्यान करते हुए अर्जुन की निर्मल बुद्धि शान्त हो गयी थी ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

वासुदेवाङ्घ्र्यनुध्यानपरिबृंहितरंहसा ।
भक्त्या निर्मथिताशेषकषायधिषणोऽर्जुनः ॥२९॥

पदच्छेद—

वासुदेव अङ्घ्रि अनुध्यान, परिबृंहित रंहसा ।
भक्त्या निर्मथित अशेष, कषाय धिषणः अर्जुनः ॥

शब्दार्थ—

वासुदेव	१.	भगवान् श्रीकृष्ण के	**भक्त्या**	६.	भक्ति के द्वारा
अङ्घ्रि	२.	चरणों के	**निर्मथित**	११.	धुल गयी थी
अनुध्यान	३.	चिन्तन के कारण	**अशेष**	९.	सारी
परिबृंहित	४.	तीव्र	**कषाय**	१०.	मैल
रंहसा ।	५.	प्रवाहमयी	**धिषणः**	८.	मन की
			अर्जुनः ॥	७.	अर्जुन के

श्लोकार्थ—भगवान श्रीकृष्ण के चरणों के चिन्तन के कारण तीव्र प्रवाहमयी भक्ति के द्वारा अर्जुन के मन की सारी मैल धुल गयी थी ।

त्रिंशः श्लोकः

गीतं भगवता ज्ञानं यत्तत्संग्राममूर्धनि ।
कालकर्मतमोरुद्धं पुनरध्यगमद् विभुः ॥३०॥

पदच्छेद—

गीतम् भगवता ज्ञानम्, यद् तद् संग्राम मूर्धनि ।
काल कर्म तमः रुद्धम्, पुनः अध्यगमत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

गीतम्	६.	गीता में गाया था	**काल**	८.	समय
भगवता	१.	भगवान् ने	**कर्म**	९.	संस्कार और
ज्ञानम्	५.	ज्ञान को	**तमः**	१०.	अज्ञान के कारण
यद्	४.	जिस	**रुद्धम्**	११.	भूले हुए
तद्	१२.	उस (ज्ञान) का	**पुनः**	१३.	फिर से
संग्राम	२.	युद्ध के	**अध्यगमत्**	१४.	स्मरण किया
मूर्धनि ।	३.	बीच	**विभुः ॥**	७.	अर्जुन ने

श्लोकार्थ—भगवान् ने युद्ध के बीच जिस ज्ञान को गीता में गाया था; अर्जुन ने समय, संस्कार और अज्ञान के कारण भूले हुए उस ज्ञान का फिर से स्मरण किया ।

एकत्रिंशः श्लोकः

विशोको ब्रह्मसम्पत्त्या संछिन्नद्वैतसंशयः ।
लीनप्रकृतिनैर्गुण्यादलिङ्गत्वादसम्भवः ॥३१॥

पदच्छेद—

विशोकः ब्रह्म सम्पत्त्या, संछिन्न द्वैत संशयः ।
लीन प्रकृति नैर्गुण्यात्, अलिङ्गत्वात् असम्भवः ॥

शब्दार्थ—

विशोकः	३.	शोक रहित (अर्जुन)	**लीन**	७.	(आत्मा में) लीन
ब्रह्म	१.	ब्रह्म ज्ञान की	**प्रकृति**	८.	प्रकृति
सम्पत्त्या	२.	प्राप्ति हो जाने से	**नैर्गुण्यात्**	९.	निर्गुण है (फलस्वरूप)
संछिन्न	६.	मुक्त हो गये	**अलिङ्गत्वात्**	१०.	सूक्ष्म शरीर के न रहने से (वे)
द्वैत	४.	माया और ब्रह्म की सत्यता के	**असम्भवः ॥**	११.	भव-बन्धन से छूट गये
संशयः ।	५.	संदेह से			

श्लोकार्थ—ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो जाने से शोक-रहित अर्जुन माया और ब्रह्म की सत्यता के संदेह से मुक्त हो गये । आत्मा में लीन प्रकृति निर्गुण है; फलस्वरूप सूक्ष्म-शरीर के न रहने से वे भवबन्धन से छूट गये ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

निशम्य भगवन्मार्गं संस्थां यदुकुलस्य च ।
स्वःपथाय मतिं चक्रे निभृतात्मा युधिष्ठिरः ॥३२॥

पदच्छेद—

निशम्य भगवत् मार्गम्, संस्थाम् यदु कुलस्य च ।
स्वः पथाय मतिम् चक्रे, निभृत आत्मा युधिष्ठिरः ॥

शब्दार्थ--

निशम्य	९. सुनकर (अपने)	**स्वः पथाय**	१०. स्वर्गारोहण का
भगवत्	४. भगवान् श्रीकृष्ण का	**मतिम्**	११. निश्चय
मार्गम्	५. परम धाम गमन	**चक्रे**	१२. किया
संस्थाम्	८. विनाश	**निभृत**	१. शान्त
यदु कुलस्य	७. यादवों का	**आत्मा**	२. चित्त
च ।	६. और	**युधिष्ठिरः ॥**	३. महाराज युधिष्ठिर ने

श्लोकार्थ—शान्त चित्त महाराज युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण का परम धाम गमन और यादवों का विनाश सुनकर अपने स्वर्गारोहण का निश्चय किया ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

पृथाप्यनुश्रुत्य धनंजयोदितं, नाशं यदूनां भगवद्गतिं च ताम् ।
एकान्तभक्त्या भगवत्यधोक्षजे, निवेशितात्मोपरराम संसृतेः ॥३३॥

पदच्छेद—

पृथा अपि अनुश्रुत्य धनंजय उदितम्, नाशम् यदूनाम् भगवत् गतिम् च ताम् ।
एकान्त भक्त्या भगवति अधोक्षजे, निवेशित आत्मा उपरराम संसृतेः ॥

शब्दार्थ—

पृथा, अपि	९. कुन्ती ने, भी	**ताम् ।**	६. उस
अनुश्रुत्य	८. सुनकर	**एकान्त, भक्त्या**	१२. अनन्य, भक्ति-भाव से
धनंजय, उदितम्,	१. अर्जुन के द्वारा, कहे गये	**भगवति**	११. भगवान् श्रीकृष्ण में
नाशम्	३. विनाश को	**अधोक्षजे**	१०. कमल-नयन
यदूनाम्	२. यादवों के	**निवेशित**	१४. लगाकर
भगवत्	५. भगवान् के	**आत्मा**	१३. मन को
गतिम्	७. स्वधाम गमन को	**उपरराम**	१६. वैराग्य ले लिया
च	४. और	**संसृतेः ॥**	१५. संसार से

श्लोकार्थ—अर्जुन के द्वारा कहे गये यादवों के विनाश को और भगवान् के उस स्वधाम-गमन को सुनकर कुन्ती ने भी कमलनयन भगवान् श्रीकृष्ण में अनन्य भक्तिभाव से मन को लगाकर संसार से वैराग्य ले लिया ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यथाहरद् भुवो भारं तां तनुं विजहावजः ।
कण्टकं कण्टकेनेव द्वयं चापीशितुः समम् ॥३४॥

पदच्छेद— यथा अहरत् भुवः भारम्, ताम् तनुम् विजहौ अजः ।
कण्टकम् कण्टकेन इव, द्वयम् च अपि ईशितुः समम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	६.	जिस (शरीर) से	कण्टकम्	३.	काँटे को (निकालकर)
अहरत्	६.	हटाया था	कण्टकेन	२.	काँटे से
भुवः	७.	पृथ्वी का	इव	१.	जैसे
भारम्	८.	बोझ	द्वयम्	४.	दोनों (ही काँटों) को (फेंक दिया जाता है)
ताम्	१०.	उस	च	१३.	क्योंकि
तनुम्	११.	शरीर को	अपि	१५.	(दोनों ही शरीर)
विजहौ	१२.	छोड़ दिया	ईशितुः	१४.	भगवान् की (दृष्टि में)
अजः ।	५.	(उसी प्रकार) अजन्मा भगवान् ने	समम् ॥	१६.	समान हैं

श्लोकार्थ—जैसे काँटे से काँटे को निकालकर दोनों ही काँटों को फेंक दिया जाता है; उसी प्रकार अजन्मा भगवान् ने जिस शरीर से पृथ्वी का बोझ हटाया था, उस शरीर को छोड़ दिया। क्योंकि भगवान् की दृष्टि में दोनों ही शरीर समान हैं।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यथा मत्स्यादिरूपाणि धत्ते जह्याद् यथा नटः ।
भूभारः क्षपितो येन जहौ तच्च कलेवरम् ॥३५॥

पदच्छेद— यथा मत्स्य आदि रूपाणि, धत्ते जह्यात् यथा नटः ।
भू भारः क्षपितः येन, जहौ तद् च कलेवरम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	भू	११.	पृथ्वी के
मत्स्य	३.	मछली	भारः	१२.	बोझ को
आदि	४.	इत्यादि जीवों के	क्षपितः	१३.	दूर किया था
रूपाणि	५.	रूपों को	येन	१०.	जिस (शरीर) से
धत्ते	६.	धारण करता है	जहौ	१६.	छोड़ दिया
जह्यात्	८.	छोड़ देता है	तद्	१४.	उस
यथा	६.	उसी प्रकार (भगवान् ने)	च	७.	और (उसे)
नटः ।	२.	नाटक करने वाला	कलेवरम् ॥	१५.	शरीर को

श्लोकार्थ—जैसे नाटक करने वाला मछली इत्यादि जीवों के रूपों को धारण करता है और उसे छोड़ देता है; उसी प्रकार भगवान् ने जिस शरीर से पृथ्वी के बोझ को दूर किया था, उस शरीर को छोड़ दिया।

षट्त्रिंशः श्लोकः

यदा मुकुन्दो भगवानिमां महीं, जहौ स्वतन्वा श्रवणीयसत्कथः ।
तदाहरेवाप्रतिबुद्धचेतसा-मधर्महेतुः कलिरन्ववर्तत ॥३६॥

पदच्छेद—

यदा मुकुन्दः भगवान् इमाम् महीम्, जहौ स्व तन्वा श्रवणीय सत् कथः ।
तदा अहः एव अप्रतिबुद्ध चेतसाम्, अधर्म हेतुः कलिः अन्ववर्तत ॥

शब्दार्थ—

यदा	६. जब	तदा	१०. उस
मुकुन्दः	४. श्रीकृष्ण ने	अहः	११. दिन से
भगवान्	३. भगवान्	एव	१२. ही
इमाम्	७. इस	अप्रतिबुद्ध	१३. अज्ञानी
महीम्,	८. पृथ्वी को	चेतसाम्,	१४. मनुष्यों के
जहौ	९. छोड़ा	अधर्म	१५. पाप का
स्व तन्वा	५. अपने शरीर से	हेतुः	१६. मूल
श्रवणीय	१. सुनने योग्य	कलिः	१७. कलियुग
सत् कथः ।	२. उत्तम लीलाधारी	अन्ववर्तत ॥	१८. आ गया

श्लोकार्थ—सुनने योग्य उत्तम लीलाधारी भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने शरीर से जब इस पृथ्वी को छोड़ा; उस दिन से ही अज्ञानी मनुष्यों के पाप का मूल कलियुग आ गया ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

युधिष्ठिरस्तत्परिसर्पणं बुधः, पुरे च राष्ट्रे च गृहे तथाऽऽत्मनि ।
विभाव्य लोभानृतजिह्महिंसना-द्यधर्मचक्रं गमनाय पर्यधात् ॥३७॥

पदच्छेद—

युधिष्ठिरः तत् परिसर्पणम् बुधः, पुरे च राष्ट्रे च गृहे तथा आत्मनि ।
विभाव्य लोभ अनृत जिह्म हिंसन आदि, अधर्म चक्रम् गमनाय पर्यधात् ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरः	२. युधिष्ठिर ने	विभाव्य	१२. अनुभव करके
तत् परिसर्पणम्	७. उस (कलियुग) के आगमन का (एवं)	लोभ, अनृत	८. लोभ, झूठ
बुधः,	१. ज्ञानी	जिह्म	९. छल
पुरे, च	३. नगर में, और	हिंसन, आदि,	१०. हिंसा, इत्यादि
राष्ट्रे, च	४. देश में, एवम्	अधर्म चक्रम्	११. पाप-समूह का
गृहे, तथा	५. घर में, तथा	गमनाय	१३. (घर से) चले जाने का
आत्मनि ।	६. अपने में	पर्यधात् ॥	१४. निश्चय कर लिया

श्लोकार्थ—ज्ञानी युधिष्ठिर ने नगर में और देश में एवं घर में तथा अपने में उस कलियुग के आगमन का एवम् लोभ, झूठ, छल, हिंसा इत्यादि पाप-समूह का अनुभव करके घर से चले जाने का निश्चय कर लिया ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

स्वराट् पौत्रं विनयिनमात्मनः सुसमं गुणैः ।
तोयनीव्याः पतिं भूमेरभ्यषिञ्चद् गजाह्वये ॥३८॥

पदच्छेद—

स्वराट् पौत्रम् विनयिनम् , आत्मनः सुसमम् गुणैः ।
तोय नीव्याः पतिम् भूमेः, अभ्यषिञ्चत् गजाह्वये ॥

शब्दार्थ—

स्वराट्	१.	महाराज (युधिष्ठिर) ने	तोय	७.	समुद्र से
पौत्रम्	६.	पौत्र (परीक्षित्) का	नीव्याः	८.	घिरी हुई
विनयिनम्	५.	विनयशील	पतिम्	१०.	स्वामी के रूप में
आत्मनः	३.	अपने	भूमेः	९.	पृथ्वी के
सुसमम्	४.	समान (एवं)	अभ्यषिञ्चत्	१२.	राज्याभिषेक किया
गुणैः ।	२.	गुणों में	गजाह्वये ॥	११.	हस्तिनापुर में

श्लोकार्थ—महाराज युधिष्ठिर ने गुणों में अपने समान एवं विनयशील पौत्र परीक्षित् का समुद्र से घिरी हुई पृथ्वी के स्वामी के रूप में हस्तिनापुर में राज्याभिषेक किया ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

मथुरायां तथा वज्रं शूरसेनपतिं ततः ।
प्राजापत्यां निरूप्येष्टिमग्नीनपिबदीश्वरः ॥३९॥

पदच्छेद—

मथुरायाम् तथा वज्रम् , शूरसेन पतिं ततः ।
प्राजापत्याम् निरूप्य इष्टिम् , अग्नीन् अपिबत् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

मथुरायाम्	६.	मथुरा में (अभिषेक किया)	प्राजापत्याम्	८.	प्राजापत्य नामक
तथा	७.	और	निरूप्य	१०.	अनुष्ठान करके
वज्रम्	५.	(अनिरुद्ध के पुत्र) वज्र का	इष्टिम्	९.	यज्ञ का
शूरसेन	३.	शूरसेन देश के	अग्नीन्	११.	(गृहस्थाश्रम की) अग्नियों का
पतिम्	४.	राजा के रूप में	अपिबत्	१२.	विसर्जन कर दिया
ततः ।	१.	तदनन्तर	ईश्वरः ॥	२.	महाराज (युधिष्ठिर) ने

श्लोकार्थ—तदनन्तर महाराज युधिष्ठिर ने शूरसेन देश के राजा के रूप में अनिरुद्ध के पुत्र वज्र का मथुरा में अभिषेक किया और प्रजापत्य नामक यज्ञ का अनुष्ठान करके गृहस्थाश्रम की अग्नियों का विसर्जन कर दिया ।

चत्वारिंशः श्लोकः

विसृज्य तत्र तत्सर्वं दुकूलवलयादिकम् ।
निर्ममो निरहंकारः संछिन्नाशेषबन्धनः ॥४०॥

पदच्छेद—

विसृज्य तत्र तत् सर्वम् , दुकूल वलय आदिकम् ।
निर्ममः निरहंकारः, संछिन्न अशेष बन्धनः ॥

शब्दार्थ—

विसृज्य	५. छोड़कर (तथा)		**निर्ममः**	६. ममता (और)
तत्र	४. वहीं पर		**निरहंकारः**	७. अहंकार से रहित होकर
तत्, सर्वम्	३. उन, सभी (आभूषणों) को		**संछिन्न**	१०. काट दिया
दुकूल	१. दुपट्टा		**अशेष**	८. सम्पूर्ण
वलय, आदिकम् ।	२. कंकण, इत्यादि		**बन्धनः ॥**	९. बन्धनों को

श्लोकार्थ—महाराज युधिष्ठिर ने दुपट्टा, कंकण इत्यादि उन सभी आभूषणों को वहीं पर छोड़कर तथा ममता और अहंकार से रहित होकर सम्पूर्ण बन्धनों को काट दिया ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

वाचं जुहाव मनसि तत्प्राण इतरे च तम् ।
मृत्यावपानं सोत्सर्गं तं पञ्चत्वे ह्यजोहवीत् ॥४१॥

पदच्छेद—

वाचम् जुहाव मनसि, तत् प्राणे इतरे च तम् ।
मृत्यौ अपानम् स उत्सर्गम् , तम् पञ्चत्वे हि अजोहवीत् ॥

शब्दार्थ—

वाचम्	१. (उन्होंने) वाणी को		**मृत्यौ**	१२. मृत्यु में
जुहाव	७. मिला दिया (तदनन्तर)		**अपानम्**	११. अपान वायु को
मनसि	२. मन में (तथा)		**स**	१०. साथ
तत्	३. उस (मन) को		**उत्सर्गम्**	९. क्रिया के
प्राणे	६. प्राणवायु में		**तम्**	१४. उस (मृत्यु) को
इतरे	५. अन्य (इन्द्रियों) को		**पञ्चत्वे**	१५. पंचमहाभूतों में
च	४. और		**हि**	१३. तथा
तम् ।	८. उस (प्राण) को (एवम्)		**अजोहवीत् ॥**	१६. लीन कर दिया

श्लोकार्थ—उन्होंने वाणी को मन में तथा उस मन को और अन्य इन्द्रियों को प्राणवायु में मिला दिया । तदनन्तर उस प्राण को एवं क्रिया के साथ अपानवायु को मृत्यु में तथा उस मृत्यु को पंच महाभूतों में लीन कर दिया ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

त्रित्वे हुत्वाथ पञ्चत्वं तच्चैकत्वेऽजुहोन्मुनिः ।
सर्वमात्मन्यजुहवीद् ब्रह्मण्यात्मानमव्यये ॥४२॥

पदच्छेद—

त्रित्वे हुत्वा अथ पञ्चत्वम्, तद् च एकत्वे अजुहोत् मुनिः ।
सर्वम् आत्मनि अजुहवीत्, ब्रह्मणि आत्मानम् अव्यये ॥

शब्दार्थ—

त्रित्वे	४.	तीनों गुणों में	मुनिः ।	२.	मननशील (युधिष्ठिर) ने
हुत्वा	५.	मिलाकर	सर्वम्	१०.	प्रकृति को
अथ	१.	उसके बाद	आत्मनि	११.	जीवात्मा में (और)
पञ्चत्वम्	३.	पंचमहाभूतों को	अजुहवीत्	१५.	लीन कर दिया था
तद्	६.	उन्हें	ब्रह्मणि	१४.	परमात्मा में
च	९.	तथा	आत्मानम्	१२.	जीवात्मा को
एकत्वे	७.	प्रधान प्रकृति में	अव्यये ॥	१३.	अविनाशी
अजुहोत्	८.	मिला दिया			

श्लोकार्थ—उसके बाद मननशील युधिष्ठिर ने पंचमहाभूतों को तीनों गुणों में मिलाकर उन्हें प्रधान प्रकृति में मिला दिया। तथा प्रकृति को जीवात्मा में और जीवात्मा को अविनाशी परमात्मा में लीन कर दिया था।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

चीरवासा निराहारो बद्धवाङ् मुक्तमूर्धजः ।
दर्शयन्नात्मनो रूपं जडोन्मत्तपिशाचवत् ॥४३॥

पदच्छेद—

चीर वासाः निराहारः, बद्ध वाक् मुक्त मूर्धजः ।
दर्शयन् आत्मनः रूपम्, जड उन्मत्त पिशाचवत् ॥

शब्दार्थ—

चीर वासाः	१.	चीर वस्त्र पहनकर (तथा)	दर्शयन्	१०.	दिखाई पड़ता था
निराहारः	३.	आहार लेना छोड़ दिया (था)	आत्मनः	६.	(इस प्रकार) उनका
बद्ध वाक्	२.	मौन धारण करके	रूपम्	७.	रूप
मुक्त	५.	बिखरे हुए थे	जड, उन्मत्त	८.	मूढ, पागल (और)
मूर्धजः ।	४.	उनके बाल	पिशाचवत् ॥	९.	पिशाच की भाँति

श्लोकार्थ—उन्होंने चीर वस्त्र पहनकर तथा मौन धारण करके आहार लेना छोड़ दिया था। उनके बाल बिखरे हुए थे। इस प्रकार उनका रूप मूढ, पागल और पिशाच की भाँति दिखाई पड़ता था।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

अनपेक्षमाणो निरगादश्रृण्वन् बधिरो यथा ।
उदीचीं प्रविवेशाशां गतपूर्वां महात्मभिः ।
हृदि ब्रह्म परं ध्यायन्नावर्तेत यतो गतः ॥४४॥

पदच्छेद— अनपेक्षमाणः निरगात्, अश्रृण्वन् बधिरः यथा ।
उदीचीम् प्रविवेश आशाम्, गत पूर्वाम् महात्मभिः ।
हृदि ब्रह्म परम् ध्यायन्, न आवर्तेत यतः गतः ॥

शब्दार्थ—

अनपेक्षमाणः	१.	उदासीन-भाव से	महात्मभिः ।	१२.	(जहाँ) महात्मा लोग
निरगात्	४.	(घर से) निकल पड़े (वे)	हृदि	५.	हृदय में
अश्रृण्वन्	३.	नहीं सुनते हुए	ब्रह्म	७.	ब्रह्म का
बधिरः, यथा ।	२.	बहिरे के, समान	परम्	६.	परम
उचीदीम्	९.	उत्तर	ध्यायन्	८.	ध्यान करते हुए
प्रविवेश	११.	चल दिये	न	१७.	नहीं
आशाम्	१०.	दिशा की ओर	आवर्तेत	१८.	लौटा जा सकता है
गत	१४.	गये थे (तथा)	यतः	१५.	जहाँ से
पूर्वाम्	१३.	पहिले	गतः ॥	१६.	जाने के बाद

श्लोकार्थ—महाराज युधिष्ठिर उदासीन-भाव से बहिरे के समान नहीं सुनते हुये घर से निकल पड़े। वे हृदय में परम ब्रह्म का ध्यान करते हुये उत्तर दिशा की ओर चल दिये, जहाँ महात्मा लोग पहिले गये थे तथा जहाँ से जाने के बाद लौटा नहीं जा सकता है।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

सर्वे तमनु निर्जग्मुर्भ्रातरः कृतनिश्चयाः ।
कलिनाधर्ममित्रेण दृष्ट्वा स्पृष्टाः प्रजा भुवि ॥४५॥

पदच्छेद— सर्वे तम् अनु निर्जग्मुः, भ्रातरः कृत निश्चयाः ।
कलिना अधर्म मित्रेण, दृष्ट्वा स्पृष्टा। प्रजाः भुवि ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	८.	सभी	कलिना	५.	कलियुग से
तम्	१२.	महाराज युधिष्ठिर के	अधर्म	३.	पाप के
अनु	१३.	पीछे	मित्रेण	४.	साथी
निर्जग्मुः	१४.	चल दिये	दृष्ट्वा	७.	देखकर
भ्रातरः	९.	भाई	स्पृष्टाः	६.	व्याप्त
कृत	११.	करके	प्रजाः	२.	लोगों को
निश्चयाः ।	१०.	निश्चय	भुवि ॥	१.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर लोगों को पाप के साथी कलियुग से व्याप्त देखकर सभी भाई निश्चय करके महाराज युधिष्ठिर के पीछे चल दिये।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

ते साधुकृतसर्वार्था ज्ञात्वाऽऽत्यन्तिकमात्मनः ।
मनसा धारयामासुर्वैकुण्ठचरणाम्बुजम् ॥४६॥

पदच्छेद—

ते साधु कृत सर्व अर्थाः, ज्ञात्वा आत्यन्तिकम् आत्मनः ।
मनसा धारयामासुः, वैकुण्ठ चरण अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

ते	५.	उन (पाण्डवों) ने	आत्यन्तिकम्	७.	परम कल्याण
साधु	३.	भली भाँति	आत्मनः ।	६.	अपना
कृत	४.	भोग करने के बाद	मनसा	९.	मन से
सर्व	१.	सभी	धारयामासुः	१२.	ध्यान किया
अर्थाः	२.	पुरुषार्थों का	वैकुण्ठ	१०.	भगवान् के
ज्ञात्वा	८.	समझ कर (अन्त में)	चरण अम्बुजम् ॥	११.	चरण-कमल का

श्लोकार्थ—सभी पुरुषार्थों का भली भाँति भोग करने के बाद उन पाण्डवों ने अपना परम कल्याण समझकर अन्त में मन से भगवान् के चरण-कमल का ध्यान किया ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तद्ध्यानोद्रिक्तया भक्त्या विशुद्धधिषणाः परे ।
तस्मिन्नारायणपदे एकान्तमतयो गतिम् ॥४७॥

पदच्छेद—

तद् ध्यान उद्रिक्तया भक्त्या, विशुद्ध धिषणाः परे ।
तस्मिन् नारायण पदे, एकान्त मतयः गतिम् ॥

शब्दार्थ—

तद् ध्यान	१.	उस ध्यान में	तस्मिन्	६.	उस
उद्रिक्तया	२.	बढ़ी हुई	नारायण	८.	परमात्मा के
भक्त्या	३.	भक्ति से	पदे	९.	चरणों में
विशुद्ध	४.	निर्मल	एकान्त	१०.	अनन्य
धिषणाः	५.	बुद्धि वाले (पाण्डवों) ने	मतयः	११.	भाव होने से
परे ।	७.	परात्पर	गतिम् ॥	१२.	परम पद को (प्राप्त किया)

श्लोकार्थ—उस ध्यान में बढ़ी हुई भक्ति से निर्मल बुद्धिवाले पाण्डवों ने उस परात्पर परमात्मा के चरणों में अनन्य भाव होने से परम पद को प्राप्त किया ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

अवापुर्दुरवापां ते असद्भिर्विषयात्मभिः ।
विधूतकल्मषास्थाने विरजेनात्मनैव हि ॥४८॥

पदच्छेद—

अवापुः दुरवापाम् ते, असद्भिः विषय आत्मभिः ।
विधूत कल्मष आस्थाने, विरजेन आत्मना एव हि ॥

शब्दार्थ—

अवापुः	११. प्राप्त किया		**विधूत**	२. रहित
दुरवापाम्	९. दुर्लभ गति को		**कल्मष**	१. पाप से
ते	५. उन (पाण्डवों) ने		**आस्थाने**	१२. यह उचित है
असद्भिः	८. पुरुषों से		**विरजेन**	४. प्राकृतिक गुणों से हीन
विषय	६. विषयों में		**आत्मना एव**	१०. अपने आप ही
आत्मभिः ।	७. आसक्त		**हि ॥**	३. तथा

श्लोकार्थ—पाप से रहित तथा प्राकृतिक गुणों से हीन उन पाण्डवों ने विषयों में आसक्त पुरुषों से दुर्लभ गति को अपने आप ही प्राप्त किया; यह उचित है ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

विदुरोऽपि परित्यज्य प्रभासे देहमात्मवान् ।
कृष्णावेशेन तच्चित्तः पितृभिः स्वक्षयं ययौ ॥४९॥

पदच्छेद—

विदुरः अपि परित्यज्य, प्रभासे देहम् आत्मवान् ।
कृष्ण आवेशेन तद् चित्तः, पितृभिः स्व क्षयम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

विदुरः	५. विदुर जी		**कृष्ण**	१. श्री कृष्ण के
अपि	६. भी		**आवेशेन**	२. चिन्तन से
परित्यज्य	९. छोड़कर		**तद् चित्तः**	३. तन्मय हुए
प्रभासे	७. प्रभास क्षेत्र में		**पितृभिः**	१०. पितरों के साथ
देहम्	८. (अपना) शरीर		**स्व क्षयम्**	११. अपने (यम) लोक में
आत्मवान् ।	४. आत्मज्ञानी		**ययौ ॥**	१२. चले गये

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के चिन्तन से तन्मय हुए, आत्मज्ञानी विदुर जी भी प्रभास क्षेत्र में अपना शरीर छोड़कर पितरों के साथ अपने यम लोक में चले गये ।

पञ्चाशः श्लोकः

द्रौपदी च तदाऽऽज्ञाय पतीनामनपेक्षताम् ।
वासुदेवे भगवति ह्येकान्तमतिराप तम् ॥५०॥

पदच्छेद— द्रौपदी च तदा आज्ञाय, पतीनाम् अनपेक्षताम् ।
वासुदेवे भगवति, हि एकान्त मतिः आप तम् ॥

शब्दार्थ—

द्रौपदी	२.	द्रौपदी	वासुदेवे	८.	श्रीकृष्ण में
च	३.	भी	भगवति	७.	भगवान्
तदा	१.	उस समय	हि	१०.	और
आज्ञाय	६.	समझकर	एकान्त मतिः	९.	निश्चय बुद्धि हुई
पतीनाम्	४.	पति (पाण्डवों) के	आप	१२.	प्राप्त कर ली
अनपेक्षताम् ।	५.	उपेक्षाभाव को	तम् ॥	११.	उन्हें

श्लोकार्थ—उस समय द्रौपदी भी पति पाण्डवों के उपेक्षा भाव को समझकर भगवान् श्रीकृष्ण में निश्चय-बुद्धि हुई और उन्हें प्राप्त कर ली ।

एकपञ्चाशः श्लोकः

यः श्रद्धयैतद् भगवत्प्रियाणां, पाण्डोः सुतानामिति सम्प्रयाणम् ।
श्रृणोत्यलं स्वस्त्ययनं पवित्रं, लब्ध्वा हरौ भक्तिमुपैति सिद्धिम् ॥५१॥

पदच्छेद—यः श्रद्धया एतद् भगवत् प्रियाणाम् , पाण्डोः सुतानाम् इति सम्प्रयाणम् ।
श्रृणोति अलम् स्वस्त्ययनम् पवित्रम् , लब्ध्वा हरौ भक्तिम् उपैति सिद्धिम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो (मनुष्य)	श्रृणोति	१३.	सुनता है (वह मनुष्य)
श्रद्धया	११.	श्रद्धापूर्वक	अलम्	१२.	सम्पूर्ण रूप से
एतद्	५.	इन	स्वस्त्ययनम्	७.	कल्याणकारी (एवम्)
भगवत्	२.	भगवान् के	पवित्रम् ,	८.	पावन
प्रियाणाम् ,	३.	प्रिय	लब्ध्वा	१६.	पाकर (अन्त में)
पाण्डोः	४.	राजा पाण्डु के	हरौ	१४.	श्रीहरि में
सुतानाम्	६.	पुत्रों के	भक्तिम्	१५.	भक्ति-भाव को
इति	९.	इस	उपैति	१८.	प्राप्त करता है
सम्प्रयाणम् ।	१०.	स्वर्गारोहण को	सिद्धिम् ॥	१७.	सिद्धि

श्लोकार्थ—जो मनुष्य भगवान् के प्रिय राजा पाण्डु के इन पुत्रों के कल्याणकारी एवं पावन इस स्वर्गारोहण को श्रद्धापूर्वक सम्पूर्ण रूप से सुनता हैं, वह मनुष्य श्रीहरि में भक्ति-भाव को पाकर अन्त में सिद्धि प्राप्त करता है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
पाण्डवस्वर्गारोहणं नाम पञ्चदशः अध्यायः ॥१५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ षोडशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—ततः परीक्षिद् द्विजवर्यशिक्षया, महीं महाभागवतः शशास ह ।
यथा हि सूत्यामभिजातकोविदाः, समादिशन् विप्र महद्गुणस्तथा ॥१॥

पदच्छेद— ततः परीक्षित् द्विजवर्य शिक्षया, महीम् महाभागवतः शशास ह ।
यथा हि सूत्याम् अभिजात कोविदाः, समादिशन् विप्र महद् गुणः तथा ॥

शब्दार्थ—

ततः	४.	(स्वर्गारोहण के) पश्चात्	यथा	१५.	जैसा
परीक्षित्	७.	राजा परीक्षित् ने	हि	३.	कि
द्विज वर्य	८.	श्रेष्ठ ब्राह्मणों के	सूत्याम्	१२.	(उसके) जन्म के समय
शिक्षया,	९.	उपदेश से	अभिजात	१३.	जातक शास्त्र के
महीम्	१०.	पृथ्वी पर	कोविदाः,	१४.	जानकारों ने
महा	५.	परम	समादिशन्	१६.	बताया था (वह)
भागवतः	६.	भागवत	विप्र	१.	हे शौनक जी !
शशास	११.	शासन किया था	महद्, गुणः	१८.	महान्, गुणों वाला (था)
ह ।	२.	यह प्रसिद्ध है	तथा ॥	१७.	वैसा ही

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! यह प्रसिद्ध है कि पाण्डवों के स्वर्गारोहण के पश्चात् परम भागवत राजा परीक्षित् ने श्रेष्ठ ब्राह्मणों के उपदेश से पृथ्वी पर शासन किया था । उसके जन्म के समय जातक शास्त्र के जानकारों ने जैसा बताया था; वह वैसा ही महान् गुणों वाला था ।

द्वितीयः श्लोकः

स उत्तरस्य तनयामुपयेम इरावतीम् ।
जनमेजयादींश्चतुरस्तस्यामुत्पादयत् सुतान् ॥२॥

पदच्छेद— सः उत्तरस्य तनयाम्, उपयेमे इरावतीम् ।
जनमेजय आदीन् चतुरः, तस्याम् उत्पादयत् सुतान् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उस (राजा परीक्षित्) ने	जनमेजय	७.	जनमेजय
उत्तरस्य	२.	राजा उत्तर की	आदीन्, चतुरः	८.	इत्यादि, चार
तनयाम्	३.	पुत्री	तस्याम्	६.	उससे
उपयेमे	५.	विवाह किया (और)	उत्पादयत्	१०.	उत्पन्न किया
इरावतीम् ।	४.	इरावती के साथ	सुतान् ॥	९.	पुत्रों को

श्लोकार्थ—उस राजा परीक्षित् ने राजा उत्तर की पुत्री इरावती के साथ विवाह किया और उससे जनमेजय इत्यादि चार पुत्रों को उत्पन्न किया ।

तृतीयः श्लोकः

आजहाराश्वमेधांस्त्रीन् गङ्गायां भूरि दक्षिणान् ।
शारद्वतं गुरुं कृत्वा देवा यत्राक्षिगोचराः ॥३॥

पदच्छेद—

आजहार अश्वमेधान् त्रीन् , गङ्गायाम् भूरि दक्षिणान् ।
शारद्वतम् गुरुम् कृत्वा, देवाः यत्र अक्षि गोचराः ॥

शब्दार्थ—

आजहार	९. अनुष्ठान किया था		शारद्वतम्	१. (उन्होंने) कृपाचार्य को
अश्वमेधान्	८. अश्वमेध यज्ञों का		गुरुम्	२. आचार्य
त्रीन्	७. तीन		कृत्वा	३. बनाकर
गङ्गायाम्	४. गंगा जी के तट पर		देवाः	११. देवगण
भूरि	५. अधिक		यत्र	१०. जिस (यज्ञ) में
दक्षिणान् ।	६. दक्षिणा वाले		अक्षि गोचराः ॥	१२. आँखों से दिखते थे (अर्थात् स्वयं प्रकट होकर भाग ग्रहण किये थे)

श्लोकार्थ—उन्होंने कृपाचार्य को आचार्य बनाकर गंगा जी के तट पर अधिक दक्षिणा वाले तीन अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान किया था; जिस यज्ञ में देवगण आँखों से दिखते थे अर्थात् स्वयं प्रकट होकर अपना भाग ग्रहण किये थे ।

चतुर्थः श्लोकः

निजग्राहौजसा वीरः कलिं दिग्विजये क्वचित् ।
नृपलिङ्गधरं शूद्रं घ्नन्तं गोमिथुनं पदा ॥४॥

पदच्छेद—

निजग्राह ओजसा वीरः, कलिम् दिग्विजये क्वचित् ।
नृप लिङ्ग धरम् शूद्रम्, घ्नन्तम् गो मिथुनम् पदा ॥

शब्दार्थ—

निजग्राह	१२. दण्ड दिया था		नृप	४. राजा का
ओजसा	११. अपने पराक्रम से		लिङ्ग धरम्	५. वेश धारण किये हुये (तथा)
वीरः	१. वीर (राजा परीक्षित्) ने		शूद्रम्	९. शूद्र
कलिम्	१०. कलियुग को		घ्नन्तम्	८. मारते हुये
दिग्विजये	२. दिग्विजय करते समय		गो मिथुनम्	६. गाय और बैल की जोड़ी को
क्वचित् ।	३. एक जगह		पदा ॥	७. पैर से

श्लोकार्थ—वीर राजा परीक्षित् ने दिग्विजय करते समय एक जगह राजा का वेश धारण किये हुये तथा गाय और बैल की जोड़ी को पैर से मारते हुये शूद्र कलियुग को अपने पराक्रम से दण्ड दिया था ।

पञ्चमः श्लोकः

शौनक उवाच--- कस्य हेतोर्निजग्राह कलिं दिग्विजये नृपः ।
नृदेवचिह्नधृक् शूद्रकोऽसौ गां यः पदाहनत् ॥
तत्कथ्यतां महाभाग यदि कृष्णकथाश्रयम् ॥५॥

पदच्छेद— कस्य हेतोः निजग्राह, कलिम् दिग्विजये नृपः ।
नृ देव चिह्न धृक् शूद्रकः, असौ गाम् यः पदा अहनत् ।
तत् कथ्यताम् महाभाग, यदि कृष्ण कथा आश्रयम् ॥

शब्दार्थ—

कस्य, हेतोः	४. किस, कारण	गाम्	७. गाय को
निजग्राह	५. दण्ड दिया था	यः, पदा	६. जो, पैर से
कलिम्	३. कलियुग को	अहनत् ।	८. मार रहा था
दिग्विजये	२. दिग्विजय करते समय	तत्	१७. उस (कथा) को
नृपः ।	१. राजा परीक्षित् ने	कथ्यताम्	१८. कहें
नृदेव	९. राजा का	महाभाग	१३. हे भाग्यशाली सूत जी !
चिह्न, धृक्	१०. वेश, धारण करने वाला	यदि	१४. यदि
शूद्रकः	११. शूद्र के समान	कृष्ण कथा	१५. श्री कृष्ण की कथा से
असौ	१२. वह (कौन था)	आश्रयम् ॥	१६. सम्बन्धित (हो तो आप)

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने दिग्विजय करते समय कलियुग को किस कारण दण्ड दिया था ? जो पैर से गाय को मार रहा था। राजा का वेश धारण करने वाला शूद्र के समान वह कौन था ? हे भाग्यशाली सूत जी ! यदि श्रीकृष्ण की कथा से सम्बन्धित हो तो आप उस कथा को कहें।

षष्ठः श्लोकः

अथवास्य पदाम्भोजमकरन्दलिहां सताम् ।
किमन्यैरसदालापैरायुषो यदसद्व्ययः ॥६॥

पदच्छेद— अथवा अस्य पद अम्भोज, मकरन्द लिहाम् सताम् ।
किम् अन्यैः असत् आलापैः, आयुषः यद् असद् व्ययः ॥

शब्दार्थं—

अथवा	१. अथवा	अन्यैः	७. दूसरी
अस्य	२. इन (भगवान् श्रीकृष्ण) के	असत्	६. व्यर्थ की
पद अम्भोज	३. चरण कमल के	आलापैः	८. कथाओं से
मकरन्द, लिहाम्	४. पराग का, आस्वादन करने वाले	आयुषः	११. आयु का
सताम् ।	५. सज्जन पुरुषों के लिये	यद्, असद्	१०. जिससे, व्यर्थ में
किम्	९. क्या लाभ है	व्ययः ॥	१२. नाश (होता है)

श्लोकार्थं—अथवा इन भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमल के पराग का आस्वादन करने वाले सज्जन पुरुषों के लिये व्यर्थ की दूसरी कथाओं से क्या लाभ है ? जिससे व्यर्थ में आयु का नाश होता है।

सप्तमः श्लोकः

क्षुद्रायुषां नृणामङ्ग मर्त्यानामृतमिच्छताम् ।
इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि ॥७॥

पदच्छेद— क्षुद्र आयुषाम् नृणाम् अङ्ग, मर्त्यानाम् ऋतम् इच्छताम् ।
इह उपहूतः भगवान्, मृत्युः शामित्र कर्मणि ॥

शब्दार्थ—

क्षुद्र	२. कम	इह	९. यहाँ
आयुषाम्	३. आयु वाले (तथा)	उपहूतः	१२. बुलाये गये हैं
नृणाम्	६. मनुष्यों की	भगवान्	८. भगवान् (यमराज)
अङ्ग	१. हे तात !	मृत्युः	७. मृत्यु के कारण
मर्त्यानाम्	५. मरण धर्मा	शामित्र	१०. (दीर्घकालीन) कल्याणकारी
ऋतम्, इच्छताम् ।	४. परम कल्याण, चाहने वाले	कर्मणि ॥	११. कथा यज्ञ में

श्लोकार्थ—हे तात ! कम आयु वाले तथा परम कल्याण चाहने वाले मरण धर्मा मनुष्यों की मृत्यु के कारण भगवान् यमराज यहाँ दीर्घकालीन कल्याणकारी कथा यज्ञ में बुलाये गये हैं ।

अष्टमः श्लोकः

न कश्चिन्म्रियते तावद् यावदास्त इहान्तकः ।
एतदर्थं हि भगवानाहूतः परमर्षिभिः ॥
अहो नृलोके पीयेत हरिलीलामृतं वचः ॥८॥

पदच्छेद— न कश्चित् म्रियते तावत्, यावत् आस्ते इह अन्तकः ।
एतदर्थम् हि भगवान्, आहूतः परम ऋषिभिः ।
अहो नृलोके पीयेत, हरि लीला अमृतम् वचः ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं	भगवान्	११. भगवान् यमराज
कश्चित्	६. कोई	आहूतः	१२. (यहाँ) बुलाये गये हैं (अतः)
म्रियते	८. मर सकता है	परम ऋषिभिः ॥	१०. महर्षियों के द्वारा
तावत्	५. तब-तक	अहो	१३. सौभाग्य की बात है
यावत्	२. जब-तक	नृलोके	१४. मनुष्य लोक में (सज्जन लोग)
आस्ते	४. उपस्थित हैं	पीयेत	१८. पान करें
इह	१. यहाँ पर	हरि लीला	१५. भगवान् श्रीकृष्ण की लीला रूपी
अन्तकः ।	३. भगवान् यमराज	अमृतम्	१६. अमृत
एतदर्थम् हि	९. इसीलिये	वचः ॥	१७. वाणी का (अब)

श्लोकार्थ—यहाँ पर जब-तक भगवान् यमराज उपस्थित हैं, तब-तक कोई नहीं मर सकता है; इसीलिये महर्षियों के द्वारा भगवान् यमराज यहाँ बुलाये गये हैं । अतः सौभाग्य की बात है, मनुष्य लोक में सज्जन लोग भगवान् श्रीकृष्ण की लीला रूपी अमृत वाणी का अब पान करें ।

नवमः श्लोकः

मन्दस्य मन्दप्रज्ञस्य वयो मन्दायुषश्च वै ।
निद्रया ह्रियते नक्तं दिवा च व्यर्थकर्मभिः ॥६॥

पदच्छेद—

मन्दस्य मन्द प्रज्ञस्य, वयः मन्द आयुषः च वै ।
निद्रया ह्रियते नक्तम् , दिवा च व्यर्थ कर्मभिः ॥

शब्दार्थ—

मन्दस्य	१.	अभागे	निद्रया	६.	नींद से
मन्द प्रज्ञस्य	२.	मूढ बुद्धि	ह्रियते	१३.	गँवा देते हैं
वयः	११.	सम्पूर्ण आयु को	नक्तम्	५.	रात को
मन्द आयुषः	४.	कम आयु वाले (मनुष्य)	दिवा	८.	दिन को
च	३.	और	च	७.	तथा
वै ।	१२.	ही	व्यर्थ	६.	व्यर्थ के निष्फल
			कर्मभिः ॥	१०.	कामों से (इस प्रकार)

श्लोकार्थ—अभागे, मूढ बुद्धि और कम आयुवाले मनुष्य रात को नींद से तथा दिन को व्यर्थ के निष्फल कामों से, इस प्रकार सम्पूर्ण आयु को ही गँवा देते हैं।

दशमः श्लोकः

सूत उवाच—

यदा परीक्षित् कुरुजाङ्गलेऽशृणोत् , कलिं प्रविष्टं निजचक्रवर्तिते ।
निशम्य वार्तामनतिप्रियां ततः, शरासनं संयुगशौण्डिराददे ॥१०॥

पदच्छेद—

यदा परीक्षित् कुरुजाङ्गले अशृणोत् , कलिम् प्रविष्टम् निज चक्र वर्तिते ।
निशम्य वार्ताम् अनति प्रियाम् ततः, शरासनम् संयुग शौण्डिः आददे ॥

शब्दार्थ—

यदा	७.	जब	निशम्य	१२.	सुनकर
परीक्षित्	१.	राजा परीक्षित् ने	वार्ताम्	११.	बात को
कुरुजाङ्गले	४.	कुरु जाङ्गल देश में	अनति प्रियाम्	१०.	(इस) अत्यन्त अप्रिय
अशृणोत्	८.	सुना था	ततः	६.	उस समय
कलिम्	५.	कलियुग के	शरासनम्	१५.	तरकश को
प्रविष्टम्	६.	प्रवेश को	संयुग	१३.	युद्ध के लिये
निज चक्र	२.	अपने शासन की	शौण्डिः	१४.	धनुष (और)
वर्तिते ।	३.	सीमा	आददे ॥	१६.	उठा लिया था

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने अपने शासन की सीमा कुरुजाङ्गल देश में कलियुग के प्रवेश को जब सुना था, उस समय इस अत्यन्त अप्रिय बात को सुनकर युद्ध के लिये धनुष और तरकश को उठा लिया था।

एकादशः श्लोकः

स्वलंकृतं श्यामतुरङ्गयोजितं, रथं मृगेन्द्रध्वजमाश्रितः पुरात्।
वृतो रथाश्वद्विपपत्तियुक्तया, स्वसेनया दिग्विजयाय निर्गतः ॥११॥

पदच्छेद—

सु अलंकृतम् श्यामतुरङ्ग योजितम् , रथम् मृगेन्द्र ध्वजम् आश्रितः पुरात् ।
वृतः रथ अश्व द्विप पत्ति युक्तया, स्व सेनया दिग्विजयाय निर्गतः ॥

शब्दार्थ—

सु अलंकृतम्	१.	सुन्दरता से सजाये हुये	वृतः	१३.	घिरे हुये (राजा परीक्षित्)
श्याम तुरङ्ग	२.	साँवले रंग के घोड़ों से	रथ, अश्व	८.	रथ, घोड़े
योजितम्	३.	जुते हुये (तथा)	द्विप	९.	हाथी (और)
रथम्	६.	रथ पर	पत्ति	१०.	पैदल
मृगेन्द्र	४.	सिंह की	युक्तया,	११.	सैनिकों से युक्त
ध्वजम्	५.	ध्वजा वाले	स्व सेनया	१२.	अपनी सेना से
आश्रितः	७.	सवार होकर (एवं)	दिग्विजयाय	१४.	दिग्विजय करने के लिये
पुरात्।	१५.	नगर से	निर्गतः ॥	१६.	निकल पड़े

श्लोकार्थ—सुन्दरता से सजाये हुये, साँवले रंग के घोड़ों से जुते हुये तथा सिंह की ध्वजा वाले रथ पर सवार होकर एवं रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सैनिकों से युक्त अपनी सेना से घिरे हुये राजा परीक्षित् दिग्विजय करने के लिये नगर से निकल पड़े ।

द्वादशः श्लोकः

भद्राश्वं केतुमालं च भारतं चोत्तरान् कुरून् ।
किम्पुरुषादीनि वर्षाणि विजित्य जगृहे बलिम् ॥१२॥

पदच्छेद—

भद्राश्वम् केतुमालम् च, भारतम् च उत्तरान् कुरून् ।
किम्पुरुष आदीनि वर्षाणि, विजित्य जगृहे बलिम् ॥

शब्दार्थ—

	०.	राजा परीक्षित् ने	कुरून् ।	६.	कुरु (तिब्बत देश)
भद्राश्वम्	१.	भद्राश्व (अरब देश)	किम्पुरुष	८.	किम्पुरुष (चीन देश)
केतुमालम्	२.	केतुमाल	आदीनि	९.	इत्यादि
च	३.	और	वर्षाणि	१०.	देशों को
भारतम्	४.	भारत वर्ष	विजित्य	११.	जीत कर (वहाँ से)
च	७.	तथा	जगृहे	१३.	प्राप्त किया था
उत्तरान्	५.	उत्तर	बलिम् ॥	१२.	उपहार

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने भद्राश्व (अरब देश), केतुमाल और भारत वर्ष, उत्तर कुरु (तिब्बत देश) तथा किम्पुरुष (चीन) इत्यादि देशों को जीत कर वहाँ से उपहार प्राप्त किया था ।

त्रयोदशः श्लोकः

तत्र तत्रोपशृण्वानः स्वपूर्वेषां महात्मनाम् ।
प्रगीयमाणं च यशः कृष्णमाहात्म्यसूचकम् ॥१३॥

पदच्छेद—

तत्र तत्र उपशृण्वानः, स्व पूर्वेषाम् महात्मनाम् ।
प्रगीयमाणम् च यशः, कृष्ण माहात्म्य सूचकम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र तत्र	१.	वहाँ-वहाँ पर (वे)	प्रगीयमाणम्	१०.	गान को
उपशृण्वानः	११.	सुनते थे	च	५.	और
स्व	२.	अपने	यशः	९.	यश के
पूर्वेषाम्	३.	पूर्वज	कृष्ण	६.	भगवान् श्री कृष्ण की
महात्मनाम् ।	४.	महात्माओं की	माहात्म्य	७.	महिमा को
			सूचकम् ॥	८.	सूचित करने वाले

श्लोकार्थ—वहाँ-वहाँ पर वे अपने पूर्वज महात्माओं की और भगवान् श्री कृष्ण की महिमा को सूचित करने वाले यश के गान को सुनते थे ।

चतुर्दशः श्लोकः

आत्मानं च परित्रातमश्वत्थाम्नोऽस्त्रतेजसः ।
स्नेहं च वृष्णिपार्थानां तेषां भक्तिं च केशवे ॥१४॥

पदच्छेद—

आत्मानम् च परित्रातम्, अश्वत्थाम्नः अस्त्र तेजसः ।
स्नेहम् च वृष्णि पार्थानाम्, तेषाम् भक्तिम् च केशवे ॥

शब्दार्थ—

	०.	उन्होंने			
आत्मानम्	५.	अपने को	च	८.	तथा
च	६.	और	वृष्णि	७.	यदुवंशियों
परित्रातम्	४.	रक्षा किये गये	पार्थानाम्	९.	पाण्डवों के (परस्पर)
अश्वत्थाम्नः	१.	अश्वत्थामा के	तेषाम्	१२.	उनकी
अस्त्र	२.	ब्रह्मास्त्र के	भक्तिम्	१४.	भक्ति को (सुना)
तेजसः ।	३.	तेज से	च	११.	तथा
स्नेहम्	१०.	प्रेम को	केशवे ॥	१३.	भगवान् श्रीकृष्ण में

श्लोकार्थ—उन्होंने अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के तेज से रक्षा किये गये अपने को और यदुवंशियों तथा पाण्डवों के परस्पर प्रेम को तथा उनकी भगवान् श्रीकृष्ण में भक्ति को सुना ।

पञ्चदशः श्लोकः

तेभ्यः परमसंतुष्टः प्रीत्युज्जृम्भितलोचनः ।
महाधनानि वासांसि ददौ हारान् महामनाः ॥१५॥

पदच्छेद—

तेभ्यः परम संतुष्टः, प्रीति उज्जृम्भित लोचनः ।
महाधनानि वासांसि, ददौ हारान् महामनाः ॥

शब्दार्थ—

तेभ्यः	१. उन (कथा सुनाने वालों) से	महाधनानि	७.	(उन्हें) बहुमूल्य धन
परम संतुष्टः	२. अत्यन्त प्रसन्न	वासांसि	८.	वस्त्र (और)
प्रीति	३. प्रेम से	ददौ	१०.	दिया
उज्जृम्भित	४. खिले हुये	हारान्	९.	हार (इत्यादि आभूषण)
लोचनः ।	५. नेत्रों वाले (एवं)	महामनाः ॥	६.	उदार चित्त (राजा परीक्षित्) ने

श्लोकार्थ—उन कथा सुनाने वालों से अत्यन्त प्रसन्न, प्रेम से खिले हुये नेत्रों वाले एवं उदार चित्त राजा परीक्षित् ने उन्हें बहुमूल्य धन, वस्त्र और हार इत्यादि आभूषण दिया ।

षोडशः श्लोकः

सारथ्यपारषदसेवनसख्यदौत्य - वीरासनानुगमनस्तवनप्रणामान् ।
स्निग्धेषु पाण्डुषु जगत्प्रणतिं च विष्णो-र्भक्तिं करोति नृपतिश्चरणारविन्दे ॥१६॥

पदच्छेद—

सारथ्य पारषद सेवन सख्य दौत्य, वीरासन अनुगमन स्तवन प्रणामान् ।
स्निग्धेषु पाण्डुषु जगत् प्रणतिम् च विष्णोः, भक्तिम् करोति नृपतिः चरण अरविन्दे ॥

शब्दार्थ—

सारथ्य	३. (भगवान् श्रीकृष्ण के) सारथी कर्म	स्निग्धेषु	१. स्नेही
पारषद	४. सभासद् कर्म	पाण्डुषु	२. पाण्डवों के प्रति
सेवन	७. सेवाभाव	जगत्	१३. सारे जगत् की
सख्य	८. सखाभाव	प्रणतिम्	१४. नम्रता को (सुनकर)
दौत्य	५. दूत कर्म	च	१२. तथा
वीरासन	६. पहरेदारी (और)	विष्णोः	१६. भगवान् श्रीकृष्ण के
अनुगमन	९. सुरक्षा	भक्तिम् करोति	१८. (अधिक) भक्ति करने लगे थे
स्तवन	१०. स्तुति	नृपतिः	१५. राजा परीक्षित्
प्रणामान् ।	११. प्रणाम	चरण अरविन्दे ॥	१७. चरण कमलों में

श्लोकार्थ—स्नेही पाण्डवों के प्रति भगवान् श्रीकृष्ण के सारथी कर्म, सभासद् कर्म, दूतकर्म, पहरेदारी और सेवाभाव, सखाभाव, सुरक्षा, स्तुति, प्रणाम तथा सारे जगत् की नम्रता को सुनकर राजा परीक्षित भगवान् श्री कृष्ण के चरण कमलों में अधिक भक्ति करने लगे थे ।

सप्तदशः श्लोकः

तस्यैवं वर्तमानस्य पूर्वेषां वृत्तिमन्वहम् ।
नातिदूरे किलाश्चर्यं यदासीत् तन्निबोध मे ॥१७॥

पदच्छेद—

तस्य एवम् वर्तमानस्य, पूर्वेषाम् वृत्तिम् अन्वहम् ।
नातिदूरे किल आश्चर्यम्, यत् आसीत् तत् निबोध मे ॥

शब्दार्थ—

तस्य	६. उन (राजा परीक्षित् के शिबिर) के	**किल**	८.	ही
एवम्	१. इस प्रकार	**आश्चर्यम्**	१०.	अद्भुत घटना
वर्तमानस्य	५. रहते हुये	**यत्**	६.	जो
पूर्वेषाम्	३. पूर्वजों के	**आसीत्**	११.	हुई
वृत्तिम्	४. आचरण में	**तत्**	१२.	उसे (आप लोग)
अन्वहम् ।	२. प्रतिदिन	**निबोध**	१४.	सुनें
नातिदूरे	७. समीप में	**मे ॥**	१३.	मुझ से

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रतिदिन पूर्वजों के आचरण में रहते हुये उन राजा परीक्षित् के शिबिर के समीप में ही जो अद्भुत घटना हुई, उसे आप लोग मुझसे सुनें ।

अष्टादशः श्लोकः

धर्मः पदैकेन चरन् विच्छायामुपलभ्य गाम् ।
पृच्छति स्माश्रुवदनां विवत्सामिव मातरम् ॥१८॥

पदच्छेद—

धर्मः पदा एकेन चरन्, विच्छायाम् उपलभ्य गाम् ।
पृच्छति स्म अश्रु वदनाम्, विवत्साम् इव मातरम् ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	४. बैलरूप धर्म ने	**गाम् ।**	१०.	गो (रूपधारी पृथ्वी) को
पदा	२. पैर से	**पृच्छति स्म**	१२.	पूछा
एकेन	१. एक	**अश्रु वदनाम्**	८.	मुख पर आँसू बहाती हुई (एवं)
चरन्	३. घूमते हुये	**विवत्साम्**	५.	मृत पुत्रों वाली
विच्छायाम्	६. कांतिहीन	**इव**	७.	समान
उपलभ्य	११. देखकर (उससे)	**मातरम् ॥**	६.	माता के

श्लोकार्थ—एक पैर से घूमते हुये बैलरूप धर्म ने मृत पुत्रों वाली माता के समान मुख पर आँसू बहाती हुई एवम् कांतिहीन गो रूपधारी पृथ्वी को देखकर उससे पूछा ।

एकोनविंशः श्लोकः

धर्म उवाच—कच्चिद्भद्रेऽनामयमात्मनस्ते, विच्छायासि म्लायतेषन्मुखेन ।
आलक्षये भवतीमन्तराधिं, दूरे बन्धुं शोचसि कञ्चनाम्ब ॥१९॥

पदच्छेद— कच्चित् भद्रे अनामयम् आत्मनः ते, विच्छाया असि म्लायता ईषत् मुखेन ।
आलक्षये भवतीम् अन्तर्आधिम्, दूरे बन्धुम् शोचसि कञ्चन अम्ब ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	२.	क्या	मुखेन ।	८.	मुख से (तुम)
भद्रे	१.	हे कल्याणि !	आलक्षये	१४.	समझ रहा हूँ
अनामयम्	४.	कुशल (है)	भवतीम्	१२.	(मैं) आपको
आत्मनः	७.	अपने	अन्तर्आधिम्,	१३.	मानसिक व्यथा से युक्त
ते,	३.	तुम्हारा	दूरे	१६.	परदेश गये
विच्छाया	९.	कांतिहीन	बन्धुम्	१७.	प्रियजन के विषय में
असि	१०.	लग रही हो	शोचसि	१८.	सोच कर रही हो
म्लायता	६.	मुरझाये हुये	कञ्चन	१५.	(क्या तुम) किसी
ईषत्	५.	कुछ	अम्ब ॥	११.	हे मातः !

श्लोकार्थ—हे कल्याणि ! क्या तुम्हारा कुशल है ? कुछ मुरझाये हुये अपने मुख से तुम कांतिहीन लग रही हो । हे मातः ! मैं आपको मानसिक व्यथा से युक्त समझ रहा हूँ । क्या तुम किसी परदेश गये प्रियजन के विषय में सोच कर रही हो ?

विंशः श्लोकः

पादैर्न्यूनं शोचसि मैकपाद - मात्मानं वा वृषलैर्भोक्ष्यमाणम् ।
अहो सुरादीन् हृतयज्ञभागान्, प्रजा उत स्विन्मघवत्यवर्षति ॥२०॥

पदच्छेद— पादैः न्यूनम् शोचसि मा एक पादम्, आत्मानम् वा वृषलैः भोक्ष्यमाणम् ।
अहो सुर आदीन् हृत यज्ञ भागान्, प्रजाः उत स्वित् मघवति अवर्षति ॥

शब्दार्थ—

पादैः	१.	(हे कल्याणि ! तुम) तीन पैरों से	अहो	८.	या
न्यूनम्	२.	रहित (अत एव)	सुर आदीन्	११.	देवता इत्यादिकों पर
शोचसि	१६.	शोक कर रही हो	हृत	१०.	नहीं पाने वाले
मा	४.	मुझ पर	यज्ञ भागान्,	९.	यज्ञों में अपना अंश
एक पादम्,	३.	एक पैर वाले	प्रजाः	१५.	जनता के विषय में
आत्मानम्	७.	अपने विषय में	उत, स्वित्	१२.	अथवा, कदाचित्
वा, वृषलैः	५.	अथवा, शूद्रों से	मघवति	१३.	इन्द्र के
भोक्ष्यमाणम् ।	६.	शासित	अवर्षति ॥	१४.	न बरसने से (अकाल ग्रस्त)

श्लोकार्थ—हे कल्याणि ! तुम तीन पैरों से रहित अत एव एक पैर वाले मुझ पर अथवा शूद्रों से शासित अपने विषय में या यज्ञों में अपना अंश नहीं पाने वाले देवता इत्यादिकों पर अथवा कदाचित् इन्द्र के न बरसने से अकालग्रस्त जनता के विषय में शोक कर रही हो ?

एकविंशः श्लोकः

अरक्ष्यमाणाः स्त्रिय उर्वि बालान्, शोचस्यथो पुरुषादैरिवार्तान् ।
वाचं देवीं ब्रह्मकुले कुकर्मण्यब्रह्मण्ये राजकुले कुलाग्र्यान् ॥२१॥

पदच्छेद—अरक्ष्यमाणाः स्त्रियः उर्वि बालान्, शोचसि अथो पुरुषादैः इव आर्तान् ।
वाचम् देवीम् ब्रह्म कुले कुकर्मणि, अब्रह्मण्ये राज कुले कुल अग्र्यान् ॥

शब्दार्थ—

अरक्ष्यमाणाः	५.	असुरक्षा से	आर्तान् ।	७.	दुःखी होने से
स्त्रियः	४.	स्त्रियों की	वाचम्	१०.	सरस्वती
उर्वि	१.	हे पृथ्वि ! (क्या तुम)	देवीम्	११.	देवी के (रहने से)
बालान्,	६.	बालकों के	ब्रह्म कुले	९.	ब्राह्मण कुल में
शोचसि	१६.	शोक कर रही हो	कुकर्मणि	८.	कुकर्मी
अथो	१२.	अथवा	अब्रह्मण्ये	१३.	ब्राह्मण द्रोही
पुरुषादैः	२.	राक्षसों के	राजकुले	१४.	राजपरिवार में
इव	३.	समान धर्मा (पुरुषों के द्वारा)	कुल अग्र्यान् ॥	१५.	ब्राह्मणों के (होने से)

श्लोकार्थ—हे पृथ्वि ! क्या तुम राक्षसों के समान धर्मा पुरुषों के द्वारा स्त्रियों की असुरक्षा से, बालकों के दुःखी होने से, कुकर्मी ब्राह्मण कुल में सरस्वती देवी के रहने से अथवा ब्राह्मण द्रोही राजपरिवार में ब्राह्मणों के होने से शोक कर रही हो ?

द्वाविंशः श्लोकः

किं क्षत्रबन्धून् कलिनोपसृष्टान्, राष्ट्राणि वा तैरवरोपितानि ।
इतस्ततो वाशनपानवासः - स्नानव्यवायोन्मुखजीवलोकम् ॥२२॥

पदच्छेद—किम् क्षत्रबन्धून् कलिना उपसृष्टान्, राष्ट्राणि वा तैः अवरोपितानि ।
इतः ततः वा अशन पान वासः, स्नान व्यवाय उन्मुख जीवलोकम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	१.	(हे देवि) ! क्या	ततः	१०.	उधर
क्षत्रबन्धून्	४.	अधम राजाओं पर	वा	८.	अथवा
कलिना	२.	कलियुग से	अशन, पान	११.	खान, पान
उपसृष्टान्,	३.	प्रभावित	वासः,	१२.	वेश-भूषा
राष्ट्राणि	७.	देशों पर	स्नान	१३.	स्नान (और)
वा, तैः	५.	अथवा, उनके द्वारा	व्यवाय	१४.	स्त्री सहवास में
अवरोपितानि ।	६.	तहस-नहस किये गये	उन्मुख	१६.	स्वेच्छाचारिता पर (शोक कर रही हो)
इतः	९.	इधर	जीवलोकम् ॥	१५.	मनुष्यों की

श्लोकार्थ—हे देवि ! क्या कलियुग से प्रभावित अधम राजाओं पर अथवा उनके द्वारा तहस-नहस किये गये देशों पर अथवा इधर-उधर खान, पान, वेश-भूषा, स्नान और स्त्री सहवास में मनुष्यों की स्वेच्छाचारिता पर शोक कर रही हो ?

त्रयोविंशः श्लोकः

यद्वाम्ब ते भूरिभरावतार-कृतावतारस्य हरेर्धरित्रि ।
अन्तर्हितस्य स्मरती विसृष्टा, कर्माणि निर्वाणविलम्बितानि ॥२३॥

पदच्छेद— **यद् वा अम्ब ते भूरि भर अवतार, कृत अवतारस्य हरेः धरित्रि ।**
अन्तर्हितस्य स्मरती विसृष्टा, कर्माणि निर्वाण विलम्बितानि ॥

शब्दार्थ—

यद् वा, अम्ब	१. अथवा, हे मातः	धरित्रि ।	२. पृथ्वि ! (क्या)
ते	३. तुम्हारे	अन्तर्हितस्य	९. अन्तर्धान हो जाने पर
भूरि, भर	४. महान्, भार को	स्मरती	११. (उनका) स्मरण करती हुई (तुम)
अवतार,	५. उतारने के लिये	विसृष्टा	१०. (उनसे) छोड़ी हुई (तथा)
कृत	७. लेने वाले	कर्माणि	१४. लीलाओं को (सोच रही हो)
अवतारस्य	६. अवतार	निर्वाण	१२. मोक्ष को
हरेः	८. भगवान् श्रीकृष्ण के	विलम्बितानि॥	१३. दिलाने वाली (उनकी)

श्लोकार्थ—अथवा हे मातः पृथ्वि ! क्या तुम्हारे महान् भार का उतारने के लिये अवतार लेने वाले भगवान् श्रीकृष्ण के अन्तर्धान हो जाने पर उनसे छोड़ी हुई तथा उनका स्मरण करती हुई तुम मोक्ष को दिलाने वाली उनकी लीलाओं को सोच रही हो ?

चतुर्विंशः श्लोकः

इदं ममाचक्ष्व तवाधिमूलं, वसुन्धरे येन विकर्शितासि ।
कालेन वा ते बलिनां बलीयसा, सुरार्चितं किं हृतमम्ब सौभगम् ॥२४॥

पदच्छेद—**इदम् मम आचक्ष्व तव आधि मूलम्, वसुन्धरे येन विकर्शिता असि ।**
कालेन वा ते बलिनाम् बलीयसा, सुर अर्चितम् किम् हृतम् अम्ब सौभगम् ॥

शब्दार्थ—

इदम्	४.	इस	वा	९.	अथवा
मम	२.	मुझे	ते	१६.	तुम्हारा
आचक्ष्व	६.	बताओ	बलिनाम्	११.	बलशालियों से भी
तव	३.	अपनी	बलीयसा,	१२.	अधिक बलवान्
आधि मूलम्,	५.	चिन्ता का कारण	सुर अर्चितम्	१५.	देवताओं से पूजित
वसुन्धरे	१.	रत्न धारग करने वाली हे पृथ्वि	किम्	१४.	क्या
येन	७.	जिससे (कि तुम)	हृतम्	१८.	हर लिया गया है
विकर्शिता, असि।	८.	दुर्बल, हो रही हो	अम्ब	१०.	हे मातः !
कालेन	१३.	(कलियुगरूप) काल के द्वारा	सौभगम् ॥	१७.	सौभाग्य

श्लोकार्थ—रत्न धारण करने वाली हे पृथ्वि ! मुझे अपनी इस चिन्ता का कारण बताओ, जिससे कि तुम दुर्बल हो रही हो । अथवा हे मातः ! बलशालियों से भी अधिक बलवान् कलियुग रूप काल के द्वारा क्या देवताओं से पूजित तुम्हारा सौभाग्य हर लिया गया है ?

पञ्चविंशः श्लोकः

धरण्युवाच—

भवान् हि वेद तत्सर्वं यन्मां धर्मानुपृच्छसि।
चतुर्भिर्वर्तसे येन पादैर्लोकसुखावहैः ॥२५॥

पदच्छेद—

भवान् हि वेद तत् सर्वम्, यत् माम् धर्म अनुपृच्छसि।
चतुर्भि वर्तसे येन, पादैः लोक सुख आवहैः॥

शब्दार्थ—

भवान्	३. आप	धर्म	१.	हे धर्मराज !
हि	८. ही	अनुपृच्छसि।	५.	पूछ रहे हैं
वेद	९. जानते हैं	चतुर्भिः	१२.	(अपने) चारों
तत्	६. वह	वर्तसे	१४.	विद्यमान थे
सर्वम्	७. सब (आप)	येन	१०.	जिस भगवान् (श्रीकृष्ण के ही) कारण
यत्	२. जो	पादैः	१३.	पैरों से
माम्	४. मुझसे	लोक, सुख आवहैः॥	११.	(आप) संसार के लिये, सुखकारी

श्लोकार्थ—हे धर्मराज ! जो आप मुझसे पूछ रहे हैं, वह सब आप जानते ही हैं। जिस भगवान् श्रीकृष्ण के ही कारण आप संसार के लिये सुखकारी अपने चारों पैरों से विद्यमान थे।

षड्विंशः श्लोकः

सत्यं शौचं दया क्षान्तिस्त्यागः सन्तोष आर्जवम्।
शमो दमस्तपः साम्यं तितिक्षोपरतिः श्रुतम् ॥२६॥

पदच्छेद—

सत्यम् शौचम् दया क्षान्तिः, त्यागः सन्तोषः आर्जवम्।
शमः दमः तपः साम्यम्, तितिक्षा उपरतिः श्रुतम्॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	१. सत्य	शमः	८.	शान्ति
शौचम्	२. शुद्धता	दमः	९.	संयम
दया	३. दया	तपः	१०.	तपस्या
क्षान्तिः	४. क्षमा	साम्यम्	११.	समता
त्यागः	५. त्याग	तितिक्षा	१२.	सहनशीलता
सन्तोषः	६. सन्तोष	उपरतिः	१३.	अनासक्ति (और)
आर्जवम्।	७. सरलता	श्रुतम्॥	१४.	शास्त्रों का ज्ञान (ये सभी गुण भगवान् श्रीकृष्ण में थे)

श्लोकार्थ—सत्य, शुद्धता, दया, क्षमा, त्याग, सन्तोष, सरलता, शान्ति, संयम, तपस्या, समता, सहनशीलता, अनासक्ति और शास्त्रों का ज्ञान; ये सभी गुण भगवान् श्रीकृष्ण में थे।

सप्तविंशः श्लोकः

ज्ञानं विरक्तिरैश्वर्यं शौर्यं तेजो बलं स्मृतिः।
स्वातन्त्र्यं कौशलं कान्तिर्धैर्यं मार्दवमेव च ॥२७॥

पदच्छेद—

ज्ञानम् विरक्तिः ऐश्वर्यम्, शौर्यम् तेजः बलम् स्मृतिः।
स्वातन्त्र्यम् कौशलम् कान्तिः, धैर्यम् मार्दवम् एव च ॥

शब्दार्थ—

ज्ञानम्	१. ज्ञान	स्वातन्त्र्यम्	८. स्वतन्त्रता
विरक्तिः	२. वैराग्य	कौशलम्	९. कुशलता
ऐश्वर्यम्	३. प्रभुता	कान्तिः	१०. सौन्दर्य
शौर्यम्	४. शूरता	धैर्यम्	११. धीरता
तेजः	५. तेज	मार्दवम्	१३. कोमलता
बलम्	६. बल	एव	१४. ये सब भी भगवान् में थे
स्मृतिः।	७. स्मरण शक्ति	च ॥	१२. और

श्लोकार्थ—ज्ञान, वैराग्य, प्रभुता, शूरता, तेज, बल, स्मरणशक्ति, स्वतन्त्रता, कुशलता, सौन्दर्य, धीरता और कोमलता; ये सब भी भगवान् में थे।

अष्टाविंशः श्लोकः

प्रागल्भ्यं प्रश्रयः शीलं सह ओजो बलं भगः।
गाम्भीर्यं स्थैर्यमास्तिक्यं कीर्तिर्मानोऽनहंकृतिः ॥२८॥

पदच्छेद—

प्रागल्भ्यम् प्रश्रयः शीलम्, सहः ओजः बलम् भगः।
गाम्भीर्यम् स्थैर्यम् आस्तिक्यम्, कीर्तिः मानः अनहंकृतिः ॥

शब्दार्थ—

प्रागल्भ्यम्	१. निर्भीकता	गाम्भीर्यम्	७. गम्भीरता
प्रश्रयः	२. विनय	स्थैर्यम्	८. धीरता
शीलम्, सहः	३. शील, साहस	आस्तिक्यम्	९. आस्तिकता
ओजः	४. उत्साह	कीर्तिः	१०. यश
बलम्	५. बल	मानः	११. सम्मान (और)
भगः।	६. ऐश्वर्य	अनहंकृतिः ॥	१२. निरहंकारिता (ये गुण भी भगवान् में थे)

श्लोकार्थ—निर्भीकता, विनय, शील, साहस, उत्साह, बल, ऐश्वर्य, गम्भीरता, धीरता, आस्तिकता, यश, सम्पान और निरहंकारिता; ये गुण भी भगवान् में थे।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

एते चान्ये च भगवन्नित्या यत्र महागुणाः ।
प्रार्थ्या महत्त्वमिच्छद्भिर्न वियन्ति स्म कर्हिचित् ॥२६॥

पदच्छेद—

एते च अन्ये च भगवन्, नित्याः यत्र महागुणाः ।
प्रार्थ्याः महत्त्वम् इच्छद्भिः, न वियन्ति स्म कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

एते	३.	ये	महागुणाः ।	११.	महान् गुण थे (वे उनसे)
च	४.	और	प्रार्थ्याः	७.	चाहे गये
अन्ये	१०.	दूसरे	महत्त्वम्	५.	उच्च पद के
च	८.	तथा	इच्छद्भिः	६.	अभिलाषी जनों के द्वारा
भगवन्	१.	हे भगवन् (धर्मराज !)	न	१३.	नहीं
नित्याः	९.	सदा रहने वाले	वियन्ति स्म	१४.	विछुड़ते थे
यत्र	२.	जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) में	कर्हिचित् ॥	१२.	कभी भी

श्लोकार्थ—हे भगवन् धर्मराज ! जिस भगवान् श्रीकृष्ण में ये और उच्च पद के अभिलाषी जनों के द्वारा चाहे गये तथा सदा रहने वाले दूसरे महान् गुण थे । वे उनसे कभी भी विछुड़ते नहीं थे ।

त्रिंशः श्लोकः

तेनाहं गुणपात्रेण श्रीनिवासेन साम्प्रतम् ।
शोचामि रहितं लोकं पाप्मना कलिनेक्षितम् ॥३०॥

पदच्छेद—

तेन अहम् गुण पात्रेण, श्रीनिवासेन साम्प्रतम् ।
शोचामि रहितम् लोकम् , पाप्मना कलिना ईक्षितम् ॥

शब्दार्थं—

तेन	५.	उन (भगवान् श्रीकृष्ण) से	शोचामि	१२.	शोक कर रही हूँ
अहम्	११.	मैं	रहितम्	६.	रहित हुये
गुण	२.	गुणों के	लोकम्	७.	लोक को
पात्रेण	३.	आश्रय (एवं)	पाप्मना	८.	पापी
श्रीनिवासेन	४.	सौन्दर्य के धाम	कलिना	९.	कलियुग से
साम्प्रतम् ।	१.	इस समय	ईक्षितम् ॥	१०.	प्रभावित (जान कर)

श्लोकार्थ—इस समय गुणों के आश्रय एवं सौन्दर्य के धाम उन भगवान् श्रीकृष्ण से रहित हुये लोक को पापी कलियुग से प्रभावित जान कर मैं शोक कर रही हूँ ।

एकत्रिंशः श्लोकः

आत्मानं चानुशोचामि भवन्तं चामरोत्तमम् ।
देवान् पितॄनृषीन् साधून् सर्वान् वर्णांस्तथाऽऽश्रमान् ॥३१॥

पदच्छेद— आत्मानम् च अनुशोचामि, भवन्तम् च अमर उत्तमम् ।
देवान् पितॄन् ऋषीन् साधून्, सर्वान् वर्णान् तथा आश्रमान् ॥

शब्दार्थं—

आत्मानम्	१.	(मैं) अपने विषय में	देवान्, पितॄन्	७.	देवताओं, पितरों
च	२.	तथा	ऋषीन्	८.	ऋषियों
अनुशोचामि	१४.	शोक कर रही हूँ	साधून्	९.	साधुओं
भवन्तम्	५.	आपके विषय में	सर्वान्	१०.	सभी
च	६.	और	वर्णान्	११.	वर्णों
अमर	३.	देवताओं में	तथा	१२.	तथा
उत्तमम् ।	४.	श्रेष्ठ	आश्रमान् ॥	१३.	आश्रमों के विषय में

श्लोकार्थं—मैं अपने विषय में तथा देवताओं में श्रेष्ठ आपके विषय में और देवताओं, पितरों, ऋषियों, साधुओं, सभी वर्णों तथा आश्रमों के विषय में शोक कर रही हूँ ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

ब्रह्मादयो बहुतिथं यदपाङ्गमोक्ष-कामास्तपः समचरन् भगवत्प्रपन्नाः ।
सा श्रीः स्ववासमरविन्दवनं विहाय, यत्पादसौभगमलं भजतेऽनुरक्ता ॥३२॥

पदच्छेद—ब्रह्म आदयः बहुतिथम् यत् अपाङ्ग मोक्ष, कामाः तपः समचरन् भगवत् प्रपन्नाः ।
सा श्रीः स्व वासम् अरविन्द वनम् विहाय, यत् पाद सौभगम् अलम् भजते अनुरक्ता ॥

शब्दार्थं—

ब्रह्म आदयः	४.	ब्रह्मा इत्यादि (देवगण)	सा, श्रीः	१०.	वही, लक्ष्मी जी
बहुतिथम्	५.	बहुत दिनों तक	स्व वासम्	११.	अपने निवास-स्थान
यत्	१.	जिस (लक्ष्मी) के	अरविन्द वनम्	१२.	कमल वन को
अपाङ्ग	२.	कृपा कटाक्ष को	विहाय,	१३.	छोड़कर
मोक्ष कामाः	३.	पाने की इच्छा से	यत्	१४.	जिस (भगवान्) के
तपः	८.	तपस्या	पाद सौभगम्	१५.	चरणों की सुगन्ध का
समचरन्	९.	करते रहे	अलम्	१७.	खूब
भगवत्	६.	भगवान् की	भजते	१८.	सेवन करती हैं
प्रपन्नाः ।	७.	शरणागति लेकर	अनुरक्ताः ॥	१६.	अनुराग भाव से

श्लोकार्थं—जिस लक्ष्मी के कृपा कटाक्ष को पाने की इच्छा से ब्रह्मा इत्यादि देवगण बहुत दिनों तक भगवान् की शरणागति लेकर तपस्या करते रहे । वही लक्ष्मीजी अपने निवास-स्थान कमलवन को छोड़-कर जिस भगवान् के चरणों की सुगन्ध का अनुराग भाव से खूब सेवन करती हैं ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तस्याहमब्जकुलिशाङ्कुशकेतुकेतैः
श्रीमत्पदैर्भगवतः समलंकृताङ्गी ।
त्रीनत्यरोच उपलभ्य ततो विभूतिं,
लोकान् स मां व्यसृजदुत्स्मयतीं तदन्ते ॥३३॥

पदच्छेद—

तस्य अहम् अब्ज कुलिश अङ्कुश केतु केतैः,
श्रीमत् पदैः भगवतः समलङ्कृत अङ्गी ।
त्रीन् अत्यरोचे उपलभ्य ततः विभूतिम्,
लोकान् सः माम् व्यसृजत् उत्स्मयतीम् तद् अन्ते ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उन	त्रीन्	१६.	तीनों
अहम्	१२.	मैं	अत्यरोचे	१८.	बढ़कर सुन्दर थी
अब्ज	३.	कमल	उपलभ्य	१५.	पाकर
कुलिश	४.	वज्र	ततः	१३.	उन्हीं से
अङ्कुश	५.	अंकुश (और)	विभूतिम्,	१४.	वैभव
केतु	६.	पताका से	लोकान्	१७.	लोकों से
केतैः,	७.	चिह्नित (तथा)	सः	१९.	(किन्तु) उन्होंने
श्रीमत्	८.	शोभा के धाम	माम्	२२.	मुझ
पदैः	९.	चरणों से	व्यसृजत्	२४.	छोड़ दिया है
भगवतः	२.	भगवान् श्रीकृष्ण के	उत्स्मयतीम्	२३	अभिमानिनी को
समलंकृत	१०.	शोभित	तद्	२०.	उस (अभिमान) का
अङ्गी ।	११.	अङ्गों वाली	अन्ते ॥	२१.	अन्त करने के लिये

श्लोकार्थ—उन भगवान् श्रीकृष्ण के कमल, वज्र, अंकुश और पताका से चिह्नित तथा शोभा के धाम चरणों से शोभित अङ्गों वाली मैं उन्हीं से वैभव पाकर तीनों लोकों से बढ़कर सुन्दर थी, किन्तु उन्होंने उस अभिमान का अन्त करने के लिये मुझ अभिमानिनी को छोड़ दिया है ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यो वै ममातिभरमासुरवंशराज्ञा-
मक्षौहिणीशतमपानुददात्मतन्त्रः ।
त्वां दुःस्थमूनपदमात्मनि पौरुषेण,
सम्पादयन् यदुषु रम्यमबिभ्रदङ्गम् ॥३४॥

पदच्छेद—

यः वै मम अतिभरम् आसुर वंश राज्ञाम्,
अक्षौहिणी शतम् अपानुदत् आत्म तन्त्रः ।
त्वाम् दुःस्थम् ऊन पदम् आत्मनि पौरुषेण,
सम्पादयन् यदुषु रम्यम् अबिभ्रत् अङ्गम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिस	त्वाम्	१३.	तुम्हें
वै	३.	ही	दुःस्थम्	१२.	दुःखित दशा में स्थित
मम	८.	मेरे	ऊन पदम्	११.	न्यून पैरों वाले (और)
अतिभरम्	६.	बढ़े हुये भार को	आत्मनि	१५.	अपने आप में
आसुर वंश	४.	असुर वंशी	पौरुषेण,	१४.	अपने पुरुषार्थ से
राज्ञाम्,	५.	राजाओं की	सम्पादयन्	१६.	(सब अंगों से) परिपूर्ण करते हुये
अक्षौहिणी	७.	अक्षौहिणी सेनाओं के कारण	यदुषु	१७.	(स्वयम्) यादव वंश में
शतम्	६.	सैंकड़ों	रम्यम्	१८.	सुन्दर
अपानुदत्	१०.	दूर कर दिया (तथा)	अबिभ्रत्	२०.	धारण किया था
आत्मतन्त्रः ।	२.	परम स्वतन्त्र (भगवान् श्रीकृष्ण) ने	अङ्गम् ॥	१६.	शरीर

श्लोकार्थ—जिस परम स्वतन्त्र भगवान् श्रीकृष्ण ने ही असुरवंशी राजाओं की सैंकड़ों अक्षौहिणी सेनाओं के कारण मेरे बढ़े हुये भार को दूर कर दिया तथा न्यून पैरों वाले और दुःखित दशा में स्थित तुम्हें अपने पुरुषार्थ से अपने आप में सब अंगों से परिपूर्ण करते हुये स्वयम् यादव ,वंश में सुन्दर शरीर धारण किया था ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

का वा सहेत विरहं पुरुषोत्तमस्य, प्रेमावलोकरुचिरस्मितवल्गुजल्पैः ।
स्थैर्यं समानमहरन्मधुमानिनीनां, रोमोत्सवो मम यदङ्घ्रिविटङ्कितायाः ॥३५॥

पदच्छेद—का वा सहेत विरहम् पुरुषोत्तमस्य, प्रेम अवलोक रुचिर स्मित वल्गु जल्पैः ।
स्थैर्यम् स मानम् अहरत् मधु मानिनीनाम् , रोम उत्सवः मम यद् अङ्घ्रि विटङ्कितायाः ॥

शब्दार्थ—

का	१७. कौन (स्त्री)	स्थैर्यम्	७. धीरज को भी
वा	१६. भला	स मानम्	६. मान के साथ-साथ
सहेत	१८. सह सकती है	अहरत्	८. हर लेते थे (तथा)
विरहम्	१५. वियोग को	मधु, मानिनीनाम् ,	५. मधुर, मानिनियों के
पुरुषोत्तमस्य,	१४. पुरुषोत्तम के	रोम	१२. रोयें
प्रेम	१. प्रेमभरी	उत्सवः	१३. पुलकित (हो जाते थे उन)
अवलोक	२. चितवन	मम	११. मेरे
रुचिर, स्मित	३. मधुर, मुस्कान (और)	यद् , अङ्घ्रि	९. जिनके, चरणों के
वल्गु, जल्पैः ।	४. सुन्दर, वचनों से	विटङ्कितायाः ॥	१०. स्पर्श से

श्लोकार्थ—जो भगवान् श्रीकृष्ण प्रेमभरी चितवन, मधुर मुसकान और सुन्दर वचनों से मधुर मनिनियों के मान के साथ-साथ धीरज को भी हर लेते थे तथा जिनके चरणों के स्पर्श से मेरे रोयें पुलकित हो जाते थे; उन पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के वियोग को भला कौन स्त्री सह सकती है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

तयोरेवं कथयतोः पृथिवीधर्मयोस्तदा ।
परीक्षिन्नाम राजर्षिः प्राप्तः प्राचीं सरस्वतीम् ॥३६॥

पदच्छेद— तयोः एवम् कथयतोः, पृथिवी धर्मयोः तदा ।
परीक्षित् नाम राजर्षिः , प्राप्तः प्राचीम् सरस्वतीम् ॥

शब्दार्थ—

तयोः	२. उन	परीक्षित् , नाम	८. परीक्षित्, नाम के
एवम्	४. इस प्रकार	राजर्षिः	९. राजर्षि
कथयतोः	५. बातचीत करते रहने पर (वहाँ)	प्राप्तः	१०. पहुँच गये
पृथिवी, धर्मयोः	३. पृथ्वी (और) धर्मराज के (परस्पर)	प्राचीम्	७. पूर्वी (तट) पर
तदा ।	१. उस समय	सरस्वतीम् ॥	६. सरस्वती नदी के

श्लोकार्थ—उस समय उन पृथ्वी और धर्मराज के परस्पर इस प्रकार बातचीत करते रहने पर वहाँ सरस्वती नदी के पूर्वी तट पर परीक्षित् नाम के राजर्षि पहुँच गये ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
पृथ्वीधर्मसंवादो नाम षोडशः अध्यायः ॥१६॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

अथ सप्तदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच--- तत्र गोमिथुनं राजा हन्यमानमनाथवत् ।
दण्डहस्तं च वृषलं ददृशे नृपलाञ्छनम् ॥१॥

पदच्छेद—

तत्र गो मिथुनम् राजा, हन्यमानम् अनाथवत् ।
दण्ड हस्तम् च वृषलम्, ददृशे नृप लाञ्छनम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	हस्तम्	७.	हाथ में
गो मिथुनम्	५.	गाय और बैल की (जोड़ी) को	च	६.	तथा
राजा	१.	राजा परीक्षित् ने	वृषलम्	११.	शूद्र (कलियुग) को
हन्यमानम्	४.	मारी जाती हुई	ददृशे	१२.	देखा
अनाथवत् ।	३.	अनाथ की तरह	नृप	९.	राजा के
दण्ड	८.	डंडा लिये हुये	लाञ्छनम् ॥	१०.	वेश मे

श्लोकार्थ— राजा परीक्षित् ने वहाँ पर अनाथ की तरह मारी जाती हुई गाय और बैल की जोड़ी को तथा हाथ में डंडा लिये हुए राजा के वेश में शूद्र कलियुग को देखा ।

द्वितीयः श्लोकः

वृषं मृणालधवलं मेहन्तमिव बिभ्यतम् ।
वेपमानं पदैकेन सीदन्तं शूद्रताडितम् ॥२॥

पदच्छेद—

वृषम् मृणाल धवलम् , मेहन्तम् इव बिभ्यतम् ।
वेपमानम् पदा एकेन, सीदन्तम् शूद्र ताडितम् ॥

शब्दार्थ—

वृषम्	१२.	(धर्म रूपी) बैल को (देखा)	वेपमानम्	८.	कांपते हुये
मृणाल	१.	(राजा परीक्षित् ने) कमलनाल की तरह	पदा	७.	पैर से
धवलम्	२.	उज्जवल	एकेन	६.	एक
मेहन्तम्	५.	मूत्र त्याग करते हुये	सीदन्तम्	९.	दुःखित (तथा)
इव	४.	मानों	शूद्र	१०.	शूद्र कलियुग से
बिभ्यतम् ।	३.	डर के कारण	ताडितम् ॥	११.	मारे जाते हुए

श्लोकार्थं— राजा परीक्षित् ने कमलनाल की तरह उज्जवल, डर के कारण मानों मूत्र त्याग करते हुये, एक पैर से कांपते हुए, दुःखित तथा शूद्र कलियुग से मारे जाते हुए धर्मरूपी बैल को देखा ।

तृतीयः श्लोकः

गां च धर्मदुघां दीनां भृशं शूद्रपदाहताम् ।
विवत्सां साश्रुवदनां क्षामां यवसमिच्छतीम् ॥३॥

पदच्छेद—

गाम् च धर्म दुघाम् दीनाम् , भृशम् शूद्र पदा आहताम् ।
विवत्साम् स अश्रु वदनाम् , क्षामाम् यवसम् इच्छतीम् ॥

शब्दार्थ—

गाम्	१५.	गाय को (देखा)	आहताम् ।	३.	घायल
च	१२.	और	विवत्साम्	४.	बछड़े से रहित
धर्म	१३.	धर्म को	स अश्रु	६.	आँसू बहाती हुई
दुघाम्	१४.	उत्पन्न करने वाली	वदनाम्	५.	मुख पर
दीनाम्	११.	दीन	क्षामाम्	७.	अत्यन्त दुर्बल
भृशम्	१०.	बहुत	यवसम्	८.	चारे की
शूद्र	१.	(राजा परीक्षित् ने)शूद्र कलियुग के	इच्छतीम् ॥	९.	इच्छा करती हुई
पदा	२.	पैरों से			

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने शूद्र कलियुग के पैरों से घायल, बछड़े से रहित, मुख पर आँसू बहाती हुई, अत्यन्त दुर्बल, चारे की इच्छा करती हुई, बहुत दीन और धर्म को उत्पन्न करने वाली गाय को देखा ।

चतुर्थः श्लोकः

पप्रच्छ रथमारूढः कार्तस्वरपरिच्छदम् ।
मेघगम्भीरया वाचा समारोपितकार्मुकः ॥४॥

पदच्छेद—

पप्रच्छ रथम् आरूढः, कार्तस्वर परिच्छदम् ।
मेघ गम्भीरया वाचा, समारोपित कार्मुकः ॥

शब्दार्थ—

पप्रच्छ	१०.	(कलियुग से) पूछा	मेघ	७.	मेघ के समान
रथम्	३.	रथ पर	गम्भीरया	८.	गम्भीर
आरूढः	४.	सवार हुए (तथा)	वाचा	९.	आवाज में
कार्तस्वर	१.	सुवर्ण से	समारोपित	६.	चढ़ाये हुए (राजा परीक्षित्) ने
परिच्छदम् ।	२.	ढके हुए	कार्मुकः ॥	५.	धनुष

श्लोकार्थ—सुवर्ण से ढके हुए, रथ पर सवार हुए तथा धनुष चढ़ाये हुए राजा परीक्षित् ने मेघ के समान गम्भीर आवाज में कलियुग से पूछा ।

पञ्चमः श्लोकः

कस्त्वं मच्छरणे लोके बलाद्धंस्यबलान् बली ।
नरदेवोऽसि वेषेण नटवत्कर्मणाद्विजः ॥५॥

पदच्छेद—

कः त्वम् मत् शरणे लोके, बलात् हंसि अबलान् बली ।
नरदेवः असि वेषेण, नटवत् कर्मणा अद्विजः ॥

शब्दार्थ—

कः	२.	कौन (हो जो)	बली ।	४.	बलवान् (होकर भी)
त्वम्	१.	तुम	नरदेवः	११.	राजा
मत्	५.	मेरे	असि	१२.	लग रहे हो (किन्तु)
शरणे	६.	शरण में आये हुए	वेषेण	१०.	वेष से तो
लोके	३.	संसार में	नटवत्	१३.	नट के समान
बलात्	८.	बलपूर्वक	कर्मणा	१४.	कर्म करने से (तुम)
हंसि	९.	मार रहे हो	अद्विजः॥	१५.	शूद्र (हो)
अबलान्	७.	दुर्बलों को			

श्लोकार्थ—तुम कौन हो, जो संसार में बलवान् होकर भी मेरे शरण में आये हुए दुर्बलों को बलपूर्वक मार रहे हो ? वेष से तो राजा लग रहे हो, किन्तु नट के समान कर्म करने से तुम शूद्र हो ।

षष्ठः श्लोकः

यस्त्वं कृष्णे गते दूरं सह गाण्डीवधन्वना ।
शोच्योऽस्यशोच्यान् रहसि प्रहरन् वधमर्हसि ॥६॥

पदच्छेद—

यः त्वम् कृष्णे गते दूरम्, सह गाण्डीव धन्वना ।
शोच्यः असि अशोच्यान् रहसि, प्रहरन् वधम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

यः	७.	जो	शोच्यः	१२.	निन्दनीय
त्वम्	८.	तुम	असि	१३.	हो (और)
कृष्णे	४.	भगवान् श्रीकृष्ण के	अशोच्यान्	९.	वन्दनीय (जनों को)
गते	६.	चले जाने पर	रहसि	१०.	एकान्त में
दूरम्	५.	दूर	प्रहरन्	११.	मार रहे हो (अतः तुम)
सह	३.	साथ	वधम्	१४.	वध के
गाण्डीव	१.	गाण्डीव	अर्हसि ॥	१५.	योग्य हो
धन्वना ।	२.	धनुर्धर (अर्जुन) के			

श्लोकार्थ—गाण्डीव धनुर्धर अर्जुन के साथ भगवान् श्रीकृष्ण के दूर चले जाने पर जो तुम वन्दनीय जनों को एकान्त में मार रहे हो; अतः तुम निन्दनीय हो और वध के योग्य हो ।

सप्तमः श्लोकः

त्वं वा मृणालधवलः पादैर्न्यूनः पदा चरन् ।
वृषरूपेण किं कश्चिद् देवो नः परिखेदयन् ॥७॥

पदच्छेद—

त्वम् वा मृणाल धवलः, पादैः न्यून पदा चरन् ।
वृष रूपेण किम् कश्चित् , देवः नः परिखेदयन् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२.	तुम	वृष	११.	बैल के
वा	१.	हे वृषभ !	रूपेण	१२.	रूप में
मृणाल	३.	कमल नाल के समान	किम्	१३.	क्या
धवलः	४.	उज्ज्वल	कश्चित्	१४.	कोई
पादैः	५.	तीन पैरों से	देवः	१५.	देवता हो
न्यूनः	६.	रहित	नः	९.	हमें
पदा	७.	एक पैर से	परिखेदयन् ॥	१०.	दुःखित करते हुये
चरन् ।	८.	घूमते हुये (तथा)			

श्लोकार्थ—हे वृषभ ! तुम कमल नाल के समान उज्ज्वल, तीन पैरों से रहित, एक पैर से घूमते हुये तथा हमें दुःखित करते हुये बैल के रूप में क्या कोई देवता हो ?

अष्टमः श्लोकः

न जातु पौरवेन्द्राणां दोर्दण्डपरिरम्भिते ।
भूतलेऽनुपतन्त्यस्मिन् विना ते प्राणिनां शुचः ॥८॥

पदच्छेद—

न जातु पौरव इन्द्राणाम् , दोर्दण्ड परिरम्भिते ।
भूतले अनुपतन्ति अस्मिन् , विना ते प्राणिनाम् शुचः ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं	अनुपतन्ति	१२.	होते देखा
जातु	९.	कभी भी	अस्मिन्	४.	इस
पौरव इन्द्राणाम्	१.	कुरुवंशी राजाओं के	विना	७.	छोड़कर (और किसी)
दोर्दण्ड	२.	भुजारूपी दण्ड से	ते	६.	तुम्हें
परिरम्भिते ।	३.	सुरक्षित	प्राणिनाम्	८.	प्राणी में
भूतले	५.	पृथ्वी तल पर	शुचः ॥	१०.	शोक

श्लोकार्थ—कुरुवंशी राजाओं के भुजारूपी दण्ड से सुरक्षित इस पृथ्वीतल पर तुम्हें छोड़कर और किसी प्राणी में कभी भी शोक होते नहीं देखा ।

नवमः श्लोकः

मा सौरभेयानुशुचो व्येतु ते वृषलाद्भयम् ।
मा रोदीरम्ब भद्रं ते खलानां मयि शास्तरि ॥९॥

पदच्छेद—

मा सौरभेय अनुशुचः, व्येतु ते वृषलात् भयम् ।
मा रोदीः अम्ब भद्रम् ते, खलानाम् मयि शास्तरि ॥

शब्दार्थ—

मा	२.	मत	रोदीः	१०.	रोओ
सौरभेय	१.	हे धेनु पुत्र ! (तुम)	अम्ब	८.	हे मातः ! (तुम)
अनुशुचः	३.	शोक करो	भद्रम्	१५.	कल्याण होगा
व्येतु	७.	दूर होवे	ते	१४.	तुम्हारा
ते	५.	तुम्हारा	खलानाम्	११.	दुष्टों के
वृषलात्	४.	शूद्र कलियुग से	मयि	१३.	मेरे रहते
भयम् ।	६.	भय	शास्तरि ॥	१२.	शासक
मा	९.	मत			

श्लोकार्थ—हे धेनु पुत्र ! तुम शोक मत करो। शूद्र कलियुग से तुम्हारा भय दूर होवे। हे मातः ! तुम मत रोओ। दुष्टों के शासक मेरे रहते तुम्हारा कल्याण होगा।

दशमः श्लोकः

यस्य राष्ट्रे प्रजाः सर्वास्त्रस्यन्ते साध्व्यसाधुभिः ।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति कीर्तिरायुर्भगो गतिः ॥१०॥

पदच्छेद—

यस्य राष्ट्रे प्रजाः सर्वाः, त्रस्यन्ते साध्वि असाधुभिः ।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति, कीर्तिः आयुः भगः गतिः ॥

शब्दार्थ—

यस्य	२.	जिस (राजा) के	तस्य	८.	उस
राष्ट्रे	३.	राज्य में	मत्तस्य	९.	मतवाले राजा का
प्रजाः	५.	जनता	नश्यन्ति	१४.	नष्ट हो जाते हैं
सर्वाः	४.	सारी	कीर्तिः	१०.	यश
त्रस्यन्ते	७.	भयभीत रहती है	आयुः	११.	आयु
साध्वि	१.	हे देवि !	भगः	१२.	सम्पत्ति (और)
असाधुभिः ।	६.	दुष्टों से	गतिः ॥	१३.	परलोक (सब)

श्लोकार्थ—हे देवि ! जिस राजा के राज्य में सारी जनता दुष्टों से भयभीत रहती है, उस मतवाले राजा का यश, आयु, सम्पत्ति और परलोक सब नष्ट हो जाते हैं।

एकादशः श्लोकः

एष राज्ञां परो धर्मो ह्यार्तानामार्तिनिग्रहः ।
अत एनं वधिष्यामि भूतद्रुहमसत्तमम् ॥११॥

पदच्छेद—

एषः राज्ञाम् परः धर्मः, हि आर्तानाम् आर्ति निग्रहः ।
अतः एनम् वधिष्यामि, भूत द्रुहम् असत्तमम् ॥

शब्दार्थ—

एषः	२. यह	निग्रहः ।	८. निवारण हो
राज्ञाम्	१. राजाओं का	अतः	९. इसलिये (मैं)
परः	४. परम	एनम्	१२. इस
धर्मः	५. धर्म (है कि)	वधिष्यामि	१४. वध करूँगा
हि	३. ही	भूत	१०. प्राणियों के
आर्तानाम्	६. पीड़ितों की	द्रुहम्	११. द्रोही
आर्ति	७. पीड़ा का	असत्तमम् ॥	१३. दुष्ट (कलियुग) का

श्लोकार्थ—राजाओं का यही परम धर्म है कि पीड़ितों की पीड़ा का निवारण हो, इसलिये मैं प्राणियों के द्रोही इस दुष्ट कलियुग का वध करूँगा ।

द्वादशः श्लोकः

कोऽवृश्चत् तव पादांस्त्रीन् सौरभेय चतुष्पद ।
मा भूवंस्त्वादृशा राष्ट्रे राज्ञां कृष्णानुवर्तिनाम् ॥१२॥

पदच्छेद—

कः अवृश्चत् तव पादान् त्रीन्, सौरभेय चतुष्पद ।
मा भूवन् त्वादृशाः राष्ट्रे, राज्ञाम् कृष्ण अनुवर्तिनाम् ॥

शब्दार्थ—

कः	६. किसने	मा	१३. न
अवृश्चत्	७. काट दिया	भूवन्	१४. होवे
तव	३. तुम्हारे	त्वादृशाः	१२. तुम्हारे समान (कोई दुःखी)
पादान्	५. पैरों को	राष्ट्रे	११. राज्य में
त्रीन्	४. तीन	राज्ञाम्	१०. राजाओं के
सौरभेय	२. हे धेनु पुत्र !	कृष्ण	८. श्रीकृष्ण के
चतुष्पद ।	१. चार पैरों वाले	अनुवर्तिनाम् ॥	९. अनुगामी

श्लोकार्थ—चार पैरों वाले हे धेनु पुत्र ! तुम्हारे तीन पैरों को किसने काट दिया ? श्रीकृष्ण के अनुगामी राजाओं के राज्य में तुम्हारे समान कोई दुःखी न होवे ।

त्रयोदशः श्लोकः

आख्याहि वृष भद्रं वः साधूनामकृतागसाम् ।
आत्मवैरूप्यकर्तारं पार्थानां कीर्तिदूषणम् ॥१३॥

पदच्छेद—

आख्याहि वृष भद्रम् वः, साधूनाम् अकृत आगसाम् ।
आत्म वैरूप्य कर्तारम् , पार्थानाम् कीर्ति दूषणम् ॥

शब्दार्थ—

आख्याहि	१३.	बतावें	आत्म	७.	अपने
वृष	१.	हे वृषभ !	वैरूप्य	८.	अंग-भंग
भद्रम्	६.	कल्याण हो (आप)	कर्तारम्	९.	करने वाले (एवं)
वः	४.	आपके (समान)	पार्थानाम्	१०.	पाण्डवों के
साधूनाम्	५.	महात्माओं का	कीर्ति	११.	यश में
अकृत	३.	नहीं करने वाले	दूषणम् ॥	१२.	कलंक लगाने वाले (व्यक्ति) को
आगसाम् ।	२.	अपराध			

श्लोकार्थ—हे वृषभ ! अपराध नहीं करने वाले आपके समान महात्माओं का कल्याण हो । आप अपने अंग-भंग करने वाले एवं पाण्डवों के यश में कलंक लगाने वाले व्यक्ति को बतावें ।

चतुर्दशः श्लोकः

जनेऽनागस्यघं युञ्जन् सर्वतोऽस्य च मद्भयम् ।
साधूनां भद्रमेव स्यादसाधुदमने कृते ॥१४॥

पदच्छेद—

जने अनागसि अघम् युञ्जन् , सर्वतः अस्य च मत् भयम् ।
साधूनाम् भद्रम् एव स्यात् , असाधु दमने कृते ॥

शब्दार्थ—

जने	२.	व्यक्ति के प्रति	भयम् ।	८.	भय है
अनागसि	१.	(जो) निरपराध	साधूनाम्	१३.	महात्माओं का
अघम्	३.	अपराध	भद्रम्	१४.	कल्याण
युञ्जन्	४.	करता है	एव	१५.	ही
सर्वतः	६.	चारों ओर	स्यात्	१६.	होगा
अस्य	५.	उसको	असाधु	१०.	दुष्टों का
च	९.	तथा	दमने	११.	विनाश
मत्	७.	मुझसे	कृते ॥	१२.	करने पर

श्लोकार्थ—जो निरपराध व्यक्ति के प्रति अपराध करता है, उसको चारों ओर मुझसे भय है तथा दुष्टों का विनाश करने पर महात्माओं का कल्याण ही होगा ।

पञ्चदशः श्लोकः

अनागस्स्विह भूतेषु य आगस्कृन्निरङ्कुशः ।
आहर्तास्मि भुजं साक्षादमर्त्यस्यापि साङ्गदम् ॥१५॥

पदच्छेद—

अनागस्सु इह भूतेषु, यः आगस्कृत् निरङ्कुशः ।
आहर्ता अस्मि भुजम् साक्षात्, अमर्त्यस्य अपि स अङ्गदम् ॥

शब्दार्थ—

अनागस्सु	४	निरपराध	**अस्मि**	१४.	हूँ
इह	१.	मेरे राज्य में	**भुजम्**	१२.	भुजाओं को
भूतेषु	५.	प्राणियों के प्रति	**साक्षात्**	७.	साक्षात्
यः	२.	जो	**अमर्त्यस्य**	८.	देवता होने पर
आगस्कृत्	६.	पाप करने वाला (है)	**अपि**	९.	भी (मैं)
निरङ्कुशः	३.	उद्दण्ड (व्यक्ति)	**स**	११.	साथ (उसकी)
आहर्ता।	१३.	उखाड़ देने वाला	**अङ्गदम् ॥**	१०.	बाजूबन्द के

श्लोकार्थ—मेरे राज्य में जो उद्दण्ड व्यक्ति निरपराध प्राणियों के प्रति पाप करने वाला है, साक्षात् देवता होने पर भी मैं बाजूबन्द के साथ उसकी भुजाओं को उखाड़ देने वाला हूँ ।

षोडशः श्लोकः

राज्ञो हि परमो धर्मः स्वधर्मस्थानुपालनम् ।
शासतोऽन्यान् यथाशास्त्रमनापद्युत्पथानिह ॥१६॥

पदच्छेद—

राज्ञः हि परमः धर्मः, स्व धर्मस्थ अनुपालनम् ।
शासतः अन्यान् यथा शास्त्रम्, अनापदि उत्पथान् इह ॥

शब्दार्थ—

राज्ञः	८.	राजा का	**शासतः**	७.	दण्ड देने वाले
हि	१२.	ही	**अन्यान्**	४.	असज्जन (व्यक्तियों) को
परमः	१३.	परम	**यथा**	६.	अनुसार
धर्मः	१४.	धर्म (है)	**शास्त्रम्**	५.	शास्त्र के
स्व	९.	अपने	**अनापदि**	२.	संकट के बिना ही
धर्मस्थ	१०.	धर्म में स्थित (जनों का)	**उत्पथान्**	३.	कुमार्ग में जाने वाले
अनुपालनम् ।	११.	पालन करना	**इह ॥**	१.	इस संसार में

श्लोकार्थ—इस संसार में संकट के बिना ही कुमार्ग में जाने वाले असज्जन व्यक्तियों को शास्त्र के अनुसार दण्ड देने वाले राजा का अपने धर्म में स्थित जनों का पालन करना ही परम धर्म है ।

सप्तदशः श्लोकः

एतद्वः पाण्डवेयानां युक्तमार्ताभयं वचः ।
येषां गुणगणैः कृष्णो दौत्यादौ भगवान् कृतः ॥१७॥

पदच्छेद—

एतत् वः पाण्डवेयानाम्, युक्तम् आर्त अभयम् वचः ।
येषाम् गुण गणैः कृष्णः, दौत्य आदौ भगवान् कृतः ॥

शब्दार्थ—

एतत्	३.	यह	येषाम्	८.	जिनके
वः	५.	आप	गुण	९.	उत्तम गुणों के
पाण्डवेयानाम्	६.	पाण्डववंशी राजाओं के	गणैः	१०.	समूह से (प्रसन्न होकर)
युक्तम्	७.	योग्य है	कृष्णः	१२.	श्रीकृष्ण ने
आर्त	१.	दुखियों को	दौत्य आदौ	१३.	दूत, सारथी (इत्यादि का काम)
अभयम्	२.	अभय देने वाली	भगवान्	११.	भगवान्
वचः ।	४.	वाणी	कृतः ॥	१४.	किया था

श्लोकार्थ—दुखियों को अभय देने वाली यह वाणी आप पाण्डववंशी राजाओं के योग्य है, जिनके उत्तम गुणों के समूह से प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने दूत, सारथी इत्यादि का काम किया था ।

अष्टादशः श्लोकः

न वयं क्लेशबीजानि यतः स्युः पुरुषर्षभ ।
पुरुषं तं विजानीमो वाक्यभेदविमोहिताः ॥१८॥

पदच्छेद—

न वयम् क्लेश बीजानि, यतः स्युः पुरुष ऋषभ ।
पुरुषम् तम् विजानीमः, वाक्य भेद विमोहिताः ॥

शब्दार्थ—

न	९.	नहीं	ऋषभ ।	२.	श्रेष्ठ
वयम्	६.	हम सब	पुरुषम्	८.	पुरुष को
क्लेश	१२.	कष्टों के	तम्	७.	उस
बीजानि	१३.	बीज	विजानीमः	१०.	जानते हैं
यतः	११.	जिससे	वाक्य	३.	शास्त्रों के
स्युः	१४.	उत्पन्न होते हैं	भेद	४.	भेद से
पुरुष	१.	हे पुरुष	विमोहिताः ॥	५.	भ्रम में पड़े हुये

श्लोकार्थ—हे पुरुष श्रेष्ठ ! शास्त्रों के भेद से भ्रम में पड़े हुये हम सब उस पुरुष को नहीं जानते हैं, जिससे कष्टों के बीज उत्पन्न होते हैं ।

एकोनविंशः श्लोकः

केचिद् विकल्पवसना आहुरात्मानमात्मनः ।
दैवमन्ये परे कर्म स्वभावमपरे प्रभुम् ॥१९॥

पदच्छेद—

केचित् विकल्प वसनाः, आहुः आत्मानम् आत्मनः ।
दैवम् अन्ये परे कर्म, स्वभावम् अपरे प्रभुम् ॥

शब्दार्थ—

केचित्	३.	कुछ (व्यक्ति)	अन्ये	५.	दूसरे लोग
विकल्प	१.	तर्क का	परे	७.	कोई
वसनाः	२.	बाना पहिने	कर्म	८.	कर्म को (कोई)
आहुः	१३.	बताते हैं	स्वभावम्	९.	स्वभाव को (और)
आत्मानम्	४.	अपने को	अपरे	१०.	कुछ लोग
आत्मनः ।	१२.	अपना कारण	प्रभुम् ॥	११.	ईश्वर को
दैवम्	६.	भाग्य को			

श्लोकार्थ—तर्क का बाना पहिने कुछ व्यक्ति अपने को, दूसरे लोग भाग्य को, कोई कर्म को, कोई स्वभाव को और कुछ लोग ईश्वर को अपना कारण बताते हैं ।

विंशः श्लोकः

अप्रतर्क्यादनिर्देश्यादिति केष्वपि निश्चयः ।
अत्रानुरूपं राजर्षे विमृश स्वमनीषया ॥२०॥

पदच्छेद—

अप्रतर्क्यात् अनिर्देश्यात् , इति केषु अपि निश्चयः ।
अत्र अनुरूपम् राजर्षे, विमृश स्व मनीषया ॥

शब्दार्थ—

अप्रतर्क्यात्	१.	(वह कारण) तर्क से परे है (एवं)	अत्र	८.	इस (विषय) में
अनिर्देश्यात्	२.	वाणी से बतलाया नहीं जा सकता है	अनुरूपम्	११.	उचित-अनुचित का
इति	३.	ऐसा	राजर्षे	७.	हे राजा परीक्षित् !
केषु	५.	कुछ लोगों का	विमृश	१२.	विचार कर लीजिये
अपि	४.	भी	स्व	९.	अपनी
निश्चयः ।	६.	निश्चय है (अतः)	मनीषया ॥	१०.	बुद्धि से

श्लोकार्थ—वह कारण तर्क से परे है एवं वाणी से बतलाया नहीं जा सकता है, ऐसा भी कुछ लोगों का निश्चय है । अतः, हे राजा परीक्षित् ! इस विषय में अपनी बुद्धि से उचित-अनुचित का विचार कर लीजिये ।

एकविंशः श्लोकः

सूत उवाच-- एवं धर्मे प्रवदति स सम्राड् द्विजसत्तम ।
समाहितेन मनसा विखेदः पर्यचष्ट तम् ॥२१॥

पदच्छेद---

एवम् धर्मे प्रवदति, सः सम्राट् द्विज सत्तम ।
समाहितेन मनसा, विखेदः पर्यचष्ट तम् ॥

शब्दार्थ--

एवम्	३.	इस प्रकार	समाहितेन	८.	सावधान
धर्मे	२.	धर्म के	मनसा	९.	मन से
प्रवदति	४.	कहते रहने पर	विखेदः	७.	शोक से रहित होकर
सः	५.	उस	पर्यचष्ट	११.	पूछा
सम्राट्	६.	सम्राट् (राजा परीक्षित्) ने	तम् ॥	१०.	उस (वृषभरूप धर्म) से
द्विज सत्तम ।	१.	हे ऋषि श्रेष्ठ शौनक जी !			

श्लोकार्थ—हे ऋषि श्रेष्ठ शौनक जी ! धर्म के इस प्रकार कहते रहने पर उस सम्राट् राजा परीक्षित् ने शोक से रहित होकर सावधान मन से उस वृषभ रूप धर्म से पूछा ।

द्वाविंशः श्लोकः

राजोवाच— धर्मं ब्रवीषि धर्मज्ञ धर्मोऽसि वृषरूपधृक् ।
यदधर्मकृतः स्थानं सूचकस्यापि तद् भवेत् ॥२२॥

पदच्छेद---

धर्मम् ब्रवीषि धर्मज्ञ, धर्मः असि वृष रूप धृक् ।
यत् अधर्म कृतः स्थानम्, सूचकस्य अपि तद् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

धर्मम्	२.	धर्म का	यत्	११.	जो
ब्रवीषि	३.	उपदेश कर रहे हैं	अधर्म	९.	पाप
धर्मज्ञ	१.	हे धर्म के जानकार ! (आप)	कृतः	१०.	करने वाले (व्यक्ति) को
धर्मः	७.	(साक्षात्) धर्मराज	स्थानम्	१२.	फल मिलता है (उसकी)
असि	८.	हैं	सूचकस्य	१३.	सूचना देने वाले (व्यक्ति को)
वृष	४.	बैल का	अपि	१४.	भी
रूप	५.	रूप	तद्	१५.	वही (फल)
धृक् ।	६.	धारण किये हुये (आप)	भवेत् ॥	१६.	मिलता है

श्लोकार्थ—हे धर्म के जानकार ! आप धर्म का उपदेश कर रहे हैं । बैल का रूप धारण किये हुये आप साक्षात् धर्मराज हैं । पाप करने वाले व्यक्ति को जो फल मिलता है, उसकी सूचना देने वाले व्यक्ति को भी वही फल मिलता है ।

त्रयोविंशः श्लोकः

अथवा देवमायाया नूनं गतिरगोचरा ।
चेतसो वचसश्चापि भूतानामिति निश्चयः ॥२३॥

पदच्छेद—

अथवा देव मायायाः, नूनम् गतिः अगोचरा ।
चेतसः वचसः च अपि, भूतानाम् इति निश्चयः ॥

शब्दार्थ—

अथवा	१. अथवा		**वचसः**	१०. वाणी से
देव	४. देवताओं की		**च**	६. और
मायायाः	५. माया का		**अपि**	११. भी
नूनम्	१२. निश्चय ही		**भूतानाम्**	७. प्राणियों के
गतिः	६. स्वरूप		**इति**	२. यह
अगोचरा ।	१३. परे है		**निश्चयः ॥**	३. सिद्धान्त है (कि)
चेतसः	८. मन से			

श्लोकार्थ—अथवा यह सिद्धान्त है कि देवताओं की माया का स्वरूप प्राणियों के मन से और वाणी से भी निश्चय ही परे है ।

चतुर्विंशः श्लोकः

तपः शौचं दया सत्यमिति पादाः कृते कृताः ।
अधर्मांशैस्त्रयो भग्नाः स्मयसङ्गमदैस्तव ॥२४॥

पदच्छेद—

तपः शौचम् दया सत्यम्, इति पादाः कृते कृताः ।
अधर्म अंशैः त्रयः भग्नाः, स्मय सङ्ग मदैः तव ॥

शब्दार्थ—

तपः	३. तपस्या		**अधर्म**	१३. पाप के
शौचम्	४. पवित्रता		**अंशैः**	१४. अंशों से
दया	५. दया (और)		**त्रयः**	१५. तीन पैर
सत्यम्	६. सत्य		**भग्नाः**	१६. टूट गये हैं
इति	७. ये		**स्मय**	१०. (अब) अभिमान
पादाः	८. चार चरण		**सङ्ग**	११. आसक्ति (और)
कृते	१. सतयुग में		**मदैः**	१२. मदरूप
कृताः ।	९. कल्पित थे (किन्तु)		**तव ॥**	२. आपके

श्लोकार्थ—सतयुग में आपके तपस्या, पवित्रता, दया और सत्य ये चार चरण कल्पित थे; किन्तु अब अभिमान, आसक्ति और मदरूप पाप के अंशों से तीन पैर टूट गये हैं ।

पञ्चविंशः श्लोकः

इदानीं धर्मपादस्ते सत्यं निर्वर्तयेद् यतः ।
तं जिघृक्षत्यधर्मोऽयमनृतेनैधितः कलिः ॥२५॥

पदच्छेद—

इदानीम् धर्म पादः ते, सत्यम् निर्वर्तयेत् यतः ।
तम् जिघृक्षति अधर्मः अयम्, अनृतेन एधितः कलिः ॥

शब्दार्थ—

इदानीम्	३.	अब (आप)	तम्	१३.	उसे (भी)
धर्म	१.	हे धर्मराज !	जिघृक्षति	१४.	ग्रस लेना चाहता है
पादः	६.	चरण से	अधर्मः	११.	पापी
ते	४.	अपने	अयम्	१०.	यह
सत्यम्	५.	सत्यरूपी	अनृतेन	८.	झूठ से
निर्वर्तयेत्	७.	जीवित हैं (अतः)	एधितः	९.	पुष्ट हुआ
यतः ।	२.	क्योंकि	कलिः ॥	१२.	कलियुग

श्लोकार्थ—हे धर्मराज ! क्योंकि अब आप अपने सत्यरूपी चरण से जीवित हैं, अतः झूठ से पुष्ट हुआ यह पापी कलियुग उसे भी ग्रस लेना चाहता है ।

षड्विंशः श्लोकः

इयं च भूर्भगवता न्यासितोरुभरा सती ।
श्रीमद्भिस्तत्पदन्यासैः सर्वतः कृतकौतुका ॥२६॥

पदच्छेद—

इयम् च भूः भगवता, न्यासित उरु भरा सती ।
श्रीमद्भिः तत् पद न्यासैः, सर्वतः कृत कौतुका ॥

शब्दार्थ—

इयम्	४.	(अतः उस समय) यह	सती ।	६.	देवी
च	८.	और	श्रीमद्भिः	७.	शोभा से सम्पन्न
भूः	५.	पृथ्वी	तत्	९.	भगवान् के
भगवता	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	पद न्यासैः	१०.	चरण चिह्नों से
न्यासित	३.	दूर कर दिया था	सर्वतः	११.	चारों तरफ
उरु भरा	२.	महान् भूभार को	कृत कौतुका ॥	१२.	उत्सवमयी थी

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने महान् भूभार को दूर कर दिया था; अतः उस समय यह पृथ्वी देवी शोभा से सम्पन्न और भगवान् के चरण चिह्नों से चारों तरफ उत्सवमयी थी ।

सप्तविंशः श्लोकः

शोचत्यश्रुकला साध्वी दुर्भगेवोज्झिताधुना ।
अब्रह्मण्या नृपव्याजाः शूद्रा भोक्ष्यन्ति मामिति ॥२७॥

पदच्छेद—

शोचति अश्रु कला साध्वी, दुर्भगा इव उज्झिता अधुना ।
अब्रह्मण्याः नृप व्याजाः, शूद्राः भोक्ष्यन्ति माम् इति ॥

शब्दार्थं—

शोचति	१४.	चिन्ता कर रही है	अब्रह्मण्याः	४.	ब्राह्मण द्रोही
अश्रु कला	१३.	आँसू भरकर	नृप	२.	राजा के
साध्वी	१०.	(यह) देवी पृथ्वी	व्याजाः	३.	वेश में
दुर्भगा	११.	अभागिन के	शूद्राः	५.	शूद्र लोग
इव	१२.	समान	भोक्ष्यन्ति	७.	शासन करेंगे
उज्झिता	९.	(भगवान् के द्वारा) छोड़ी गई	माम्	६.	मेरे पर
अधुना ।	१.	अब	इति ॥	८.	इस विचार से

श्लोकार्थ—'अब राजा के वेश में ब्राह्मण-द्रोही शूद्र लोग मेरे पर शासन करेंगे' इस विचार से भगवान् के द्वारा छोड़ी गई यह देवी पृथ्वी अभागिन के समान आँसू भर कर चिन्ता कर रही है ।

अष्टाविंशः श्लोकः

इति धर्मं महीं चैव सान्त्वयित्वा महारथः ।
निशातमाददे खड्गं कलयेऽधर्महेतवे ॥२८॥

पदच्छेद—

इति धर्मम् महीम् च एव, सान्त्वयित्वा महारथः ।
निशातम् आददे खड्गम्, कलये अधर्म हेतवे ॥

शब्दार्थं—

इति	१.	इस प्रकार	निशातम्	११.	तेज धार वाली
धर्मम्	२.	धर्म को	आददे	१३.	उठाई
महीम्	४.	पृथ्वी को	खड्गम्	१२.	तलवार
च	३.	और	कलये	१०.	कलियुग को (मारने के लिये)
एव	५.	भी	अधर्म	८.	पाप का
सान्त्वयित्वा	६.	सान्त्वना देकर	हेतवे ॥	९.	कारण
महारथः ।	७.	महारथी (परीक्षित् ने)			

श्लोकार्थं—इस प्रकार धर्म को और पृथ्वी को भी सान्त्वना देकर महारथी परीक्षित् ने पाप का कारण कलियुग को मारने के लिये तेज धार वाली तलवार उठाई ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तं जिघांसुमभिप्रेत्य विहाय नृपलाञ्छनम् ।
तत्पादमूलं शिरसा समगाद् भयविह्वलः ॥२९॥

पदच्छेद—

तम् जिघांसुम् अभिप्रेत्य, विहाय नृप लाञ्छनम् ।
तत् पाद मूलम् शिरसा, समगात् भय विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उन (राजा परीक्षित्) को		पाद	१०. चरण
जिघांसुम्	२. वध का इच्छुक		मूलम्	११. तल में
अभिप्रेत्य	३. जानकर (कलियुग ने)		शिरसा	१२. शिर को
विहाय	६. उतार दिया और		समगात्	१३. रख दिया
नृप	४. राजा के		भय	७. भय से
लाञ्छनम् ।	५. चिह्नों को		विह्वलः ॥	८. व्याकुल होता हुआ
तत्	९. उनके			

श्लोकार्थ—उन राजा परीक्षित् को वध का इच्छुक जानकर कलियुग ने राजा के चिह्नों को उतार दिया और भय से व्याकुल होता हुआ उनके चरण तल में शिर को रख दिया ।

त्रिंशः श्लोकः

पतितं पादयोर्वीरः कृपया दीनवत्सलः ।
शरण्यो नावधीच्छ्लोक्य आह चेदं हसन्निव ॥३०॥

पदच्छेद—

पतितम् पादयोः वीरः, कृपया दीन वत्सलः ।
शरण्यः न अवधीत् श्लोक्यः, आह च इदम् हसन् इव ॥

शब्दार्थ—

पतितम्	७. पड़े हुए (कलियुग) का		अवधीत्	९. वध किया
पादयोः	६. पैरों में		श्लोक्यः	३. यशस्वी (एवम्)
वीरः	४. वीर (राजा परीक्षित्) ने		आह	१४. कहा
कृपया	५. दयापूर्ण होकर		च	१०. और
दीन वत्सलः ।	२. अनाथों के रक्षक		इदम्	१३. इस प्रकार
शरण्यः	१. शरणागत पालक		हसन्	११. हसते हुये
न	८. नहीं		इव ॥	१२. से

श्लोकार्थ—शरणागत पालक, अनाथों के रक्षक, यशस्वी एवम् वीर राजा परीक्षित् ने दयापूर्ण होकर पैरों में पड़े हुए कलियुग का वध नहीं किया और हँसते हुये-से इस प्रकार कहा ।

एकत्रिंशः श्लोकः

राजोवाच—न ते गुडाकेशयशोधराणां, बद्धाञ्जलेर्वै भयमस्ति किंचित् ।
न वर्तितव्यं भवता कथंचन, क्षेत्रे मदीये त्वमधर्मबन्धुः ॥३१॥

पदच्छेद—

न ते गुडाकेश यशोधराणाम्, बद्ध अञ्जलेः वै भयम् अस्ति किंचित् ।
न वर्तितव्यम् भवता कथंचन, क्षेत्रे मदीये त्वम् अधर्म बन्धुः ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं	न	१५. नहीं
ते, गुडाकेश	२. तुम्हें, अर्जुन की	वर्तितव्यम्	१६. रहना चाहिये
यशोधराणाम्,	३. कीर्ति को धारण करने वाले	भवता	११. तुम्हें
बद्ध अञ्जलेः	१. हाथ जोड़े हुए	कथंचन,	१४. किसी भी प्रकार से
वै	६. ही	क्षेत्रे	१३. राज्य में
भयम्	५. भय	मदीये	१२. मेरे
अस्ति	८. होना चाहिये	त्वम्	९. तुम
किंचित् ।	४. (राजाओं से) कोई	अधर्म, बन्धुः ॥	१०. पाप के, सहायक (हो अतः)

श्लोकार्थ—हाथ जोड़े हुए तुम्हें अर्जुन की कीर्ति को धारण करने वाले राजाओं से कोई भय ही नहीं होना चाहिए। तुम पाप के सहायक हो, अतः तुम्हें मेरे राज्य में किसी भी प्रकार से नहीं रहना चाहिए।

द्वात्रिंशः श्लोकः

त्वां वर्तमानं नरदेवदेहे - ष्वनुप्रवृत्तोऽयमधर्मपूगः ।
लोभोऽनृतं चौर्यमनार्यमंहो, ज्येष्ठा च माया कलहश्च दम्भः ॥३२॥

पदच्छेद—

त्वाम् वर्तमानम् नरदेव देहेषु, अनुप्रवृत्तः अयम् अधर्म पूगः ।
लोभः अनृतम् चौर्यम् अनार्यम् अंहः, ज्येष्ठा च माया कलहः च दम्भः ॥

शब्दार्थ—

त्वाम्	१. तुम्हारे	लोभः, अनृतम्	५. लोभ, झूठ
वर्तमानम्	२. रहने से	चौर्यम्, अनार्यम्	६. चोरी, दुष्टता
नरदेव	३. राजाओं के	अंहः, ज्येष्ठा	७. पाप, दरिद्रता
देहेषु,	४. शरीर में	च	८. और
अनुप्रवृत्तः	१४. प्रवेश कर गया है	माया, कलहः	९. छल-कपट, कलह (तथा)
अयम्	१२. यह	च	११. स्वरूप
अधर्म पूगः ।	१३. अधर्म का समूह	दम्भः ॥	१०. घमंड

श्लोकार्थ—तुम्हारे रहने से राजाओं के शरीर में लोभ, झूठ, चोरी, दुष्टता, पाप, दरिद्रता और छल-कपट, कलह तथा घमंड स्वरूप यह अधर्म का समूह प्रवेश कर गया है।

त्रयस्त्रिंश: श्लोक:

न वर्तितव्यं तदधर्मबन्धो, धर्मेण सत्येन च वर्तितव्ये ।
ब्रह्मावर्ते यत्र यजन्ति यज्ञै-र्यज्ञेश्वरं यज्ञवितानविज्ञाः ॥३३॥

पदच्छेद— न वर्तितव्यम् तद् अधर्म बन्धो, धर्मेण सत्येन च वर्तितव्ये ।
ब्रह्मावर्ते यत्र यजन्ति यज्ञैः, यज्ञेश्वरम् यज्ञ वितान विज्ञाः ॥

शब्दार्थ—

न	१५. नहीं	ब्रह्मावर्ते	२. भारतवर्ष में
वर्तितव्यम्	१६. रहना चाहिए	यत्र	१. इस
तद्	९. इसलिए	यजन्ति	८. पूजन करते हैं
अधर्म बन्धो,	१०. पाप के साथी (हे कलियुग !)	यज्ञैः,	६. यज्ञों से
धर्मेण	११. (तुम्हें) धर्म	यज्ञेश्वरम्	७. यज्ञ भगवान् का
सत्येन	१३. सत्य से	यज्ञ	३. यज्ञ की
च	१२. और	वितान	४. पद्धति के
वर्तितव्ये ।	१४. रहने योग्य (इस देश में)	विज्ञाः ॥	५. जानकार विद्वान्

श्लोकार्थ—इस भारतवर्ष में यज्ञ की पद्धति के जानकार विद्वान् यज्ञों से यज्ञ-भगवान् का पूजन करते हैं; इसलिए पाप के साथी हे कलियुग ! तुम्हें धर्म और सत्य से रहने योग्य इस देश में नहीं रहना चाहिये ।

चतुस्त्रिंश: श्लोक:

यस्मिन् हरिर्भगवानिज्यमान, इज्यामूर्तिर्यजतां शं तनोति ।
कामानमोघान् स्थिरजङ्गमाना-मन्तर्बहिर्वायुरिवैष आत्मा ॥३४॥

पदच्छेद— यस्मिन् हरिः भगवान् इज्यमानः, इज्या मूर्तिः यजताम् शम् तनोति ।
कामान् अमोघान् स्थिर जङ्गमानाम् , अन्तः बहिः वायुः इव एषः आत्मा ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	१. इस देश में	अमोघान्	७. पूर्ण करते हैं (और)
हरिः भगवान्	३. भगवान् श्रीहरि	स्थिर	१४. जड़ और
इज्यमानः,	४. यज्ञों से प्रसन्न किये जाते हुए	जङ्गमानाम् ,	१५. चेतन की
इज्या-मूर्तिः	२. यज्ञ-स्वरूप	अन्तः बहिः	११. अन्दर और बाहर (विद्यमान)
यजताम्	५. यज्ञ करने वालों की	वायुः	१२. पवन के
शम्	८. (उनका) कल्याण	इव	१३. समान
तनोति ।	९. करते हैं	एषः	१०. ये (श्रीहरि)
कामान्	६. कामनाओं को	आत्मा ॥	१६. आत्मा (हैं)

श्लोकार्थ—इस देश में यज्ञ स्वरूप भगवान् श्रीहरि यज्ञों से प्रसन्न किए जाते हुए यज्ञ करने वालों की कामनाओं को पूर्ण करते हैं और उनका कल्याण करते हैं। ये श्रीहरि अन्दर और बाहर विद्यमान पवन के समान जड़ और चेतन की आत्मा हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच— परीक्षितैवमादिष्टः स कलिर्जातवेपथुः।
तमुद्यतासिमाहेदं दण्डपाणिमिवोद्यतम् ॥३५॥

पदच्छेद—

परीक्षिता एवम् आदिष्टः, सः कलिः जात वेपथुः।
तम् उद्यत असिम् आह इदम्, दण्ड पाणिम् इव उद्यतम् ॥

शब्दार्थ—

परीक्षिता	१.	राजा परीक्षित् से	उद्यत	११.	उठाये हुए
एवम्	२.	इस प्रकार	असिम्	१०.	तलवार
आदिष्टः	३.	आदेश पाकर	आह	१४.	बोला
सः	५.	वह	इदम्	१३.	यह
कलिः	६.	कलियुग	दण्ड पाणिम्	८.	यमराज के
जात वेपथुः।	४.	काँपता हुआ	इव	९.	समान
तम्	१२.	राजा परीक्षित् से	उद्यतम् ॥	७.	(दण्ड) उठाये हुए

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् से इस प्रकार आदेश पाकर काँपता हुआ वह कलियुग दण्ड उठाये हुए यमराज के समान तलवार उठाये हुए राजा परीक्षित् से यह बोला।

षट्त्रिंशः श्लोकः

कलिरुवाच— यत्र क्वचन वत्स्यामि सार्वभौम तवाज्ञया।
लक्षये तत्र तत्रापि त्वामात्तेषुशरासनम् ॥३६॥

पदच्छेद—

यत्र क्वचन वत्स्यामि, सार्वभौम तव आज्ञया।
लक्षये तत्र तत्र अपि, त्वाम् आत्त इषु शरासनम् ॥

शब्दार्थ—

यत्र	४.	जहाँ	लक्षये	१२.	देखता हूँ
क्वचन	५.	कहीं भी	तत्र तत्र अपि	७.	वहाँ-वहाँ पर
वत्स्यामि	६.	रहता हूँ	त्वाम्	८.	आपको
सार्वभौम	१.	हे राजन्!	आत्त	११.	चढ़ाये हुए
तव	२.	आपकी	इषु	१०.	बाण
आज्ञया।	३.	आज्ञा से (मैं)	शरासनम् ॥	९.	धनुष पर

श्लोकार्थ—हे राजन्! आपकी आज्ञा से मैं जहाँ कहीं भी रहता हूँ, वहाँ-वहाँ पर आपको धनुष पर बाण चढ़ाये हुए देखता हूँ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तन्मे धर्मभृतां श्रेष्ठ स्थानं निर्देष्टुमर्हसि ।
यत्रैव नियतो वत्स्य आतिष्ठंस्तेऽनुशासनम् ॥३७॥

पदच्छेद—

तद् मे धर्म भृताम् श्रेष्ठ, स्थानम् निर्देष्टुम् अर्हसि ।
यत्र एव नियतः वत्स्ये, आतिष्ठन् ते अनुशासनम् ॥

शब्दार्थ—

तद्	१.	इसलिए	यत्र	८.	जहाँ
मे	४.	मुझे	एव	९.	कि
धर्मभृताम्	२.	धर्मात्माओं में	नियतः	१३.	निश्चित रूप से
श्रेष्ठ	३.	श्रेष्ठ (हे राजन् ! आप)	वत्स्ये	१४.	निवास कर सकूँ
स्थानम्	५.	(वह) स्थान	आतिष्ठन्	१२.	पालन करता हुआ
निर्देष्टुम्	६.	बताने में	ते	१०.	आपके
अर्हसि ।	७.	समर्थ हैं	अनुशासनम् ॥	११.	आदेश का

श्लोकार्थ—इसलिए धर्मात्माओं में श्रेष्ठ हे राजन् ! आप मुझे वह स्थान बताने में समर्थ हैं; जहाँ कि मैं आपके आदेश का पालन करता हुआ निश्चित रूप से निवास कर सकूँ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच— **अभ्यर्थितस्तदा तस्मै स्थानानि कलये ददौ ।**
द्यूतं पानं स्त्रियः सूना यत्राधर्मश्चतुर्विधः ॥३८॥

पदच्छेद—

अभ्यर्थितः तदा तस्मै, स्थानानि कलये ददौ ।
द्यूतम् पानम् स्त्रियः सूनाः, यत्र अधर्मः चतुर्विधः ॥

शब्दार्थ—

अभ्यर्थितः	१. (कलियुग के) माँगने पर परीक्षित् ने	पानम्	६.	मदिरा
तदा	२. उस समय	स्त्रियः	७.	स्त्री सहवास (और)
तस्मै	३. उस	सूनाः	८.	हिंसा का
स्थानानि	९. स्थान	यत्र	११.	जहाँ कि
कलये	४. कलियुग को	अधर्मः	१३.	पाप (रहते हैं)
ददौ ।	१०. दिया	चतुर्विधः ॥	१२.	चार प्रकार के
द्यूतम्	५. जूआ			

श्लोकार्थ—कलियुग के माँगने पर परीक्षित् ने उस समय उस कलियुग को जूआ, मदिरा, स्त्री-सहवास और हिंसा का स्थान दिया, जहाँ कि चार प्रकार के पाप रहते हैं।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

पुनश्च याचमानाय जातरूपमदात्प्रभुः।
ततोऽनृतं मदं कामं रजो वैरं च पञ्चमम् ॥३९॥

पदच्छेद—

पुनः च याचमानाय, जातरूपम् अदात् प्रभुः।
ततः अनृतम् मदम् कामम् , रजः वैरम् च पञ्चमम् ॥

शब्दार्थ—

पुनः	२.	फिर से (कलियुग के) द्वारा	अनृतम्	८.	झूठ
च	१.	तथा	मदम्	९.	मद
याचमानाय	३.	याचना करने पर	कामम्	१०.	काम वासना
जातरूपम्	५.	उसे सुवर्ण का स्थान	रजः	११.	रजोगुण
अदात्	६.	दिया	वैरम्	१४.	कलह (भी दिया)
प्रभुः।	४.	समर्थ (राजा परीक्षित् ने)	च	१२.	और
ततः	७.	उसके बाद (उन्होंने उसे)	पञ्चमम् ॥	१३.	पाँचवा स्थान

श्लोकार्थं—तथा फिर से कलियुग के द्वारा याचना करने पर समर्थ राजा परीक्षित् ने उसे सुवर्ण का स्थान दिया। उसके बाद उन्होंने उसे झूठ, मद, कामवासना, रजोगुण और पाँचवा स्थान कलह भी दिया।

चत्वारिंशः श्लोकः

अमूनि पञ्चस्थानानि ह्यधर्मप्रभवः कलिः।
औत्तरेयेण दत्तानि न्यवसत्तन्निदेशकृत् ॥४०॥

पदच्छेद—

अमूनि पञ्च स्थानानि, हि अधर्म प्रभवः कलिः।
औत्तरेयेण दत्तानि, न्यवसत् तत् निदेशकृत् ॥

शब्दार्थ—

अमूनि	६.	इन	कलिः।	३.	कलियुग
पञ्च	७.	पाँच	औत्तरेयेण	४.	राजा परीक्षित् के द्वारा
स्थानानि	८.	स्थानों पर	दत्तानि	५.	दिये गये
हि	९.	ही	न्यवसत्	१२.	निवास करने लगा
अधर्म	१.	पाप का	तत्	१०.	उनके
प्रभवः	२.	मूल कारण	निदेशकृत् ॥	११.	आदेश का पालन करता हुआ

श्लोकार्थं—पाप का मूल कारण कलियुग राजा परीक्षित् के द्वारा दिये गये इन पाँच स्थानों पर ही उनके आदेश का पालन करता हुआ निवास करने लगा।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अथैतानि न सेवेत बुभूषुः पुरुषः क्वचित् ।
विशेषतो धर्मशीलो राजा लोकपतिर्गुरुः ॥४१॥

पदच्छेद—

अथ एतानि न सेवेत, बुभूषुः पुरुषः क्वचित् ।
विशेषतः धर्म शीलः, राजा लोक पतिः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसलिये	क्वचित् ।	१०.	कभी
एतानि	९.	इन स्थानों का	विशेषतः	४.	विशेष रूप से
न	११.	नहीं	धर्म शीलः	५.	धार्मिक
सेवेत	१२.	सेवन करना चाहिये	राजा	६.	राजा
बुभूषुः	२.	कल्याण के इच्छुक	लोक पतिः	७.	लोक नायक (और)
पुरुषः	३.	पुरुषों को	गुरुः ॥	८.	गुरु जनों को

श्लोकार्थ—इसलिए कल्याण के इच्छुक पुरुषों को, विशेष रूप से धार्मिक राजा, लोकनायक और गुरुजनों को इन स्थानों का कभी सेवन नहीं करना चाहिये ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

वृषस्य नष्टांस्त्रीन् पादान् तपः शौचं दयामिति ।
प्रतिसंदध आश्वास्य महीं च समवर्धयत् ॥४२॥

पदच्छेद—

वृषस्य नष्टान् त्रीन् पादान्, तपः शौचम् दयाम् इति ।
प्रतिसंदधे आश्वास्य, महीम् च समवर्धयत् ॥

शब्दार्थ—

वृषस्य	१.	(राजा परीक्षित् ने) बैल रूपधारी धर्म के	इति ।	६.	इन
नष्टान्	२.	टूटे हुये	प्रति	९.	पुनः
त्रीन्	७.	तीनों	संदधे	१०.	जोड़ दिया
पादान्	८.	पैरों को	आश्वास्य	१३.	आश्वासन देकर
तपः	३.	तपस्या	महीम्	१२.	पृथ्वी को
शौचम्	४.	पवित्रता (और)	च	११.	तथा
दयाम्	५.	दया रूप वाले	समवर्धयत् ॥	१४.	निर्भय किया

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् ने बैल रूपधारी धर्म के टूटे हुये तपस्या, पवित्रता और दया रूपवाले इन तीनों पैरों को पुनः जोड़ दिया तथा पृथ्वी को आश्वासन देकर निर्भय किया ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

स एष एतर्ह्यध्यास्त आसनं पार्थिवोचितम् ।
पितामहेनोपन्यस्तं राज्ञारण्यं विविक्षता ॥४३॥

पदच्छेद—

सः एषः एतर्हि अध्यास्ते, आसनम् पार्थिव उचितम् ।
पितामहेन उपन्यस्तम्, राज्ञा अरण्यम् विविक्षता ॥

शब्दार्थ—

सः	१०. वे ही		उचितम् ।	७. योग्य
एषः	११. ये (राजा परीक्षित्)		पितामहेन	३. पितामह
एतर्हि	६. इस समय		उपन्यस्तम्	५. दिये गये
अध्यास्ते	१२. विराजमान हैं		राज्ञा	४. राजा (युधिष्ठिर) के द्वारा
आसनम्	८. सिंहासन पर		अरण्यम्	१. वन में
पार्थिव	६. राजाओं के		विविक्षताः ॥	२. जाते हुए

श्लोकार्थ—वन में जाते हुए पितामह राजा युधिष्ठिर के द्वारा दिये गये राजाओं के योग्य सिंहासन पर इस समय वे ही ये राजा परीक्षित् विराजमान हैं ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

आस्तेऽधुना स राजर्षिः कौरवेन्द्रश्रियोल्लसन् ।
गजाह्वये महाभागश्चक्रवर्ती बृहच्छ्रवाः ॥४४॥

पदच्छेद—

आस्ते अधुना सः राजर्षिः, कौरवेन्द्र श्रिया उल्लसन् ।
गजाह्वये महाभागः, चक्रवर्ती बृहत् श्रवाः ॥

शब्दार्थ—

आस्ते	१२. विद्यमान हैं		उल्लसन् ।	११. शोभित होते हुये
अधुना	७. इस समय		गजाह्वये	८. हस्तिनापुर में
सः	६. वे (राजा परीक्षित्)		महाभागः	१. परम सौभाग्यशाली
राजर्षिः	५. राजर्षि		चक्रवर्ती	४. चक्रवर्ती सम्राट् (एवम्)
कौरवेन्द्र	६. कौरवों की		बृहत्	२. बड़े
श्रिया	१०. राजलक्ष्मी से		श्रवाः ॥	३. यशस्वी

श्लोकार्थ—परम सौभाग्यशाली, बड़े यशस्वी, चक्रवर्ती सम्राट् एवम् राजर्षि वे राजा परीक्षित् इस समय हस्तिनापुर में कौरवों की राजलक्ष्मी से शोभित होते हुए विद्यमान हैं ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

इत्थम्भूतानुभावोऽयमभिमन्युसुतो नृपः।
यस्य पालयतः क्षौणीं यूयं सत्राय दीक्षिताः ॥४५॥

पदच्छेद—

इत्थंभूत अनुभावः अयम्, अभिमन्यु सुतः नृपः।
यस्य पालयतः क्षौणीम्, यूयम् सत्राय दीक्षिताः ॥

शब्दार्थ—

इत्थंभूत	५.	इस प्रकार के	यस्य	७.	जिनके द्वारा
अनुभावः	६.	प्रभाव वाले हैं	पालयतः	९.	पालन करते रहने पर
अयम्	३.	ये	क्षौणीम्	८.	पृथ्वी का
अभिमन्यु	१.	अभिमन्यु के	यूयम्	१०.	आप सब लोग
सुतः	२.	पुत्र	सत्राय	११.	दीर्घकालीन यज्ञ में
नृपः।	४.	राजा परीक्षित्	दीक्षिताः॥	१२.	दीक्षित हुए हैं

श्लोकार्थ—अभिमन्यु के पुत्र ये राजा परीक्षित् इस प्रकार के प्रभाव वाले हैं; जिनके द्वारा पृथ्वी का पालन करते रहने पर आप सब लोग दीर्घकालीन यज्ञ में दीक्षित हुए हैं।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
कलिनिग्रहो नाम सप्तदशः अध्यायः ॥१७॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
प्रथमः स्कन्धः
अथ अष्टादशः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—

यो वै द्रौण्यस्त्रविप्लुष्टो न मातुरुदरे मृतः।
अनुग्रहाद् भगवतः कृष्णस्याद्भुतकर्मणः ॥१॥

पदच्छेद—

यः वै द्रौणि अस्त्र विप्लुष्टः, न मातुः उदरे मृतः।
अनुग्रहात् भगवतः, कृष्णस्य अद्भुत कर्मणः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो (राजा परीक्षित्)	उदरे	३.	गर्भ में
वै	६.	भी	मृतः।	१२.	मरे थे
द्रौणि	४.	अश्वत्थामा के	अनुग्रहात्	१०.	कृपा से
अस्त्र, विप्लुष्टः	५.	ब्रह्मास्त्र से, जलकर	भगवतः, कृष्णस्य	९.	भगवान् श्रीकृष्ण की
न	११.	नहीं	अद्भुत	७.	अनोखी
मातुः	२.	माता (उत्तरा) के	कर्मणः॥	८.	लीलायें करने वाले

श्लोकार्थ—जो राजा परीक्षित् माता उत्तरा के गर्भ में अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से जलकर भी अनोखी लीलायें करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से नहीं मरे थे।

द्वितीयः श्लोकः

ब्रह्मकोपोत्थिताद् यस्तु तक्षकात्प्राणविप्लवात्।
न सम्मुमोहोरुभयाद् भगवत्यर्पिताशयः ॥२॥

पदच्छेद—

ब्रह्म कोप उत्थितात् यः तु, तक्षकात् प्राण विप्लवात्।
न सम्मुमोह उरु भयात्, भगवति अर्पित आशयः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म कोप	५.	ब्राह्मण के शाप से	न	११.	नहीं
उत्थितात्	६.	उत्पन्न हुए	सम्मुमोह	१२.	मोहित हुए थे
यः	४.	वही (राजा परीक्षित्)	उरु भयात्	७.	बड़े भयानक (और)
तु	१०.	भी	भगवति	१.	भगवान् श्रीकृष्ण में
तक्षकात्	९.	तक्षक नाग से	अर्पित	३.	समर्पित किये हुए
प्राण विप्लवात्।	८.	प्राण घातक	आशयः॥	२.	अन्तःकरण को

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण में अन्तःकरण को समर्पित किये हुए वही राजा परीक्षित् ब्राह्मण के शाप से उत्पन्न हुए बड़े भयानक और प्राण घातक तक्षक नाग से भी मोहित नहीं हुए थे।

तृतीयः श्लोकः

उत्सृज्य सर्वतः सङ्गं विज्ञाताजितसंस्थितिः ।
वैयासकेर्जहौ शिष्यो गङ्गायां स्वं कलेवरम् ॥३॥

पदच्छेद—

उत्सृज्य सर्वतः सङ्गम्, विज्ञात अजित संस्थितिः ।
वैयासकेः जहौ शिष्यः, गङ्गायाम् स्वम् कलेवरम् ॥

शब्दार्थ—

उत्सृज्य	८.	हटाकर	वैयासकेः	४.	व्यासपुत्र शुकदेव के
सर्वतः	६.	चारों ओर से	जहौ	१२.	त्याग किया था
सङ्गम्	७.	आसक्ति	शिष्यः	५.	शिष्य (राजा परीक्षित्) ने
विज्ञात	३.	जानकार	गङ्गायाम्	९.	गंगाजी के तट पर
अजित	१.	आत्म	स्वम्	१०.	अपने
संस्थितिः ।	२.	स्वरूप के	कलेवरम् ॥	११.	शरीर का

श्लोकार्थ—आत्म-स्वरूप के जानकार व्यासपुत्र शुकदेव के शिष्य राजा परीक्षित् ने चारों ओर से आसक्ति हटाकर गंगाजी के तट पर अपने शरीर का त्याग किया था।

चतुर्थः श्लोकः

नोत्तमश्लोकवार्तानां जुषतां तत्कथामृतम् ।
स्यात्संभ्रमोऽन्तकालेऽपि स्मरतां तत्पदाम्बुजम् ॥४॥

पदच्छेद—

न उत्तम श्लोक वार्तानाम्, जुषताम् तत् कथा अमृतम् ।
स्यात् संभ्रमः अन्त काले अपि, स्मरताम् तत् पद अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

न	११. नहीं	स्यात्	१२. होता है
उत्तम श्लोक	१. पवित्र कीर्ति (भगवान् श्रीकृष्ण) की	संभ्रमः	१०. मोह
वार्तानाम्	२. चर्चा करने वाले	अन्तकाले अपि	९. मरते समय भी
जुषताम्	५. पान करने वाले (तथा)	स्मरताम्	८. स्मरण करने वाले (जनों) को
तत् कथा	३. उनकी लीला रूपी	तत् पद	६. उनके चरण
अमृतम् ।	४. सुधा का	अम्बुजम् ॥	७. कमल का

श्लोकार्थ—पवित्र कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण की चर्चा करने वाले, उनकी लीलारूपी सुधा का पान करने वाले तथा उनके चरण-कमल का स्मरण करने वाले जनों को मरते समय भी मोह नहीं होता है।

पञ्चमः श्लोकः

तावत्कलिर्न प्रभवेत् प्रविष्टोऽपीह सर्वतः।
यावदीशो महानुर्व्यामाभिमन्यव एकराट् ॥५॥

पदच्छेद—

तावत् कलिः न प्रभवेत्, प्रविष्टः अपि इह सर्वतः।
यावत् ईशः महान् उर्व्याम्, आभिमन्यवः एकराट् ॥

शब्दार्थ—

तावत्, कलिः	७.	जब तक, कलियुग	**यावत्**	४.	जब तक
न	११.	नहीं	**ईशः**	६.	राजा (रहे)
प्रभवेत्	१२.	प्रभावी हो सका था	**महान्**	१.	महान्
प्रविष्टः अपि	१०.	प्रवेश करके भी	**उर्व्याम्**	५.	पृथ्वी पर
इह	८.	यहाँ पर	**आभिमन्यवः**	३.	अभिमन्यु पुत्र (परीक्षित)
सर्वतः।	९.	चारों ओर से	**एकराट् ॥**	२.	सम्राट्

श्लोकार्थ—महान् सम्राट् अभिमन्यु पुत्र परीक्षित् जब तक पृथ्वी पर राजा रहे, तब तक कलियुग यहाँ चारों ओर से प्रवेश करके भी प्रभावी नहीं हो सका था।

षष्ठः श्लोकः

यस्मिन्नहनि यर्ह्येव भगवानुत्ससर्ज गाम्।
तदैवेहानुवृत्तोऽसावधर्मप्रभवः कलिः ॥६॥

पदच्छेद—

यस्मिन् अहनि यर्हि एव, भगवान् उत्ससर्ज गाम्।
तदा एव इह अनुवृत्तः असौ, अधर्म प्रभवः कलिः ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	२.	जिस	**तदा एव**	१०.	उसी क्षण से
अहनि	३.	दिन	**इह**	११.	यहाँ
यर्हि एव	४.	जिस ही क्षण	**अनुवृत्तः**	१२.	आ गया था
भगवान्	१.	भगवान् (श्रीकृष्ण) ने	**असौ**	८.	वह
उत्ससर्ज	६.	छोड़ा था	**अधर्म, प्रभवः**	७.	पाप का, मूल-कारण
गाम्।	५.	धरा धाम को	**कलिः ॥**	९.	कलियुग

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस दिन जिस ही क्षण धरा धाम को छोड़ा था, पाप का मूल-कारण वह कलियुग उसी क्षण से यहाँ आ गया था।

सप्तमः श्लोकः

नानुद्वेष्टि कलिं सम्राट् सारङ्ग इव सारभुक्।
कुशलान्याशु सिद्ध्यन्ति नेतराणि कृतानि यत् ॥७॥

पदच्छेद—

न अनुद्वेष्टि कलिम् सम्राट्, सारङ्गः इव सारभुक्।
कुशलानि आशु सिद्ध्यन्ति, न इतराणि कृतानि यत् ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं	कुशलानि	१०. शुभ कार्य
अनुद्वेष्टि	७. द्वेष किया था	आशु	११. शीघ्र
कलिम्	५. कलियुग से	सिद्ध्यन्ति	१२. फलदायक होते हैं
सम्राट्	४. राजा (परीक्षित्) ने	न	१४. नहीं (होते हैं)
सारङ्गः	१. भ्रमर के	इतराणि	१३. अशुभ कार्य (फलदायक)
इव	२. समान	कृतानि	९. किये गये
सारभुक्।	३. सार अंश के ग्राही	यत् ॥	८. क्योंकि (कलियुग में)

श्लोकार्थ—भ्रमर के समान सार-अंश के ग्राही राजा परीक्षित् ने कलियुग से द्वेष नहीं किया था, क्योंकि कलियुग में किये गये शुभ कार्य शीघ्र फलदायक होते हैं; अशुभ कार्य फलदायक नहीं होते हैं।

अष्टमः श्लोकः

किं नु बालेषु शूरेण कलिना धीरभीरुणा।
अप्रमत्तः प्रमत्तेषु यो वृको नृषु वर्तते ॥८॥

पदच्छेद—

किम् नु बालेषु शूरेण, कलिना धीर भीरुणा।
अप्रमत्तः प्रमत्तेषु, यः वृकः नृषु वर्तते ॥

शब्दार्थ—

किम् नु	६. क्या कहा जाय	अप्रमत्तः	११. सावधान
बालेषु	१. बालकों पर	प्रमत्तेषु	९. असावधान
शूरेण	२. वीरता दिखाने वाले (तथा)	यः	७. जो (कलियुग रूपी)
कलिना	५. कलियुग के विषय में	वृकः	८. भेड़िया
धीर	३. धैर्यशाली पुरुषों से	नृषु	१०. मनुष्यों को (वश में करने के लिए)
भीरुणा।	४. डरने वाले	वर्तते ॥	१२. है

श्लोकार्थ—बालकों पर वीरता दिखाने वाले तथा धैर्यशाली पुरुषों से डरने वाले कलियुग के विषय में क्या कहा जाय? जो कलियुग रूपी भेड़िया असावधान मनुष्यों को वश में करने के लिये सावधान है।

नवमः श्लोकः

उपवर्णितमेतद्वः पुण्यं पारीक्षितं मया ।
वासुदेवकथोपेतमाख्यानं यदपृच्छत ॥९॥

पदच्छेद—

उपवर्णितम् एतद् वः, पुण्यम् पारीक्षितम् मया ।
वासुदेव कथा उपेतम्, आख्यानम् यद् अपृच्छत ॥

शब्दार्थ—

उपवर्णितम्	१२.	वर्णन किया	वासुदेव	१.	(आप लोगों ने) भगवान् श्रीकृष्ण की
एतद्	११.	इस (कथा) का	कथा	२.	कथा से
वः	८.	आप लोगों से	उपेतम्	३.	संबन्धित
पुण्यम्	१०.	पुण्यप्रद	आख्यानम्	५.	कथा
पारीक्षितम्	९.	राजा परीक्षित् की	यद्	४.	जो
मया ।	७.	मैंने	अपृच्छत ॥	६.	पूछी थी

श्लोकार्थ—आप लोगों ने भगवान् श्रीकृष्ण की कथा से संबन्धित जो कथा पूछी थी, मैंने आप लोगों से राजा परीक्षित् की पुण्यप्रद इस कथा का वर्णन किया ।

दशमः श्लोकः

या याः कथा भगवतः कथनीयोरुकर्मणः ।
गुणकर्माश्रयाः पुम्भिः संसेव्यास्ता बुभूषुभिः ॥१०॥

पदच्छेद—

याः याः कथाः भगवतः, कथनीय उरु कर्मणः ।
गुण कर्म आश्रयाः पुम्भिः, संसेव्याः ताः बुभूषुभिः ॥

शब्दार्थ—

याः याः	७.	जो जो	गुण कर्म	५.	गुण और कर्मों पर
कथाः	८.	कथायें (हैं)	आश्रयाः	६.	आधारित
भगवतः	४.	भगवान् श्रीकृष्ण की	पुंम्भिः	१०.	मनुष्यों को
कथनीय	१.	कीर्तन करने योग्य	संसेव्याः	१२.	सेवन करना चाहिये
उरु	२.	अद्भुत	ताः	११.	उन (कथाओं) का
कर्मणः ।	३.	लीलाधारी	बुभूषुभिः ॥	९.	कल्याण चाहने वाले

श्लोकार्थ—कीर्तन करने योग्य, अद्भुत लीलाधारी भगवान् श्रीकृष्ण की गुण और कर्मों पर आधारित जो-जो कथायें हैं; कल्याण चाहने वाले मनुष्यों को उन कथाओं का सेवन करना चाहिये ।

एकादशः श्लोकः

ऋषय ऊचुः—

सूत जीव समाः सौम्य शाश्वतीर्विशदं यशः ।
यस्त्वं शंससि कृष्णस्य मर्त्यानाममृतं हि नः ॥११॥

पदच्छेद—

सूत जीव समाः सौम्य, शाश्वतीः विशदम् यशः ।
यः त्वम् शंससि कृष्णस्य, मर्त्यानाम् अमृतम् हि नः ॥

शब्दार्थ—

सूत	२.	हे सूत जी (आप)	त्वम्	६.	आप
जीव	५.	जीवें	शंससि	१०.	गान कर रहे हैं
समाः	४.	वर्षों तक	कृष्णस्य	८.	भगवान् श्रीकृष्ण के
सौम्य	१.	मधुर स्वभाव वाले	मर्त्यानाम्	१२.	मृत्युलोक के प्राणियों का
शाश्वतीः	३.	अनन्त	अमृतम्	१३.	अमृत
विशदम् यशः ।	९.	निर्मल यश का	हि	१४.	ही है
यः	७.	जो	नः ॥	११.	(वह) हम

श्लोकार्थ—मधुर स्वभाव वाले हे सूत जी ! आप अनन्त वर्षों तक जीवें; आप जो भगवान् श्रीकृष्ण के निर्मल यश का गान कर रहे हैं, वह हम मृत्युलोक के प्राणियों का अमृत ही है ।

द्वादशः श्लोकः

कर्मण्यस्मिन्ननाश्वासे धूमधूम्रात्मनां भवान् ।
आपाययति गोविन्दपादपद्मासवं मधु ॥१२॥

पदच्छेद—

कर्मणि अस्मिन् अनाश्वासे, धूम धूम्र आत्मनाम् भवान् ।
आपाययति गोविन्द, पाद पद्म आसवम् मधु ॥

शब्दार्थ—

कर्मणि	४.	यज्ञ कर्म में	भवान् ।	१.	आप
अस्मिन्	३.	इस	आपाययति	१२.	पान करा रहे हैं
अनाश्वासे	२.	विश्वास-हीन	गोविन्द	८.	भगवान् श्रीकृष्ण के
धूम	५.	धूयें से	पाद पद्म	९.	चरण-कमल से
धूम्र	६.	धूमिल	आसवम्	१०.	टपके हुए
आत्मनाम्	७.	शरीर वाले (हम लोगों) को	मधु ॥	११.	मधुर मधु का

श्लोकार्थ—आप विश्वास-हीन इस यज्ञ कर्म में धूयें से धूमिल शरीर वाले हम लोगों को भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमल से टपके हुए मधुर मधु का पान करा रहे हैं ।

त्रयोदशः श्लोकः

तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
भगवत्सङ्गिसङ्गस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥१३॥

पदच्छेद—

तुलयाम लवेन अपि, न स्वर्गम् न अपुनर्भवम् ।
भगवत् सङ्गि सङ्गस्य, मर्त्यानाम् किमुत आशिषः ॥

शब्दार्थ—

तुलयाम	९.	तुलना कर सकते हैं (फिर)	भगवत्	१.	भगवद्
लवेन, अपि	४.	एक क्षण से, भी	सङ्गि	२.	भक्तों के
न	५.	न (तो)	सङ्गस्य	३.	सत्संग के
स्वर्गम्	६.	स्वर्ग की (और)	मर्त्यानाम्	१०.	मनुष्यों की
न	७.	नहीं	किमुत	१२.	बात ही क्या है
अपुनर्भवम् ।	८.	मोक्ष की	आशिषः ॥	११.	कामनाओं (से तुलना) की

श्लोकार्थ—भगवद् भक्तों के सत्संग के एक क्षण से भी न तो स्वर्ग की और न ही मोक्ष की तुलना कर सकते हैं, फिर मनुष्यों की कामनाओं से तुलना की बात ही क्या है ?

चतुर्दशः श्लोकः

को नाम तृप्येद् रसवित्कथायां, महत्तमैकान्तपरायणस्य ।
नान्तं गुणानामगुणस्य जग्मु-र्योगेश्वरा ये भवपाद्ममुख्याः ॥१४॥

पदच्छेद—

कः नाम तृप्येत् रसवित् कथायाम्, महत्तम एकान्त परायणस्य ।
न अन्तम् गुणानाम् अगुणस्य जग्मुः, योगेश्वराः ये भव पाद्म मुख्याः ॥

शब्दार्थ—

कः	१.	कौन	न अन्तम्	१५.	पार नहीं
नाम	३.	व्यक्ति	गुणानाम्	१४.	गुणों का
तृप्येत्	८.	तृप्त हो सकता है	अगुणस्य	१३.	निर्गुण भगवान् के
रसवित्	२.	रसिक	जग्मुः,	१६.	पा सके थे
कथायाम्,	७.	कथाओं से	योगेश्वराः	१२.	योगिराज (हैं वे भी)
महत्तम	४.	महापुरुषों के	ये	९.	जो
एकान्त	५.	एक मात्र	भव, पाद्म	१०.	शंकर, ब्रह्मा
परायणस्य ।	६.	आश्रय (भगवान् श्रीकृष्ण) की	मुख्याः ॥	११.	इत्यादि प्रमुख

श्लोकार्थ—कौन रसिक व्यक्ति महापुरुषों के एकमात्र आश्रय भगवान् श्रीकृष्ण की कथाओं से तृप्त हो सकता है ? जो शंकर, ब्रह्मा इत्यादि प्रमुख योगिराज हैं, वे भी निर्गुण भगवान् के गुणों का पार नहीं पा सके थे ।

पञ्चदशः श्लोकः

तन्नो भवान् वै भगवत्प्रधानो, महत्तमैकान्तपरायणस्य ।
हरेरुदारं चरितं विशुद्धं, शुश्रूषतां नो वितनोतु विद्वन् ॥१५॥

पदच्छेद— तत् नः भवान् वै भगवत् प्रधानः, महत्तम एकान्त परायणस्य ।
हरेः उदारम् चरितम् विशुद्धम्, शुश्रूषताम् नः वितनोतु विद्वन् ॥

शब्दार्थ—

तत्	७. इसलिये (आप ही)	हरेः	१२. श्रीहरि की
नः	२. हम लोगों में	उदारम्	१३. विशाल (एवं)
भवान्	३. आप	चरितम्,	१५. लीला-कथा
वै	४. ही	विशुद्धम्	१४. निर्मल
भगवत्	५. भगवान् को	शुश्रूषताम्	८. सुनने के इच्छुक
प्रधानः,	६. जीवन-धन (मानने वाले हैं)	नः	९. हम लोगों को
महत्तम	१०. महापुरुषों के	वितनोतु	१६. सुनावें
एकान्त, परायणस्य ।	११. एकमात्र, आश्रय	विद्वन् ॥	१. हे विद्वान् सूत जी !

श्लोकार्थ—हे विद्वान् सूत जी ! हम लोगों में आप ही भगवान् को जीवन-धन मानने वाले हैं, इसलिये आप ही सुनने के इच्छुक हमलोगों को महापुरुषों के एकमात्र आश्रय श्रीहरि ही विशाल एवं निर्मल लीला-कथा सुनावें ।

षोडशः श्लोकः

स वै महाभागवतः परीक्षिद्, येनापवर्गाख्यमदभ्रबुद्धिः ।
ज्ञानेन वैयासकिशब्दितेन, भेजे खगेन्द्रध्वजपादमूलम् ॥१६॥

पदच्छेद— सः वै महाभागवतः परीक्षित्, येन अपवर्ग आख्यम् अदभ्र बुद्धिः ।
ज्ञानेन वैयासकि शब्दितेन, भेजे खगेन्द्र ध्वज पाद मूलम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४. उस	ज्ञानेन	९. ज्ञान से
वै	२. और	वैयासकि	६. शुकदेव मुनि के द्वारा
महाभागवतः	१. परम भगवद् भक्त	शब्दितेन,	७. कहे गये
परीक्षित्,	५. राजा परीक्षित् ने	भेजे	१४. प्राप्त की थी (उसे हमें बतावें)
येन	८. जिस	खगेन्द्रध्वज	११. गरुडध्वज (भगवान् विष्णु) के
अपवर्ग, आख्यम्	१०. मोक्ष, स्वरूप	पाद	१२. चरणों की
अदभ्र, बुद्धिः ।	३. महान्, बुद्धिमान्	मूलम् ॥	१३. सन्निधि

श्लोकार्थ—परम भगवद् भक्त और महान् बुद्धिमान् उस राजा परीक्षित् ने शुकदेव मुनि के द्वारा कहे गये जिस ज्ञान से मोक्ष स्वरूप गरुडध्वज भगवान् विष्णु के चरणों की सन्निधि प्राप्त की थी, उसे हमें बतावें ।

सप्तदशः श्लोकः

तन्नः परं पुण्यमसंवृतार्थ-माख्यानमत्यद्भुतयोगनिष्ठम् ।
आख्याह्यनन्ताचरितोपपन्नं, पारीक्षितं भागवताभिरामम् ॥१७॥

पदच्छेद—

तत् नः परम् पुण्यम् असंवृत अर्थम् , आख्यानम् अति अद्भुत योग निष्ठम् ।
आख्याहि अनन्त आचरित उपपन्नम् , पारीक्षितम् भागवत अभिरामम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१४. वह		योग निष्ठम् ।	७. योग निष्ठा वाली
नः	१. हमें		आख्याहि	१६. सुनावें
परम्	२. परम		अनन्त	८. श्रीकृष्ण की
पुण्यम्	३. पवित्र		आचरित	९. लीलाओं से
असंवृत	४. स्पष्ट		उपपन्नम् ,	१०. परिपूर्ण (तथा)
अर्थम् ,	५. प्रयोजन वाली		पारीक्षितम्	१३. राजा परीक्षित् की
आख्यानम्	१५. कथा		भागवत	११. भगवद् भक्तों के लिये
अति अद्भुत	६. अति अनोखी		अभिरामम् ॥	१२. रमणीक

श्लोकार्थ—हमें परम पवित्र, स्पष्ट प्रयोजन वाली, अति अनोखी, योगनिष्ठा वाली, श्रीकृष्ण की लीलाओं से परिपूर्ण तथा भगवद् भक्तों के लिये रमणीक राजा परीक्षित् की वह कथा सुनावें ।

अष्टादशः श्लोकः

सूत उवाच—अहो वयं जन्मभृतोऽद्य हास्म, वृद्धानुवृत्त्यापि विलोमजाताः ।
दौष्कुल्यमाधिं विधुनोति शीघ्रं, महत्तमानामभिधानयोगः ॥१८॥

पदच्छेद—

अहो वयम् जन्म भृतः अद्य हास्म, वृद्ध अनुवृत्त्या अपि विलोम जाताः ।
दौष्कुल्यम् आधिम् विधुनोति शीघ्रम् , महत्तमानाम् अभिधान योगः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१. अरे		विलोम, जाताः ।	२. सूतकुल में उत्पन्न होकर
वयम्	६. हमारा		दौष्कुल्यम्	११. कुल के दोष की
जन्म भृतः	७. जन्म लेना		आधिम्	१२. चिन्ता को
अद्य	५. आज		विधुनोति	१४. नष्ट कर देता
हास्म,	८. सफल हुआ है		शीघ्रम् ,	१३. शीघ्र
वृद्ध, अनुवृत्त्या	४. महात्माओं की, सेवा से		महत्तमानाम्	९. महापुरुषों के
अपि	३. भी		अभिधान, योगः ॥	१०. नाम का, उच्चारण

श्लोकार्थ—अरे ! सूतकुल में उत्पन्न होकर भी महात्माओं की सेवा से आज हमारा जन्म लेना सफल हुआ है । महापुरुषों के नाम का उच्चारण कुल के दोष की चिन्ता को शीघ्र नष्ट कर देता है ।

एकोनविंशः श्लोकः

कुतः पुनर्गृणतो नाम तस्य, महत्तमैकान्तपरायणस्य।
योऽनन्तशक्तिर्भगवाननन्तो, महद्गुणत्वाद् यमनन्तमाहुः ॥१९॥

पदच्छेद— कुतः पुनः गृणतः नाम तस्य, महत्तम एकान्त परायणस्य।
यः अनन्त शक्तिः भगवान् अनन्तः, महद् गुणत्वात् यम् अनन्तम् आहुः ॥

शब्दार्थ—

कुतः	१९.	बात ही क्या है	यः	१.	जो
पुनः	१५.	फिर	अनन्त शक्तिः	४.	अनन्त पराक्रम वाले (हैं)
गृणतः	१४.	स्मरण करने वाले (जनों) की	भगवान्	२.	भगवान्
नाम	१३.	नाम का	अनन्तः	३.	श्रीकृष्ण
तस्य,	१२.	उन (भगवान्) के	महद् गुणत्वात्	६.	महान् गुणों के कारण
महत्तम	९.	सज्जनों के	यम्	५.	जिन्हें
एकान्त	१०.	एकमात्र	अनन्तम्	७.	अनन्त नाम से
परायणस्य।	११.	आश्रय (हैं)	आहुः ॥	८.	कहते हैं (तथा जो)

श्लोकार्थ— जो भगवान् श्रीकृष्ण अनन्त पराक्रम वाले हैं, जिन्हें महान् गुणों के कारण अनन्त नाम से कहते हैं तथा जो सज्जनों के एकमात्र आश्रय हैं; उन भगवान् के नाम का स्मरण करने वाले जनों की फिर बात ही क्या है ?

विंशः श्लोकः

एतावतालं ननु सूचितेन, गुणैरसाम्यानतिशायनस्य।
हित्वेतरान् प्रार्थयतो विभूति-र्यस्याङ्घ्रिरेणुं जुषतेऽनभीप्सोः ॥२०॥

पदच्छेद— एतावता अलम् ननु सूचितेन, गुणैः असाम्यान् अतिशायनस्य।
हित्वा इतरान् प्रार्थयतः विभूतिः, यस्य अङ्घ्रि रेणुम् जुषते अनभीप्सोः ॥

शब्दार्थ—

एतावता	१.	इतना	इतरान्	९.	अन्य (देवताओं) को
अलम्	४.	पर्याप्त (है कि)	प्रार्थयतः	८.	चाहने वाले
ननु	२.	ही	विभूतिः,	५.	श्री लक्ष्मी जी
सूचितेन,	३.	कहना	यस्य	१२.	उस
गुणैः	६.	उत्तम गुणों के कारण	अङ्घ्रि	१४.	चरणों की
असाम्यान्	७.	बेजोड़ (तथा)	रेणुम्	१५.	धूली से
अतिशायनस्य।	१३.	सर्व श्रेष्ठ (भगवान्) के	जुषते	१६.	प्रेम करती हैं
हित्वा	१०.	छोड़कर	अनभीप्सोः ॥	११.	न चाहने पर भी

श्लोकार्थ— इतना ही कहना पर्याप्त है कि श्रीलक्ष्मी जी उत्तम गुणों के कारण बेजोड़ तथा चाहने वाले अन्य देवताओं को छोड़कर न चाहने पर भी उस सर्व-श्रेष्ठ भगवान् के चरणों की धूली से प्रेम करती हैं।

एकविंशः श्लोकः

अथापि यत्पादनखावसृष्टं, जगद् विरिञ्चोपहृतार्हणाम्भः ।
सेशं पुनात्यन्यतमो मुकुन्दात्, को नाम लोके भगवत्पदार्थः ॥२१॥

पदच्छेद—

अथापि यत् पाद नख अवसृष्टम्, जगत् विरिञ्च उपहृत अर्हण अम्भः ।
स ईशम् पुनाति अन्यतमः मुकुन्दात्, कः नाम लोके भगवत् पद अर्थः ॥

शब्दार्थ—

अथापि	१. तथा	स ईशम्	८. शंकर सहित
यत्	५. जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) के	पुनाति	१०. पवित्र कर देता है (अत:)
पाद नख	६. चरण-नख से	अन्यतमः	१३. भिन्न
अवसृष्टम्,	७. बहने पर (गंगा नाम से)	मुकुन्दात्,	१२. भगवान् श्रीकृष्ण से
जगत्	९. संसार को	कः नाम	१४. कौन व्यक्ति
विरिञ्च	२. ब्रह्मा जी के द्वारा	लोके	११. संसार में
उपहृत	३. अर्पित	भगवत्	१५. भगवत्
अर्हण अम्भः ।	४. पूजा का जल	पद अर्थः ।	१६. शब्द का अर्थ (हो सकता है)

श्लोकार्थ—तथा ब्रह्मा जी के द्वारा अर्पित पूजा का जल जिस भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-नख से बहने पर गंगा नाम से शंकर सहित संसार को पवित्र कर देता है; अत: संसार में भगवान् श्रीकृष्ण से भिन्न कौन व्यक्ति भगवत् शब्द का अर्थ हो सकता है ?

द्वाविंशः श्लोकः

यत्रानुरक्ताः सहसैव धीरा, व्यपोह्य देहादिषु सङ्गमूढम् ।
व्रजन्ति तत्पारमहंस्यमन्त्यं, यस्मिन्नहिंसोपशमः स्वधर्मः ॥२२॥

पदच्छेद—

यत्र अनुरक्ताः सहसा एव धीराः, व्यपोह्य देह आदिषु सङ्ग मूढम् ।
व्रजन्ति तत् पारम हंस्यम् अन्त्यम्, यस्मिन् अहिंसा उपशमः स्व धर्मः ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१. जिस (भगवान् श्रीकृष्ण) के	व्रजन्ति	११. चले जाते हैं
अनुरक्ताः	२. अनुरागी	तत्	७. उस
सहसा एव	१०. एकाएक ही	पारमहंस्यम्	९. परमहंस आश्रम में
धीराः,	३. धीर जन	अन्त्यम्,	८. अन्तिम
व्यपोह्य	६. हटाकर	यस्मिन्	१२. जिसमें
देह आदिषु	४. शरीर आदि से	अहिंसा, उपशमः	१३. अहिंसा और, इन्द्रिय दमन
सङ्ग मूढम् ।	५. ममता और मोह	स्व धर्मः ॥	१४. परम धर्म (है)

श्लोकार्थ—जिस भगवान् श्रीकृष्ण के अनुरागी धीर जन शरीर आदि से ममता और मोह हटाकर उस अन्तिम परहंस आश्रम में एकाएक ही चले जाते हैं, जिसमें अहिंसा और इन्द्रिय-दमन परम धर्म है ।

त्रयोविंशः श्लोकः

अहं हि पृष्टोऽर्यमणो भवद्भि-राचक्ष आत्मावगमोऽत्र यावान् ।
नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्त्रिण-स्तथा समं विष्णुगतिं विपश्चितः ॥२३॥

पदच्छेद—

अहम् हि पृष्टः अर्यमणः भवद्भिः, आचक्षे आत्मन् अवगमः अत्र यावान् ।
नभः पतन्ति आत्मसमम् पतत्त्रिणः, तथा समम् विष्णु गतिम् विपश्चितः ॥

शब्दार्थ—

अहम् हि	३. मुझसे जो	नभः	९. आकाश में
पृष्टः	४. पूछा (है)	पतन्ति	१२. उड़ते हैं
अर्यमणः	१. तेजस्वी हे ऋषियों !	आत्म, समम्	११. अपनी शक्ति के, अनुसार
भवद्भिः,	२. आप लोगों ने	पतत्त्रिणः,	१०. पक्षिगण
आचक्षे	८. कह रहा हूँ	तथा	१३. उसी प्रकार
आत्मन्, अवगमः	६. अपने, ज्ञान के	समम्	१५. अपनी शक्ति के अनुसार
अत्र	५. इसमें	विष्णु गतिम्	१६. विष्णु की लीला का(वर्णन करते हैं)
यावान् ।	७. अनुसार	विपश्चितः ॥	१४. विद्वान् लोग

श्लोकार्थ—तेजस्वी हे ऋषियों ! आप लोगों ने मुझसे जो पूछा है, इसमें अपने ज्ञान के अनुसार कह रहा हूँ । आकाश में पक्षिगण अपनी शक्ति के अनुसार उड़ते हैं; उसी प्रकार प्रकार विद्वान् लोग अपनी शक्ति के अनुसार विष्णु की लीला का वर्णन करते हैं ।

चतुर्विंशः श्लोकः

एकदा धनुरुद्यम्य विचरन् मृगयां वने ।
मृगाननुगतः श्रान्तः क्षुधितस्तृषितो भृशम् ॥२४॥

पदच्छेद—

एकदा धनुः उद्यम्य, विचरन् मृगयाम् वने ।
मृगान् अनुगतः श्रान्तः, क्षुधितः तृषितः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१. एकबार (राजा परीक्षित्)	मृगान्	७. मृगों का
धनुः	४. धनुष	अनुगतः	८. पीछा करते-करते
उद्यम्य	५. चढ़ाकर	श्रान्तः	१२. थक गये थे
विचरन्	६. घूमते हुये	क्षुधितः	९. भूख और
मृगयाम्	३. शिकार के लिये	तृषितः	१०. प्यास से
वने ।	२. वन में	भृशम् ॥	११. बहुत

श्लोकार्थ—एकबार राजा परीक्षित् वन में शिकार के लिये धनुष चढ़ाकर घूमते हुए मृगों का पीछा करते-करते भूख और प्यास से बहुत थक गये थे ।

पञ्चविंशः श्लोकः

जलाशयमचक्षाणः प्रविवेश तमाश्रमम् ।
ददर्श मुनिमासीनं शान्तं मीलितलोचनम् ॥२५॥

पदच्छेद—

जलाशयम् अचक्षाणः, प्रविवेश तम् आश्रमम् ।
ददर्श मुनिम् आसीनम्, शान्तम् मीलित लोचनम् ॥

शब्दार्थ—

जलाशयम्	१.	(वहाँ) तालाब को	**मुनिम्**	१०.	एक मुनि को
अचक्षाणः	२.	न देखते हुए (उन्होंने)	**आसीनम्**	६.	आसन पर बैठे हुए (एवं)
प्रविवेश	५.	प्रवेश किया (जहाँ)	**शान्तम्**	९.	शान्त चित्त
तम्	३.	उस	**मीलित**	८.	बन्द किये हुये
आश्रमम् ।	४.	आश्रम में	**लोचनम् ॥**	७.	आँखों को
ददर्श	११.	देखा			

श्लोकार्थ—वहाँ तालाब को न देखते हुये उन्होंने उस आश्रम में प्रवेश किया, जहाँ आसन पर बैठे हुये एवं आँखों को बन्द किये हुये शान्त-चित्त एक मुनि को देखा ।

षड्विंशः श्लोकः

प्रतिरुद्धेन्द्रियप्राणमनोबुद्धिमुपारतम् ।
स्थानत्रयात्परं प्राप्तं ब्रह्मभूतमविक्रियम् ॥२६॥

पदच्छेद—

प्रतिरुद्ध इन्द्रिय प्राण, मनः बुद्धिम् उपारतम् ।
स्थान त्रयात् परम् प्राप्तम्, ब्रह्म भूतम् अविक्रियम् ॥

शब्दार्थ—

प्रतिरुद्ध	३.	विषयों से रोके हुये	**त्रयात्**	५.	(जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति) तीनों
इन्द्रिय, प्राण	१.	इन्द्रिय, प्राण	**परम्**	७.	ऊपर
मनः बुद्धिम्	२.	मन और बुद्धि को	**प्राप्तम्**	१०.	प्राप्त हुये (मुनि को देखा)
उपारतम् ।	४.	संसार से परे	**ब्रह्म भूतम्**	९.	ब्रह्मलीन दशा को
स्थान	६.	अवस्थाओं से	**अविक्रियम् ॥**	८.	निर्विकार (और)

श्लोकार्थ—इन्द्रिय, प्राण, मन और बुद्धि को विषयों से रोके हुये, संसार से परे, जाग्रत-स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से ऊपर, निर्विकार और ब्रह्मलीन दशा को प्राप्त हुये मुनि को उन्होंने देखा ।

सप्तविंशः श्लोकः

विप्रकीर्णजटाच्छन्नं रौरवेणाजिनेन च ।
विशुष्यत्तालुरुदकं तथाभूतमयाचत ॥२७॥

पदच्छेद—

विप्रकीर्ण जटा छन्नम्, रौरवेण अजिनेन च ।
विशुष्यत् तालुः उदकम्, तथाभूतम् अयाचत ॥

शब्दार्थ—

विप्रकीर्ण	३.	बिखरी	विशुष्यत्	१.	सूखते
जटा	४.	जटाओं से	तालुः	२.	कण्ठवाले (परीक्षित्) ने
छन्नम्	८.	ढके हुये (मुनि) से	उदकम्	१०.	जल की
रौरवेण	६.	काले मृग की	तथाभूतम्	९.	उस स्थिति में
अजिनेन	७.	छाल से	अयाचत ॥	११.	याचना की
च ।	५.	और			

श्लोकार्थं—सूखते कण्ठवाले परीक्षित् ने बिखरी जटाओं से और काले मृग की छाल से ढके हुये मुनि से उस स्थिति में जल की याचना की ।

अष्टाविंशः श्लोकः

अलब्धतृणभूम्यादिरसम्प्राप्तार्घ्यसूनृतः ।
अवज्ञातमिवात्मानं मन्यमानश्चुकोप ह ॥२८॥

पदच्छेद—

अलब्ध तृण भूमि आदिः, असम्प्राप्त अर्घ्य सूनृतः ।
अवज्ञातम् इव आत्मानम्, मन्यमानः चुकोप ह ॥

शब्दार्थ—

अलब्ध	३.	नहीं पाकर (तथा)	अवज्ञातम्	८.	अपमानित
तृण, भूमि	१.	आसन, स्थान	इव	९.	सा
आदिः	२.	इत्यादि	आत्मानम्	७.	अपने को
असम्प्राप्त	६.	अभाव में	मन्यमानः	१०.	मानते हुये
अर्घ्य	४.	सत्कार और	चुकोप	१२.	क्रुद्ध होगये
सूनृतः ।	५.	सुन्दर वचन के	ह ॥	११.	अत्यन्त

श्लोकार्थं—राजा परीक्षित् आसन, स्थान इत्यादि नहीं पाकर तथा सत्कार और सुन्दर वचन के अभाव में अपने को अपमानित-सा मानते हुए अत्यन्त क्रुद्ध हो गये ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अभूतपूर्वः सहसा क्षुत्तृड्भ्यामर्दितात्मनः ।
ब्राह्मणं प्रत्यभूद् ब्रह्मन् मत्सरो मन्युरेव च ॥२९॥

पदच्छेद—

अभूतपूर्वः सहसा, क्षुत् तृड्भ्याम् अर्दित आत्मनः ।
ब्राह्मणम् प्रति अभूत् ब्रह्मन् , मत्सरः मन्युः एव च ॥

शब्दार्थ—

अभूतपूर्वः	९.	बिल्कुल नया	प्रति	७.	प्रति
सहसा	८.	एकाएक	अभूत्	१४.	उत्पन्न हो गया
क्षुत्	२.	क्षुधा और	ब्रह्मन्	१.	हे शौनक जी !
तृड्भ्याम्	३.	प्यास से	मत्सरः	११.	ईर्ष्याभाव
अर्दित	४.	व्याकुल	मन्युः	१३.	क्रोध
आत्मनः ।	५.	चित्त (परीक्षित्) को	एव	१०.	ही
ब्राह्मणम्	६.	ब्राह्मण मुनि के	च ॥	१२.	और

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! क्षुधा और प्यास से व्याकुल-चित्त परीक्षित् को ब्राह्मण मुनि के प्रति एकाएक बिल्कुल नया ही ईर्ष्याभाव और क्रोध उत्पन्न हो गया ।

त्रिंशः श्लोकः

स तु ब्रह्मऋषेरंसे गतासुमुरगं रुषा ।
विनिर्गच्छन्धनुष्कोट्या निधाय पुरमागमत् ॥३०॥

पदच्छेद—

सः तु ब्रह्म ऋषेः अंसे, गत असुम् उरगम् रुषा ।
विनिर्गच्छन् धनुष् कोट्या, निधाय पुरम् आगमत् ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वे	रुषा ।	४.	क्रोध के कारण
तु	१.	तथा	विनिर्गच्छन्	३.	निकलते समय
ब्रह्म ऋषेः	५.	ब्रह्मर्षि (शमीक) के	धनुष्कोट्या	७.	धनुष की नोक से
अंसे	६.	कन्धे पर	निधाय	१०.	डालकर
गत असुम्	८.	मरे हुये	पुरम्	११.	नगर को
उरगम्	९.	सांप को	आगमत् ॥	१२.	लौट आये

श्लोकार्थ—तथा वे निकलते समय क्रोध के कारण ब्रह्मर्षि शमीक के कन्धे पर धनुष की नोक से मरे हुये सांप को डालकर नगर को लौट आये ।

एकत्रिंशः श्लोकः

एष किं निभृताशेषकरणो मीलितेक्षणः ।

मृषा समाधिराहोस्वित्किं नु स्यात् क्षत्रबन्धुभिः ॥३१॥

पदच्छेद—

एषः किम् निभृत अशेष, करणः मीलित ईक्षणः ।

मृषा समाधिः अहोस्वित् , किम् नु स्यात् क्षत्रबन्धुभिः ॥

शब्दार्थ—

एषः	२. ये (ऋषि)		मृषा	१२. झूठी
किम्	१. क्या		समाधिः	१३. समाधि
निभृत	५. विषयों से अलग करके		आहोस्वित्	८. अथवा
अशेष	३. सम्पूर्ण		किम्	१०. क्या प्रयोजन
करणः	४. इन्द्रियों को		नु	११. ऐसा सोचकर
मीलित	७. बन्द किये हैं		स्यात्	१४. लगाये हैं
ईक्षणः ।	६. नेत्रों को		क्षत्रबन्धुभिः ॥	९. क्षत्रिय राजाओं से

श्लोकार्थ—क्या ये ऋषि सम्पूर्ण इन्द्रियों को विषयों से अलग करके नेत्रों को बन्द किये हैं अथवा 'क्षत्रिय राजाओं से क्या प्रयोजन' ऐसा सोचकर झूठी समाधि लगाये हैं ?

द्वात्रिंशः श्लोकः

तस्य पुत्रोऽतितेजस्वी विहरन् बालकोऽर्भकैः ।

राज्ञाघं प्रापितं तातं श्रुत्वा तत्रेदमब्रवीत् ॥३२॥

पदच्छेद—

तस्य पुत्रः अति तेजस्वी, विहरन् बालकः अर्भकैः ।

राज्ञा अघम् प्रापितम् तातम्, श्रुत्वा तत्र इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उन (शमीक ऋषि) का	अघम्	१०. अपराध को
पुत्रः	४. पुत्र	प्रापितम्	९. किये गये
अतितेजस्वी	२. अत्यन्त तेजस्वी	तातम्	८. पिता के प्रति
विहरन्	६. खेलता हुआ	श्रुत्वा	११. सुनकर
बालकः	३. बालक	तत्र	१२. वहाँ
अर्भकैः ।	५. (अन्य) बालकों के साथ	इदम्	१३. यह
राज्ञा	७. राजा के द्वारा	अब्रवीत् ॥	१४. बोला

श्लोकार्थ—उन शमीक ऋषि का अत्यन्त तेजस्वी बालक पुत्र अन्य बालकों के साथ खेलता हुआ राजा के द्वारा पिता के प्रति किये गये अपराध को सुनकर वहाँ यह बोला ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अहो अधर्मः पालानां पीव्नां बलिभुजामिव ।
स्वामिन्यघं यद् दासानां द्वारपानां शुनामिव ॥३३॥

पदच्छेद—

अहो अधर्मः पालानाम्, पीव्नाम् बलि भुजाम् इव ।
स्वामिनि अघम् यद् दासानाम्, द्वारपानाम् शुनाम् इव ॥

शब्दार्थ—

अहो	१. अरे	**स्वामिनि**	१०. स्वामी के प्रति
अधर्मः	६. अन्याय	**अघम्**	१२. अपराध (है)
पालानाम्	५. राजाओं का (यह)	**यद्**	११. यह
पीव्नाम्	४. बलिष्ठ	**दासानाम्**	६. दासों का
बलिभुजाम्	२. कौओं के	**द्वारपानाम्**	८. दरवाजे की रक्षा करने वाले
इव ।	३. समान	**शुनाम् इव ॥**	७. कुत्तों के समान

श्लोकार्थ—अरे ! कौओं के समान बलिष्ठ राजाओं का यह अन्याय ! कुत्तों के समान दरवाजे की रक्षा करने वाले दासों का स्वामी के प्रति यह अपराध है ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

ब्राह्मणैः क्षत्रबन्धुर्हि द्वारपालो निरूपितः ।
स कथं तद्गृहे द्वाःस्थः सभाण्डं भोक्तुमर्हति ॥३४॥

पदच्छेद—

ब्राह्मणैः क्षत्रबन्धुः हि, द्वारपालः निरूपितः ।
सः कथम् तद् गृहे द्वाः स्थः, स भाण्डम् भोक्तुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणैः	१. ब्राह्मणों ने	**कथम्**	८. कैसे
क्षत्रबन्धुः	३. क्षत्रियों को	**तद् गृहे**	६. उस घर के
हि	२. ही	**द्वाः, स्थः**	६. दरवाजे पर, खड़ा हुआ
द्वारपालः	४. द्वार का रक्षक	**स भाण्डम्**	१०. पात्र में
निरूपितः ।	५. बनाया (है)	**भोक्तुम्**	११. खाने के
सः	७. वह	**अर्हति ॥**	१२. योग्य हो सकता है

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों ने ही क्षत्रियों को द्वार का रक्षक बनाया है । दरवाजे पर खड़ा हुआ वह कैसे उस घर के पात्र में खाने के योग्य हो सकता है ?

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कृष्णे गते भगवति शास्तर्युत्पथगामिनाम् ।
तद्भिन्नसेतूनद्याहं शास्मि पश्यत मे बलम् ॥३५॥

पदच्छेद—

कृष्णे गते भगवति, शास्तरि उत्पथ गामिनाम् ।
तद् भिन्न सेतून् अद्य अहम् , शास्मि पश्यत मे बलम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णे गते	५. श्रीकृष्ण के चले जाने पर	सेतून्	७. मर्यादा का
भगवति	४. भगवान्	अद्य	११. आज
शास्तरि	३. शासक	अहम्	९. मैं
उत्पथ	१. कुमार्ग	शास्मि	१०. दण्ड दे रहा हूँ
गामिनाम् ।	२. गामियों के	पश्यत	१४. (सब) देखें
तद्	६. उनकी	मे	१२. मेरे
भिन्न	८. उल्लङ्घन करने वालों को	बलम् ॥	१३. बल को

श्लोकार्थं—कुमार्ग गामियों के शासक भगवान् श्रीकृष्ण के चले जाने पर उनकी मर्यादा का उल्लङ्घन करने वालों को मैं दण्ड दे रहा हूँ । आज मेरे बल को सब देखें ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा रोषताम्राक्षो वयस्यानृषिबालकः ।
कौशिक्याप उपस्पृश्य वाग्वज्रं विससर्ज ह ॥३६॥

पदच्छेद—

इति उक्त्वा रोष ताम्र अक्षः, वयस्यान् ऋषि बालकः ।
कौशिकी आपः उपस्पृश्य, वाक् वज्रम् विससर्ज ह ॥

शब्दार्थ—

इति	५. ऐसा	कौशिकी	७. कौशिकी नदी के
उक्त्वा	६. कह कर (तथा)	आपः	८. जल से
रोष	१. क्रोध से	उपस्पृश्य	९. आचमन करके
ताम्र, अक्षः	२. लाल, आँखों वाले	वाक् वज्रम्	११. शाप
वयस्यान्	४. साथियों से	विससर्ज	१२. दे दिया
ऋषि बालकः ।	३. ऋषि कुमार ने	ह ॥	१०. (राजा को यह कठोर)

श्लोकार्थं—क्रोध से लाल आँखों वाले ऋषि कुमार ने साथियों से ऐसा कहकर तथा कौशिकी नदी के जल से आचमन करके राजा को यह कठोर शाप दे दिया ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

इति लङ्घितमर्यादं तक्षकः सप्तमेऽहनि ।
दङ्क्ष्यति स्म कुलाङ्गारं चोदितो मे ततद्रुहम् ॥३७॥

पदच्छेद—

इति लङ्घित मर्यादम्, तक्षकः सप्तमे अहनि ।
दङ्क्ष्यति स्म कुल अङ्गारम्, चोदितः मे तत द्रुहम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	दङ्क्ष्यति स्म	१२.	डस लेगा
लङ्घित	३.	तोड़ने वाले	कुल	५.	कुल
मर्यादम्	२.	मर्यादा	अङ्गारम्	६.	कलंक (परीक्षित्) को
तक्षकः	९.	तक्षक नाग	चोदितः	८.	प्रेरणा से
सप्तमे	१०.	सातवें	मे	७.	मेरी
अहनि ।	११.	दिन	तत, द्रुहम् ॥	४.	पिता के, अपराधी (और)

श्लोकार्थ—इस प्रकार मर्यादा तोड़ने वाले, पिता के अपराधी और कुल-कलंक परीक्षित् को मेरी प्रेरणा से तक्षक नाग सातवें दिन डस लेगा ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

ततोऽभ्येत्याश्रमं बालो गले सर्पकलेवरम् ।
पितरं वीक्ष्य दुःखार्तो मुक्तकण्ठो रुरोद ह ॥३८॥

पदच्छेद—

ततः अभ्येत्य आश्रमम् बालः, गले सर्प कलेवरम् ।
पितरम् वीक्ष्य दुःख आर्तः, मुक्त कण्ठः रुरोद ह ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	पितरम्	५.	पिता के
अभ्येत्य	४.	आकर (और)	वीक्ष्य	९.	देखकर
आश्रमम्	३.	आश्रम में	दुःख	१०.	कष्ट से
बालः	२.	बालक	आर्तः	११.	व्याकुल हुआ (तथा)
गले	६.	गले में	मुक्त कण्ठः	१२.	गला फाड़कर
सर्प	७.	(मृत) साँप के	रुरोद	१४.	रोने लगा
कलेवरम् ।	८.	शरीर को	ह ॥	१३.	जोर से

श्लोकार्थ—तदनन्तर बालक आश्रम में आकर और पिता के गले में मृत साँप के शरीर को देखकर कष्ट से व्याकुल हुआ तथा गला फाड़कर जोर से रोने लगा लगा ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

स वा आङ्गिरसो ब्रह्मन् श्रुत्वा सुतविलापनम् ।
उन्मील्य शनकैर्नेत्रे दृष्ट्वा स्वांसे मृतोरगम् ॥३९॥

पदच्छेद—

स: वा आङ्गिरस: ब्रह्मन्, श्रुत्वा सुत विलापनम् ।
उन्मील्य शनकै: नेत्रे, दृष्ट्वा स्व अंशे मृत उरगम् ॥

शब्दार्थ—

स:	३.	उन (शमीक ऋषि) ने	उन्मील्य	१०.	खोलकर
वा	७.	तथा	शनकै:	९.	धीरे से
आङ्गिरस:	२.	अङ्गिरा गोत्र के	नेत्रे	८.	नेत्रों को
ब्रह्मन्	१.	हे शौनक जी !	दृष्ट्वा	१४.	देखा
श्रुत्वा	६.	सुनकर	स्व अंशे	११.	अपने कन्धे पर
सुत	४.	पुत्र के	मृत	१२.	मरे हुये
विलापनम् ।	५.	विलाप को	उरगम् ॥	१३.	साँप को

श्लोकार्थ—हे शौनक जी ! अङ्गिरा गोत्र के उन शमीक ऋषि ने पुत्र के विलाप को सुनकर तथा नेत्रों को धीरे से खोलकर अपने कन्धे पर मरे हुए साँप को देखा ।

चत्वारिंशः श्लोकः

विसृज्य पुत्रं पप्रच्छ वत्स कस्माद्धि रोदिषि ।
केन वा तेऽपकृतमित्युक्तः स न्यवेदयत् ॥४०॥

पदच्छेद—

विसृज्य पुत्रम् पप्रच्छ, वत्स कस्मात् हि रोदिषि ।
केन वा ते अपकृतम्, इति उक्तः सः न्यवेदयत् ॥

शब्दार्थ—

विसृज्य	१.	(ऋषि ने साँप को) फेंक कर	केन	९.	किसने
पुत्रम्	२.	बालक पुत्र से	वा	८.	अथवा
पप्रच्छ	३.	पूछा	ते	१०.	तुम्हारा
वत्स	५.	हे वत्स ! (तुम)	अपकृतम्	११.	अपकार किया है
कस्मात्	६.	क्यों	इति उक्तः	१२.	ऐसा पूछने पर
हि	४.	कि	सः	१३.	उस (बालक) ने
रोदिषि ।	७.	रो रहे हो	न्यवेदयत् ॥	१४.	(सारी बातें) बताई

श्लोकार्थ—ऋषि ने साँप को फेंक कर बालक पुत्र से पूछा कि हे वत्स ! तुम क्यों रो रहे हो ? अथवा किसने तुम्हारा अपकार किया है ? ऐसा पूछने पर उस बालक ने सारी बातें बताई ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

निशम्य शप्तमतदर्हं नरेन्द्रं, स ब्राह्मणो नात्मजमभ्यनन्दत् ।
अहो बतांहो महदज्ञ ते कृत-मल्पीयसि द्रोह उरुर्दमो धृतः ॥४१॥

पदच्छेद—निशम्य शप्तम् अतदर्हम् नरेन्द्रम् , सः ब्राह्मणः न आत्मजम् अभ्यनन्दत् ।
अहो बत अंहः महत् अज्ञ ते कृतम् , अल्पीयसि द्रोहे उरुः दमः धृतः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	४. जानकर	बत	११. खेद है
शप्तम्	३. शाप दिया हुआ	अंहः	१४. अपराध
अतदर्हम्	१. शाप के अयोग्य	महत्	१३. बड़ा
नरेन्द्रम् ,	२. राजा को	अज्ञ	१०. मूर्ख !
सः, ब्राह्मणः	५. वे (शमीक), ब्राह्मण	ते	१२. तुमने
न	७. नहीं	कृतम् ,	१५. किया है (क्योंकि)
आत्मजम्	६. अपने पुत्र पर	अल्पीयसि, द्रोहे	१६. थोड़े से, अपराध के लिये
अभ्यनन्दत् ।	८. प्रसन्न हुये	उरुः, दमः	१७. बहुत अधिक, दण्ड
अहो	९. (और बोले) अरे	धृतः ॥	१८. दिया है

श्लोकार्थ—शाप के अयोग्य राजा को शाप दिया हुआ जानकर वे शमीक ब्राह्मण अपने पुत्र पर प्रसन्न नहीं हुये और बोले, अरे मूर्ख ! खेद है, तुमने बड़ा अपराध किया है । क्योंकि थोड़े से अपराध के लिये राजा को बहुत अधिक दण्ड दिया है ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

न वै नृभिर्नरदेवं पराख्यं, सम्मातुमर्हस्यविपक्वबुद्धे ।
यत्तेजसा दुर्विषहेण गुप्ता, विन्दन्ति भद्राण्यकुतोभयाः प्रजाः ॥४२॥

पदच्छेद— न वै नृभिः नरदेवम् पराख्यम् , सम्मातुम् अर्हसि अविपक्व बुद्धे ।
यत् तेजसा दुर्विषहेण गुप्ताः, विन्दन्ति भद्राणि अकुतोभयाः प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं	यत्	८. क्योंकि
वै	९. उनके	तेजसा	११. तेज से
नृभिः	४. मनुष्यों से	दुर्विषहेण	१०. असहनीय
नरदेवम्	३. राजाओं की	गुप्ताः,	१२. सुरक्षित
पराख्यम् ,	२. भगवत्स्वरूप	विन्दन्ति	१६. प्राप्त करते हैं
सम्मातुम्	५. तुलना	भद्राणि	१५. कल्याण
अर्हसि	७. की जा सकती है	अकुतोभयाः	१४. निर्भय होकर
अविपक्व, बुद्धे।	१. अरे कच्ची, बुद्धि वाले !	प्रजाः ॥	१३. प्रजा जन

श्लोकार्थ—अरे कच्ची बुद्धिवाले ! भगवत्स्वरूप राजाओं की मनुष्यों से तुलना नहीं की जा सकती है, क्योंकि उनके असहनीय तेज से सुरक्षित प्रजा जन निर्भय होकर कल्याण प्राप्त करते हैं ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

अलक्ष्यमाणे नरदेवनाम्नि, रथाङ्गपाणावयमङ्ग लोकः।
तदा हि चौरप्रचुरो विनङ्क्ष्यत्यरक्ष्यमाणोऽविवरूथवत् क्षणात् ॥४३॥

पदच्छेद—अलक्ष्यमाणे नरदेव नाम्नि, रथाङ्ग पाणौ अयम् अङ्ग लोकः।
तदा हि चौर प्रचुरः विनङ्क्ष्यति, अरक्ष्यमाणः अवि वरूथवत् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

अलक्ष्यमाणे	४.	नहीं दिखाई देने पर	तदा हि	५.	उस समय
नरदेव नाम्नि,	२.	राजा के रूप में	चौर प्रचुरः	८.	चोरों की अधिकता से
रथाङ्ग पाणौ	३.	चक्र सुदर्शनधारी के	विनङ्क्ष्यति,	१२.	विनष्ट हो जायेगा
अयम्	६.	यह	अरक्ष्यमाणः	९.	असुरक्षित
अङ्ग	१.	हे वत्स !	अवि वरूथवत्	१०.	भेड़ों के झुण्ड के समान
लोकः।	७.	संसार	क्षणात् ॥	११.	क्षण भर में

श्लोकार्थ—हे वत्स ! राजा के रूप में चक्र सुदर्शनधारी के नहीं दिखाई देने पर उस समय यह संसार चोरों की अधिकता से असुरक्षित भेड़ों के झुण्ड के समान क्षण भर में विनष्ट हो जायेगा।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तदद्य नः पापमुपैत्यनन्वयं, यन्नष्टनाथस्य वसोर्विलुम्पकात्।
परस्परं घ्नन्ति शपन्ति वृञ्जते, पशून् स्त्रियोऽर्थान् पुरुदस्यवो जनाः ॥४४॥

पदच्छेद—तद् अद्य नः पापम् उपैति अनन्वयम्, यत् नष्ट नाथस्य वसोः विलुम्पकात्।
परस्परम् घ्नन्ति शपन्ति वृञ्जते, पशून् स्त्रियः अर्थान् पुरु दस्यवः जनाः ॥

शब्दार्थ—

तद्, अद्य	१४.	इसलिये, आज	परस्परम्	७.	आपस में एक दूसरे को
नः	१६.	हमें	घ्नन्ति	८.	मारते हैं
पापम्	१७.	पाप	शपन्ति	९.	गाली देते हैं (तथा)
उपैति	१८.	लगेगा	वृञ्जते,	१३.	लूटते हैं
अनन्वयम्,	१५.	संबन्ध न होने पर (भी)	पशून्	१०.	पशुओं
यत्	१.	क्योंकि	स्त्रियः	११.	स्त्रियों (और)
नष्ट नाथस्य	२.	राज-विहीन (अराजक) देश के	अर्थान्	१२.	सम्पत्ति को
वसोः	३.	धन की	पुरु दस्यवः	५.	अधिकतर लुटेरे
विलुम्पकात्।	४.	लूट होने पर	जनाः ॥	६.	लोग

श्लोकार्थ—क्योंकि राज-विहीन अराजक देश के धन की लूट होने पर अधिकतर लुटेरे लोग आपस में एक दूसरे को मारते हैं, गाली देते हैं तथा पशुओं, स्त्रियों और सम्पत्ति को लूटते हैं; इसलिये आज संबन्ध न होने पर भी हमें पाप लगेगा।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तदाऽऽर्यधर्मश्च विलीयते नृणां, वर्णाश्रमाचारयुतस्त्रयीमयः।
ततोऽर्थकामाभिनिवेशितात्मनां, शुनां कपीनामिव वर्णसंकरः ॥४५॥

पदच्छेद— तदा आर्य धर्मः च विलीयते नृणाम्, वर्ण आश्रम आचार युतः त्रयीमयः।
ततः अर्थ काम अभिनिवेशित आत्मनाम्, शुनाम् कपीनाम् इव वर्ण संकरः॥

शब्दार्थ—

तदा	१. उस समय	ततः	८. उससे
आर्य धर्मः	५. सनातन धर्म	अर्थ काम	९. अर्थ एवं काम के
च	७. तथा	अभिनिवेशित	१०. आग्रही
विलीयते	६. नष्ट हो जाता है	आत्मनाम्,	११. लोगों में
नृणाम्,	२. मनुष्यों का	शुनाम् कपीनाम्	१२. कुत्तों (और) बन्दरों के
वर्ण आश्रम	३. वर्ण और आश्रम के	इव	१३. समान
आचारयुतः,त्रयीमयः।	४. आचार से युक्त, वैदिक	वर्ण संकर॥	१४. वर्ण संकरता (आ जाती है)

श्लोकार्थ—उस समय मनुष्यों का वर्ण और आश्रम के आचार से युक्त वैदिक सनातन धर्म नष्ट हो जाता है तथा उससे अर्थ एवं काम के आग्रही लोगों में कुत्तों और बन्दरों के समान वर्ण संकरता आ जाती है।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

धर्मपालो नरपतिः स तु सम्राड् बृहच्छ्रवाः।
साक्षान्महाभागवतो राजर्षिर्हयमेधयाट्।
क्षुत्तृट्श्रमयुतो दीनो नैवास्मच्छापमर्हति ॥४६॥

पदच्छेद— धर्म पालः नरपतिः, सः तु सम्राट् बृहत् श्रवाः।
साक्षात् महाभागवतः, राजर्षिः हयमेध याट्।
क्षुत् तृट् श्रम युतः दीनः, न एव अस्मत् शापम् अर्हति॥

शब्दार्थ—

धर्म पालः	१. धर्म के रक्षक	राजर्षिः	९. राजर्षि (और)
नरपतिः	३. राजा (परीक्षित्)	हयमेध याट्।	१०. अश्वमेध यज्ञ के कर्त्ता (हैं)
सः	२. वे	क्षुत् तृट्	११. भूख-प्यास और
तु	४. तो	श्रम युतः	१२. थकान से युक्त होने के कारण
सम्राट	५. चक्रवर्ती राजा	दीनः,	१३. दया के पात्र (वे)
बृहत् श्रवाः।	६. बड़े यशस्वी	न एव	१५. नहीं
साक्षात्	७. परम	अस्मत्, शापम्	१४. हमारे, शाप के
महाभागवतः	८. भगवद् भक्त	अर्हति॥	१६. योग्य हैं

श्लोकार्थ—धर्म के रक्षक वे राजा परीक्षित् तो चक्रवर्ती राजा, बड़े यशस्वी, परम भगवद् भक्त, राजर्षि और अश्वमेध यज्ञ के कर्त्ता हैं। भूख-प्यास और थकान से युक्त होने के कारण दया के पात्र वे हमारे शाप के योग्य नहीं हैं।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अपापेषु स्वकृत्येषु बालेनापक्वबुद्धिना ।
पापं कृतं तद् भगवान् सर्वात्मा क्षन्तुमर्हति ॥४७॥

पदच्छेद—

अपापेषु स्व कृत्येषु, बालेन अपक्व बुद्धिना ।
पापम् कृतम् तद् भगवान्, सर्वात्मा क्षन्तुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

अपापेषु	५.	पाप-रहित (राजा परीक्षित्) के प्रति	कृतम्	७.	किया है
स्व	३.	अपने	तद्	१०.	उसे
कृत्येषु	४.	कार्य से	भगवान्	९.	भगवान्
बालेन	२.	बालक ने	सर्वात्मा	८.	अन्तर्यामी
अपक्व बुद्धिना ।	१.	नासमझ	क्षन्तुम्	११.	क्षमा
पापम्	६.	(जो) अपराध	अर्हति ॥	१२.	करें

श्लोकार्थ—नासमझ बालक ने अपने कार्य से पाप-रहित राजा परीक्षित् के प्रति जो अपराध किया है; अन्तर्यामी भगवान् उसे क्षमा करें ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

तिरस्कृता विप्रलब्धाः शप्ताः क्षिप्ता हता अपि ।
नास्य तत् प्रतिकुर्वन्ति तद्भक्ताः प्रभवोऽपि हि ॥४८॥

पदच्छेद—

तिरस्कृताः विप्रलब्धाः, शप्ताः क्षिप्ताः हताः अपि ।
न अस्य तत् प्रतिकुर्वन्ति, तद् भक्ताः प्रभवः अपि हि ॥

शब्दार्थं—

तिरस्कृताः	२.	अपमान	अस्य	११.	इसका
विप्रलब्धाः	३.	ठगी	तत्	१२.	उस प्रकार से
शप्ताः	४.	गाली	प्रतिकुर्वन्ति	१४.	बदला लेते हैं
क्षिप्ताः	५.	फटकार और	तद् भक्ताः	१.	भगवद् भक्त
हताः	६.	मार खाने पर	प्रभवः	९.	समर्थ होते हुये
अपि ।	७.	भी	अपि	१०.	भी
न	१३.	नहीं	हि ॥	८.	तथा

श्लोकार्थ—भगवद् भक्त अपमान, ठगी, गाली, फटकार और मार खाने पर भी तथा समर्थ होते हुये भी इसका उस प्रकार से बदला नहीं लेते हैं ।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

इति पुत्रकृताघेन सोऽनुतप्तो महामुनिः ।
स्वयं विप्रकृतो राज्ञा नैवाघं तदचिन्तयत् ॥४९॥

पदच्छेद—

इति पुत्र कृत अघेन, सः अनुतप्तः महामुनिः ।
स्वयम् विप्रकृतः राज्ञा, न एव अघम् तद् अचिन्तयत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	विप्रकृतः	९.	अपमानित होकर
पुत्र कृत	२.	पुत्र के द्वारा किये गये	राज्ञा	८.	राजा से
अघेन	३.	अपराध के कारण	न	१३.	नहीं
सः	६.	शमीक ने	एव	१०.	भी (राजा के)
अनुतप्तः	४.	पश्चात्ताप करते हुये	अघम्	१२.	अपराध पर
महामुनिः ।	५.	महर्षि	तद्	११.	उस
स्वयम्	७.	स्वयम्	अचिन्तयत् ॥	१४.	विचार किया

श्लोकार्थ—इस प्रकार पुत्र के द्वारा किये गये अपराध के कारण पाश्चात्ताप करते हुये महर्षि शमीक ने स्वयम् राजा से अपमानित होकर भी राजा के उस अपराध पर विचार नहीं किया ।

पञ्चाशः श्लोकः

प्रायशः साधवो लोके परैर्द्वन्द्वेषु योजिताः ।
न व्यथन्ति न हृष्यन्ति यत आत्माऽगुणाश्रयः ॥५०॥

पदच्छेद—

प्रायशः साधवः लोके, परैः द्वन्द्वेषु योजिताः ।
न व्यथन्ति न हृष्यन्ति, यतः आत्मा अगुण आश्रयः ॥

शब्दार्थ—

प्रायशः	२.	प्रायः	न व्यथन्ति	७.	(उससे) न दुःखी होते हैं
साधवः	३.	साधु लोग	न हृष्यन्ति	८.	(और) न प्रसन्न होते हैं
लोके	१.	संसार में	यतः	९.	क्योंकि (उनकी)
परैः	४.	असज्जनों के द्वारा	आत्मा	१०.	आत्मा
द्वन्द्वेषु	५.	कलह में	अगुण	११.	गुणातीत ब्रह्म पर
योजिताः ।	६.	डाल दिये जाते हैं (किन्तु वे)	आश्रयः ॥	१२.	निर्भर (रहती है)

श्लोकार्थ—संसार में प्रायः साधु लोग असज्जनों के द्वारा कलह में डाल दिये जाते हैं; किन्तु वे उससे न दुःखी होते हैं और न प्रसन्न होते हैं; क्योंकि उनकी आत्मा गुणातीत ब्रह्म पर निर्भर रहती है ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे
विप्रशापोपलम्भनं नाम अष्टादशः अध्यायः ॥१८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
प्रथमः स्कन्धः
अथ एकोनविंशः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

सूत उवाच—महीपतिस्त्वथ तत्कर्म गर्ह्यं, विचिन्तयन्नात्मकृतं सुदुर्मनाः ।
अहो मया नीचमनार्यवत्कृतं, निरागसि ब्रह्मणि गूढतेजसि ॥१॥

पदच्छेद— महीपतिः तु अथ तत् कर्म गर्ह्यम्, विचिन्तयन् आत्म कृतम् सुदुर्मनाः ।
अहो मया नीचम् अनार्यवत् कृतम्, निरागसि ब्रह्मणि गूढ तेजसि ॥

शब्दार्थ—

महीपतिः	३.	राजा परीक्षित्	कृतम्	५.	किये गये
तु	१०.	कि	सुदुर्मनाः ।	२.	उदास हुये
अथ	१.	तदनन्तर	अहो, मया	११.	अरे, मैंने
तत्	६.	उस	नीचम्, अनार्यवत्	१५.	नीच, दुष्टों के समान
कर्म	८.	कर्म पर	कृतम्	१६.	व्यवहार किया गया है
गर्ह्यम्	७.	निन्दित	निरागसि	१२.	निरपराध (एवं)
विचिन्तयन्	९.	विचार करने लगे	ब्रह्मणि	१४.	ब्राह्मण के साथ
आत्म	४.	अपने द्वारा	गूढ, तेजसि ॥	१३.	छिपे हुये, तेज वाले

श्लोकार्थ—तदनन्तर उदास हुये राजा परीक्षित् अपने द्वारा किये गये उस निन्दित कर्म पर विचार करने लगे कि अरे ! मैंने निरपराध एवम् छिपे हुये तेज वाले ब्राह्मण के साथ नीच दुष्टों के समान व्यवहार किया है ।

द्वितीयः श्लोकः

ध्रुवं ततो मे कृतदेवहेलनाद्, दुरत्ययं व्यसनं नातिदीर्घात् ।
तदस्तु कामं त्वघनिष्कृताय मे, यथा न कुर्यां पुनरेवमद्धा ॥२॥

पदच्छेद— ध्रुवम् ततः मे कृत देव हेलनात्, दुरत्ययम् व्यसनम् नातिदीर्घात् ।
तत् अस्तु कामम् तु अघ निष्कृताय मे, यथा न कुर्याम् पुनः एवम् अद्धा ॥

शब्दार्थ—

ध्रुवम्	४.	अवश्य	कामम्	११.	उचित
ततः, मे	३.	फलस्वरूप, मेरे ऊपर	तु	१३.	कि
कृत	२.	किये जाने के	अघ, निष्कृताय	१०.	पाप के प्रायश्चित्त के लिये
देव, हेलनात्	१.	ऋषि का, अपमान	मे,	९.	मेरे
दुरत्ययम्	६.	घोर	यथा	१४.	जिससे
व्यसनम्	७.	विपत्ति (आवे)	न, कुर्याम्	१८.	नहीं, कर सकूँ
नातिदीर्घात् ।	५.	अतिशीघ्र	पुनः	१५.	फिर कभी
तत्	८.	वह (विपदा)	एवम्	१६.	इस प्रकार का (कार्य)
अस्तु	१२.	होगी	अद्धा ॥	१७.	वास्तव में

श्लोकार्थ—ऋषि का अपमान किये जाने के फलस्वरूप मेरे ऊपर अवश्य अति शीघ्र घोर विपत्ति आवे । वह विपदा मेरे पाप के प्रायश्चित्त के लिये उचित होगी कि जिससे फिर कभी इस प्रकार का कार्य वास्तव में नहीं कर सकूँ ।

तृतीयः श्लोकः

अद्यैव राज्यं बलमृद्धकोशं, प्रकोपितब्रह्मकुलानलो मे।
दहत्वभद्रस्य पुनर्न मेऽभूत्, पापीयसी धीर्द्विजदेवगोभ्यः ॥३॥

पदच्छेद— **अद्य एव राज्यम् बलम् ऋद्ध कोशम्, प्रकोपित ब्रह्म कुल अनलः मे।**
दहतु अभद्रस्य पुनः न मे अभूत्, पापीयसी धीः द्विज देव गोभ्यः॥

शब्दार्थ—

अद्य एव	४.	आज ही	**दहतु**	१०.	भस्म कर दे (ताकि)
राज्यम्	६.	राज्य	**अभद्रस्य**	१२.	अमंगलकारी की
बलम्	७.	सेना (और)	**पुनः**	१६.	फिर कभी
ऋद्ध	८.	परिपूर्ण	**न**	१७.	न
कोशम्,	९.	खजाने को	**मे**	११.	मुझ
प्रकोपित	१.	क्रोधित	**अभूत्,**	१८.	हो सके
ब्रह्म कुल	२.	ब्राह्मण कुल की	**पापीयसी, धीः**	१५.	पाप की, भावना
अनलः	३.	अग्नि	**द्विज, देव**	१३.	ब्राह्मण, देवता (तथा)
मे।	५.	मेरे	**गोभ्यः॥**	१४.	गऊ के प्रति

श्लोकार्थ—क्रोधित ब्राह्मण कुल की अग्नि आज ही मेरे राज्य, सेना और परिपूर्ण खजाने को भस्म कर दे, ताकि मुझ अमंगलकारी की ब्राह्मण, देवता तथा गऊ के प्रति पाप की भावना फिर कभी न हो सके।

चतुर्थः श्लोकः

स चिन्तयन्नित्थमथाशृणोद् यथा, मुनेः सुतोक्तो निर्ऋतिस्तक्षकाख्यः।
स साधु मेने नचिरेण तक्षका-नलं प्रसक्तस्य विरक्तिकारणम् ॥४॥

पदच्छेद— **सः चिन्तयन् इत्थम् अथ अशृणोत् यथा, मुनेः सुत उक्तः निर्ऋतिः तक्षक आख्यः।**
सः साधु मेने नचिरेण तक्षक, अनलम् प्रसक्तस्य विरक्ति कारणम्॥

शब्दार्थ—

सः	३.	उन (राजा परीक्षित्) ने	**सः**	९.	उन्होंने
चिन्तयन्	२.	पश्चात्ताप करते हुये	**साधु**	१४.	उत्तम
इत्थम्	१.	इस प्रकार से	**मेने**	१६.	माना था
अथ	४.	कुछ क्षण बाद	**नचिरेण**	१३.	तत्काल
अशृणोत्, यथा	५.	सुना, कि	**तक्षक, अनलम्**	१०.	तक्षक की आग को
मुनेः सुत, उक्तः	६.	ऋषि के पुत्र से, प्रेरित	**प्रसक्तस्य**	११.	आसक्ति में फंसे हुये (स्वयं के)
निर्ऋतिः	८.	सर्प (उन्हें डस लेगा)	**विरक्ति**	१२.	वैराग्य का
तक्षक, आख्यः।	७.	तक्षक, नाम का	**कारणम्॥**	१५.	साधन

श्लोकार्थ—इस प्रकार से पश्चात्ताप करते हुये उन राजा परीक्षित् ने कुछ क्षण बाद सुना कि ऋषि के पुत्र से प्रेरित तक्षक नाम का सर्प उन्हें डस लेगा। उन्होंने तक्षक की आग को आसक्ति में फंसे हुये स्वयं के वैराग्य का तत्काल उत्तम साधन माना था।

पञ्चमः श्लोकः

अथो विहायेममुं च लोकं, विमर्शितो हेयतया पुरस्तात् ।
कृष्णाङ्घ्रिसेवामधिमन्यमान, उपाविशत् प्रायममर्त्यनद्याम् ॥५॥

पदच्छेद-- **अथो विहाय इमम् अमुम् च लोकम् , विमर्शितः हेयतया पुरस्तात् ।**
कृष्ण अङ्घ्रि सेवाम् अधिमन्यमानः, उपाविशत् प्रायम् अमर्त्य नद्याम् ॥

शब्दार्थ--

अथो	१. तदनन्तर (राजा परीक्षित्)	**कृष्ण**	१०. भगवान् श्रीकृष्ण के
विहाय	९. छोड़कर	**अङ्घ्रि**	११. चरणों की
इमम्	५. इस लोक के	**सेवाम्**	१२. सेवा को
अमुम्	७. परलोक के	**अधिमन्यमानः,**	१३. सर्वोपरि मानते हुए
च	६. और	**उपाविशत्**	१७. बैठ गये
लोकम्,	८. विषय भोगों को	**प्रायम्**	१६. आमरण अनशन में
विमर्शितः	४. माने हुये	**अमर्त्य**	१४. देव
हेयतया	३. त्याज्य रूप में	**नद्याम् ।**	१५. नदी गंगा के तट पर
पुरस्तात् ।	२. पहले से ही		

श्लोकार्थ--तदनन्तर राजा परीक्षित् पहले से ही त्याज्य रूप में माने हुये इस लोक के और परलोक के विषय भोगों को छोड़कर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की सेवा को सर्वोपरि मानते हुये देव नदी गंगा के तट पर आमरण अनशन में बैठ गये ।

षष्ठः श्लोकः

या वै लसच्छ्रीतुलसीविमिश्र-कृष्णाङ्घ्रिरेण्वभ्यधिकाम्बुनेत्री ।
पुनाति लोकानुभयत्र सेशान्, कस्तां न सेवेत मरिष्यमाणः ॥६॥

पदच्छेद-- **या वै लसत् श्री तुलसी विमिश्र-कृष्ण अङ्घ्रि रेणु अभ्यधिक अम्बुनेत्री ।**
पुनाति लोकान् उभयत्र स ईशान्, कः ताम् न सेवेत मरिष्यमाणः ॥

शब्दार्थ--

या वै	८. जो (देव नदी गंगा)	**पुनाति**	१२. पवित्र करती है
लसत्	२. सुशोभित	**लोकान्**	११. लोकों को
श्री तुलसी	१. श्री तुलसी से	**उभयत्र**	१०. ऊपर और नीचे के
विमिश्र,	५. मिश्रित (अतः)	**स ईशान् ,**	९. लोकपालों सहित
कृष्ण	३. भगवान् श्रीकृष्ण के	**कः**	१४. भला (कौन)
अङ्घ्रि, रेणु	४. चरणों की, धूली से	**ताम्**	१३. उस (गंगा) का
अभ्यधिक	६. अत्यधिक पवित्र	**न, सेवेत**	१६. नहीं, सेवन करना चाहेगा
अम्बुनेत्री ।	७. जल बहाने वाली	**मरिष्यमाणः ॥**	१५. मरणासन्न (व्यक्ति)

श्लोकार्थ--श्री तुलसी से सुशोभित भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की धूली से मिश्रित अतः अत्यधिक पवित्र जल बहाने वाली जो देव नदी गंगा लोकपालों सहित ऊपर और नीचे के लोकों को पवित्र करती है; उस गंगा का भला कौन मरणासन्न व्यक्ति सेवन करना नहीं चाहेगा ?

सप्तमः श्लोकः

इति व्यवच्छिद्य स पाण्डवेयः, प्रायोपवेशं प्रति विष्णुपद्याम् ।
दध्यौ मुकुन्दाङ्घ्रिमनन्यभावो, मुनिव्रतो मुक्तसमस्तसङ्गः ॥७॥

पदच्छेद— इति व्यवच्छिद्य सः पाण्डवेयः, प्रायोपवेशम् प्रति विष्णु पद्याम् ।
दध्यौ मुकुन्द अङ्घ्रिम् अनन्यभावः, मुनि व्रतः मुक्त समस्त सङ्गः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	दध्यौ	१४.	ध्यान किया
व्यवच्छिद्य	५.	निश्चय करके	मुकुन्द	११.	भगवान् श्रीकृष्ण के
सः	१०.	उस (राजा परीक्षित्) ने	अङ्घ्रिम्	१२.	चरणों का
पाण्डवेयः,	६.	पाण्डुवंशी	अनन्यभावः,	१३.	अनन्य भाव से
प्रायोपवेशम्	३.	आमरण अनशन	मुनि व्रतः	९.	मुनियों के समान व्रती (एवं)
प्रति	४.	का	मुक्त	८.	रहित
विष्णु पद्याम् ।	२.	विष्णुपदी (गंगा के) तट पर	समस्त सङ्गः ॥	७.	सभी कामनाओं से

श्लोकार्थ—इस प्रकार विष्णुपदी गंगा के तट पर आमरण अनशन का निश्चय करके, मुनियों के समान व्रती एवम् सभी कामनाओं से रहित पाण्डुवंशी उस राजा परीक्षित् ने भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों का अनन्य भाव से ध्यान किया ।

अष्टमः श्लोकः

तत्रोपजग्मुर्भुवनं पुनाना, महानुभावा मुनयः सशिष्याः ।
प्रायेण तीर्थाभिगमापदेशैः, स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः ॥८॥

पदच्छेद— तत्र उपजग्मुः भुवनम् पुनानाः, महानुभावाः मुनयः स शिष्याः ।
प्रायेण तीर्थ अभिगम अपदेशैः, स्वयम् हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	६.	वहाँ पर	तीर्थ	१०.	तीर्थ
उपजग्मुः	७.	पधारे	अभिगम	११.	यात्रा के
भुवनम्	१.	संसार को	अपदेशैः,	१२.	बहाने से
पुनानाः,	२.	पवित्र करने वाले	स्वयम्	१३.	स्वयम्
महानुभावाः	३.	महानुभाव	हि	१५.	ही
मुनयः	४.	मुनिगण	तीर्थानि	१४.	तीर्थों को
स शिष्याः ।	५.	शिष्यों के साथ	पुनन्ति	१६.	पवित्र करते हैं
प्रायेण	८.	प्रायः	सन्तः ॥	९.	सन्त जन

श्लोकार्थ—संसार को पवित्र करने वाले महानुभाव मुनिगण शिष्यों के साथ वहाँ पर पधारे । प्रायः सन्तजन तीर्थ यात्रा के बहाने से स्वयम् तीर्थों को ही पवित्र करते हैं ।

नवमः श्लोकः

अत्रिर्वसिष्ठश्च्यवनः शरद्वा-नरिष्टनेमिर्भृगुरङ्गिराश्च ।
पराशरो गाधिसुतोऽथ राम, उतथ्य इन्द्रप्रमदेध्मवाहौ ॥९॥

पदच्छेद—

अत्रिः वसिष्ठः च्यवनः शरद्वान्, अरिष्टनेमिः भृगुः अङ्गिराः च ।
पराशरः गाधिसुतः अथ रामः, उतथ्यः इन्द्रप्रमद इध्मवाहौ ॥

शब्दार्थ—

अत्रिः	१. अत्रि	पराशरः	९. पराशर
वसिष्ठः	२. वसिष्ठ	गाधिसुतः	१०. विश्वामित्र
च्यवनः	३. च्यवन	अथ	११. तथा
शरद्वान्,	४. शरद्वान्	रामः,	१२. परशुराम
अरिष्टनेमिः	५. अरिष्टनेमि	उतथ्यः	१३. उतथ्य
भृगुः	६. भृगु	इन्द्रप्रमद	१४. इन्द्रप्रमद (एवं)
अङ्गिराः	७. अङ्गिरा	इध्मवाहौ ॥	१५. इध्मवाह ऋषि (वहाँ पर आये)
च ।	८. और		

श्लोकार्थ—अत्रि, वसिष्ठ, च्यवन, शरद्वान्, अरिष्टनेमि, भृगु, अङ्गिरा और पराशर, विश्वामित्र तथा परशुराम, उतथ्य, इन्द्रप्रमद एवं इध्मवाह ऋषि वहाँ पर आये ।

दशमः श्लोकः

मेधातिथिर्देवल आर्ष्टिषेणो, भारद्वाजो गौतमः पिप्पलादः ।
मैत्रेय और्वः कवषः कुम्भयोनि-र्द्वैपायनो भगवान्नारदश्च ॥१०॥

पदच्छेद—

मेधातिथिः देवलः आर्ष्टिषेणः, भारद्वाजः गौतमः पिप्पलादः ।
मैत्रेयः और्वः कवषः कुम्भयोनिः, द्वैपायनः भगवान् नारदः च ॥

शब्दार्थ—

मेधातिथिः	१. मेधातिथि	और्वः	८. और्व
देवलः	२. देवल	कवषः	९. कवष
आर्ष्टिषेणः,	३. आर्ष्टिषेण	कुम्भयोनिः,	१०. कुम्भयोनि (अगस्त्य)
भारद्वाजः	४. भारद्वाज	द्वैपायनः	१२. वेदव्यास
गौतमः	५. गौतम	भगवान्	११. भगवान्
पिप्पलादः ।	६. पिप्पलाद	नारदः	१४. देवर्षि नारद जी (भी आये)
मैत्रेयः	७. मैत्रेय	च ॥	१३. तथा

श्लोकार्थ—मेधातिथि, देवल, आर्ष्टिषेण, भारद्वाज, गौतम, पिप्पलाद, मैत्रेय, और्व, कवष अगस्त्य, भगवान् वेदव्यास तथा देवर्षि नारद जी भी आये ।

एकादशः श्लोकः

अन्ये च देवर्षिब्रह्मर्षिवर्या, राजर्षिवर्या अरुणादयश्च।
नानार्षेयप्रवरान् समेता-नभ्यर्च्य राजा शिरसा ववन्दे ॥११॥

पदच्छेद— अन्ये च देवर्षि ब्रह्मर्षि वर्याः, राजर्षि वर्याः अरुण आदयः च।
नाना आर्षेय प्रवरान् समेतान्, अभ्यर्च्य राजा शिरसा ववन्दे ॥

शब्दार्थ—

अन्ये	१. दूसरे	नाना	१२. अनेक
च	५. तथा	आर्षेय	१३. गोत्रों (और)
देवर्षि	३. देवर्षि	प्रवरान्	१४. प्रवरों वाले (ऋषियों) की
ब्रह्मर्षि	४. ब्रह्मर्षि	समेतान्,	११. पधारे हुये
वर्याः,	२. श्रेष्ठ	अभ्यर्च्य	१५. पूजा करके (उन्हें)
राजर्षि वर्याः	८. राजर्षि गण (वहाँ पधारे)	राजा	१०. राजा परीक्षित् ने
अरुण	६. अरुण	शिरसा	१६. शिर से
आदयः	७. इत्यादि	ववन्दे ॥	१७. प्रणाम किया
च।	९. तदनन्तर		

श्लोकार्थ—दूसरे श्रेष्ठ देवर्षि, ब्रह्मर्षि तथा अरुण इत्यादि राजर्षिगण वहाँ पधारे। तदनन्तर राजा परीक्षित् ने पधारे हुये अनेक गोत्रों और प्रवरों वाले ऋषियों की पूजा करके उन्हें शिर से प्रणाम किया।

द्वादशः श्लोकः

सुखोपविष्टेष्वथ तेषु भूयः, कृतप्रणामः स्वचिकीर्षितं यत्।
विज्ञापयामास विविक्तचेता, उपस्थितोऽग्रेऽभिगृहीतपाणिः ॥१२॥

पदच्छेद— सुख उपविष्टेषु अथ तेषु भूयः, कृत प्रणामः स्वचिकीर्षितम् यत्।
विज्ञापयामास विविक्त चेताः, उपस्थितः अग्रे अभिगृहीत पाणिः ॥

शब्दार्थ—

सुख	३. सुखपूर्वक	यत्।	१३. उस
उपविष्टेषु	४. बैठ जाने पर	विज्ञापयामास	१५. सुनाया
अथ	१. तदनन्तर	विविक्त चेताः,	८. शुद्ध मन से
तेषु	२. उन (ऋषियों) के	उपस्थितः	१०. खड़े होकर (और)
भूयः,	५. फिर से	अग्रे	९. सामने
कृत	७. करके (राजा परीक्षित् ने)	अभिगृहीत	१२. जोड़ कर
प्रणामः	६. प्रणाम	पाणिः ॥	११. हाथ
स्वचिकीर्षितम्	१४. अपनी कर्त्तव्य इच्छा को		

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन ऋषियों के सुखपूर्वक बैठ जाने पर फिर से प्रणाम करके राजा परीक्षित् ने शुद्ध मन से सामने खड़े होकर और हाथ जोड़ कर उस अपनी कर्त्तव्य इच्छा को सुनाया।

त्रयोदशः श्लोकः

राजोवाच--अहो वयं धन्यतमा नृपाणां, महत्तमानुग्रहणीयशीलाः ।
राज्ञां कुलं ब्राह्मणपादशौचाद्, दूराद् विसृष्टं बत गर्ह्यकर्म ॥१३॥

पदच्छेद— अहो वयम् धन्यतमाः नृपाणाम्, महत्तम अनुग्रहणीय शीलाः ।
राज्ञाम् कुलम् ब्राह्मण पाद शौचात्, दूरात् विसृष्टम् बत गर्ह्यं कर्म ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहो !	कुलम्	१२.	वंश (अब)
वयम्	३.	हम	ब्राह्मण पाद	१३.	ब्राह्मणों के चरणों के
धन्यतमाः	४.	अतिधन्य (हैं)	शौचात्,	१४.	धोवन से
नृपाणाम्,	२.	राजाओं में	दूरात्	१५.	दूर
महत्तम	६.	महापुरुषों के	विसृष्टम्	१६.	पड़ गया (है)
अनुग्रहणीय	७.	कृपापात्र (हो गये हैं)	बत	८.	बड़े खेद की बात है
शीलाः ।	५.	(क्योंकि) अपने स्वभाव से	गर्ह्यं	९.	निन्दनीय
राज्ञाम्	११.	राजाओं का	कर्म ॥	१०.	कार्यों के कारण

श्लोकार्थ—अहो ! राजाओं में हम अति धन्य हैं, क्योंकि अपने स्वभाव से महापुरुषों के कृपापात्र हो गये हैं । बड़े खेद की बात है, निन्दनीय कार्यों के कारण राजाओं का वंश अब ब्राह्मणों के चरणों के धोवन से दूर पड़ गया है ।

चतुर्दशः श्लोकः

तस्यैव मेऽघस्य परावरेशो, व्यासक्तचित्तस्य गृहेष्वभीक्ष्णम् ।
निर्वेदमूलो द्विजशापरूपो, यत्र प्रसक्तो भयमाशु धत्ते ॥१४॥

पदच्छेद— तस्य एव मे अघस्य परावर ईशः, व्यासक्त चित्तस्य गृहेषु अभीक्ष्णम् ।
निर्वेद मूलः द्विज शाप रूपः, यत्र प्रसक्तः भयम् आशु धत्ते ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१०.	उस	निर्वेद	१२.	वैराग्य का
एव	१६.	ही (उपस्थित हुए हैं)	मूलः, द्विज	१३.	कारण, ब्राह्मण के
मे, अघस्य	११.	मुझ, पापी के	शाप, रूपः,	१४.	शाप के, रूप में
परावर, ईशः	१५.	लोक-परलोक के, स्वामी (स्वयं भगवान्)	यत्र	१.	जिस (संसार) में
व्यासक्त	८.	मोह से मोहित	प्रसक्तः	२.	विषयासक्त (प्राणी)
चित्तस्य	९.	मन वाले	भयम्	३.	भय को
गृहेषु	६.	(उस) संसार में	आशु	४.	शीघ्र
अभीक्ष्णम् ।	७.	सदा	धत्ते ॥	५.	धारण कर लेता है

श्लोकार्थ—जिस संसार में विषयासक्त प्राणी भय को शीघ्र धारण कर लेता है, उस संसार में सदा मोह से मोहित मन वाले उस मुझ पापी के वैराग्य का कारण ब्राह्मण के शाप के रूप में लोक-परलोक के स्वामी स्वयम् भगवान् ही उपस्थित हुए हैं ।

पञ्चदशः श्लोकः

तं मोपयातं प्रतियन्तु विप्रा, गङ्गा च देवी धृतचित्तमीशे ।
द्विजोपसृष्टः कुहकस्तक्षको वा, दशत्वलं गायत विष्णुगाथाः ॥१५॥

पदच्छेद— तम् मा उपयातम् प्रतियन्तु विप्राः, गङ्गा च देवी धृत चित्तम् ईशे ।
द्विज उपसृष्टः कुहकः तक्षकः वा, दशतु अलम् गायत विष्णु गाथाः ॥

शब्दार्थ—

तम्, मा	३.	उस, मुझ	द्विज, उपसृष्टः	१०.	ब्राह्मण कुमार से, प्रेरित
उपयातम्	४.	शरणागत पर	कुहकः	११.	कपट वेषधारी
प्रतियन्तु	९.	कृपा करें	तक्षकः	१३.	वास्तविक तक्षक नाग
विप्राः,	५.	ब्राह्मण जन	वा,	१२.	अथवा
गङ्गा	७.	गंगा	दशतु	१५.	(मुझे) डस ले (किन्तु आप लोग)
च	६.	और	अलम्	१४.	भले ही
देवी	८.	देवी	गायत	१८.	गान करें
धृत चित्तम्	२.	मन लगाये हुये	विष्णु	१६.	भगवान् विष्णु की
ईशे ।	१.	भगवान् में	गाथाः ॥	१७.	लीलाओं का

श्लोकार्थ—भगवान् में मन लगाये हुये उस मुझ शरणागत पर ब्राह्मणजन और गंगा देवी कृपा करें। ब्राह्मण कुमार से प्रेरित कपट वेषधारी अथवा वास्तविक तक्षक नाग भले ही मुझे डस ले, किन्तु आप लोग भगवान् विष्णु की लीलाओं का गान करें।

षोडशः श्लोकः

पुनश्च भूयाद्भगवत्यनन्ते, रतिः प्रसङ्गश्च तदाश्रयेषु ।
महत्सु यां यामुपयामि सृष्टिं, मैत्र्यस्तु सर्वत्र नमो द्विजेभ्यः ॥१६॥

पदच्छेद— पुनः च भूयात् भगवति अनन्ते, रतिः प्रसङ्गः च तद् आश्रयेषु ।
महत्सु याम् याम् उपयामि सृष्टिम्, मैत्री अस्तु सर्वत्र नमः द्विजेभ्यः ॥

शब्दार्थ—

पुनः	४.	फिर से	महत्सु	९.	महान्
च	८.	तथा	याम् याम्	१.	(मैं) जिस-जिस
भूयात्	७.	होवे	उपयामि	३.	प्राप्त करूँ (उसमें)
भगवति	५.	भगवान्	सृष्टिम्,	२.	योनि को
अनन्ते, रतिः	६.	विष्णु में, भक्ति	मैत्री	१४.	मित्रता
प्रसङ्गः	१२.	संगति (और)	अस्तु	१८.	प्राप्त होवे
च	१५.	एवम्	सर्वत्र	१३.	सभी जीवों के प्रति
तद्	१०.	भगवद्	नमः	१७.	नमस्कार भाव
आश्रयेषु ।	११.	भक्तों की	द्विजेभ्यः ॥	१६.	ब्राह्मणों के प्रति

श्लोकार्थ—मैं जिस-जिस योनि को प्राप्त करूँ, उसमें फिर से भगवान् विष्णु में भक्ति होवे तथा महान् भगवद् भक्तों की संगति और सभी जीवों के प्रति मित्रता एवम् ब्राह्मणों के प्रति नमस्कार भाव प्राप्त होवे।

सप्तदशः श्लोकः

इति स्म राजाध्यवसाययुक्तः, प्राचीनमूलेषु कुशेषु धीरः।
उदङ्मुखो दक्षिणकूल आस्ते, समुद्रपत्न्याः स्वसुतन्यस्तभारः ॥१७॥

पदच्छेद— इति स्म राजा अध्यवसाय युक्तः, प्राचीन मूलेषु कुशेषु धीरः।
उदङ् मुखः दक्षिण कूले आस्ते, समुद्र पत्न्याः स्वसुत न्यस्त भारः ॥

शब्दार्थ—

इति स्म	१.	इस प्रकार	उदङ् मुखः	१५.	मुख को उत्तर-दिशा में करके
राजा	३.	राजा (परीक्षित्)	दक्षिण कूले	११.	दक्षिण तट पर
अध्यवसाय	७.	निश्चय से	आस्ते	१६.	बैठ गये
युक्तः	८.	युक्त होकर	समुद्र	६.	समुद्र की
प्राचीन	१४.	पूर्व दिशा में (और)	पत्न्याः	१०.	पत्नी गंगा जी के
मूलेषु	१३.	जड़ों को	स्व, सुत	४.	अपने, पुत्र (जनमेजय) को
कुशेषु	१२.	कुश की	न्यस्त	६.	सौंप कर (तथा)
धीरः।	२.	धैर्यशाली	भारः ॥	५.	राज्य का भार

श्लोकार्थ—इस प्रकार धैर्यशाली राजा परीक्षित् अपने पुत्र जनमेजय को राज्य का भार सौंपकर तथा निश्चय से युक्त होकर समुद्र की पत्नी गंगा जी के दक्षिण तट पर कुश की जड़ों को पूर्व दिशा में और मुख को उत्तर दिशा में करके बैठ गये।

अष्टादशः श्लोकः

एवं च तस्मिन्नरदेवदेवे, प्रायोपविष्टे दिवि देवसङ्घाः।
प्रशस्य भूमौ व्यकिरन् प्रसूनै-र्मुदा मुहुर्दुन्दुभयश्च नेदुः ॥१८॥

पदच्छेद— एवम् च तस्मिन् नरदेव देवे, प्राय उपविष्टे दिवि देव सङ्घाः।
प्रशस्य भूमौ व्यकिरन् प्रसूनैः, मुदा मुहुः दुन्दुभयः च नेदुः ॥

शब्दार्थ—

एवम् च	१.	इस प्रकार से	प्रशस्य, भूमौ	६.	प्रशंसा करते हुये, पृथ्वी पर
तस्मिन्	२.	उन	व्यकिरन्	११.	वर्षा करने लगे
नरदेव	४.	राजा (परीक्षित्) के	प्रसूनैः,	१०.	पुष्पों की
देवे,	३.	राजाधिराज	मुदा	१३.	प्रसन्नता से
प्राय	५.	आमरण अनशन में	मुहुः	१४.	बार-बार
उपविष्टे	६.	बैठ जाने पर	दुन्दुभयः	१५.	नगाड़े
दिवि	७.	स्वर्ग में	च	१२.	और
देव सङ्घाः।	८.	देव गण	नेदुः ॥	१६.	बजाने लगे

श्लोकार्थ—इस प्रकार से उन राजाधिराज राजा परीक्षित् के आमरण अनशन में बैठ जाने पर स्वर्ग में देव गण प्रशंसा करते हुये पृथ्वी पर पुष्पों की वर्षा करने लगे और प्रसन्नता से बार-बार नगाड़े बजाने लगे।

एकोनविंशः श्लोकः

महर्षयो वै समुपागता ये, प्रशस्य साध्वित्यनुमोदमानाः ।
ऊचुः प्रजानुग्रहशीलसारा, यदुत्तमश्लोकगुणाभिरूपम् ॥१९॥

पदच्छेद— महर्षयः वै समुपागताः ये, प्रशस्य साधु इति अनुमोदमानाः ।
ऊचुः प्रजा अनुग्रह शील साराः, यत् उत्तम श्लोक गुण अभिरूपम् ॥

शब्दार्थ—

महर्षयः	३. ऋषिगण थे	ऊचुः	१६. कहने लगे
वै	४. वे	प्रजा	९. भूत
समुपागताः	१. (वहाँ पर) पधारे हुये	अनुग्रह	१०. दया के
ये,	२. जो	शील, साराः	११. स्वभाव को, सार समझने वाले
प्रशस्य	८. प्रशंसा करने लगे (तथा)	यत्	१२. (वे मुनिगण) जो
साधु	५. साधुवाद के	उत्तम श्लोक	१३. भगवान् श्रीकृष्ण के
इति	६. शब्दों से (राजा परीक्षित् का)	गुण	१४. गुणों के
अनुमोदमानाः ।	७. समर्थन करते हुए	अभिरूपम् ॥	१५. अनुकूल (था उसे)

श्लोकार्थ—वहाँ पर पधारे हुये जो ऋषिगण थे, वे साधुवाद के शब्दों से राजा परीक्षित् का समर्थन करते हुये प्रशंसा करने लगे तथा भूत-दया के स्वभाव को सार समझने वाले वे मुनिगण जो भगवान् श्रीकृष्ण के गुणों के अनुकूल था उसे कहने लगे ।

विंशः श्लोकः

न वा इदं राजर्षिवर्य चित्रं, भवत्सु कृष्णं समनुव्रतेषु ।
येऽध्यासनं राजकिरीटजुष्टं, सद्यो जहुर्भगवत्पार्श्वकामाः ॥२०॥

पदच्छेद— न वा इदम् राजर्षिवर्य चित्रम्, भवत्सु कृष्णम् समनुव्रतेषु ।
ये अध्यासनम् राज किरीट जुष्टम्, सद्यः जहुः भगवत् पार्श्व कामाः ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं	ये	९. (क्योंकि) आपने
वा	८. है	अध्यासनम्	१४. राज्य सिंहासन को
इदम्	५. यह	राज, किरीट	१२. राजाओं के, मुकुटों से
राजर्षि वर्य	१. राजर्षियों में श्रेष्ठ (हे राजन् !)	जुष्टम्,	१३. सेवित
चित्रम्,	६. आश्चर्य	सद्यः	१५. तत्काल
भवत्सु	४. आपके विषय में	जहुः	१६. छोड़ दिया है
कृष्णम्	२. भगवान् श्रीकृष्ण की	भगवत्	१०. भगवान् श्रीकृष्ण को
समनुव्रतेषु ।	३. सेवा में तत्पर	पार्श्व, कामाः ॥	११. पाने की, इच्छा से

श्लोकार्थ—राजर्षियों में श्रेष्ठ हे राजन् ! भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में तत्पर आप के विषय में यह आश्चर्य नहीं है । क्योंकि आपने भगवान् श्रीकृष्ण को पाने की इच्छा से राजाओं के मुकुटों से सेवित राज्य सिंहासन को तत्काल छोड़ दिया है ।

एकविंशः श्लोकः

सर्वे वयं तावदिहास्महेऽद्य, कलेवरं यावदसौ विहाय।
लोकं परं विरजस्कं विशोकं, यास्यत्ययं भागवतप्रधानः ॥२१॥

पदच्छेद— सर्वे वयम् तावत् इह आस्महे अद्य, कलेवरम् यावत् असौ विहाय।
लोकम् परम् विरजस्कम् विशोकम्, यास्यति अयम् भागवत प्रधानः ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	१५.	सब लोग	विहाय।	६.	छोड़कर
वयम्	१४.	हम	लोकम्	११.	लोक को
तावत्	१३.	तब-तक	परम्	१०.	सर्वोत्तम
इह	१७.	यहाँ	विरजस्कम्	८.	गुणातीत (और)
आस्महे	१८.	रहेंगे	विशोकम्,	६.	दुःख से रहित
अद्य,	१६.	अब	यास्यति	१२.	जायेंगे
कलेवरम्	५.	शरीर	अयम्	३.	यह (राजा परीक्षित्)
यावत्	७.	जब	भागवत	१.	भगवद् भक्तों में
असौ	४.	अपना	प्रधानः ॥	२.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—भगवद् भक्तों में श्रेष्ठ यह राजा परीक्षित् अपना शरीर छोड़कर जब गुणातीत और दुःख से रहित सर्वोत्तम लोक को जायेंगे, तब-तक हम सब लोग अब यहाँ रहेंगे।

द्वाविंशः श्लोकः

आश्रुत्य तदृषिगणवचः परीक्षित्, समं मधुच्युद् गुरु चाव्यलीकम्।
आभाषतैनानभिनन्द्य युक्तान्, शुश्रूषमाणश्चरितानि विष्णोः ॥२२॥

पदच्छेद—आश्रुत्य तत् ऋषि गण वचः परीक्षित्, समम् मधु च्युत् गुरु च अव्यलीकम्।
आभाषत एनान् अभिनन्द्य युक्तान्, शुश्रूषमाणः चरितानि विष्णोः ॥

शब्दार्थ—

आश्रुत्य	६.	सुनकर (तथा)	अव्यलीकम्।	४.	सत्य
तत्	७.	उस	आभाषत	१६.	बोले
ऋषि गण	२.	मुनिगणों की	एनान्	११.	इन (ऋषियों) का
वचः	८.	वाणी को	अभिनन्द्य	१२.	अभिनन्दन करके
परीक्षित्,	१.	राजा परीक्षित्	युक्तान्,	१०.	योग-युक्त
समम्	६.	समता से युक्त	शुश्रूषमाणः	१५.	सुनने की इच्छा से
मधुच्युत्, गुरु	३.	मधुर, गम्भीर	चरितानि	१४.	लीलाओं को
च	५.	और	विष्णोः ॥	१३.	भगवान् विष्णु की

श्लोकार्थ—राजा परीक्षित् मुनिगणों की मधुर, गम्भीर, सत्य और समता से युक्त उस वाणी को सुनकर तथा योग-युक्त इन ऋषियों का अभिनन्दन करके भगवान् विष्णु की लीलाओं को सुनने की इच्छा से बोले।

त्रयोविंशः श्लोकः

समागताः सर्वत एव सर्वे, वेदा यथा मूर्तिधरास्त्रिपृष्ठे ।
नेहाथवामुत्र च कश्चनार्थ, ऋते परानुग्रहमात्मशीलम् ॥२३॥

पदच्छेद— समागताः सर्वतः एव सर्वे, वेदाः यथा मूर्त्ति धराः त्रिपृष्ठे ।
न इह अथवा अमुत्र च कश्चन अर्थः, ऋते पर अनुग्रहम् आत्म शीलम् ॥

शब्दार्थ—

समागताः	७. आये हुए हैं	इह, अथवा	९. इस (लोक) में, अथवा		
सर्वतः	६. चारों ओर से	अमुत्र	१०. परलोक में (आप लोगों का)		
एव, सर्वे,	५. ही, आप लोग	च	८. तथा		
वेदाः	३. चारों वेदों के	कश्चन अर्थः,	१५. कोई स्वार्थ		
यथा	४. समान	ऋते	१४. अतिरिक्त (अपना)		
मूर्ति धराः	२. शरीरधारी	पर	१२. दूसरों पर		
त्रिपृष्ठे ।	१. सत्यलोक में	अनुग्रहम्	१३. कृपा करने के		
न	१६. नहीं (हैं)	आत्म शीलम् ॥	११. अपने स्वभाव के अनुसार		

श्लोकार्थ—सत्यलोक में शरीरधारी चारों वेदों के समान ही आप लोग चारों ओर से आये हुए हैं तथा इस लोक में अथवा परलोक में आप लोगों का अपने स्वभाव के अनुसार दूसरों पर कृपा करने के अतिरिक्त अपना कोई स्वार्थ नहीं है ।

चतुर्विंशः श्लोकः

ततश्च वः पृच्छ्यमिमं विपृच्छे, विश्रभ्य विप्रा इतिकृत्यतायाम् ।
सर्वात्मना म्रियमाणैश्च कृत्यं, शुद्धं च तत्रामृशताभियुक्ताः ॥२४॥

पदच्छेद— ततः च वः पृच्छ्यम् इमम् विपृच्छे, विश्रभ्य विप्राः इति कृत्यतायाम् ।
सर्वात्मना म्रियमाणैः च कृत्यम्, शुद्धम् च तत्र अमृशत अभियुक्ताः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. अतः	कृत्यतायाम् ।	४. कर्त्तव्य के विषय में
च	१०. कि	सर्वात्मना	११. सभी प्राणियों
वः	५. आप लोगों से	म्रियमाणैः	१३. मरणासन्न व्यक्तियों के
पृच्छ्यम्	६. पूछने योग्य	च	१२. और
इमम्	७. इस (बात) को	कृत्यम्,	१५. कर्म (क्या हैं)
विपृच्छे,	९. पूछ रहा हूँ	शुद्धम् च	१४. पवित्र
विश्रभ्य	८. विश्वास पूर्वक	तत्र	१६. इस विषय में
विप्राः	२. हे ब्राह्मणों !	अमृशत	१८. विचार करके कहें
इति	३. अपने	अभियुक्ताः ॥	१७. आप विद्वज्जन

श्लोकार्थ—अतः हे ब्राह्मणों ! अपने कर्त्तव्य के विषय में आप लोगों से पूछने योग्य इस बात को विश्वास पूर्वक पूछ रहा हूँ कि सभी प्राणियों और मरणासन्न व्यक्तियों के पवित्र कर्म क्या हैं ? इस विषय में आप विद्वज्जन विचार करके कहें ।

पञ्चविंशः श्लोकः

तत्राभवद्भगवान् व्यासपुत्रो, यदृच्छया गामटमानोऽनपेक्षः।
अलक्ष्यलिङ्गो निजलाभतुष्टो, वृतश्च बालैरवधूतवेषः ॥२५॥

पदच्छेद— **तत्र अभवत् भगवान् व्यास पुत्रः, यदृच्छया गाम् अटमानः अनपेक्षः।**
अलक्ष्य लिङ्गः निज लाभ तुष्टः, वृतः च बालैः अवधूत वेषः ॥

शब्दार्थ—

तत्र, अभवत्	१४.	वहाँ पर, पधारे	**अलक्ष्य लिङ्गः**	५.	(वर्णाश्रम के) चिह्नों से रहित
भगवान्	१२.	भगवान्	**निज, लाभ**	६.	आत्मा की, अनुभूति से
व्यास पुत्रः,	१३.	व्यासपुत्र (शुकदेव जी)	**तुष्टः,**	७.	पूर्णकाम
यदृच्छया	१.	स्वेच्छा से	**वृतः**	९.	घिरे हुए
गाम्	२.	पृथ्वी पर	**च, बालैः**	८.	तथा, बालकों से
अटमानः	३.	भ्रमण करते हुए	**अवधूत**	१०.	अवधूत
अनपेक्षः।	४.	उदासीन	**वेषः ॥**	११.	वेष में

श्लोकार्थ—स्वेच्छा से पृथ्वी पर भ्रमण करते हुए, उदासीन, वर्णाश्रम के चिह्नों से रहित, आत्मा की अनुभूति से पूर्णकाम तथा बालकों से घिरे हुए, अवधूत वेष में भगवान् व्यासपुत्र शुकदेव जी वहाँ पर पधारे।

षड्विंशः श्लोकः

तं द्व्यष्टवर्षं सुकुमारपाद - करोरुबाह्वंसकपोलगात्रम् ।
चार्वायताक्षोन्नसतुल्यकर्ण - सुभ्र्वाननं कम्बुसुजातकण्ठम् ॥२६॥

पदच्छेद— **तम् द्वि अष्ट वर्षम् सुकुमार पाद, कर उरु बाहु अंस कपोल गात्रम्।**
चारु आयत अक्ष उन्नस तुल्य कर्ण, सुभ्रू आननम् कम्बु सुजात कण्ठम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१८.	उन (शुकदेव मुनि को सबने देखा)	**चारु**	७.	मनोहर (और)
द्वि अष्ट	१६.	सोलह	**आयत, अक्ष**	८.	बड़े-बड़े, नेत्र
वर्षम्	१७.	वर्ष के	**उन्नस**	९.	ऊँची नाक
सुकुमार	१.	कोमल	**तुल्य, कर्ण,**	१०.	समान, कान (तथा)
पाद, कर	२.	चरण, हाथ	**सुभ्रू**	११.	सुन्दर भौहों से युक्त
उरु, बाहु	३.	जंघा, भुजायें	**आननम्**	१२.	मुख (एवं)
अंस	४.	कंधा (और)	**कम्बु**	१३.	शङ्ख के समान
कपोल	५.	गाल से युक्त	**सुजात**	१४.	सुन्दर
गात्रम्।	६.	देह	**कण्ठम् ॥**	१५.	कण्ठ वाले

श्लोकार्थ—कोमल चरण, हाथ, जंघा, भुजायें, कंधा और गाल से युक्त देह, मनोहर और बड़े-बड़े नेत्र, ऊँची नाक, समान कान तथा सुन्दर भौहों से युक्त मुख एवं शङ्ख के समान सुन्दर कण्ठ वाले सोलह वर्ष के उन शुकदेव मुनि को सबने देखा।

सप्तविंशः श्लोकः

निगूढजत्रुं पृथुतुङ्गवक्षस-मावर्तनाभिं वलिवल्गूदरं च।
दिगम्बरं वक्त्रविकीर्णकेशं, प्रलम्बबाहुं स्वमरोत्तमाभम् ॥२७॥

पदच्छेद— निगूढ जत्रुम् पृथु तुङ्ग वक्षसम्, आवर्त नाभिम् वलि वल्गु उदरम् च।
दिगम्बरम् वक्त्र विकीर्ण केशम्, प्रलम्ब बाहुम् सु अमर उत्तम आभम् ॥

शब्दार्थ—

निगूढ	१. (श्री शुकदेव मुनि) छिपी हुई	दिगम्बरम्	१०. नंगे वदन
जत्रुम्	२. हंसली	वक्त्र	११. मुख पर
पृथु, तुङ्ग	३. मोटी (और), उभरी	विकीर्ण	१२. बिखरे हुये
वक्षसम्,	४. छाती	केशम्,	१३. बाल
आवर्त	५. गहरी	प्रलम्ब	१४. लम्बी
नाभिम्	६. नाभि	बाहुम्	१५. भुजायें (और)
वलि, वल्गु	७. त्रिवली के कारण, सुन्दर	सु अमर	१६. श्रेष्ठ देवताओं की
उदरम्	८. उदर	उत्तम	१७. उत्तम
च।	९. और	आभम् ॥	१८. कांति से (सुशोभित थे)

श्लोकार्थ—श्री शुकदेव मुनि छिपी हुई हँसली, मोटी और उभरी छाती, गहरी नाभि, त्रिवली के कारण सुन्दर उदर और नंगे वदन, मुख पर बिखरे हुए बाल, लम्बी भुजायें और श्रेष्ठ देवताओं की उत्तम कान्ति से सुशोभित थे।

अष्टाविंशः श्लोकः

श्यामं सदापीच्यवयोऽङ्गलक्ष्म्या, स्त्रीणां मनोज्ञं रुचिरस्मितेन।
प्रत्युत्थितास्ते मुनयः स्वासनेभ्य-स्तल्लक्षणज्ञा अपि गूढवर्चसम् ॥२८॥

पदच्छेद— श्यामम् सदा अपीच्य वयः अङ्ग लक्ष्म्या, स्त्रीणाम् मनोज्ञम् रुचिर स्मितेन।
प्रत्युत्थिताः ते मुनयः स्व आसनेभ्यः, तत् लक्षणज्ञाः अपि गूढ वर्चसम् ॥

शब्दार्थ—

श्यामम्	३. सांवले (तथा)	प्रत्युत्थिताः	१४. खड़े हो गये
सदा, अपीच्य	१. हमेशा, सुन्दर	ते, मुनयः	१२. वे, ऋषिगण
वयः	२. अवस्था वाले	स्व, आसनेभ्यः	१३. अपने-अपने, आसनों से
अङ्ग लक्ष्म्या,	४. शरीर की शोभा (और)	तत्, लक्षणज्ञाः	११. उनके, लक्षणों के जानकार
स्त्रीणाम्	६. स्त्रियों के	अपि	१०. भी
मनोज्ञम्	७. मन को भानेवाले (श्रीशुकदेवजी का)	गूढ	९. छिपा होने पर
रुचिर,स्मितेन।	५. मधुर, मुसकान से	वर्चसम् ॥	८. तेज

श्लोकार्थ—हमेशा सुन्दर अवस्था वाले, सांवले तथा शरीर की शोभा और मधुर मुस्कान से स्त्रियों के मन को भाने वाले श्री शुकदेव जी का तेज छिपा होने पर भी उनके लक्षणों के जानकार वे ऋषिगण अपने-अपने आसनों से खड़े हो गये।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

स विष्णुरातोऽतिथय आगताय, तस्मै सपर्यां शिरसाऽऽजहार।
ततो निवृत्ता ह्यबुधाः स्त्रियोऽर्भका, महासने सोपविवेश पूजितः ॥२९॥

पदच्छेद— सः विष्णुरातः अतिथये आगताय, तस्मै सपर्याम् शिरसा आजहार।
ततः निवृत्ताः हि अबुधाः स्त्रियः अर्भकाः, महासने सः उपविवेश पूजितः॥

शब्दार्थ—

सः	१. उस		ततः	१३.	उसे देखकर
विष्णुरातः	२.	राजा परीक्षित् ने	निवृत्ताः हि	१६.	लौट गये
अतिथये	४.	अतिथि	अबुधाः, स्त्रियः	१४.	मूढ़, स्त्रियाँ (और)
आगताय,	३.	पधारे हुये	अर्भकाः,	१५.	बच्चे (वहाँ से)
तस्मै	५.	उन (शुकदेव मुनि) की	महासने	११.	श्रेष्ठ आसन पर
सपर्याम्	७.	पूजा	सः	१०.	वे (मुनि)
शिरसा	६.	शिर झुकाकर	उपविवेश	१२.	विराजमान हो गये
आजहार।	८.	की (तदनन्तर)	पूजितः॥	९.	(सब से) पूजित

श्लोकार्थ—उस राजा परीक्षित् ने पधारे हुये अतिथि उन शुकदेव मुनि की शिर झुकाकर पूजा की। तदनन्तर सबसे पूजित वे मुनि श्रेष्ठ आसन पर विराजमान हो गये। उसे देखकर मूढ़ स्त्रियाँ और बच्चे वहाँ से लौट गये।

त्रिंशः श्लोकः

स संवृतस्तत्र महान् महीयसां, ब्रह्मर्षिराजर्षिदेवर्षिसङ्घैः।
व्यरोचतालं भगवान् यथेन्दुर्ग्रहर्क्षतारानिकरैः परीतः॥३०॥

पदच्छेद— सः संवृतः तत्र महान् महीयसाम्, ब्रह्मर्षि राजर्षि देवर्षि सङ्घैः।
व्यरोचत अलम् भगवान् यथा इन्दुः, ग्रह ऋक्ष तारा निकरैः परीतः॥

शब्दार्थ—

सः	१२.	वे	व्यरोचत	१६.	सुशोभित हो रहे थे
संवृतः	९.	घिरे हुये	अलम्	१५.	बहुत
तत्र	१४.	वहाँ	भगवान्	१३.	भगवान् (शुकदेव मुनि)
महान्	११.	पूज्य	यथा	५.	समान
महीयसाम्,	१०.	पूज्यों में	इन्दुः,	४.	चन्द्रमा के
ब्रह्मर्षि	६.	ब्रह्मर्षि	ग्रह, ऋक्ष	१.	ग्रह, नक्षत्र और
राजर्षि	७.	राजर्षि (और)	तारा	२.	ताराओं के
देवर्षि सङ्घैः।	८.	देवर्षियों के समूहों से	निकरैः, परीतः॥	३.	समूहों से, घिरे हुये

श्लोकार्थ—ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के समूहों से घिरे हुये चन्द्रमा के समान ब्रह्मर्षि, राजर्षि और देवर्षियों के समूहों से घिरे हुये, पूज्यों में पूज्य वे भगवान् शुकदेव मुनि वहाँ बहुत सुशोभित हो रहे थे।

एकत्रिंशः श्लोकः

प्रशान्तमासीनमकुण्ठमेधसं, मुनिं नृपो भागवतोऽभ्युपेत्य ।
प्रणम्य मूर्ध्नावहितः कृताञ्जलि-र्नत्वा गिरा सूनृतयान्वपृच्छत् ॥३१॥

पदच्छेद—

प्रशान्तम् आसीनम् अकुण्ठ मेधसम् , मुनिम् नृपः भागवतः अभ्युपेत्य ।
प्रणम्य मूर्ध्ना अवहितः कृत अञ्जलिः, नत्वा गिरा सूनृतया अन्वपृच्छत् ॥

शब्दार्थ—

प्रशान्तम्	३.	शान्त भाव से	**प्रणम्य**	१०.	प्रणाम करके (तथा)
आसीनम्	४.	बैठे हुये (तथा)	**मूर्ध्ना**	९.	शिर से
अकुण्ठ	५.	प्रखर	**अवहितः**	१३.	सावधानी पूर्वक
मेधसम्,	६.	बुद्धि वाले	**कृत अञ्जलिः,**	१२.	हाथ जोड़कर
मुनिम्	७.	शुकदेव मुनि के	**नत्वा**	११.	पुनः नमस्कार करके (एवं)
नृपः	२.	राजा परीक्षित् ने	**गिरा**	१५.	वाणी में
भागवतः	१.	भगवद्भक्त	**सूनृतया**	१४.	मधुर
अभ्युपेत्य ।	८.	पास में जाकर	**अन्वपृच्छत् ॥**	१६.	पूछा

श्लोकार्थ—भगवद् भक्त राजा परीक्षित् ने शान्त भाव से बैठे हुए तथा प्रखर बुद्धि वाले शुकदेव मुनि के पास में जाकर, शिर से प्रणाम करके तथा पुनः नमस्कार करके एवम् हाथ जोड़कर सावधानी पूर्वक मधुर वाणी में पूछा ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

परीक्षिदुवाच— **अहो अद्य वयं ब्रह्मन् सत्सेव्याः क्षत्रबन्धवः ।**
कृपयातिथिरूपेण भवद्भिस्तीर्थकाः कृताः ॥३२॥

पदच्छेद—

अहो अद्य वयम् ब्रह्मन् , सत् सेव्याः क्षत्र बन्धवः ।
कृपया अतिथि रूपेण, भवद्भिः तीर्थकाः कृताः ॥

शब्दार्थ—

अहो	२.	सौभाग्य है कि	**कृपया**	९.	कृपा करके
अद्य	३.	आज	**अतिथि**	१०.	अतिथि
वयम्	४.	हम	**रूपेण**	११.	रूप से (हमें)
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	**भवद्भिः**	८.	आपने
सत्	६.	संतों की	**तीर्थकाः**	१२.	तीर्थों के समान पवित्र
सेव्याः	७.	सेवा के योग्य (हुये हैं)	**कृताः ॥**	१३.	कर दिया है
क्षत्र बन्धवः ।	५.	दुष्ट राजा लोग			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! सौभाग्य है कि आज हम दुष्ट राजा लोग संतों की सेवा के योग्य हुये हैं। आपने कृपा करके अतिथि रूप से हमें तीर्थों के समान पवित्र कर दिया है ।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

येषां संस्मरणात् पुंसां सद्यः शुद्ध्यन्ति वै गृहाः ।
किं पुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः ॥३३॥

पदच्छेद—

येषाम् संस्मरणात् पुंसाम्, सद्यः शुद्ध्यन्ति वै गृहाः ।
किम् पुनः दर्शन स्पर्श, पाद शौच आसन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

येषाम्	१.	जिनके	पुनः	८.	फिर (उनके)
संस्मरणात्	२.	स्मरण मात्र से	दर्शन	९.	दर्शन
पुंसाम्	३.	मनुष्यों के	स्पर्श	१०.	स्पर्श
सद्यः	६.	तत्काल	पाद	११.	चरण
शुद्ध्यन्ति	७.	पवित्र हो जाते हैं	शौच	१२.	प्रक्षालन (और)
वै	५.	निश्चय ही	आसन	१३.	आसन
गृहाः ।	४.	घर	आदिभिः ॥	१४.	इत्यादि से (सेवा की तो)
किम्	१५.	बात ही क्या है			

श्लोकार्थ—जिनके स्मरण मात्र से मनुष्यों के घर निश्चय ही तत्काल पवित्र हो जाते हैं, फिर उनके दर्शन, स्पर्श, चरण-प्रक्षालन और आसन इत्यादि से सेवा की तो बात ही क्या है ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सांनिध्यात्ते महायोगिन् पातकानि महान्त्यपि ।
सद्यो नश्यन्ति वै पुंसां विष्णोरिव सुरेतराः ॥३४॥

पदच्छेद—

सांनिध्यात् ते महायोगिन्, पातकानि महान्ति अपि ।
सद्यः नश्यन्ति वै पुंसाम्, विष्णोः इव सुर इतराः ॥

शब्दार्थ—

सांनिध्यात्	८.	सन्निधि से	नश्यन्ति	५.	नष्ट हो जाते हैं (उसी प्रकार)
ते	७.	आप की	वै	१३.	निश्चयपूर्वक (नष्ट हो जाते हैं)
महायोगिन्	६.	हे महायोगिन् !	पुंसाम्	९.	मनुष्यों के
पातकानि	११.	पाप	विष्णोः	२.	भगवान् विष्णु की (सन्निधि से)
महान्ति	१०.	बड़े से बड़े	इव	१.	जैसे
अपि ।	१२.	भी	सुर इतराः ॥	३.	राक्षस गण
सद्यः	४.	तत्काल			

श्लोकार्थ—जैसे भगवान् विष्णु की सन्निधि से राक्षसगण तत्काल नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार हे महायोगिन् ! आपकी सन्निधि से मनुष्यों के बड़े से बड़े पाप भी निश्चय पूर्वक नष्ट हो जाते हैं ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

अपि मे भगवान् प्रीतः कृष्णः पाण्डुसुतप्रियः ।
पैतृष्वसेयप्रीत्यर्थं तद्गोत्रस्यात्तबान्धवः ॥३५॥

पदच्छेद—

अपि मे भगवान् प्रीतः, कृष्णः पाण्डु सुत प्रियः ।
पैतृष्वसेय प्रीत्यर्थम्, तत् गोत्रस्य आत्त बान्धवः ॥

शब्दार्थ—

अपि	५. निश्चय ही	पैतृष्वसेय	८. फुफेरे भाइयों की
मे	६. मेरे पर	प्रीत्यर्थम्	९. प्रसन्नता के लिये (ही)
भगवान्	३. भगवान्	तत्	१०. (उन्होंने) उनके
प्रीतः	७. प्रसन्न हैं	गोत्रस्य	११. कुल में उत्पन्न (मुझे)
कृष्णः	४. श्री कृष्ण	आत्त	१३. बनाया है
पाण्डु सुतः	१. पाण्डवों के	बान्धवः ॥	१२. (अपना) बन्धु
प्रियः ।	२. प्यारे		

श्लोकार्थ—पाण्डवों के प्यारे भगवान् श्री कृष्ण निश्चय ही मेरे पर प्रसन्न हैं । फुफेरे भाइयों की प्रसन्नता के लिये ही उन्होंने उनके कुल में उत्पन्न मुझे अपना बन्धु बनाया है ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

अन्यथा तेऽव्यक्तगतेर्दर्शनं नः कथं नृणाम् ।
नितरां म्रियमाणानां संसिद्धस्य वनीयसः ॥३६॥

पदच्छेद—

अन्यथा ते अव्यक्त गतेः, दर्शनम् नः कथम् नृणाम् ।
नितराम् म्रियमाणानाम्, संसिद्धस्य वनीयसः ॥

शब्दार्थ—

अन्यथा	१. नहीं तो	कथम्	१२. कैसे (होता)
ते	१०. आपका	नृणाम् ।	५. मनुष्यों को
अव्यक्त	८. अज्ञात	नितराम्	२. अत्यन्त
गतेः	९. गति वाले	म्रियमाणानाम्	३. मरणासन्न
दर्शनम्	११. दर्शन	संसिद्धस्य	६. परम सिद्ध
नः	४. हम (जैसे)	वनीयसः ॥	७. वनवासी (और)

श्लोकार्थ—नहीं तो अत्यन्त मरणासन्न हम जैसे मनुष्यों को परमसिद्ध, वनवासी और अज्ञात गति वाले आपका दर्शन कैसे होता ?

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अतः पृच्छामि संसिद्धिं योगिनां परमं गुरुम् ।
पुरुषस्येह यत्कार्यं म्रियमाणस्य सर्वथा ॥३७॥

पदच्छेद—

अतः पृच्छामि संसिद्धिम् , योगिनाम् परमम् गुरुम् ।
पुरुषस्य इह यत् कार्यम् , म्रियमाणस्य सर्वथा ॥

शब्दार्थ—

अतः	१.	इसलिये (मैं)	पुरुषस्य	६.	मनुष्यों का
पृच्छामि	१२.	पूछता हूँ	इह	६.	इस संसार में
संसिद्धिम्	५.	उत्तम सिद्धि को (और)	यत्	१०.	जो
योगिनाम्	२.	योगियों के	कार्यम्	११.	करने योग्य कर्त्तव्य है (उसे)
परमम्	३.	परम	म्रियमाणस्य	८.	मरणासन्न
गुरुम् ।	४.	गुरु (आपसे)	सर्वथा ॥	७.	बिल्कुल

श्लोकार्थ—इसलिये मैं योगियों के परम गुरु आपसे उत्तम सिद्धि को और इस संसार में बिल्कुल मरणासन्न मनुष्यों का जो करने योग्य कर्त्तव्य है, उसे पूछता हूँ ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

यच्छ्रोतव्यमथो जप्यं यत्कर्तव्यं नृभिः प्रभो ।
स्मर्तव्यं भजनीयं वा ब्रूहि यद्वा विपर्ययम् ॥३८॥

पदच्छेद—

यत् श्रोतव्यम् अथो जप्यम् , यत् कर्तव्यम् नृभिः प्रभो ।
स्मर्तव्यम् भजनीयम् वा, ब्रूहि यद् वा विपर्ययम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	३.	जो	स्मर्तव्यम्	६.	स्मरण करने योग्य
श्रोतव्यम्	४.	सुनने योग्य	भजनीयम्	११.	भजने योग्य
अथो	५.	तथा	वा	८.	अथवा
जप्यम्	६.	जपने योग्य (और)	ब्रूहि	१५.	(उसे भी) बतावें
यत्	१०.	जो	यद्	१३.	जो
कर्तव्यम्	७.	करने योग्य	वा	१२.	तथा
नृभिः	२.	मनुष्यों के द्वारा	विपर्ययम् ॥	१४.	छोड़ने योग्य (कर्म हैं)
प्रभो।	१.	हे स्वामिन् !			

श्लोकार्थ—हे स्वामिन् ! मनुष्यों के द्वारा जो सुनने योग्य तथा जपने योग्य और करने योग्य अथवा स्मरण करने योग्य, जो भजने योग्य तथा जो छोड़ने योग्य कर्म हैं, उसे भी बतावें ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

नूनं भगवतो ब्रह्मन् गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
न लक्ष्यते ह्यवस्थानमपि गोदोहनं क्वचित् ॥३९॥

पदच्छेद— नूनम् भगवतः ब्रह्मन्, गृहेषु गृह मेधिनाम् ।
न लक्ष्यते हि अवस्थानम्, अपि गोदोहनम् क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

नूनम्	८.	निश्चय	लक्ष्यते	१२.	दिखलाई पड़ता है
भगवतः	६.	आपका	हि	९.	ही
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	अवस्थानम्	७.	ठहरना
गृहेषु	३.	घरों में	अपि	५.	भी
गृहमेधिनाम् ।	२.	गृहस्थियों के	गोदोहनम्	४.	गाय दूहने तक
न	११.	नहीं	क्वचित् ॥	१०.	कभी

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! गृहस्थियों के घरों में गाय दूहने तक भी आपका ठहरना निश्चय ही कभी नहीं दिखलाई पड़ता है ।

चत्वारिंशः श्लोकः

सूत उवाच— एवमाभाषितः पृष्टः स राज्ञा श्लक्ष्णया गिरा ।
प्रत्यभाषत धर्मज्ञो भगवान् बादरायणिः ॥४०॥

पदच्छेद— एवम् आभाषितः पृष्टः, सः राज्ञा श्लक्ष्णया गिरा ।
प्रत्यभाषत धर्मज्ञः, भगवान् बादरायणिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	इस प्रकार	गिरा ।	३.	वाणी में
आभाषितः	५.	कहने (और)	प्रत्यभाषत	११.	उत्तर देना प्रारम्भ किया
पृष्टः	६.	पूछने पर	धर्मज्ञः	७.	धर्म के जानकार
सः	८.	उन	भगवान्	९.	भगवान्
राज्ञा	१.	राजा के द्वारा	बादरायणिः ॥	१०.	शुकदेव मुनि ने
श्लक्ष्णया	२.	मधुर			

श्लोकार्थ—राजा के द्वारा मधुर वाणी में इस प्रकार कहने और पूछने पर धर्म के जानकार उन भगवान् शुकदेव मुनि ने उत्तर देना प्रारम्भ किया ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे वैयासिक्याम् अष्टादशसाहस्र्यां पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकागमनं नाम एकोनविंशः अध्यायः ॥१९॥

इति प्रथमः स्कन्धः सम्पूर्णः

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

भजन-भागवत

(१)

शुकदेव कहें मुनि ज्ञानी, सुन भूप भागवत बानी।
शुकदेव कहें मुनि ज्ञानी ॥ सुनि० ॥
सुख-दुःख अरु जीवन मरणा, सब अपना करना धरणा।
कोई करत न किसकी हानी ॥ सुनि० ॥
यह दुस्तर भव जल धारा, बिन भजन न हो निस्तारा।
हरिनाम सुमिर सुख खानी ॥ सुनि० ॥
सुर-नर पशु जीव जहाना, नहिं भेद कल्पना नाना।
सब एक ब्रह्ममय जानी ॥ सुनि० ॥
यह जीव अमर सुख रासी, क्षण भंगुर देह विनाशी।
ब्रह्मानन्द छोड़ अभिमानी ॥ सुनि० ॥

(२)

सफल हुये हैं उन्हीं के जीवन, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वही हमेशा हरे भरे हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ॥स०॥
न पाया तुझको गरीब बनकर, न पाया तुझको अमीर बनकर।
उसी को दर्शन हुये हैं तेरे, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ॥स०॥
न पाया तुझको किसी ने बल से, न पाया तुझको किसी ने धन से।
वही परम पद को पा चुके हैं, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ॥स०॥
जग में किसी ने करी भलाई, जग में किसी ने करी बुराई।
उन्हीं की चिन्ता मिटी है जग में, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ॥स०॥
जहाँ भी जिसने तुझे पुकारा, दिया है तूने उसे सहारा।
कटे हैं उनके दुःखों के बन्धन, जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ॥स०॥

(३)

नेकी के करम कमाना रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥
यह तन तेरा है तरुवर, दुनियाँ एक क्षीर सागर।
इस तरुवर के फल खा रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥
यह धन जीवन संसारी, दो दिन की है फुलवारी।
कोई खुश रंग फूल खिला जा रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥
तुझसे अन-धन छूटेगा, न जाने किस राह लुटेगा।
इसे परहित हेतु लगा जा रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥
यह कञ्चन काया तेरी, हो अन्त राख की ढेरी।
इससे जो बने बना जा रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥
जग सेवा है सुख देवा, कर दीन दुःखी की सेवा।
यश पाना हो तो पा जा रे, दुनियाँ से जाने वाले ॥नेकी०॥

(४)

तेरे दर को छोड़कर, अब किस दर जाऊँ मैं ॥
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं ।।तेरे०।।
जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये।
क्या जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये।
हूँ शर्मिन्दा आपसे, क्या बात बतलाऊँ मैं ।।तेरे०।।
मेरे पाप कर्म ही तुझसे, प्रेम न करने देते।
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते।
कैसे प्रभु जी आपका, दर्शन कर पाऊँ मैं ।।तेरे०।।
तू है नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते।
ऋषि - मुनि और योगी - यती, तेरे ही गुन गाते।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं ।।तेरे०।।
जो बीती सो बीती भगवन्, बाकी उमर संभालो अब।
चरणों में मैं बैठ आपके, गीत प्रेम के गाऊँ मैं।
दया सिन्धु चरणों में आकर, जीवन सफल बनाऊँ मैं ।।तेरे०।।

आरती (ओ३म् जय जगदीश हरे)

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के सङ्कट, क्षण मे दूर करे ॥१॥ ओं० ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मनका।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥२॥ ओं० ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी ॥३॥ ओं० ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥४॥ ओं० ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥५॥ ओं० ॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूँ गोसाईं, तुमको मैं कुमती ॥६॥ ओं० ॥
दीन बन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥७॥ ओं० ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥८॥ ओं० ॥
तन-मन-धन जो कुछ है, सब ही है तेरा।
तेरा तुझको अर्पित, क्या लागे मेरा ॥९॥ ओं० ॥

।। श्रीकृष्णार्यणमस्तु ।।

